# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

# শ্রীরাধাত্রজেন্দ্রনের নৈশলীলা শ্বরণ কীর্ত্তনের পদ্ধতি।

ন্নাগাম্পীয়ভজনের পহা প্রদর্শক— হুরসিক পণ্ডিতাগ্রণী, হুবিখ্যাত বিশ্বনাথ চক্রবন্ধী ম**হাশর** কর্তৃক সঙ্গলিত ও বিরচিত।

ভক্তি শাস্ত্রের অধিতীর-ব্যাথাতা, কনিপাবনাবতার শ্রীমবৈতবংশাবতংশ

রন্ধ-রসজ্জ-চূড়ামণি শ্রীন্ধন্দাবন নিবাসী—
পশ্তিতাগ্রাপা শ্রাল শ্রীরাধিকানাথ গোম্বামী প্রভূপাদের
রূপা প্রস্ত আম্বাদন-দিগদর্শিনী ব্যাথ্যাসহ

ভূদীয় কোন্ও অযোগ্য দাদাধ্য কর্ত্ত্ব সম্পাদিত।

🕮 নিত্যস্বরূপ ব্রহ্মচারি কর্তৃক্ন প্রকাশিত।

শ্রীধান ব্রন্দাবনস্থ শ্রীদেব কীন দান য লাগ বে শ্রীগণেশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য কর্তুক মুদ্রিত।

# R.M.I.C.LIB PARY Acc No Classical Gard. ked.

# গীতের বর্ণাত্ত্রমিক সূচীপত্র।

## मः किछ कथात वर्ष।

'পঃ দঃ'—পদামৃত সমুদ্র। 'পঃ কঃ তঃ'—পদকল্পতরু। 'কালীবারু'—
কংলীপ্রসর কাব্যবিশারদের সম্পাদিত বিদ্যাপতি গ্রন্থ। 'দঃ দাঃ দং'—
দঙ্গীতসারসংগ্রহ।

| ীতের আরন্তাংশ। | কোন্রদের গান।    | <u>ke</u>     |        | পদকল্পতকৃতে। |                    |  |
|----------------|------------------|---------------|--------|--------------|--------------------|--|
|                |                  | अटब्स श्रेंगि | माथा । | ত্ত্ব        | भटमञ्<br>सम्बद्धाः |  |
| অনুখন কোনে     | অংকেপানুরাগ      | ۶۶            | 3      | II           | 8 • a              |  |
| অন্ধিগতাক      | वाधिषभा          | ¢ o           | 1      | 9            | 172                |  |
| অপরূপ হৈম      | গৌরচক্রের রূপ    | ರಿದ           | 8      | 16           | 16 p               |  |
| অঙ্গনে আওব     | ভাবোলাদ          | > 0           | 8      | 12           | <b>%</b> С         |  |
| অবনত বয়নী     | সংক্ষিপ্ত-নবোঢ়া | >> 0          | 1      | ь            | 33                 |  |
| অণ্থিতে হাম    | কুষ্ণের অনুরাগ   | ÷82           | 1      | ь            | 3 <b>d</b>         |  |
| ্অকণ কমণ       | প্রার্থনা        | ৩১৪           | 8      | <i>3</i> ७   | b 9                |  |
| অপরূপ গোরা     | গৌরচন্দ্র মাধুরী | ৩৩১           | 8      | <i>33</i>    | ıβ                 |  |
| অরুণ বসনে      | নিত্যানদের রূপ   | 8•9           | 8      | 22           | 36                 |  |
| ष्टिनव मौग     | রাগারন্তে বন্দনা | 89२           | I      | 1            | 2 ● 6              |  |
| অপরূপ বিরহ     | ক্ন: বিহুহোত্তাপ | >85           | •      | •            | •                  |  |
| অপরূপ পেথসূ    | ক্ষের অহরাগ      | ৪•৯           | t      | I            | ৬ f                |  |
| আরে মোর নিতাই  | নিত্যানৰ মহিমা   | ৯             | 8      | 22           | I                  |  |

य भा मः ४२२ भृ:। b भा मः ४२० भृ:। c भा मः ७१० भृ:। ती भा कः छः भूक्षेत्रात्म। ए भा मः २०० भृः। भिः कः छः भूक्षेत्रात्म।

| গীতের আরস্তাংশ। | ८कान द्रापत शान।   | 10          |       | পদকরত্রুতে। |                             |  |
|-----------------|--------------------|-------------|-------|-------------|-----------------------------|--|
|                 |                    | शरइत श्रेधक | - Idi | কু<br>মূর   | भटन् <b>त्र</b><br>गष्त्र । |  |
| আ ৎলি দৃতি      | স্থার অভিদার       | 59          | •     | •           | •                           |  |
| আজু হাম পেথলু   | দৃতীর চাতুরী       | २४          | •     | •           | •                           |  |
| আবেশে অবশ       | গোরাঙ্গের আবেশ     | ৩8          | 8     | 19          | 23                          |  |
| আছু পেখলু নন্দ  | স্থীর দৌত্যচাতূরী  | 8 •         | •     | •           | •                           |  |
| আ' ওরি সহচরী    | ক্র ক্             | ৫২          | •     | •           | •                           |  |
| আজু সাজলি       | মুগ্ধার অভিসার     | <i>و</i> ٠9 | •     | •           | •                           |  |
| আওল মাধ্ব       | 'मम्भूर्ग' नरवाज़ा | ٢٦          | •     | •           | •                           |  |
| আরে মোর হারে    | নিত্যানল মহিমা     | ১৩৭         | 8     | 22          | 34                          |  |
| আছু পেথলু       | ক্ষের পূক্রাগ      | >>          | 1     | ۲           | 11                          |  |
| অঃজুকি কহব      | মধ্যার অ:ভিসার     | > 6 6       | •     | •           | •                           |  |
| আকুল অগক        | বিপরীত-বিহার       | 595         | •     | •           | • a                         |  |
| আচরে মৃগ        | রাধার উন্ম দতা     | 595         | 1     | ٩           | 43 b                        |  |
| আজু কাননে       | মধ্যার 'সম্পূর্ণ'  | : 67        | •     | •           | •                           |  |
| আরে ভাই! নিতাই  | নিভাই মহিমা        | ₹•8         | 8     | 22          | 32 C                        |  |
| ष्याध्वमन दहति  | কুষ্ণের কুপাহুরাগ  | २०•         | o     | •           | •                           |  |
| পাজ্বদে বাদর    | যুগল মিশন          | २১७         | 3     | 24          | 8 <b>s</b> d                |  |
| আদর বাদর        | মানের ধীরমধ্যা     | ٠.٠         | 2     | 9           | 24 c                        |  |
| আকুল কুটিল      | সাধীন ভৰ্কা        | ७ऽ२         | 8     | 3 <b>•</b>  | ა <b>ს</b> ვ 1              |  |
| আরে নোর আরে     | নিতাই মহিমা        | • • • • •   | 8     | 22          | 12 g                        |  |
| আরে মোর আরে     | ঐ হাটপত্তন         | ৩৯২         | 8     | 22          | 2• h                        |  |

ন পংসং ২০০ পৃঃ। b পংসং ৬২ পৃঃ। ৫ পংক: তঃ "ওরে ভাহ" বনিয়া আরত। d পংক: তঃ রাসে। ৩ পংক: তঃ থডিভার এবং পংসং ১৭৬ পৃঃ। পিঃ সং ৪৭৪। g জ্ঞানদাস কুত।

li ৰণরাম দাস রুও এবং "প্রত মোর" ইতি পাঠে পঃ কঃ তঃ আরিও।

| গীভের আরস্তাংশ।   | । / ८कान् ब्रदमब्र शान । | <u>Fe-</u>      |       | পদকল্পভরুতে। |                        |  |  |
|-------------------|--------------------------|-----------------|-------|--------------|------------------------|--|--|
|                   |                          | ग्रास्थ्य श्रीक | 11411 | मुख्य ।      | शटन त्र '<br>न च द्र । |  |  |
| আজু পেথলু         | বিভ্ৰম                   | ৩৯৯             | •     | •            | •                      |  |  |
| আগে পাছে মোরা     | রূপাসুরাগ                | 8₹•೨            | 3     | Ţ •          | 21 .                   |  |  |
| আ ওয়ে কুম্বনে    | কুষ্ণের রূপোলাস          | 8:4             | •     | ٥            | •                      |  |  |
| আর কত দাণ         | गारन गणी-श्रातांभ        | ·559            | 2     | 19           | æ                      |  |  |
| ইহ্নব বঞ্চ        | मथीरक कृत्छत्र देवन      | 885             | •     | 0            | • :                    |  |  |
| উ:জার শশধর        | বিপ্ৰলব্ধার দূতী         | २५७             | 2     | 8            | 1.4 a                  |  |  |
| উদ্বোর রাতি       | বাগক সজ্জা               | <b>~</b> @9     | 2     | 8            | & b                    |  |  |
| ঋতুপতি রাতি       | উৎকঞ্চিতা                | 542             | 2     | 8            | I · C                  |  |  |
| ঐ ঐ বিরহ          | বিপ্ৰলন্ধার দৃতী         | >> 2            | 2     | 8            | 1 <b>૭</b> ત           |  |  |
| এ স্থি এ স্থি     | মৃদ্ধা অভিসারিণী         | 74              | •     | •            | • 6                    |  |  |
| এ সপি কি পেপলু    | রূপা <b>তুরাগ</b>        | ৬৩              | •     | •            | • f                    |  |  |
| একে কুলৰতী        | অ:কেপানুরাগ              | <b>%</b> 8      | 3     | 11           | 142                    |  |  |
| এমন নিভাই         | নিতাই মাধুরী             | 99              | •     | •            | •                      |  |  |
| এ সপি অব সব       | প্রেমাৎকর্ষ ব্যাখ্যা     | : 55            | •     | •            | •                      |  |  |
| এ হরি এ হরি কর    | রাধা বিরহে দৃতী          | ২•৯             | •     | •            | •                      |  |  |
| এনা কপা ভোমা      | কুংফঃর বিরহে দৃতী        | <b>٤</b> >>     | •     | •            | •                      |  |  |
| এ কান্ত্ এ কান্ত্ | রাধার রূপমাধুরী          | २७७             | •     | •            | •                      |  |  |
| এ কান্তু এ কান্তু | রাণার রূপমাধুরী          | C80             | •     | •            | • ;                    |  |  |
| ত্ৰ দখি বিধি কি   | ক্নফের প্রেমোৎকণ্ঠা      | \$88            | I     | ъ            | 2.4 -                  |  |  |
| এ স্থি রুমণী      | রাধা স্থীর সাম্বনা       | २৮8             | o     | a            | o                      |  |  |

a পা সা ১৫ পৃঃ দেখ, "মাধ্ব মনমধ" পাঠে পা কা ভা আৰম্ভ ।
b পা সা ১৫০ পৃঃ। c পা কা ভা আৰম্ভ "মধুৰতু রজনী" পাঠে।
d পা সা ১৫০ পৃঃ। e কালীবাবুর বিদ্যাপতি ৭০ পৃঃ।
কোলীবাবুর বিদ্যাপতি ৪৪ পৃঃ দেখ।

| গীতের আরন্ডাংশ।   | কোন্ эেশের পদ।          | <b>K</b>      |        | পদকলভক্তে।  |                  |  |
|-------------------|-------------------------|---------------|--------|-------------|------------------|--|
|                   |                         | अरङ्ग शृष्टीक | जी थी। | শন্তব -     | भटमञ्ज<br>नश्ज । |  |
| ध ४नि ७ ४नि       | স্বাধীন ভৰ্তৃকা         | ৩১৩           | 8      | 3•          | 253 a            |  |
| এ ধনি পহ্মিনী     | অভিসারানন্দ             | 985           | 3      | 14          | 13               |  |
| ও ধনি পহ্মিনী     | মুগুরি স্থরত বাম্য      | 49            | 1      | 3           | 13 b             |  |
| ७ नत ज्वधन        | যুগল রূপ                | ৩৬৬           | 3      | 8           | 3 C              |  |
| ক্তই মনোরণ        | মুগ্ধার লজ্জাসকোচ       | 82            | •      | •           | •                |  |
| 🕶 वत्री ভरत्र 🕟   | ক্ষের রগরঙ্গোক্তি       | 82            | 3      | २६          | es d             |  |
| কহ কহ এ স্থি      | স্পীর পরিহাস            | ₩8            | •      | •           | •                |  |
| কভ পরী খগি        | मारन कृत्कत रेमञ्ज      | >0>           | 2      | 17          | 25 e             |  |
| কত পরী পসি        | मारन कुरमभ्त्र देवस     | ৩০১           | •      | •           | •                |  |
| <b>কঞ্চরণ</b> যুগ | অভিসংরে রাধারূপ         | >88           | 3      | 14          | ə f              |  |
| 🅶 🗷 এ কলাবতী      | कृत्कत्र ब्राटेशक लानमा | ₹8€           | I      | 3           | ə g              |  |
| করতলে কুসকুমে     | স্বাধীন ভর্ত্তকা        | २∉२           | 8      | 14          | re h             |  |
| কণ্টক কল          | উৎকণ্টি ভা              | 96F           | •      | •           | •                |  |
| কণ্টক মানে        | मानिनीरक खरनाध          | ৩৮৩           | ٠      | •           | • i              |  |
| करब रम रुहेरव     | ক্লুকোর অভ্যুৎকণ্ঠা     | 830           | I      | <b>&gt;</b> | 22 j             |  |
| कमन वष्रगी        | অভিসারের শোভা           | 888           | •      | •           | •                |  |
| कम्ब उन्न         | বন-বিহার, রাস           | 8 ។ ឯ         | 3      | 1 a         | . 12 k           |  |
| কাহে ডরসি         | মুগ্গাকে প্রভারণা       | ₹•            | •      | •           | •                |  |

|                 | র আরম্ভাংশ। কোন্,রসের পদ। | 100          | পদকল্পতক্তে। |          |                    |  |
|-----------------|---------------------------|--------------|--------------|----------|--------------------|--|
| গীতের আরম্ভাংশ। |                           | এছের পৃষ্ঠাক | भावा ।       | <u> </u> | शंदमन्न<br>नचन्न । |  |
| কানু হেরব       | মৃদ্ধার আক্ষেপ            | 69           | •            | •        | • a                |  |
| কাহে কাতু ঘন    | <b>ক্ৰপাত্</b> রাগ        | ৯৭           | I            | 1.       | ı b                |  |
| কাথকো সলেশে     | উংক ক্টিডা                | 209          | 2            | ٩        | I o C              |  |
| কাঞ্চন গোরী     | রাধার জড়িমা              | 3.90         | 1            | 9        | 3 <b>e</b> d       |  |
| কাণিন্দী ভীর    | রাস                       | 8 ५२         | 3            | 2.4      | 12 e               |  |
| কাঞ্ন মণি       | রাশ                       | 867          | 3            | 2.4      | ৬ f                |  |
| কিৰা রূপে কিবা  | রাধার আক্ষেপ              | <b>«</b> •   | 3            | 11       | 12t g              |  |
| কি কহব ব্লে     | মুঝার মিলন                | er           | I            | ¢        | 14 h               |  |
| কি হেরিমু ওগো   | গোরাঙ্গ মহিমা             | ৬。           | •            | •        | •                  |  |
| কিমুচক্রাবলী    | উৎ ক ঞ্চিতা               | > 6          | 2            | 9        | 13 i               |  |
| কিয়ে গুরু গর   | অহুরাগ                    | 369          | •            | •        | • j                |  |
| কি পেখল্        | রূপাহুর <u>া</u> গ        | 4:5          | •            | •        | •                  |  |
| কি কহৰ মাধৰ     | চিন্তা-দশা                | ₹.28         | 8            | 11       | 8 k                |  |
| কিবা সে দোহার   | বিপরীত কেণী               | २৫∙          | 3            | 12       | ۲                  |  |
| কিয়ে হিমকব     | কুম্খের প্রৌচ্ছেগ         | ૭ ગ્રુષ્ટ    | I            | ٠        | 25 I               |  |
| কি কহব রাই      | <i>ব</i> ্যোৎকাভিসার      | ৩৫৪          | •            | •        | •                  |  |
| কি পেখলু বে     | অপূৰ্ব কেণী               | ৩৬৫          | 3            | ь        | 14 n               |  |
| কিং বিভনোদি     | অভিসারোংক্ঠা              | e f 8        | •            | •        | • n                |  |

a কালীবাব্র ৪০ পৃ:। b প: ক: ত: রসোদগারে। c প: স: :৬০ পৃ:।
d প: স: ৫৬ পৃ:। c প: স: ২২৮ পৃ:। f প: স: ২২৪ পৃ:। g "মনের
মরম কথা" প: ক: ত: আরস্ত। h "অভিনব গোরী" প: ক: ত:
আরস্ত। i গীতাবলী ২৭নং গান। j প: স: ২৪০ পৃ:। k প: স:
৩০৭ পৃ:। l প: স: ১১২ পৃ:। m প: স: ৪৭০ "দেখ স্থি" পাঠে
ও প: ক: ত: পেথমু পাঠে আরস্ত। n গীতাবলী ১৮ নং গান।

| গীতের আরম্ভাংশ।    | কোন্রদের পদ।       | 1 10            | পদকল্ভকতে। |      |                    |
|--------------------|--------------------|-----------------|------------|------|--------------------|
|                    |                    | ग्रहत श्रृष्टाङ | MINI -     | मूम् | शटल त<br>सञ्चत्र । |
| কি কহৰ তোহারি      | ক্ষের প্রোচ্দেগ    | 8२9             | •          | •    | •                  |
| কুন্দন কনয়া       | গৌরচক্তের মহিমা    | २೨              | 8          | 2•   | зт а               |
| কুস্থমাবলীভি       | বাসকসজ্জা          | > 8             | 2 .        | ٩    | ь р                |
| কুচপর ধরণ          | সম্ভোগ             | f CC            | 1          | ٩    | د»                 |
| কুৰকুহ্ম           | জ্যোৎসাভিদার       | 8>¢             | 2          | 8    | 2                  |
| কুঞ্জ ভবন          | র:সলীলা            | 868             | •          | •    | • c                |
| কেণী বিপিনং        | অভিযার             | ১•৩             | •          | •    | • d                |
| কে যোৱে যিলাঞা     | চিজেকো দশা         | २৮०             | 8          | 8    | 12 C               |
| কেশ কুটিল          | नागरत्रत्र देवमध्य | ৩৮ ১            | •          | •    | •                  |
| কেন্দের বেশে       | গোরাঙ্গের মাধুরী   | 8 • ¢           | 8          | 19   | 29                 |
| কোমল শশি           | রাসলীলা            | 894             | 3          | 24   | 24 f               |
| थरन थरन            | রাধার বয়ঃগন্ধি    | ٥4              | 1          | 8    | 19 g               |
| <b>थञ्जन</b> গञ्जन | निडाहे माधूरी      | <b>২</b> .৩•    | 8          | 22   | ə h                |
| গোবিন্দের অঙ্গে    | গৌরচক্রের রূপ      | १२              | 8          | 16   | r3 i               |
| গৌর দেহ স্থচারু    | বিপরীত বিলাস       | <b>ś</b> 22     | 3          | 14   | 16 j               |
| গোরা দয়ার         | ধোর:জ মহিমা        | २०५             | 8          | 16   | 11                 |
| खङ्कम नद्रन        | শুক্লাভিগার        | २२२             | 3          | 13   | ⊌ k                |

a পাং সাং ৮০। b পাং সাং ১৪৯। c সাং সাং সাং ১৫০ "দেখারে স্থি"
আরম্ভ। d জগরাথবার লাটক ৩ আর ৩৭ নং। e পাং সাং ২৯৯
ভূতবিরহে। f গীভাবলী ১৬নং। g পাং সাং ৮২ "খেনে খেনে" পাঠে
ও পাং কাং তাং "ক্ষণে ক্ষণে" পাঠে আরম্ভ। li পাং কাং তাং "আঞ্জন
গঞ্জন" পাঠে আরম্ভ। i "গ্লাধর আক্রে" পাং কাং তাং আরম্ভ।
j পাং সাং ২০৪ পাং। k পাং সাং ১৪১ পাং।

|                        |                     | श्रुवास ।   | পদ⊄য়তকতে। |                 |              |  |
|------------------------|---------------------|---|------------|-----------------|--------------|--|
| গীতের আরম্ভাংশ।        | কোন্রদের পদ।        | त भाग । किंदि —  <br>  किंदि   किंद   किंदि   किंदि   किंदि   किंदि   किंदि   किंदि   किंदि   किंद   किंद | शन्न ।     | পদের<br>নম্ব। - |              |  |
| গোরা করণাগিন্ধ্        | গৌরঃঙ্গ মহিমা       | २०৮   | 8          | 2 •             | 33 a         |  |
| গোরা হেমজলদ            | ে. বাঙ্গ মহিমা      | ৽র৩   | •          | •               | •            |  |
| (भोताक टिकिन           | গৌরাঙ্গ ভাববিলাস    | 8२•   | 8          | 11              | 1.4          |  |
| 'গোরাঙ্গ নিহরই         | গৌরাঙ্গ ভাববিলাস    | 8.95  | 8          | I۲              | 35 b         |  |
| ্গেলি কামিনী           | কুষ্টের রূপানুরাগ   | 8.9€  | I          | 3               | 8 C          |  |
| इत्त वन नीপ            | বাদকদজ্জা           | २৮०   | •          | •               | • d          |  |
| চুণে নিজ পদভরে         | নিভ্যানক মহিমা      | ₹ €   | 8          | 23              | 2            |  |
| ু <b>ট</b> ম্পকদাম     | ক্লংশুর প্রোচ়বেগ   | '5@   | •          | •               | • e          |  |
| ্ঠুচৰ চৰ ডিঠ           | गाटन इति विषाग्र    | : 00  | •          | •               | •            |  |
| চলিণা রসিক             | বিপ্রণকার সন্মিলন   | 141   | 2          | 8               | 1 <b>6</b> f |  |
| চম্পক শোণ              | গৌরাঙ্গ মাধুরী      | २ <b>:</b> 8  | I          | I               | 3 g          |  |
| ् हञ्जवननी             | শুক্লাভিদার         | <b>૭</b> 8 <b>૨</b>   | 2          | 9               | 8            |  |
| চান্ত্র মরদ            | সুরত কথায়ত         | 95  | 0          | •               | • lı         |  |
| চান্দ নেহারি           | নাগরের প্রোচ়দ্বেগ  | ৩৯৭   | I          | ь               | 2 <b>5</b>   |  |
| চিরদিনে সো             | বিপ্রশ্বরা মিলন     | >> c  | •          | •               | • i          |  |
| চিন্নদিনে সো           | সম্পূৰ্ণ সভোগ       | 8•३   | 8          | 1.4             | 14 j         |  |
| <b>চুস্বনে न्</b> र्वध | বিপরীত সম্ভোগ       | २२७   | o          | o               | 0            |  |
| চু  ছি চুড়            | রাধার ক্ষপাত্রাগ    | <b>૨</b> ૧૨   | >          | 8               | ь k          |  |
| চৌদিগে গোৰিন্দ         | গোরাঙ্গের দহীর্ত্তন | 840   | 2          | 3               | 2 1          |  |

ন প: স: ২১ পৃ: ও প: ক: ত: তে "কৰি তিনির" পাঠে আরন্ত।
b প: ক: ত: আরন্ত 'কাঁতা কাঞ্চন নণি"। ০ প: ক: ত: পূর্বরাগে।
d প: স: ১৫১। ৫ প: স: ১৫। পি: স: ১৬১। ৪ প: স: ১৮।
h ( আখাদনীতে ) স: সা: স: ১৫। i হরিবল্লত কুত। j বিদ্যাপতিক্ত
প: ম: ৩১৮। k প: ম: ৪০প্: । l "ভাশভাবি" শ: ক: ত: আর্ড।

| গীতের আরম্ভাংশ।<br>-  | <b>८कान् त्र</b> त्यतः शकः। | <u>k</u>        | পদকলভক্তি। |         |                          |  |
|-----------------------|-----------------------------|-----------------|------------|---------|--------------------------|--|
|                       |                             | बाइदे हें अहा ह | माथा।      | श्रिव - | পट्पत<br>न <b>चत्र</b> । |  |
| জয়রে জয়রে গোরা      | গোরাঙ্গের সংস্কীর্ত্তন      | 864             | ı          | 1       | ₹ a                      |  |
| জয় জগভারণ            | নিভ্যানক মহিমা              | ₽8              | 1          | 1       | 8 b                      |  |
| ডাহিন নয়ন            | ভাকে পানুরাগ                | 8२७             | 3          | 11      | <b>49</b> C              |  |
| টেল টেল সজল           | স্বাভিযোগবর্ণন              | ৬৫৩             | I          | 8       | 9 d                      |  |
| তপত কাঞ্চন            | গৌরাঙ্গের রূপ               | २०৮             | 3          | I •     | 12                       |  |
| ভপন কিরণে             | মানিনীকে মিনতি              | ৩৮ ৪            | O          | O       | O                        |  |
| ভব চঞ্চণ              | দৃতীর প্রতি মানিনী          | ৩৭৫             | 2          | 16      | રુ ૯                     |  |
| ভরণ নয়ন              | সুরত কথাসূত                 | २७              | 0          | 0       | o f                      |  |
| তুয়া গুণে কুলবতী     | মুগ্ধার সমর্পণ              | ૭ર              | 0          | U       | O                        |  |
| তুরা অপরপ             | রারার উদ্বেগ দশা            | २०४             | 1          | 9       | 29 g                     |  |
| তুহ যদি মাধব          | মাধবের প্রতি উক্তি          | >>>             | 2          | F 1     | ૭૧ h                     |  |
|                       |                             |                 | 8          | I 9     | 3 <i>3</i>               |  |
| ত্বং কুচৰল্লিত        | অভিসারে স্থীণাক্য           | 889             | c)         | 30      | e> i                     |  |
| থরহরি কাঁপ            | সংক্ষিপ্ত নবোঢ়া            | २२              | o          | 0       | o j                      |  |
| <b>एत्र</b> भटन सम्रम | সম্পূর্ণ সম্ভোগ             | २२৫             | . <b>o</b> | o       | o                        |  |
| ত্ত ত্ত নয়ন          | কামকলা রঙ্গ                 | 286             | o          | o       | 0                        |  |
| ছ্ছ ভমু এক            | কুজ-বিহার                   | 210             | ૭          | 8       | 9 k                      |  |
| দূর সঞে নয়নে         | মানিনীকে শিক্ষা             | ७०१             | •          | 36      | ٠                        |  |
| <b>म्</b> ठी विम्बन्न | দৃতী প্রতি মানিনী           | ৩৭5             | ২          | 34      | ۵ 1                      |  |

a প: স: ১৯। b "ডগমগ" পাঠে কোন কোন গ্রন্থে আরম্ভ।
c "মনমগ তোহে" প: ক: ভ: আরম্ভ। d প: স: ৪২। e গীতাবলী
১১নং। f (আসাদনীতে) স: সা: স: ১৫। g প: স: ৫২।
h আসাদনীতে। i গীতাবলী ২৫নং প: স: ১৩৬। j কালীবাবুর

<sup>48</sup> शृः। k "मनवज" शः कः छः आवस्य। 1 श्रीटावनी ১১ नरः।

|                     | ]                  | i ke          | 1     | পদকল্পভ   | ক্তে।               |
|---------------------|--------------------|---------------|-------|---|---------------------|
| গীতের আরস্তাংশ।     | কোন্রদের গাম।      | शरक्ष श्रम    | 1 1/2 | 6<br>10<br>10<br>10<br>10<br>10<br>10<br>10<br>10<br>10<br>10<br>10<br>10<br>10 | शंटमञ्ज<br>सङ्ग्र । |
| দৃঢ় পরিরম্ভন       | প্রগ্লভ'র সম্ভোগ   | २७१           | •     |   | , •                 |
| দেখ দেখ সোই         | মহাপ্রভুর মহিমা    | 9             | Ò     | •   | Ó                   |
| দেখ সখি অট          | উৎকন্তিতা          | 308           | ъ     | ю   | • a                 |
| দেখ সবি রসিক        | (क लो द्रिम-द्रक्र | ১৮৩           | ø     | Ò   | o                   |
| <b>८</b> पथरत जो हे | নিত্যানক মহিমা     | 366           | •     | •   | •                   |
| দেথ স্থি নাগর       | সধীর ভংগনা         | ২৯৯           | 8     | et  | 18 b                |
| (मथ एमथ स्कन्न      | গোরাঙ্গের রূপ      | 460           | 8     | 16  | 35 0                |
| দেশত নিত্যানদ       | মিত্যানৰ মহিমা     | <b>৩</b> ৬৯   | 8     | 22  | 14                  |
| দৈখ দেখ রাগা        | আবেশময় সম্ভোগ     | 859           | o     | Ö   | o                   |
| ८माटह (मार्शनित्र   | মি নৈ প্রেমাবেশ    | ۶۰            | •     | ь   | •                   |
| <u>উ</u>            | উ উ                | 859           | •     | •   | •                   |
| দোহ মুগ স্থন্তর     | যুগলমাধুরী         | २७१           | 2     | 3   | 12 d                |
| ধনিগো আজু           | রাধার বয়ংসঞ্জি    | >>            | ı     | ь   | II e                |
| ধরি স্থি আচর        | সংক্রিপ্ত নবোঢ়া   | ٤ ۶           | t     | 8   | 34 <b>f</b>         |
| धनि धनि हन्         | অভিসারার্থ উত্তেজ  | না ৬৭         | •     | •   | •                   |
| ধনি ধনি রাধা        | অভিদার শাধুরী      | ৬৮            | •     | •   | •                   |
| ধনি তুহ দুভি        | দুতী বচনে উপেকা    | \$ <b>?</b> ¢ | •     | •   | •                   |
| ্ধনি নাগর           | বিপরীত বিকাস       | >89           | 3     | 24  | 80 g                |
| ধনি ধনি রাধা        | মাধবের রূপে রাস    | ১৯৬           | ò     | •   | •                   |
| ধনি ধনি কো বিছি     | ক্র ক্র            | <b>২</b> :৩   | 3     | 14  | o li                |

a প: স: ১৫৭। b প: স: ২৩৫ প: দেখ, "মুঞি জানো" পাঠে— প: ক: ড: আরস্ত। c 'লাথ বাণ' পাঠে প: ক: ড: আরস্ত। d প: স: ৪৬৬। e 'বিব গোধ্নী' পাঠে প: ক: ত: আরস্ত। পি: স: ১ ১। g ''ভরি নামক" প: ক: ড: আরস্ত। h প: স: ৪৬৩।

|                   | কোন্রদের পদ।        | Ke            | 1     | পদকল | इक्ट ।          |
|-------------------|---------------------|---------------|-------|------|-----------------|
| গীতের আর্বস্তাংশ। |                     | अत्युत शृक्षा | म रहे | भू   | भटनज<br>सम्बर्ध |
| धनि ठलि चा ५लि    | কুঞ্জ:ভিসাব         | ৩৽৬           | •     | •    | •               |
| ধনি ধনী বনি       | অভিসার মাধুণী       | ಆತಿ           | 2     | 3    | 10              |
|                   |                     |               | ૭     | 13   | 89              |
| नव (योवनी         | অভিসার ও মিল্ন      | २ ८%          | 3     | 14   | 3               |
| নাচে গোরা প্রেমে  | গৌরাঙ্গের ভাব-বিলাশ | ६४ः           | 8     | Ib   | 15              |
| নারহে গুক         | ই রাধার বয়ঃসন্ধি   | 20            | 1     | 5    | 4 a             |
| ন:চে পছ নিত্যান দ | নিতাইটাদের নৃত্য    | 220           | 4     | 22   | 25              |
| নিতাই মোর         | নিতঃইচাদের মহিমা    | 84            | 8     | 22   | 29              |
| নিতি নিতি আগি     | রূপান্র'গ           | 9@            | I     | 7    | ď.1             |
| নিরূপম কাঞ্চন     | অভিসার সৌন্দর্য্য   | ১৫৯           | 3     | 28   | २७              |
| নিতাই হংকর        | নিত্যানক মৃতিমা     | 219           | •     | •    | •               |
| নির্মণ বদন        | দ্রীক্ষের রূপানুরাগ | २७२           | 1     | ۲    | 2               |
| নিতাই গুণমণি      | নিতাাতক মহিমা       | २8 <b>১</b>   | 3     | I    | 2               |
|                   |                     |               | 8     | 22   | 15              |
| নি খাই করণা       | নিতানক ২০িমা        | २ ५०          | 8     | 22   | I •             |
| নি তাই রঙ্গিয়া   | নি তাৰিক মহিমা      | රාව           | 8     | 22   | 12              |
| নিজ ঘর মাঝ        | শ্রীরাধার লাণসা     | <b>2</b> 82   | I     | 9    | 2€              |
| নিশসি নেহারসি     | শ্রীরাণার লালসা     | ৩৯৫           | I     | 4    | 4 b             |
| নিতাই কেবল        | নিত্যানক মহিমা      | 823           | 4     | 22   | 2 I             |
| নিতাই চৈত্ত       | গৌরনিভ্যান্ক মহিমা  | 8 9 9         | 4     | 23   | •               |
| নিশ্ভিচলন         | রাণার বিরভোন্মাণ    | ८ ७७          | •     | •    | •               |
| নীল রতন কিয়ে     | রূপাসুরাগ           | <b>୯</b> ଓ ବ  | •     | •    | • C             |

a পঃ সঃ ৮৪। b পঃ সঃ ৩০ পৃঃ পূর্করাগে। c পঃ সঃ ৬৮ পৃঃ পূর্ক রাগে।

|                        | কোন্রদের পদ।         | Re             |    | পদকলভকতে।     |                           |  |
|------------------------|----------------------|----------------|----|---------------|---------------------------|--|
| গীতের জারস্তাংশ।       |                      | गरछत्र शृक्षाङ | -  | <u>भ</u><br>भ | , পरमत्<br>म <b>स्</b> व। |  |
| नीविय मृशमाम           | ভি <b>নিরাভি</b> সার | ባ৮             | 3  | 13            | a a                       |  |
| পরিছর এ স্থি           | অভিসারে মুগ্ধা       | 90             | I  | 5             | ⊌ h                       |  |
| পশ্যতি দিশি            | রাধার প্রৌঢ়ানন্দ    | >>>            | 2  | 9             | ъc                        |  |
| পৃত্ল সমাগ্ৰ           | অংবেশময় বিলাস       | 3.66           | 2  | τ             | to d                      |  |
| পরশিতে চমকি            | রস কৌ হৃক            | १६८            | •  | •             | •                         |  |
| পতিত ২েরিয়া           | শ্রীগোরাক্ত মহিমা    | 368            | 4  | 2 •           | 30                        |  |
| পহিলহি রাধা            | বিলাস-কৌ ভূক         | ৩•৯            | r  | 2             | 2 ₹ e                     |  |
| পূরুবে গোবর্দ্ন        | নিত্যানক মহিমা       | <b>&gt;</b> २० | 4  | 22            | 14                        |  |
| পুরতে বিপিন            | শুক্লাভিদার          | 800            | o. | •             | •                         |  |
| প্রেমেনত মহাবলী        | নি গানল মহিমা        | ¢              | 4  | 22            | 25                        |  |
| প্রেমরতন ধনি           | গোষেণে অি সাব        | 69             | •  | •             | •                         |  |
| প্রেম আ গুণি           | দৃতীর মুখে অত্রাগ    | >50            | >  | ১৯            | ર                         |  |
| প্রেমেয়ন্ত নিভ্যানন্দ | নিত্যানদের প্রেম     | > @ >          | 8  | 22            | 3€                        |  |
| প্রেমকো কাহিনী         | নাণবের রাধাপ্রেম     | > @ @          | •  | •             | •                         |  |
| প্রেমকো সাগর           | সন্মিলন কেলীবিলা     | ৰ ৬৬৩          | •  | •             |                           |  |
| देशक्रेनी ८ म्नी       | স্থিকনানন্দ          | 8२२            | ė  | •             | •                         |  |
| ম্ফুরদিকীব <b>র</b>    | ক্লাগবিহারীর জর      | 891            | •  | •             | • g                       |  |
| বরণি নাহয়             | <b>এীকুফে</b> র রূপ  | 8 ì            | 8  | 29            | 35                        |  |
|                        |                      |                | ર  | >             | o lì                      |  |

a পা সা ১৪১ পূ:। b পা সা ১২২ পূ: এবং গীতগোবিক ১২নং।
c পা সা ১৫২ পূ: এবং গীতগোবিক ১২নং। d পা সা ৪৮৯।
e পা কা তা নবোঢ়াতে এবং পা সা १० পূ:। গীতাবলী ১৯নং।
g "বিক্চ সবোদ্ধ" পাঠে পা কা তা আবস্ত পা সা ৩২ পূঃ।

| গীতের আরম্ভাংশ।     | কোন্রদের পদ।             | <u>k</u>     | পদকল্বকৃতে। |       |                   |  |
|---------------------|--------------------------|--------------|-------------|-------|-------------------|--|
|                     |                          | अरहर श्रेष्ट | आया ।       | भूष्ट | भएमत<br>सम्बद्धाः |  |
| ৰহতি মলয়           | মানিনীর সখ্যুক্তি        | 200          | 8           | 30    | <b>23</b> a       |  |
| ক্র                 | ছ                        | ৩৬৩          | 8           | 7.9   | २२                |  |
| ৰদসি যদি            | যানিনীকে অনুনয়          | २२०          | 2           | 13    | 10 p              |  |
| ৰাখন না কর          | বিপ্ৰশন্ধার প্ৰতি        | <b>3</b> 26  | 2           | 2 I   | ₽ C               |  |
| बानि विनामिनी       | সংক্রিপ্ত সম্পূর্ব-সন্ধি | 9•           | •           | ٩     | •                 |  |
| ৰাসিভবারি           | ৰাসকসজ্জা                | ৩৫৬          | 2           | 8     | a d               |  |
| ৰাম্বত ডক্ষ         | ৰাসনীলা                  | 869          | 3           | 94    | 14                |  |
| বিশ্বস্তুর মূর্ত্তি | গৌররূপ                   | 88           | •           | •     | •                 |  |
| বিরহ ব্যাকুণ        | রাধা বিরহে দশা           | <b>১</b> २७  | 2           | 19    | 8 e               |  |
| বিমল হেম            | গৌরাঙ্গের ভাবাবেশ        | 486          | 2           | 5     | ı f               |  |
| বিরলে বিসয়া        | পৌরাঙ্গের বিরহ           | 290          | 8           | 8     | 2                 |  |
| ক্র                 | Ā                        | ৩৪৭          | 8           | 8     | 2                 |  |
| ৰিগলিভ চিকুর        | বিপরীত বিহার             | <b>7</b> F8  | 3           | 15    | 19 g              |  |
| বিনোদিনী কনক        | তিনিরাভিগার              | :58          | 3           | 13    | 43                |  |
| ৰিরচিত চাটু         | गानिनोटक थारवाय          | ৩•২          | 2           | 15    | 1 h               |  |
| বিষম বিশিধ          | यानात्य गिनन             | <b>୬8</b> €  | •           | Q     | •                 |  |
| ৰিপিনে মিলল         | রাদে উপেকাভঙ্গী          | 8 & 45       | 3           | 24    | 4                 |  |
| বুঝিব ছওল           | নায়ক-শিক্ষা             | ۴.           | •           | •     | 4                 |  |
| वुन्त। विनिदन       | অভিসারে সিলন             | 88 <b>5</b>  | •           | 4     | •                 |  |

a গীভগে বিক ১০নং। b গীভগোবিক ১৯নং। c আতাদনীতে; পং পং
২০৪ পুং। d পং সং ১৫০। e "বিমোহে" পং কঃ ভঃ আরম্ভ।
পিঃ সং২০ পুং। g পঃ সং২৩৪। h গীভগোবিক ২০ নং।

| গীতের আরস্তাংশ। | কোন্রদের পদ।        | গ্ৰহের পৃষ্ঠাহ্ব। | পদকল্পতক্তে। |        |                |  |
|-----------------|---------------------|-------------------|--------------|--------|----------------|--|
|                 |                     |                   | म्राथा ।     | शह्न द | পদের<br>নম্বর। |  |
| ভক্তি রতন       | নিত্যানক মহিমা      | ৬১                | 8            | 22     | Í٩,            |  |
| ভাবে ভরণ        | গোরাঙ্গেম নৃত্যাদি  | 20¢               | 8            | 19     | 4•             |  |
| ভাশিনি পৃচ্ছম   | স্বাভিষোগে ভাব      | ७२२               | 1            | 8      | 9 a            |  |
| ভাব ভরে গর      | গৌরাঙ্গের ভাব       | २७৯               | 3            | II     | 111            |  |
| ভালে তৃহ মাধৰ   | রাধার বিলাস কলা     | 33%               | •            | •      | •              |  |
| মধুর মধুর       | রাধার প্রবোধ        | ۲»                | •            | •      | • b            |  |
| মরকত দরপণ       | রাধার মরণাকাজ্ঞা    | 4                 | I            | 4      | <b>≽</b> c     |  |
| মঞ্তর কৃঞ্তণে   | স্থীর প্ররোচনা      | 2.62              | 2            | 2•     | 1 • d          |  |
| মদন মোহন রূপ    | গোবাঙ্গের রূপ       | ১৮৬               | •            | •      | •              |  |
| মকর কুওল        | রপোলাস              | 419               | 3            | 2€     | 48             |  |
| নন্মথ মকর       | श्वशःकोटका देवनद्भी | ৩২৮               | 3            | I      | 9 е            |  |
| মরিয়াই এমন     | নিত্য!নন্দবিলাপ     | २१•               | 4            | 22     | 11             |  |
| মদন কিরাত       | अवश्टनोठा देवनकी    | ৩৪২               | 3            | I      | <b>b</b> f     |  |
| यहन यहां वाद    | বিশাস কেণী          | 8•9               | 4            | 14     | I •            |  |
| মণ্ডশী রচিয়া   | গৌরচক্রের নৃত্য     | 862               | 8            | 39     | 1•             |  |
| মধুর বৃকা       | রাসে বনবিহার        | 89.               | 3            | 29     | 96 g           |  |
| মণ্ডিত হলী      | রাস নৃত্য           | 8 <b>&amp;</b> @  | 3            | 2.4    | 19             |  |
| मञ्जाति मः मन   | স্বত কথামূত         | ८७८               | 3            | I¢•    | 14 h           |  |
| गाधव टेक्ट्     | পূর্ববাগে সথী       | २৮                | 0            | 0      | o              |  |

a গীতাবলীতে ৮নং ও প: ক: ত: "কুটিলং" পাঠে আরম্ভ । b প: স: ৬৬। c প: প: ৪১। d গীতগোবিন্দ ২১নং। e প: স: ২১৪। পি: স: ২১৮। g প: স: ২২৮ প: দেখ, প: ক: ত: বসন্ত-রাসে "বুন্দা-বিপিনে" পাঠে আরম্ভ। h আত্মাদনীতে।

গীতের বর্ণাপুক্রমিক সূথীপতা।

| গীতের সারস্তাংশ। | কোন্রদের পদ।          | श्रुक स्था     | পদকলভকতে। |     |                |
|------------------|-----------------------|----------------|-----------|-----|----------------|
|                  |                       | शरश्रद्ध शृक्ष | भावा ।    | भू  | পদের<br>নম্বর। |
| মাধৰ গুনহ        | বিতাংকার দৃগী         | ०५५            | o         | О   | •              |
| মাধ্ব স্থলরী     | B                     | ৬৬২            | •         | •   | •              |
| মাকুদ সুঞ্       | রাণার রভিকলা          | 9,0            | •         | •   | •              |
| মাধ্ব মনোরগে     | ক্নাের দৃ গীপ্রেবণ    | 878            | •         | •   | •              |
| মুপ মণ্ডল        | রাগারন্তে রূপ         | <b>c9</b> 3    | 4         | 29  | ze a           |
| गंतभनी जृङ       | মুগ্ধাব সংক্ষিপ্ত     | 8 9            | O         | o   | o              |
| ষ্ঠি য়ুঠি নিক   | রাধাকপে আভিবপা        | 294            | I         | 4   | 2• b           |
| ষমুনা যাইতে      | নাগরের মুগ্ধতা        | : જુર          | o         | o   | 0              |
| যব হরি হেরণ      | বিপ্রার সন্মিশন       | २৮१            | 2         | 19  | 35             |
| যা 9 বি বদনে     | মুঝ্নাকে সথীশিকা      | <b>२</b> `     | o         | O   | ос             |
| র ভিরদে চঞ্চল    | মুধার বিনাস           | 63             | 0         | O   | o              |
| রতি বিশারদ       | <u>(5</u> )           | 9 6            | o         | O   | o d            |
| ন্ত্রতিহ্ব শ্রন  | কুমেঃৰ <b>অ</b> ≁িদার | ৭৯             | O         | O   | o              |
| রভিনদে অতি       | মধ্যার সভ্যোগ         | 22             | 2         | 3   | 1.1            |
| त्रभनी जनम       | কুংফার আপুদ্তীর       | 64             | 1         | 4   | %1 e           |
| রুগ্রতী হোট      | মানিনীকে রস্বর্ধণ     | <b>२२४</b>     | o         | o   | o              |
| প্রতন সন্দির     | নাগৰের মনোভাব         | > 6 9          | I         | 3   | <b>a</b> f     |
| দ্বক্তিণী সংস্থ  | রাধাব দশা             | : 49           | o         | 0   | o              |
| ন্তি রণরঙ্গ      | দম্পূর্ণ সজোগ         | २৮৮            | ૭         | ં € | 7              |

a পাং সাং ৪৯। b পাং সাং ৯৪। c কালী বাবুর ৫৫ পৃং দেখ।
d ( আস্বাদনীতে ) সাং সাং সাং ২৫। ভ "ধনি ধনি" পাং কা তঃ আরিছ।
পিং কাং তং প্টীতে ধ্বল সংস্ধেনে।

| গীতের আরস্তাংশ।    | কোন্ রবের গান।        | <u> </u>        | পদকল্পতক্তে। |        |                |  |
|--------------------|-----------------------|-----------------|--------------|--------|----------------|--|
|                    |                       | वार्यम् शृष्टाङ | भावा।        | পল্লৰ। | * टाइ<br>स्थाः |  |
| রদ পরিপাটী         | গৌরাঙ্গের ভাব         | ৩১৭             | 4            | 20     | 2• a           |  |
| রমণি ধনি ধনি       | রাধার অভিসার          | લાહ             | 2            | 2      | to p           |  |
| রতিক্য মঙ্গল       | গস্ভোগ রগানন্দ        | 872             | •            | •      | •              |  |
| রাই কতপরি থসি      | मानिगोत्र देनरक्रांकि | 207             | 2            | 19     | 29 C           |  |
| <b>3 3</b>         | ক ক                   | 405             | २            | ۶٩     | रहे            |  |
| রাধাবদন বিলো       | মিলনে রূপমাধ্রী       | > 98            | 8            | 14     | ७ d            |  |
| ক ক                | के क                  | 836             | 8            | :8     | <b>.</b>       |  |
| রাইর বিপতি         | ক্বফের অভিসার         | 470             | o            | o      | o!             |  |
| ब्रावाकृषः निर्वनन | প্রার্থনা             | ₹€8             | 0            | o      | 0              |  |
| রাধানান আধ         | মাণবের প্রেমবর্ণনা    | २१७             | 0            | o      | • e            |  |
| রাধে নিগদ          | রাধার বিরহ পীড়া      | ৩২ •            | >            | 8      | ૭ ક            |  |
| রাধা মধুর বিহারা   | জ্যোৎস্বাভিগার        | ৩১৭             | 3            | 13     | 34 g           |  |
| त्राभा वषन ८२ति    | সভোগ                  | ೨೦              | 3            | 24     | ۶۶             |  |
| রাণে কলয়          | স্থীৰ প্ৰবোধ          | <b>9</b> 19     | •            | •      | • h            |  |
| রাধা গুণমণি        | কাস্তাভিসারিণী        | apo             | •            | •      | 0              |  |
| রাধা বদন নির্থি    | कृत्कात (क्षमातिन     | 8 2O            | o            | o      | 0              |  |
| রাধা কাহ           | নিকুঞ্জ বিগাস         | ৪৬৬             | 0            | O      | 0              |  |
| রাধার্ক প্রাণ      | প্রাথনা               | 866             | 8            | 36     | 96             |  |

n "গুনি বৃশা" গঃ কঃ তঃ আরম্ভ। b "ধনি ধনি" পাঠে পঃ কঃ তঃ আরম্ভ। c "চাহ মুখ তৃলি" পঃ কঃ তঃ আরম্ভ। d গঃ দঃ ৩৯০। পিঃ দঃ ৩৯৭। e সী ভাবলী ৭নং পঃ কঃ তঃ পূর্ব্বরাগে। g জগলাধন্ত নাটকে ও পঃ কঃ তঃ "চিকুর পাঠে আরম্ভ। h সী ভাবলীতে ৩৬ নং। i পঃ দঃ ৪৭৮।

| গীতের আরম্ভাংশ।   | <b>८कान ब्रह्मब्र शांन</b> । | ko               |       | পদকল্প ভরণতে।      |                |  |
|-------------------|------------------------------|------------------|-------|--------------------|----------------|--|
|                   |                              | গ্ৰন্থের পৃষ্ঠাক | भीथा। | <u>পূন্ধৰ</u><br>। | পদের<br>নম্বর। |  |
| রূপ দেখ সিয়া     | রাধার প্রতি মুখরা            | 9 <b>9</b>       | •     | •                  | •              |  |
| রুণে গুণে অনুপ্যা | নিত্যানল মহিমা               | ১৭৬              | 8     | 23                 | •              |  |
| ক ক               | ক ক                          | 989              | 8     | २२                 | ৬              |  |
| লাগিয়াছে কদম     | রাধ'র ব্যাধি                 | ৩৭               | •     | •                  | •              |  |
| <b>শ্রদ</b> চন্দ  | রাদে অভিদার                  | 848              | 3     | 2 ‡                | 3 a            |  |
| শুন শুন:ফুদরি     | মুগ্ধার স্থা-শিক্ষা          | ৩১               | •     | •                  | • b            |  |
| ভন্ভন এ স্থি      | ক ক                          | ৬৯               | >     | <b>ર</b>           | 22 C           |  |
| ভন সজনি           | রাধা বিরহ                    | \$82             | •     | •                  | •              |  |
| छनि भनी भिटतांमणि | মাধবের অভিসার                | <b>&gt;</b> 80   | •     | •                  | •              |  |
| শুন ওন মাণ্ব      | বিপ্ৰশ্বার দৃতী              | 240              | 2     | 8                  | ın d           |  |
| ভনি বর নাগর       | রাধা শ্রেমোৎকর্ষ             | २७७              | •     | •                  | •              |  |
| ভনিয়া দেখিয়     | আংকপামু গাগ                  | २१৫              | 3     | 11                 | 121            |  |
| শুন শুন সহচরী     | সহচরীর দৌত্য                 | ২৮৬              | •     | •                  | •              |  |
| ७० ७० इन्द्रि     | মানিনীকো প্রবোধ              | ৩৭১              | ર     | I 9                | œ              |  |
| ভন ভন মাধ্ব কহ    | রাধার দশনী দশা               | 873              | 8     | II                 | ७२ e           |  |
| ভন ভন মাধ্য পড়গ  | ক্ৰ ক                        | 825              | •     | •                  | •              |  |
| শৈশৰ ষৌৰন         | ধাধার বয়ংসন্ধি              | 28               | I     | 5                  | 3 f            |  |
| খ্যানর গৌর        | গৌরচক্তের মাহান্ত্য          | 114              | 8     | 2 •                | ৬              |  |
| শ্রীবাগ অঙ্গনে    | দকীর্ত্তন-রাদ                | <i>६</i> ७8      | 2     | I                  | 1              |  |
| সধী পরবোধি        | মুগ্ধার সংক্রিপ্ত            | ೨                | •     | •                  | • g            |  |

a পং সং ২০১। b কালী বাবুর বিদ্যাপতি ৫২। c পং সং ৬৯। d পং সং ১৬৬। e "মিকিন চিকুর" পাঠে পং কং তঃ আরম্ভ। f পং সং ৮০। g কালীবাবুর বিদ্যাপতি ৬০ পৃঃ।

| গীতের আরম্ভাংশ। | কোন রদের গাম।            | <u> </u>      | नैप्क्रंब्रडक्ट । |        |                     |  |
|-----------------|--------------------------|---------------|-------------------|--------|---------------------|--|
|                 |                          | अरङ्ड शृक्षाक | -   <del> </del>  | পল্লব। | পদের<br>নম্বর।      |  |
| স্ব দেব হাকারি  | রাধার ব্যাধি কি          | ·' <b>৮</b>   | •                 | •      | •                   |  |
| সঙ্কেত কেনী     | রাধা দৃতীর সাফল্য        | ¢¢            | •                 | o      | •                   |  |
| সহজই কাঞ্চন     | গৌরাঙ্গ মাধুরী           | ७७            | 8                 | >9     | २७ a                |  |
| সহজই খাম        | শ্ৰীক্ষের প্রেমার্ত্তত   | <b>b</b> b    | •                 | •      | •                   |  |
| সহজে নিতাই      | <b>ৰিভ্যান</b> ল মহিযা   | <b>અ</b> હ    | 4                 | 22-    | 3 <b>3</b>          |  |
| সজনি অকুপম      | মানিনীর চরিত             | <b>১</b> २१   | •                 | •      | •                   |  |
| সজনিঃমঝুমনে     | <b>র</b> পোল্লাস         | >8>           | o                 | •      | • b                 |  |
| স্প্ৰনি এতদিনে  | স্থীর উত্তেজনা           | > ५८          | •                 | •      | •                   |  |
| স্ঘনে আলিঙ্গন   | বিশরীত বিহার             | ₹8৮           | •                 | •      | •                   |  |
| সহজে লুনিকো     | রাধার জাগরণ দশা          | २७৫           | I                 | 2      | 14 C                |  |
| সজল জৰ্ধর       | রূপা <b>নুরা</b> গ       | <b>२</b> 98   | •                 | •      | •                   |  |
| সজনি কি আজু     | রূপা <b>তু</b> রাগ       | ૭૭૯           | •                 | •      | •                   |  |
| সজনি হেরি হেরি  | বিপরীভ বিহার             | ৩88           | 9                 | २१     | <b>७</b> 8 <b>d</b> |  |
| সহজাই আবা∻ন     | রাধা রূপানুরাগ           | <b>98</b>     | •                 | •      | •                   |  |
| সজনি অব কি      | উৎ ক ক্টি ভা             | ৩৬•           | •                 | •      | •                   |  |
| সজনি অপরপ       | মাধবের রূপান্ত্রাপ       | র∙৪           | >                 | •      | s f                 |  |
| সজনি কি কহব     | ধাধা প্রেমোৎকর্য         | <b>१२</b>     | •                 | •      | •                   |  |
| সরস বসস্ত       | <b>क्षीदां</b> मनीनाम दक | 864           | 2                 | 4      | ₹• g                |  |
| সাত পাঁচ দথী    | त्राधात व्याधि निषाम     | ৩৯            | I                 | ৬      | e h                 |  |

a প: স: ৪০•। b পদকল্লভিকা ৩০। c প: স: ৫৪ ও প: ক: ত:
পূৰ্ব্বিবাগে। d "রাধানাধন" পাঠে প: ক: ত: আরম্ভ ও প: স: ৪৭৭।
পি: স: ৯৮ ও প: ক: ত: তে পূৰ্ব্বাগে। g প: স: ৪৬৭ ও প: ক: ত:
বিপ্রাকা নিলনে। h "আলো সই!" প:ঠে প: ক: ত: আরম্ভ।

| , 15 Mars                | কোন্রসের পদ।             | এতের প্রাক্ত। | 1         | পদকল্পতরুতে। |               |  |  |
|--------------------------|--------------------------|---------------|-----------|--------------|---------------|--|--|
| গীতের আরম্ভাং <b>শ</b> । |                          |               | मा दिया । | श्रह्म व     | शटनत<br>नच्छ। |  |  |
| সাহসে ভরকরি              | मधात नकीर्व              | ১৩৩           | •         | •            | . •           |  |  |
| সাজল মদন                 | <del>ণ্ড</del> ক্লাভিদার | २१৮           | •         | •            | •             |  |  |
| সাজল কুহম                | ৰাসকস্জ্ৰা               | २१२           | 2         | 9            | · a a         |  |  |
| হ্মত তিয়াসে             | সন্তোগ-বৈচিত্ৰ           | ৬৯            | 1         | 2            | as b          |  |  |
| হ্বত সমাপি               | আবেশময় বিলাস            | \$ 25         | 3         | २१           | IO. C         |  |  |
|                          |                          |               | 4         | 3•           | 29२ d         |  |  |
| স্থ্যয় কাননে            | কুঞ্জাভিসারে মিলন        | २७৫           | •         | •            | •             |  |  |
| সুনারি কলয়              | স্থীর উত্তেজনা           | ৩২৪           | •         | •            | o             |  |  |
| স্থলরি ধরবি              | রাধার প্রেম-পরীক্ষা      | ४४४           | 3         | ۲            | 8 e           |  |  |
| ञ्चनवि माध्व             | মানে স্থীর সাস্ত্রনা     | ৩৭৩           | •         | •            | • f           |  |  |
| ञ्चलं वनत्न              | রূপোলাস (রুষ্ণের)        | 8 • >         | 2         | 25           | 34 g          |  |  |
| সো আসিতে হাম             | রাধার আ:ক্ষপোক্তি        | 8 <b>२৫</b>   | •         | •            | •             |  |  |
| স্তন বিনিহিত             | রাধার বিরহ বিকার         | oe>           | 4         | 16           | ≽ h           |  |  |
| क्तूत्र मिन्दी वत्र      | রাদবিহারীর জয়           | 899           | •         | •            | • i           |  |  |
| रुखन किम्                | অি <b>শ</b> ারে সতর্ক    | > > >         | ૭         | >8           | >> j          |  |  |
| र्तिशरण नागन             | কেলীবিলাস                | २७१           | •         |              | •             |  |  |
| হরিভুজ কল                | বিপরীত বিহার             | 889           | •         | •            | •             |  |  |
| <b>হেরই</b> তে হেরি      | রাধার বয়ঃস'ন্ধ          | २७            | >         | 8            | :> k          |  |  |
| च्यू त्रिमिनी व व        | রাসবিহারীর জন্ম          | 899           | •         | •            | •             |  |  |

a প: স: ১৫১। b প: স: ৭২। c প: ক: ত: তে সভোগ ! d প: ক: ত: রসালস ! e আসাদনীতে। f গীতাবলী ৩৬নং। g প: ক: ত: দানলীলায়। h গীতাবলী ৯নং। i গীতাবলী ১৯নং। j গীতাবলী ১০নং। k প: স: ৯১।

# দ্বিতীয় সূচীপত্র।

-- 4 504 5 --

#### পদকর্ত্তাগণের প্রদক্ষ।

- (১) অনন্ত দাস— জী চৈত্স চবিতামৃতে ইহার নাম আহৈত শাণাতে উল্লিখিত। বিভাবতার নিমিত্ত ইনি পণ্ডিত খ্যাভিতে পরিচিত ছিলেন। চৈত্য ভাগবতে আছে শ্রীমন্মহাপ্রভূ (১৪৩১ শকান্দে) প্রথম নীলাচল গমন সময়ে আঠিদারা প্রামে "পরমোদার ও পরম সাধু" অনন্ত পণ্ডিভের গৃছে "সর্ব্বরাত্রি ক্লফ্ডকথা প্রদক্ষে যাপন ও তৎপ্রতি ক্লপাদৃষ্টিপাত" করেন। এইপ্রন্থের ৯,১৪ এবং ২২ ক্লণদাত্রয়ের ৮নং গীতত্ত্ব এবং ৪,১০ ও ১৫ ক্লণদার প্রত্যেক ভৃতীয় সংখ্যক গীতত্ত্বয় এবং ১৬ গণদার ১নং, ২৯ ক্লণদার ৬মং এই নোট ৮টি গীত ইহার বিরচিত।
- (২) অনস্ত রায় বা রায় সনস্ত—রসিকানন্দের শিষা, নীলাচল বাসী ভক্তকবি। রসিক মঙ্গল প্রস্থে ইহার প্রসঙ্গ আছে এইপ্রস্থের ১১শ ও ২৮ ক্ষণদার ২নম্বরের গীত্ত্বয় ইহার ক্ষত। শ্রীচৈত্ত্য চরিতামুতোক্ত "অনম্ভ আচার্য্য" স্বত্ত্বব্যক্তি—পদক্রতক্তে তাঁহার ক্ষত পদ ২। ১টি আছে।
- (৩) আত্মারান দাস—ইনিও শ্রীমন্মহাপ্রভুর সমসাময়িক একজন প্রসিদ্ধ পদকর্ত্তা। শ্রীপণ্ডগ্রামে অম্বন্ত কুলে জন্ম। এগ্রন্থের ১৬ ক্ষণদার ২নং গীতটি ইহার রচিত (পদকরত রুর মতে ১ ক্ষংনং গীত ও ইহার কুত)
  - (৪) কবিরঞ্জন-এই গ্রন্থের ১ক্ষ ১ এবং ২৬ক্ষ ৬নং গীত ইহার বিরচ্ডিত
- (৫) কবিশেখর—চণ্ডীদাস বিদ্যাপতির স্থায় ইনিও বছতর পদাবলী প্রণেতা, ইহার নিজের পদেই প্রকাশ ইনি শ্রীপণ্ডের সরকার ঠাকুরের প্রাতঃশুদ্র রবু নন্দন গোস্থামীর শিষ্য, বোধহয় ইহার প্রকৃত নাম শ্লীশেশবর ইহার
  বিরচিত গীতগুলি—কবিশেশবর, রায় শেশবর, শেশবর, শ্লী শেশবর, ছথিয়া শেশবর
  পাপিয়া শেশবর, ও শেশবর দাস ভনিতাযুক্ত। এই গ্রন্থের ২ ক্ষণদার ৭নং,
  ১৭ ক্ষ ৯ ও ১৯ক ৫নং গান গুলি ইহার ক্ষত। কেহ কেহ বলেন চক্ত শেশব

ও ইহারই নামান্তর। কিন্তু নরোত্তন বিলাদে দৃষ্ট হয়—১০জনেথর, ঠাকুর মহাশবের শিষ্য।

- (৬) কানুদাস— এ গ্রন্থের ১ ক্ষণদার ২ নম্বরে ইহার বিরচিত একটী-মাত্রে গীত আছে। ইনি লালাচলবাসী কবি। রুসিকানন্দ ঠাকুরের শিষ্য। (রসিক্মঙ্গল গ্রন্থের)।
- (१) ক্লফলাস— এ প্রায়ের ২০ ক্ষণদার ১নং গৌরচন্দ্র পীতটি "ক্ষ্ণদাস" ভণিতাযুক্ত। সন্তবতঃ ইনিই প্রীচৈতক্সচরিতামূতকার ক্ষণদাস কবিরাজ। কারণ গৌরীলাস পণ্ডিতের অছল "দীন ক্ষণদাস" এবং ভামানক ঠাকুর "ছংখী ক্ষণদাস" নাম ব্যবহার করিতেন এবং প্রীচেতক্সচরিতামূতোক্ত অকি-ঞ্চন ক্ষণদাস, ক্ষণদাস বৈদ্য, শুদ্ধ ক্লীন আহ্মণ ক্ষণদাস, রাচ্দেশবাসী দিলবর ক্ষণদাস, কালাক্ষণদাস, বিহারী ক্ষণদাস, কি দেবানক মনোহ্রের ভাতা কৃষ্ণদাস, কেইই পদক্তা বলিয়া বুঝা যায় সা।
- (৯) গিরিধর দাস—এ গ্রন্থের ২৯ কণদার : ৭নং অপূর্ব্ব গীতিটি ইহার রচিত।
- (১০) গুপ্ত বাস তৃতীয় ক্ষণদার ২নং নিত্য নন্দ পীতটি এই সহাত্মার কৃত। আমাদের বিধাস ইনি শীচরি হামৃতোক্ত নিজ্যানন্দ শাধার "পরমানন্দ গুক্ত কৃষ্ণভক্ত মধামতি"। কেহ কেহ মনে করেন ইনি মহাপ্রভুর প্রিয়তম জীহটবাসী মুরারী গুপ্ত।
- (১১) গোবিন্দাস—ইনি নরোত্তম ঠাক্র মহাশয়ের বন্ধু—রাসচন্দ্র কবিরান্ধের কনিষ্ঠলাতা, শ্রীজীবগোলামী প্রভৃতি মহাত্মাগণের প্রীতি ও আদরের পাত্র সেই স্থলনিত ছন্দে নীলালেথক স্থাসিদ্ধ পদাবলীকার ব্ধরীর গোবিন্দ কবিরাজ। শ্রীনিবাস আচার্ষ্য প্রভুর শিষ্য যোরাকুলী নিবাসী "গীতবাদ্য বিদ্যার স্থনিপুণ" গোবিন্দ চক্রবর্তীর বির্চিত গীত সকলও গোবিন্দদাস ভণিতাযুক্ত; ভাহারও একটি কি হুইটি গীত এ গ্রন্থে আছে, আস্বাদনীতে সেগুলি কামরা দেখাইয়াছি। এই গ্রন্থের নিম্নলিখিত গানগুলি গোবিন্দদাস রুত। ১ ক্ষণদার ১০নং : ২ক্ষ ১. ৩. ১ : ৪ক্ষ ৬ ১২ : ৫ক্ষ ৬

- ১০; ৬ক ৬; ৭ক ১, ২, ৩; ৮ক ১, ১০, ১১, ১০ এবং ১৫ (আখা:) ১ক ৩; ১০ক ১, ৬; ১১ক ৩, ৪, ৮ ১১; ১২ক ৩, ৪; ১৩ক ৩ ( আখা:) ৭ ১৪ক ৭; ১৫ক ১, ৬, ৭, ৮; ১৬ক ০; ১৭ক ৬, ৭, ১০; ১৮ক ১, ৩, ৪; ১৯ক ১, ৩, ৪, ৬, ৮, ৯, ১০, ১৩; ২০ক ৪, ৫, ৯, ১২, ১৩; ২১ক ৭; ২২ক ৪, ৫, ৭, ৯, ১০; ২৩ক ৮, ৯, ১০, ১৫, ১৬; ২৫ক ৪, ৫, ৩, ১০; ২৬ক ৮, ১১; ২৭ক ৭; ২৯ক ৩, ৪, ৫, ৮; ৩০ক ৩, ৮, ৯; মোট ৭৯।
- (১২) গোণালদাস কর্ণানন্দ গ্রন্থে ইহার পরিচয় এইরপ "ট্রীগোপাল-দাস প্রভুর এক শাখা, প্রভুর পরম প্রিয় গুণে নাই লেখা; বৃধই পাড়াতে বাড়ী কৃষ্ণ কীর্ত্তনিয়া" ইত্যাদি। ২০ ক্রণদার ৭নং গীতটি ইহার বিরচিত।
- (১৩) ঘনশ্রামদাস—স্বর্গতিত গোবিন্দ রতিমঞ্জরী গ্রান্থে ইনি এইরূপে আপন পরিচয় প্রকাশ করিয়াছেন—"পিতার নাম দিব্যসিংহ পিতামহ স্থাসিদ্ধ পদকর্ত্তা বুধবীর গোবিন্দ কবিরাজ। ৫ ক্ষণদার ২নং গীতটি ইহার বিষ্ঠিত। (ভক্তিরত্বাকরপ্রণেতা নরহরি চক্রবর্তীরও নামাছর ঘনশ্রাম দাস বটে, কিন্তু তিনি এ গ্রন্থ সংগ্রহকর্তার পরবর্তী)।
- (১৪) জয়দেব—ইনি স্থানিখাত শীতগোবিন্দ প্রাণেতা জয়দেব গোস্বাসী।
  পঞ্চ গৌড়াধিপতি স্থানিখাত শাস্পানেন নৃপতির পঞ্চরত্বের অন্তম। গীতগোবিন্দের ৯টি গান এ গ্রাছে গৃহিত হইয়াছে। যথা—১১ ও ২৬ ক্রণার ৯ ও ১০ নম্বরে লিখিত গানটি এবং ১ক্ষ৬, ৯;৮—১২;২০—৩, ৭;২০—৫,৬ এবং ২৮ ক্রণার ৪ নং।
- (১৫) জ্ঞানদাস—স্থনামপ্রসিদ্ধ বহু পদাবলী প্রাণেশে—
  কাঁদড়াগ্রামে জন্ম (ভক্তি রত্নাকর দেখ); শ্রীচৈতগুচরিভামুতে নিভাগনন্দ
  শাখায় ইহার নামোল্লেথ আছে। (যথা—শঙ্কর, মুকুন্দ, জ্ঞানদাস মনোহর)
  ইনি যোড়শ শতান্দীর প্রথমভাপের লোক। ইহার নিম্নলিখিত গীতগুলি
  এ গ্রন্থে গৃহিত হইরাছে। ৪ক্ষ এনং; ৫—৫; ৬—৩; ৭—৫; ৮—১৫;
  ১—২; ১৩—২,৩; ১৮—৫; ১৯—৫; ২০—১০; ২১—৮; ২২—২;
  ২৩—৫; ২৪—৩; ২৮—৭; ২৯—৯; মেটি ১৭।

- ( ১৭ ) দামোদর—১০ কণদার এনং গীতটি ইহার বিরচিত। ইনিই কি গাণে শ্রীমন্মহাপ্রভুর প্রাণ রক্ষাকারী রসতত্ত প্রবীণ স্বরূপ দামোদর ?
- (১৮) দ্বিজ গঙ্গারাম—ক্ষামাদের মনে হয় ইনি নন্দন আচার্য্যের প্রাতা গঙ্গাদাদ আচার্য্য, প্রীচৈততা চরিতামৃতে আছে "বিফুদাদ, নন্দন, পঙ্গাদাদ, তিন ভাই, পূর্ব্বে যাল্ল ঘরে ছিলা নিত্যানন্দ গোদাঞী" ইহার নামের ভণিতাযুক্ত ১ ক্ষণদার ২নং গীতটিতেও নিত্যানন্দচন্ত্রের মহিমা বর্ণিত।
- (১৯) নরহরি—ইনি পরমাভিবন্দনীয় খণ্ডবাসী নরহরি সরকার ঠাকুর ১৪ ক্ষণদার ৬নং এবং ২৭ ক্ষণদার ১নং গীত্ত্বয় ইহার বিরচিত। নরোত্তম বিলাসের নরহরি কি অট্ছত বিলাসের নরহতি—এই পদ দ্বের প্রণেতা হুইতে পারেন না, কারণ ভাগারা এ গ্রন্থকারের পরবর্তী।
- (২০) নরনানন্দ ইনি প্রেম বিলাস প্রস্থোক্ত নয়নানন্দ মিশ্র। পরমানরাধ্য গদাধর পণ্ডিত গোস্বামীর কনিষ্ঠ সহোদর বাণীনাথ মিশ্রের পূত্র। মূর্শিদাবাদ কান্দির নিকটস্থ ভরতপুরে ইহার বংশধরগণ অদ্যাপি বর্তুমান। শ্রীটেতত্যতরিতামৃতেও অবৈতচন্দ্রের উপশ্থান্তর্গত পণ্ডিত গোস্বামীর শাধার ইনি "মিশ্র নয়ন" নামে উল্লিখিত। এই গ্রন্থের ২৯ ক্ষণদার ২নং (নিত্যানন্দ) গীত এবং ৩০ ক্ষণদার ১নং (গৌরচক্র গীত) ইহার রচিত।
- (২১) নরোত্তম—ইনি স্থনাম ধন্য থেতুরীর "নরোত্তম দাস ঠাকুর মহাশয়" এই গ্রন্থ সংগ্রহকার বিখনাথ চক্রবর্তী মহাশয়ের পরমগুরু। এগ্রন্থেব ৭ ক্ষণদার ৭নং গীত ২৬ ১০নং ১২—৫,৬।১৭—১১ এবং ৩০ ক্ষণদার ৭নং—এই সাতটি গীত এই মহান্তার ক্বত।
- (২২) পরমানন্দ—এগ্রন্থের ১৪ ক্ষণদার ১নং গৌরচন্দ্র গীতটি ইহার বিরচিত, সম্ভবতঃ—ইনিই এচিরিভামৃতের "প্রমানন্দ শুপ্ত ক্লেড্ডে মহামতি"।
- (২০) প্রদাদ দাস—শ্রীনিবাস আচার্য্য প্রভুর শিষ্য ও অতি প্রিয় পাত্র এবং তাঁহারই ক্রপায় "কবিপতি" খ্যাতি প্রাপ্ত; নিবাস বিষ্ণুপুর। ইহার পীতা করণাম্য মজুমদার বন্দনীয় আচার্য্য প্রভুর বাড়ীর মুছরি ছিলেন। কর্ণানন্দ গ্রন্থে ইহার প্রসঙ্গ আছে আমাদের ২১ ক্ষণদার ২নং গীত ও ২৬ক্ষণদার ১নং গীত ইহার ক্বত।

- (২৪) বলরাম দাস—ইনি নরোত্তর বিলাস গ্রন্থেক বলরাম কবিরাজ, বন্দনীর শ্রীনিবাস আচার্য্য প্রভুর শিষ্য এবং স্থপ্রসিদ্ধ মন্ট কবিরাজের মন্ত্রভম, নিবাস মূর্শিদাবাদ জেলার শস্তর্গত গোয়াস গ্রামে। অদ্যাপি ইহার বংশ-ধরগণ বর্ত্তমান আছেন। কেহ কেহ মনে করেন স্বরূপ বর্ণন গ্রন্থেকে ক্বফ্টা নবাসী নিত্যানন্দ শিষ্য বলরামই পদ কর্ত্তা, আবার কাহার কাহারও মতে প্রেম বিলাসোক্ত রামচন্দ্র কবিরাজের শিষ্য কবিপতি বলরামই পদকর্ত্তা, তাহাদের বিশ্বাসের ভিত্তি কতদ্র সবল জানি না। এই গ্রন্থের ও ক্ষণদার ১নং; ১২—২; ১৭—১; ১৯—১১; ২৩—২; এবং ২৫ ক্ষণদার ২নং গীত ইহার ক্বত।
- (২৫) বংশীদাদ বা বংশীবদন—ইনি প্রীমন্মহাপ্রভুর প্রিরপার্যদি ঠাকুর বংশীবদন। বংশী শিক্ষা গ্রন্থে আছে—''গ্রীছকড়ি চট্টোনাম বিখ্যাত ভ্বন, ভাঁহার অত্মন্ধ বংশী জানে সর্বজন; সেদশত ষোল শকে মধুপূর্ণিনার, বংশীর প্রকটোৎসব সর্ব্ব লোকে গায়'' এই গ্রন্থের ৩ক্ষ ৩, ৪,৫; ৬—৪। ২২—৩ এবং ২৭ ক্ষণদার ৩নং গীত ইহার বিরচিত।
- (২৬) বাহ্ণদেব ঘোষ—ইনি মহাপ্রভুর কীর্ত্তনিয়া ও স্থপ্রসিদ্ধ পদকর্ত্তা, গোবিন্দ ও মাধব ঘোষের সহোদর । ৫ক ১। ১২ ও ২৩ক ১। ২৫—১। ২৬ ২ ২৭—২। ২৮—১নং গীত গুলি ইহার ক্বত।
- (২৭) বাস্থদেব দত্ত—চট্টগ্রাম নিবাদী। মুকুল্দ দত্তের জ্যেষ্ঠ সহোদর। শ্রীচৈতন্ত চরিতামৃত্তে—বাস্থদেব দত্ত প্রভূর ভূত্য মহাশয়, দহন্র মুপে বার গুণ কহিল না হয়; এ গ্রন্থের ২২ ক্ষণদার ১নং গৌর চক্র গীতিটি ইহার ক্বত।
- (২৮) বিদ্যাপতি—মিপিলার রাজা শিবসিংহের সভাসদ ও তৎকর্তৃক "মভিনব জন্মদেব" উপাধি পাপ্ত। বিসপী নিবাসী। ১২৯৬ শকান্দে জন্ম। পিতার নাম গণপতি ঠাকুর। এই স্থনামধন্ত পদকর্ত্তার নিম্নলিধিত গীভগুলি এ গ্রন্থে গৃহীত। ১ক্ষণদা ৩, ৪, ৫, ৮, ১১; ২ ৬, ৭, ৮, ১০; ৫—৩, ৮, ৯, ১০ এবং ঐ ১১ (আবাঃ); ৭—৪; ৮—৪, ৮, ঐ ১৫ (আখাঃ); ১১—১৩; ১২ ৮; ৪—১১; ১৬—৪, ৫; ১৭—০, ৪; ২১—১; ২৪ ৯; ২৫—৮, ৯; ২৬—৩, ৪, ৫ এবং ২৮ক্ষ ৩নং।
  - (২৯) বুন্দাবন দাস—- শ্রীশ্রীটেডক্স ভাগবত প্রণেতা। শ্রীবাদ পণ্ডিভের

ভাতস্থা নরোয়ণী ঠাকুরাণীর গর্ডে ১৮ মাস বাসের পর ১৪১৯ শকাকের বৈশাণী ক্ষাদাদশীতে ভূমিষ্ঠ হন। নিমোক্ত গৌর নিত্যানন্দ পদ সমূহ ইহার ক্তত। ২ ক্ষ ২নং; ৪—১; ৮—১; ১১—১; 13—1; 14—২; পদকল্পতক্রর মতে ৩০—২ নং গাঁতও ইহার প্রণীত।

- (৩•) মদন—পদকর্তা ঘনখ্রাম দাসের বন্ধু। ঘনখ্রামের কোনও কোনও পাদে আছে "নদন রায় প্রমাণ" এই গ্রাস্থের ৬ — ২ এবং 19 — ২ নং নিত্যাননদ গীতিদ্ব ইহার বিরচিত। উভয় গীতের ভণিতাই ঠিক্ স্থান।
- (৩1) মুরারী—খ্যামানন্দ ঠাকুরের শিষ্য; উৎকলবাসী কবি; পীতারনাম রাজা অচ্যুতান দ; ইনি স্থপ্রসিদ্ধ রসিকানন্দ ঠাকুরের ভ্রাতা; জাতিতে করণ কায়স্থ; ঘনখাম চক্রবর্তীর মতে ইনি একজন প্রসিদ্ধ কবিবর; এ গ্রন্থের ৬ ক বনং; ৯ – ৭ এবং ২৪—1. নং গীত ইহার বিরচিত।
- ে (৩২) মহেশ বস্থ-সম্ভবতঃ কুলীন গ্রামের বস্থবংশ; ইনি এগ্রন্থের 11ক্ষ 12 নং গীতের রচয়িতা; পদকল্পতক্র দতে ঐ গীডটি বস্থরামানন্দের বিরচিত।
- (৩৩) যত্নাণ দাস,— শ্রীতৈত্য ভাগবতে ইংার প্রেসক এইরপ—রত্বার্জ জাচার্য্য বিখ্যাত ভাবনাম, প্রভুর পিতার সঙ্গী জন্ম এক হান ; তিন পুত্র ভার ক্রয়পদ মকর-দ, ক্রফান-দ, জীব, যত্নাথ কবিচন্দ্র ; ১ক্ষ ৪, ৯ নং ; 19—৭; ২০—৬; ২৬—12নং গীত গুলি ইংার ক্রত।
- (৩৪) রাদান-দ বস্থ্,— শ্রীকৃষ্ণবিজয় রচ্যি ভা মালাদর বস্থ অর্থাৎ গুণরাজ খানের পৌত্র; সভ্য রাজ খানের পুত্র, বর্দ্ধমান মেনারি ষ্টেসনের নিকটস্থ কুলীন গ্রাম নি<াসী; এই গ্রন্থের 15—৫ এবং ২৯—1 নং গীতদ্বর ইংার বিগচিত।
- (৩৫) রামানক রায়—মহাপ্রার প্রসিদ্ধ অন্তরক পার্যদি। ভবানক রায়ের প্রেম পুত্র। ইথার বিরচিত ক্রসিদ্ধ জগলাপংলভ নাটক হইতে নিম্লিধিত গীত্ত্বয় এ এতে গৃহীত হইয়াছে। ৮কণদার ৬ এবং ২১ ক্রণদার ৬।
- (৩৬) রাধাবলভ দাস—কর্ণানন প্রাপ্ত ইহার প্রসঙ্গ আছে। যথা— "স্থাকর মণ্ডল প্রভূর ভূতা একজন, তার পত্নী শ্রামপ্রিয়া রূপার ভাজন। তার পূত্র বাধাবলভ মণ্ডল স্ক্রিঅ" এই গ্রন্থে ২৪ ক্রণদার ২নং গীতটি ইহার প্রণীত।

- (৩৭) লোচন দাস,—স্থবিধ্যাত তৈত্তসকল গ্রন্থ প্রণেতা। ইহার আত্ম-কৃত পরিচয় এইরূপ—''বৈদ্যকুলে জন্ম মোর কোগ্রামে বাস" মাতা সদাননী কিমলাকর দাস মোর পিতা 'নরহরি দাস মোর প্রেমভক্তি দাতা'। আমাদের ৪ ক্ষণদার ২নং ও ১৭ক ২ নং এই নিত্যানল-গীত্রয় ইহার বিরচিত।
- (৩৮) শক্ষর খোষ,—বৈষ্ণব বন্দনায় আছে—'বিদিব শক্ষ ঘোষ অকিধন রীতি, ডমকের বাদ্যে যে প্রভুর কৈল প্রীতি।' শ্রীমন্মহাপ্রভুর সঙ্গে ধে
  সকল পার্ষণভক্ত দীলাচলে ছিলেন শ্রীচৈতন্ত চরিতাম্তে তাহাদের মধ্যে শব্ধবের নাম দৃষ্ট হর যথা "গদাধর, জগদানল শক্ষর, যক্রেশ্বর"। ২৪ ক ১ নং ও
  ৩০—২ নং গৌর-নিত্যানল-গীতিষ্য ইহার বিরচিত।
- (৩৯) শ্রামানন্দ,—স্থনাম-প্রসিদ্ধ শ্রামানন্দ ঠাকুর। ইনিই শ্রামানন্দ পরিবারের প্রবর্ত্তক। ১৩ কণ্দার ৬ নং গীতটি ইহার বিরচিত। কেছ কেছ মনে করেন শ্রীনিবাস আচার্য্য প্রভুর শ্রালক—শ্রামানন্দ চক্রবর্ত্তী এই গীতের প্রণেতা।
- (৪০) সিংই ভূপতি,—কবীন্দ্র বিদ্যাপতি যাধার সভাসদ ছিলেম ইনি খে সেই স্থাসিদ্ধ গীত-রসানন্দী মহারাজ শিষ্ঠিংহ,গীতের ভাষাই তাহার অপ্রান্ত প্রমাণ। কাহারও মতে পক্ষপরীর রাজা নরসিংহই সিংহ ভূপতি। এ গ্রেইর ১৪নং কণ্টার ৭ নং গীতটি ইহার প্রণীত।
- (৪১) স্থকবি,—ইহার প্রকৃত নাম রায় চম্পতি, উপাধিছিল 'ইংকবি বিদ্যাপতি'। পদাস্ত সমুদ্রের থণ্ডিতা প্রকরণে—'কি করব জপত্তপ' এই গীতের টীকায় মধাজন রাধামোহন ঠাকুর ইহার এইরূপ ণরিচয় দিয়াছেম— শ্রীপ্রতাপক্ষ মহারাজ্ঞ মহাপাত্র চম্পতি রায় নামা মহাভাগ্যত আসিও। সু এব গীতক্রাঃ। ১ ক্রণদার এনং গীতটি ইহার বিরচিত।
- (৪২) ছরিরাম দাদ,—ডক্তি রত্নাকরে ইহার প্রদক্ষ এইরপ—"শ্রীনিবাস আচার্য্যের শিষ্য প্রিরত্য, রামচন্দ্র কবিরাজ গুণ অনুপম। শ্রীরামচন্দ্রের শিষ্য হরি রাম আচার্য্য "ইত্যাদি। প্রেম বিলাসে আছে—'হরিরাম আচার্য্য শার্থা পরম পণ্ডিত, রাটীশ্রেণী বিপ্র ইহজগত বিদিত। গঙ্গা ও প্যার সঙ্গম বেৰা স্থান হয়, তথার গোয়াস প্রামে তাহার আল্যা। ইনি—সঙ্গীর্তন-দেশট

ছিলেন। ইকার বংশধরগণ – অধুনা সৈদাবাদে বাস করেন। এ প্রছের ১৮ কণ্টার ২নং গীতটি ইকার বিরচিত।

(৪০) হরিবল্লভ বা বল্লভ,—এই গ্রন্থের সংগ্রহকার মহাত্মা বিশ্বনাধ চক্রবর্তীই 'বল্লভ ও হরিবল্লভ' ভণিতাযুক্ত গীত গুলির রচরিতা। > ক্ষণদার ১নং গীতের আসাদনীতে আমরা লিথিয়াছি—'চক্রবর্তী মহাশর বেশাশ্রম্ম করিয়া হরিবল্লভ নাম গ্রহণ করেন' একথা সর্ব্যবাদী সন্মত নহে। তবে তিনি যে সংসারাসক্তি ত্যাগ কারয়া শেষ সময়ে শ্রিকুলাবনে বাস করিতেন, এবং জ্রীর পুন: পুন: অফুরোধেও বাড়িতে না যাওয়ার পরিশেষে স্ত্রীর চেষ্টার ফলে আপন মন্ত্রদাতা গুরু—রাধারমণ চক্রবর্তীর আদেশে. একটিবারমাত্র অনিচ্ছায়্র বাড়ী গিয়াছিলেন, এই সকল সর্ব্যব্যত ঘটনা পর্য্যালোচনায়—শেষ সময়ে তাহার নিহিঞ্চনের বেশ গ্রহণের কিম্বনন্তিটি আমাদের নিকট খুব সন্তব্রবিলাম মনে হয়। যাহা ইউক ছৎকত স্তবামৃ গহরীর অস্তর্গত গীতাবলী গ্রন্থ যখন 'হরিবল্লভ ও বল্লভ" ভণিতাযুক্ত গীতেই পরিপূর্ণ, তথন উক্ত ভণিতার গীতগুল যে তাহারইবিরচিত এ কথাতে সন্দেহের কারণ নাই।

বংশীলীলা গ্রন্থের প্রণেতার নামও বরভ, তিনি—ঠাকুর বংশীবদনের প্রপোত্র। শ্রীচরিতামতেও এককন বরভের নামেণরেথ মাছে,যথা—"বরভ দেন আর দেন শ্রীকান্ত শিণানল সম্বন্ধে প্রভুর ভক্ত একান্ত" পদকরতরতে 'বরভ' ভণিতাযুক্ত গীত আছে, তৎসমূহের মধ্যে ইহার বিরচিত গীত গাকিতে পারে কিন্তু এ গ্রন্থে গৃহীত 'বরঙ' ভণিতাযুক্ত গীতের সমন্তই চক্রবর্তী মহাশরের স্বরচিত। নিম্নলিখিত কারণগুলি এ রুথার সমর্থক। (১) পুর্ব্বোক্ত ভণিতার সমুদর সংস্কৃত-গীতই, ত্তবামূতের গীতাবলী হইতে গৃহিত। (২) ঐ ভণিতার গীত সকল দ্বারা অনেক স্থানেই তৎপূর্ববর্তী গীতের সম্বন্ধ প্রদর্শন করা হইরাছে ও "এই কহি দ্বী চললি" ইতাদি ভাবের বর্ণনা দ্বারা কোগাও বা ক্ষণদার বর্ণিত লীলার সংলগ্রণ বিধান হইরাছে। (৩) এ গ্রন্থের প্রারভিত তথ্যায় অক্তিগত সাধারণ ভণিতাযুক্ত প্রবং একই কঠে উচ্চারিত ভিন্ন দির স্থরের স্থার এক প্রকৃতির। (৪) চক্রবর্তী সহাশ্যের ক্বত শ্রীকৃষ্ণ—ক্ষামান্ত এক প্রকৃতির। (৪) চক্রবর্তী সহাশ্যের ক্বত শ্রীকৃষ্ণ—ক্ষামান্ত

প্রছে मী মদ্ভাগবতের সারার্থ দর্শিনী টীকার অথবা—শ্রীমদ্ উজ্জ্বল নীলমণির টীকার — হাঁহার হাদর সম্পুটের স্বজ্ব-শংরক্ষিত-লীলামহারজ্বাজীর সৌন্দর্যা মাধ্য্য তিনি বেরূপ স্থকৌশণে প্রদর্শন করিরাছেন, এই সকল গীতেও সেই-ক্ষণ ভঙ্গীতে তাঁহারই মধ্যে অনেকগুলি লীলা বর্ণনা করিয়াছেন।

চক্রবর্তী মহাশর ১৬২৬ শকালে শ্রীমদ্ভাগবতের টাকা সমাপ্ত করেন,—
এবং তংপরে অরদিনমাত্র জীবিত ছিলেন। সম্ভবতঃ সেই সমরেই এ গ্রন্থ
সঙ্গতি হইরাছেন। কারণ এ গ্রন্থের প্রত্যেক ক্ষণদার নীচেই রহিরাছে —
'ইতি শ্রীগীত চিস্তামণো পূর্ববিভাগে" ইত্যাদি। ইহা দ্বারা স্কুম্পাই ব্রাবার গ্রন্থের একথানি 'উত্তর বিভাগ" সক্ষলন করাও তাহার ইচ্ছা ছিল কিছ
হঠাৎ দেহাবসান হওরার আর ভাহা হইতে পারে নাই।

বঙ্গভাষার বিরচিত এ গ্রন্থে—ক্ষণদা সকলের পূর্ব্বোক্ত সংস্কৃত সমাপ্তি বাক্য এবং ''দুতী ক্লঞ্চ মাহ" ''কুষ্ণেণ সহ উক্তি প্রত্যুক্তি" ''শ্রীরাধা আহ" ইত্যাদি রূপ গীত িশেষের শীর্ষোক্তি,—এবং সংস্কৃত ভাষার বহুতর গীত গ্রন্থে গ্রহণ ছারা; প্রস্থ সংগ্রহকারের সংস্কৃতাকুরাগ,—ও সংস্কৃত লেখার দিল্প হস্ততা ও তদ্বিষর বন্ধুণ অভ্যাস—পূর্ণক্রপে প্রকাশিত রহিয়াছে।

এই গ্রন্থের নিম্ন লিখিত গীতগুলি বল্লভ ভণিতাযুক্ত—১ কণদার ৬ ও ৯নং

২-৫; ৩-৫; ৪—১০; ৫—৪, ৮; ৬—৮; ৭—৬; ১০—৭; ১>—৭;

১২-৭; ২০-৮; ২৪—১২; ২৮—৯; নিম্নের গানগুলি হরিবল্লভ ভনিতা
যুক্তা। যথা—১৯ ক ১, ৭; ২—৪, ৬; ৩—৮; ৪—৭, ৯, ১৩; ৫—৭, ১১;

৬—৬; ৭—৮, ৮—১৪ ১৬; ৯—৬, ১০; ১০—৪; ১১—৫; ১৩—৪, ৫,

৯; ৬—৬, ৮; ১৭—৭,৮; ১৮–৬; ১৯—১২, ১৪; ২০—১১; ২৩—

১১, ১৪; ২৫—৬; ২৬—৭; ২৭–৬, ৮; ২৮–৫ বোট—৫২।

# मम्भागरकत निरुवान ।

নিল্লোক্ত সভ্য সমূহ যাহাদের হৃদয়ে বদ্ধসূল নহে, এ এছ ভাহাদের নিশিত প্রস্তুত হয় নাই।

- (১) জড় অগতের মধ্যাকর্ষণ-শক্তির স্থায়, চিজ্জগতের স্থিতি, গতি পরিণতিও উর্গতিব এবং সমস্ত আনন্দের একমাত্র নিদান—প্রোম।
- (২) ধ্বংশ ও পরিবর্ত্তনশীল-বৈকারিক বস্তুতে প্রীতি সম্চিত নতে, কারণ তাহার পরিণাম ফল—ছঃখ। রূপ, গুণ, মাধুর্য হইতে কখনও বাহার ছ্যুতি নাই, সেই রসস্বরূপ-অচ্যুত-ভগবানের প্রতি প্রেম-ভাবই নিত্যানক লাভের প্রযোগায়।
- (৩): শ্রীভগবানের "জ্ঞানাতীত মায়াতীত মহৈমধ্য-সন্থ্ন-স্থানের "জ্ঞানাতীত মায়াতীত মহৈমধ্য-সন্থ্ন-স্থান-স্থানের প্রান্ধ প্রান্ধ
- (৪) দংমার অশান্তির আকর, উহা হইতে নমন মন ফিরাঁইয়া জীব জগন্মঙ্গল-গৌরাঙ্গচন্দ্রের নামে রূপে গুণে মজিলেই প্রেমের আনন্দ-রাজ্যে প্রেবেশ করিতে ও শ্রীশ্রীরাধামধ্বের লোকাতীত নীলামুন্ডবের অপার্থিব স্থবে অধিকারী হইতে পারে।
- (৫) ত্রজের দাস্ত, স্থা, কাৎসলা ও মধুর রসই—প্রেমের পরাকাঠা;
  শিবলোকে ত্রজালোকে, কি বৈক্ঠে কোথাও রসের এমন পূর্ব-পরিণতি
  ও পূর্ণানন্দ নাই! ত্রজভাব ব্যবহারিক-সম্বন্ধ-সমৃত্ত বস্তা নহে। নিজন্ত্রশ, সার্থ
  কি ইক্তিয়ের প্রণোদনা-সন্ত্ত নহে, উহার সহিত্ববিবেচনা অবিবেচনার কোনও
  সম্মান নাই, উহা অবিকৃত নিরপেক প্রেমের পূর্ণাদর্শ! এই অপার্থিব
  কোনের ফলে গর্ভগারিণী না হইয়াও মাতৃ-সৌভাগ্যের চরম ফল লাভ হর,
  জন্ম দাতা না হইয়াও পিতৃপদের পূর্ণতম স্থাদি লাভ হর, পরিণীতা পদ্মী না

হইরাও কাঙা-শিরোমণিত লাভ হর, সামাক্ত গোপশিও হইরাও রাজনন্দনের প্রিরস্থা হওরা বার, প্রাতা না হইরাও আদর পৌরবের পরমাধার "দাদা" হইতে পারাধার!! এমন মহাবলীয়ান প্রেম-ভাবের ভন্ধন ও অনুগতি বাডিড জীবের পরম মঙ্গল আর কি হইতে পারে ?

### এগ্রন্থ রাগামুগীর ভক্তগ: পর ভব্দন সাহায্যের নিমিত্ত-

বে সকল মহাত্মত ভক্তমগুলী জানেন শ্রীশ্রীরাধাখ্যামত্মনরের রসকেলী অপ্রাক্ত বস্থা। আকারে এক হইরাও—বেমন চক্ত্র প্রিরতা ও সৌরত্যাদি গুণের নিমিত্ত অগুরু কাষ্টেরধ্য সাধারণ ধ্য চইতে স্বত্তম বস্তু এবং প্রেম সম্থ নারক-নারিকার ঈর্বা অত্যাদি, আর রজ-ত্যোগুণ-সঞ্জাত ঈর্বাদি বে প্রকার বিভিন্ন গুণ ধর্মাদি বিশিষ্ট পূথক পদার্থ, তেমনি পার্থিব জড়-রস আর প্রজের প্রেম-রণের প্রাকৃতি সম্পূর্ণ বিপরিত। প্রজরস যাহাদের সাধনের ধন—ক্লবের সারক্ষপদ এবং প্রজ-কিশোর-কিশোরীর মধুর প্রেম লীলা সম্পাদনও বিস্তার কারিণী-স্থীগণের দাসী রূপে আহ্বগত্য যাহাদের ভজনের তাৎপর্য্য ও বাসনার গার, সেই সকল ভজনানন্দী ভক্তগণের ভজন-সাহাব্যার্থ স্থান্ম ধন্ম রাগান্থগীর-ভজন-পদ্ধতির স্থান্দর্শক মহাত্ম বিশ্বনাথ চক্রবর্তী মহাদ্য এই গ্রন্থধানি প্রস্তুত করিরাছেন এবং সেই নিমিত্তই প্রেমনর-প্রেমন্ধীর রসলীলা বর্ণনের অনুসঙ্গে—স্থীভাবে সাধকের লোভ উৎপাদনার্থ স্থীগণের স্থাব, আক্রাক্ত আনন্দ, স্থা, তৃঃখ,অধিকার আদর্ভ চাতুর্য্যাদি বিশেবভাবে এবং অতি স্থান্তর্বণ ইহাতে প্রদর্শিত হইরাছে।

#### বর্ত্তমানাকারে এন্থ প্রকাশের কারণ-

শ্রীব্রন্ধ মণ্ডলের ভদ্ধনানন্দ বৈষ্ণব গণের চরণান্ত্রগত্যে, তাঁহাদের রীত্যন্ত্রগারে আমরা এই অমূল্য এত্থের নিত্যপাঠে নিরত হই। কিন্তু বটতলার মৃদ্রিত প্রস্থের ভূলবাহল্য এবং হন্তলিখিত পুত্তকাবলীর পাঠ-বৈষম্য ও লিপিকর প্রামাদের আধিক্য, আমাদিগকে বড়ই বিরক্ত ও বঞ্চিত করিতেছিল। পরিশেষে ভক্তিভাজন নিত্যানন্দ দাস বাবাজী দাদামহাশরের উপদেশে ও সাহাব্যে জাতি প্রাচীর ছই থানি স্থবিজ্ঞ লেখকের বিলিখিত গ্রন্থের সহিত জ্ঞান্ত

গ্রাছের পাঠ মিলাইয়া ও ্ভিজ্ঞ মহোদয়গণের সহিত আলোচনা করিরা, বর্থাসাণ্য প্রমাদ নির্দান পূসক আমরা একথানি গ্রন্থ অহতে লিখিরা লাইলাম এবং গীত গুলি—"কিরপ অবস্থার কাহার উক্তি" তাহা না বৃথিলে লীলার সংলগ্রতা উপলন্ধি হয় না বলিয়া এবং লীলারসামনী মহাত্মাগণ বে প্রণালীনে এই সকল গীতের রসাত্মান করেন তাহার দিগ্দর্শন জন্ম ও বহুতর গীতেরই বহুতর স্থানের অর্থবাধ প্রগাঢ় চিস্তা ও গভীর আলোচনা-সাপেক্ষ দেখিরা—তদ্ব্যাপ্যা লিপি করিয়া রাখা প্রেরোজনীর বোধ হওরার, তাহাতে একটি আলোচন দিগ্দর্শিনী টাগ্রানি লিখিরা রাখিলাম।

আমার প্রদের বন্ধু, কীর্তনান দী ভিজ্ঞকুল-ভূষণ ৰাবু কাশীনাথ রাছ এই হত্তলিখিত গ্রহ্থাংন দেখিয়া উহা যুদ্রিত করার স্বস্তু অত্যাপ্রহ প্রকাশ করাই

িম্ম লিখিতাত্রপ উন্নতির সহিত গ্রন্থ খানি মৃদ্রিত হইল—

- (১) রস পরিফৃটের উদ্দেশ্তে আমরা আবাদনীতে কতক গুলি মনোহর মহাজনী পদ উদ্ধার করিয়া দিলাম।
- (২) যে ভিথিতে যে ক্ষণদার পাঠকীর্ত্তন কর্ত্তব্য, গ্রন্থের উপরিভাগে ভাহা নিথিয়া দিনাম।
- (৩। গীত কর্ত্তার মহিমা, মত ও মনোভাবের অনুভৃতি, গীতের রূপ ও রহসার্থ অনুভবের এবং অনুরাগের সহিত শবণ কীর্ত্তনের অভিট্ৎকৃষ্ট উপার, এই নিমিত্ত যে দকল গীতে (প্রার ৪ টিতে) ভণিতা ছিল না তর্মধ্য অনেক গুলি. গ্রন্থান্তর চইতে সংগ্রহ করিরা দিলাম। যে গুলিকে প্রকরণ-সঙ্গতির রক্ষার্থ, গ্রন্থক্রা ইচ্ছা পূর্বক পরিত্যাগ করা বোধ হইল, সে গুলি আখাদনীতে দিয়াছি। অস্তান্ত গুলি উদ্ভ চিহ্নেও বন্ধনিতে চিহ্নিত করিরা হথা খানেই প্রদান করিরাছি।
- (৪) উপরোক্ত উদ্দেশ্তে পদকর্ত্ত। গণের মহিমাদি বোধক একটা বিতীয় স্থাচিপত্ত প্রস্তুত্ত করিয়া দিলাম।
- (৫) সংস্কৃত্ত পাঠক মণ্ডণীর আননাধিক্যের নিমিন্ত,সংস্কৃত ভাষার **গীতিগুলির** সমাদৃত টাকা উদ্ধার করিরা দিলাম,বে সকল সংস্কৃত গীতের **টাকা নাই, আনার** পরস করণাবভার আরাধ্যদেব শীমকৈতবংশাবভংগ আচার্য্য দিয়োমনি **জীপাক**

দ্বাধিকানাথ গোস্বামীর জীমুণোক্তি হইতে সেগুলিরও টাকা সংগ্রহ করিয়া দিলাম।

- (৬) অক্লেশে গীডগুলি বাহির করার স্থবিধার নিমিত্ত বর্ণাস্ক্রমে গীতের প্রারস্তাংশ লিখিয়া স্থবিদ্যার স্টিপত্র প্রস্তুত এবং তাহাতে অন্যান্ত প্রাস্থ প্রস্তুত্ব বেথানে বেশানে ঐ সকল গীত আছে তাহাও দেখাইয়। দিলাম।
- (१) অভান্ত প্রস্থের সহিচ বে সকল গুরুতর পাঠ বৈষ্মা ও প্রকরণ পার্থকা আছে, পূর্ব্বোক্ত স্চীপত্তে এবং আলাদনীতে ভাষাও দেখাইরা দিলাম।

ভিন্ন ভিন্ন মহাজনের পদ সংগ্রহ পূর্ণাক লীলাবর্ণনার আদি ও আদর্শ—এই গ্রহণানি বৈক্ষব সাহিত্যভাগুরে অতি মৃশ্যবান্ বস্তু, ভন্নিমিত্ত আমরা ইণার পরিচর্যাার সাধ্যাপ্রসারে চেষ্টা থাড়ের ক্রাট করি নাই। কিন্তু বড়ই পরিতাপের বিষয় মৃত্রণ ক্রমের নিমিত্ত চেষ্টাও আশার অমুক্রণ ফল হইতে আমরা বহু পরি-মাণে বঞ্চিত হইয়া পঙিয়াছি আমাদনীতে ও নিকাতে স্থানে স্থানে মারাত্মক মৃত্রণ ভূল রহিয়া গিয়াছে। এবং প্রেসে নৃত্রন অক্ষর ও বক্ষালা আহ্মের শোচনীর অভাব প্রযুক্ত গ্রহথানি মৃত্রণ-গৌলর্য্য হইতে বঞ্চিত হইয়াছে, এমন কি স্টীপত্রের অনেক স্থানেই বাক্ষালা ও ইংরাজী অল্প মিলাইয়া এ৬, ৩০, ৪০৭' ইত্যাকার বিভ্রমার সহিত কার্যা সম্পন্ন হইলাছে। পাঠক মহাম্মর্যুক্ত অম্প্রাহ পূর্বাক সতর্কভার সহিত কার্যা সম্পন্ন হইলাছে। পাঠক মহাম্মর্যুক্ত সার্বাধ্যে স্থাক্র স্কেন্ত্র আক্ষার অভাবিত বৃহৎ এবং মৃত্রাঙ্কণে অমার্জ্ঞনীর বিলম্ব হইয়া পড়ার এইবারে প্রাম্বর্যবে শুদ্ধিপত্র দিবারও স্ববিধা হইল না!!

#### আৰু সাংঘাতিক মৃদ্ৰণ ভ্ৰম —

২৪৫ প্রাক্ষের স্থলে ৫৪২ বসিরাছে এবং ২৫৭ ছইতে ২৬৪ প্রাক্ষ ছুই বার ছাপা চইরাছে ! কুপামর পাঠকমগুলী অন্তাদলী ক্ষণদার এনং গাঁতের আরম্ভ পূঠা হইতে উনবিংশতি ক্ষণদার তনং গাণের আরম্ভ পূঠা পর্যান্ত আটি পূঠার মুদ্রিত ২৫৭ ছইতে ২৬৪ প্র্যান্ত অক্ষ স্কল কাটিয়৷ যথাক্রেমে ২৬৫ ছইতে ২৭২ ক্রিয়া লইবেন ।

উপদংহারে—বিনীত প্রার্থনা মহাজনীপদের আধাদনী লেখা আমার স্থার রস-বোধ বিহীন অভাজনের অনধিকার চর্চা মাত্র। পতিতপাবন পরমারাধ্য অভীষ্টদেব (পূর্ব্বোল্লিখিত) প্রভূপাদের আজ্ঞা ও আশীর্বাদে বাহা লেখা হইরাছে বদিও তাহা—তাহাকে শুনাইরা এবং ভদীর রুপানিদেশারুসারে সংশোধন পূর্বক মৃত্তিত করিরাছি তথাপি তাহার প্রবণের অনবধানে কোনও কোনও স্থানে; ত্রম প্রমাদ থাকা কিছুই বিচিত্র নহে; স্থ্বিজ্ঞ পাঠকমগুলী এরপ ভ্রম প্রমাদ দেখিতে পাইলে প্রদর্শন করিয়া রুপা প্রকাশ করিবেন।

শ্রীধাম বুন্দাবন কেশীঘাট নিবাসী কৃষ্ণণদ দাস বাবাজীর নিকটে এ গ্রন্থ প্রাপ্তব্য। ব্রজ রস মৃগ্ধ গ্রাহকগণ ডাকে এন্থ লইতে চাহিলে অমুগ্রহ পূর্বক প্রেরণ ব্যর ১৫ পাঠাইবেন। ইতি

কেশীঘাট, বৃন্দাবন। ১লা অগ্রহায়ণ, ১৩১৫ সাল কুপাভিধারী—দীনাতিদীন স্পাদেক ।

#### विविद्यक्षितं क्षतं वा ना

# শ্রীক্ষণদা গীতচিস্তামণি।

#### यज्ञाठत्र ।

আবৈতপ্রকটীকতো নরহরিপ্রেষ্ঠ: স্বরপপ্রিয়ো।
নিত্যানন্দস্থঃ, সনাতনগতিঃ শ্রীরপদ্ধৎকেতনঃ ॥

প্রীশচীনন্দন গৌরভগবানই কলিপীড়িত নরনারীর একমাজ পাল্লয়।
বে হেতৃ পরমজ্ঞানীশিরোমণি ও অলোকিক প্রভাবশালী (স্বরূপতঃ মহাবিষ্ণু
ও মহাদেবের অবতার) লোকপূজিত শ্রীল অবৈতচন্দ্র, জীবের তুর্গতি দর্শনে
দরার্দ্র হইয়া এবং উদ্ধারের উপায়াস্তর না দেখিয়া, পূর্ণ-ভগবানের অবভারার্ধ
বহু আরাধনা স্বারা ভাঁহাকে:প্রপঞ্চে প্রকৃতিত করিয়াছেন।

শীগোরচন্দ্রই নিধিল রসভাবিত ভৈজবুলের প্রেষ্ঠ, প্রিন্ধ, স্থা, সম্পদ্ধ, পতিপুত্রাদি সর্বভাবে ভজনীয়। বেহেতু খনামধন্ত শ্রীযুক্ত নরহরি সরকার ঠাকুরের ন্থান্ন মহিমানিত মধুররসের ভক্তগণ তাঁহাকে প্রেষ্ঠসরূপে ভজন করিরাছেন। এবং ব্রজন্মপ্রাণ ষতীন্দ্র-শিরোমণি শ্রীপাদখরপ গোখামীর ল্যান্থ মহারসিক মণ্ডলী তাঁহাকে 'প্রিয়' শ্বরপে প্রাণের প্রাণ বলিরা আরাধনা করিয়াছেন। আর প্রকৃত প্রেমে জগৎ জুড়ানের অনুসলে নানাবিধ লোকাতীত প্রভাবে কর্মাধাররপে নিয়ত তাঁহার পরিচর্য্যা করিয়াছেন। ও জ্বাধারণ ধীমান গৌড় রাজ্মন্ত্রী শ্রীমৎ সনাতন গোগামী ও প্রীমৎ রূপ গোখামী তাঁহার প্রভাবে নিমুগ্ধ হইয়া অত্নিত পলিখর্ষ্য তুছ্জ্জানে পরিহার প্রভাবে নিমুগ্ধ হইয়া অত্নিত পলিখর্ষ্য তুছ্জ্জানে পরিহার প্রভাবে কর্মাছেন এবং বৈষ্ক্য শ্বিভার প্রভাবে ক্রমাছেন এবং বৈষ্ক্য শ্বিভার প্রভাবে করিয়াছেন এবং বিষ্কারণ ও আশ্রম গ্রহণ করিয়ানে

नक्यां थानं निष्ठ निष्य त्राह्मानी, क्रम्यां थण्टः।

माम्मानाक मनार्थनः मन्यकाः (निषः महोनक्याः ॥ > ॥

भाषासूनिष्ठ प्रकी, कनकार्यनार्की,

मक्यां वित्रक निष्ठाती, कमनायकारकी,

ছেন, ও প্রেমামৃত বর্ষণে জীবের নবজীবন দাতা পরমাভিবলনীর সেই শ্রীক্ষণ গোস্থামী তাঁহাকে—পরম সম্পদের, প্রকৃত কীর্ত্তির, কিংবা নিত্য প্রেমামন্দের 'কেতন' স্বরূপে অথবা রাধাপ্রেমের জয়ধ্বজারপে নিয়ত ক্ষদের ধারণ করিতিন। আবার শীভগবানের নিতাকান্তা শীমতা কন্মাপ্রিয়া দেবীর তিনি প্রাণপতি মথচ তাহা হইয়াও ব্রজ-বাগলোচনামণি শীরাধার ভাবমর ভক্তবিগ্রহ, শীমৃত গদাধর পণ্ডিত গোস্থামীর, উজ্জ্বল পরকীয়-রসাত্মক প্রেমবসে সত্ত উল্লসিত। এবং বিশ্বদ্ধ সন্তম্বরূপ শীল জগ্রাথ মিশ্র হইতে প্রাত্তিবাৰ দীলা অস্পাকার পূর্ব্বক তাহাকে বাংসলা রসের নিতানিক দান করিয়াছেন।

এই নিষিত্তই বন্দনীয় গ্রন্থকার মহাশয় "এই করণারস ও ভাবরস বিলাসী সর্ব্বাভীষ্ট থদ দেব শচীনন্দন স্বকীয় অন্ধ ( শীপ্রী আহৈত নিত্যানন্দ) উপাল [ শীবাসাদি ] পার্যদি [ স্বরূপ সনাতনাদি ] গণের সহিত সদয় হউন" এই প্রার্থনাময় মঙ্গলাচরণ করিয়াছেন। অতএব মহিমায়ভূতির সহিত গ্রন্থারত্তে এ শোকটা কীর্ত্তন করা কর্ত্বতা ॥ ১ ॥

থমন বে গুইজনা আছেন। উভরের ভুক্রযুগল আজামুলছিত ( জর্ধাৎ স্থাপ্ট মহাপুরুষ লক্ষণাক্রান্ত ও লীলাবিলাসে শ্রীসঙ্কীর্ত্তনাদিতে স্থানির ভূজের চালনা ছারা জগতের অমঙ্গল বিনাশ ও দ্রবর্তী জনগণকে প্রেমদান ও আকর্ষণকারী)।

ত্জনেরই বর্ণ কনকের স্থায় স্থাদর, নির্মাল, গোর (অর্থাৎ **প্রীমন্তাগ-**বতীর ''শুক্ল রক্ত স্থগাপীত" মহাভারতীয় "স্থবর্ণবর্ণ হেমাল" উপ-নিবদোক ''ক্লবর্ণ' ইত্যাদি স্থবিখ্যাত বাক্যাবনীর লক্ষিত ভগবান)।

উভরে মৃর্তিমান্ মহামঙ্গলরূপ স্কীর্ত্তনের পিতা অণ্বা পিতামাতা। এন্থলে অব্ছাই পূর্বপক্ষ হইবে—"একজন পুরুষ, সভানের মাতা এবং অপুরে পিতা

বিশ্বস্তবের), দ্বিজ্বরের), যুগধর্মপালো, বন্দে জগৎ-প্রিরকরের), করুণাবভারের। । ২॥

শব্বা এক প্রের হুই পিত।" এই হুই কথাই বে অসন্তব!! এ প্রধার উত্তর এই। শ্রীগোর নিত্যানন্দ একই বস্তা। লীলাসাধনার্থ প্রতীতিতে বিভিন্ন হুইরাও কার্য্যতঃ এক। শ্রীগোরকিশোর ইচ্ছামর আর শ্রীনিত্যানন্দ-চন্দ্র ক্রিয়ামর বিগ্রহ। ইচ্ছা এবং ক্রিয়ার সন্মিলনেই যাবতীয় লীলা। শ্রীচরিতামূত স্থাপ্রথক্যে এ সিদ্ধান্ত প্রকাশ করিয়াছেন, গথা—"হুই ভাই এক তন্থ সমান প্রকাশ"। শ্রীল নরোত্তম ঠাকুর মহাশরের "নিতাই ভিন্নিলে গৌর পাবে" এই মহা বাক্য বারাও প্রমাণিত হয়, যেমন ক্রিয়া ছারা ইচ্ছাকে ধরা যায়, তেননি একত্ব হেতু নিতাই ভিন্নিয়া গৌরকে পাওয়া যায়। বিচারেও শ্রীনিত্যানন্দ্রক শ্রীগৌরহরির প্রকাশ স্ক্রপ মাত্র। শ্রীচরিতামূতে আদি, ১ম পরিক্রেদ।

আর ছ্জনেরই কমলায়ত গোচন। (নয়নের আয়তত্ব আভাবিক গৌলর্য্য এবং জীবের ছুর্গতি দর্শনে করুণা বিদ্দারিততা উভয়ের পরিচায়ক। নয়নের লোকাতীত সৌলর্য্য, স্নিগ্মতা, কোমলতা, দর্শকের চকু আলা বিদ্রণাদি অসীমঞ্জের কিঞ্ছিৎ উপলব্ধি নিমিত্ত কমলের সহিত উৎপ্রেক্ষা)।

কুজনেই নিখিল বিশ্বের পতি ও গতি [ তত্ত্বপক্ষে একণা গোস্বামী নিদ্ধান্ত। লীলাপক্ষে ভক্তি রদামুতে জগৎ পরিপোষণ সর্বাহলত কথা। বিশ্বস্তার শন্মের এই অর্থা]

ভূটজনেই দ্বিজ কুলের বরেনা ( গেমন অসাধারণ সদ্গুণে ও পাণ্ডিভো, ডেমনি ধর্ম সংরক্ষণ ও ধর্ম যাজনের প্রকৃত আদর্শ প্রদর্শন বারা বিজবরৌ)।

ছক্ষনেই যুগবর্শের প্রতিপালক [কলিযুগের ধর্ম খ্রীনাম সংখীর্জন, সে রসে আল ব্রাক্ষ খ্রাষ্টিরান প্রভৃতিও বে ছলনের করণায় মাতোরারা। এবং যে ছল্কর সম্বস্ত ক্ষতের প্রিয়বিধানকারী। সভা অসভা, বালক, বৃদ্ধ, স্ক্রী, পুরুষ্ক, নির্বিশেষে ক্ষগতের সমন্ত প্রাণীরই,—প্রীতির বস্ত নৃত্য ও গীত। যে ছ্ল্ডনের অপার করণার নানাপ্রকার কঠোর সাধনের পরিবর্জে উছাই কগতে, ভ্রুতনের

#### चानीर्वाप मझनाठत्र ।

# হেলোদ্ধুলিত খেদয়া, বিসদয়া, প্রোশীলদামোদয়া সাস্যহান্ত্র বিবাদয়া, রসদয়া, চিন্তার্পিতোশাদয়া

প্রধান সাধন হইরাছে। উত্তম, অধম, গাপী, তাপী সকলের প্রতি নির্বিচারে করণা বিতরণকারী, সেই পরম দয়াল অবতারম্বরকে বন্দনা করি।

শ্রীগৌর নিভ্যানন ভিন্ন অন্ত কাহারও প্রতি,শ্লোকোক্ত বিশেষণের সার্থক প্রায়োগ হইতে পরে না। গ্রন্থকার শ্রীচৈতন্ত ভাগবভের এই মঙ্গলাচরণ শ্লোক বারা অভীষ্ট বন্দন করিয়াছেন॥২॥

বৈষ্ণবজগতের বিশুদ্ধ ভজন-পথপ্রদর্শক, বলনীয়-চরণ, শ্রীবৃক্ত ন রাত্ম ঠাকুর মহাশয়ের একটা মহা বাক্য এই:—

মনের স্থারণ প্রোণ, মধুর মধুর ধাম,

যুগল বিলাস স্থতি সার।

সাধ্য সাধন এই, ইহা পর আর নাই,

এই তত্ত্ব সর্ব্ধ বিধি সার॥

এই গীত চিন্তামনি গ্রন্থ, শুশ্রীরাধাগোবিনের সেই দৈনন্দিন যুগল বিলাস এবং সেই মধুর মধুর শ্রীমৃর্তি যুগলের নানা ভাবোচ্ছলিত নব নব বিকাসের অপূর্ব্ব চিত্রে পরিপূর্ব। কিন্তু কদরের যাবতীয় খেদ বিদ্রিত এবং মন বিসদ অর্থাৎ নির্ম্বল না হটলে; দেশ কাল অধিকারী, উদ্দেশ্য এবং রসভাবাদির বিচার ছারা শাল্র বাক্যে সমঘরবৃদ্ধি ও বিখাদ না জন্মলে; হুদর নির্ম্বল নিভারদে বিভাবিত এবং অন্তরে প্রেমানন্দের উদর না হইলে, ভক্তিরসে নিভা বিনাদিত না হঠলে, সর্ব্বতে স্থাভীই দর্শন অনিত সমদৃষ্টি না জন্মিলে বোগেশরেশ্বর শ্রীভগবানের এই অপ্রাক্ত চিনার মানবীয়-রূপের ও দীলার প্রকৃত ভাব ও ছবি জীব-ক্দরে প্রতিক্ষণিত হয় না। এবং ভদ্ব্যতিত কেইই বা বহারসমন প্রস্থের রসাম্বাদনে অধিকারী হটবেন না।

ক্লিপীড়িত জীবের পক্ষে এইরূপ মহাভাগ্য লাড, একমাত্র প্রীপৌর

শশুদ্ধ ক্রি বিনোদরা, সমদরা, সাধ্যা মর্যাদরা
শৌতিজক্য দরানিধে ! ভবদরা ভ্রাদমন্দোদরা ॥ ৩॥
চেতোদর্পণ মার্জ্জনং ভব মহাদাবাগ্লি নির্বাপনং
শ্রেষঃ কৈরৰ চন্দ্রিকা বিভরণং বিদ্যাবধু জীবনং

ক্ষলবের সর্বাভীই প্রদ কুপা সাপেক। তাই এগ্রন্থের মহামুভব সংগ্রহ কর্ত্তা;

শীশ্রীমন্মহাপ্রভুর মহা কুপাপাত্র ভক্তপুর কবিকর্পপুর ক্বত শ্রীচৈতভ্যচন্দ্রোদর
নাটকের ৮ম পরিচ্ছেদের ১>স সংথক এই শ্লোকটির দ্বারা তদীর কুপাকান্দা
করিতেছেন, যথা ''হে দর্মানিধে শ্রীচৈতভা! তোমার নে দরার লোকসকলের
যাবতীর থেদ [শোক হঃথ শাক্ষেপাদি] অবহেলে উদ্ধৃলীত অর্থাং সম্লে
উৎপাটিত হর, মন নির্মাণকরে, প্রকৃত্তরূপে প্রেমানন্দের বিকাশ সাধন করে।
শাক্র সকলের, মত ভেদের মূলীভূত কথা যে "সাধাবস্ত লাভের উপার কি ?" এ
বিতর্কে আর জীবকে যাইতে না দিয়া ও শাস্ত্রবাক্যের সমন্বর দেখাইয়া বিবাদ
প্রেসমন করে। সংসার বিশুক্ষ জীব হৃদের রস ভাবিত করে। চিত্তে উন্মাদনা
দান করে, সর্বানা ভক্তি স্থামুভূতিতে, চিত্ত বিনোদিত করে। সর্বত্র সমন্দৃষ্টি দান করে। মাধুর্য্যের চরমোৎকর্ষ রূপিনী তোনার সেই দয়া জগতের
মঙ্গার্থ সমুদিত হউক"

অন্তরঙ্গ পার্শন ভক্তের উক্তি কদাচ অতি রঞ্জিত কি বার্থ হয় না। প্রাণের উৎকণ্ঠা ও বিখাস সহকারে এ শ্লোকটী কার্ত্তন করা কর্ত্তব্য । ০॥

বাহা চিত্তরূপ দর্পণের মালিস্থাপহারক। সংসারোশ মহাদাবানল নির্মাণণকারী। এবং মললরপ খেত-কুম্দের প্রফ্রেণ করণে চল্লিকা সদৃশ। বাহা পরাধিদারপিনী বধ্র প্রাণ স্বরূপ। আনন্দের সমৃত্র পরিবর্দ্ধক, প্রতিপদে বাহাতে পূর্ণরূপে অমৃতের আসাদ বিরাজিত। বাহা জ্রন্ধাদি হইভে কীটপতলাদি পর্যন্ত সমন্ত প্রাণীর আত্মাকে অপূর্ব-রসে স্থান করার সেই জ্রিক্ক সন্ধিন সর্মদা জরমুক্ত হইতেছেন।

প্রীপদ্যাবলী গ্রন্থের নাম মাহাত্ম্য প্রকরণের ৬৪ [ক্রমিক গণনার ২২খ ]

# আনন্দান্ধ বৰ্জনং প্ৰতিপদং পূৰ্ণামৃতান্বাদনং দৈকাত্মপনং পনং বিজয়তে শ্ৰীকৃষ্ণদক্ষীৰ্তনং ॥ ৪ ॥

সংখ্যক এই লোক ছার। সঙ্কীর্ত্তন গীভাবলার সম্পূট্যস্ত্রপ এ গ্রন্থের বস্তু-নির্দেশ মঙ্গলাচরণে শ্রীসংকীর্ত্তনের তম্ব ও মাহাত্ম্য বর্ণিত হুইয়াছে।

দৃপধাতুর অর্থ দীপ্তিবিধান। প্রতিবিদ্ধ প্রতিফলনের সর্ব্ধ প্রকার স্বচ্ছ-কলক—চশ্মা, দ্রবীক্ষণাদি সমস্ত দ্রব্য দর্পণ শব্দের প্রতিপাদ্য। মানবের নির্মাণ চিন্ত এই ফাতীয় সর্বপ্রকার ফলকের গুণ সম্পন্ন দর্পণ স্বরূপ,তদ্বারা স্থূল, স্থান, অপরিমিত্ত, নিকটন্থ বা স্থূদ্রন্থ সমস্ত দ্রব্যের, অতীক্রিয় পদার্থ পর্যান্তর এমনকি আত্মারস্বরূপ, শ্রীতগবানের স্বরূপ, তনীয় শক্তি সমূহের স্বরূপ ভাবসমূহের ও লীলাসমূহের—ছবি পর্যান্ত অহুভূত হইতে পারে। মারাম্ব ছারার এবং আগতিক পদ্ধিকতার সংস্পর্শে আমাদের এমন অপূর্ব্ধ বস্ত্ব, মানাম্ব ছারার এবং আগতিক পদ্ধিকতার সংস্পর্শে আমাদের এমন অপূর্ব্ধ বস্ত্ব, মানা ও অকর্ম্বাণ্য। ইহার অধিক হঃখ আর কি আছে ? করণাবতার শ্রীশনীননন্দন গৌরভগবান্ চেতোদপণের এই মাণিজ্যের স্বার্ম্জন স্বরূপ শ্রীসন্ধীর্তনের স্পৃষ্টি করিয়াছেন এবং ছর্ভাগ্যজীবগণ, নানা ভাব ও নানা ক্রচিসম্পন্ন বিদয়া নানা প্রকারে ইহার, গুণ প্রচার করিয়াছেন।

আমার দরালপ্রভূ হাদরাকর্ষক ভক্তরপে, সর্ববর্ণের গুরু ব্রাহ্মণ রূপে,
দিগ্বিজ্ঞরী-পরাভবী অধ্যাপকরপে, সর্বজন- মান্ত মহাপ্রভাবাহিত সন্ন্যাসীরপে
এবং প্রচ্ম মিশ্রের ত্রায় সরল কর্ত্ব্য জিজ্ঞাস্থ হইতে সহস্র সহস্র জ্ঞানীর
ক্রিকে পারত্রিক উপদেষ্টা জগৎ বিখ্যাত প্রকাশানন্দ সরস্বতী, বাস্থদেব সার্ব্বতৌম পর্যান্ত কত কত মহামান্ত জন সকলকে উপলক্ষ করিয়া উপদেশ দারা
এবং পরিশেষে বক্ষামান শ্লোকটীকে স্বীর শিক্ষান্তকে সন্ধিবেশিত করিয়া
শিক্ষাদিরাছেন বে, শ্রীসকীর্ত্তন, কলির শীবের পরম কর্ত্ব্য এবং চিত্ত-দর্পণের
মালিক্তা নাশের উপার।

শ্রীমন্মহাপ্রভুর শিক্ষাষ্টকে এলোকটি গৃহিত হওরার ব্বিতে চইনে, ইহার প্রত্যেক কথা অবার্থ অর্থাৎ জীবের কর্মতাগ্য, এবং বাসনার সংঘর্ষনোধ্য দাবানল কীর্ত্তনামৃতে নিশ্চর নির্বাপিত হয়। শ্রের অর্থাৎ প্রেমলা » হয়। দিব্যক্তানের বিকাশ হয়। অমৃতাভিষিক্ত শুক্ষশাধার নবপ্রবোদরের স্কার নক্ষ

# শ্ৰীক্ষণদা গীতচিন্তামণি 1

১ম কণদা, কুফা প্রতিপদ।

**बि**शोत्रव्यञ्ज—त्रांश क्लाता ।

())

দেশ দেখ সোই ! ম্রতিসয় মেছ।
কাঞ্চন কাঁতি, হংগ জিনি সধ্রিম,
নয়ন-চসক, ভরি লেহ॥ গ্রু।
শ্রামল বরণ, মধ্র-রদ ঔষ্ধি,
পুরব যো, গোকুল মাহ।

দেখ দেখ সেই মৃর্ডিমান মেঘ সাক্ষাৎ বর্ত্তমান। ভবর্ণের স্থার স্থানর পারবর্ণ এবং স্থা অপেক্ষাও মধুরাসাদ বৃক্ত এই রূপামৃত হারা নরনরূপ পাণপাত্র পূর্ণ করিরা লও। পূর্ব্বে ভামবর্ণ ধারণ করিরা সাক্ষাৎ মধুর-রস্করণে এবং নিধিল গোকুলজনের জীবন ধারণের নিদান ঔধধিরণে, গোকুলে হাহার উদর হইরাছিল, বাহার সৌরছ-প্রবাহ জগতের যাবতীঃ মৃবতীগণকে (দেবী, মানবী, নির্কিশেবে) উন্মাদিত করিরাছিল। ললনা-শিরোমণি ব্রজ্বন্দরীগণ যে রস-স্বরূপকে কুচমগুলের মহাভূষণ করিরা রাখিরাছিলেন, সেই পরমবন্ধই এক্ষণে তৎপ্রভাবে অর্থাৎ ব্রজ্বগৌরাদিনীগণের অন কান্তিতে গৌরবর্ণ হইরা গৌড়ে আসিরাছনে এবং এন্থানেও চইরূপে প্রকৃতিত হইরাছেন। প্রথম স্বরূপে মৃর্ডিমান্ মেঘরণে নির্কিচারে রসবর্ষণ আর ছিতীর স্বরূপে প্রেমক্লতক হইরা প্রেমদান করিতেছেন। আবার সকল ভ্বনের স্থাপ কীর্ত্তন সম্পাদে দিবারাত্রি মন্ত থাকিরা জগতের মলল বিধান করিতেছেন।

উপজল জগত, যুবতী উমভাওল,
যো সোরত পরবাহ।।
যো রস, বরজ গোরী, কুচমগুল
মগুন-বর, করি রাখি।
তে ভেল গোর, গোড় অব আওল
প্রকট প্রেশ-হ্নরশাধী।।
সকল ভ্বন হুখ কীর্ত্তন সম্পদ
মত্ত রহল দিনরাতি।

এ গীতে, রসমন্ন সর্কাতাপহারী এবং নিরম্ভর রসবর্ষণণীল বলিরা, পুরবের গোকুলানন্দ শ্রীকৃষ্ণ এবং আমাদের নদীরানন্দ শ্রীগোরস্থলরের তুলাভাবে মেলক্লপে বর্ণনা হইলেও, কথিত হইয়াছে,—খ্রামলমেথের বর্ষণস্থান কেবল শ্রীগোকুল। সে নীলার জগতের ভাগ্যে নগদ লাভ, কেবল গৌরভ-প্রবাহ। কিন্তু শ্রীগৌরাল মেঘ গৌড়ে সমুদিত হইয়া স্থান, কাল, পাত্র, বিচার ব্যক্তীভ বারতীর ভূবনে রসবর্ষণকারী।

ছিতীয়রপের বিচারেও দেখুন, ওবিধি উভিদ হইতে ফল, মৃল, বহুল, পত্র,
পূলা, ছারা, রস প্রভৃতি সমন্ত নম্পদেই, তরু সমৃদ্ধ এবং বৃহৎ। এই
প্রকারে স্থাকলিল বর্ণনাজনী ছারা জগন্মলল শ্রীলটীকুমারের জবার্থ মহা
করণা চিন্তার সম্লাসে উচ্ছসিত হইরা গীতকর্তা বলিতেছেন:—বেখানে বা
বে স্থারে এই মলল স্থাপের প্রকাশ তথার ভব দাবানল এবং কলিকস্পর
কোন ছার পদার্থ ? কি করিতে পারে ?

বিষয় বিক্ষোভিত মানবীয় মলিন ছদরে, রসময় রসময়ীয়াপে নীবাবিলাসী, বোগেখরেখন জীভগবানের চিমায় নির্দাণ রসনীলার ভবিক্ত ক্রিড কেবল জীগোরশশধরের কুপা,সাপেক।

"গোরাক গুণেতে ঝুরে, নিতাশীলা তারে ক্রে, সে জন ভক্তি অধি-কারী" মহাজনের এ মহাবাক্য অভ্রান্ত এবং বহু পরীক্ষিত সভা। তাহাই

# ভবদৰ কোন ? কোন কলি-কন্ময়? যাহা হরিবল্লভ ভাঁতি।।

( )

ब्राग-रक्षांत्र, शास्त्रात्र।

আরে মোর নিতাই সে নাম্বর।
সংসার-তাপিত— জীবের জীবন,
নিতাই মোর হুখের সায়র ॥ গ্রু ॥
অবনী মণ্ডলে, আইল নিতাই.
ধরি অবধৃত বেশ।

পদ্মবেতী-নন্দন, বহু জাহ্নবার জীবন, চৈতন্যলীলায় বিশেষ ॥

ব্রজরন-কীর্ন্তনের প্রারন্তে শ্রীগৌরচন্ত্রগীভির সদাচার বৈষ্ণব সমাজে চিরু প্রচলিত।

গ্রন্থকার, বন্দনীয় শ্রীযুত বিশ্বনাথ চক্রবর্তী মহাশয় বেষাশ্রয় করিয়া।
"হরিবল্লভ দাস" নাম গ্রহণ করেন। এ গীতটি তাঁহার স্বরচিত। নামোলেথ
শৃত্য এই গীতে রূপকাদি নানা অলস্কারচ্ছলে শ্রীমন্মহাপ্রভুর রূপ, গুণ মহিমাদি
বর্ণন দারা তিনি পূর্ব্বোক্ত দদাচার সম্পাদন করিয়াছেন।

नवनीनाव এই जिजारे भवावजीरमयीत भ्वकर्ण व्यवस्त्व दरान व्यवनीराज

<sup>(</sup>২) আরে ! আমার নিতাইর স্থায় নাগর আর কে আছে ? সমুদ্র বেমন জলচর জীব নিচয়কে বক্ষে ধারণ পূর্বক নাচিয়া নাচাইয়া আনন্দ দান করে ও বাঁচাইয়া রাখে, তেমনি সংসার-সম্ভপ্ত ধাবতীয় জীবকে নিয়ত স্থপসভাদ্ধপ স্বকীর বুকে রাখিয়া, জনগণের জীবন স্বরূপ ভদ্ধসন্ত্রময় স্থপের সাগর আমার নিতাইচাঁদ অবিরত আনন্দ্রনীড়া করিতেছেন।

রাম অবতারে,

অনুজ আছিলা,

লক্ষণ বলিয়া নাম।

কুষ্ণ অবতারে,

গোকুল বিহারে,

कार्छ ভारा बनताम ॥

আসির, বস্থদা ও জাহ্নবাদেবীর বন্ধত্ব অঙ্গীকার ও শক্তিসম্পন্ন বংশ বিস্তার দার। শ্রীগোরাঙ্গচন্দ্রের ধর্ম, যাজন ও সংরক্ষণের হুর্গ নির্মাণ পূর্বক তদীর আজাপালন দারা, গৌরপ্রেমের পরাকাষ্ঠা প্রদর্শন করিয়াছেন। এই প্রকারের বৈশিষ্ট্য যে কেবল চৈতগুলীলায় প্রকাশ করিয়াছেন, তাহা নহে; পূর্ব্বে শ্রীরামাবতার কালে অমুজ লক্ষণরূপে এবং শ্রীকৃষ্ণাবতারে দাদা বলদেব-দ্ধপে শ্রীভগবানের অভিপ্রেত সমাধান ও প্রেম্বেধা সাধন করিয়াছেন।

তব্ত:—সমস্ত স্বার মূল হওয়াতে যিনি আসন, উপাধান, শ্যা, পাছকা, ছত্ত্র, গৃহ, সিংহাসনাদি সর্বপ্রকার উপকরণ স্বরূপে এবং মাতা, পিতা, দাস, স্থাদি সর্বভাবে শীভগবানের গেবা স্মাধান করেন, এবং মানবলীলায়—মগ্রজ্ঞ-গতপ্রাণ শীলক্ষণ হইয়া দাদার আজ্ঞা ও অভিপ্রায় শিরোধার্য্য পূর্বক, আবার ক্ষপ্রশাণ অগ্রজ্ঞ বলদেব হইয়া অন্তজ্ঞকে আপনার আজ্ঞা ও অভিপ্রায়ের অন্তর্বতী করিয়া, স্থথে রাথিয়া; এবং গৌর অবতারে নিতাইরূপে অন্তর্প্রক্ষপা হইয়া সমতা, ক্ষমতা ও বাধ্যতাময় সর্ববিধ মধুরস্থাভাবে, মনোমত প্রেমদেবার দ্বায়া আনন্দদান ও আনন্দলাভ করেন, ওাহার ভায় রসবিদ্যা আর কে আছে ?

অতএব জগতে যত ভাবের ও যত রসের ভক্ত বর্ত্তমান আছেন, সকলেই আমার নিতাইটাদের প্রীচরণাশ্রমে ধন্ত এবং ক্বতার্থ হইবেন, ডাহাতে সংশয়ের লেশমাত্র নাই। নদীয়া বিহারে প্রীনিতাইয়ের অদোষ-দর্শিতা এবং কলি-পীড়িত জীবের প্রতি অবাধ করুণা, পূর্ণরূপে প্রকটিত। অতএব গীতকর্ত্তা দির গঙ্গারাম আপনাকে কলির অন্ধকুপে পতিত ও হর্ষিপাক্তান্থ ভাবিয়া জগহন্দার ও প্রেমপ্রচারে দীক্ষিত এই পরমাশ্রমকে ডাকিয়৷ শরণ লইতেছেন। কেবল অমুত্র চিত্তে ডাকিলেই নিতাইর করুণা লাভ করা যাম।

গোর অবভারে, নদীয়া বিহারে,
নিতাই বলিয়া নাম।
কলি-অন্ধকুপে, পড়িয়া বিপাকে,
ভাকে বিস্বাসামা

(0)

🎒 কুষ্ণ আহ। রাগ---প্রিদী।

(ধনি গো! ছাজু) পেথকু, বালা-থেনি।

(মব) মন্দির বাহিব ভেলি

নব জলধনে বিজুরী রেখা, ধন্দ বাড়াইয়া গেলি॥

শ্রীমন্মহাপ্রান্থর স্থায় ভ্বন মণ্ডল,জগমনোহারী প্রেমাবতারের এবং সঙ্গীতের স্থায় চিত্রহারী আনন্দময় বস্তুর, মঙ্গল-সন্মিলন কপ শ্রীগোরচন্দ্র গীতেও যদি কোনও তুর্ভাগ্যজনের মনের পদ্ধিলতা বিদ্বিত না হয়, সেই ব্যক্তিই প্রকৃত্ত পক্ষ্যে "কলির অনুকৃপে পভিত ও তুর্দিপাক গ্রন্থ"! শ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রের উদয় ব্যতীত তাহার হান্তমো নাশের আর উপাগাণর নাই। বুঝি তাই আমাদের পরম কারুণিক মহান্ত্রব গ্রন্থকার প্রতি গৌরচন্দ্র গীতির পরে এক একটি শ্রীনিত্যানন্দ গীতি দিগাছেন।

<sup>(</sup>৩) বয়ংসন্ধি সময়ে প্রীরাধার মাধুরী ও চেক্টা দর্শনে বিমুগ্ধ প্রীকৃষ্ণ, কোনও স্থীকে কহিতেছেন, —স্থি! আজ এক বালিকার অপূর্ব্ধ খেলা দেখিলাম। সে যখন মন্দির হইতে বাহিরে আসিল, বোধ হঠল মেন নবীন মেব হইতে বিজ্যংরেখা বিনির্গত হইল!! আমার অভবে এই ধার্ধা বাড়াইয়া সে আবার মন্দিরে চলিয়া গেল। সেই অমবয়স্কা বালার সঙ্গ প্রভাঙ্গ, গুন্থিত কুলের

(সে যে) অলবয়সি বালা, (মুম্ব) গাথনি পঁছপ মালা,
থোরি দরশদে আশ না পুরল, বাঢ়ল মদন-জ্বালা।
(সে যে) গোরী কলেবর লুনা, \* (যুম্ব) কাজরে-উজার-সোনা,
কেশরী জিনিয়া মাঝারি থিনী, তুলছ লোচন-কোণা।
স্বাধ হাসনি সনে, (মুঝে) হানল নয়ন-বাণে,
চিরঞ্জীব রহু পঞ্গোড়েশ্বর কবি বিদ্যাপতি ভাণে।

মালার ভায় স্থকোমল এবং স্থানর। সঝি! সে অরক্ষণের দর্শনে আমার দর্শনাশা মিটে নাই। কেবল মদন-যন্ত্রণা বৃদ্ধি হইরাছে। সে স্থানরী. কচ্ছলোচ্ছলিত স্থর্ণের ভায় গৌরাজিনী এবং লাবণ্যময়ী, আর কেশরীর ভায় ক্ষীণ-মধ্যা। উপমার দারা এ সকল কথা কথঞ্জিৎরূপে বলিলাম বটে, কিন্তু তাহার লোচনাঞ্চলের চারুতার উপমা জগতে তুল ভি।

সহাস্য দৃক্পাত দারা, সে আমাকে বেন নয়ন বাণে বিদ্ধ করিয়া ফেলিয়াছে, অর্থাৎ বাণবিদ্ধ প্রাণীর স্থায় আমার যন্ত্রণার নির্তি হইতেছে না।

ক্ষাস্থ্য গ্রন্থের পাঠ 'ন্না' এবং কালীপ্রসন্ন কাব্যবিশারদ ক্বত তদর্থ-থর্ম বা ক্লা।

পঞ্চ গোড়েশ্বর রাজা শিবিদিংছের সভাসদ কবি বিদ্যাপতি, রাজার আদেশ অনুসারে ভদীয় প্রীতির নিমিত্ত গীত রচনা করেন, সেই জন্ম এ গীতের ভণিতায়, মহারাজকে "চিরঞ্জাবিয়ছ" ইত্যাদি বাক্যে আশীর্কাদ করিয়াছেন।

ইতিহাসে দেখা যায় বঙ্গের হিন্দ্রাজগণ, স্বীয় রাজ্যকে রাচ, বরেন্দ্র, বঙ্গ, বাগরি এবং মিথিলা এই পাঁচ ভাগে বিভক্ত করেন, বোধ হয় ইহাই পঞ্চনোড়। অথবা স্কন্ধপ্রাণের মতে 'সারস্বভ, কান্তক্ত্রা গৌড় মৈথিলিকোৎ-ক্লা' পঞ্গোড়া ইতি থ্যাতা, বিজ্ঞোন্ডান্তরবাসিনঃ।

(8)

#### বালা।

না রহে গুরুজন মাঝে, বেকত অঙ্গ, না ঢাকয়ে লাজে। বালাজন সঞ্জে বাসে, তরুণী পাই তহি পরিহাসে। মাধব ! পেথলু রমণী, কো কছ বালা কো কছ তরুণী।

কেলী-রভস যব শুনে,

অনত হি হেরি, তহি দেই কাণে।
ইথে যদি কোই কররে পরচারি,
কান্দন মাথি হাসি, দেই গারি।
কবি বিদ্যাপতি ভাণে,
বাগা-চরিত রসিকজন জানে।

(৪) ''গ্রীরাধার ভাব ও বয়দ এখনও নায়ক স্থানন্দ লাভের উপযোগী বলিয়া বোধ হয় না'' এইরূপ বাক্য বাপদেশে দখী,নাগরগুরুর পরাক্ষা করিতে-ছেন। যথা,—সেতো নব-যৌবনীর স্থায় সর্বাদা গুরুজনের গোচরে অবস্থান করে না। অঙ্গ ব্যক্ত হইলে লজ্জাম্বিতা হইয়া তৎক্ষণাৎ আচ্ছাদন করে না। সর্বাদা বালিকাদিগের সঙ্গেই থাকে। পূর্ব সঙ্গিনী তরুণী পাইলে তাহায় পরিবর্ত্তিত ভাব ব্যবহার নিয়া তৎসহ পরিহাস করে। মাধব! আমি দেরমাণীকে আজও ঐরুপ দেখিয়া আদিলাম।

তবে কেই কেই তাহাকে বালিকা বলিয়া থাকে এবং কেই কেই তরুণীও ৰলিয়া থাকে বটে, এবং কেলী বিষয়ক কোনও কথা শুনিলে সে সাবহিত তরুণীর স্থায় অন্তক্ত দৃষ্টিপাত পূর্বক কাণ দিয়া সেই কথাটী শুনে অথচ কেই উহা লক্ষ্য করিয়া প্রচার করিলে যেন হাসির উপর ক্রন্দন মাথিয়া বালিকার স্থায় ভাহাকে গালি দেয়।

উক্তিকারিণী সধীর ভাবাপর হইর। গীতকর্ত্তা কবি বিদ্যাপতি ঠাকুর মাগরেঞ্জকে কহিতেছেন,—"এইরূপ বালার চরিত্র কেবল রসিকজনের বোধ্য। অর্থাৎ তুমি রসিকশেশর, ঐ সকল আচরিতের ভিতুরে কি ভাব, কি রস স্বরং অনুধাবন হারা ব্ঝ।

অক্তান্ত আছে ২র ছত্তের 'ঢাকরে' স্থানে 'ঝাঁপরে'; ৩র ছত্তের 'বাসে'

( ( )

#### वाना ।

শৈশব যোবন, দরশন ভেল
দোহু দলে বলে ধনি ছল্ফ পড়ি গেল।
কবছ বান্ধয়ে কচ, কবছ বিথার।
কবছ ঝাপয়ে অঙ্গ, কবছ উঘার॥
থিন নয়ন, অথির কছু ভেলা।
উরেংজ উদিত থল লালিম দেলা।
শশীমুগা ছে'ড়ল. শৈশন-দেতে।
গত দেই তেজল ত্রিবলী কিন রেচে॥

স্থলে 'যব রহই'; ৪র্থ ছত্ত্রের শেষার্দ্ধে 'পরিগাস তহি করই' এবং ৫ম ছত্ত্রের 'পেখ্যু' স্থলে 'তুয়া লাগি ভেটফু' ইত্যাদি পাঠাস্তর আছে।

(৫) নাগরমণি কহিতেছেন, দখি। আমার বোধ হয়, তাহার মদন লালসার সঞ্চার হইয়াছে। দেখনা, শৈশব এবং থৌবনের পরস্পার দর্শন সঞ্চাটিত ছওয়াতেই রমণী উভয়ের দলবল প্রভাবে বিরুদ্ধ ভাবময়ী হইয়া পড়িয়াছে। সেই জয়ই কখনও কেশ বন্ধন করে, কখনও বা করে না। অঙ্গ, কখনও আছোদিত, কখনও বা উন্মৃক্ত করিয়া রাথে। শৈশব-স্থলত স্থির নয়ন য়ে, কিছু চংগ্রল্য প্রাপ্ত হইয়াছে, ইহা স্থানর বুঝা য়য়; লালীমদেলা গলোর য়ায় অর্থাৎ রক্তাভদলবিশিপ্ত পুপান্তবকবৎ কিছা স্থলকমলেও ছারা নির্মিত দেউলের মত, স্থনোপায় হইতেছে দেখা য়য়। শশীম্থীর আর শৈশব দেহ নাই, শৈশব দেহে বিকশিত ত্রিবলীর রেথাত্রয়কে চিবপরিত্যাগ করিয়াছে। এখন থৌবনের উদয় হইয়াছে, তাহাতেই সয়ল অবেকণের পরিবর্ত্তে বন্ধিম দৃষ্টি.

€.

অন যৌবন ভেল, বঙ্কিম-দিঠ। উপজল লাজ, হাস ভেল থিঠ॥
চরণ চঞ্চল, চিত চঞ্চল-ভাণ।
জাগল মনসিজ, মুদিত নয়ান॥
বিদ্যাপতি কহে কর অবধান।
বালা অঙ্গে লাগল পাঁচ-বাণ॥

( & )

वाला।

খনে খনে। নিয়নকোণে অনুসরই খনে খনে বসন ধূলি ভরে ভবই।

উচ্চ হান্তের পরিবর্ত্তে মধুর হাসি দেখা দিয়াছে, ইহা দ্বারাই লজ্জার আবির্জাব বুঝা যায়। চিত্তে যে চাঞ্চল্য উপজাত হইখাছে, এ কথা তাহার চঞ্চল চরণই বিলয়া দেয়। মনে যে মনসিজ জাগরিত হইখাছে, নয়ন মুদ্রণের মুদ্রাই তাহার পরিচায়ক। অবধান পূর্বক এ সকল কথা ভাবিলে বুঝিবে এই বালার শরীরে নিশ্চয়ই কন্দর্প লাগিয়াছে।

৬৪ ছেত্রের 'উদিত' স্থলে পদামৃত সমুদ্রের পাঠ 'উদর' এবং কালী প্রসন্ধ বাব্র বিদ্যাপতির পাঠ 'উদয়'; 'লালীম' স্থলে উভয় গ্রান্থই 'নালীম' এবং ভণিতাতে—"শুন বর কান, ধৈর্য ধর্হ মিলাওব আন" এইরূপ পাঠান্তর। কালী বাব্র ব্যাথ্যা "স্তনের উল্গম স্থল রক্তাভ হইল"।

(৬) রঙ্গিণী স্থি,সময় পাইয়া রঙ্গ আরেন্ত করিলেন। কহিলেন,ভাহার নয়ন ক্ষণে ক্ষণে কোনে অর্থাৎ কাহাকেও যেন অনুসরণ করে (কিম্বা কখন কখন খনে খনে দখনকো ছটছটি হাস

খনে এক অধর আগে গহে বাস

বালা শৈশব ভাক্তণ ভেট

লখই না পারই জেঠ কনেঠ।
হাদয় মুকুলিত হেরি খোরি খোরি
খনে আচর দেই খনে ভই ভোরি।
চঁওকি চলয়ে খনে, খনে চলু মলক
মনমধ পাঠ কো. করি অফুবদ্ধ।

নয়নে অপাঙ্গ দৃষ্টির বিকাশ। দৃষ্ট হয় সত্য, কিন্তু ক্ষণে ক্ষণে আবার বালিকার স্থায়,বসন ধূলি ধূদরিত করিতেও দেখা যায়। ক্ষণে ক্ষণে দশনকান্তি ছড়াইয়া অট্টহাস্ত করে, কখন বা মুখাগ্রে বসন দিয়া হাস্ত গোপন করিয়া থাকে; ( অথবা হাস্ত মুখাগ্রেই বাস করে) এই বালার শরীরে শৈশবের ও তারুণ্যের দেখা-সাক্ষাং হইভেছে ঠিক্, কিন্তু তন্মধ্যে কাহার প্রাধান্ত অর্থাৎ কে বড় কে ছোট, এ কথা এই সকল লক্ষণে সাব্যস্ত করা যায় না। তবে হাদয় কিছু কিছু মুকুলিত হইয়াছে বটে, কিন্তু সে স্করী তত্পরে কথন বস্ত্রাচ্ছাদন করে, কথন ও করে না, বিভোর ভাবে তৎপ্রতি চাহিয়া রহে।

তবে কথন কথন বিনাকারণে যেন চমকিত হইয়া ক্রতগমনে চলিয়া যায়, কখনও মহমন্দ ভঙ্গীতে গমন করিয়াথাকে ইহা মন্মথ পাঠের উপক্রমনিকা অথবা লক্ষণ বটে।

<sup>\*</sup> আমাদের আদর্শ পুথিতে "পটপটি হাস" পাঠ ছিল। উহা লিপির ভ্রম বিবেচনায় পদামৃত সমুদ্রের পাঠ সমাচিন বোধে গ্রহণ করিয়াছি। ৪র্থ অবধি ৮ম লাইন অন্তান্ত গ্রন্থে বিপর্যায় ভাবে শ্রন্থ।

# <del>--</del>( & )

দুতী সেরনী করহ সোই ঠাট, গণ্ডিত হাম পড়াওব পাঠ। চেতন মঝু, ঝব-কেতন-তন্ত্র, অবগহি লেঙ, শিখ্ড রসমন্ত্র। আপন-তন-কাঞ্চন-হামে দেই, যতনহি প্রেম-রতন ভরি লেই। বিদ্যাবল্লত ইহ আঞ্চীব, ইহ বিমু দোহকো জীউ না জীব।

(9)

#### বরাড়ি।

আওলি দৃতী, রহসি—চলু বালা,
পৃছ্ইতে—গুনই কহই সোই কালা।
কমল-নয়ন, রূপগুণক ফান্দে,
স্থাচতুর-দৃতী, রমণী-মন বান্ধে।
জানল বাত্ত, মনোভব-ভূপে,
ধনি ডারল, লালস-রস-কূপে।

তব দ্তীক করু শরণ কিশোরী, সো দেওলি, অভিসার কো ডুরী। সংভ্রমে গহি গহি, তা, করমূল, পাওলী ধনী, যমুনাকে কুল। সাধ্যে ধাধ্যে ধক ধক প্রাণ, কহে হরিবল্লভ ভেটহ কান।

এই দকল কথা বলিয়া স্থচ চুৱা দুতী গপরিহাস বচনে কহিলেন, যাহা ছউক আমি এ শাস্ত্রের অধ্যাপনা জানি, তাঁহাকে পাঠ পড়াইয়া লইব। আমার কলপ তিম্ব বড় জাগ্রত গ্রন্থ। তাহাকে ইহাতে অবগাহন করাইব এবং রদমন্ত্র শিথাইব। সে ধদি, আপন দেহজ্ঞপ কাঞ্চন পেটিকা, আমার হাতে প্রদান করে, আমি প্রেমরত্বের হারা, সম্বত্বে উহা পূর্ণ করিয়া লইব।

পদ কর্ত্তা বিভাবরভ তত্ত্রোপণ্ডিত। স্থীর ভাবাবেশে কছিতেছেন, হাঁ ইহাই জীবনের অবলম্বন বটে, এ না করিলে এ ছন্ধনেম্বই ভীবন থাকিবে না।

চতুর্দশাক্ষরে নিখিত এ গীতের ৮টী ছত্র, অপর কোনও পদাবলী গ্রন্থে এ কি গীতে নাই। ঐ করেক পংক্তির গরেই, সম্দর পুস্তকে "বিদ্যাপতি কহে শুন বরকান, তরণনিম শৈশব চিহ্নই না জান" এইরপ ভণিতায় গীতি সমাপ্ত। কোনও লৈপিকারকের অনবধানতায় কি অন্ত কোনও কারণে ছইটি শুভ্র শুভ্রন্থ পদ একত হইয়া গিয়াছে কি না বিবেচা।

<sup>(</sup>৭) দুতী প্রীরাধার নিকটে গমন করিয়া, তাঁহাকে নির্জন ছাবে লইয়া

( **b** )

# বালা,-ধানসি

এ সধি ! এ সথি ! লই যনি যাহ, মৃত্যি অতি বালিক, ভাবনত ;\* নাহ—

পোলেন। এবং শ্রীরাধার সমস্ত প্রশ্নের উত্তরেই তিনি কৌশলে কেবল সেই কালিয়ার কথা কহিতে আরম্ভ করিলেন। এইরূপে স্টুচতুরা দৃতী কমল-লোচন-শ্রীরুক্তের, কপগুণের ফাঁদে, রমণী-মণি-রাধার মনকে বাঁধিতে লাগি-লোন। ক্রেমে যখন বুঝা গেল – মনোভব, রস-লালসার কৃপে ধনীকে নিক্ষেপ করিরাছে, তথন কিশোরীমণি, দৃতীর শরণাপন্ন হইলেন। দৃতী অমনি ভাহাকে অভিসারের ডুরি দ্বারা বন্ধন করিলেন, অর্থাৎ ক্রফাভিসারের নিমিন্ত উৎসাহিত করিয়া ভূলিলেন।

তদনস্তব কৃপ-নিক্ষিপ্ত অনায়ত্বজনের, দৈববলে-প্রাপ্ত-ভূরী ধারণের স্থার ধনী-শিরোমণি, স্থীর করমূল গ্রহণ করিতে করিতে আনন্দ-ভ্রাদি-জড়িত গতিতে ব্যুনার কৃলে উপনীত হইলেন। কিন্তু ভ্রেও আকাজ্ফায় প্রাণ ধক্ ধক্ করিতে লাগিল।

প্রাণেখরীর এইরূপ ভাব দৃষ্টে, তৎসঙ্গিনী সখীর ভাবাবিষ্ট, গীত রচরিতা হরিবল্লভ ( শ্রীবিশ্বনাথ চক্রবর্তী মহাশয়) আখাস বাক্যে বলিভেছেন, "কোন ও ভর শঙ্কার কারণ নাই, তুমি স্বচ্ছন্দ চিত্তে কান্ অর্থাৎ শ্রীক্লক্ষের স্থিত সম্ভাবণাদি কর।

(৮) চলিতে ২ শ্রীরাধা, পথে সধিকে কনিতেছেন সধি ! আমাকে বেন (ক্লুঞ্চ নিকটে) লইয়া যাইতেছ ! আমি যে,অতি বালিকা ! এবং কাস্তাভিসারের

মে এখনও কার্য্য সমাধানে অক্ষম, সে "অবনত"। ইহার, অন্তথা অর্থ বুঝিরা, অন্তান্ত গ্রন্থকার এমন কি কালী প্রসর কাব্যবিশায়দ পর্যান্ত পাঠ-পরিবর্জন

পাশ যাইতে অব, জিউ মোর কাঁপে,
কাঁচা কলল, জ্রমর করু বাঁপে ?
দূবর দেহ মোর, ঝাঁপল চীর,
যতু ভগমগ করে নলিনীকো নীর।
মা ! ইহে কি সহয়ে ? জীবকো সাধি ?
কোন বিহি দিরজিল পাপিণী রাভি !
(ভণয়ে বিদ্যাপতি, তথনক ভাণ ।
কোন দেখত সধি ! হোভ বিহান ?)

অরপযুক্তা। দেখ সথি। নায়কের নিকট যাইতে আমার প্রাণ কাঁপিতেছে है कि জানি সে অমর, অফুটস্ত-কমণে ঝাঁপদের।! দেখ আমার বস্ত্রাচ্ছাদিত ত্র্বাক দেহ, নলিনীদলন্থ সলিল বিন্দুর ন্যায় অন্থির হইয়া, উঠিয়াছে ও ডগমগ করি-তেছে। মাগো। জীবনের এইরূপ শান্তি কি সহু হয় ? হায়। কোন্ বিধাতা পাপিনী-বাত্রির সৃষ্টি করিয়াছে।

শুনিয়া, তত্তোপস্থিতা সথির ভাবাবিষ্ট, পদকর্ত্তা-কবি বিদ্যাপতি আবেশের ভাবার শ্রীরাধাকে সংখাধন করিয়া, সময়োপযোগী বচনে বা আখাস বাক্যে) বলিতেছেন 'এই বে প্রভাত হইতে আরম্ভ হইয়াছে!! সবি! কে ইহানা দেখিতেছে?" বাকেটর ভাবার্থ এই যে, কাছের নিকটে চল, কোনক শুর নাই, এখনি আবার ফিরিব। ভণিতার ভাষা নিভূণ কিনা সন্দেহ।

পূর্বক 'আরত নাহ' করিয়াছেন। ফলতঃ 'নাহ" শব্দের অষয় পরের পরারের সহিত হইবে। অপবা 'অবনত" শব্দের এইরূপ অর্থ সর্বাপেক। সুস্কৃত, আতীষ্টানাদ্ধর এক প্রপ্ত প্রপত।

( > )

বরাড়ি

কাহে জনদি ধনি ! চলু হাম সঙ্গ,

নাধব নহি পরশিব তুরা অঙ্গ।

এ রজনী, ফুল-কানন-মাঝ,
কো এক ফিরত, গাজি বহু সাজ।
কুত্মকো ঘোর—ধুকুক ধরি পানি,
মারত শর, বালাজন জানি।
অতএ, চলহ সথি ! ভিতর কুঞ্জ,

যহি হরি রহত; মহাবল-পুঞ্জ।
এত কহি, আনল ধনী, হরিপাশ,
পুরল, ব্লভ-ত্প অভিলাম।

<sup>(</sup>৯) নরলীলার বলিহারি। নিত্য কিশোরী-রসময়ী, আজ মুগা বালিকা। ছুতী তাহাকে সাহদ প্রদান করিতেছেন, যথা,—ধনি। কেন ভূমি বুথা ভন্ন গাইতেছ ? আমি তোমার সঙ্গে যাহতেছি, ভন্ন কি ? আজ মাধব তোমার অক, স্পর্লপ্ত করিবেন না।

ভবে রঞ্জনী তে এই প্রকৃল্লিত বনে, কে একজনা নানা সাজে সাজিরা ষিচরণ করে এবং এ বনে কোনও অবলার আগমন-জানিলেই সে ভয়কর কুল্থসূহন্তে ধারণ কবিয়া পরপ্রহার করে। অতএব মহাবল হরি বেখানে অবস্থান করিভেছেন, চল আমরা সেখানে সেই কুজের ভিতরে যাই।

এই বলিয়া দৃতী ধনীকে হরির নিকটে আনয়ন করিলেন, বলভের আর্থাৎ ইক্লেফের স্থাভিলাধ পূর্ব হইল। অথবা যুগল সন্মিলন দর্শনে পদক্ষা বল্লভের স্থাভিলাধ পূর্ব হইল।

<sup>- &</sup>quot;চলু হাম সক্ষে" শক্ষে "আমার সঙ্গে চল" এরপ অর্থও হইছে পারে।

# ( >• )

### বরাড়ি।

ধরি সথি-আচর, ভই উপচন্ধ, বৈঠে না বৈঠই, হরি-পরি বর। চলইতে আলী, চলতপুন চাহ, রদ-অভিলাদে, আগোরল নাহ। লুবধল-মাধন, মুগধল-নারী, ও অভি বিদর্গধ, এ অভি গোঙারী। পরশিতে ভরসি, করহি কর ঠেলই, হেরইতে বয়ন, নয়ন-জল থলই। হঠ-পরিরন্তণে, ধরহরি কাঁপ,
চুষনে, বদন পটাঞ্চলে ঝাঁপ।
শুতলি, ভীত-পুতলী-সম গোরী,
চিত নলিনী, অলি—রহলি আগোরি।
গোবিন্দাস কহ, ইছ পরিণাম,
রূপকো কুপে, মগন ভেল কান।

(১০) কেলীকুঞ্জে প্রবেশ করিয়া, সথীর বস্ত্রাঞ্চলধারিণী-শ্রীরাধা,ভীতিভাব-গ্রন্থ। হইলেন, হরির কেলীপর্যান্ত বসিয়াও বসেন না । স্থি চলিতেই তৎসহ চলিয়া যাইতে চাহেন ! দেখিয়া—কৌতুকী-কান্ত, রসাভিলাষে পথ আগুলিয়া त्रशिलन। जननखत्र नुक वनः निमक्ष माधन मुक्षा वनः त्राखाती (अनिमक्षा) মায়িকা শ্রীরাধাকে স্পর্ল করামাত্র,তিনি ত্রাসযুক্ত হইয়া সকীয় কর-দারা নাপ-রের হস্ত ঠেলিয়া নিলেন। তৎপরে মাধব,তাহার চিবুকে ধরিয়া মুখ নিরীক্ষণ করিছে আরম্ভ করিলে অন্তঃসান্তিক—বহির্ডয়সন্ধিত ভাবে,ধনিমণির নয়ন-নীর-স্থালিত হুটতে লাগিল! এবং বিদগ্ধ-নাগরের বলাৎকার আলিঙ্গনে (ঐ প্রেকার ভাবসাবলো) থরথরি কাঁপিতে লাগিলেন। চুম্বনকালে বদন বসনাবৃত করিতে লাগিলেন। এই প্রকারে,অভিন্যিত-নায়কের নবীন-স্থপপর্শে ভাবময়ীর শ্রীক্ষকে গুম্ভভাব বিকশিত হইণ। তিনি গৃহ-ভিত্তির পুত্তলিকাৰৎ কিম্বা স্থানির্মিত ভীতি ভাবযুক্ত পুতৃলের ক্লায়, নিশ্চল এবং নিপ্সন্দ ভাবে ভইয়া পড়িলেন। खाय-खमत द्वज्ञा हिज्जि इन्निनीटक भावत् कतिया त्रह, उथन सिर मुक्त घंडिन. व्यर्थाए नागद्रत्मश्रद स्पर्टे मना ध्याश्च रहेरनन। जानद्रक् घारक बीलामर्ननकातिनी-मधीशालंद ভाবাदमर्म गीठकर्छ। गाविन माम कवितांक কহিতেছেন, পরিণাম এই হইল, রদরাজ (কৃষ্ণ বা কান্)-রপের কৃপে निमध हरेलन।।

( >>)

#### जूपाना ।

থরহরি কাঁপয়ে বছ বছ ভাষ,
বাজে না বচন করয়ে পরকাশ।
আব্দু ধনি পেথরু বড় বিপরীত,
খনে অহুমতি, খনে—মানয়ে ভীত ?
হ্যরতক নামে, মুদই হই আথি,
পাওল, মদন-মহৌষধি, সাথি!
চুম্বন বেরি, করয়ে মুথ বঙ্কা,
মিলন, চাঁদ, সরোক্রহ অহা।

নীবিবন্ধ পরশে চমকি উঠে গোরী,
জানল, মদন ভাণ্ডারক ঠঠোরী!
ফ্রল-বসন-হিয়া, ভ্রের রহু সাটি,
বাহিরে রতন, আঁচরে দেই গাঁঠি!!
(বিদ্যাপতি কি ব্যব বল! হরি—
ভেজি তলপ-পরিরন্তন বেরি।)
ইতি সংক্ষিপ্ত সম্ভোগ।

(১১) জালরকু দন্ত-নয়না স্থীগণ, শ্রী-শ্রীরাধামাধ্বের প্রথম বিলন দর্শনানন্দে মাতোয়ারা হইয়া একে অপরাকে কহিতেছেনঃ—বিনোদিনীর স্তম্ভাব দূর হইয়াছে কিন্তু এখনও পর থর কম্পন রহিয়াছে, লজ্জা বশতঃ স্পষ্টোচ্চারণে কথা বলিতেছেন না, লঘু লঘু বাক্যে কি বলিতেছেন। এ নিশ্চয়ই নায়কের সহিত রসালাপ! আজিকার আচরণে কথন সম্মতি, কথন ভীতি এইরপ বিপরীত ভাব! দেখ ম্বরতের নাম গুনিতেই চকু মুদ্রিত করিতেছেন, ইহা মদন-মহৌষ্ধি প্রাপ্তির সাক্ষি। অর্থাৎ নবজীবন দাতা, মদনামূভবের পরিচায়ক। আরও দেখ চুম্বনের সময় মুখ বঙ্ক করিয়া, পদ্মিনীর ক্রোড়ে চক্রের সন্মিলনের ক্রায়, অপ্রফুল ভাব প্রদর্শন করিতেছেন। এবং নাগর যেমন নীবিবন্ধ স্পর্শের চেন্ত। করিতেছেন অমনি চমকিয়া উঠিতেছে, অত এব ক্রথানেই যে মদন ভাগ্ডারের সংস্থিতি, একথা জানিয়াছেন। আবার নায়কোস্কুল-বক্ষঃ-বসন, শীয় হস্ত গারা সাটিয়া অর্থাৎ দৃঢ় করিয়া ধারণ করিতেছে!
মুগ্রা,—রত্ব বাহিরে রাথিয়া থালি অঞ্চলে গ্রন্থি বন্ধন করিতেছে।

গীতকর্ত্তা কবি বিদ্যাপতি, সথীর কথার উত্তরে সথী ভাবে বলিভেছেন,— ছরিকে পরিহার করিয়া, কেণীতর-পরিরস্তণকারিণী অর্থাৎ পিছন ফিরিয়া এথনও শ্যাতিলে বক্ষ-রক্ষাকারিণীর রসভ্ষয় ভাব এ সকল আমরা কি বৃঝিব 🏾 ()

# অথ দ্বিতীয় কণ্দা,—কুফা দ্বিতীয়া।

### श्रीरगीतहस्य अ-एम गार्ग।

কুন্দন কনরা, কলেবর কাঁতি, প্রতি অঙ্গে অবিরল, প্লককো পাতি। প্রেমন্ডরে, চরচর-লোচনে চার, কতন্ত্র মন্দাকিনী, তহি বহি যার। দেধ দেখা গোরা গুণমণি, করণার কো বিহি, মিশারল আনি। জপি-জপারে, মধুর নিজ নাম, গাই গাওরায়ে, আপন গুণ-গাম। নাচি নাচাওরে, বধির-জড় অন্ধ.
কতিত্ব প্রেথা, ঐছন পরবন্ধ!
আপহি ভোরি, ভূবন করু ভোর,
নিজপর নাহি, সভারে দেই কোর।
ভাসল প্রেমে, অ্থিল শ্বনারী,
গোবিন্দাস কহে, জাঙ বলিহারী।

এ গীতোক্ত "লছ লছ" ভাষ কিরুপ, নিমোদ্ত পদে আম্বাদা :—
"তরণ-নয়ন-শর অথির সন্ধান, নবীন শিখা ওল গুরু পাঁচ বাণ ?
অগেরানে(১) কোন কররেবেবহার ? বলে নাহি লেওত জীবন হামার ।
আরতি না কর কামু না ধর চীর, হাম অবলা, অতি-রণ ভীর(২)
প্রথম বরস, লেশ না পূরব আশ, না পূরে অলপ ধনে দারিদ-তিয়াস ।
মাধবী-মুকুলিত, মালতী ফুল, তাহে নাহি ভৃথিল ভ্রমরা অমুকুল(৩)
অমুচিত কাজে ভাল নহে পরিণাম, সাহস, না করয়ে সংশয় ঠাম
কহই বিদ্যাপতি নাগর কান, মাতল-করি, নাহি অঙ্কুশ মান।

(>) কুন্দন অর্থ উল্লন্ডন। 'কুন্দন কনরা' কনক পরাত্রী। নিশ্বও সমুজ্জন অক্রণের আলোক, যেমন অন্ধকার ধ্বংস করিতে করিতে প্রাভাতিক-কুস্থমের শোতা ও সৌরত এবং পুলকিত পক্ষীগণের কল-নাদের সহিত মিলিয়া—

১। বে কর্মের বে অঞ্জ, তাহাকে। ২। ভীরু। ৩। মধু ঋতুতে কিছা বৈশাথ-মাসেও লুক্ক ভ্রমর, মালতীর মুকুলে বলে না।

নবীনভাব, নৃতন দৃশু এবং আনন্দ উদাম ও আকাজ্জামর একটি নব জগৎ লোকের সমক্ষে উপস্থিত করে। তেমনি আমার বিশ্ব-পাবনাবতার শ্রীবিশ্ব-স্তরের অবিরল পুলক-পৃষ্ণিত কনকপরাভবী দ্বিশ্ব-মধুর-সমুজ্জল-গৌরকান্তিতে জীবগণের প্রাণে, প্রেম ও আনন্দমাধা—মবীন ভাব, মবীন ব্যবহার এবং নবীন অমুভবের সৌন্ধামর, একটি অভিনব শ্বর্গরাজ্যের সৃষ্টি হয়।

আর আমার গৌর-নরাক্ষতি-রদময়ের,প্রেম চর্চর লোচনের দে ভ্বন-ভোরা চাহনি ও নরনাশ্রু ধারা দেখিলে হৃদরের শোক, তাপ, জালা, যন্ত্রণা, মালিন্য ও সকল প্রকার কৃটিনাটি, সম্লে বিধোত হইয়া বার। বোধ হর যেন শত মলাকিনী, প্রবৃহিতা হইয়া জগৎ পবিত্র ক্রিভেছে। সিদ্ধভক্ত পদক্র্তা গোবিল ক্রিরাজ প্রভুর এই সকল মহামাধুরী মানসে প্রভাক্ষ করিতে ক্রিভে ভাবাবেশে ভক্তগণকে উহা দেখাইয়া বলিতেছেন,—এমন গুণের গোরা গুণ্মণিকে জানিনা কোন্ বিধাতা করুণা করিয়া জগতে আনিয়া দিয়াছেন।

গীতকর্ত্তা, ভারপর আমার গৌরহরির অবার্থ করুণাবর্ধণের কলা-কোশলে বিমোহিত হইয়া ভাবিভেছেন, শাস্ত্রের ও বাচিক উপদেশের ফলে চিরস্থায়ী প্রকৃত কার্য্য হইডে পারে না বলিয়া, আমার দয়ার ঠাকুর স্বয়ং আচরণ ছারা কার্যাকয়ি-শিক্ষার সহিত সাধনভক্তি, ভাবভক্তি ও প্রেমভক্তি দান করেন !! তাই বলিতেছেন, যথা—"জপি জপাঙরে ইত্যাদি''। আপন গুণগাথা অর্থে প্রীকৃষ্ণের গুণগ্রাম। এইরূপ প্রয়োগ "কভক্তি শ্রিয়ং" ইত্যাদি গোস্বামী প্রয়োগের অনুসরণ বটে। "নাচাগুরে বধির জড়" অয়" "ভ্বন করু ভোর" "ভাসল…অথিল নর নারী" এই সকল বাক্য প্রীগৌর ভগবানের আ্বাচিত এবং নির্মিচার কুপার স্থাকর উদাহরণ।

"সভাবে দেই কোর" ইহার অর্থ--ভক্তম ওলীর মাঝে, যে আসিতেছে, তাহাকেই (পর হইলেও) আলিঙ্গন করিতেছেন। "নারী পুরুষ সকলকে কোল দিতেছেন" কেহ এগপ কদর্থ করিবেন না। অক্তর-অপূর্ব লীলা দেখিরা নারী পুরুষ সকলে প্রেমে ভাসিতেছে।

# ( १ )-- শ্রীনিত্যানন্দ চন্দ্রস্থ--রাগ ধানসী।

हिन, निज-পদভরে, দিগ টনমল করে,
পদভরে অবনি-দোলায়।
আধ আধ কথা কয়, মুখের বাহির নয়,
নিজ-পারিষদে গুণ গায়॥
(দেশরে ভাই!) অবনি-মগুলে, নিজ্যানন্দ।
ভায়ার মুখ হেরি, বাচুয়ে আনন্দ॥ গুল।
পরিধান নীল-ধটি, আটনি নারহে কটি
অন্তর্ভাবে, বাহ্য নাহি জানে।
আল হেলি হেলি চলে, গৌর গৌর বলে,
নিশি দিশি, আর নাহি জানে॥

"অবিক্লভ-নিৰ্ম্মণ-নিভাগনন্দ মরজগতে অসম্ভব'' এই, চিরদিনের কৰি-

<sup>(</sup>২) "পরিত্রাণার সাধুনাং বিনাশার চ গৃন্ধতাম, ধর্ম সংস্থাপনার্থার সম্ভবামি যুগে যুগে" শ্রীমদগীতোপনিবছক্ত এই ভগবদ্ বাক্যের মর্মাহরূপে ছক্তের ও ধর্মের রক্ষার্থ প্রতি যুগে, যুগাবতার প্রকটিত হইয়া থাকেন। বর্ত্তমান কলিযুগে,—লীলাবিহারী সর্কেম্বরেশ্বর, পূর্ণতম ভগবান্ গৌরহরি, সে শুভ কার্যাটি স্বকীয়-লীলা-বিলাসের অঙ্গীভৃত করিয়া লওয়ায়, ভৎপ্রকাশয়পে প্রকটিত,—নিতাইটাদ, পূর্ণ-সম্বর্দ্ধিত স্থানরসানন্দে,—আহলাদ ও গৌরবের অপূর্ব্ধ সন্মিলনে—আজ মহোম্মাদ তরঙ্গিত!! দেখ, চলিতে চলিতে সকলদিকে (আগে পাছে) পদ-চালনা করিতেছেন, সে সদর্প-পদসঞ্চারে, দিক্ সকল টলমল এবং প্রতিপদেই পদভরে ধরণী যেন দোলিতেছে! আনক্ষাড্যে—আমার নিতাইচালের—মুখেরকথা, মুধের বাহির হইতেছে না! সে অপূর্ব্বামূত-তরক্ষে ভক্তগণ ভাসিয়া যাইতেছেন, আর আনন্দে তাঁহার গুণগান করিতেছেন।

যুগে যুগে রাম, স্কলন-প্রতিপালক, পাদগুরি করিতে বিনাশ। শ্রীকৃষ্ণ চৈতভাচক্র, ঠাকুর শ্রীনিত্যানন্দ, শুণ গায় বৃন্দানন দাস।

# ( ७ )— 🖺 कृष्ण चार---वाना धानिम ।

হেরইতে হেরিনা হেরি,
পুছইতে কহই, না কহ পুনবেরি।
চতুর-সধী সঞে বসই,
হাস-পরিহাস, হসই না হসই।
পেথলু ব্রজ্ব-নব-নারী,
তরুণিম-শৈশব, বুঝই না পারি।

হৃদয়-নয়ন-গতি-রীতে,
সো কিয়ে আন, নহে পরতিতে।
ঐছন হেরইতে গোরী,
হঠ-সঞে পৈঠল, মন মাহা মোরি।
তবহি কুসম-শর ভোর,
ছুটল বাণ, ফুটল হিয়া-মোর।

সংবাদিত সিদ্ধান্ত, উড়িরা গিরাছে! আৰু শ্রীনিত্যানন্দরপে মূর্তিমান্
নিত্যানন্দ,—অবনীমণ্ডলে সাক্ষাৎ প্রকটিত!! 'সর্কাবস্থার পূর্ণতা'ই নিত্যান্
নন্দের লক্ষণ; কিন্ত দেও কি অন্ত্ত! ভারার (শ্রীগৌরচন্দ্রের) বদন বিলোন্
কনে এ নিত্যানন্দের আনন্দ, অধিরত বর্দ্ধিত হইতেছে। ইত্যাদি।

গৌরপদতরন্ধিণীতে ২য় ছত্তের স্থলে "পূর্ব্বে যেন ব্রজ্ঞধান, বধুমজ্ঞ বলরাম, নানাদিকে ঘ্রিয়া থেলায়"; এর্থ ছত্তের স্থলে "আধ আধ কথা কল্প, ক্ষণে কান্দে উচ্চরায়, মকর কুগুল দোলে কাণে"; • চিহ্নিত স্থলে "বিনি ক্বিবন্ন শুণ্ড, শ্রীভূঙ্গে কণকদণ্ড" ইত্যাদি পাঠাস্তর বর্ত্তমান।

(৩) শ্রীরাধার ভাব ব্যবহারের কথা, আলোচনা করিয়া, স্থীর নিকটে শ্রীকৃষ্ণ কহিতেছেন "সেই স্থন্দরী এমন এক অপূর্ব্ধ ভঙ্গীতে আমার পানে গোবিন্দ দাস-চিতে জাগ, চান্দ কি লাগি, স্বরষ-উপরাগ ?

চাহিল,—বেন এনিকে দেখিরাও দেখিতেছে না। দেখিলাম আপন স্থীধ প্রশ্নের উত্তরে কিছু বলিরা পুনঃ প্রশ্নে আর কিছুই বলিল না। যে সকল স্থীর সহিত সে বাস করে তাহারাও অতি চতুরা, তাহাদের পরস্পারের হাস পরিহাস এমন আসাধারণ যে তথারাও কিছু ব্রিবার উপায় নাই! তাহারা হাসিরাও বেন হাসে না!! বস্তুতঃ এই নবীনা ব্রজাঙ্গনাটীর আচরণ এমন রহস্তময় যে তাহার অত্ররাগ অভিলাধ—ব্রা। দ্রের কথা, তাহাকে দেখিরা সে প্রকৃত পক্ষে বালিকা কি তরুণী, এ কথাই ব্রা যায় না। তাহার হৃদয়ের এবং নয়নের গতির রীতি সময়ে ২ এত বিভিন্ন হয় যে, দেখিয়া মনে হয় এ কি সেই পূর্ব্বন্দরী না আর কেহ ? অথবা ভূমি যে বলিয়াছ 'ইহা নবাত্র রাগের লক্ষণ' মনে হয় এ কি তাই না অক্স ভাব ?

ত্মি বলিতে পার "ভাব না ব্ঝিয়াই, অসরজ অজ্ঞের ন্তায় তুমি তৎপ্রতি পুদ্ধ হইয়া, তাপিত হইতেছ কেন? তাহার উত্তর—কোত্হণাক্রান্ত হইয়া আমিতাহার ভাব ব্যবহার নিরীক্ষণ করিতেছিলাম, তাহাতেই সে বলাৎ-কারে আমার হৃদয়ে ঢুকিয়া গিয়াছে এবং সেই অবধি আমি কম্ম-শরে ভোর হইয়া গিয়াছি। কন্দ্-শরে আমার হৃদয় বিদ্ধ ইইয়াছে।

গীত রচিন্নিতা মহাজন গোবিন্দদাস, স্থীর ভাবাবেশে, ভদী-মন্ধ-বাক্টে প্রিক্ষকে কহিতেছেন,—তোমার কথা শুনির ''চাঁদের জন্ম স্থা গ্রহণ'' এই প্রবাদটি আমার মনে জাগিতেছে। এ কথার ভাবার্থ এই যে, আমাবস্থা তিথিতে চল্রের সমস্ত কণাই, প্রাত্যহিক সঞ্চার ক্রমে সে দিন স্থো অবস্থান করে, সেই জন্মই আমাবস্থা বিশেষে—স্থ্য গ্রহণ হয়। এক্ষেক্তে ক্রমিনী রাধা—স্থ্যরূপ ক্লফের হৃদরন্থা-স্থীর মন্তব্য বলিন্না তাহাতেই কন্দর্পরাহ ক্লফকে আক্রমণ করিনাছে। উদ্দেশ্য—উভরেই এ কি অবস্থা-পর হহরাছ, অভএব আস্তত্ত হও।

# ( ৪)—কুষ্ণেনসহ উক্তি প্রত্যুক্তি—রাগ বরাড়ি।

সোধনী অতি পরবশ, পরনারী।

অতি-কুলশীল, লাজ ভর পুঞে,
কেমন যুক্তি ভাহে, আনব কুঞে ?
এক, কুম্ম-শর, বল যদি কররে,
তুহু অতি স্কুত,—শাখী ফল ধররে।
তব হাম এ যশ, পাওব আজি,
পুরব তোহারি, মনোরধ রাজি"
এত কহি আলী,চললি বহি বালা,
গহি হরিবরুভ, শুণ মণি মালা।

# (त)—छ्रहे—ानगा।

আজু হাম পেথলু, কালিন্দী-কুলে, তুরা বিহু মাধব. বিলুঠট ধুলে! কত শত-রমণী, মনহি নাহি আনে, কিরে নিধলাহ, সময়ে জল দানে? মদন-ভূজকমে, দংশল কান, বিনহি অমিয়া-রস কি কর্ব আন ? কুলবভী ধ্রম, কাচ-সমতৃত্র.
মদন-দালাল, ভেল অমুকুল।

আনগ বেচি, নিল মণি- হার,
সো তুম পহিরি, করবি অভিসার।
নীল-নিচোলে, ঝাপহ নিজ দেহ,
বন্ন অন-ভিতরে, দামিনী-রেহ,
চৌদিকে চতুরি সথী চলু সলে।
আজু নিকুঞ্জে,করহ রস রঙ্গে,
বল্লভ, উজ্জল-নিক্ষ সমান।
নিজ্ঞ তমু-পরীধ, হেম-দশ-ষাণ।

<sup>(</sup>৪) এ গীতের ভাব স্থাকিত। স্কৃত-শাধী—স্কৃতি রূপ বৃক্ষ। ভণিতার 
অর্থ-বন্নভহরি (প্রীকৃষ্ণ) রাধার (বালার) গুণ রূপ মণিমালা গ্রহণ করিলেল অর্থাৎ জ্বণিতে লাগিলেন। লিষ্টার্থ-সীতক্তা হরিবল্লভ গুণ গান
ধরিলেন।

<sup>(</sup> ৫ ) 'ছই থণ্ড কাঞ্চনকে সন্মিলিত করিতে হইলে ছ্থানিকেই তুল্য রূপে ভাঙাইয়া নইভে হয়।প্রেম কাফকরী সধী,শ্রীরাধার নিকটে গিয়া তাহাই আরম্ভ করিলেন । কহিতেত্বেল,— সণি রাধে। দেখিয়া আলিকাম,তোমার বিরহ সন্তাপে

## ( ७ )--কানড়।

ষাওবি বসনে, অঙ্গ সব গোই,

দ্বে রহবি, ষথ বাত না হই ।

[সজনি!] পহিলহি রহবি লাজাই,

কুটিল-নয়নে দিবি, মদন জাগাই।

ঝাপবি কুচ, দরশাওবি কন্ধ,

দুট করি বান্ধবি, নাবিহক বন্ধ।

মান করবি, কছু রাথবি ভাব, রাথবি রস, যমু, পুন: পুন: আব। ভনই বিছাপতি, প্রাণমক ভাব, যো গুন বস্তু, সোই ফল পাব,।

মাধব আজ কালিন্দী-কূলে, ধ্লায় লুক্তিত হইতেছেন !! হায় ! সে ভ্ৰন-নূৰ্ণ রাজকুমারের নিমিত্ত কত শত শত রমণী জমুরাগিনী, কিন্তু কাহারও প্রতিই তাহার মন ধাবিত হয়না ৷ যাইবে কেন ? দলিল-সিঞ্চনের ছারা কি ক্থনত বিষ-দাহ নিবারিত হয় ? তাহাকে মদনরূপ ভ্জক্ষমে দংশন করিয়াছে, অমৃতর্স ব্যতিত অপর প্রতিকারে কি ক্রিবে ?। (ভাবার্থ, – তোমার বদন শুণাকরই সে অমৃতের আধার)।

শ্রীরাধাকে চিন্তিত ও উৎকটিত দেখিয়া কহিতেছেন। তুমি কি ক্ল-বতীর ধর্মের কথা ভাবিতেছ ? দেখ ! তোমার কুলবতী-ধর্ম, কাচের স্থার অকিঞ্চিংকর পদার্থ। মদন-দালাল, সদর হইরা এই সামান্ত বন্তর পরিবর্তে, নীগমণির অম্লাহার আনয়ন করিয়াছে (অর্থাৎ শ্রীরুক্ষকে ভোমার হৃদয়ে অনিয়াছে) অতএব এই ভূবন-তুর্লভ-হার বক্ষে পরিয়া অর্থাৎ রুক্ষের রূপে গুণে হৃদয় অলয়্কত করিয়া তুমি অভিসার কর। মেঘের ভিতরে যেমন বিত্যুৎ-রেথা আচ্চাদিত গাকে, সেইরূপে নীল-বসনের ধারা সর্বাঙ্গ আচ্চাদন কর এবং স্কচত্রা সথী সমূহে পরিবৃতা হইয়া নিঃশক্ষে গমন কর। অঙ্গ-চ্ছটার কোনও বিপদ্ ঘটাবেনা। এইরূপে নাগরের সহিত নিক্সে সম্মিলিত হইয়া আজ মনের সাধে রুস-রুক্সর। তোমার বল্লভ-রুক্ষ, সম্মান্ত নিক্ষের তুল্য। স্লেমার্থ শিক্ষা হৃদয় নিক্ষের তিরুগানর, রুস-নির্মাতা এবং অঞ্জনিমতার পরীক্ষা তৎ-সংঘ্র্যণে সাধিত হউক।

<sup>(</sup>৬) পূর্বাগীতোক্ত—'রদরঙ্গ' কি প্রকারে করিতে হইবে এ

### (१)-- वाला।

পরিহর এ সথি ! তোহে পরণাম, হাম নাহি যাওব, সো গিরা-ঠাম। অনেক বতন করি, করাওলি বেশ,\* বান্ধিতে না জানিরে, আপন কেশ। ইন্ধিতে না জানিরে, কৈছন মান,† বচনক চাতুরি, হাম নহি জান, কবন্ত না জানিরে, স্থান্তক বার্ড ‡
কৈছে মিলব হান,মাধব-সাথ 
প সো বরুনাগর, রসিক-স্থলান,
হাম নবনাগরীৰ জলপ গোরান।
ভনরে বিদ্যাপতি, কি বোলব ভোর,
আজুকে।মিলন, সমুচিত হয়।

গীতে, সধী, তাহা শ্রীরাধাকে শিথাইতেছেন যথাঃ—সর্বাদ্ধ বস্ত্রাচ্ছাদিত করিয়া নাগরের নিকটে যাইবি। গিয়া এমত দ্রে থাকিবি বেন আলাপ করা অসপ্তব হয়। প্রথমে খুব লজ্জাশীলতা—দেখাইবি কিন্তু অপান্ধ দৃষ্টি বারা মাধবের মনে, মদন জাগাইতে হইবে। স্তন-যুগল এরপে বসনাত্ত রাথিবি যেন কন্দ ( মূল ) দেখা যায়। আর তাঁহার সমক্ষে একবার নীবিবন্ধ দৃঢ় করিয়া আটিরা বাঁধিস। আর সকল কথারই বাম্য প্রকাশ করিবি; অথচ সে বাম্যের সঙ্গে ২ একটু একটু দাক্ষিত্রও দেখাইস। রস, একসঙ্গে ঢালিয়া দিস্ না, চাপিয়া রাখিস্; যেন প্নঃ প্রনঃ আইসে। পদকরতক্ষ প্রভৃতি গ্রন্থে এই গীতের প্রারম্ভ আরো চারটা ছত্র বেশী আছে। যথাঃ—"শুন শুন মুগধিনী মরু উপদেশ, হাম শিখাওব চরিত বিশেষ। পহিল্যি অলকা তিলকা করি সাল, বৃদ্ধিম লোচণে কাজর দাল। আরও ক্ষুত্র ২ পাঠান্তর আছে।

<sup>(</sup>१) পদামৃত সমুদ্র প্রভৃতি গ্রন্থে এ (সপ্তম) গীতের পাঠান্তর, অনেক বড় বড় গুলি এইরপ \* সহচরী মেলি বনায়ত বেস † ইঙ্গিত না ব্ঝিরে না জানিরে মান, ‡ কভু নাহি শুনিরে মুরতক বাত শ অবলা অতি ইত্যাদি। আর,—অন্তল্প প্রায় সকল গ্রন্থেই, আমাদের ৬, ৫, ২, ৩, এই চারিটী ছক্ত ৩, ৪, ৫, ৬, ছক্ত রূপে ধুগ। গীতের ভাব ও অর্থ সুস্পার।

## (৮)--বালা।

শুন শুন স্থানরি! হিত-উপদেশ, হাম শিথাওব, বচন-বিশেষ। পহিলহি বৈঠবি, শরন কো সীম,\* আধ নেহারবি, বহিম সীম। ‡ যব পির, পরসই ঠেলবি-পানি, মৌন করবি, কছু না কহবি বানি। যব, পির ধরি বলে, লেশ্বৰ পাশ,
নহি নহি বোলবি, গদ গদ ভাষ।
পির-পরিরন্তনে, মোড়বি অদ
রভদ-সমরে পুনঃ, দেওবি তদ।
ভগহি বিদ্যাপতি, কি বোলব হাম,
ভাগহি শুক্ত হই, শিথারব কাম।

(৮) শ্রীভগবানের মধুর রসনীলা, পুষ্টির—বিস্তারের এবং আস্বাদনের সম্যক্ অধিকারী কেবল সধীগণ। ইহাদের আনন্দ, ইহাদের সৌভাগ্য বর্ণনার ভাষা নাই। অহভব কেবল শ্রীমন্মহাপ্রভুর রুপা সাপেক।

শ্রীরাধার অন্তর এবং আচরণ সারস্যমর না করিয়া সধী নিরস্ত হইবেল কেন ? বলিভেছেন—"এত হাবা কবে হইলি ? এই টুকুও করিতে পরিবিনা ? আছা তবে কেবল ছই একটা—বিশেষ কথা বলিয়া দিভেছি,এটুকু বেন অবশ্রই করিস্। "কিছুই জানিনা,—অপ্রতিভ বা অপদস্থ হইব" এক্লণ শক্ষার অবদর মাত্র দাই। শ্রেমের—পাঠে, শিক্ষা মুখন্থ করিতে হরনা স্বন্ধ কন্দর্প আপনাপনিই শুক্ত হইরা, প্রেমিক-প্রেমিকাকে সমরোপবোগী রুদের আচরণ শিথাইরা দেন। ইহাই এ গীভের আসাদনীর ভাব। অর্থ স্কুলাই।

কুক্র কুক্র পাঠান্তর আছে, কিন্ত তাহা ভাবগত নহে।

<sup>\*</sup> শরন কো সীন- শ্যার প্রান্তভাগ। ‡ গীন-এীবা।

# ( > )—**ভা**রাগ।

তুয়া গুণে কুলবতী,—বরত-সমাপনি, গুরু-গোরব ভয় ছোড়ি, গুরুকন-দিঠি, কণ্টক-ভরি, আওলী, মনছি/মনোরথ ভোরি। শুন মাধব! জোচে সোপমু ত্রজ-বালা, মরকত-মদন, কোই যমু পুজই, দেই নব-কাঞ্চন-মালা॥ ভূঁছ অভি চপল,—চরিত, যমু ষট্পদ, কমলিনী বিপিন-গোয়ারী মুহল-শিরীয—কুহুম, যমু ভোড়বি, লছ লছ করবি, সঞারি। তরুণী-সমাজে, গুনি, যমু জুরজন, ছাসি না দেই করতালি, দুভীকো মিনতি, এতছ ভুয়া পদতলে,গোণিন্দাস বলিধারি।

<sup>( &</sup>gt;) দৃতী এখনে রদপীড়িত-রদময়ের দমীপে (প্রেমার্ক্রা রাধাকে) উপহার দিরা, অর্চনার মন্ত্র-পাঠ করিতেছেন, যথা—"মাধন! কুলাঙ্গনাগণের দতীত্ব কণ্টকোৎপাটন-গুণটি তোমার অব্যর্থ। তোমার সেই গুণে, সতীত্রত সাল ও গুরুজনের ভর, গৌরবাদি অগ্রাহ্থ করিয়া, এবং গুরুকুলের দৃষ্টিরপ কণ্টকোত্তীর্ণ হইয়া, মনোরথে আরোহণ পূর্বক এই স্থকুমারী স্থানরীটি অক্সই হইয়া আসিয়াছে। যেমন কেহ নবীন কাঞ্চনের মালায়ায়া মরকত নির্মিত মদনের মূর্ত্তি পূজা করে,তেমনি আমি এই ব্রজম্বারীট য়ায়। তোমাকে অর্চণ করিলাম। তুমি ভ্রমরের ভার অতি চঞ্চল কিন্তু আমার এ পল্মনীট বন গমনার্থ ব্যাকুলা ও ইহার অঙ্গ প্রত্যেগ শিরীষ-কুস্থমের ভার স্থকোমল, অত্যব সাবধানে লঘু লঘু আচরণ করিও, কোনও কথা তরুণী সমাজে শুনিয়া, তুর্জন লোকে যেন হাসিয়া করতালি না দেয়। ইহা, আমার মিন্তির সহিত নিবেদন, রহস্ত মনে কমিও না।

#### (১০)---বালা।

সধী-পরবোধি, সেজ- তলে আনি
পিরা-হির, হরখি ধওল নিজ-পানি
ছুইতে বালা মলিন ভই গেলি
বিধু-কোরে কুমুদিনী,কমলিনী ভেলি\*
নহি নহি করয়ে নয়নে বহে লোর
স্তি রহল রাই, শয়নকো ওর †

আলিঙ্গরে নীবি-বন্ধন খোলি
করে কুচপরশে, দেহো ভেল থোরি
আচর লেই বদন, উর, ঝাঁপে
থির নাহি হোরত, থর হরি কাঁপে
ভনরে বিভাপতি ধৈর্য সার
দিনে দিনে মদন কর্রে অধিকার।

ইতি শ্রীগীতচিন্তামণৌ পূর্ব্ববিভাগে বয়ংসন্ধি বর্ণনে দ্বিতীয় ক্ষণদা।

(১০)শেষ-তলে, শ্যার উপর। কালী প্রসরবাব্র বিদ্যাপতির পাঠ
"সে যতনে" উহা বোধ হয় ভূল। (\*) নিজকান্ত শ্রীক্ষের ক্রোডে, প্রেয়দী
শ্রীরাধা, চল্রের ক্রোড়স্থা-কুম্দিনীর স্লায়—প্রফুল্লিতা না হইয়া, লীলা-শক্তির
অচিস্ত্য-প্রভাবে, নবীনা মুঝা নায়িকার রস প্রেকটনার্থ কমলিনীর স্লায় নিষ্প্রস্ত
হইয়া উঠিলেন। উপরোক্ত গ্রন্থত "মলিনী ভেলী" ভূল পাঠ, অপেকাক্ত
অস্কুলর এবং ছেল্ল-পাতক। (‡)শ্যার শেষ সীমায় সরিয়া শুইয়া পড়িলেন।
নবস্থরত বিলাসোৎস্ক্ক-চাট্-বচন-পট্ রসরাজ, সেথানে যাইয়া, সাদরে,
সোহাগের সহিত নববালাকে আলিঙ্গন করিতে ও তদীয় নীবিবন্ধন মুক্ত করিতে
লাগিলেন এবং করে কুচম্পর্শ করিলেন, তাহাতে নবনাগরীর সেই নিপ্রশুভ ভাব
হ্রাস হইল, তিনি ধৈর্যাচ্যত হইয়া মুখেও বক্ষে বন্তাচ্ছাদন করিলেন।

এই শ্রেণীর পদের, অধিক তর স্থস্পত্ত আলোচনা চলে না। নিম্নলিধিত উজ্জন নিল্মণি-ধৃত শ্লোকটি এই স্থানে আখাদনীর। যথা—

চুম্বে পটাবৃত মুখী নবসক্ষমভূদানিকনে কুটিনিতাক্ষতা তদাসিং অব্যক্ত রাগজনি কেণী কথান্ত রাধা, মোদং তথাপি বিদধে মধুস্দনশু। ইতি শ্রীগীতচিম্ভামণো পূর্ব্ব বিভাগে বয়:সন্ধিবর্ণ ধতীয় ক্ষণদা।

# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### ় অথ তৃতীয়া—ক্ষণদা।

# ( ১ )— शिर्गीतहत्त्व वता हि तान ।

আবেশে অবশ অঙ্গ ধীরে ধীরে চলে, ভাব-ভরে গরগর, আঁথি নাহি মেলে। পূরব চরিত যত, পীরিতি-কাহিনী, ভানি পঁছ মুরছিত লোটায় ধরণী। পতিত হেরিয়া কান্দে নাহি বাদ্ধে থির কত শত ধারা বহে নয়নের নির! নাচে পঁছ রিদক স্কান ধারগুণে দরবয়ে দাক পাধান

পুলকে মণ্ডিত শ্রীভূজ যুগ তুলি
লোলিয়া লোলিয়া পড়ে হরি হরি বলি
কুলবতী ঝুরেমনে ঝুরে ছটি আঁখি
ঝুরিয়া ঝুরিয়া কান্দে বনের পশু পাথি
যার ভাবে গৃহবাসী ছাড়ে গৃহস্থ
বণরাম দাস সবে এরসে বিমুথ।

<sup>(</sup>১) ভ্বনৈক বন্ধ প্রীগৌরহরি গয়াক্ষেত্র হইতে প্রভাবর্ত্তনের পর এইরূপে প্রেম ও করণা-বিশাস প্রকটন করেনঃ—বৃন্দাবনলীলার আবেশে নিরন্তর প্রীরাধার ভাবে, কচিং রুফাবেশে—বিরহ-রুসে চিত্ত অনবরত গর গর এবং প্রীঅঙ্গ প্রায় সর্ব্বদাই অবশ থাকিত। নয়ন নিমীলিত করিয়া হৃদয়ে সেই—রূপ মাধুরী, হেরিতে হেরিতে ধীরে ধীরে গমন করিতেন। পার্মদগণের মুখে আপনার পূর্ব্ব-চরিত অর্থাৎ প্রীপ্রীরাধাগোবিন্দ রূপে আচরিত পূর্ব্ব চরিত-প্রেমলীলার কথা শুনিয়া, প্রায়ই প্রেম-মুচ্ছা প্রাপ্ত হইতেন। পাষণ্ড পড়ুয়াগণ, কথনও কোড়ুক করিয়া পথে বা গঙ্গাতীরে ভাহাকে বৃন্দাবন লীলার শ্লোক বা গীতি শুনাইত,ভাহাতেও তিনি সংজ্ঞা হারাইয়া মুচ্ছিত হইয়া পড়িতেন এবং ভূমিতে গড়া গড়ি দিতেন। যে সময়ে বাহাক্ম বিরন্ধ তথন, পতিত জীব নিচয়ের হর্দ্বলা (অর্থাৎ ফেহ পাপে কেহ পুণ্যে করে বিরম্ব

## (২)—শ্রীনিত্যানন্দশু ধানিদ।

প্রেমে মন্ত মহাবলী, চলে দিগ দিগ দলি, ধরণী ধরিতে নারে ভারা, অঙ্গ ভঙ্গী স্থলর, গতি অতি মহুর, কিছার কুঞ্জর মাতোয়ারা ?

ভোগ, ভক্তিগন্ধ নাই বাতে ধার ভব রোগ, ইত্যাদি ছর্দ্দশা ও বহির্মুখ দশা) দেখিরা ধৈর্য্য হারাইয়া কাঁদিতেন। আর শত শত ধারার অবিশ্রাস্ত নয়ননীর প্রবাহিত হইত।

আবার যথন প্রীর্দাবনের রহঃ সন্মিলন-কেলী, ফুর্ন্থি হইত অমনি মহানন্দে ভক্তগণের সহিত প্রীসঙ্কীর্ত্তন-রসে-মত্ত হইতেন। রসিক শিরোমণির সে সঙ্কীর্ত্তন মাধুরীর ও সে মোহন নৃত্য কলার গুণে—দারু পাধাণ পর্যস্ত দ্রব হইত !! পুলকাঞ্চিত-প্রীভূজ-যুগল উত্তোলন করিয়া হরিবোল হরিবোল বলিতে বলিতে যথন তিনি, কীর্ত্তন-মণ্ডলীতে লুণিয়া লুণিয়া পড়িতেন, সে প্রাণাকর্ষক দৃষ্ঠে, কুলবতীগণেরও হৃদয় কাঁদিয়া উঠিত। পরিশেষে তাহারা প্রকাশ্ররণে রোদন করিতেন। এমন কি বনের পশু পক্ষী পর্যাস্ত সে অপুর্বে ব্যাপার দর্শনে ঝুরিয়া ঝুরিয়া কাঁদিত।

শ্রীগোরলীলা নিত্যবস্তু, ভক্তের মানস-নয়নে উহা সর্বাদা প্রত্যক্ষী ভূত।
আমাদের ভক্ত-পদকর্ত্তার পবিত্র-হৃদয়ে উপরোক্ত লীলাবলী প্রত্যক্ষ
সমৃদিত হইরাছেন, এবং তিনি দেখিতেছেন যে, প্রকৃতপক্ষে ছঃখ সম্ভাপাদির
আকর,—ধন সম্পদ স্ত্রী পূত্রাদিতে যাহাদের, স্থথের চরম-উপাদান বলিয়া বৃদ্ধি
এবং তাহাতে পরমাশক্তি বদ্ধমূল। "উদ্ধারের উপায় বিরহিত, স্থথের মৃগত্যা
বিভ্রাম্ভ" এইরূপ গৃহবাসীগণ পর্যান্ত শ্রীগোর শুধাকরের মহামঙ্গল লীলার ও
অপার করুণার প্রভাবে, গৃহ-স্থথে বিতৃষ্ণ এবং গৃহবাসত্যাগ করিয়া তাহার
অভয় চরণারবিন্দে শরণ লইতেছে। দেখিয়া আক্ষেপোৎ কঠায় বলিতেছেন
"হায়! কেবল আমি বঞ্চিত থাকিলাম"।

<sup>(</sup>২) দেখ, মহাবলবস্ত নিতাই স্থন্দর, প্রেমে-শ্রমন্ত হইয়া, দিক্ বিদিগের অমঙ্গল বিদলন করিয়া চলিয়াছেন!! প্রতাপের ভার বহনে পৃথিবী

প্রেমে-পুলকিত তমু, কণয়া-কদম্ব যুমু, প্রেম-ধারা বহে ছটি আঁথে,
নাচে গার গোরাগুণে, পুরব পড়েছে মনে, ভাইরা ভাইরা বলি ডাকে।
ছত্জার মালসাটে, কেশরী-গরব-টুটে, শুনি বুক ফাটি মরে পাষ্ণী জনা,
লগুড় নাহিক সাতে, অরুণ কঞ্চ হাতে, হলধর মহাবীর বানা।
কেবল পতিত-বন্ধু, রঙ্কের রতন সিন্ধু, অংশ্বের লোচন পরকাশ,
পতিতের অবশেষে, রহি গেল শুগু দাসে, পুন পছ না কৈল তলাস।

অসমর্থা হইতেছেন অখচ অতিমন্থর সে গতি-মাধুরী ও স্থুনর অঙ্গ-ভঙ্গীর অনুপম মধুরিনায় জগৎ মৃগ্ধ হইয়া—মনোহর মন্বর গতির চূড়াস্ত উপমা-"মদমন্ত মাতদের গতি"কেও অতিতৃক্ষ্ বোধ করিতেছে । আমার নিতাইরের ঈষদারণ্য স্বর্ণাভ—প্রীঅঙ্গর্থানি, প্রেম-কণ্টকিত হইয়া, স্বর্ণ-নিশ্মিত কুস্থমিত-কদম্ববক্ষের স্থায় স্থশোভিত এবং নয়ন যুগলে, ধারা ধরিয়া প্রেমপ্রবাহ বহিতেছে। আর, কিশোর-গৌরাঞ্চন্তের চিরামর্পিত-স্বভক্তি-রুসদানেজগত্দারাদি-গুণগরিমা দর্শনে, পূর্ণানন্দে উচ্চলিত গান ও নৃত্য করিতেছেন! এবং পুর্বের-ভাব অর্থাৎ বজণীলা-রস, মনে পড়ার শ্রীগোরাঙ্গ চালকে "ভাইয়া ভাইয়া" বলিয়া ডাকিতেছেন। ভাইয়ার গৌরবে ও মহিমায় মাতিয়া, মন্ত্রসিংক পরাভবী বিষম বিক্রমে, মালসাট ও হুত্থার করিতেছেন। সে বিক্রমে কলির বিহার স্থলীস্বরূপ—পাষ্ভীগণের বৃক, ফাটিয়া যাইতেছে। মহাবীরত্বের ध्वका ( दान-ध्वका ) चक्रण, महादल-हलध्य, निषाहे करण श्रक्तिष हहेबा. এই প্রকার মহাপ্রভাব ও ননোহর-বিক্রমে, কলির প্রতিপত্তি বিশ্বস্ত করিতেছেন, অথচ সঙ্গে একথানি লগুড়ও (অর্থাৎ দণ্ড থানিও) নাই। হাতের অরুণ কমলই এ লীলার মোহনান্ত ! অর্থাৎ অরুণকমলধারী শ্রীনিত্যা-नन চক্রের দর্শনেই জীবের পাষ্ড ভাব দুরু হইতেছে এবং সকলে তাহাতে অমুরক্ত হইতেছে।

পত এব-- সর্বামঙ্গল বিনাশ এবং কলির সিংহাসন চূর্ণ করণ ছারা পাধও নিকরের উদ্ধারকারী, আবার লীলা-মাধুরীও রূপ-মাধুরী ছারা আকর্ষণ

## ( ৩ )-- मुभना প্রাচ, তুড়ী।

নাগিরাছে কদম্ব গাছের দে,
অন্তরে বেরাধি— মরম জানে কে ?
সাত পাঁচ সধী মেলি
যম্না সিনানে গেলি
কিনা সে দেখিল তায়—
সেই হৈতে মনে আন নাহি ভার।

ডাকিলে'রাধে !' সমতি নাদে
আঁথি কচালে সদা কাঁদে।
মনে ঘর হ্যার নী ভার,
জ্ডায় কদম তলার বার।
বংশী বদনে কচে তথাই নিরে,
চাহিতে চিস্তিতে রাই বা জীরে।

পূর্বক প্রেমামৃত দানে বাবতীর জীবের নবজীবন প্রদাতা, এই নিতাই পতিতের একমাত্র বন্ধু,দরিদ্রের রত্ম-সাগর এবং অন্ধের নরন-ভূলা। কিন্ত হার ! এমন অবতারেও আমি (পদ কর্ত্তার উক্তি) নিজ-কর্ম-দোবে পতিতের অবশেষ রহিণাম!!

(৩) কোনও কোনও কদম্বরক্ষে দেববোনির আবির্ভাবের বিশাস বা ল্রম, এখনও অনেক গ্রাম্য লীলোকের বর্ত্তমান আছে। শ্রীরাধার অলোক-বিশ্রুত-অন্তত-বিরহ-বিকার দেখিরা গুরুজন ও আত্মীরত্বজন, কেইই কিছু ব্রিতে এবং কোনও প্রতিকার স্থির করিতে পারিতেছেন না, সকলেই মহা ব্যাকৃল! শ্রীরাধাগতপ্রাথা ভদীয় অতি নিকট সম্পর্কিত মাতামহী মুখরা, একটি বিশেষ ঘটনা ঐ সমন্ত্র আলোচনা করিতে লাগিলেন। যখা,—আমার মনে হর ইহাকে কদম্ব গাছের দেবতার পাইরাছে। ব্যাধি ভিতরে, কাজেই কেই উহার নিদান ব্রিতে পারিতেছি না। আমি জানিতে পারিয়াছি, পাঁচ সাত সথীর সহিত একত্র হইরা, রাধা—যমুনার মান করিতে গিরাছিল, সেথানে সে ঐ দেবতার দৃষ্টিতে পড়িয়াছে কিনা, সকলে ভাল করিয়া বিবেচনা কর।

হায়! আমার সোনার নাতিনীটির চিত্তে তদবধি আর কিছুই ভাল লাগিতেছে না। ডাকিলে উত্তর দেয় না। সর্বনা কেবল চকু কচালে আর

## (৪) পোর্ব মাস্তাহ।

সবদেব হাকারি, কহিমু শ্রুতি-পুটে, কালিয়া কোণ্ডরের নামে, কাঁপি ঝাপি উঠে।
ব্ঝিমু ভাবিনীর ভাব, নহে দেব-দানো, কদম্ব-তরুয়া-দেবেরে, কিছু মানো •
কালিয়া কুঙরদেব থাকে কদম্বেরডালে
স্কুমারী দেখিয়া পাঞাছে, শিশুকালে

মনে কিছু না ভাবিহ প্রাণে না মারিবে, নিজ-পূজা † পাইলে ছাড়িয়া ঘরে যাবে বংশী বদনে কহে এই কথা দড়, নিজ পূজা না পাইলে পরমাদ বড়।

কাঁদে। ঘর দার কিছুতেই আর তাহার মন লাগিতেছে না। সদা সম্ভপ্ত। কেবল সেই কদম্বতলার বাতাস পাইলেই কিঞ্চিৎ শীতল হয়।

গীত রচয়িতা বংশীবদন, তত্ত্রোপস্থিতা স্থীর ভাবে বলিতেছেন—'চলুন তবে আমরা স্থি রাধাকে লইয়া সেই কদ্ম তলায় ধাই। সে স্থানের, ও সে তরুর পানে চাহিয়া-চিস্তিয়া (তোমার অনুমান স্ত্য হইলে) অবশ্রুই উহার জীবন লাভ হইবে।

( এ গীতের ভাষাটি, মুখরার স্থায় বৃদ্ধার উপযুক্ত বটে )

- (৪) কেহ কিছু স্থির করিতে না পারিয়া দিজ-তপস্থিনী পৌর্ণমাসী দেবীকে আনাইলেন। দেবী-পৌর্ণমাসী অঘটন-ঘটন-পটিয়সী যোগমায়ার লীলা-মূর্ত্তি, রাধামাধবের প্রেম লীলার সংঘটন এবং স্থ-সম্পাদনার্থই ব্রজে, তাঁহার অবস্থিতি, তিনি রোজার স্থায় রাণাকে পরীক্ষা করিয়া, ভঙ্গীময় বচনে যাহা বলিলেন এই গীতে ভাহাই স্থবাক্ত ।
- শানো-মানিদিক কর † জীরাধা, সেধানে গিয়া, স্বাভীষ্ট দান রূপ
   পূজা করিলেই দেবতা, এক্ষণকার মত ঘরে চলিয়া ঘাইবে, ইহাই রহস্তার্থ।

#### তাং প্রতি রাধাহ—ভাটিয়ারি (৫)

সাত পাঁচ স্থী সঙ্গে, নানা অভরণ অঙ্গে, সাধে গেছ যমুনার জলে তেমাথা পথের ঘাটে, সেখানে ভূলিন্তু বাটে, তিমিরে ঝাঁপিয়া ছিল মোরে ।

> ও গো! সঙ্গনি! কি হৈল প্রেমের জালা শয়নে স্থপনে দেখিকালা। জ।

কহিবার কথা নয়, কহিলে কি জানি হয়, না কৈলে ময়মে লাগে ব্যথা

যমুনা-পুলীন কাছে, দোধরি কদম্ব আছে, বন-চারী কেমন দেবতা।

কালীয়া বরণ শুাম, কালিয়া ভাহার নাম, কালিন্দী কদম্ব-তলে থানা

বংশী বদনে কয়, য়ুবতী জীবার নয়, দেখিলে—ময়মে দিত হানা।

সধি ! যমুনা-পুলিনের নিকটস্থ দোণরি কদম্বর্ক্ষে কোনও বনচারী দেবতা বিদ্যমান আছে সন্দেহ নাই। শুনিয়াছি তাহার কালিয়া শ্রামবর্ণ এবং তাহার নামও "কালিয়া" এবং সর্বদা ঐ কদম্বতলায় থাকেন।

পদকর্ত্তা বংশীবদন সধীভাবের ফ্রতিতে উত্তর দিতেছেন,—ঠিক্ কথা

<sup>(</sup>৫) গ্রহ গ্রন্থের স্থায় জ্ঞানভ্রান্ত-প্রায়া শ্রীরাধা, পূজনীয়া পৌর্ণমাদী-দেবীকে নিজ সথী জ্ঞানে কহিতেছেন;— যথা,—হাঁ সথি, আমি ৫।৭ জনা সথীর সহিত নানা আভরণ পরিয়া, মহানদে যম্নায় যাই। কিন্তু তে-মাথা পথের ঘাটের নিকটে গেলে অ'মার পথ ভুল হইয়া গেল; কারণ এক আলৌকিক অন্ধকারে আমরা আরত হইয়া পড়িয়াছিলাম। (প্রকৃত পক্ষে শ্রীক্রফের নবজলধর-স্থলর-শ্রীঅঙ্গের কান্তিছেটায়, বিনোদিনীর নয়ন-নীলিমাময় এবং অঙ্গে-অঙ্গার্ত হইয়া গিয়াছিল) সথি! উহার ফলে, তদবধি আমার কি এক প্রকার প্রেম-যন্ত্রণা উপজাত হইয়াছে, শয়নে স্থপনে আমি কেবল সেই 'কালা' (কালতিমির) দেখিতেছি। এই অন্তুত ঘটনা কেহ বিশ্বাস করিবে না, অতএব ইহা কাহারও কাছে কহিবার যোগ্য নহে, বিশেষতঃ এরূপ দেবতার কথা নাকি প্রকাশণ্ড করিতে নাই, অতএব প্রকাশ করিলে কি জানি কিসে কি হয়' ভাবিয়া ভয়ে শকায় নিরস্ত রহিয়াছি, অথচ না কহিলেও মরমে ব্যথা পাইতেছি।

## ( ७ ) - इंटरे, - निकु ड़ा।

#### আজু, পেথমু নন্দ-কিশোর---

কেলা-বিলাসু, সবল্থ অব তেজল, অহ নিশি-রহত বিভার।
যবধরি চকিত,-বিলোকি,বিপিন-তটে পালটি আওলি মুগ-মোরি
তবধরি মদন-মোহন—হকু, কাননে, লুঠই, ধৈরয-পণ ছোরি।
পুনফিরি সোই-নয়নে যদি হেরবি, পাওব চেতন—নাহ,
ভুজঙ্গিণী দংশি, পুনহি যদি দংশায়ে, তবহি সময়ে, বিষদাহ।
অবশুভ-খন ধানি। মণি-ময় ভ্ষণ,—ভ্ষিত তকু অকুপাম
অভিসক্ষ বল্লভ—হদয়—বিরাজহ, যকু মণি-কাঞ্চন-দাম।

তব্রক্ষা তুমি সে দেবতার রূপ দেখ নাই। বদনে-নয়ন দিলে, ধুকে এমন বিষম ঘা দিভ, যাহাতে যুবতীর প্রাণ বাঁচিতে পারে না। (পদকল্লভক্তে ধ্রুবপদে, এ গানের আরম্ভ এবং পঞ্চম ছত্ত্রের স্থলে "তার গলের মালা দিলে, আচ্ছিতে মোর গলে, সেই হৈছে মরমে হৈল ব্যথা" ইতি পাঠান্তর)।

(৬) এই সময়ে প্রীক্তফের নিকট হইতে সমাগতাদ্তী, উপস্থিত চইয়া প্রীরাধার কাতরোক্তি শ্রবণ ও বিরহ-বৈকণ্য দর্শন করিয়া ভাবিতেছেন ''উভয়ের অবস্থাই সমান শোচনীয়''। এইরূপ বিরহ-কাতরভা, সধী-জনের অনহা । অতএব আড়ম্বর-বিহিন-বচনে সধী কহিতেছেন—বিনোদিনি! এই বনচারী দেবতা আর কেহ নহেন,নাগরগুরু ব্রজেক্স কুমার,—শ্রামস্থলর। তাঁহারই ভ্বন-মোহন-শ্রামান্ত চ্টার তুমি এরূপ বিষয়-দশাগ্রন্থ হইরাছ। এখন তাঁহারদশা বলিতেছি শোন:—

আমি স্বচক্ষে দেখিয়া আসিলাম, ত্রজেন্ত্র-কিলোর, সর্ব্ব প্রকার লীলাখেলা বিলাস পরিত্যাগ পূর্বক বিভোর অবস্থায় দিন যামিনী যাপন ক্ষরিতেছেন ! আজ. কানন-প্রায়ে যৎকালে তুমি, তাঁহার প্রতি চকিত দৃষ্টে চাহিয়া, অপ্রব্

### (१)--शानीम।

কতিছ মনোরথ, মনমথ-রক্ষে,
আওলি রমণী, বিপিন, সধী-সঙ্গে।
কেলী-সদনে, পিন্ন-বদন নেহারি,
পালটি চললি ধনী, পদ ছই চারি।
সহচরী, অঞ্চল-ধরি-ধরি রাথে,
বালা, মনসিজ-রস নাহি চাথে।

লাজকে রাজ স্থতমু-তমু-দেশে, সঙ্গোচ-সচীব তহি করল প্রবেশে। কহে হরিবল্লভ ফুলশর-আগে, রাজা, সচীব, সবহু—চলি ভাগে।

ভঙ্গী-পূর্ব্বক, বদন ফিরাইয়া চলিয়া এসেছ, তদবধি সেই মদনমোহন, ধীরতা হারাইয়া, সেই কাননে নিরস্তর লুপ্তিত হুইতেছেন। ! যদি ভূমি আবার তথায় ফিরিয়া গিয়া, পুনরায় সেই-নয়নে তাহাকে নিরীক্ষণ কর, তবেই তাহার চৈত্রন্থ লাভ হইতে পারে, কারণ ভূজঙ্গিণী কাহাকেও দংশন করার পরে, যদি আবার পূর্ব্বিৎ দংশন করে, তাহা হইলে বিষদাহ প্রসমিত হইয়া যায়।

উপস্থিত ক্ষণটি অভিসারের স্থসময় বটে, এবং তোমার অঙ্গও অভরণ ভূষিত আছে। অতএব এক্ষণেই অভিসার কর, করিয়া—হেম-মণির অর্থাৎ কাঞ্চন-মণি-নির্ম্মিত মালার স্থায়, আপন বল্লভের হৃদয়ে, বিরাজ কর; (অথবা তক্রপে প্রাণেশ্বরের সহিত ক্ষুরিত হইয়া গীতকর্তা—বল্লভের হৃদয়ে বিরাজিতা হও)।

(१) কান্তের সহিত কিরপ বাবহার ও কিরপ প্রতি-ব্যবহার করিবেন, কথন কি ভঙ্গীতে—কি কি কথা বলিবেন, কি কি অবস্থায়—কি কি প্রকারে বাম্য ও দাক্ষিণ্য প্রদর্শন করিবেন, কি উপায়ে কিরপ কলা-প্রদর্শনে, নাথের অঙ্গ-সৌন্দর্য্যাদি আস্থাদন করিবেন,—ইত্যাদি নানা বাসনায়-বাসিত এবং অনঙ্গ-রক্তে তরঙ্গিত হইয়া সখীর সহিত রমণী-মণি রাধা, বনে আসিলেন। কেলী-কুঞ্জে-প্রবিষ্ট হইয়া দেখিলেন,—প্রাণকান্ত সেথানে উপবিষ্ট। যাহার জন্ত এত উৎকণ্ঠা, এত আকুল্তা, এত অফুরাগ, সেই প্রাণের-দেবতা-সর্ব্বার্ত্তিগারী-প্রিয়তম-হরিকে দেখিয়া বাম-মনোহরা-বিনোদিনী-বালা, অমনি ফিরিয়া চলিলেন!! ত্ই চারি পদ যাইবামাত্র নিকট গা কোনও সথী বস্তাঞ্চলে ধরিয়া রাখিলেন বটে, কিন্তু ধনি-মণি কিছুতেই অনঙ্গ-

#### ( ৮ )--- थानिम।

কবরী-ভয়ে চামরা, গেও গিরি-কন্দরে, মুখ-ভয়ে চান্দ আকাশ হরিণী, নয়নভয়ে, স্বর-ভয়ে কোকিল, গতি-ভয়ে গজ বনবাস।

স্থাতি । কাহে সোহে সম্ভাষি না যাসি ?
তুয়া তরে কো নাহি,কাহা পলাওল, তুত্ত পুনঃ কাহে তরাসি ?
কুচ-ভয়ে, কমল-মুকুল, জলে-মঙ্জল, ঘট-পরবেশ হুতাশে,
লাড়িম, শ্রীফল, গগনে বাস করু, শস্তু—গরল-গরাসে !
তুজ্জ-ভয়ে পঙ্কে, মুণাল—কাল হরু, করভয়ে কিশলয়-কাঁপে,
কবিশেধর ভণ, কত কত এছন, কহব মদন পরতাপে ?

রসাখাদন করিতে চাহেন না! লজ্জা-নরপতির-অধিক্বত—স্তত্ত্ব শরীরে রাজ-মন্ত্রী সঙ্কোচও আসিয়া প্রবেশ করিলেন।

তত্ত্বিতা স্থীর ভাবাবেশে পদক্তা হরিবল্লভ বলিতেছেন, কেহ ব্যস্ত হইও না! কোনও চিস্তার কারণ নাই। ফ্লশরের-প্রতাপে রাজা, মন্ত্রী সকলে পলায়ন করিবে।

(৮) সথী-কর্জ্ক বস্ত্রাঞ্চল-ধৃতা, বিনম্র-বদনী ধনির পানে চাহিয়া—রসিক-মোলী-মণি, এইরূপে রস-বর্ষণ করিতে লাগিলেন। যথা—"স্থানর ! তোমার কবরী-সোলর্যার সহিত প্রতিযোগীতায় অসমর্থ হইয়া চির-সন্মানিত-চামরীগণ, মানের-ভয়ে গিরি-কল্পরে গিয়াছে! আর তোমার সদা-পূর্ণ-কল—অকলঙ্ক শ্রীমুথচন্দ্রের—লোকাতীত আলোকে, বিকল ও ভীত হইয়া চাঁদ, আকাশে পলাইয়াছে। হরিণী সকল, কোকিলকুল এবং গজেক্ত্রগণ—যথাক্রমে—ভোমার নম্বনের,—স্বরের এবং গতির ভয়ে, মনহুংথে বনবাসী হইয়াছে। এমন মহা-মহিমাম্বিতা-স্থলরী-তুমি—কেন কিসের ভয়ে আমাকে সম্ভাষণ না করিয়া চলিয়া ষাইভেছ ? দেখ, তোমার ভয়ে, কে কোথায় না পলাইয়াছে ? জলে, অনলে, বনে, আকাশে যে যেথানে পারিয়াছে, লুকাইয়াছে। এমন ভূবন-বিজ্বিনী

#### (৯)—ভূপানী।

যব ধনি, ভূজ-ভরি, ধরল—মুরারী,
ভিজল বসন, তন, রোদন-বারি।
ঘন ঘন উছলত, পির-ছির-মাহ,
কুস্ম-শরন-তলে, আনল নাহ।
ছসি হসি, হরি যব থোলত বাস,
থরপরি কাঁপেই — 'নহি' 'নহি' ভাষ।
অতি-ডরে-কাতর, ধনী-মুপ দেখি,
তব লছ লছ, উর পর ~নথ-রেথি।
শহু লছ আলিক্ষন, লছ লছ কেলী,
লছ লছ অধরক, দংশন ভেলি।
কাঁপেরে অক্স, সঘনে সিতকারে,
বিজুরী মেকে, বৈছে নীরদ-ভারে।

রহি রহি মনসিল্প-অমুভবি, শেষে,
তব স্থা-সাগরে, করল প্রবেশে।
বালা,— মনহি পাওল আশোয়াস,।
এতদিনে জনমক, ভাঙ্গল ভরাস।
জানল, রতিরস-কৌতৃক-রঙ্গ,
জনম সফল মানল, পিয়া-সঙ্গ।
দোহ তমু, দোহ মন, বন্ধন ভেলা,
স্থা-লোচন, মাধুরী ভরি নেলা।
কহে হরিবল্লভ,—বল্লভ-লাল,
রতি-রঙ্গ পাঠ, পড়াওল ভাল।

ইতি শ্রীগীতচিম্ভামণো মুগ্ধা-বর্ণনে তৃতীয় ক্ষণদা।

তুমি কেন অকারণ ভর-সঞ্চিত হঠতেছ ? তোমার, ওই কুচকুটালের ভরে পদ্মকোরক-জলে নিমজ্জিত ! ঘট — অগ্নিতে দগ্ধ এবং দাড়িম্ব ও শ্রীফল—পৃথিনী ছাড়িরা গগনাবলম্বী ধ্রমছে !! শভ্র—সর্বপৃঞ্জিত-বাণলিঙ্গমৃত্তি, তোমার পীনস্তনের সৌলর্য্যে পরাভূত হওরায়, তিনি হুংথে গরল গ্রাম করিয়ছেন। তোমার ভ্রুত্বগলের-নাধুরী-পরাভূত-মৃণাল, পঙ্কে পড়িরা ক'ন কাটাইতেছে। তোমার আরক্ত-কোমল-করতলের ভয়ে, কিশলয় সদা কম্পমান!! তোমার সৌলর্যা-বৈভব এইকপ ভূবন বিজয়ী। তুলনায়—আমার অস-সৌলর্য্য কিছুতেই যে তত্ত্বলা নহে.—প্রভোক আঙ্গে অস মিলাইয়া—সহজেই ইহার পরীক্ষা হইতে পারে। তবে ভূমি পলাইতেছ কেন ? গীতকর্ত্ত:-কবি শেগর দ্রীক্রফের হইয়া সগীভাবে কহিতেছেন—ভোমার মদন প্রভাপের পরিচয় পদে পদে বিদ্যমান! বাকো ভাছার কথা কত্ত কহিব ? পদকল্লতকতে এই গীতিটি বিদ্যাপতির ভণিতাযুক্ত!

<sup>(</sup>১) \* শাখাস। + নথাগাতের রেগা। রঞ্জ-লীগার বিস্তারিত স্বাাধ্য চলিতে পাবে না।

# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

### অথ চতুর্থ ক্ষণদা।

# ( > ) शिर्शितहत्त्र - तार्ग (कर्मात ।

বিশ্বস্তর-মূর্ত্তি যেন মদন-সমান,
দিব্য গন্ধ মাল্য, দিব্য বাস পরিধান।
কি ছার কনক-জ্যোতি, সে দেহের
আগে পূ
সে বদন দেখিতে, চান্দের সাধ লাগে।
সে দস্ত দেখিতে,কোথা মুকুতার দাম পূ
সে কেশ-বন্ধন দেখি, না রহে গেয়ান!
দেখিতে — আয়ত তুই অরুণ নয়ান,
ভাব কি কমল আছে হৈন হয় জ্ঞান প

সে আজামু-ভূজ ছুই, হৃদয় স্থপীন,
তহি শোভে শুল্-যজ্ঞ স্ত্ত্ত্ব — অতি ক্ষীণ।
ললাটে—বিচিত্ত্ত উৰ্ধ-ভিলক স্থলন,
অভরণ বিনে—সর্ব্ব-অঙ্গ-মনোহর।
কিবা হয় কোটিমণি, সে নথ চাহিতে,
সে হাস দেখিতে কিবা করয়ে অমৃতে?
শ্রী ক্ষটেচতন্ত্র নিত্যানল-চাল জান,
বৃন্দাবনদাস তছু পদ্যুগে গান।

ি প্রীমন্নবদ্বীপ-বিহারী হরির, জন্ম-লগ্নাদি গননা দ্বারা, তদীয় মাতামহ: মহা-জ্যোতির্ব্বিদ নীলাম্বরচক্রবর্তী, সবিস্থারে দেখিলেন,—এ খালক নিথিল বিখের রক্ষক ও পালক হইবে। তাই—নাম রাখিলেন—বিশ্বস্তর। প্রীবিশ্বস্তরচক্রও চিরানর্পিত-প্রেমে, বিশ্বপূর্ণ করিয়া নামের সার্থকতা সম্পাদন করিলেন। অবিচারিত-প্রেম-দাতা বিশ্বস্তরের সে, ত্বন-বিস্মাপক মহিমা-মহা-সমুদ্রের মকরস্বরূপ—ভক্তগণ এবং শ্রীক্রফ-চৈত্তত্ত ও শ্রীনিত্যানদের মহিমা ও মধুরিমাবিদ (ভণিতার জান' শব্দের অর্থ জানে যে) ভক্তগণ ! আহ্মন একবার আপনাদের পদত্তলে বসিয়া শ্রীবিশ্বস্তরচক্রের ভ্বন-ভোরা রূপামূতের কিঞ্কিং বিন্দ্-কণিকা, প্রাণ ভরিয়া আস্থাদন করি। ভাই ! সর্ব্ব-বিকার-বিধ্বংশী এমন সঞ্জীবনী-স্থা জগতে আর নাই।" মনে হয়—গীত-কর্ত্তা ঠাকুর বৃন্দাবনদাস বেন এইরূপ ভূমিকা পূর্ব্বক্,বিশিতেছেন:—"মদনের অনুভবে—যেমন সর্ব্ব-প্রাণী

#### (২) শ্রীরাগ—শ্রীনিত্যানন্দ চদ্রস্থ।

নিতাই—মোর জীবন, ধন, নিতাই—মোর জাতি, নিতাই বিহনে মোর—খার নাহি গতি।

বিমোহিত হয়, আমার—শ্রীবিশ্বস্তরচক্রের শ্রীমৃর্ত্তিথানিও ঠিক্ তদমুরূপ বিমোহক! হেরিশে জ্ঞান হারাইয়া য়য়! সে শ্রীঅপ্তের—আরও একটি অত্যন্ত, ত-গুণ এই য়ে, জগতে—অভরণ, বসন, মাল্যাদির-পরিধারণে লোকের সৌন্দর্য্য বৃদ্ধি হয়, কিন্তু আমার প্রাণের বিশ্বস্তর-ম্বণাকরের-ভূষণের ভূষণ-শ্রীঅঙ্গ-সংস্পর্শে তিলক, মাল্য, বসন, অভরণাদি—দিব্যশ্রী লাভ করে।

পার্থিব পদার্থ সকলের মধ্যে, স্থাই সর্বাপেক্ষা স্থ-বর্ণ, কিন্তু বিশ্বস্তরের অতৃলিত গৌরকান্তির নিকটে কনকের-কান্তি কিছুই নহে—অতি ভুচ্ছ ! জগতে, আকাশের চাঁদই — স্থান্দর-বদনের সর্ব্বোৎকৃষ্ট উপমা, কিন্তু সৌন্দর্য্য-গ্রবী-চল্লের সমস্ত-অভিমান, বিশ্বস্তবের চাঁদ-বদনের নিকটে, চ্ণীকৃত হইয়া গিয়াছে। তাহার উপর বিশেষ আশ্বর্যা এই যে,—অপেক্ষাকৃত স্থান্দর 'রূপের' নিকটে—লাঞ্চিত, লজ্জিত, কি অপদস্থ হইলে—দ্রে ল্কায়ন, সৌন্দর্যাভিমানীগণের চির্স্থভাব, কিন্তু আমার পবিশ্বস্তরের-বিশ্ব-মোহন-মাধুরীম্প্র-গগনচাঁদ, সে স্থভাব ভূলিয়া নিরপ্তর এই চিত্তহারী-মাধুরী-দর্শনেরই সাধ করে!! সে দস্ত দেখিতে— ইত্যাদি—পরবর্ত্তী পদগুলি স্বতঃই স্থান্সন্তার্থ এবং স্থধা-মধুর। আস্থন আমরা এ অমিয়, ঢোকে ঢোকে পান করি। ব্যাখ্যার-শর্করাদানের কিছুমাত্র প্রয়োজন নাই!

<sup>(</sup>২) বায়— যেরপ জীবেরজীবন স্বরূপ, জল— যেমন মংস্তাদির জীবন স্বরূপ অর্থাৎ যাহাকে ছাড়িয়া – নিশ্চরই—বাঁচিনা! কথার মৃত্যু নহে—সভ্যু সভ্যই মরণ ঘটে, তিনিই 'জীবন' শব্দের বাচ্য। আর,—আহারে, বাবহারে, শয়নে, গমনে, দেশে, বিদেশে, স্থাধ, ছথে—যাহা অবলম্বন, তাহারই নাম

সংগার স্থাপের-মুখে, দিয়া মেনে ছাই,
নগরে সাগিয়া খালো—গাইন নিতাই ।
যে দেশে নিতাই নাই—সে দেশে না যাৰ,
নিতাই-নিমুগ-জনার—মুগ না হেরিব ।
গঙ্গা যার পদ-জল, হর-শিরে ধরে,
হেন নিতাই না ভজিয়া, তুঃখ পাঞা মরে !

'ধন'। স্ত্রী পুত্রাদি পরিজনের ও স্বজনের—শ্রেণী-গত মর্য্যাদা-মূলক-পরিচয়ের নাম—জাতি।

দেহে, ধনে, জনে, মর্যাদায়—যে আশক্তি, তৎসমৃদয় নিতাইতে অর্পণ এবং মেঘেরসঙ্গে বায়ুর—যে সম্বন্ধ (একমাত্র গতিও)—সেইরূপ জ্ঞানে আপনার ইচ্ছা ও স্বাধিনতা শ্রীনিত্যানন্দে প্রদানই, আমাদের সর্ব্ব-প্রধান-সাধনা; কিন্তু এই প্রকার একাগ্র-সরল-ভাব—দান্তিক, কুতার্কিক-বিদ্যাগর্বিত অভিমানী দিগের-ছল্ল ভ। দন্তের-পর্বতোপরি-সর্বদা বসিয়া থাকিলে, পৃথী-পরিপারী প্রেম-বন্তার-স্পর্শ ঘটিবে কেন? এবং নিরম্ভর কৃতর্কের-রূহৎ-ছাতায় মাণা ঢাকিয়া থাকিলে,—প্রেমের-বাদর-বর্ষণেও যে অঙ্গ, আর্দ্র কি বিগলিত হই-বেনা—তাহাতে আর কণা কি? অত্রব শ্রীনিতাইটাদের-নির্বিচার-কর্ষণাবিলাস ও অভ্তপূর্ব্ব-প্রভাবও — উলুকের চক্ষে রবি-কিরণের স্তায়—এই সকল হন্তাগা জীবের নিকটে অকার্য্য-কর!

ইহাদের সর্বস্থ-ভূত—গন মান ও অনর্থ-করী বিদ্যা ও জাত্যাভিমানের প্রতি উপেকা প্রদর্শন করিয়া,—শ্রীনিতাইটাদের-গুণে মাতোয়ারা—পদকর্ত্তা, ঠাকুর লোচনানন্দ নিতাইকেই ধন, প্রাণ, জাতিরূপে প্রচাব করিয়াছেন। আরও বলিতেছেন গে, ত্র্ভাগ্যধনী-মানীরা যে—সংসার স্থণকে সর্বস্থ-জ্ঞান করে, আমি, সে স্থের মুথে ছাই দিয়া, নিরুদ্ধেগে ও পূর্ণানন্দে নিতাইর গুণ গাইয়া—নগরে নগরে মাগিয়া ধাইব ় মাগিয়া ধাইব বটে কিন্তু যাহারা নিতাই-বিমুথ, তাহাদের কাছে কথনও যাঞা করিব না। এমন কি তাহাদের মুথ্যবলোকনও করিব না। এইরূপে শ্রীনিত্যানন্দের

লোচন বলে—কামার নিতাই, যেবা নাহি মানে, অনল জ্বালিয়া দিব—ভার মাঝ-মুখ পানে।

#### ( 🤊 ) (वनश्रात

বরণি না হয় রূপ, বরণ-চিকণিয়া। কিয়ে ঘন-পুঞ্জ, কিয়ে কুবলয়দল, কিয়ে কাজর, কিয়ে ইন্দ্রনীল-মণিয়া

প্রতি, পরম-নিষ্ঠা-পূর্ণ-প্রেম ও বৈষ্ণবজনের কর্ত্তব্যাচরণ প্রকাশ করার পর, তুর্ভাগ্য-দান্তিকাদির তুর্দ্দশায় ব্যথিত হইয়া বলিতেছেন—হায় ! ইহারা শ্রীমহা-দেবকে—ঈশর বলিয়া মান্ত করে. অথচ স্বয়ং ভগবানের প্রকাশ, দরার-সাগর-নিভাইকে না ভলিয়া তৃঃখে মরিতেছে !! যে মুথ হইতে নিভাইম্বের নিন্দা নির্গত হয়, কেবল একমাত্র অগ্নি-শুদ্ধি তাহার উপযুক্ত প্রায়শ্চিত্ত। অতএব যে আমার নিভাইকে মানিবে না, তাহার মুথে আগুণ জ্ঞালাইয়া দিব।

শ্রীমন্তাগবত, ১০ম স্কন্ধের স্থানে স্থানে যেমন শ্রীকৃষ্ণ-বলদেবের অভেদ মানিয়া—বলদেবেতে শ্রীকৃষ্ণের মহিমা, অতি-দেশ করিয়াছেন; সেইরূপ—পূর্ণতম-ভগবান্ বিশ্বস্তরচক্রের সহিত নিতাই-চাঁদের অভেদ মানিয়া "গঙ্গা যার পদ-জল" ইত্যাদি পয়ারটি বর্ণিত হইয়াছে।

<sup>(</sup>৩) শ্রীকৃষ্ণের গৃহাগমন দর্শনান্তে গৃহাগতা-শ্রীরাধা, লালদা-মর-ভাবাবেশে—শ্রীকৃষ্ণের রূপ-বর্ণন করিতেছেন, যথা—দে রূপের, দে চাক্চিক্যমর-বর্ণের কিছুই বর্ণনা হইতে পারে না ! কি প্রকারে হইবে ?
ইহা কি নব-মেঘের পুঞ্জ, কি কুবলরের-রাশি, কি কজ্জল—কি ইন্দ্রনীল্মণি—এই সন্দেহই দ্র করা যায় না ! হার ! প্রশ্টুতি-প্রের-

বিকচ-স্বোজ-ভান-মুখ্যগুল, দিঠি-ভাঙ্গম-নট খঞ্জন-জোর কিয়ে সধুর-ঃতু-হাস উগারই! পিবিআনন্দে আখি পড়লহিভোর অঙ্গদ বলয়, হার মণিকুগুল, কনক-নূপুর কটি-কিঙ্গিণী-বলন। অভ্যাণ-বরণ কিরণ কিয়ে চর্চর! কালিন্দী-জলে.

যৈছে চান্দকি চলনা স্তুক্ঞিত-কেশ, বেস কুস্থমাবলী,রাজিত মন্ত্রশিথিপুচ্ছকোচাঁদে অনস্ত দাদেরমন,যুক্তীকো-লোচন,চূড়ানিরখিতে পড়লহি ফাঁদে

ভ্রান্তি-সম্ৎপাদক সেই মুখমগুল—তাহাতে নৃত্যশীল খঞ্জন-যুগের স্থায় চঞ্চল-নয়ন্-যুগল দর্শনাবধি কেবলই আমি বিতর্কাকুল হইতেছি!! আর বদনথানি কি মধুময়-মূত্রহাস্তই উদগীরণ করে! আহা! সে মধুপানে আমার নয়নদ্বয়, বিভোর হইয়া গিয়াছে!

শ্রী অঙ্কের দোলন-সঞ্চালিত-মণি-কুণ্ডল, কটির কিন্ধিণী—অঙ্গদ বলয় হার
নূপুরাদি অভরণ-গুলির বর্ণ-প্রভাই বা কি স্থলর—কি ঢর ঢর ! যেন
কালিন্দীর নীল-জলে প্রতিভাত—চঞ্চল-চক্র-বিম্ব! আবার, কুটিল-কেশগুলি
কুস্থমাবলীর দারা স্থসজ্জিত। এবং প্রমন্ত-ময়্রের-পুচ্ছ-নিচয়ের ছাঁদে,
মোহনিয়া চূড়াটি বিরাজিত।

তত্রস্থা সথীর-ভাবাবেশে গীত-কর্ত্তা অনস্ত দাস—আর থাকিতে না পারিয়া ননের আবেগে বলিয়া উঠিলেন "তাহাতেই তো অনস্ত দাসের মন এবং যুবতীগণের নয়ন (ভাবার্থ—তোমার নয়ন) এই মোহনিয়া চূড়াটি নিরীকণ করিতে গিয়া, বাঁধা পড়িয়াছে।

পদকল্পতক্তে আমাদের তৃতীয় ছত্ত্রে, এ গীতের আরম্ভ।

### ( 8 )— श्रीतां भार, जीतां ग।

শমুখন, কোণে থাকি, বসনে আপনা ঢাকি, ছয়ার বাহিরে পরবাদ।

আপনা বলিয়া বোলে, ছেন নাহি কিভিডলে, ছেন ছারের হেন অভিলাষ !!

সন্ধা । ভূষা পায়ে কি বলিব আর । সে হেন ত্লছ-জনে, অনুরত যার মনে, কেবল মরণ প্রতিকার।

<sup>(</sup>৪) পূর্ব্দোকরণে জীরাধা,—কুঞ্জ্মণামূত আ্যাদন করার সময়ে সমাগতা, কোনও স্থী, – দর্শনান দেরকণ, শ্রবণের আকাজ্ঞা প্রকাশ খ্রীনতী কাতর-কর্তে ভাষাকে কহিতেছেন,—স্থি ৷ আমি वि इः थिनो, आमात इः १थत क्या छन :-- नित्युत आमारक घटततु-কোণে, অবহান করিতে হয়। ভাহাও অসংকাচে নহে: -- সর্মান্ত সর্মান্ত वमनावृत्र कविशा शाकित्व इशा चात आहे अहम अवादम बाह्र বাটীকার-ছারের-বহিংদিশ, আমার পকে দেইরাং! আগাকে আপন ব্রিয়া ভাবে অর্থাং আমার আশা, উৎকণ্ঠা ও যন্ত্রণার যুগার প্রতিনিধানার্থ—উপাত্ত-স্ষ্টি করে, আমার এমন আপন—কেহ নাই। স্থানি এইরূপ বিভ্যনাগ্রন্থা-নগণ্যা কুলবধু; অবচ এইনাত্র আমার মূথে যাহার অলোক-বিশ্রুত মাধুরীর মহিমা ভনিলে, সেই ত্র্ল ভ-ধনের প্রতি আমার মন অগুরক্ত। স্থি। তোনার চর্নে আর কি বলিব ? ( 'চরণে' শব্দ ব্যবহারের অভিপ্রায়, বোধ হয় এই যে যদি পার, করুণা করিয়া উপায় বিণান কর) তাঁহার ভায়-জগং-তুর্লভ-নামুকে বাহার মন অত্রক্ত দে যদি আমার ভার কুল-রমণী হয়, তবে মৃত্যুই তাহার এক মাত্র প্রতিকার !--স্থি ! আমি যাহা করিব বলিয়া নিশ্চর করি, করিচে পারিনা। আমার হু:'থর নিশা, ছু:খের দিবা অবসান ছয় না! ওদিকে গুলে যত ওক্ষন রহিয়াছেন সকলেই বৈরি,—অনুকুল কেই নাই ৷ অতএব কি করিব ? আমার কোনও উপারই দেখিতেছি না।।

যত যত মনে করি,নিশ্চয় করিতে নারি,রাতি দিবসু নাহি যায়, গুহে যত গুরুজন,সব সোর বৈরীগণ,কি করিব নাহিক উপায়!

### ( **৫** )— **এ**রাগ।

কিবা রূপে, কিবাগুণে-মোরমন বান্ধে, মুখেতে না ফুরেবাণি,ছটি আথি-কান্দে মনের মরম-কথা, শুনগো সজনি। श्राम-वक् পर्फ मरन, निवन तकनि, কোন বিহি সির্জিল, কুলবতী-বালা ? কেবা নাহি করেপ্রেম,কার এত জালা। । কামুর পিরিতি লাগি, সাগরে মরিব।

চিতের-আগুনি কত,চিতে নিবারিব, নাযায় কঠিন প্রাণ, কারে কি বলিব ! ঘর হৈতে বাহির, বাহির হৈতে ঘর দেথিবারে করি সাধ, নহি—স্বতন্তর। (জ্ঞান দাস বলে ) স্থি ! সেইদে করিব

मकल গ্রন্থেই এ গীভিটি-ভণিতাহীন ! পদামৃতে—৪র্থ, পংক্তির পরে **এই** টুকু বেশী :—"বুঝাইলু অহকণ, না বুঝে পামর মন, পিরিতি হইল মোর কাল, তাহে ননদির কথা, শুনিতে মরমে বেখা, এঘর বসতি জনজাল" কুদ্র পাঠাম্বর ও তাছে।

(e) পরীক্ষার অভিপ্রায়ে-অবহিত্থাবলম্বনে স্থী বলেন "রাধে ! পর-পুরুষের রূপে, এত নিমজ্জিত হওয়া ভাল হয় নাই। যাহা হউক এখন চিত্ত-সংঘ্যের চেষ্টা উচিত'' এ কলার কৃষ্ণমন্ত্রীর, অমুরাগের-সাগর উছলিয়া উঠিল। তিনি আকুল-কণ্ঠে কহিতে লাগিলেন:--স্বি! তাঁহার রূপে, কি গুণ-গরিমায়, কিলে যে আমার মন বাঁধা পড়িয়াছে, তাহা বলা—কঠিন। ছুইই কুলব্তির-ধর্ম-ছুর্গ-ধ্বংশের অব্যর্থ-প্রহরণ। আবার উ।হাকে প্রাণ স্পিয়া অব্ধি. আমি মমের ভার-মুথে প্রকাশ করিতে পারি না-কথা ফুটেনা, কেবল কালা পায় ! ! সধি ! শ্রাম-বন্ধুর কথা—আমার,দিবা রাত্রি শয়নে স্থপনে সর্বাদা মনে পড়ে। কিছুতেই আর, তাহাকে বিশ্বত হওয়া-কি থৈগ্য-ধারণ করা সম্ভব নছে। জগতের কথা তুলিয়া আমাকে বুঝাইবার, বুথা-চেষ্টা তুমি

# (৬)—শ্রীরাগ।

মধুর-মধুর—ভুয়া-রূপ,
জগ-জন-লোচন, অমিয়া-স্বরূপ
রূপ চাহি, গুণ নহেদ্ভন
দো-তকু তেজবি কাহে ? মহী
করি শূন !
ইথে, নাহি হয়—আন-ছল \*
হাম বলিযাঙ—ভুয়া-মুথ-চল ।
যতন করব হাম সোই
হরিয়ৈছে ভুয়া-নয়ন-পথ হই

তবহি সফল তকু মোর পৃ

যব তুল্ বৈঠবিঞ্চ — কাকু কো

কোর §

হামো পৈঠব-কালিন্দী-বারি

তবহি মনোরথ, প্রব তোহারি

গোবিন্দ দাস পরমাণ

তুয়া বিনে কাকুকি ধরয়ে

পরাণ

করিও না। হার । জগতে কেনা প্রেম :করে ? কিন্তু এমন অন্তুত-ষন্ত্রনা কাহার ও হর কি ? আমি আর মনের-আগুণ, মনে নিবাবিয়া রাখিতে পারিতেছি না!! তবুৰ, জানিনা—কেন ? কি হুরাশার এত হঃখ-যন্ত্রনাতেও প্রোণ বাধির হইতেছেনা!!

চিন্ত-সংযমের-সাধ্য আমার নাই। অতএব তাঁহার দর্শনাশার এরপে ঘর-বাহির—করিয়া, এ পরাধীন-জীবন আর রাখিব না। আমি সাগরে ভূবিয়া মরিব।

(৬) "মরিব" কথাটি সথীর-কর্ণে বজাঘাতের স্থার বাজিল ! তাহাতে তিনি বাকুলা হইয়া কহিতেছেন—রাধে ! তোর—প্রিয়তমের, সমস্ত-পরি-জনের, এবং নিখিল-ব্রজনরনারীর, আনন্দ-সন্দীপক এবং মধুর হইতে মধুর— এই যে তোর রূপ-রাশি, ইহা দেব-গন্ধর্কাদি পর্যান্ত সমস্ত জগতের নয়নামৃত স্কুল ; আবার রূপের তুলনায় গুণও যে কিছুমাত্র হীন তাহা নহে । হার !

পদামূত সমুজের পাঠান্তর। \* স্থলরি ! মোহে না কক আন ছল । † দিন মোর। ‡ রাই স্থতব যব। § কান্তকো জগত পরণে।

#### (१)-नामा।

আগগুরি সহণরী, চাতুরি সিন্ধু,
তারা থাওণী, যাহা গোকুল-ইন্দু।
পুছইতে বাত, বদনে ধক চীর,
মিশিত নয়নে, নিঝার ঝক-নীর,
পুন পুছইতে বলে, গদগদ-বোদ,
মাধব, বান্ধল হিয়ে উতরোল।

বি প্রহৃদি, গোকুল-জীবন নাই ?

"প্রে:-হতাখন কুগুকো নাই—
নো-স্কুমানিকো প্রাণ পতন্ত,
কাহতি দেওত, নুপতি-অনক !!"
কহে হরি বল্লভ, গুন গুন কান,
সব সধীগণ মিলি, তেজব পরাণ।

তথাপি তুই —পৃথিবী-শৃত্য করিয়া এমন রূপগুণের-মাণার তম্পানি তাাগ করিবি ? যথনই তোমাকে দেখি তথনই আমাদের—কেবল মনে হয় "এই চাঁদ-মুথের বালাই লইয়া মরে যাই"! বলি—ক্ষকারণ আর উদ্বেশ-বৃদ্ধি করিবনা, তোর মন-চোর ও সর্বান্তি-হারী সেই হরি, যাহাতে নয়ন-পথবর্তী হন মর্থাং তাহাকে পাইতে পারিস্, আমি সেই চেষ্টায় প্রবৃত্ত হইলাম। যথন দেখিব—তুই কাহুর কোরে বিগিবি,—তথন আমার দেহ-সার্থক হইবে। আমাকে যদি এজন্ত যমুনার জলে প্রবেশ করিতে হয়, তাহাও করিয়া—তোর মনোবাসনা পূর্ণ করিব। এই সকল আখাস-বচনেও, উপস্থিত অবস্থায় বীরাধা সন্তবতঃ ধৈণ্য-পারণে সক্ষন হইতে পারিবেন না—মনে করিয়া (স্থী-ভাবাবিষ্ঠ—পদক্তী গোবিন্দ দাস) বলিতেছেন—মারও একটি গুরুতার কথা আছে। আমি স্বয়ং সে কথার সাক্ষী। কথাটি এইযে তোমাব্যতিত কামু কিছুতেই প্রাণ ধারণ করিতে পারেন না! তুই—মরিয়া কি তাহারও মৃত্যু ঘটাইবি ?

(१) স্থী, প্রীগোকুল চল্লের নিকটে গেলেন। মাধব, প্রীরাধার সংবাদ জিজাসা করিলে, তিনি—সুথে কাপড় দিয়া কেবল কাঁদিতে লাগিলেন। ছি.ীর প্রাথে—এমন ভীতি-বিহুবল-গণ গদ-কঠে কথা কহিতে আরম্ভ করিলেন, বে অর শুনিয়াই হরিরপ্রাণ আকুল হইয়াইঠিল। স্থী কহিলেন—গোকুলজীবন! দা। দাপর কি ছাই ভক্স জানিতে চাহিতেছ ? অক্রণ-অনন-সুপতি সে

#### কাচিদস্যা তৎসঙ্গিস্থাহ—ধানসি।

( w )

অনধিগতা কল্মিক গদ কারণ, মর্পিত মস্ত্রৌষ্ধি নিক্রম্বং অবিরত-রোদিত-বিলোহিত-লোচন, সমুশোচতি তামখিল কুটুম্বং #

স্ক্ৰারীর-প্রাণ-পতসকে পোমের-হোমাগ্রি কুণ্ডে আছতি প্রদান করিতেছে। এতকণে হয়ত দে যজের উদ্যাপন হইয়া গেল।!!

সথীর ভাবাক্রান্ত গীতকর্তা হরি বল্লভ,—বলিভেছেন, কাছু! এখন আমাদের-শেষ দশ'টির কথাও শোন—অংমরা সকল স্থীগণ আর কাহার অন্ত প্রাণ রাণিব? স্থির করিয়াছি আমরাও সকলে স্ম্মীনিত হুট্রা প্রাণ-পরিত্যাগ করিব! বলিতে বলিতে স্থীর, বাক্-রোধ হুইয়া গেল। আর কিছুই বলিতে না পারিয়া অঞ্পাত করিতে লাগিলেন।

(৮) পূর্ব্ব গীতের বক্তা,—দূতীর-কোনও দিনী জীক্ককে কহিতেছেন
যথা—(ঞ) গোপী-দন্তাপ-হারি, কেনী-িহারি ! (দেবহরে) স্থিরাধার প্রতি সকরুণ হও! (বিনম্বের সময় নাই) দেথ কেবল তোমার নিশিতকটাক্ষ-শরাহত হইরাই সে (ক্ষুক্মারী কুক্ষম কোমনাঙ্গা) এরূপ হারম্ববিদারক-ক্ষরতা প্রাপ্ত হইরাছে। (হায়!ভাহার সে ক্ষুর্ত্তিমর-ভাব-প্রক্রম
দেহলতার মাধুরী, কিছুই আর বর্ত্তমান নাই!!) + ভাহার এই রূপ
আক্ষিক পীড়ার কারণ না জানা (অন্ধিগত) হেতু, সমস্ত-কৃট্মুগণ
মন্ত্রেরধি-অর্পণ হারা উপশ্যের নিজ্ল—চেষ্টা, এবং অধিরত অন্ধোচনার
হাহাক। শুধনি করিতেছে! নির্ভর ক্রন্ধনে ভাহাদের লোচন, বিলোহিত

#### (पत-हरत ! ভव कांक्रगा-भानी

সাত্র-নিশিত্ত-কটাক্ষ-শরাহত হাদরাজীবতু, কুশ-ডকু রালী ॥ গ্রু হাদিবলদ্বিরল সংজ্ব-পটলী, ক্ষুট তুজ্জ্ল-মৌক্তিক সমুদারা শীত্রল-ভূতল নিশ্চল তুকুরিয় মবসীদ্তি সম্প্রতি নিরুপারা গ্রু গোষ্ঠ-জনা ভয়-সত্ত্র-মহাব্রত-দীক্ষিত ভবতো, মাধব ! বালা-কথ মইতিতাং হন্ত সনাত্র ! বিষয়-দৃশাং গুণ-বুল্দ-বিশালা ?

হইয়া উঠিয়াছে! ‡ ( প্রাফ্রামুজ এখী বিনোদিনীর স্থান্তর) হুদরে সংজ্ঞর-সমূহ, অবিরল কেবল বলবতী হইতেছে। দে স্থানীব্রতাপে তাহার বক্ষস্থ উজ্জ্বল-মৌক্তিক-মালাগুলি পর্যান্ত ফুটিয়া যাইতেছে!!(হায়! চিরস্থ-লালিতা, নবনীত-কোমলাঙ্গীর, স্থাকুমার-শরিরে কি দে-সংঘাতিক-তাপ সম্থ হয়় ? নিরপায়া-নিতম্বিনী, অসহ্য-যন্ত্রনায় শায়া পরিহার পূর্বক, শীতল-ভূমিতলে শরীর জুড়াইবার অকিঞ্জিৎকর-প্রেয়াস—করিতে করিতে, কেবলই ক্লান্তিতে অবদলা হইতেছে।

মাধব! (সর্ক্র-সক্ষম) তুমি, গোষ্ঠবাসী সকলের, অভর-দান-রূপ মহা যজ্ঞে দীক্ষিত। রাধা, তোমার অনুরতা-বালা; এবং গোষ্ঠ-বাসিনীগণের মধ্যে শুণ-বৃন্ধ-বিশালা অর্থাৎ মহাশুণবতী। হার হার! সনতেন! তথাপি রাধার এই রূপ বিষম-দশা!! ইহা অপেকা হঃথ আরটুকি আছে ?

(কি জানি কৃষ্ণ, আপনার স্বভাব-সিদ্ধ কৌতুক-রচনা পূর্ব্বক বৃথা-বিলম্ব করেন, সেই আসকায় স্থি, এ গীতে – কর্ত্তব্যের-যুক্তি-তর্ক তুলিয়াছেন)

এটি, শীমজ্রপ গোস্বামী-ক্বত গীতাবলীর ৯ নং গান। শ্রীল বলদেব বিদ্যাভ্যণ-ক্বত ইতার টীকা এইরপ:—হে দেব! হে হরে । অধিল কুটুম্বং কর্ভ্—তাং রাধা মন্থশোচতি। কিদৃশং তৎ ? অনধিগত মাকস্মিকস্থ গদস্থ ব্যাধে: কারণং যেনতৎ। অপিতিং মন্ত্রৌষধীনাং নিকুরম্বং যেনতং। অবিরত ক্লিতেন বিলোহিতেহতার্রণে লোচনে যস্ততং তাদৃশং সদিত্যর্থ॥ ১॥

্তং কারণ্য-সালী-কুপালুর্ভব । সাতব নিশিতেত্যাদি লক্ষণা-মদালী,

#### (৯)—ভূপানী।

সঙ্কেত-কেলী-নিকেতন জানি, নীল-রতন যকু, পাওল পানি। আওলি সহচরী, হরিষ-তরকে, যহি-ধনী বৈঠই, সহচরী সঙ্গে। যতন সফল ভেল, জানল বালা শরদে-বিকসি যকু,মালতী-মালা কহে হরি-বল্লভ, ভাঙ্গল ধন্ধ, ভুছ চান্দনী, হরি-পুরণ চন্দ।

ক্কশতমু: সতী, কেবলং জীবতি। নতু সৌখ্য-লেশং বিন্দতি, বিনাদ্ধ কারুণ্য মিত্যর্থ॥ গ্রু॥

নমু সা কথমধুনা বর্ত্ততে ? তত্রাছ—হৃদীতি । সংজ্বর—সন্তাপঃ । নিরুপায়া ডাং বিনা, স্ব-গদ নিবারণে—সাধনাস্তর মপস্তন্তী, স্ববসীদতী-ব্যথতে ॥ ২ ॥

নমু নাহং পরস্ত্রীয়াঃ সন্দর্শনং করোসীতি চেত্তত্ত্বাহ—হে গোষ্ট-জনাভয়সত্ত্র-মহাব্রত-দীক্ষিত। হে মাধব-মধুবংশোদ্ভব! ইয়ং বালা ;,ভবতোহেতো ত্তাং
বিষমাং দশাং-কথমইতি ? হে সনাতন নিত্য-মূর্ত্তে। পক্ষে সনাতনো যস্তান্তি
নিত্যং সেবকত্বেনেত্যর্শ আদ্যন্ত। সা—কিদৃশীত্যাহ গুণেতি বিশালা-বিস্তীর্ণা
ধ্যাতেত্যর্থ: । বিশিষ্ট-শালা, বসতি ইতি বা । যো-ভবানস্ত-হেতৃকং-ছঃখ
মপনয়তি, স-স্বহেতৃকং তৎ কথং নাপনয়ে দিতি ভাব: ।

(১) প্রাণাধিকা-প্রেরদীর এই প্রকার হংসহ-বিরহ-বেদনার কথা ভনিরা আর কি প্রেমমর স্থির থাকিতে পারেন ? অধীর হইরা উঠিলেন। সন্মিলনের,—সঙ্কেত-স্থান নির্দেশ করিয়া সধীষয়কে কহিলেন, সম্বর শ্রীরাধাকে ঐ কুঞ্জে লইরা আইস। সধীগণ একথা ভনিরা যেন নিলকাস্ত-মণি হাতে পাইলেন। আনন্দ-তরন্দে-আরোহণ করিরা—সহচরি-বেটিভা-রাধার নিকটে আসিলেন। সমাগতা-দৃতীম্বরের গভিভঙ্গী ও প্রফ্র-ম্বকান্তি দেখিরাই, বালা-ক্লমণি, ব্রিভে পরিলেন,সধীর প্রতিজ্ঞা-সার্থক ও চেষ্টা-সফল হইরাছে। তথ্ন, শারদ-বিকশিত-মালতী-কুস্মাবলীর স্তার ভাঁহার, বিষর ও

#### ( > ) — कारमान ।

#### আজু সাজলি ধনী অভিসার।

চকিত-চকিত, কত-বেরি বিলোকই, গুরুজন-ভ্নন-ত্রার।
ভাতি-ভয় লাজে, স্থন তমু কাঁপেই, ঝাঁপেই নীল-নিচোল,
কত কত সনহি, সনোরপ উপজত, সন্দিজ সিয়ু-হিলোল।
মন্থর-গ্রনী, পছ দরশাগুলী, চতুর-স্থী চলু গাথ,
পরিসলে হরিত-হরিত, করি বাগিত, ভামিনী অবনত-মাথ।
ভক্রণ-ত্যাল, সঙ্গ-হ্থ-কারণ—জঙ্গম-কাঞ্ন-বেলী।
কেলী-বিপিন, নিপুণ-রস-অনুসরি—স্লভ, লোচন সেল।

আবসর-অসলতা.— প্রফ্ল হইয়া উঠিল ! ড জোপবিষ্টা সধীর চাবে গী ছকর্তা ইহা দেখিয়া কহিতেছেন যাক্—এত দি:ন ধাঁ মাঁ ঘুচিল। এখন বুঝা গেল হরি—পূর্ণচক্ত এবং ভূমি – তাঁহার চক্তিকা।

(২০) শুভদংবাদের অমৃত-প্রোতে, স্বীগণের আগ্রহ রূপ অমুক্ল প্রন, সংমিলিত হটয়া, প্রেম-তর্নীকে সৌলাগ্রের-সাগরে ভাসাইল। শ্রাম-সোহাগিনী, অভিসারে সজ্জিতা হইলেন। বারংবার, চকিত্ত-নেত্রে শুরুজনের ভ্রন-ঘার নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন। তাঁহার—শরীর ভর লজ্জার আতি-শ্রো ঘন ঘন কম্পিত হটতে লাগিল,—তহুপরি নীলবসন আচ্ছাদন দিলেন। ক্ষম্প-সাগরের তর্জাণ্ড—মনে নানাবিধ সাধ ও আহ্লাদ উপজাত হটতে লাগিল। সঙ্গেত-কৃঞ্জের-পন্থ-প্রদর্শনকারিণী স্থী—মন্থ্রগমনে অগ্রে চলিলেন আর ভামিণী (রাধা) অঙ্গ-সোগজে — দিগ বিদিক-আমোদিত করিয়া অবনত খদনে তাহার সঙ্গে সঙ্গে বাইতে লাগিলেন। আহা ! কি অপুর্ব্ব দৃশ্রণ মেন ম্বীন-ত্যাংলের-গ্রুম্ব-লাভার্থ আজ কাঞ্চন-ব্রন্নী (কনক লতা) জ্লম্বতা অর্থিৎ গতি শক্তি লাভ করিয়া, আপন ভাবে ভোর হইয়া চলিতেছে !

#### ( >> )— সল্লার।

ও ধনি পহমিনী, সহজই ছে!টি, করে ধরইতে কত করুণা কোটি। বালি-বিলাদিনী, সাকুল কান। মদন-কৌতৃকী কিয়ে, হঠ নাহি মান নম্মন নিঝরে-ঝরু, হহি নহি বোল, হরি-ডরে হরিণী, হরি-হিয়ে ডে'ল।

( "নরনকো সঞ্লা, চঞ্চল-ভাণ, জাপল মনসিজ, মুলিত-নয়ান। বিদ্যাপতি কছ, উছন রক্ষ, রাধামধ্বে পহি হহি সক্ষ')।

প্রেম-সম্পান বিনোদিনী, এই পকার রস-নৈপুণোর সহিত সথীর অভসরণ করিরা—কৈলীবিপিনত-বল্লভের, নগন-পণবর্তি ইইলেন। শ্লেষার্থ—পদকর্ত্তা বল্লভের নয়নের সহিত কেলী কুল্লে গমন করিলেন।

(১১) রস-ভ্যনাক্ল-নাগর-শিশেষণি, প্রার্থনীয়-নিদি, নিকটে পাইয়া প্রমাগ্রহে প্রিয়তমার হস্ত ধারণ করিলেন। তাহাতে, মৃদ্ধা ধনী-পদ্মিণী, সাহজিক বাল-স্থভাব-প্রকটন পূর্বক—ক্ষাস্ম হইবার নিমিন্ত মিন্তি করিছে লাগিলেন। মদন-কৌতৃকী-রসময় নাগর—বালী-বিলাসিনীর—বাবহারে, আকুল হইয়া একটু হঠ-বাবহারে—প্রেমবতী বালার,—কোমল-স্করে, প্রেম-বর্জনে প্রবৃত্ত হইলেন। কিন্তু নাগী-রাজী কিছুই মানেন না!

ভাব মনীর নয়ন হইতে, মুগ্ধা-নায়িকার ভাবাবেশে, নির্বর-ধারার স্তায়
অবিশ্রায় অশ্রধারা ঝরিতে লাগিল, এবং কেবলট নহি—নহি—বলিতে লাগিলেন ও হরির হৃদয়ে—সিংহের অঙ্কগতা হরিণীর কম্পনের স্তায় ঘন ঘন
দোলিতে লাগিলেন। এদিকে —তাঁহার চঞ্চল-নয়নাঞ্চল যেন বলিয়া দিতে
লাগিল — হৃদয়ে — ঘুয়য়ৢ-কয়্মপ জাগিয়া উঠিয়াছে, কিন্তু এখনও মুদিত-নয়ন
অর্থাৎ চোখ মেলে নাই! (গীতকর্তার মন্তবা) রাধামাধ্বের প্রথম সমাগম
এইরূপ রঙ্কময়।

প্রামৃত সমুদ্রে—আমাদের তৃতীয়-ছত্তে এগীতটি আরস্ত । **কর্নতক্তে** "একে ধনি" বলিয়া আরস্ত । "নয়ন নিঝরে ঝরু" কথাটির পরিবক্তে

## ( >২ )-- धानिम ।

কি কহব রে সথি ! কহন না জান, পহিল সমাগম—রাধা-কান।

যবে দোহু-করে কর, সোপলু আপি,

সাধসে ধাধসে, হহু-তহু কাঁপি।

যব দোহু নয়নে নয়নে ভেল ভেট,

সচকিত নয়নে, বয়ন করু হেট।

যব দোহু পাওল মদন-শয়ান, না জানিয়ে কিয়ে করল পাঁচ বাণ। গোবিন্দদাস কহে ভৃত্ত সে সেয়ানী, হরি করে সোপলী হরিণী-নয়ানী।

উভয় গ্রন্থের পাঠান্তর—"হঠ পরিরন্তণে"। শেষ-চারিছত্র পরবর্ত্তি পদের সহিত রসের সমন্বয় হয় না বলিয়া—বোধ হন্ন আমাদের আদর্শ-হন্ত-লিপিতে ছিল না। উহা ঐ গ্রন্থ নয় হইতে গৃহিত।

(১২) প্রাণেশ্বন-প্রাণেশ্বরীর সন্মিলন করিয়া দিয়া দূতী, কেলী ক্ষের বাহিরে গেলে, কোনও সথী কর্তৃক জিজ্ঞাদিত হইয়া কহিতেছেন—স্থিরে! সে কথা—রাধা-শ্রাম-স্থলরের প্রথম সমাগম-রসের সে চমৎকার কারিণী কি, বলিয়া-বুঝান সম্ভব ?

কিঞ্চিৎ শুন.—যথন উভয়ের করে—কর স্থস্ত করিয়া দিলাম, অমনি কি ভাবিয়া ভয়ে, ও আনন্দে উভয়ের ধাঁ ধাঁ লাগিয়া গেল—ছ্ভনের তম্ই কাঁপিয়া উঠিল। তংপরে যথন নয়নে নয়নে সন্মিলন হইল, অমনি বিনোদ-বদনী, বদন—অবনমিত করিলেন। এই প্রকারে—রস-লালসার পরিচয় প্রকটিত হইলে উভয়ে কেলী শ্যায় গিয়াভেন। কল্প—সেধানে কি রঙ্গ বটাইভেছে জানি না।

প্রশ্ন-কারিণী-স্থীর ভাগাবিষ্ট চইয়া পদকর্ত্তা বলিতেছেন স্থি। তুই বড়ই বৃদ্ধিয়তী। হরির করে নণীনা হরিণাক্ষীকে অর্পণ করিয়া আনন্দ সাগরে তরঙ্গ তুলিয়া দিয়াছিদ্।

# ( ১৩ )—ভূপালী।

রতি-রসে চঞ্চল, নাগর-রাজ,
বালি-বিলাগিনী, অতি ভর লাজ।
"না জানিয়ে আজু, কোন গতি হোর"
এতহু বিচারি, নিচোলে রহু—গোর\*।
কত কত কাকু তি,—করতহি কান,
উতর না দেই,—শুনত দেই কান।
লহু লহু, কুচ পর,—যব ধরু হাত,
মনমথ তবহি, করল শরা-ঘাত।
ভূজবলে বিগত-বসন করু অঙ্গ,
উছলল কত শত, ছবিকে তরজ ।

গেরি হেরি—হরি, যব পাওল ধন্ধ,
তৈগনে মদন, বাঁধল রতি-ফন্দ।
ক্ষিত্ত ভূজ করু, কঞুক ঠামা,
ব্বে-মুনল কিন্ধে, মনমথ-গাম ? §
তব কিন্ধে মদন-দেব বর-দেলা,
রতি-রণে ধনীকো, সাহস কছু ভেলা।
কহে হরি-বর্জ পহিলহি-বঙ্গ,
লহু লহু সুরভ, শিথিল-ভেল-জ্ঞান।

ইতি শ্রীগীততিস্তামণো পূর্ব্ব বিভাগে মুগ্ধা-বর্ণনে চতুর্থ ক্ষণদা।

(১৩) \* বসনে সর্বাঙ্গ গোপন করির। রহিলেন। † নানা ভাবের বিকাশ, কেলীকলা ও অঙ্গ-সঞ্চালন-ভঙ্গী। ়ু কাঁচুলীর স্থানে — কুঞ্জিত হত্ত হারা আবরণ। ৪ মন্মথের আবাস গ্রামের।

# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### शक्षमी ऋनना।

# ( > )-- इश्हे (मनाग- श्रीत्मिक्स या।

কি হেরিম ওগো মাই ! বিদগধ-রাজ, ভকত-কল্পতক, নবগীপ মাঝ ? পীরিতির-শাখা দব, অন্তবাগ-পাতে, কুমুম আরতি,ভাহে, জগত গোহিতে, নিরমল প্রেমফল—ফলে দর্ককিলে ! এক ফলে নব-রদ ঝরয়ে অপার !! ভকত—চাতক, পিক,শুক, অলি,হংস নিরবধি নিলগরে রস পরশংস। স্থির চর স্থর নর, যার ছারা—পোবে, বাস্থদেব বঞ্চিত আপন কর্ম দোষে।

(১) ওমা! এ কি দেখিয় ? ত্রজের-বিদগ্ধ-রাজই বোধ হয় ভক্ত কল্প-ভক্ত রূপে নবদীপে অবতীর্ণ! নহিলে অমন অপরূপ সংঘটন সমূহ, একত্রে প্রক্টিত হটবে কেন? দাস্ত স্থ্য বাৎসলা মধুর, সর্বপ্রকার প্রীতি দারা এ তর্ত্তর শাখা সংঘটিত। অহুরাগ — ইহার পত্র । একান্ত আর্থি ইহার ফুল, এবং নির্মাল অর্থাৎ অকৈতব প্রোমই—হার ফল!

জগতের সর্বজাতীর বৃক্ষই বিশেষ বিশেষ সময়ে, ফল-ধারাণ করে কিন্তু এ অপরূপ-তরু—নিরন্তর ফলবান্। জগতে, বিশেষ বিশেষ ফলে, অম মধ্রাদি কোন ও—এক প্রকার রস, বিদ্যান থাকে এবং কোনও ফলই নিরন্তর রস বর্ষণ করেনা—কিন্তু এ অলৌকিক ফলের প্রত্যেকটি হইতে নিরন্তর নার্ম কিঃস্ত্রিত হইতেছে। (শৃঙ্গার, হাস্ত্র, করুণ, বীভৎস, রৌদ্র, বীর, ভার, গ্রন্ত, শান্ত—এই নয়টি রসের নাম নবরস)।

'বিদগ্ধ-রাজ' এবং 'ভক্ত-কলপতরু' এই ছটি বিশেষণ দ্বারা জ্রীগৌর-ভগবানের র্লিক-শেথরত্ব ও পর্ম করুণত্ব—প্রতিপাদিত হইস্বাছে। এবং পর্ব র্লি নার চতুষ্টরে ভাহার নির্কিচার-করুণা-বিদাস প্রদর্শিত হইস্বাছে এবং বর্ণন ভঙ্গাতে, ব্যঞ্জিত ইইস্বাছে বে,—সক্তল রুদের একল সমাবেশ

#### (२)-कार्यापं-श्रीनिक्रानमहस्य ।

ভকজি-রতণ-খনি, উঘা ড়িয়া-প্রেম-মণি, নিজগুণ-সোনায় মৃঢ়িয়া।
উত্তম অধম নাই, সারে দেখে তার ঠাই,
দানকরে জগত জুড়িয়া॥
শুনিয়া নিতাইর গুণ, কেমন করয়ে মন,
তাহা কি কহিতে পারি ভাই।
লাখে লাখে হয় মুণ, তবে সে মনের স্তুপ,
নিতাই চাঁদের গুণ গাই॥

সত্ত্ব ও জ্বগণের মধ্যে যিনি যেমন অধিকারী—তজ্ঞপে, অর্থাৎ হংস, চাতকাদির ভাষ নিজ নিজ ভাব ও আসাদনাধিকারের অমুরূপে-রস লাভ করিতেছেন। কিন্তু যিনি ঘাহা পাইতেছেন তাহারই প্রশংসায় সকলে মুক্ত-কণ্ঠ! এদিকে প্রীতি-রূপ শাধার শীতল ছায়ার স্থির-চর-নর সকলেই সমান ভাবে শীতল হইতেছেন। কেবল আমি (পদকর্ত্তা বাস্থদেব ঘোষ) আপন কর্ম দোষে তাহাতেও বঞ্চিত!!

(২) স্বকীর স্থ্, সচ্ছনতা ও পুণ্য প্রতিষ্ঠাদির—বাসনা বিরহিত হইয়া,—কেবল ক্ষ-নিষ্ঠ-নির্মাল ইন্দ্রির বারা—ভগবৎ দেবার নাম ভক্তি। এই ভক্তি, পেম-রত্নের ধনি-স্বকাপা। দয়াময় শ্রীনিত্যানল চন্দ্র, এই অক্ষর রত্ন-থনি হইতে প্রেম-রূপ মণি, নিরগ্নর উদ্ঘাটন পূর্বক আপনার—গৌর প্রাণতা, সংকীর্ত্তন-মগ্নতা, অপার কারুণ্যাদি-গুণরূপ স্বর্ণে, মণ্ডিতক্রমে ভ্রমণরূপে জীবের ধারণ-যোগ্য করিয়া— স্থানাস্থান,পাত্রাপাত্রাদি বিচার ব্যতীত বাহাকে দেখেন ভাহাকেই দান করিতেছেন, ইত্যাদি।

এমন দয়ার ঠাই, কোথাও শুনিয়ে নাই,
আছুক দেখার কাজ দূরে।
(যার) নামেই আনন্দ-ময়, সকল-ভূবণ হয়,
তার লাগি কেবা নাহি ঝুরে!
পাষাণ-সমান-হিয়া, সেহো যায় মিলাইয়া,
যার গুণ গাইতে শুনিতে।
কহে ঘন-শ্যাম-দাস, যার নাহি বিশোয়াস,
সেই সে-পাষ্ডীঃ অবনিতে॥

এই গীতোক্ত "যারে দেখে তার ঠাই" কণাট—সবিশেষ অমুভবনীয়। কেহ অভিমানের যবনিকার অন্তরালে,—গর্কপর্কতের শিথরে,—অথবা শুক্ততর্কের আবর্জনার ভিতরে—অদৃশু হইরা রহিলে এমন মহাস্ক্রযোগেও বঞ্চিত হইবেন, তাহাতে আর কথা কি ? অদোষদর্শী পরম-দয়াল নিতাই-চাঁদের গুণাবলী একমুখে গাইয়া কি সাধ মিটে ? হায়! শুধু যাহার নাম নিলেই, সকল ভ্বনের নিরানন্দ দূর হয় ও আনন্দের-তরঙ্গ বহে। তাঁহার নিমিন্ত না কাঁদে এমন কে আছে ? যাহার গুণগান করিয়া বা শুনিয়াই—পায়াণ সদৃশ কঠিন-প্রাণ-লোকেরও হৃদয় গলিয়া-মিলাইয়া যায়, এমন মহিমাময়ের করণায়, লীলায় এবঃ ভগবভায় অবিশ্বাস—তাঁহার প্রেম পাইবার ও গৌর-প্রেম-রসার্গবে-ভ্বিবার পরমান্তরায় হইবে, ভাহাতে সন্দেহ কি ? তাহাই মহাম্ভব পদকর্তা বলিতেছেন—এইরূপ অবিশ্বাসীরাই—এ স্বগতে প্রকৃত পাষ্ণ ও।

# ( ೨)—বালা ; জীরাধা, সখীমাহ।

এ সথি ! কি পেথমু এক অপরপ।
ভানইতে মানবি, অপন-অরপ,
কমল-মুগল-পর, চলকি মাল !
তা-পর, উপজল তরুণ-তমাল!!
তা-পর, বেঢ়ল বিজুরীক-লতা!
কালিন্দী-তীর, ধীর চলু যাতা,
শাথা-শিথর, ভধাকর-পাঁতি।
তাহে নব-পল্লব অরুণক-ভাঁতি!!

বিমল-বিষফল-যুগল বিকাশ,
তা-পর, কীর, থির করু আশ।
তা-পর, চঞ্চল-থঞ্জন-জোর!
তা-পর, সাপিনী---ঝাপল-মোর!!
এ সথি রঙ্গিলি! কহলু-নিদান।
পুন হের ইতে হামো-হরল-গেরান,
ভনই বিদ্যাপতি ইহ রস-ভান।
স্থ-পুরুথ-মরম উঁচু ভালে জান,

(৩) শ্রীরাধা,—অভিশরোকি ও বিরোধাদি অলঙ্কার দারা—স্থীর নিকটে শ্রীক্লফের রূপ-বর্ণন ছলে আপন জদয়ের অমুরাগ প্রকাশ করিতে-ছেন। এ বর্ণনাম, — উভয় রাতৃল-চরণই — কমল-যুগল। চান্দ কি মালা— লাবাণা প্রভা-প্রোজ্জল-পদনথ-রাজী। তরুণ তমাল—শ্রামস্থনরের দেহ। বেঢ়ল অর্থাৎ তদেষ্টিত বিজ্বী লতা—সৌদামিনী-ক্রি-পীতবসন। শাধার শিথরস্থ গুধাকরপাতি—ঞীহন্তের সমুজ্জল নধাবলী। (বুক্ষশাধাত্তো ফুল ফোটে,—খ্রাম-তমালের শাথাগ্রে চাঁদ ফুটিয়াছে!!) অরুণ-বর্ণ-নব-পল্লব---রাতৃল-হস্তাঙ্গুলী-দকল। বিশ্বফল-মুগল---ওষ্ঠাধর। (ভমালে विश्वकल-जान्द्रश्वात ज्यवि । ) शित्रकीत-छक-हकू-नामिका। সাপিনী-ঝাপল-মোর—বেণীর নেত্ৰয়। থঞ্জন-জোর---চপল চুড়া। (মোর—ময়্র; সাপিনী—বেণী; ময়ুর-পুচেছর কাব্যবিশারদের ব্যাথা মোর - মন্তক !!) আশ্চর্যোর উপর আশ্চর্য্য এই যে, তমাল-তরুটি স্থাবর নহে, পতিশীল—"কালিন্দী-তীর-ধীরচলু যাতা।" मिथ ! कि त्य तमिथनाम वृत्रित्वहे भाति नाहे, कात्रन-छान कतिया भूनः नित्रीकर्णत बातरखरे बामात मध्छारनाण रहेशा नित्राहिन। बामात हेनजाल-

### ( 8 )—বালা। স্থা, তাং প্রক্যাহ।

কহ কঁহ এ সথি ! মরম কি বাত সো তোগে কিকরল খ্রামর-গাত ? মন-মথ-কোটি-মথন-তমু-রেহ, কৈছে—উবরি তুঁছ আও'ল গেহ ? কুলবতী-কোটি-হোমে যগি অন্ধ পাওলি কছু কিয়ে সো-মুখ-গন্ধ ?

যাকর মুরণী—শ্রবণে যহি লাগে, থসতহি বসন—শাশ-পত্তি আগে, অব, নিরধারসি—কোন বিচার বল্লভ সো-রদ-সাগর-পার।

### ( ৫)-श्रीताधादार।

একে কুলবভী, চিভের-আরতি—বিধি-বিড়ম্বিত কাজে শ্যাম-মুনাগর, পিরিতি কণ্টক, ফুটল হিয়ার-মাঝে।

ভাবের কারণ কহিলাম, তুমি পরম-রঙ্গিণী স্থী, বল দেখি একি দেখিলাম ? গীতকর্ত্তা স্থীরূপে উত্তর দিতেছেন, "বলিহারি! এত রস-শাঠ্য তোমার পেটে আছে ? বেশ বুঝা গেল, স্থপুরুষের মর্শ্ব জ্ঞানে স্থপণ্ডিতা হয়েছ"।

(৪) সথী শ্রীরাধাকে কহিতেছেন,—তা যাউক, এখন আসল কথা বল।
সে শ্রামল-গাত্র রমণী-মন-চোর, তোমার প্রতি কি প্রকার বাবহার করিলেন ?
হায়! যাহার মোহন-তত্বর প্রত্যেকটি রেখাই কোটি-কন্দর্প-দর্শহারী, তাহাকে
ছাড়িয়া তৃমি কি করে গৃহে এলে? যে শ্রীমুখের—ভথু স্থগন্ধমাত্রেই কোটি
কোটি কুলবতী অন্ধ হয়,—ঘরে প্রত্যোগমনের পথ দেখিতে পায় না, সেই বদনপঙ্কজের পরিমল কি কিছু পেলে? যা হোক্ এমন সতী-কূল-শোভন-নায়কের
নয়নে পড়িয়াছিস্, তোর ভাগ্য অতুলনীয়। এখন নির্দারণ কর, রস সাগরেরপার-ক্রপী—সেই বল্লভকে কি করিয়া পাওয়া য়ায়। শ্লেষার্থ—পদকর্ত্তা-বল্লভ
সথীভাবে বলিভেছেন, সেই রস-সাগরের-পারকে কিরপে লাভ করা য়ায়।

<sup>(</sup>৫) শীরাণা কহিতেছেন,—কুলবতীগণের প্রেম-পিপাসা বিধি-বিড়ম্বিড কার্যা, কিন্তু স্থি। কুলবতী হইয়াও আমার—তাহাতে রতি! হায়। আমার

শুন শুন সই ! মরম কছই, পড়িকু বিষম-ফান্দে,
আমূল্য-রতন, বেঢ়ি-ফণীগণ ! দেখিয়া পরাণ-কান্দে ।
গুরু গরবিত, বলে অবিরত, সে সব বিষম-বাধা,
একুল ওকুল, তুকুল চাহিতে, সংশয়ে পড়িল রাধা ।
ছাড়িলে ছাড়ান, না ষায় সেজন, পরাণ-অধিক-বড়,
জ্ঞান দাসে কছে, সে হেন সম্পদ, কাহার ডরে বা এড় ?

( ৬ ) শ্রীকৃষ্ণস্থাপ্ত দূতী—শ্রীরাধামাহ।
চম্পক-দাম, হেরি—মুরছি রহু,\* লোচন-ঝরু-অনুরাগ,
তুয়াগুণ-মস্তর,ণ ক্রপয়ে নিরস্তর,ভালে ধনি। ভোহারি সোহাগ।

ভাগ্যদোষে এ হেন খ্রাম-স্থনাগরের-প্রেমরূপ-কণ্টক আমার হৃদয়ে বিধিয়াছে। সধি! তোমাকে আমার মরমের ব্যথা বলিতেছি শোন:—আমি বিষম ফাঁদে পড়িয়াছি। ফণীগণ পরিবেষ্টিত-মহামণি সম্মুথে দেখিয়া—আজন্ম-ছংখী-ধনলুক জনের, প্রাণ বেমন করিয়া কাঁদে, আমার দশাটিও ঐরূপ। আমাকে অসুক্ষণ, মহা-মাননীয় গুরুজনের আদেশ শিরোধার্য্য করিয়া চলিতে হয়, সে আমার বিষম প্রতিবন্ধক। আবার পিতৃকুল, খণ্ডরকুল — ছই অকলঙ্ক মহাগোরবিত কুলের প্রতি যথন চাহি,তথন আর কি করিব স্থির করিতে পারি না, কর্ত্র্ব্য-বিমৃত্ হইয়া যাই! এদিকে কিছুতেই—সে প্রাণাধিক-প্রিয়-তমকে—হ্রদয় হইতে অস্তর করা যায় না!! স্থী—(পদকর্ত্ত্রা) কহিতেছেন, এমন তুর্ল্ভ সুম্পদ-লাভ করিয়া কার ভয়ে পরিত্যাগ করিবে?

<sup>(</sup>৬) এই সময়ে ক্ষেত্র প্রেরিত দ্তী, আদিয়া প্রীরাধাকে কহিছে-

পদামৃত সমুদ্রের পাঠান্তর—\* চিত অতি কম্পিত। † তুরা রূপ অন্তর জাগরে। ভণিতাটি—পদামৃত সমুদ্র হইতে গৃহীত হইল।

'র্মভামু-নন্দিনি!' জপয়ে রাভি-দিনি, ভরমে না বোলয়ে আন, লাথ লাথ ধনী, কহই মধ্র-বাণী, স্থপনে না পাতই কান। পুরুষ-রতন-বর, ধরণী-লোটাওত, কো-কল্থ আরতি-ওর, 'রা' বলি, 'ধা' বলি, বলই না পারই, ধারাধর-বহে লোর! গোবিন্দদাস তুয়া—চরণে নিবেদন, কামুকো এছন সম্বাদ, নি-চয় জানহ, তছু-তুঃধ-থগুক, কেবল তুয়া-পরসাদ।

ছেন:--রাণে ! সাথের--রাজ-নন্দন, তোমার নিমিত্ত উন্মত্ত ! তাহার দশা কিঞ্চিৎ বলিতেছি শোন:--"চম্পকের-মালা দৃষ্টে, চম্পক-বরণী তোমার রূপের স্মৃতি জাগিয়া—তাঁহার মুচ্ছা হইতেছে ! ফ্রন্মের প্রবর্দ্ধান অনুরাগ, , হৃদয়ে স্থান 🖭 গাইয়া—আরক্ত-নয়নদারে ধারারুপে বহির্গত হইতেছে। সর্বদা কেবণ তোমার গুণ,মন্ত্রবৎ জপ করিতেছেন। ধনি। তোমার সোহাগের বলিহার ৷ ৷ অত্রাগর্ত্ত নাগরের মুখে—দিবারাত্রি—কেবল হা ৷ বুষভাত্ব-ননিনি!' এইমাত্র বোল! ভ্রমেও অন্ত কথা নাই!! লক লক স্থান্ত্রী তরুণী—কত আদর, কত খীতি, কত অনুরাগের সহিত কত প্রকার বাল্ম-মধুধারা-বর্ষণ করিতেছে, কিন্তু তাহাতে স্বপ্লেও তাঁহার কর্ণপাত নাই ! পুরুষ রত্ন-বর---সম্ভপ্ত হইয়া বারংবার ধরণী বিলুষ্ঠিত হইতেছেন,—পীড়ার পরিমাণ করে—কার সাধ্য ? তোনার নামের আদ্যক্ষর 'রা' উচ্চারণ মাত্রে কণ্ঠ-বোধ হইয়া যায় ! আর 'ধা' উচ্চারণের সামর্থ্য থাকে না ৷ ! ধারা বাহিয়া অঞ্পাত হইতে থাকে !! পদকর্ত্তা গোবিন্দ দাস স্থীর আবেশে কহিতেছেন, রাধে ! কারুর কঠিন-দশা, – তোমার চরণে সংক্ষেপে কহিলাম। কেবল তোমার প্রদন্ধতা ভিন্ন তাহার হঃথ থগুনের আর উপান্ন মাত্রও নাই।

#### ८कमात (१)

ধনি-ধনি! চলু অভিদার।
তেও দিন আজু, রাজপথে, মন মথ, পাওবি কীরিতি বিধার।
তেরুজন-নয়ন, অন্ধ করি আওল, নান্ধব তিমির বিশেণ।
তুয়া উরু ফুরভ, বাম কুচ লোচন, বহুমঙ্গল করি লেগ।
কুলবতী-ধরম-করম অব দব তুহু, গুরু-মন্দিরে চলু রাথি।
প্রিয়ভ্য-সঙ্গে, রঙ্গ করু, চিরদিনে, ফলিত মনোরথ-শাথী।
নীরদে বিজুরী, বিজুরী সঞ্জে নীরদ, কিঙ্কিণী গরজন-জান,
হরিখ-বরিধে-ফুল, সব স্থী-শিখীকুল হরিবল্ল ভ গুণ গাণ।

এখন কুলবতীর-ধর্ম-কর্মাদি, গুরু জনের গৃহে গচ্ছিত রাণিয়া অভি-সারে চল। বছ দিনের পরে বাসনার-বৃক্ষে ফল ধরিয়াছ, এখন প্রিয়-তমের সঙ্গে সম্মিলিত হইয়া রঙ্গ কর। আর,—বেমন মেবের ডাক শুনিয়া ও মেঘ বিজুতের সম্মিলন দেখিয়া শিখীকুল আনন্দে ফুল্ল হয়, সেই রূপ মাধ্ব-মেঘের সহিত রাই-বিজুরীর খেলা দেখিয়া ও কিয়িণী গর্জন শুনিয়া ভোমার সধীক্রপা শিথিনীকুল হর্ষের-বর্ধ:০ ফুল হইয়া ভোমার, হরি-

<sup>(</sup>१) এ গীতেও দৃতীর কথা চলিতেছে। কহিতেছেনঃ – ধনি ! ধন্য তুমি তোমার নারী জন্ম সার্থক। এখন অভিসারে চল। তোমার মত নবীনা কুলান্ধনা-রাজবালার অভিসারে, রাজপথে আজ মন্মথের কীর্ত্তি, বিস্তার প্রাপ্ত হইবে। (কীরিতি-কীর্ত্তি)। আজ বড় শুভদিন; দেথ—গুরুজনের নম্বন আছোদন করিয়া গাঢ় অন্ধকার, বন্ধুর কাজ করিতেছে। দ্বিতীয় তোমার উক্ত, বাম-জন এবং বাম-লোচন, স্পান্তি হইতেছে। এগুলি বছ মঙ্গলের চিহ্ন।

#### (৮)—(वटनांशांत्र।

ধনি, ধনী, রাধা—শশী বদনী।
লোচন অঞ্চল—চকিত, চলতমণি—কুগুল, অলগনি বালকবনি,
মন্দ হংগন্ধ—হংশীতল মারুত, ঘুংঘট-অঞ্চল নটত রদে।
নাশা-মোতিম, উড়ু যকু থেলত, বিদ্বাধর পর-হসনি-লদে,
উর-মণিহার-তরঙ্গিণী-সঙ্গত—কুচ্যুগ-কোক সদা হরিষে।
রাজ হংস সম, গমন মনোরম, বল্লভ-লোচন-হুথ বরিষে।

বল্ল ভ-গুণাবলী গান করুক। শ্লেষার্থ—হরিবল্লভ (পদকর্তা) তোমার ৩৭ গাণ করুক।

(৮) নাগরী-মণি, অভিসারে চলিলেন। সঙ্গিনী-সণীর ভাবাবেশে পদ কর্ত্তা,পূজনীয় বিশ্বনাথ চক্রবর্ত্তী মহাশয় (বেশাশ্রেরে নাম হরিবল্লভ দাস) এই গীতে সে গমন-মাধুরী, বর্ণন করিতেছেন যথা—আমাদের শশী-বদনী রাধা, পরমধ্যা রমণী বটে, দেখ কি অপূর্ক শোভা বিস্তার করিতে করিতে অভিসারে চলিয়াছেন। চকিত-নেত্রাঞ্চল এবং চঞ্চল মণি-কুণ্ডল পৃথক্ পৃথক্রপে কি স্থলর ঝলসিত হইতেছে!!

সৌরভিত-সুশীতল-সমীরণের মল-হিলোলে, শিরাবরণ-বসনের অর্থাৎ

যুমটার প্রাস্তভাগ যেন রসে নাচিতেছে ! নাশা-লম্বিত-সমুজ্জল-শ্বেত

মুক্রাটি, নক্ষত্রের স্থার থেলা করিতেছে, বিমাধরে হাস্থ-শোভিত । আর

তকণী-মণির স্তন হইটি—যেন বক্ষ-বিলম্বিত-হার-রূপ তর্মাধীর সৈকতভূমেসম্মিলিত, হইটি—সদাহর্ষিত-কোক পক্ষীর (চক্রনাক্-যুগলের) স্থায় শোভা
পাইতেছে। আর রাজ হংসীর স্থায় ধনীমণির মনোরম গ্রমনভঙ্গী প্রিয়ন্ধনের
নম্বনে যেন স্থাধের বৃষ্টি-বর্ষণ করিতেছে।

#### (৯)--বালা।

শুন শুন এ সধি ! বচন বিশেষ,
আজু হাম দেওব তোতে উপদেশ।
পহিলহি বৈঠবি শ্য়নক সীম \*
হেরি পিয়া মুথ—মোড়বি গীম †
পরশিতে—ছই করে ঠেলবি পানি,
মৌন করবি—পিয়, পুছইতে বাণী।

বছ বিধ চাটু করবে যদি নাহ বিহুসি বুঝাওবি, রস-নিরবাহ। "বিদ্যাপতি কহ ইহ রস ঠাট, কাম-গুরু হই শিখাওব পাঠ"।

# ( ১০ )—পঠ মঞ্জরী।

স্থরত-তিয়াদে ধরল পছ, পানি, করে কর বারই, তরল নয়ানী। হঠ-পরিরস্তবে পরবশ গাত, নহি নহি বোলি, ধুনাওই মাথ।

- (১) এ গীতে দথী প্রীরাধাকে উপদেশ করিতেছেন:—
- . \* প্রথমেই শ্যার প্রাস্তভাগে অর্থাৎ শেষ-সীমায় বদিবে। মাঝখানে— নায়কের নিকটে বদিবেনা।
  - † প্রিয়তমের বদন দর্শন ঘটলেই—গ্রীবা-মোড়া দিবে। ঘাড় বাঁকাইবে।
- ‡ বাক্যের দ্বারা রসক্রীড়ায় সম্মতি দিবেনা। রসমন্ন হাসির দ্বারা দিবে।
  আমাদের আদর্শ হস্ত-লিপির কোন থানিতেই ভণিতা নাই। আমরা
  পদামৃত-সমুদ্রের ভণিতা সমীচীন-বোধে গ্রহণ করিলাম। কালীবাবুর বিদ্যাপতিতে ভণিতা এইরূপঃ—"ভণ্যে বিদ্যাপতি ইহ রস গৃঢ়, বুঝারে রসিকজন
  না বুঝারে মৃঢ়।"
- ( > ) শ্রীরাধাকে লইয়া সধী, কেলী-কুঞ্জে উপস্থিত হইলে, স্থরত ত্বাতুর নাগরেন্দ্র, মহাত্ষিত জনের অমৃত-বারি লাভের ন্যায়—পরমাগ্রহে, প্রিয়তমার হস্ত ধারণ করিলেন। নাগরী-রাজ্ঞী চঞ্চল নেত্রভঙ্গীতে যুগপৎ কাস্তের ও সধীর প্রতিট্রচাহিয়া, আপন করে নাগরের করাপসারণ—করিতে লাগিলেন। এই অবসরে সধী, কেলীকুঞ্জের বহির্দেশে আসিলেন, আসিয়া —লতা বাতায়নে

অভিনব-মদন-ভরঙ্গিণী রাই, খ্রাম-মাতঙ্গ রঙ্গে অবগাই। চুম্বনে সঙ্কোচই লোচন তার, পিবইতে অধন্ম রচই সীতকার। নথর-পরশে ধনী চমকরে গোরী, দশইতে তর্মি উঠই, তমু মোরি। কহইতে কহ গদ গদ পদ আধ, গোবিন্দ দাস কহ রস-মরিয়াদ।

🌞 ( ১১)—পঠ মঞ্জরী ।

বালি বিলাসিনী, মনসিজ-নাট, অব কছু কছু সমুঝয়ে রস-পাঠ। শশী-মুখী, রহি রহি লছ লছ.বোলে\* প্রিয়তম-শ্রবণে অমৃত-রস ঘোলে;

নশ্বন দিয়া দেখিতেছেন—রসিকশিরোমণির বলাৎকার আলিঙ্গনে, বিনোদিনীর দেহ পরবশ হইয়া পড়িল, তিনি রসভরে নহি! নহি! বালতে এবং
মাথা ধুনাইয়া নিষেধ করিতে লাগিলেন – ইত্যাদি। এগীতের সর্বশেষ ছত্তের
উপরে পদামৃত সমুদ্রে ও পদকল্পতকতে আরও তুইটি পংক্তি অধিক দৃষ্ট হয়।
মথা,—আন আন মনে—মনসিজ উনমাদ। ত্রৈখলে রোখত হরি-পরসাদ।

তিয়ানে—তৃষ্ণার। দশইতে—অধরাদি দংশনে। তরসি—আসমুক্ত হইয়া। গাত—গাত্র। অবগাই—অবগাহন-কারী। তার—তারা। তমু-মোরী—অঙ্গ মোড়া দিয়া, রস মরিয়াদ—রদের মর্যাদা। "কহ গদ গদ পদ আধ"—অর্থাৎ আধ আধ বচনে স্থামুখী কিরুপ অমৃত বর্ষণ করিলেন? স্বতঃই এ প্রশ্ন উঠিতেছে। কবীক্র বিদ্যাপতির একটি পদে উহা এইরূপে বর্ণিত আছে। মথা ~

রতি বিশারদ—তুহ, রাধ মান,
বাঢ়িলে যৌবন তোহে দিব দান।
এবে, সে অলপ-রসে না পূরব আশ,
ধোরি সলিলে তুরা না বাবে পিয়াস।
অলপে-অলপে যদি চাহ, নিতি নিতি,
প্রতিপদ-চাল-কলাসম রীতি।

থোরি পরোণরে না পুরব পানি, না দিহ নথরেথ হরি ! রস-জানি । ভনয়ে বিদ্যাপতি কৈছন রীত ! কাঁচা দাড়িম প্রতি ঐ ছন প্রীত ?

(১১) \* বহিয়া বহিয়া, লঘু লঘু বচনে, শশী-মুখী কিরূপ বুগামুতে

যত যত করে ধনী, কাকুতি দম্ভ।
বিদগধ ততহি গাঢ় পরিরস্ত,
হরিণ-নয়ানী—সঘনে শিতকার।
টুটত কুচ-কঞ্ক, মণি হার,
নির্ভর বিম্ব-অধ্র-পর দংশে,
অমুভবি, মনমথ্রস-পরশংসে +

ঘন দামিনী মিলি কেলী-বিলাদ।
স্থীজন-নয়ন-শিথিনীর সহাদ!
কক্ষণ কিদ্ধিণী মুপুর বাঝে,
এত দিনে মন মথ পাওল রাজে।
শ্রমজলে দোহু-তমু ভক্ত; নব-প্রেম,
মাজি ধোওলী বৈছে-নিলমণি, হেম।

কহে হরি বল্লভ আলী-সমাজ ! রাথল, লোচন-সম্পূট মাঝ॥

ইতি সংক্ষিপ্ত সম্পূর্ণ সন্ধি, মুগ্ধতা মধতয়োশ্চ সন্ধি, পঞ্মী ক্ষণদা ।

প্রিয়তমের শ্রবণে অমৃতের আবর্ত্ত স্থলন করিতেছেন। রসিক চূড়ামণি বিদ্যাপতির মুধে শুহুন—

"চামুর ময়দন তুত বনমালী
িরীষ কুস্থম হাম কমলিনী নারী,
দূতী বড় দাফণ সাধল বাদ
করী-করে সোপল মালতী মাদ,
নয়নক অঞ্জন নিরঞ্জন ভেল
মুগমদ চন্দন যামে ভিগি গেল!

বিদগধ মাধব! তোহে পরণাম
অবলারে বলি দিয়া না পুজহ কাম।
এ হরি! এ হরি! কর অবধান
আন দিবদ লাগি রাথহ পরাণ।
রসবতী নাগরী—রস মরিয়াদ
বিভাপতি কহ, পূরব সাধ।

( "বনমালি ! শুনিরাছি ভোমার জন্ম-পত্রিকার আছে, কংসের সর্ব প্রধান মল—চাণুরকে মর্দন করিয়া, ভোমার নাম হইবে চাণুর-মর্দন।" ইত্যাদি-রূপে এ পদের ব্যাখ্যা হইবে )

† সকল-কলাগুরু রগিকেক্সের, বিগাস-কণার ফলে অতীব আনন্দাযুদ্ভব হওয়ায়, ধনী-মণি আপন-মনে কন্দর্পরসের প্রশংসা করিতে লাগিলেন।

বেষন মেঘ-বিদ্যুতের সম্মিলন দেখিলে, ময়ুরীগণ আনন্দে মাতির। উঠে; তেমনি আজ খ্রাম-নব-ঘন এবং রাই-দামিনীর সম্মিলন অর্থাৎ কেলী-বিলাস দেখিরা, সথীগণের নয়ন রূপ ময়ুরীবৃদ্দ প্রমোদ-প্রমন্ত ইইয়া হাসিডেছে। আর এত দিনের পরে রাধা-দেহ-ক্লপ নবীন-রাজ্যে,

# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

# मछी कनना।

### ( ১ ) ै रगीतहस्य अभि मक्षती ताग ।

গোবিন্দের অঙ্গে পঁত্ নিজ অঙ্গ দিয়া, । নাচেন গৌরাঙ্গ চাঁদ গদাধর-রদে, গান বুন্দাবন গুণ আনন্দিত হৈয়া। অনস্ত অনঙ্গ যিনি দেহের বলনি,

গদাধর নাচে পছ গৌরাঙ্গ বিলাসে। ত্রিভ্বন দরবিত দম্পতি রসে, মুথ-চাঁদ কি কহিব ? কহিতে নাজানি। মুরারী বঞ্চিত ভেল নিজ মায়া দোষে !

কলর্পের শাসন প্রতিষ্ঠা হইল দেখিয়া—বুঝি, তদীয় বিজয়-বাদ্য-কর— কম্বণ-কিম্বিণী ও নৃপুর, মনের সাধে বাদ্য করিতেছে !

উভয়ের তত্ত্ব প্রম-ললে সাত হওয়ায় বোধ হইতেছে, যেন নবীন প্রেম এক থানি নিলমণি ও এক থানি হেম-মণিকে ধুইয়া মাজিয়া নিৰ্দ্মল ও উদ্জ্বল করিয়া লইল। গীতকর্ত্তা কহিতেছেন, স্থী-বৃন্দ, আপন আপন নম্মন-সম্পুটে, এ রত্বদ্ধ রক্ষা কর।

(১) আলোচনার প্রারম্ভেই প্রশ্ন উঠিতেছে, এ গীতোক্ত গোবিন্দ কোন গোবিন্দ ? প্রীচারতামূতের একটি পরারে পাওয়া যায় "গোবিন্দ, আর বাস্থদেব ঘোষ, তিন ভাইর কীর্ত্তনে প্রভূ পারেন সম্ভোধ' এই ভাগ্যবান গোবিন্দ-বোষের মুখে —বৃন্দাবন-রস-বর্ণন-গীতি, শুনিতে শুনিতে প্রভু গৌর-স্থলর-বোধ হয়-আজ গোবিল-ঘোষের অঙ্গে শ্রীঅঙ্গ ভেলাইয়া আনল-ভরে স্বয়ং বৃন্দাবন শুণ গান করিতেছেন। আর ভুবনোন্মাদক কণ্ঠ-স্বরের মাধুরী ও অনন্ত-অনঙ্গ-পরাভবী জগমোহন অঙ্গ-মাধুরী দক্ষিলিত হইয়া জীবের আধি, ব্যাধি—শোক ভাপ দূর করিতেছে। আহা। ঐ মুথচল্লের অলোকিক শোভা কি করিয়া প্রকাশ করিব ? ইহা বর্ণনের ভাষা নাই---

#### (২)—শ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রস্থা, গান্ধার।

এমন নিভাই কোথাও দেখি নাই।

অবধৃত-বেশ ধরি,

হাদে কান্দে নাচে আরে ভাই॥

উপমা নাই। অনন্ত চক্র-বিদ্নয়ী :বলিলে—এ বদনের :বিন্দুমাত শোভাও ব্যক্ত হয় না।

দেখ দেখ! শ্রীরাধার ভাবময়-বিগ্রহ গদাধর পণ্ডিতের, বদনাবলোকন করিয়া, প্রভু আমার—বৃন্দাবনের মধুর-লীলাবেশে নাচিতেছেন। শ্রীগদাধর গোদাঞিও, শ্রীগৌরচক্রের—মধুর ব্রজ্ব-লীলাবেশে আবেশিত হইয়া নৃত্য করিতেছেন। আর কাস্ত-কাস্তার ভায়—য়ুগল-রম-বিলাসের এই অপূর্বাভিনয়ে, সাক্ষাৎ রাম-রমান্ত্তব করিয়া, ত্রিভুবন—অর্থাৎ পশু পক্ষাদি হইতে যোগেশ্বরাদি পর্যান্ত—দ্রব হইতেছেন। হায়। কেবল আমি (পদ কন্তা মুরারী শুপ্ত) নিজ দোবে মায়ায়ভুলিয়া—বঞ্চিত রহিলাম।!

আমাদের, ধিতীয়-আদর্শ-হস্ত-লিপিতে ভণিতার পাঠ এইরপ,—ি ত্রিভ্বন দরবিত এ দোহার রসে, না জানি মুরারী গুপু বঞ্চিত কোন দোযে।" গৌর-পদ-তরঙ্গিণীতে ভণিতার পাঠ সম্পূর্ণ ভিন্ন। যথা,—"হছ প্রেমে হছ মন্ত, মুখে হরি-নাম। আনন্দে সঙ্গেতে নাচে দাস ঘনগ্রাম॥"

(২) জগতে অনেক মহাপুক্ষ দেখিয়ছি। অনেক অভ্ত-কর্মা অসাধারণ শক্তি-সম্পন্ন—মহাত্মা দেখিয়ছি। কাব্য-নাটকাদিতে, কল্পনার উচ্চ আদর্শের—মর, অমর, বিশুর দেখিয়ছি। বেদে, পুরাণে, তয়ে, ইতিহাসে দেব, মানব ও ঈশ্বরাবতার সকলের—অলৌকিক-কর্ম এবং অভ্ত-চরিত্তের বর্ণনা ঢের দেখিয়ছি, কিন্তু আমার নিতাইয়ের তায় এমন দয়ার ঠাকুর, জীনের এমন বন্ধু, এমন অদোষদর্শী, এমন নির্বিচার-প্রেমদাতা কথনও কোথাও দেখি নাই!

অহৈতের সঙ্গে রঙ্গ, ধরণ না নায় অঙ্গ,
গোরা প্রেনে গড়া তন্তু থানি।

চুলিয়া চুলিয়া চলে, বাহু তুলি হরি বলে,

হু নয়নে বহু নিভাইর পানি॥
কপালে ভিলক শোভে, কুটিল-কুস্তল লোলে,
গুঞ্জার আটুনি চূড়া ভায়।
কেশরা জিনিয়া কটি, কটিতটে নীল ধটী,
বাজন-নূপুর রাজা পায়॥

অবধৃত সন্নাদী অনেকই দৃষ্ট হন, তাহারা রুষ্ণ-প্রেমে প্রমন্ত নহেন।
নৃত্যুগীত হাস্ত রোদনাদি প্রেমবিকার, তাহাদের দেখা যার না। কিন্তু আমার
নিতাই, অবধৃতের বেশে—গোড়ে আসিয়াছেন অথচ তাঁহার সমস্ত আচরিত
অদৃষ্ট-পূর্বা। তিনি মধুর হরিনাম বিতরণ দারা—জীব উদ্ধার করিতেছেন
এবং প্রেমোন্মন্ত হইয়া কথন হাস্ত, কখন রোদন—কখন নৃত্য—কখন কীর্ত্তন
করিয়া, ভক্তি-গন্ধহীন ভাত-জ্ঞানের-মক্রময় জগতকে প্রেম-মলাকিনীর
বন্তায় ভাসাইতেছেন। দেখ, সর্বাংশিরোধার্য্য,—সর্বা শাস্ত্রবিৎ, জ্ঞান-বৃদ্ধ
ক্রীঅবৈভাচার্য্যের সহিত এইরূপ নানা-রঙ্গ করিতে করিতে—গৌরপ্রেমে-গঠিত
তাহার মোহন তন্ত্র্থানি প্রেমে এলাইয়া পড়িতেছে—ধরিতে পারিতেছেন না!

ঢুলিয়া ঢুলিয়া চলিতেছেন, আর ভূজ-যুগল উদ্ধে উত্তোলন পূর্ব্বক হরিবল—বলিতেছেন, আর ছ-নয়ন বহিয়া অশ্রুপাত হইতেছে!! বিশ্বয়-বিস্ফারিত-নেত্রে, জগৎ দেখিতেছে—ভক্তি, প্রেম, ও হরিনাম,—শুধু মুখের উপদেশ মাত্রে—প্রচারের বস্ত নহে। এই-ই তাহার প্রকৃত প্রচারের প্রক্রিয়া। আবার আমার— নিতাই চাঁদের বেশভ্ষা দেখিয়া—ব্রজ-স্থা-রসের উপাসকগণ, সাক্ষাৎ বলদেবের দর্শনানন্দ অন্নভব করিতেছে!! সাধারণ লোকে চিরদিন জানে—মণি মুক্তা স্বর্ণাদির অভরণ-মণ্ডিত-বেশ এবং নানাবর্ণ বসনে আপাদ-কটি-সমাচ্ছাদিত বেশই সৌন্দর্যের নিদান; আজ তাহারা আমার নিতাই স্থলরের স্থোভিত তিলক, লোলকুণ্ডল, এবং গুঞামালা ছারা

ুকে কল্থ নিভাইর প্রণ, জীব দেখি, সকরুণ,
হরি নামে জগত তারিল।
বদন,নদেতে অন্ধ, বিষয়ে রহল বন্ধ,
হেন নিভাই ভজিতে না পাইল॥

## ( o)—বরাড়ি, শ্রীরাধাপ্রাছ।

সংবদ্ধ-কেশোণরিও স্থচাক-চূড়া এবং কেশরী-গর্বহারী কটিতটস্থ নীল ধটি আর রাতৃল চরণের —শব্দায়মান নৃপুরের সৌন্দর্য্য-মাধুরী, দেখিয়া দেখিয়া, বিহ্বল-চিত্তে ভাবিতেছে—একি অপূর্ব্ব বেশ! এযে সকল বেশের সার সম্পদ!! নয়ন যে ফিরান যাইতেছে না!!!

এইরপে আমার নিতাইয়ের—ত্রজ-রাথাল-বেশের আকর্ষণী-শব্জিতে নারী পুরুষ, পশু পকাদি পর্যন্ত – অনির্বাচনীয় আনন্দ-রসে সিক্ত ও ধন্ত হইতেছে। এবং মনে করিতেছে হায়! মানবের নয়ন—হে "রূপের" কাঙ্গাল, দেখি-তেছি তাহা জগতে নাই! যে দেশে সে রূপের বসতি, ইনি নিশ্চয়ই সেই দেশের মানুষ।

নিতাইর সমাক্ গুণ বর্ণন—জীবের সাধ্যাতীত। জীবের শোচনীয় দশা দর্শনে-সঞ্জাত করুণাই—যাহার এইরূপ কলা-চাতুর্য্য বিস্তার পূর্বক নাম-প্রেম-দানে জগৎ নিস্তারের – কারণ, তাহার গুণের সীমা—স্থানবীয় শক্তির ছারা নির্ণিয় হইবার নহে।

হার ! মলভাগ্য আমি (গীতকর্তা মদন দাস) মদার হইরা এমন অবতারেও মারাবন্ধ রহিলাম ! এহেন নিতাইকেও ভজিতে পারিলাম না ! ৷

<sup>(</sup>৩) আপন মাতামহী মুধরার নিকটে জ্রীরাধা কহিতেছেন,—
বিদ্যা প্রতিদিনই—বসুনার ধাই, কিন্তু তথার আজ বাহা দেধিরা আসিলার,

বজি মাই! কি দেখিছু যমুনার ধারে।
কালিয়া বরণ এক, মাহ্মৰ আকার গো! বিকাইন্থ তার অধি ঠারে ॥ জ ॥
ভাম চিকনিয়া-দে, রসে নিরমিল কে ? প্রতি অঙ্গে ঝলকে দাপনি,
ভ্বন-বিচিত্র ঠাম, দেখিয়া কাঁপয়ে কাম, কান্দে কত কুলের রমণী।
না জানি না শুনি তায়, সেবা কোন্ দেবতায়, তেঞি সে তাহার হেন রীত।
ভান দাসেতে কয়, না করিলে পরিচয়! কি জানিবে তাহার চরিত ?

এমন অপরপ কথনও দেখি নাই। হায়। আজ কি অণ্ডক্ষণেই জলের জন্ত গিয়াছিলাম। কি বিড়ম্বনা। কুলবতী কোথাও যাইবার অগ্রেই তাহার শুরু-গোরব ধ্বংশের ও কুল-নাশের নিমিত্ত—কলম্ক গেথানে যাইগ্রা উপস্থিত হয়।

বড়িমা গো! আজ যে কি দেখিয়ছি নিজেই ব্ঝিতে পারি নাই, বলিয়া কি জানাইব ? দেখিলাম, কালিয়া আমবর্ণ—ঠিক্ মান্ত্ষের মত—একজন! তাঁহার নয়নেজিতে আমি একেবারে বিক্রীত হইয়া গিয়াছি। তাঁহার, আম চিকণিয়া-দেহঝানি বেন রদে-গঠিত এবং প্রতিমঙ্গে লাবণ্য ঝলসিত হইতেছে!!

নে ভ্বন-মোহন ভঙ্গী দেখিলে বুঝি কামেরও কম্প হয়, অতএব কুলরমণী কুল কাঁদিয়া আকুল হইবে সে আর বিচিত্র কি ? সে-যে-কে তাহা জানিতে পারি নাই, তবে নিশ্চরই কোনও দেবতা—তাহাতে আর সংশয় নাই। এমন অলোকিক ভাবু,ও রূপ মানুষে কখনও সম্ভব নহে।

বড়াই বৃড়ীর হইয়া—পদকত্তী-জ্ঞানদাস বলিতেছেন। বৃঝিতে পারিস্ নাই ? কি করিয়া পারিবি ? তাহার সহিত পরিচয় করা কর্তব্য ছিল। পরিচয় করিলি না—কি করিয়া তাঁহাকে জানিবি ?

পদকল্লভকতে "কি পেথলু যম্নার ধারে" ইতি পদে এ গীতারন্ত। শেষ চারি পংক্তির পাঠ সম্পূর্ণ বিভিন্ন এবং "ষত্ কছে" ভণিতা-যুক্ত।

#### ( 8 )-- भागा, ताथागार-- मलात ।

রূপ দেখ সিয়া, ৰন্ধুরে আপনা দিয়া। যৌবনে জীবনে কিবা কাজ ? না ধর আসার বোল, পাছে পাৰে লাজ।

পিঠেতে পাটের থোপা, তাছে সোনার বাঁপা,
কৃষ্ণলৈ—বকুল মালা, গন্ধ রাজ চাঁপা।
নটবর বেশ কামুর, হাতে মোহন বেমু,
পীতধড়া—পরিধান, ভূর—কাম ধমু।
আঁথির অঞ্জা, নাচায় চঞ্চল, তাহে বরিখে বান,
হিয়ার ভিতর, করয় বে্দ্ধা, যেখানে পরাণ।

এইরপ বাঞ্নীয়-বন্ধ-লাভই জীবন যৌবনের সার্থকতা, নচেৎ—ছার, জীবন যৌবনের—ভার বহিয়া লাভ কি ? আমার কথামত চল। বদি না চল নিশ্চয় শেষে লাজ পাইবে। লজ্জার কারণ বলিতেছি শোন:—ঐ যে সোনার ঝাপা দেওয়া পাটের থোপা—পৃঠে বিলম্বিত, কেশে—বকুল ফুলের মালা ও গন্ধরাজ ও চম্পক-কুসুমাবলী,—এ সকল চিক্ত আর কাহারও নয়, ইহা কাত্রর নটবর বেশ। তাহার পরিধানে যে পীতধড়া এবং করে মূরলী দেখিয়াছ তাহাতে জগৎ মুগ্ধ হয়, আর তাহার যে জয়ুগল, উহা সাক্ষাৎ কন্দর্পের শরাসন। চঞ্চল নয়নাঞ্চল নাচাইয়া ঐ ধয়র বারা অলক্ষ্যে এক প্রকার বাণ বর্ষণ করেন—উহা একেবারে বুকের ভিতরে যাইয়া প্রাণে বিদ্ধ হয় অথচ বাহিরে কোনও চিক্ত দেখা যায় না! তাঁহার কর্ণে বে মকরাক্ষতি কুগুল দেখিয়াছ, ভাহাও অজুত শক্তি সম্পান; যে স্থন্দরী কামুকে আলু-সমর্পণ করে নাই, তাহাকে দেখিবা মাত্র ঐ কুগুল সজীব-মকর হইয়া

<sup>(</sup>৪) শ্রীরাধার ব্যাকুলতা দেখিয়া পরম-স্ক্রদ শ্রামলা দখী বলিতেছেন,— আমি সব ব্ঝিয়াছি। আমার সহিত এই বন্ধুর কাছে আইস, তাঁহাকে আযু-সমর্পণ কর, করিয়া রূপ দর্শনের বাসনা মিটাও।

যেধণী তাহার নয়—সে তারে দেখিলে, শ্রেবণে মকর কৃণ্ডল—মন ধরি গিলে ! বংশীবদনে কহে—এই কথা দড়, বিশ্ব না কর, বেশ বানাইয়া নড়।

# ( व )-- कारमान।

নিলীম মৃগমদে—তকু অকুরঞ্জই, নিলীম হার উজোর, নীল বলয়াগণ, ভুজ যুগ মণ্ডিত, পহিরলি নীল-নিচোল।

হুন্দ্রী, হরি অভিদার কি লাগি। নব অসুরাগে গোরীভেলি শামরী! কুক্-যামিনী-ভয়-ভাগি#॥ধ্রু

সেই রমণীর মন-মীনকে গ্রাস করে। অতএব আমার কথামুসারে না চলিলে তোমাকেও ঐরপ বিভ্ন্না-গ্রন্থ এবং অনায়ত্ব হুইতে হুইবে। উপস্থিত অপরা স্থীর ভাবাক্রাস্ত্র, গীতকর্ত্তা কহিতেছেন, ঠিক্ কণা। অতএব— এথনি বেশ রচনা করিয়া স্মভিসারে অগ্রসর হও।

(৫) স্থীর আনন্দ-নিদেশে-উৎফ্লিতা— শ্রীরাধা, অন্ধকারে অভিসারার্থ সর্বাঙ্গে নিলীম-মৃগমদ-চর্চা বিলেপন এবং স্থনীল-বস্ত্র, নীলমণির
হার ও বলয় পরিধান পূর্বক, গৌরী—শামরী (রুফ্ণ বর্ণা) হইয়া গেলেন!
কুহ যামিনীর ভয় অর্থাৎ তামদী-নিশিতে অঙ্গ-প্রভা বিকাশের ভয় দ্র হইল
(ভাগি—পলাইল) ঘনান্ধকারে গুপু হইয়া নবামুরাগে— অভিসারে চলিলেন।
নীল-চ্র্ণ-কুন্তলগুলি, ললাটে হিলোলিভ হইতে লাগিল। (অলীক-ললাট)
নীল-সরোবরের সলিলে যেমন, নীল-নলিনীকে লক্ষ্য করা যার না। তরুণী-

পদামৃত সমুদ্রের পাঠ—ভন্ন লাগি।

নীল-অলকাকুল, অলিকে হিলোলভ,নীল-ভিমিরে চলু গোট, নাল-নলান বৈছে,শামরু সায়রেণ লগত না পারই কোই। নীল ভ্রমরগণ, পরিমলে ধাবই, চৌদিকে করত ঝক্কার, গোনিন্দ দাস, অতএ অমুমানই, রাই চললি অভিসার।

## (७)---(कमाता।

রভি-ত্রগ-শয়ন, সাজি সহচরী সেলি, রাই রহলি নন-কুঞ্জে ধনে খনে ভাবিণী, মনহি বিচারত, বিবিধ মনোরথ-পুঞ্জে।
রস-ময় নাগর-কান।

সঙ্কেত জানি, দূতী-বচনামুতে, সংভ্রমে কয়ল পয়ান।

মণি, সেইরূপ অব্যক্ষিত হইরা চলিলেন। কেবল তাহার অঙ্গ-পরিমল-লোভিত চতুর্দিগবর্তী-ভ্রমরগণের ধাবন ও ঝকার দারা গীত-কর্তা গোবিন্দদাস, স্থী ভাবাবেশে ব্ঝিলেন, রাই অভিসারে চলিয়াছেন এবং তদমুসারে অমুগামী হইলেন।

এদিকে রসময়নাগর, দ্তীর অমৃতময়-বচনে—সঙ্কেত অবগত হইয়া
আনন্দবেগে সঙ্কেত-কুঞাভিমুখে চলিলেন। দেথ কি আশ্চর্যা! রসমধ্রের

<sup>(</sup>৬) নবামুরাগিণী রাধা, নবীন কুঞ্জে অভিসারিণী হইরা, স্থীর সাহায্যে রতি স্থ্-শ্যাা রচনা করিয়া নানাবিধ সাধের চিন্তা করিতেছেন। যথা,—"আজ তিনি আসিবামাত্র হাসিয়া সন্তারণ করিব'' "না, পারিব না! স্থীরা কি মনে করিবে?" ''তাঁহার বিলম্বের নিমিত্ত একটু বামতা দেখাইতে হইবে" ইত্যাদি নানা মনোর্থ—তাঁহার মনে উদন্ধ ইইতেছে।

<sup>†</sup> পদামৃত সমুদ্রের পাঠ---নীলিম-কাসরে নলিনী হিলোলত।

রসময়-আনন-শশধরত্বদ্ব, নয়ন-চকোরক বাস অপরূপ! সোই—চপল ভেল, কামিনী-মুখ-পঙ্কজ-মধু আশ। মন-মথ মথই, মনোরথ-মক্দরে হরি-মন-জলধি-বিথার কহে হরি বল্লভ, অবজানি উপজয়, কেলী-অমুভ-রদ-সার।

## ( १ )-- शिं, मृंडी कृष्ठमूशिंतिम-कारमान ।

## বুঝিব তুওল-পণ আজ।

রাইমণি রভনে, মানিলু বড়ি যভনে, বাঁচি সব রমণী সমাজ। শিরীয়-কুস্থম-ভনী, অভি শুকুমারী ধনী, মালিঙ্গবি দৃঢ় অনুরাগে নির্ভরে করবি কেলী, কেহ নাহি বুঝে গেলি,—

ভ্ৰ∗রাভরে মঞ্জরী না ভাঙে ।

নয়ন্-চকোর,তদীয় স্থলর বদনরূপ চন্দ্রের মধ্যে বাস করিয়াও আজ স্থাকরের স্থা পরিহার পূর্বক কামিনীর—মুথকমলের মধু পানার্থ চঞ্চল হইয়া উটিয়াছে! এদিকে কৌতৃহলী মন্মথ, মনোরথরপ—মন্দর-পর্বতের দারা, হরির হৃদয়-সমুদ্র মন্থন করিতে লাগিলেন। তলগত-প্রাণা স্থীর ভাবাক্রাস্ত-পদকর্ত্তা তদর্শনে আনন্দিত হইয়া কহিতেছেন। এথনি কেনী অমৃত উপজাত হইবে, আর কি ?

<sup>(</sup>৭) প্রাক্ত ভাষার 'ছইল' শব্দ হইতে 'ছওল' শব্দ স্ট হইরাছে। ইহার অর্থ বিদয়। ছওলপন—বিদয়ভা। পথে যাইতে যাইতে, সধী কৃষ্ণকে উপদেশামৃত—পরিবেশন করিতেছেন যথা,—"আজ ভোমার কেলী-নৈপুণার পরীকা। দেখ রমণীরত্ব হাই মণিকে বছ যত্বের ফলে রমণী সমাজকে বঞ্চনা করিরা এথানে অনিয়াছি (বাঁচি বঞ্চনা করিয়া)। বটে—ভাহার

পীরিতি-কি বোলি, নিকটে বৈঠাওবি, নধহানি আনবি কোর আহা উত্ত করে ধনী, কপটে ভূলবি বনি! যদি কহে কাতর বোল।

## (৮)—বরাড়ি।

আপ্তল মাধ্ব, পাওল-ধাম, সম্ভ্রমে জাগল, মনসিজ-গাম। ধনা, মুথ ঢাকি রুগ্ল এক পাশ, বাদর-ডরে শশী—রুগ্ল তরাস? চলু সব স্থীজন—ইঙ্গিত জানি, আরত-নাহ, ধণ্ডল ধনী-পানি। কৈঠে বলমা কিয়ে ঝন ঝন বাজে? বালা কছুই না কছু, ভম্ন-লাজে।

তন্ত্র শিরীয-কুস্থাের স্থায় স্থাকোমল এবং সে অতি স্থকুমারী, কিন্তু তাই বিলয়া কথনও তুমি দৃঢ় আলিঙ্গনে কুষ্টিত হইও না, নির্ভারে কেলী করিও।

কেছ কেছ প্রেম-কেলীর মর্ম ব্ঝে না। না-ব্ঝিয়া বুথা ভর করে।
তুমি নিশ্চর জানিও কুম্ম-মঞ্জরী কদাচ ভ্রমরের ভরে ভগ্ন হয় না। প্রথমে
ভালাকে নিকটে বসাইও এবং প্রেমোদীপক-সরসালাপ করিও, তাহাতে
তাহার বাসনা বলবতী হইবে। তথন স্তনে নথাঘাত পূর্বক কোলে বসাইও,
সে—অবশ্রই আহা। উন্তঃ ইত্যাদি ব্যথিতবং-বাণী উদ্গীরণ করিবে,এ সকল
কপট-ব্যবহারে যেন ভূলে যেও না। কাতর বচনে পরিহার প্রার্থনা
করিলেও ভূলিও না। গীতটি সকল এম্বেই ভণিতাহীন।

(৮) \* হঠকারীতার সহিত নাগর কর্ত্বক বাম-মনোহরা-বিনোদিনীর হন্ত ধারণ রূপ ধৃষ্টতাদৃষ্টে, রাগাধিত হইয়া বেন বলয়গুলি তিরস্কারচ্ছলে ঝন্ ঝন্করিয়া উঠিল। কিন্তু লাজভন্ন বর্দ্ধিত হওয়ার স্থানরী কিছুই বলিতে পারিলেন না। † কত কত সধীজন-করত উপার, ধনী, মুখ-চন্দ কবছ না দেখার। রতি-রণ-পণ্ডিত-নাগর-রঙ্গী, চাপি ধরল,ধনী-বেণী-ভূজ্জী। ডাহিন হাত-চিবুক-গহি রাখে, সম্রমে-বদন-ইন্দু-রস-চাথে।

নন্ধন-চকোর, অমৃত-রস পিরে ‡
অপরপ ! দোছক জীউ তব জীরে।
ভূজ-ধরি আনল, কুস্ম-শয়ান,
জনম সফল মানল, পাঁচ-বান §
সঘনে আলিঙ্গন, নির্ভর কেনী,
বল্লভ-বৈদগধি সফলিত ভেলি!

हेि 🕮 शैछिष्डांबरनी, भूक्त विভात्त, मूक्षा वर्गतन वर्छ क्रमा।

† পঞ্চম পংক্তিতে বলা হইয়াছে—ইক্সিত ব্ৰিয়া স্থীগণ চলিয়া গেলেন।
সেখানে স্থীগণ অর্থ— শ্রীললিতাদি। ইহাদের সমুথে শ্রীরাধার রহস্ত-লীলায়
সংক্ষাচ হয়। তবে "কত কত উপায়" কাহারা করিলেন ? উত্তর—শ্রীরূপমঞ্জরী.প্রভৃতি অবগুঠন উন্মোচনার্থ নানা প্রকার চেষ্টা করিলেন। ইহাদের
নিকটে রহস্ত-লীলায় সংক্ষাচ নাই। (শ্রীক্ষণ্ডাবনামৃত ফ্রন্ট্রা)। গহি—
গ্রহণ করিয়া অর্থাৎ ধরিয়া।

় একের অর্থাৎ—নয়নের অমৃত পান এবং তৎফলে অপরের অর্থাৎ ত্রনের জিউর জীবন লাভ—প্রেম-রাজ্যে অপূর্ব বিধান!! ইহার নাম--অসকতি অলকার।

§ আজ, সাধপূর্ণ করিয়া গেমময়-প্রেমময়ীর কেলী-সেবা সম্পাদন করিতে পারিয়া কন্দর্প আপম জীবন সার্থক মনে করিলেন।

(৭ নং) গীতের প্রারম্ভে বে, সধী বলিরাছিলেন, নাগর! আজ তোমার কেলী-নৈপুল্যের পরীক্ষা"। এ গীতের রচিতা সেই সধীর ভাবাবেশে উপসংহারে নাগরের বলিহারি দিলেন—"তোমার বৈদ্ধি, সফলিত বটে!!"

# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### व्यथ मख्यी कर्नना—कृष्धा मख्यो ।

# (১) श्रीत्रागितहत्त्व या, यहरे ।

সহজই কাঞ্চন গোরা,
মদন-মনোহর বরস কিশোরা।
তাহে ধরু নটবর-বেশ,
প্রতি অঙ্গে তরঙ্গিত রসের আবেশ।
নাচত নবদ্বীপ-চন্দ,
জগজন নিমগন প্রোম-আনন্দ।
বিপুল পুলক অবলম্বে,
বিকশিত ভেল কিয়ে ভাব-কদম্বে ?

নম্বনে গলম্মে ঘন-লোর,
কণে হাসে, কণে কন্দে,ভাবে বিভোর

রস-ভরে গদগদ-বোল,
চরণ পরশে থিতি! আনন্দ-হিলোল।
পূরল জগজন-আশ,

‡কেবল বঞ্চিত গোবিন্দ দাস।

গৌরস্থাকরের কমনীয় কলেবরে পুশকের বাত্ল্য দর্শনে বোধ হইতেছে যেন পুশকের ছাল্ল ভাব-কদম্ব-বিক্সিত হইয়াছে। নয়ন হইতে অরিবত্ত প্রেমাঞ্চ-বর্ষণ হইতেছে। বিভোর হইয়া কথন রোগন কথনও হাস্ত করিতে-

<sup>( )</sup> জামার গৌর হরির স্বাভাবিক বর্ণই, কাঞ্চনের স্থায় স্থিয়-সমুজ্জন গৌর। প্রীঅঙ্গের সংস্থান-সৌন্ধ্য, মন্মধেরও মনোহারী, তত্পরি কিশোর বরসোচিত সৌকুমার্যা ও ভাব-মাধুর্যা-মভিত। তত্পরি—আজ নটবর বেশ ধারণ করিয়াছেন। তাহার উপর জাবার অজ-রসাবেশে প্রতি অঙ্গ তরজিত হতৈছে। দেখ আজ এহেন জগমোহন-সৌন্ধ্যা—গৌকুমার্যা ও ভাব মাধুর্যা-মভিত প্রীনশ্বীপচন্দ্র, প্রেমাবেশে নাচিতেছেন। অতএব শিশু-রদ্ধ উত্তর অধ্য নর নারী, নির্বিশেষে, সমস্ত জগংবাসী আজ আনন্দ রসে নিম্মা।

<sup>\*</sup> পাঠান্তর—ভক **ছ**হি কোর। † ক্ষিতি। ‡ ৰঞ্জিত একল।

# (२)—ञीनिज्ञानमहस्य ७, (बरनाशांत्र।

জয় জগতারণ, কারণ ধাম। আনন্দ-কন্দ নিত্যানন্দ নাম ॥ধ্রু॥ ডগমগ-লোচন-কমল চুলাওত, সহজে অথির গতি—জিনি মাতোয়ার,

ভায়া অভিরাম ! বলি, ঘন ঘন ফুকরই, গৌর-প্রেমভরে চলই না পার।

ছেন ! বাক্য---রস-গদ্গদ হইন্না উঠিয়াছে এবং নৃত্য-চঞ্চীত শ্রীচরণের স্পার্শে পৃথিবী যেন আনন্দে টলমল করিতেছে !!

দৈন্তই সাধকের সর্কস্থ। গীতকর্ত্ত। গোবিল চক্রবর্ত্তী ভক্তোচিত দৈনোং-কঠার বলিভেছেন—হায়! পরমকরণ অবতারে সমস্ত জগজনের আশা পূর্ণ হইল, কেবলমাত্র আমি কর্মদোধে বঞ্চিত রহিলাম!

(२) ঐ—বিনি ডগমগ-লোচন-কমল চুলাইতেছেন, আর স্বতঃই
মাতোরারের মত অস্থির-গতি এবং বিনি ঘন ঘন "ভাইরা অভিরাম।"
বিলিয়া ডাকিতেছেন—গৌর-প্রেম-ভরে চলিতে পারিছেন না। অবিরত-পদখলন হইতেছে। জাতি, বর্ণ, লিঙ্গা, ভাব, জিয়া ও অধিকারাদির, বিচার
বিরহিত—অগহ্দার কর্তা, কারণাদ্ধিনারী এবং আনন্দের কন্-স্কপ—
এই শীনিত্যানন্দ চক্ষের জয় হউক।

আণা ! কি মধুর গদ গদ বচন,বেন অমৃতপ্রাব ! এদিকে লঘু লঘু-মধুর হাতে গণ্ডম বিকশিত হইয়া রহিয়াছে, এবং পাষ্ণুগণের পাষ্ণুত্ব-বিধ্বংশী, অর্থ পচিত একটি অবলম্ব-লোইদণ্ড শ্রীভূজে শোভা পাইভেছে।

কলিবৃগ রূপ কাল-ভ্জকমের সক্জনিত-বিষদাহে, সম্বস্ত স্থাবর জলম মলিন দেখিয়া, আমার দয়াল প্রভু জগং জুড়িয়া—প্রেম-স্থারস-বর্ষণ করিতেছেন। গদ গদ মধুর—মধুর বচনামৃত, লহু-লহু-হাস-বিকাশিত-গশু, পাষ্ঠ থগুণ, শ্রীভুজ মণ্ডণ—কনক-ধচিত অবলম্বন-দশু। কলিযুগ-কাল-ভূজজম-সঙ্গম, দগধল স্থাবর-জঙ্গম দেখি, জগ-ভরি প্রেম-স্থারদ বরিথত, গোবিন্দ দাস-কো কাহে উপেথি ?

# ( ' )— শ্রীরাণাসাহ, গান্ধার।

মরকত-দরপণ-বরণ-উজোর, না ব্যলু, কি কহল -- অরুণ নয়ান, হেরইতে, প্রতি অঙ্গে অনম অংগার। হানণ অতএ --কুস্ম-শর, বাণ।

উপসংহারে গীতকর্ত্তার সোৎকণ্ঠ প্রার্থনা—প্রভো! স্বগৎ ত্রাভা! এ হডভাগ গোবিন্দদাসকে উপেক্ষা কেন ?

- \* অভিরাম, শ্রীনিত্যানন্দচন্ত্রের প্রির পার্ষণ। ইনি ব্রন্ধের শ্রীদাম। কথিত হয় ইনি দেহ-পরিবর্ত্তন না করিয়া কেবল হ্রস্বীকরণ ছারা, গৌর শ্রীলায় প্রবেশ করেন। ইহার আগমনের নিমিন্ত শ্রীনিতাইয়ের ঘন ঘন ফুকার।
- (৩) শ্রীক্লফের অসমোর্দ্ধ রূপ-মাধুরী দর্শন করিয়া, অন্তরাগের স্বভাবে—
  সদার্ভ্ত কাস্তকে অনুর্ভ্ত-পূর্ব্-জ্ঞানে উন্নাদিনী শ্রীরাধা,সধীর মুধে মন-নয়নহারী—রূপ-নিধি কান্তের পরিচর প্রবণে—ভাঁহার হুর্লভনীয়তার উপলব্ধিতে
  বিশেষ ভাবোদয়ে ক্র হইয়া সধীকে বলিতেছেন—সধি! সে হুর্লভ-দন-রাজ্ঞাননর প্রতি, মাদৃশ বরাকী-কুলবতীর লালসা অতি অযোগ্য তাহা নিঃসংশয়;
  কিন্ত—মরক্ত-মণির-দর্পণবং-নীলোক্রাস, সেই অঙ্গ-কান্তি নিরীক্ষণ কালে
  দেখিলাম, তাহার প্রত্যেক অঙ্গ খেন অমঙ্গের আবরণে স্থর্কিত।
  (অগোর—রন্দিত, আগুলিত) আরও দেখিলাম এই অভ্ত-শরীর-রক্ষী—
  মৃর্জিমান অনঙ্গের সহিত তিনি নয়নোক্রতে কণা বলেন;—তাঁহার অঞ্বতিন্রন-ব্রুল, খেন কটাক্ষ-ভঙ্গী-চ্ছলে তাহাকে কি কহিল। সে কণা বুরিলাম

এ সধি ! কাহে ডেটসু নন্দ-নন্দন। ?
মন্দির-গহন, দহন ভেল-চন্দনা !
তৈথনে, দন্দিণ-পবন ভেল—বাম,
সহই না পারিরে, হিম-কর-নাম।
সাজহ সেজ, কমল-দল পাতি,
কুলবতী যুবতী, লেউ — নিজ-দাথি।

ভাহি রহল, মন-লোচন, লাগি বৈরয়, লাজ, দুরে গেল ভাগি। কি ফল, এ ফল-বিকল-পরাণ ? গোবিন্দাস কহ মিলব কাণ।

না, কিন্তু স্পষ্টত:ই বোধ হইল—তদ্বারা আদিষ্ট হইরা কুসুম-শর (কল্প) আমাকে বাণ-বিদ্ধ করিল।

হার স্থি! আমি কেন.নন্দ-নন্দনের এ ভ্বনমোহন মাধুরী দর্শন করিলাম ? (ভেটলু—দর্শন করিলাম)। স্থি! এই-দাক্ষাৎকারের ফলে, আমার পক্ষে,— শুরুজন-সঙ্কুল-আবাস-গৃহ—গহণ-অরণ্য এবং অঙ্গ-ভাপ-হারী — চন্দন, আগুণের স্থার দাহক হটরা উঠিয়াছে! (দহন—স্থি) দক্ষিণ-প্যন, তদ্বধি আমার প্রতি অদক্ষিণ অর্থাৎ পীড়াপ্রদ হইয়াছে। (দ'ক্ষণ-প্যন শন্দের অর্থ মলয়ান্নীল। শ্লেষার্থ – অমুকুল-বারু—যাহা তাপ-হারক ছিল। বাম—বিপক্ষ।

আর চন্দ্র-দর্শন, কি তদীর সুশীতল-কিরণ-ম্পর্শ দূরে পাক্, উহার নাম শুনিতেই শরীর শিহরিরা উঠে,সনিতে পারি না! এ অবস্থার আর বাঁচিরা ফল নাই! এখন যত শীত্র বিভ্রনামর-জীবনের অবসান ঘটে,ততই মঙ্গল। অতএব তোমরা, কমলের-দল পাভিত্রা তদ্ধারা খ্যা। প্রস্তুত কর। কুলবতী-বৃবতীর ছরাজাজনার উচিত শান্তি, শুল্প করি! কথার সারার্থ এই যে, বর্ত্তমান অবস্থার, কমল-দলের শ্যাই চূড়ান্ত-বন্ধ্রণা-প্রদ; তাহাতে শরন এবং চন্দ্র-কিরণাদিতে দগ্ধ হইরা মরণরূপ শান্তি গ্রহণ করি!! (শাথি—শান্তি)।

হার ! এখনও আমার পোড়া নয়ন ও মন সেই "রূপে" (ভাছি) লাগিরা রহিরাছে ! যে ধৈব্য-লজ্ঞা. কুলবভীর সর্বস্থি-ধন, আমার—ভাহা দুরে পলাই-য়াছে ; বিক্ল-প্রাণটি একা থাকিয়া, আর কল কি ?

সংঘাধিতা সধীর ভাবাবেশে গীতকর্তা গোবিন্দদাস কবিরাক্স উত্তর দিতেছেন—কোনও ভর নাই—স্থির হও। নিশ্চরই কাছকে পাইবে, অর্থাৎ আমি মিলাইরা দিব।

## ( 8 )—वाना ।

কাম্-হেরব করি, ছিল বহু সাধ!
কাম্-হেরইডে অব, ডেল-পরমাদ!!
তব ধরি, অবোদি-মৃগধি, হাম নারী
কি করি কি বলি, কছু ব্ঝই না পারি
সাঙ্তন-ঘন-সম এ ছই নয়ান!
অবিরত, ধক ধক — করমে পরাণ!!
কাহে লাগি সজনি! দরশন ভেলা?
"বরকী, আপন-জিউ, পর হাতে
দেলা!

না জানিরে,কি করু মোহন-চোরা,
হর্রতে, প্রাণহরি লই গেরো,
মেরা।
এত সব আদর—গেও দরশাই,
ইযত বিছুরিরে, তত—বিছুর না বাই।;
বিদ্যাপতি কহে, গুন বর-নারী,
ধৈর্য ধর চিতে মিলব মুরারী।

(৪) স্থীর ক্থিত "স্থির হও" কথার উত্তরে, শ্রীমতী কহিতেছেন,—
স্থি! ধৈর্যাদি অবলম্বন-বিহীন-বিকলপ্রাণ, কি করিয়া স্থির করি ? হায়!
যখন, ক্রমে ক্রমে তাঁহার নাম, ঋণ ও মুরলীর ধ্বনি শুনিলাম, তখন "ক্রে
কান্তকে দেখিয়া জুড়াইব ?" বলিয়া, মনে কত না সাধ হইয়াছিল! এখন সেই
কান্তকে দেখিয়া প্রমাদে পড়িয়াছি!!

(মুগধি—মুগ্ধা। অব—এখন। ভেল—হইল। সাঙ্জন-খন-সম— প্রাবণ মাসের মেবের স্থায়)।

(নরনে—প্রাবণের ক্লগারা ও প্রাণে—ধক ধক আগুণ, এক সমরে এক দেহে, ছই বিপরীত অবস্থা!)

অাপন ক্রুল প্রাণটির স্বাধীনতা হারাইলাম। অপরকে মরণ বাঁচনের
 কর্ত্তা করিলাম।! (বরাক—কুল। জিউ—প্রাণ)।

া সৰি ! আমি বে সাধ করিয়া প্রাণ সপিরাভি, ভাহা নর। সে মোহন-চোর, দৃষ্টিমাত্রে—কি করিয়া আমার প্রাণ হরিয়া নিয়াছে ! !

া যত বিশ্বত হইবার চেষ্টা করি, ততই আরও অধিক পরিমাণে শ্বরণ হয়। কিছুতেই বিশ্বতি আসে না!

গীতকর্ত্তা, স্থীর ভাষাবেশে কহিতেছেন,—তৃমি নারী শিরোমণি, সকল ঋণ-রত্নের ধনি। অতএব চিত্তে ধৈর্যা ধারণ করিয়া অপেকং কর। দেখিবে

# ( ৫ )- मृठी थार, इस्रे।

সহজ্ঞ ই, শ্যাস—স্থকোমল-শীতল, দিনকর-কীরণে-মিলায়, সোতকু পরশ—প্রণ-লব, পরশিতে, মলয়জ-পক্ষ শুকায়!

সঞ্জনি ! কতয়ে বুঝাওব নীতি,
কামু, কঠিনপথ, করল আবোহণ, গুণি গুণি-ভোহারি-পীরিতি,
অমুথন তুনয়নে, নীর নাহি তেজই, বিরহ-অনলে-হিয়া-জারি !
পাবক-পরশে, সরস-দারু ঘৈছন, এক দিখে নিকসই-বারি ! !
সঞ্জল-নলিণী-দলে, শেষ-বিছাওই, সূতল-অতি-অবসাদে,
জ্ঞান দাস কহে, চাসর চুলাইতে, অধিক উপজি পরমাদে !

( সকল কুৎসা বিনাশক অর্থাৎ অনিন্য ) মুরারী আপনি আসিয়া মিলিত হটবেন।

(৫) স্থীর আখাস-বাণী সফল হইল, শ্রীক্লফের প্রেরিত দৃতী উপস্থিত হুইলেন। দৃতী আসিয়া কহিতেছেনঃ—

সধি রাধে! তোমার নিকটে, শ্রাম-নাগরের সংবাদ বশিতে আসিয়াছি, হার! তাহার বে, শ্রাম-স্কোমল-নিগ্ধ-তমুখানি, রবির-কীরণে গলিয়া যাইত, তোমার বিরহোত্তাপে, আজ তাহা—এমন প্রতপ্ত হইরা উঠিয়াছে, বে, সে-তমুর অমুমাত্র স্পর্শে—চন্দন-পদ্ধ শুকাইয়া যাইতেছে!

সধি! তোমার ভাষ কোমল-প্রাণা কিশোরী-মণিকে আমি প্রেম-নীতি কি ব্যাইব ? কর্ত্তব্য উপদেশ কি করিব! এ অবস্থার যাহা সমুচিত হয় কর, কিন্তু সম্বরে কর। কারণ-তোমর প্রেম-পারাবারের-তরঙ্গ গণিতে গণিতে, কারু বড় কঠিন অবস্থার উপনীত হইরাছেন! বিরহায়িতে তাহার হানর, বড়ই দাহ করিতেছে এবং পাবক-পৃষ্ট-অশুক্ষ-কাঠের, বিপরিড-প্রান্ত হইতে যেমন,—সঙ্গোরে-উফজল বহির্গত হয়, তজ্ঞপ তাহার নয়ন-বর হইতে

### (७) कारमाम।

প্রেম-রভন-থনি, রমণী-শিরোমণি, পিয়-বিরহানল, জানি
আন্তর—জর জর,নয়ন—নিঝাৰে ঝর, বদনে—না নিকসয়ে বাণী!
আজু কি কহব, হরি-অমুরাগ
তৈথনে, কানন—চললি, বিকল-মন,(কুল) এখরম-লাজ-ভর ভাগ!

অবিরশ-জল গার। বৃহ্ণিত হ'তেছে ! স্নিগ্নতা সম্পাদনের আশার, আমরা স্থিল-সম্পূক্ত-ক্মলের-দল দ্বারা, শ্য্যা-নির্দ্ধাণ ক্রিয়া দিয়াছিলাম । অবসম্ন হট্রা তাহাতে শুইলেন। আমরা, চামর-ব্যজন ক্রিতে পাণিলাম কিন্তু তাহাতে আরও প্রমাদ বৃদ্ধি হইয়াছে । !

(৬) অনুরাগোজ্জলা—রগমরী-শ্রীরাধার, অভিসার-বর্ণন-ছলে, এ গীতে অপার্থিব-প্রেম-ভাবের, একথানি সংক্ষিপ্ত-স্থল্র-ছবি, অতি দক্ষতার সহিত অফিত হইয়াছে।

লীলা-রস-আসাদনের নিমিন্ত, নিম্নলিথিত কথাগুলি বিশেষ-ভাবে অমুধাবনীয়।

- (১) পিয়তদের, নিদারুণ-বিরহ-ঘাতনার সংবাদ শুনিবামাত্র প্রেমমন্ত্রীও তিক্ তদবস্থা প্রাপ্ত হটলেন—ক্ষদের—আঞ্রণ জ্বলিয়া উটিল ! নম্মন্ত্রতে—নির্বর-ধারার ভাষা, অবিশ্রাম্ভ-অঞ্জ-ধারা বহিতে লাগিল !! বাক্-শক্তি পর্যাম্ভ লোপ পাইল !!! (না নিক্সম্যে—নির্গত হয় না )।
- (২) দেশ-কালাদির বিচার, একবারে বিদর্জন পূর্বক, তৎক্ষণাৎ কাস্তের নিকটে যাত্রা করিলেন !
- (৩) আপনি—স্বভাবতঃ অতি-মন্থর-গানিনী, তথাপি সমস্ত স্থীগণকে, পশ্চাতে ফেলিয়া ত্রিত-গমন করিতে লাগিলেন !

সন্থান-গতি-অঞ্জি, চলই না পারতি, চলত ছি তবহি-তুরস্ত,
তিয়া, অতি-ধসমসি, খাসই—মুখ-শশী—শ্রম-কল-কণ-বরিধস্ত।
সঙ্গিনী-দহচরী, দূরহি পরিহরি, রাই,একাকিনী-কৃঞ্জে,
বল্লভ-মুরছিড—হেরি; জিয়াওত—রূপ-শুধারদ-পুঞে।

#### (१) (कमात।

লোহে-দোহা-নির্থই, নরনের কোণে, লোহ-তমু-পুলকিত, ঘন ঘন-কম্পূ লোহ-হিরা জরজর, মনমথ-বাণে। লোহ, কত মদন-সাগরে—দেই ঝম্প !

এই গীতের শক্ষাবনিতে, এই সভাটিও পরিক্ট হইতেছে যে, পবিত্র-সোলর্য্যের-প্রতিফগন ও সপ্রেম-বিলোকন,—স্থ'-রসের-স্থার সঞ্জীবনী-শক্তি সম্পার।

ভণিতাটি—তিন প্রকারে ব্যাখ্যাত হইতে পারে,—(১) স্বকীয়-রূপ-স্থা-রুদের-ধারা-সমূত,—মূর্চ্ছত-বরভের,—নয়নাধারে ঢালিয়া, তাহাকে জীবিত করিতে লাগিলেন। (২) একাকিনী শ্রীরাধা, কুঞ্জে প্রবেশ পূর্বক, দৃষ্টি-স্থা বারা—রূপ-স্থা-রুদের-পুঞ্জ—নাগরেক্রকে জীবিত করিতে লাগিলেন। (০) গীতকর্ত্তা হরিবল্লভ, রাধার রূপ-স্থা-রুদে বল্লভকে অর্থাৎ মৃচ্ছিত কুফ্কেকে পুনজীবিত করিতে লাগিলেন।

<sup>( 8 )</sup> কুল-ধর্ম, লজ্জা ও ভয়—কৃদয় হইতে অন্তর হইয়া গেল! (ভাগ— ভাগিয়া গেল, পলায়ন করিল)।

<sup>(</sup>१) বিরহ-বিস্চিত্ত-নাগর-রাজ, প্রিরতমার-দর্শন-স্থার,—জঙ্গ-সোগ-দ্ধের,—ও স্পণামৃতের—প্রভাবে, পুনঃ প্রকৃতিস্থ এবং প্রেম-প্রফুল্ল হইয়া <sup>1</sup> উঠিলেন ! তাঁহার, বিরহ-বিষ-দাহ প্রশমিত হইল । সময়োপযোগী-ভাব-

## দোহ-দোহ-আরতি-পীরিভি, নাহি-টুটে দরশনে পরদে, কতেক স্থুও উঠে !

#### (৮) यथा ताश।

রতি-রদে, অতিশর নাতল, নাহ, অমিয়াা-সরোবরে, করু অবগৃহি!

সহজে নিরক্শ—নাগর- নাগ,
তাহে,মনমণ-নৃপ---কৌভুক-লাগ।

কদম-বিক্সিত-তদীয়-প্রকৃল্ল-বদন-দর্শনে, নাগরী-রাজ্ঞীরও সমস্ত--উদ্বেগ আকুলতা ও ক্লান্তি চলিয়া গেল !

উভরে, কেলী-শ্যার বিদিলেন এবং একে অপরের প্রতি উন্মাদনাময় অপাঙ্গ-দৃষ্টি-ছারা, প্রেম-কেলীর মঙ্গলাচরণে প্রবৃত্ত হইলেন। কন্দর্প-শরে উভরের হৃদয় জর্জারিত হইতে লাগিল।

উভয়ের তহুই—প্রেম-কণ্টকিত (লোমাঞ্চিত) হট্রা উঠিল। ত্জনেই মন মন কম্পিত হটতে লাগিলেন।

দেখ, উভরেই যেন কতবার মদন-সাগরে ঝাঁপ দিতেছেন ও উঠিতেছেন ! তাহাতেই বৃঝি উভরের সর্বাঙ্গ, কলপ-রসে-পরিপ্লুত হটরা উঠিয়াছে এবং সম্ভরণ-ক্রীড়া-নিরত-সনশণের আয়, উভরের হস্ত পদাদিতেই, স্বতঃ-চাঞ্চল্য প্রকটিত হইতেছে ।

হার হার ! কাহার ও-প্রেমার্ত্তির পরাজয় নাই ! কেবলই উত্তরোত্তর বর্দ্ধিত হইতেছে। শুভারত্তেই আজ, পরম্পরের দর্শন-স্পর্শনে উভয়ের যে কত স্থাংপত্তি হইতেছে, ভাহার বর্ণনা অথবা অঞ্ভব তুই-ই অসম্ভব !

আ।মাদের উভয়-আদর্শ-হস্ত-শিপিতেই গীতটি এইরপ অসম্পূর্ণ এবং: এ গীত অস্ত কোনও এছে নাই।

<sup>(</sup>৮) নাগর-নাতক রতি-রলে প্রমত হইরা, অমৃত-সরোবরে অবগাহন করিছে লাগিলেন ৷ এ, করীজা অহঃই স্বেচ্ছাময় (যে নাতক, মাছংত্র

কর-গহি রাখত, যুগল-চকেবা দংশই---সরমীজ; বারব কেবা ? কতই হিলোর, উঠাওই রঙ্গে! ভুবহি---কবহু---জানল-তরঙ্গে। হরিবল্লভ, সব সধীগণ ক্লে, দেখত সতত, হুলাসই—ফুলে!

#### हेि अगिकित्सागर्गभागा-नर्गत मक्षमी कर्मना।

অঙ্কুশ দারা পরিচালিত নহে তাহাকে নিরস্কুশ কতে; নিরস্কুশ শব্দের-সারার্থ স্বাধীন বা স্বেচ্ছামর ) তাহাতে আবার, ম্মাণ-নৃপতি কৌতুকে নিযুক্ত করিয়াছেন, অতএব এ মত্ত-মাতলকে কে বারণ করিবে ? লক্ষ্ণা ভয়, সঙ্কোচ কেইই বাধা দিবার নিমিত্ব অগ্রসর হইয়া পারিবেনা!

স্থরসিক-গীত-কর্ত্ত', মাতজের সরোবরে অবগাহনের স্থলর-উৎপ্রেক্ষার-স্বচ্ছ-আবরণের ভিতরে রাথিয়া, এ গীতে রস-কেলী বর্ণনা করিয়াছেন। আমরা কেবল করেকটি শব্দের সহজার্থ এবং উপমান উপমেয় প্রাকাশ করিতেছি:—

কিশোরী-সণির-প্রেমমন্ত কৃষ্ট, অমৃত-সরোবর। তাতার শ্রীবদন থানি
এ সরোবরের—কমল (সরগীজ) দংশই-সরসীজ—বদনে দমাঘাত। নাগ—
হস্তী। কর—১৯৬, মাতঙ্গ পক্ষে শুগু। নাহ—নাগ, নারক। করগতি—
হস্তে গ্রহণ করিয়া। চকেবা—চক্রবাক। যুগল-চকেবা—শুন যুগল।
চক্রবাক—এক প্রকার খেতবর্ণ পক্ষী, ইহারা চঞ্জুর অগ্রভাগ বাহিরে
রাধিয়া ও গ্রীবা এবং মন্তক হ্সীকরণ ধারা অভ্যন্তরবর্তী করতঃ লাটিনের
ভার বর্জুলাকার হইরা উপবেশন করে।

ক্রসই ফুলে—প্রাফুল হটয়া, উল্লসিত-হরিবল্লভ-সথী সমূহ (হরিপ্রিরা সধীগ্র ) অমৃত-সরোবরের তীরে—অর্থাৎ কুঞ্জ-বাতায়ন-তলে গাকিয়া নীলা দর্শনে আনন্দিত ভইতেচেন। শ্রেমার্থ—গীতকর্তা হরিবল্লভ, স্থীগ্রের সহিত "ফুলে" গাকিয়া উল্লসিত হইতেছেন।

# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

जाश नामुनी काला।

( > )—शार्भातहस्त्रक, जीताश।

খ্যারপ-হেন-মণি-ভাষ অবিল-ভূবন-পরকাশ। टिनिटक, शांतियम-ভाता, मृत कः ऋ, कांन-चाक्सियाता।

(১) পঞ্চম ও ষষ্ঠ ছত্ত্র ইইতে, এ গীতের গাস্বাদন, আরম্ভ ইইবে। মণা "তগতের লোকে কথন ৭ যাখা দেখে নাই, কথন ও গাহার কণা শুনে নাই, দেই প্রাকার-—লোকা গীত-তেম-মণিবৎ-কান্তিযুক্ত,—আমার গৌরচক্ত্র নবীন-শশধর রূপে নবদ্বীপে সমূদিত ইইয়াছেন

বদি বল—চল্লের উদরে, সমস্ত-পৃথিবী, তাঁহার কিরণে আলোকিত ও স্থা-লাত হয়, গৌর-কিশোরের সে ঞ্বুণ কোথায় ? উত্তর—কাগতিক চল্লে, যথন যে পৃথিবীতে সমৃদিত হন, তথন শুধু সেই পৃথিবী উজ্জ্বল করেন, আমার গৌর-স্থাকর শ্রীনবদ্বীপে উদিত হইয়া, যাবতীয়-ভৃণন-৸মৃহের-তাপ ও তমো-নাশ করিতেছেন ! অতএব শ্রীনবদ্বীপ চল্লে অনস্থ ওণ-আধিক্যের সহিত ওণের সংস্থিতি!

যদি বল—স্নিগ্ন:লোকে—-ঝণসিত-নক্ষত্রপুঞ্জ-পরিগ্রত হইয়া চক্স, — রজনীর-অন্ধকার হরণ করেন, গৌরচক্রের 'তারা' কই ?

উত্তৰ,মধুৰ-মহিমা প্রেট্ভালিত — চাঁহার পারিষৰ বর্গই, সমুজ্জা-তারকা;

শভিনব-গোরা-দ্বিজ-রাজ, পুলকিত স্থির-চর-জাতি, উরল, নবদ্বীপ মাঝ । গ্রুণ। প্রেম-অমিয়া-রদে-মাতি।

দেও ইহাদের-বারা-পরিবৃত হইয়া – পূর্ণশোভায়-সদা-স্থশোভিত-অকলম্ব-শনী শ্রীগৌর হরি—জগদক্ষকারী-কলি-তিমির, সমৃলে বিধ্বংশ করিতেছেন।

যদি বল-চন্দ্রের-জ্যোৎসামৃতে, কল্ম-বল্লী-প্রথি প্রভৃতি - প্রফুল্ল, সম্বর্দ্ধিত 😉 জীবিত থাকে: গৌরচক্রের সেরূপ গুণ দেখাও দেখি ?

উত্তর-কেবল স্থাবর-স্বাতি কেন ? আমার গৌর-স্থাকরের প্রেম- ट्यां श्वांत्र नारकी प्रवाद अन्यामि, नव-श्रीवन नारक प्रविक्त, अति पृष्टे ७ श्रामिष इहेरब्ह !

यि तन- हत्सापत्य, हस्तकाञ्च-मणि - जन-निः मत्रण-ष्ट्राण व्यानमाश्च-विमर्कान-करत्र, এবং कुम्पिनीशग--- श्रकृत्त डांत्र ष्ट्राल, श्राम्म-विकाम करत्र, शीत्रहास्त्रत উদরে ত এ প্রকার ঘটনা নাই!

উত্তর-কেন থাকিবেন না। ঐ দেখ, তাঁছার প্রেম-সম্পদ-লাভে, প্রামন্ত হইয়া কত ভাগাবান্—নরনারী আনন্দাশ্র-বর্ষণ করিতেছে! ইহারাই বিধু-মণি (চক্তকান্ত মণি) আর ঐ যে-সার্থক-জন্মা-মানবগণ, উাহার উদরে— बानम-विद्यल दृष्टेबा दानिएए हन, देवाबाहै--कृम्पिनी।

यिन वन.--माठ्या এ श्वनि यम हटेन ; हाँदिन अर्थामाज-भारत-सीविष চকোর কোথার ? উত্তর—গৌর-স্থাকরের কাল্কি-স্থার-কণা- (রুচিলব) মাত্রাকাজ্জী—আমিট (গীতকর্ত্তা গোবিলদাসই) পিপাসিত চকোর ৷ তাহা-তেট ত আশা ধরিরা বিভোর হট্যা বসিয়া আছি।

অত্রব জগতের চক্স-কোনও অংশেই, আমার গৌরচক্রের সহিত তৃশ-नीत्र नरह। व्यामात रशोत-स्वन्यत—व्यक्तित व्यश्व हत्या। (विकासक—हत्य। প্লেষে---ব্ৰাহ্মণ-শ্ৰেষ্ঠ )।

এই শীতের শব্দ-দ্বনি-মালোচনায়, আমরা এই করেকটি উপদেশ পাই-তেছি । (১) ভক্তিময়-ভাবই, ভীবের নব-জীবন। কোনও ভাগো, উহার ्र (कह, विध्-प्रशि म्य कारम्म, (१) विम्ममान-हरकात, रिकह, हारम-क्यूमिनी हारम्म क्रिन्नव-नागि, विखात।

অঙ্বোৎপত্তি (শ্রদার উদর) হইলেও শ্রীগোরচক্রের করণা-জ্যোৎদার-মুধা-ভিষেক ব্যতীত উহা বর্দ্ধিত (অর্থাৎ—আশক্তি, কচি, ভাবাদিরূপে পরিণত) হর না এবং এবং (সাধন-ভক্তি ও প্রেম-ভক্তি রূপে)—পুলিত ও ফলিত হর না। (২) আমরা কেবল, পার্থিব-জড়ানল জানি। স্বর্গীর-মুতাস্বাদনে—দেবতাগণের কিরূপ আনল্দ, তাহা আমরা বৃথি না। এদিকে
শাস্তবাক্য এই যে—নিদ্ধাম কর্মামূর্ভানের আনল—কাম্য-কর্মানল হইতে
বড়। জ্ঞানানল—তদপেকাও বড়। এক্ষানল—সকল আনল্দের অধিক।
তাহার—অমূভব দ্রের কথা—স্বর্গণ-জ্ঞান পর্যান্ত, অম্মান্শ জীবের মনে উদর
হর না। অতএব যে প্রেমানলের নিকটে, কোটি কোটি ব্রহ্মানল তৃচ্ছীকৃত—ঘাহার করণার জীবগণ, সেই—প্রেমানল লাভ করিতে পারে সেই
শ্রাণটীনলনের স্থার ভূবন-মলল-অবতার কথন হয় নাই কথন হইবে না!!

- (৩) করুণাবতার-গৌর-হরির, রূপাফলে, প্রেমানন্দের আস্থাদ লাভ ঘটিলে—সে আনন্দ, সম্বরণ করিয়া রাথাযায় না। সেই জন্তই প্রেমোক্সত হইয়া কেহ হাসে, কেহ কাঁদে, কেহ বাহ্ছ হারাইয়া উন্মানের স্থায় নৃত্য করে।
- \* গৌরপদ-তরঙ্গিণীতে এই ছাইটি পংক্তি নাই। ঐ গ্রন্থে এবং পদকর-ডরুতে, ভণিতার উপরিভাগে অতিরিক্ত অভূত ছাইটি পংক্তি দৃষ্ট হর। যথা— "কেহ কেহ ভক্ত চকোর, নারী-পুরুবে দেই কোর"। পদামৃত সমুদ্রে— ইহার প্রথম পংক্তিটি যথাযথরূপে এবং দ্বিতীয় পংক্তিটি—'নারী-পুরুপ নাহি ওর" এইরূপ পাঠান্তরে বর্ত্তমান আছে। ইহা কোনও বিকৃত-বৈষ্ণব-মতাব-শ্বী কর্ত্ব প্রক্তিপ্ত বিলিয়া বোধ হয়।

# ( ২ )— শ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রস্ত, দেখাগ।

সহজ্বে—নিতাই-চাঁদের-রীত, দেশি, উনমত, জগত-চিত। অবনী-কম্পিত—নিতাই ভরে, ভারা ভারা বলে, গভীর-ম্বরে। 'গোর' বলিডে, শৌর-হীন, কান্দে, ভারা-ভাবে—রজনী দিন। নিতাই-চরণে, যে করে আশ, বৃন্দাবন, ভার দাসের দাস।

( > ) আসাধারণ-শক্তি-ধর-সন্থ্যাগণ— দেশতাগণ, অথবা প্রীভগবানের অবতারগণ, সাধারণত গকলেই, চই একটি নিশেদ ক্রিয়ার দ্বারা. জন-সাধারণ কে—বিশ্বিত, বিমুগ্ন ও আকর্ষণ করিয়া থাকেন; কিন্তু আমার নিতাই চাঁদের সমন্ত স্বাভাবিক-রীতি-প্রকৃতিই— এমন মধুর, এমন স্থলর, এমন মনোধর, এমন প্রাণশার্শী—বে, তাহা দেখিয়া সাধু, অসাধু, ভও, পাষও সর্ব্ব প্রকৃতির পোক এবং বালবৃদ্ধ-শুনা-দকণ বয়সের নরনারীগণই, আপনাপন স্থভাব ভূণিয়া ভক্তি-রসার্দ্র ও প্রেমোন্মত্ত ইইতেছে! ভগবতার এমন হৃদর-গ্রাহী প্রমাণ আর, কি ইইতে পারে গ

আরোও দেণ ! পীতা, পুত্র. প্রাতানি— অন্তরঙ্গ- আত্মীবের-আসাধারণমহিমা— অন্ত শক্তি, অনোকীক-প্রীতিপূর্ণ-ভাব-ব্যবহারাদি— দর্শনে জীবের
অন্তর যে প্রকার আনন্দোল্লাসে- নত্ত হয়, প্রীনিতাইয়ের আচরিত দেণিয়া
তদপেক্ষাও সহস্রগুণ আনন্দে, নরনারীগণ— উন্মাদিত হইতেছে ! অতএব
নিতাইয়ের ন্তার, সর্বজীবের এমন আয়ীয়—এমন প্রাণের বস্তু সংসারে আর
নই !! ইহাও তদীয়, ভগবৎ-প্রকাশের উৎক্ষত্ত-পরিচয়— অল্রান্ত-প্রমাণ !

আরও দেখ;—একাধারে পেমের ও ভক্তির ''আশ্রর ও বিষয়'' হইয়।
ভূতলে—প্রেম-রাজ্যের স্থান্টি পূর্বক শ্রীমন্মহাপ্রভূর—জীবোদ্ধার-লীলাদর্শনে—আমার নিতাই চাঁদ; জানন্দে উল্লাসে, গৌরবে ও প্রেমে, এমনি পূর্ণ
হইরা উঠিয়াছেন যে, তাঁহার ভরে যেন পৃথিবী কাঁপিতেছে।!

ব্রজ-রস-২রে গভীর স্বরে—গ্রীগোর হরিকে "ভাইরা ভাইরা !'' বলিরা ডাকিতেছেন ও আপন—অভীপ্সিত-হঙ্কর-প্রির-কার্য্য—আশাডীত সাফল্যে

# ( ७)-- श्रीतांशह, धानिता

কাছে কাসু, খন খন---

পাওত যাওত.

ফিরি ফিরি বদন-নেহারি ? স্থান্থ-শানী, উগরে অমিয়-রাশি,

কি তোহে কহল পুছারি ?

সম্পাদন-কারী-প্রাতাকে, গোকে বেমন মহানদে "ভাইরা স্থামার" বিলয়া বলিহারি দের, তেমনি—স্থাদরের-বাদর-বর্ষণ করিতেছেন।

আবার পরমাদরের-পরম জেহের 'ভাই কানাই' জীবের জন্ম গৌর হইয়া কাঁদিয়া অবনী ভাসাইতেছে! ভূমে গড়াগড়ি দিতেছে ! দেখিয়া গৌর! গৌর! বলিতে বলিতে কাঁদিয়া অনায়ত হইতেছেন!

এই রূপে দিবা নিশি ভাইয়ার-ভাবে-ভোর হইয়া ও কাঁদিয়া আদার নিতাই চাঁদ, জগতের-পাপ-তাপ বিধৌত করিতেছেন !!

গীত রচরিতা, ঠাকুর বৃন্দাবন দাস বলিতেছেন এই সকল মহিনাস্থতব ছার।—যিনি, নিতাই চাঁদের শ্রীচরণে আশা ধরিয়া রহিবেন আমি তাঁহার দাসের অমুদাস।

- \* গৌরপদ-তরন্দিণীতে ষষ্ঠ ছত্তের শাঠ—'কাঁদে বা কি ভাবে রঙ্গনী দিন" পদ করতক্তে ইহার পরে ছইটি ছত্ত অধিক আছে যথা—''শ্রীমৃথ কমলে, সো ঋণ-গাঁথা, চর চর চুই নয়ন রাডা''।
- (৩) প্রাণ-প্রিরতমের-কথা আলোচনার নিমিত্ত, জীরাধার প্রাণ নিরস্তর আকুল! কোনও সধীর সহিত, ভঙ্গীমর-আলাপনে সে বাসনা-পূর্ণ করিতেছেন, যথা—সথি! কামু এত ঘন ঘন ওদিকে আসা যাওয়া করেন কেন? আর, আজ — ফিরিয়া ফিরিয়া তোমার বদন-নিরীক্ষণ করিতে করিতে—ও, বদন-মুধাকর হইতে—হাস্তামৃত উদ্গীরণ করিতে

সজনি ! কহ কিছু—বচন বিশেষ।

হেন অসুমানি চিতে, না জানি কাহার ভীতে,
আছ্য়ে পীরিতি-লব-লেশ ॥ গ্রু ॥

সহজে রিকি-রাজ, অলথিত সব কাজ,
অমুভবি-ওর না পাই !

যাহারে ইঙ্গিত করে, কুলশীল সব হরে,\*
ভাগ্যে ভাগ্যে আমরা এড়াই ॥

করিতে, তোমার সহিত কি আলাপ করিলেন? আমুপূর্ব্বিক আলাপ, প্রকাশ করিতে যদি তোমার লজ্জা সঙ্কোচ হয়, তবে বিশেষ কথাগুলিই বল!

স্থানু সাধার-মনোভাব বুঝিয়া, সথী হাসিতে লাগিলেন। প্রভাগেশন মতি প্রীমতী রাধা, তাহাতে অপ্রতিভ না হইয়া স-মিত বদনে কহিলেন, আমি কিরূপ অনুমান করিয়াছি শুনিবে ? আছা শুন—আমার মনে হয়, তোমরা কাহারও প্রতি—বহু-বরভ-কায়র, প্রীতির-লবলেশ-সঞ্চার হইয়াছে, কিন্তু স্থাবত:ই তিনি রসিক-চ্ডামণি—স্থতরাং তাহার সকল ব্যবহারই অলক্ষিত, কাজেই অনুভবের হায়া সম্যক্ ব্ঝিতে পারা যায় না । যাহা হউক,তোমা-দিগকে কোনও দোষ দিবার কারণ নাই । এই যাহকর-নাগরের নয়নেদিতে কাহারও কুলশীল থাকিতে পারে না । এই যে—আমরাই কন্ত তাগ্যে কোনও রূপে বাঁচিয়া আছি । তথাপি একই নগরে বাস কবি বলিয়া এবং এদিকে সত্ত তাঁহার গতিবিধি দেখিয়া, প্রোণ কম্পিত হয় !

গীত-রচয়িতা জ্ঞান দাস, সম্বোধিতা-স্থীর ভাবাবেশে উত্তর দিতেছেন,

পদ কলতক এবং বঙ্গ-বাসীর সঙ্গীত-দার-সংগ্রহে পাঠান্তর—

"বাহার নম্বন-শবে, জাতি কুল শীল হবে"।

একই নগরে বৈদে, সভত এ দিকে আইনে,
দেখি শুনি কাঁপরে পরাণ।
ভানি দাদেতে বলে, তুমি কহ কোন্ছলে,\*
করিতে না পারি অমুমান!

( 8 )-- तृन्तार, धानित ।

ণ্রসণী-জনস-ধনি, তোর ! সব-জন ''কাফু কাফু'' করি, ভাবইঞ্, সো-জুয়া-ভাবে বিভোর ॥ এছ ॥

"ज्ञि (कान् ছाल कि विनाउइ" जञ्मात्न वृक्षा योत्र ना ; थ्लिबा, नवन मत्न यत्नव कथा ना कहित्न, इन-कथात्र कल इव ना ।

(৪) এই সমরে-বিরহ-বিধ্র-ক্লফের নিকট হইতে, রুলা আসিরা শ্রীরাধাকে কহিতেছেনঃ—রাধে! তোমারই নারী-জন্ম সার্থক! (ধনি-ধক্ত) বে কামুর জন্ম সকলে আকুল; সেই প্রার্থনীয়-ধন, তোমার ভাবে-বিভোর হুইয়া রহিরাছেন।

কি আশ্চর্য্য-ব্যাপার ! চাতকের পানে চাহিতে চাহিতে—মেন, তৃষ্ণাতুর ! চকোরের পানে—চাঁদের অনিমিথ-দৃষ্টি ! লতাকে অবলম্বন করণার্থ—ভরুবর ব্যাকুলিত !! কাত্মর আচরিতে—বস্তুতঃই আমার মনে এইরূপ ধাঁধাঁ। লাগিতেছে।

 <sup>&</sup>quot;আন দাস, ভনি বলে, কহ দেখি কোন ছলে" পদকরতকর পাঠ।
 † পদ-করতকতে "ধনি ধনি" এবং পদামৃত সমুদ্রে "ফুলরি !" সংখাধনে
 এ গীতের আরম্ভ। ‡ করতকর পাঠাতর—এ্ররে।

চাতক-চাহি, তিয়াষল-অস্থৃদ ! চকোর-চাহি রস্ত্, চন্দ !
তরু,—লতিকা-অবলম্বন-কারী ! মঝু-মনে, লাগল ধন্দ ! ।
"হসইতে-কব তুত্, দশন-দেখাওলি, করে-কর-জোরহি-মোর,
হাদয়-খোলি তুত্, দিঠি-পশারলি# তাহে-হেরি, সথী-করু
কোর ।

কেশ-পশারি—যুবস্তু জুজ্ আছলি, উর-পর-অম্বর-আধা, সো সব-সঙ্রি; কামু, ভেল আকুল, কহ ধনি! কেমন সমাধা ?

সকল বিশেষ, কহন্ম ভোহে, হুন্দরি ! জানি-ভুক্ত করবি বিধান, পরাণ-পুতলী-ভুক্ত, সো-শুন-কলেবর ! কবি-বিদ্যাপতি-ভাগ ।

তুমি, কোন দিন—হাসিতে হাসিতে—তাহাকে, দশন দেথাইয়াছিলে, কোন্ দিন—উভয়-হতাগ্র-সমিলিত করিয়। অল-মোড়া দিয়াছিলে, কোন্ দিন বক্ষের বসনোদ্বাটন কালে—তাঁহার দৃষ্টি-আকর্ষণ করিয়াছিলে;কথন—তাহার পানে চাহিয়া—সধীকে আলিঙ্গন করিয়াছিলে। আর কথন—তুমি, কেশ-ক্লাপ-বিস্তার করিয়া,অর্জোস্ক্ত-বক্ষে,বসিয়াছিলে (উর—বক্ষ। অয়য়—বল্ধ) সেই সকল ঘটনা, স্বরণ করিয়া করিয়া—কান্থ একেবারে আকুল হইয়া উঠিয়াছেন। এথন, ইহায় সমাধান কি রূপে হর বল? তাহার আয়পুর্ব্বিক অবস্থা, মুধে প্রকাশ করিয়া বলা অসম্ভব উপস্ক্ত-ব্যবস্থার-নিষ্ধিতে, বিশেষ কথাগুলি-সংক্ষেণে বলিলাম। ফলতঃ প্রাণ-প্রতিমা-ক্লণিন-তৃমি ব্যতিরেকে, কান্থ—এথন শৃক্তদেহ। অর্থাৎ মৃতবং! (শ্ন—শৃক্ত)।

পদামৃত সমুদ্রে এগীতের ভণিতাটি এইরূপ—তাকর অন্তর অনই নিরন্তর

<sup>\*</sup> মনবিতে দিঠি কব, জনবে পদারলি"—কল্লভন্তর পাঠ। ঐ গ্রন্থের আরও রুথা পাঠান্তর আছে। পদায়ত সমুদ্রে ৬।৭ পংক্তি নাই।

## (৫) पाणावती-मृत्रजान।

হস্ত ন কিমু মন্থরয়সি সম্ভত মভিজ্ঞ : ?
দস্ত-রুচি রস্তরয়তি—সন্তমস মনরং ॥১॥
রাধে ! পথি-মুঞ্-সন্তম মভিসারে,
চারয়-চরণামুরুহে—ধীরং হাকুমারে ॥ গুল ॥

বিদ্যাপতি ভালে জান। কিঞ্চিতকাল, কলপ করি মানই, গোবিন্দ দাস

(৫) সধীর মুধে, জীবিত-নাধের-প্রেম-বৈকল্য-শ্রবণে, রুঞ্চ-প্রাণা ধনী, 'দির থাকিতে পারিবেন কেন ? সধীর সহিত পুন: পুন: কাস্তের কথা সম্ভাষণ করিতে করিতে—তথনি, সবেগে-অভিসারে চলিলেন। যাইতে যাইতে অনিষ্টাশকিনী-সধী—সকোতৃকে কহিতেছেন যথা:—

রাধে! অভি-জন্ন কি হ্রাস করিবে না? হার হার! কথার সহিত দখন-কাস্তি-প্রকটিত হইরা বে, খনান্ধকার-অন্তরিত হইরা যাইতেছে !! লোক-লোচনের-গোচরীভূতা হইরা কি বিপদ ঘটাইবি ?

আর, অভিসারের-পথে, এত সৎর-গমনও সমুচিত নহে। ফ্রভগতি ত্যাগ কর। কমন হইতেও অকোমন-চরণ-যুগল, ধীরে পরিচালন কর। (মৃং প্রস্তরাদিতে, বাজিলে বেমন—তোমার চরণে ও আমাদের প্রাণে বাধা জানিবে,তেমনি—অভিসারে বিদ্ব বিলম্ব সংঘটনও বিচিত্র নহে; ইহাই ভাষার্থ) সধী আরও বলিতেছেন—আর ভোমার নথ-জ্যোতিতেও আঁধার বিদ্বিত হইতেছে। অতএব ঘন-বর্থ-অতুলনীর—কুন্তল-নিচরের প্রান্তভাগ বিস্তার ঘারা, নথ-কান্তি-আছোদন করিরা—বিনষ্ট-অন্ধকারকে পুনর্জীবিত কর (ধ্বাস্ত — অন্ধকার) তাহা হইলে, আর কোনও আশহার সন্তাবনা থাকিবে না। অতএব এইরপ করিরা সেই—সনাতন-ক্ষে-সমর্পিত-মনা তুমি—অবাধে

সন্তস্মুখন-বর্ণ মতুল-কৃষ্ণল-নিচরান্তং ধ্বান্তং ভবজীবভূ, নধ-কান্তিভি রভিশান্তং। সা-সনাভন-মানগাদ্য যান্তি গত-শঙ্কং অঙ্গীকৃষ্ণ মঞ্-কৃঞ্জ-বস্তেরলমঙ্কং।

মঞ্-কৃঞ্জ মধ্যে গমন কর। (জগং—জবাধে। জঙ্গং—মধ্য। জঙ্গীকুরু— প্রোপ্ত হও)।

এইটি শ্রীল, রূপ গোস্থামী কৃত গীতাবলীর ১০ম সংখ্যক গীত। স্থারসিক পণ্ডিত শ্রীমদ্ বলদেব বিদ্যাভূষণ কৃত, ইহার টীকাটি এইরূপ—হে রাখে ! স্থং সন্থত মভিজ্ঞলং সংভাষনং কিমুন মন্থ্রয়সি—ননিবর্ত্তগ্লি ?

তত্র কিং--দৃষণমিতিচেৎ তত্রাহ---যত্তব দন্ত-কচি দশন-কান্তি রভিজয় প্রাকটা সভী, জনরং---নিবিঢ়ং সন্তমসং-ধ্বান্তং অন্তর্য়তি---দৃরীকরোতি (অব্তরসমন্ধ্রমসং ধ্বান্ত মন্ধকারং চেতি হ্লায়ুধ)॥১॥

জভি-সারে-পথি ভূরি-সম্ভম মতিম্বরাং মুঞ; স্থকুমারে-কোমলে-চরপাশ্-ফুছে ধীরং যথাস্থাতথা চারয়-নিক্ষিপ॥ গ্রন্ধ।

নমু-দস্ত-কান্তি ময়া পিছিতা। নথ-কান্তি পিধানে কোত্যুপার ? ইতি চেন্তন্তাহ:—অতুলানামতিদীর্থানাং কুন্তন্-নিচয়ান্তং—প্রান্তং নথোপরি সংতর্—বিস্তারর। কীদৃশং ঘল-বর্গং মেঘাভং। তেন কিং ভাদিতি চেৎ তত্তাহ:—তব-নথকান্তিভি রভিশান্তং বিনষ্টং-ধ্বান্তং-জীবতু। পুনঃ স্বরূপ লভতাং॥ ২॥

ততঃ কিং ভাবি ? ততাহ :—সনাতনে-ক্বঞে, মানসং বজাঃ সা, ক্রফৈক-চিন্তাবং, নিঃশঙ্কং যান্তি—মঞ্জু-কুঞ্জ-বসতে রক্কং—মধ্যমঙ্গীকুক্ক—প্রাপ্নোহি। পক্ষে—সনাতনে ভরামি স্বভক্তে মানসং বজাঃ সতি, ব্যস্ত্যতে।

## (७)—रभित्री।

কেলী-বিশিনং প্রবিসতি রাধা, প্রতিপদ সম্দিত, মনসিজ-বাধা। কলরতি নরনং দিশি দিশি বলিতং, প্রজমিব মৃত্যাক্ষত-চলিতং। বিনিদ্ধতি, মৃত্-মন্থর-পাদং রচন্ধতি, কুঞ্জর-গতি মহুবাদং। জনরতু, ক্স-গজাধিপ মুদিতং, রামানন্দ রার—কবি-ভণিতং।

(৩) এক্সণে—প্রেমমন্ত্রী, অপেক্ষাক্তত ধীর-বেগে চলিতেছেন। দেখ,—
প্রতিপদ-ক্ষেপে কন্দর্প-বেগ—বিবর্দ্ধিত হইরা তাহার গতিতে বাধা-প্রদান
করিতেছে!! মৃত্পবন-সঞ্চালিত-কমল, বেমন দিকে দিকে পরিচালিত হর,
অনিষ্টাশকাকুলিতভাঁহার নয়ন-যুগল ঠিক্ দেইরপ চাঞ্চল্য প্রাপ্ত হইরাছে।
অর্থাৎ পুনঃ পুনঃ চতুর্দিকে চাহিতে চাহিতে চলিতেছেন।

এই রূপ—মন্ত-মাতকের গতি-বিড়ম্বি-মনোমদ–মন্থর-গমনে চলিতে-চলিতে অভিসারিণী সুন্দরী কেগী-কুঞ্জে-উপনীত হইলেন।

এ গীতের রচরিতা—শ্রীমন্মহাপ্রভূর—পরমান্তরল-প্রির-পার্যন শ্রীল-রামা
নন্দ রার। তিনি উৎকলাধীশ্বর মহারাজ গজপতি প্রতাপরুদ্রের আশ্রিত
ছিলেন। এ গীতিটি—তৎকৃত্ত—জগরাথ বরত নাটকের। উৎকলাধীপের
আগ্রহে তিনি উক্ত নাটকথানি রচনা করেন। তাহাতেই—গীতের ভণিতার
বলিরাছেন, আমার বিরচিত এ গীতে-গজপতিরুদ্র-নরপতির আনন্দ উৎপাদন
করক। এ গীতিটি-জগরাথবরত নাটকের প্রথমাক্ষস্থ—০৭ সংখ্যক শ্লোক।
ইহার অহ্ম-মুখ-ব্যাখ্যা—নিম্নে প্রদন্ত হইল। উক্ত নাটকে ও পদকরতরুতে "কলম্বতি নয়নং" ইতি পদে এ গীতের আরম্ভ। ব্যাখা যথা—
রাধা, কেলী-বিশিনং প্রবিসতি। কিছুতা ? প্রতিপদেত্যাদি। প্রনঃ
কিছুতা ? মৃত্ মারুত-চলিতং প্রজমিব—দিশি-দিশি-বলিতং-নয়নং কলম্বতি;
মৃত্-মহ্ম-পানং—স্তন-নিতহ ভারেন হতি শেষঃ—বিনদ্র্যতি-বিক্তরতি সতি।
কুঞ্ব-গতি অন্ত-গ্রুপতৌ—বাদং কলম্বং বচয়তি—করোতি। (অত্র বাতি

## (৭)— শ্রীরাধাহ (বাসক-সজ্জা) কল্যাণি।

কুস্মাবলীভি রূপক্রতরং, মাল্যঞ্চামল, মণিসর-করং। প্রিরুস্থি। কেলী-পরিচ্ছদ-পুঞ্জং, উপক্রর-সম্বর মধিকুঞ্জং। ধ্রু॥ মণি-সম্পূট মুপনর তাদ্লং,
শরনাঞ্লমপি—পীত-ত্কুলং।
বিদ্ধি সমাগত মপ্রতিবন্ধং,
মাধ্বমাশু—সনাতন-সন্ধং।

বেকালছার জ্ঞের) রামানন্দ রার কবি গদিতং—কথিতং—ইদং গীতং, কৃদ্র গঞ্চাধীপস্ত মোদ মানন্দ জনমতু—প্রাছর্ভাবয়তৃ।

(৭) প্রাণ-কাস্তের স্থানিশ্চত-আগমনাকাজ্জার-সমূলসিতা—শ্রীরাধা; সঙ্কেত-কুঞ্জে সমাগতা হইরা—উচ্ছসিত-সাধে-সধীকে কহিতেছেন যণা:— সধি! শীঘ্র কুম্মাবলীর দারা স্থােভিত কেলী-তর (শ্যা) রচনা কর এবং অমল-মণি-মালার স্তান্ব—ফুলের মালা গাঁথিয়া, তাহাতে রাথ।

্মণি-মালার স্থায় ফুলের মালা—রচনা করিতে হইলে স্ট্নোর্থ-কণি-কার:ছারা নির্মাণের প্রয়োজন। এ সাথের উদ্দেশ্ত বোধ হর এই যে—রসিক শেধর-নাগরেক্সের শ্রীক্ষকে প্রদন্ত হওয়ার পরে—মালার-পুক্স-কলিকাগুলি স্বত: প্রস্ফৃতিত হইয়া নবীন-সৌরভ উদগীরণ করতঃ, কলাগুরু-কান্তের জানন্দ বর্দ্ধন করিবে)।

আর—সম্বর হইরা, প্রচ্র-পরিমাণে বিলাসের উপকরণ (কেলী-পরিচ্ছদ)
অর্থাৎ—চন্দন, তাম্বল, পৃশাকন্দ্ক, মধু-চসক মোদকাদি—কুঞ্জের অত্যস্তরে
রাধ।

তাৰ্ল-বীটকাগুলি, মণি-সম্পূটে—রক্ষা কর (মণি-নির্দ্মিত কোটাতে তাৰ্ল রাধার উদ্দেশ্র বোধ হয় এই—উভয়ের, রসাবিষ্ট-রূপের-প্রতিবিদ্ব মণি সম্পূটে একত্রে-প্রতিবিদ্বিত হইলে, রসানন্দ—রল-কোতৃকাদি-বিবর্দ্ধিত হইবে)

আর শ্ন্যা-প্রান্তে একথানি পীত-বসন রাথিরা দাও। (পীত-বসন রাথার উদ্দেশ্ত বোধ হর এই বে, নবীন মাল্য বসনাদি ছারা প্রাণকান্তকে, জাপন কাতে মনের সাধে সাজাইবেন)।

## (৮)--धानिम।

অঙ্গনে আওব, যব, রসিরা, পালটি চলব হাম, ঈষত-হসিয়া। আবেশে, আচর পিয়-ধরবে, যাওব হাম, যতন বহু করবে! কাচুয়া-ধরব যব, হঠিয়া, করে কর বাবর কুটিল-আঁধ-দিঠিয়া। রঙস---মাঙ্গব পির, যবহি, মুখ,মোড়ি, বিহসি-বলব, নহি-তবহি।

স্থি ! জানতো সনাতন-সন্ধ অর্থাৎ—অটল-প্রতিজ্ঞ-মাধ্ব,বিদ্ধ-বাধা-বিজ্ঞনী, অতএব মনেকর—তিনি সমাগত প্রায় । আর বিলম্বের সময় নাই!

এইটি—শ্রীমজপগোস্বামী-কৃত গীতাবলী-গ্রন্থের ২৬শ সংখ্যক গীত।
শ্রীল বলদেব বিদঃভিষণ-কৃত ইহার টীকা এইরূপ—উপাস্কক—রচর। অমলো
যো মণিগর—শুৎকরং—তৎসদৃশং মাল্যং পুস্প-শ্রন্থং চোপকুরু। মাল্যং
চেদং পুস্প-কোরক-নির্দ্ধিতঃ ব্যঞ্জিতং। ১।

হে প্রিয়স্থি! কেলী-কন্দ্ক, মধু চ্বক—মোদক, প্রভৃতি মুপক্রর অধি কুঞ্জ মিতি—বিভক্তার্থে—অব্যন্ধীভাব, কুঞ্জেস্থাপয়েত্যর্থ। ধ্ব।

মণীত্যগৃঢ়ার্থ: । ২। শনৈ:-শনৈ:রম্বরামী িচেত্ততাহ:—অপ্রতি
বিদ্ধ:—বিদ্ধ-শূন্যং-মাধব মাগতমেববিদ্ধি। সনাতনী-নিত্যা, সন্ধা-প্রতিজ্ঞাধস্ততং।
পক্ষে—সনাতনে সন্ধা—সাহিত্য প্রতিজ্ঞা বস্তু তমিতি চার্থ:। ৩।

(৮) বিনোদিনী জ্রীরাধা, আজ মনের সাধে ও হৃদরের আহ্লাদে মনে মনে এইরূপ কত যুক্তি,—কত কল্পনা করিতেছেন। যথা,—

রিসিক-মণি, আজ কুঞ্জাঙ্গনে অসিবামাত্র—আমি, ঈবৎ-হাস্ত করিয়া ফিরিয়া চলিব। তথন তিনি রুসাবিষ্ট হইয়া—ক্ষামার ক্লাচলে ধরিবেন। তাহাতেও আমি চলিয়া যাইব। তদ্পুটি আমাকে রাখিবার নিমিত রুসিকেক্স বছ যত্ন করিবেন। তৎপরে আমার কাঁচলীতে হস্তার্পণ করিবেন, তথন আমি আধ-নয়নে কুটিল-দুগ্ভঙ্গী করিয়া, নিজ করে—তাহার কর-বারণ করিব।

আমার করের ও কাঁচলীর স্পর্ণে—তাহার, বিশেষ-রসভাবের উদয়

ইইবে এবং কেলী-বিলাসের প্রার্থনা করিবেন। তথন আমি মুখ ফিরাইর;

( ও রস-লাগল-রমণী, কত কত যুক্তি, মনহি অনুমানি ) সহজে পুরুষ সোই ভমরা, মুখ-কমল,নধু, শির্ব হামারা। তৈখনে, হরব—গেরানে। বিদ্যাপতি কহে, ধনি-ভুদা-ধেরানে

# (৯)—অথোৎকষ্ঠিতা,—আসাবরী।

কিন্ চক্রাবলী রনর-গভীরা, অরুণদম্ং রতি-সীর মধীরা ? অতি-চিব্ন মজনি-রজণী রতি কালী সঙ্গমবিন্দত নহি, বনমালী॥ ঞা॥

বলিব—'না'! মাধৰ— কথনও এ নিষেধে নিবারিত হইবেন না। তিনি পুরুষ-ভ্রমরা; অমনি—দীৎকার পূর্বেক (ভোঁ করিয়া?) আমার মুথ-কমলের মধু-পানে প্রবৃত্ত হইবেন; তথন আনন্দাতিশব্যে আমার জ্ঞানলোপ হইবে!

স্থীর ভাবাবিষ্ট পদকর্ত্তা কহিতেছেন—রাধে! তোমার ধ্যানটি—ধক্ত!!

এন্থলে প্রশ্ন হইতে পারে শ্রীরাধার মনের কথা ইনি কি করিয়া ব্ঝিলেন?
উদ্ভর:—স্থীগণের স্তায় স্থীভাবাশ্রিত-ভক্তগণের হৃদয়ে—যুগলের সকল
আকাজ্রলা—সকল মনোভাবই প্রতিফলিত হইয়া থাকে। (বিশারদের বিদ্যাণতিতে শেষ ছত্রটি এইরূপ:—"বিদ্যাপতি কছ ধনী তুয়া জীবনে"। পদান্ত সমুদ্রে, ছত্রের শেষার্দ্ধ—'সফল তুয়া জীবনে')

আমাদের আদর্শ-হস্ত-লিপিন্ধরে ৬ গ পংক্তিটি এইরপ—"তব হাম কতন বতন নহি করবে" অর্থাসঙ্গতি হেতু উহা লিপির প্রমাদবোধে আমরা পদাম্ত-সম্দ্রের সমীচীন-পাঠ গ্রহণ করিয়াছি। এ গীতের ৩য় ও ৪র্থ পংক্তি, অফ্ল কোনও গ্রন্থে দৃষ্ট হয় না এবং অসঙ্গতি-ছ্ট। প্রক্রিপ্ত-বোধে আমারা উহা বন্ধনীর অন্তর্ভুত করিয়া দিলাম।

<sup>(</sup>৯) শ্রীক্লফের, কুঞ্জাগমনের সম্ভাবিত সমর, অতীত হইরা গিরাছে। তাঁহার আগমনের সম্ভাবনা-স্চক কোনও নিদর্শন না দেথিয়া—উৎক্ষিতা শ্রীরাধা, চিত্ত-সংক্ষোতে আপন মনে ভাবিতেছেন, যথা—এখনও প্রিরতম্

কিমিহ জনে খুভ, পদ্ধ-বিপাকে, বিশ্বভি রস্য বভূব, বরাকে ? কিমৃত সনাতন-তহু রদ্বিটং, রণ মারভত হুরারীভিরিটং।

আসিরা মিলিলেন না, কারণ কি ? যুদ্ধে-বৈমুখ্য—বীরের ধর্ম-বিরুদ্ধ। ক্লক্ষ্ণ রতি-বীর। তবে ুকি নিরস্তর-তৎসঙ্গ-লোলুপা, অধীরা, অতি-প্রাগল্ভা, নীতি-বিহীনা চন্ত্রাবদী---ভাঁহাকে পথে পাইয়া রতি-রণার্থ রুদ্ধ করিল ?

প্রগাঢ়-ভমসাবৃতা-রজনী, বছক্ষণ যাবৎ সমাগতা। তথাপি আমার বনমানী
—নিজ-বক্ষয়-বন-মালার সহিত—আমার প্রাণকে—আনন্দ-তরক্ষে নাচাইতে
নাচাইতে এখনও আসিরা মিলিত হইলেন না। হায়। আমার এ ত্থে কে
বুঝিবে ?

জ্ঞাবা—বোধ দয় আমার কোনও পাপের-বিপাক-দশা উপস্থিত হটয়াছে।
তাহাতেই প্রাণ-প্রিয়তম, এ-বরাকীকে বিশ্বত হটয়া গিরাছেন!!—না, তাহা
অসম্ভব! আমি, সে-নারী-মনোহারী-রসিক-শেগরের, যোগ্যা বা লোভনীয়া
না হটকেও আমার প্রাণ মন ত তদর্পিত! এ হেন প্রেমননারক, প্রেমভিথারিণীকে কথনও বিশ্বত হইতে পারেন না! বোধ হয়—সনাতন-তত্ব
(কাম্) কোনও অস্থরের সহিত খোরতর যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইয়াছেন; যেহেত্
যুদ্ধ স্বাধিহাতেই বীরের বাঞ্কীয় হয়। (বরাকী—তৃচ্ছা)।

এটি শ্রীমন্ত্রপ গোস্থামি-ক্রত গীতাবলীর ২৭তি সংখ্যক, গীতি। শ্রীমদ্ বল-দেব বিদ্যাভ্যণ-ক্রত ইহার টাকা এইরূপ:—অনয়গণ্ডীরাতিপ্রগল্ভা॥ ১॥ রন্ধনী--নিশা, অতিচির্মতিকালী -অতিশ্রামাহজনি—জাতাভ্ছ। তথাপি বন-মাণী মে সঙ্গং হি যতো নাবিন্দত॥ জ্ঞা হেছস্তরং চিস্তর্যতি। ইহ-সঙ্গকণে অভ্য বনমালিনঃ কিং বিশ্বতি বর্ভ্ব ? বিশ্বতো হেছুং দর্শয়ন্ বিশিন্তি। কিদ্পেন্নিন্ জনে ? ধুতঃ পক্স-পাপন্থ বিপাকঃ ফলং বেন তন্মিন্ (পর্টো কর্দমে পাপে—ইতি বিশ্বলোচনকারঃ) অভো বরাকে তৃষ্টে ॥ মির্ক্বির্মানসৌ, যুবতি রন্ধং প্রেমবতীং মাং কর্থং বিশ্বরেদিণ্ডি—ভেন্তন্তরং চিস্তর্যতি। সনাত্র-ভত্ব সো বনমালী স্থ্রারিতি দ্নিবৈঃ শহ, জলবিত্তঃ—

## ( >• )---গান্ধার।

(मश्रम्भ । अप्रेमी-(का ताकि, आध-तक्षमी, विश्व-माकि। मण-मिण-अस्मिम, (ज्ला, आध-प्रान्म-जेहे-र्जल। अवहित मा मिलल (तः। विश्वि, रमारत-विश्वनात, कारह वनायमू (वण! विश्विन-कारू (का मर-मण,!!

কাজ কো, নহ-ইছ-গারি,
ধনী যনি হয়ে কুলনানী।
কৈছনে ধরব পরাণ!
কো এত সচে-ফুল-নাণ!!
গোবিদ্দ দাস বব, জান
অবহি মিলাওব কাণ!

মহান্তং রণং কিমৃতারভত। রণং কীদৃশং ? ওস্থাপি বীরস্রেষ্টং বাঞ্চনীর মিতি। সনাতনত্ত প্রেষ্ঠা তমু র্যস্ত-স, ইতি চার্থ, পক্ষে॥ ৩॥

( > • ) ক্রমে, উংকণ্ঠা অত্যন্ত বাড়িরা উঠিল। ভগ্ন-হাদয়া-রাধা, সধীকে কহিতেছেন। ধধা—

পথি ! আৰু ক্লফাষ্টমীর রাত্রি। নিশ্চরই অর্ধ-রন্ধনী গত হইরাছে। কারণ—দশদিক অরুণিত করিয়া রন্ধনী-পতি—অর্ধ-উদিত। (কিম্বা অষ্টমীর অর্ধ-চক্র উদিত হইরাছে)।

হায়রে ৷ এখনও হবির সাকাৎ-লাভ হইল না ৷! আজ, বিধাতা আমাকে বঞ্চিত করিল দেখিতেছি ৷ স্থিরে ৷ এত যত্ন করিয়া—অঙ্গের এই—বেশ, কেন রচনা করিলাম ? আমার অদৃষ্ট-দোষে কি—আজ কাম্র ভার সত্য-এত প্রেমিকের স্ক্রেড-স্থাদিও বুখা হইল ?

বৃথিণাদ "কোনও ধনীই বেন কৃত-বধু না হয়" এ কথা কাছার ও সম্বন্ধেই গালি নহে। উহা-বড়-সম-বেছনা-ময় উক্তি।

## ( ১১ ) कारमाम।

কাকুকোসন্দেশে, বেশ-বনি-আওকু, সঙ্কেত-কেলা-নিক্ঞে, মাধবী-পরিমলে-ভরি, তকু-জারণ, ফুকরই-মধুকর-পুঞ্জে!

স্থি! এখন কি করিয়া প্রাণ ধারণ করিব ? কন্দর্পের এত প্রতাপ কি করিয়া সহিব ?

সন্মোধিতা-স্থীর ভাবাবিষ্ট শীতকর্দ্তা-গোবিন্দ দাস উত্তর দিতেছেন যথন ভোমার "এমন-মনোবেদনা" জানিলাম—এথনি কান্তকে আনিয়া মিলাইতেছি। পদামূত সমুদ্রে—শেষ ছত্রটী এইরূপ—"তবজানি :মিলব কান"।

(১১) এক্ষণে—উৎকণ্ঠা, আশকা ও আক্ষেপের সহিত প্রণর-কোপও সন্মিলিত হইল। প্রেমময়ীর মনে হইল—এসব বিড়ম্বনা-সেই দারণ-কান্তের স্মেছাকৃত ? অতএব আবার স্থীকে বলিতেছেনঃ—

সধি! তাহারই সঙ্কেত-সংবাদ-পাইরা এই-যন্ত্রনা-দারক-বেশ রচনা করিয়াছি এবং এই--মাধ্বীর-কেলী-কুঞ্জে--আসিয়াছি! এখন, শঠের কথার আস্থা-স্থাপনের ফল, ফলিতেছে! মাধ্বী কুস্থমের পরিমলে-ভরিয়া জর্জারিত এবং মধুকর-নিকরের গুঞ্জনে জালাতন হইতেছি।

স্থি! আজ দারুণ-কাণ, আসিয়া মিলিল না; তথাপি আমার পোড়া-প্রাণ বাহির হইতেছে না! সকল-বিড়ম্বনার-নিদান--নিদারুণ-প্রেম, আমার নিশাজ-চিত্তকে, অববোধ করিয়া রাধার--মৃত্যুও ঘটিতেছে না!!

হার ! প্রথমান্তরাগের সময়ে—কামুর প্রেম-মাথা-মধুর-বচনামৃতে-সিঞ্চিত ইইরা—কামার সরণ-ক্ষর-থানি—গলিয়া গিয়াছিল ! তাহাতেই তাহার নিকটে দেহ, মন, এমন কি পরিজনের গৌরৰ পর্যন্ত-বিক্রের করিয়া ছিলাম ! শুন সন্ধনি ! আজু না মিলল দারুণ-কান,
নিলাজ-চিত, পীরিতি অসু রোধত, তে-নাহি-যাত পরাণ । প্রনাং
কামু-কো বচন— আমিয়া-রস-সেচনে, বেচমু-কুমু মন জাতি,
নিজ-কুল-দূষণ, ভূষণ করি মানমু, তে-ভেল-এছন-সাণি !
হিস-কর-কীরণ-গমন-অব-রোধল, #মন্দির-চলত সন্দেহ,
গোবিন্দ দাস, পাকহই, শুন সুন্দরি ! কামু কো এ ছন লেহ

বাহা কুলবতীর নিজের ও গুরু-কুলের—সন্ধানের ও ধর্মের-বিনাশক-ব্যবহার; তাহাই ভ্রণরূপে আচরণ করিয়াছিলাম !! স্থি! সেই-নিমিন্তই আমার, এমন শোচনীয় শান্তি হইল !! ( এছন—এইরপ । সাথি—সান্তি )।

এখন দেখিতেছি—নির্ব্বিল্পে, গৃহে যাইতে পারিব কি না তাহাতে ও সন্দেহ! কারণ তামদী-নিশির যোগ্য-বেশে, অভিসারে আসিয়াছিলাম। অধুনা—জোৎসায়-জগৎ-আলোকিত! কাজেই গমনের অবরোধ ঘটিরা উঠিয়াছে।

সংখাধিতা সধীর ভাবাবিষ্ট — গীতকর্ত্তা উত্তর দিতেছেন — সথি ! কাসুর স্নেহের অর্থাৎ প্রীতির প্রকৃতিই এইরূপ ( এছন — এইরূপ । নেহ — স্বেহ )। প্রীতির চরম-পরিণতি-প্রদানের পর, সন্মিলনানন্দের-অবধি, প্রদান করেন ! অভএব ধৈর্য্য ধরিরা কিছুক্ষণ — অপেক্ষা কর । আমি এখনি সংবাদ লইরা আসিতেছি এই বলিয়া সথী প্রীকৃষ্ণের নিকটে চলিলেন।

পদামৃত সমৃত্রের সহিত স্থানে স্থানে পাঠের মনৈক্য আছে বথা—

• কি কল চলবহু গেহ। † যাই সতি জানউ—কামুকি তেজল নব লেছ?
পদক্রতক্তে ও ঐ সকল পাঠই বর্ণা শুদ্ধির সহিত বর্ত্তমান!

#### ( ১২ ) বরাড়ি।

পশ্रতি, দিশি-দিশি রহ সি-ভবস্তং पদধর-মধুর-মধুনি, পীবস্তং । ১। নাথ হরে ! সীদতি রাধা, বাস-গৃহে ॥ঞ্জ ॥

- (১২) শ্রীক্তফের নিকটে উপস্থিত হইরা সথী, এই রূপে শ্রীরাধার-বিরহ্-ছঃথ বলিতে লাগিলেন। বথাঃ—প্রিশ্ব-সথী রাধা, তাহার-অধর-পানে স্থানিপুণ–তোমাকে, কুঞ্জে না দেখিয়া ত্বশন্ধ-চিত্তে সকল দিকে কেবল তোমার ক্রিত-মূর্ত্তি-দর্শন করিতেছে!
- ( শ্রীক্বফই, রাধার স্থথ ছঃখ,আর্তি-আনন্দাদির কর্তা—এই ভাবোদ্রেকার্থ 'নাথ' শব্দ প্রয়োগ করিয়া এবং তিনিই রাধার—প্রাণ, মন, লজ্জা, ধৈগ্যাদির হরণকারী—এই-ভাব উদ্দীপনের নিমিত্ত 'হরি' শব্দ ব্যবহার করিয়া) স্থী আরও কহিলেন নাথ-হরে ! তোমার রাধা লতাগৃহে---অতি-আকুলিতা হইয়া অবস্থান করিতেছে!

প্রিয়-স্থী, তোমার নিকটে অভিসারিণী হইয়া আসিবার উৎসাহে—ছর্বল বেছে, যেমন কয়েকপদ অগ্রসর হইতেছে—অমনি, দেহ-ভার বহনে অসমর্থ হেত্ব ভূতলে পড়িয়া যাইতেছে!!

এরপ হংসহ-বিকারে প্রাণ-রক্ষা অসম্ভব। স্থলর-মূণাল (বিশদ-বিশ) ও নব-পরবের-দারা-স্নির্মিত-বলয়, পরিধান পূর্বক—তোমার মূণাল-ভূজের-বেষ্টনাবেশেও কর-কিসলয়ের—স্থশপশান্তভবে, এ যাবৎ জীবিতা আছে। তোমার রতি-কলারসে এইরূপ আবিষ্ট না হইলে, জানিনা আজ কি বিপদ ঘটিত!!

তন্মরতার আতিশয়ে উন্মাদিনীর স্থায় হইরা কখনও ভাবিতেছে "আমিই ক্বফ্র" এবং এইরূপ ভাবাবেশে—বর্হাগুঞ্জাদি-বারা তোমার বেশাস্ক্রপ নিজ বেশ রচনা করতঃ—বারংবার তাহা অবলেঃকন করিতেছে !

কিন্নৎকণপরে সে আবেশের অবসান হইতেছে, আর শোকাকুল-কঠে— কাতর-বচনে, পুনঃ পুনঃ স্থীগণকে জিজ্ঞাসা করিতেছে:—-স্থি! আমার ধৈর্য্য-হারী-হরি সন্তাপ-হারী,—হইয়া আজ অভিসারে-স্থর হইতেছেন না কেন? ম্বদ্ভি সরন-রভসেন-বশস্তি। পত্তি পদানি-কিম্মস্তি চলন্তি॥৩॥ ম্বরিত মুপৈতি ন কথ মভি সারং ? হরি রিভি বদ্তি, সুখী মুফু বারং।৬ প্লিয়তি, চুম্বতি, জল ধর-করং
"হরি রূপ গত" ইতি-তিমিরমনরং।৭। বিহিত বিশদ-বিগ-কিপলয়-বলরা, জীবতি, পরমিহ-তব-রতি-কলয়া॥৪॥

আবার অত্যাবেশ বশত: মেঘবৎ-ঘন-অন্ধকার-পুঞ্জ-দর্শনে, তোমার আগ-মন মনে করিয়া পাগলিনীর স্থান-সেই তিমির-নিচরকে আলিক্ষন ও চুম্বন করিতেছে!

তৎপরেই-—বাহুক্ট্ হইতেছে, আর তোমার অনাগমন-ব্যাকুলা-বাসক-সজ্জা-প্রিয়সধী, বিগত-লজ্জ হইয়া, উচ্চৈঃস্বরে বিলাপ ও পরিতাপ করি-করিতেছে!!

শ্রীজয়দেব কবির বির্চিত এই পদাবলী—য়সিকভক্তগণের পরমানন্দ বিস্তার করুক। অর্থাৎ—স্থীর অব্যর্থ-দোত্য-চাতুরীর কৌশলময়-বচনে, ভাব-লিক্ষা-ময় ভক্তগণের আনন্দ সম্বর্ধিত হউক।

এ গীতিটি গীতগোবিন্দের ৬ ঠ সর্গের প্রথম (ক্রমিক ১২ নম্বরের) গান।
স্বনাম-ধন্ত চৈতন্তদাস পূজারী গোস্বামীর ক্বত ইহার টীকা এইরূপ:—
হে নাথ! হে হরে! বাস-গৃহে রাধাসীদতি—প্রতিক্রণং আকুলা ভবতি।
( ত্ব্যমূরক্তত্বা সন্তাপ এবামূভূত ন্তবেতি নাথশন্ধ: ত্বয়া তক্তা লজ্জাধৈর্য্যাদিক হরণাৎ হরিশব্বোহিপি নির্দিন্ত:)॥ গ্রু॥ তৎপ্রকারমাহ—দিশিদিশি রহিসি সা
ভবস্তমেব পশ্যতি—স্বন্ধরং জগদভূত্তথাপি দং, মনসাপি, তাং ন স্মর্কীতি সন্তা-পক্তমেবেত্যর্থ:। কীদৃশং ? তন্তা অধরত্ব মধুরং যন্মধু তৎপিবন্তং। ত্বদধ্রেতি
গাঠে—স্বচ্চব্বোহ্তার্থ: অন্তা মধুর মধুনি-পিবস্ত মিত্যর্থ: অনেনাপি—হর্বোৎ-পাদকতরা তথিবার্থ:॥ ১॥

যদ্যে গাদৃশী সা কথং নাগচ্ছতীত্যাহ — ঘদভিসারোৎসাহেন বলস্তী-বলযুক্তা কিয়ন্তি পদানি চলস্তী পততি। আগন্তমসমর্থেত্যর্থ:॥৩॥

বংদ্যবং তর্হি কথং জীবতীত্যাহ—সা কেবলং তব-রতি-কলরা—ত্ৎকর্ত্ ক রমণাবেশেন জীবতি। কীদৃশী ক্বতা ? বিশদানাং—মৃণালানাং পল্লবামাঞ্চ বলয়াঃ—কহণানি যয় সা॥ ৪॥ মুক্ রবলোকিত-মণ্ডণ-লীলা,
"মধু রিপু রহ মিতি'' ভাবন-শীলা । ৫
ছরিত মুণৈতি ন কথমভিসারং
হরিরিতি বদতি, সধী মনুবারং ॥৬॥
শ্লিষ্যতি চুম্বতি অলধরকরং
হরিরূপগত ইতি—তিমির মনলং ॥৭॥

ভবতি বিলম্বিনী, বিগলিত-লজ্জা বিলপতি, রোদিতি,বাসক সজ্জা।।৮। শ্রীজয়দেব কবেরিদ মুদিতং রাসিক জনং তন্ত্তামতি মুদিতং।৯।

# (১৩) গুজ্জরী।

ঋতু-পতি-রাভি, বিরহ-জ্বে জাগার, দৃতীউপেশলি-রামা, প্রিয়-সহচরী বলি, মোহে পাঠ: ওলি—অতএ আওকু তুয়া ঠামা

তৎপ্রকারমেবাহ—মৃত্র্বারম্বারং—অবলোকিত-মণ্ডণেন—স্বামিন্ বর্ছ-শুঞ্জা-দিভি: ক্বত ত্বৎসদৃশ-বেশেন তবামুক্কতি-র্যধা-সা। অতএবাহং—মধুরিপুমিতি ভাবন-পরা ত্ব্যুমাত্মক ক্রুর্ত্ত্যর্থ:। প্রিয়স্তামুক্কতিলীলেতি চ নাট্টালোচনং ॥৫॥

পুন: ক্র্রাপগমে ত্তু আত্মানং পৃথবাত্বা ক্রতমভিদারং হরি:—কথং নোপৈতীভাত্বারং দ্থীং—মাং বদতি॥ ৬॥

পুনশ্চ অত্যাবেশেন ত্রিচ ক্রুর্ভি সতি—"প্রীক্ষক আগত" ইতি ক্রত্বা, মেখ তুলং প্রছুরমন্ধকারং—শ্লিষ্যতি, চুখতি চ ॥ । ॥

পুনস্তদপগমে—ত্ত্রি বিশন্ধিনীসতি—বিগত-লজ্জা-সতি—বিলপতি, রোদিতি চ। কিদুনী ? বাসক সজ্জাবস্থাং প্রাপ্তা। ৮।

ঞ্জিরদেব কবেরিদম্দিতং-শৃক্ষার-রস-ভাবিতান্তঃকরণং অতিশয়েন মুদিতং করোতু। অনেন শৃক্ষার-রসাবিষ্ট-ভকৈ রিদ মাম্বাদনীর মিতার্থ। ১।

(১০) এই স্থী—কাডাগণের অন্তত্মা। নির্জন-স্থানে ইনি, নাগরেক্তের নিকটে উপস্থিত হইলে, রতি-বীর-নাগর—ইহার প্রতি সাভিলাষ-দৃষ্টি ও ভছচিত চেষ্টা প্রকাশ করায়—স্থী কহিতেছেন :—

"মাধব। আমি প্রিরস্থী রাধার দৃতী হইয়া, তোমার নিকট আসিয়াছি। শামার প্রিয়-স্থী, বিরহিনাগণের হঃসহ এই মধুম্য়ী-যামিনীটি তোমার বিরহে শুন মাধব! কর-জোড়ি কহিছোঁ-নো-ভোয়।
মন মথ-রঙ্গে, তরঙ্গিত-লোচনে, তোহে \* না হেরবি মোয়,
দূরকর আলস, আনহি ণ লালস, চাতুরি-বচন-বিভঙ্গ।
বরু হাম জীবন—তোহে নিরমঞ্চ্ব, তবহু না সপব অঙ্গ!
যাহে শিরস্পি, কোর-পর-শুভিয়ে, সো-যদি করু বিপরিতে,
পীরিভিকো-পন্থ গ্রু ঐছে তব মিটব, গোবিন্দ দাস চিতে ভীতে

জাগিয়া কাটাইতেছে! (ঋতুপতি—বসন্ত। 'বসন্ত-নিশি' শব্দের সার্ধ-কালিক প্রয়োগস্থলে—"বসন্তের স্তার মধুমরী" অর্থ বৃথিতে হইবে। (বাস্তবপক্ষে প্রয়োজনাত্মসারে সকল ঋতুতেই বৃন্দাবনে বসন্তের প্রকাশ হয়)। দৃতীর প্রদত্ত, তোমার সন্তেত-সংবাদ – বিফল হওয়ায়, চির-বিশ্বাসিনী-দৃতীগণকে উপেক্ষা করিয়া—প্রিয় সহচরী জ্ঞানে বিশ্বাসপূর্বকি সে আমাকে পাঠাইয়াছে! অতএব আমি কর-জোড় করিয়া বলিতেছি, এখন তৃমি আমার পানে এরূপ মন্মথ-রঙ্গ-তরঙ্গিত-নয়নে—কুটিল-দৃষ্টি করিও না। এখন—অন্যাভিলাসের—আলন্তের—কিয়া ভঙ্গীময়-বাক্য-বিস্থাসের সময় নহে! এ সব এখন দৃর কর। অধিলন্তে রাধার নিকটে চল।

আমি স্থাদ্য-বচনে জানাইতেছি—বরং তোমাকে নির্দ্ধন পূর্বক প্রাণ-ত্যাগ করিব, তথাপি সধীর নিকট বিশ্বাস্থাতিনী হইয়া কদাচ তোমাকে দেহ-দান করিব না। (বক্—বরং। সঁপব—সমর্পণ করিব)।

ষাহার ক্রোড়ে মন্তক রাথিয়া, নিঃশক্ষে শয়ন করা যায়, সে যদি ঈদৃশ বিপরীত ব্যবহার করে—অর্থাৎ বিশ্বাসবাতক হয়, তবে প্রণম্বের-পথ ঐক্নপেই মিটিবে অর্থাৎ বিলোপ হইয়া যাইবে!!

পদামৃত সমুদ্রের ভণিত। অন্তরূপ। যথা:—পীরিতি-কো রীত, কৈছনে মেটব, গোবিন্দদাস রহু চিতে। আরও পাঠাস্তর আছে। যথা — \* নিমিথ। † অনতহি। ‡ রীত ইত্যাদি। পদকল্পতরুতে বুথা পাঠাস্তর বিস্তর। তন্মধ্যে «ম ছত্রের পরিবর্ত্তনই অভূত। যথা—"দূর কর লালস, আনহী লালসী"!!

#### ( > ৪ ) বরাড়ি।

চির দিনে সো-বিধি, ভেল নিরবাদ, পূরল, দোহক-মনোভব-দাধ। আওল মাধব, রতি-স্থ-বাস, বাঢ়ল রমণী কো-মনহি হুলাস। সো-তমু-পরিমলে, ভরল, দিগস্ক, অমুভবি-মৃরছি পড়ল, রতি-কাস্ত। কহে হরি বল্লভ, কুমুদিনী-ইন্দ্, উছলল, স্থীগণ-আনন্দ-সিন্ধ।

#### ( १६ ) जुशाली।

অবনত-বন্ধনী, না কহে কছু বাণী, পরশিতে-তরসি ঠেলই পিন্ধ-পাণি।

স্থচতৃর নাহ-করন্নে অনুরোধ, অভিমানী রাই-না মানয়ে বোধ।

(১৪) সধীর কথাটি—শ্রীক্ষের প্রেমার্জ-রদরে—বাজিল! অমুতপ্ত চিত্তে তিনি, তংকণাৎ—শ্রীরাধার নিকটে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। কেনী কুঞ্লে-তাঁহার উপস্থিতির প্রভাবেই, রমণী-মণির প্রাণ উল্লসিত হইয়া উঠিল!! মৃগমদ-সংলিপ্ত নীলোৎপলের গর্মহারী-কৃষ্ণাঙ্গ-পরিমলে দিগস্ত পূর্ণ হইয়া গেল। মদন-মোহনের সে অঙ্গ-গন্ধানুভবে, রতি-কান্ত কন্দর্প, মুর্চ্ছিত হইয়া পড়িল! শ্রীরাধাকে প্রীড়া-প্রদানের শক্তি, তাহার রহিল না।

গীতকর্তা কহিতেছেন:—এ দিকে—চক্রোদয়ে জল-নিধির-উচ্ছলনের স্থার, কুমুদিনী ও ইন্দুর (প্রীরাধারক্ষের) একত্রোদয় দর্শণে স্থীগণের হৃদয়ত্ত আনন্দ সিন্ধু উছলিয়া উঠিল। অর্থাস্তর—কুমুদিনীর ইন্দু, (প্রীরাধার কাস্ত) স্থী-সমূহ-ক্ষাপ আনন্দ সমৃদ্ধকে উচ্ছলিড করিয়া তুলিলেন।

(১৫) বিষাদের—বিদ্রণ ও উল্লাদের—আবির্ভাবের সহিত প্রীরাধার ফদরে—অভিমান ও বামতা, পুনরুদিত হইল! তিনি অবনত-বদনে, নিঃশব্দ ছইরা রহিলেন। (তরুসি—এথানে ত্রুদ্ধিত হইরা। নাহ—নাগ।) পীরিতি-বচন কছু কংল বিশেষ \*
রাই কো হৃদয়ে, দেখল-রসলেশ,
পহিরণ-বাস, ধরল যব হাত,
তব ধনী, দিব-দেওল, নিজ-মাধ।

রস-পরসঙ্গে-করমে বহু রঙ্গ ।
নিজ-পর থাব-নামে দেই ভঙ্গ।
নাহক আদর বহুত বাঢ়ায়,
জ্ঞান দাস কহে--এত না জুরার !

#### \* রস-ময়-নাগরের-বিশেষ শ্রীতি-বচনগুলি কি এইরূপ ?

বদন না কর মলিন-ছাঁদ,
বাদে জিরাওসি প্নিম-চাঁদ ?
অধর-কাঁধুলী-মধুর-হাস
নীরস নাকর-দীঘ-নিখাস।
রাই ! অবহু তেজহু মান,
চরণে-লাগি-সাধরে কান।
চঞ্চল নয়ন-খঞ্জন-জোর,
ভাঙ-ভূজলী-কাহে আগোর ?

কিফল মোহে এতছ রোষ ?
জগতে বিদিত দাস কো দোষ !
বচন-অমিয়া-বিশ্ব না জীয়ে,
মান-কুলীস-দশাও কিয়ে !
গোবিন্দ দাস—চিতে আশ,
করয়ে-মান,—অভিনাস।

ভাবার্প:—দেখ, ভোমার অধরের ভয়ে পূর্ণচক্র খণ্ডিত হইরা গিরাছে!!
( আল ক্ষণষ্টমী) বৃথা বিবাদে (মানে) বদন মলিন করিয়া ভাহাকে পুনজীবিত
করিতেছ কেন? ইভ্যাদি। "তব ধনী দিব দেওল নিজ মাণ"—মাথার দিব্য দিয়া বি-লেন—আমার কাপড়ে হাত দিও না।

তৎপরে, প্রেমমনীর মন রসার্দ্র হইতে লাগিল। মানিনী রস প্রসক্ষেনানারঙ্গ করিতে আরম্ভ করিলেন। কিন্ত-নাগরের অভিলসিতের প্রস্তাবে, বিমুখী! (পর্থাব—প্রস্তাব)।

া এই রদ-প্রসঙ্গের রক্ষ কি এইরূপ ?

তুছ যদি মাধব চাহসি লেহ,
মদন সাথি করি থত লেথি দেহ,
ছোড়বি কেলী-কদম্ব-বিলাস।
দ্র করবি, নিজ গুরুজন-আশ,
মোবিলু স্থপনে না হেরবি আন।
হামারি বচনে করবি-জ্বল পান,

রজনী দিবস গুণ পাওবি মোর,
আন যুবতী কোই, না করবি কোর ?
ঐ ছন কবচ ধরব যব হাত,
তবহু তুরা সঞ্জে মরম কো বাত।
ভণই বিদ্যাপতি গুন বর-কান,
মান রহক পুন বাউক পরান।

( সাধি--সাকি। ( জলপান-জন্না। আন--অঞ্জ )

#### ( ১৬ ) धानगी।

কুচ-পর ধরল-হাত, বলী,
কমল গরাসল, কমল-কলি !
বদনে বদন কিয়ে লাগল গল্প,
কমল পিয়ে কি কমল-মকরন্দ ?
অতএ-কিছিনি-করয়ে ফুকার,
ভাজা মদন না করয়ে বিচার ।
দৃঢ়-পরিরস্তনে-হিয়ে হিয়ে লাগি,
টুটল হার-লাজ ভয় ভাগি !!

শ্রম-জ্বা-পূরণ-ভেল দোল দেহ,

যকু ঘন-বিজুরী ভিজ্ল নব-নেহ!

''একছ জীবন, একছ পরাণ,
পহিলহি হোয়ত রাধা কান''

এত জানি মন-মুখ-ধরল-বিবেক।
ভানি করল, ত্তু-তুমু-ভুমু-এক
কুহে হরি বল্ল-, আর কি বিচার ?
এ দোহ মূরত-রস-অবতার,

ইতি জীগীত চিস্তামণো মধ্যা বর্ণনে অষ্টমী ক্ষণদা।

(১৬) এই শ্রেণীর গীতের আক্ষরিক-আম্বাদনী লেখা চলিতে পারে না।
প্রথম ছই ছত্রে—কমল কলির সহিত পন্নোধরের এবং হস্ত-তলের সহিত
কমলের উৎপ্রেক্ষা।

পঞ্চম ছত্ত্রের ভাবার্থ এই:—কি বিপরীত ব্যাপার! প্রক্টিত কমল, কমলের কলিকে গ্রাস করিতেছে! আর—এক কমল অন্ত কমলের মধুপান করিতেছে এই বলিয়া যেন কিন্ধিণী—চীৎকার করিতে লাগিল! কিন্তুমদন রাজার সকল রীতিই অন্তৃত! রাজা ইহার বিচার করিতেছেন না!!

লাজ ভয়-ভাগি – লজ্জা ভয়ে পলাইয়া গেল।

পূরণ—পূর্ণ। নেহ—দ্লেহ, বা প্রণয়-রস। মেষের জলে জগং ভিজে কেবল দামিনী ভিজে না; কিন্তু দেখ অভ্ত-নবীন প্রেমরসে—আজ, মেষ এবং দামিনী উভরে ভিজিয়া গিয়াছেন।

"রাধা-শ্রামের হৃদয় ও প্রাণ যথন চিরদিন অভিয়, তথন ইহাদের ভিয় ভিয় দেহ থাকা উচিত হয় না" এইয়প বিবেকের বশবর্তী হইয়া বেন মন্মধ আজ হৃদ্ধনের অঙ্গে অঙ্গে মিলাইয়া এক করিয়া দিয়াছে !

# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### ज्ञा निवा कि निवा ।

# ( ) भौरगीतहस्त्र चना।

श्रामत-रगोत-वत्रण, এक राम्ह, भागत-जन, हरल--कतरत्र जरनार । সৌরভে-আগোর-মৃরতি-রসসার, পাকল-ভেল যৈছে ফল-সহকার,

(১) "খ্যামল-বরণ এবং গৌর-বরণ অর্গাৎ শ্রীকৃষ্ণ ও শ্রীমন্মহাপ্রভ্—এক তমু।" এ কথাতে—পামরদিগেরই সন্দেহ হয়। তাহাদের জানা উচিত, যে, সহকার অর্থাৎ আম্রুফল পাকিয়া ভিন্ন-বর্ণ হইলেই যেমন ভিন্ন-বস্ত হয় না, সেইরূপ সৌরভাবৃত-মধুর-রসের-মূর্ত্তি এই গৌর-স্থলর, রসময়-নল্দ-নল্দন হইতে শ্বতন্ত্র বস্তু নহে। বটে—রস-শ্বরূপের এই নিগৃঢ়-বিহারের রহস্তটি বেদে অব্যক্ত, কিন্তু তন্নিমিত্ত তত্ত্বে অবিখাস করা সমূচিত নহে। কারণ—ব্রজ-বিহারীর—নর-লীলা-বৈভবের হজ্জেরতা বেদ-বক্তা—শ্বয়ং ব্রহ্মার নিজ মুখেই শ্বীকৃত; যথা—শ্রীচরিতামৃতে (ভাগবতীয় শ্লোকের পদ্যাম্থ-বাদ)। "হোমার যে শীলা—মহা-অমৃতের-সিন্ধু, মোর—বাদ্যনোগোচর নহে তার এক বিন্দু" অতএব সেই লীলা-বিবর্ত্তের-চরম-পরিণতিরূপ—শ্রীগৌর-লীলার তত্ত্ব ও মাহাত্ম্য, বেদে স্থ্যক্ত থাকার আশা, কি করিয়া করা যাইতে পারে ? স্থতরাং বেদে স্থ্যক্ত নাই বলিয়া—শ্রীগৌরলীলার যাহারা অবিখাস বা সন্দেহ করেন, তাহাদিগকে পামর' বলাতে তাহাদের রাগ করা উচিত নহে।

"গৌরহরি-হরিনামের কিরূপ বাধান প্রকট করিলেন ?"—এ কথাটি আত্মাননীয়। "হরেনাম হরেনাম হরেনামৈব কেবলং, কলৌ নাস্ত্যেব নাস্ত্যেব গতিরক্তথা" এই স্থপ্রসিদ্ধ গোকটির বিশদার্থ-ব্যাখ্যা করিয়া— শ্রীমন্মহা-প্রভু জগতের জীবগণকে বুঝাইয়া দিয়াছেন—কলিমুগে হরিনাম ব্যতীত, জীবের গতি নাই। 'নাস্ত্যেব' শক্টী তিনবার ব্যবহারের উদ্দেশ্য এই যে—ইহা

গোপ-জনম পুন বিজ-অবতার, নিগম না পাওই নিগৃঢ়-বিহার। প্রকট করণ—হদ্ধি-নাম-বাথান, নারী-পুরুথ-মূথে, না গুনিয়ে আন।

স্থনিশ্চিত সত্য—অতর্কিত সিদ্ধান্ত—নিশ্চয়, স্থনিশ্চয়—হরিনাম ব্যতীত জীবের গতি নাই।

হরিনাম বলিলে সাধারণতঃ—"হরে ক্রফ হরে ক্রফ ক্রফ ক্রফ হরে হরে, হরে রাম হরে রাম, রাম রাম হরে হরে"—এই বোলটি নাম ব্রায়। এরূপে নাম গ্রহণে—ক্রফ-নামের—চতুরাবৃত্তিতে—খীর-ললিতাদি চতুর্বিধ-নায়ক-রূপ শীক্তফের, এবং 'হরে' এই নামের—অষ্টাবৃত্তিতে—অভিসারিকাদি অষ্টবিধ-নায়িকা-রূপিনী শ্রীরাধার এবং 'রাম'—এই নামের চারিবার আবৃত্তি দারা শীশ্রীরাধামাধ্বের—সংক্রিপ্ত-সম্পূর্ণাদি চতুর্বিধ বিলাদের—স্মরণ, কীর্ত্তন ও উদ্দীপন হইয়া থাকে, স্মৃতরাং ইহাতে সর্বাক্তিবর্তমান্।

হরিনামের-মাহাত্ম্য ও গ্রহণ-পদ্ধতি-সম্বন্ধে প্রীগোরাঙ্গ-স্থাকর, প্রীমুখে বা ভক্তমূথে—আরও যে সকল আদেশ-উপদেশ প্রদান করিয়াছেন, তাহাকেও হরিনামের বাধান বলা যাইতে পারে। যথা, প্রীচৈতক্সচরিতামূতে—

''থাইতে শুইতে যথা তথা নাম লয়। কাল দেশ নিয়ম নাই, সর্কা সিদ্ধি হয়''। "অনুসঙ্গ-ফল নামের, মুক্তি-পাপ-নাশ"। ''নামের ফলে কৃষ্ণপদে প্রেম-উপজ্ঞাব'। ''সর্কা-শক্তি দিল নামে করিয়া বিভাগ'' ইত্যাদি।

তদ্তির শ্রীশিক্ষাষ্টকের এই শ্লোকটিও আস্বাদনীয়। যথা :---

"তৃণাদণি স্থনীচেন, তরোরিব সহিষ্ণুনা। অসানিনা মানদেন, কীর্ত্তনীয়ঃ
সদা হরি"। ইহার তাৎপর্য্য—এই যে, তৃণ যেমন সকলের চরণ মাথায়
গইয়া যাহাকে তাহাকে চলিয়া যাইতে দেয়, যিনি তাহা হইতেও স্থনীচ হইতে
পারেন—অর্থাৎ যিনি প্রাণীর পদোত্তলনের পরে তৃণের ভায়—শিরোত্তলন না
করিয়া এবং বৃক্ষের ভায় সহিষ্ণু হইয়া শত্রু মিত্র সকলের উপকার সাধন করিয়া—
প্রয়োজন সন্ত্বেও অ্যাচক হইয়া এবং নানাবিধ গুণ-গৌরবে বিভ্ষিত হইয়াও
নিরভিমান অর্থচ অ্পরের প্রতি মানদ হইয়া—অম্বাগের সহিত নাম লইতে
পারেন, অবশ্রই তাঁহার প্রীক্ষের চরণে প্রেম জন্মে। ( অভ্যথা বহু বিলম্বে —হয় ত বা জ্যাস্তরে ফ্ল-লাভ)।

ত্রিপুরা, চরণ-কমল-মধুপান, সরস-সঙ্গীত, কবি রঞ্জন ভাণ।

# (২) শ্রীনি ক্যানন্দচক্রশ্ব—শ্রীরাগ।

পূরবে, গোণর্দ্ধন—ধরল, অমুজ যার, জগ-জনে বলে, বলরাম, এবে সে, চৈতত্ম-দঙ্গে, আইল কীর্ত্তন-রঙ্গে, আনন্দে—

নিজ্যানন্দ নাম।

গীতকর্ত্তা কহিতেছেন—আমার গৌরহরির ক্কৃত, হরিনামের ব্যাখ্যার ও মহিমার-বিরুদ্ধে, নারী-পুরুষ কাহারও মুখে আন অর্থাৎ অন্তথা—ব্যাখ্যা শুনিতে পাই না, এবং সকলের মুখেই হরিনামের প্রশংসা শুনিতেছি। জ্মার-শক্তি-ব্যতিত কথনও এমন হইতে পারে ? শুধু এই-প্রভাবটিতে মন লাগাইতে পারিলেই আর—আগম নিগম খুজিয়া গৌরহরির ভগবত্বা জ্বেষণ করিতে হয় না।

গৌরপদ-তরঙ্গিনীতে ভণিতা এইরপ—"করি গৌর চরণ-কমল-মধুপান, সরস-সঙ্গীত মাধবীদাস ভাণ''। পদকলতক্ষর ভণিতা অন্তরূপ। যথা— শুনীরঘুনন্দন চরণ করি সার,কহ কবিশেধর গতি নাহি আর''। এই ভণিতাটিই সর্বাপেকা সমীচীন বলিয়া মনে লাগে।

<sup>(</sup>২) প্রীভগবানের করণা ব্যতিত তাহাকে চিনা যায় না। গৌরবে ও ঐখর্যামদে—মানবের মনকে—পরিচয়ের পথ হইতে বহু দূরে সরাইয়া রাথে। তাহার সান্দি, ঐখর্যা মদান্ধ হওয়াতে স্বয়ং দেবরাজই, আপন প্রভূ—এজ বিহারী-হরিকে চিনিতে অপারগ হন এবং যজ্ঞ-ভঙ্গ-জনিত-কোপে সপ্ত দিবা রাত্রি অবিশ্রাস্ত বর্ষণ দারা ব্রজভূমি বিদ্ধস্থের চেষ্টা করেন।

এই ঘটনাটি এস্থানে উল্লেখের কারণ এই যে, — ঐ সময়ে, বাম করে গোবর্জন ধারণের হারা---সমস্ত আনন্দোৎস:বর সহিত—অবহেলে ব্রজ-জনের-রক্ষা-

পরম উদার, করুণাময়-বিগ্রাহ, ভূবন-মঙ্গল-ধাম, গোর-পারিভি-রসে, কটির বসত থদে, অবভার অভি অমুপাম।

কারী-শ্রীক্ষের—ঈশ্বরত্বে, সকল সম্প্রানারীজনগণই দৃঢ় বিশাসবান্, অতএব শীতকর্তার প্রদর্শিত এই পরিচয়টি সকলেই মহিনাম্ভৃতির সহিত বৃঝিতে পারিবেন যে—যিনি এই গোবর্জন-ধারী-হরির-দাদা; যিনি বলরাম নামে জগৎ-প্রসিদ্ধ, তিনিই, সংকীর্ত্তন-রঙ্গে জড়-জগতের চৈত্ত্য-সম্পাদনার্থ,—শ্রীতৈত্ত্য চল্লের সহিত,—শ্রীনিত্যানন্দ নাম ধারণ করিয়া, আনন্দে অবতীর্ণ হইয়াছেন!

ব্রজ-লীলার স্থায়— নবদীপ লীলাতেও, ইংহার ভাব বাবহার পরম হজেরেবটে! কিন্তু জ্ঞান-গর্ক্-পরিত্যাগ-পূর্বক, অবহিত-চিত্তে, নিতাইয়ের গুণে ও নিম্ন-লিখিত লীলা গুলিতে ডুবিলে, আর—কুতর্কের-কণ্টক-চন্ধনের প্রয়োজন হঠবেনা! স্বতঃই—-শ্রীনিত্যানন্দের-স্বরূপ-উপল্কি ও তৎ-কুপালাভ ঘটিবে।

- (১) আমার নিতাই "পরমোদার" অনোধ-দর্শী।
- (২) করুণাময়-বিগ্রহ'—দয়া ব্যতিত জানেন না ! প্রহারিত হইয়াও প্রহার-কারীকে — করুণা করেন !!
- (৩) তিনি "ভূবন-মঙ্গল-গুণ-ধাম" অর্থাৎ (ক) পাণী পাষণ্ড প্রভৃতি কাহাকেও বিনষ্ট করেন না, পাপ-মতি-বিনাশ পূর্বক তাহাদিগকেই ভূতলে—"সর্ব্বোত্তম" করিয়া তুলেন ! (৭) দশনে—বচনে—গানে নত্যে-হাস্তে-কৌতুকে—প্রতি ব্যবহারেই, জগতের-অমঙ্গল-ধ্বংশ এবং মঙ্গল-বিধান করিতেছেন!!।
- (৪) তাঁহার এমনি অপরিমিত-গোঁর-প্রীতি,যে গোঁর-স্থলবের,প্রেম-করণার .
  অবাধ-বিত্রণ-লীলাদর্শনোলাদে— আনন্দ-তরঙ্গে, ঘন-ঘন—নিজ-তন্ত্র ক্ষীততাসংহাচতা-হেতু, তাঁহার কটি-তট হইতে পরিধেয়-বদন, শিথিল হইয়া
  পড়িয়া যাইতেছে ! আনন্দোন্মাদে তৎপ্রতি ক্রক্ষেপণ্ড নাই ! !
- ( ৫ ) "অব তার-অতি-অন্পাম" এ কথার সংক্ষিপ্ত-সার অর্থ বোণ হয় এই ষে সর্ক্ষেধ্য্য-পূর্ণ--ভগবানের সমীপস্থ হওয়া, জীবসাধারণের অসাধ্য। অত্তব্

# নাচত গাওত, হরি হরি বোলত, অবিরস্ত—"পৌর-গোপাল হাল প্রকাশ—মিলিত-মধুরাধরে—বোলত, পরম-রদাল!

জীবের উদ্ধারার্থ স্বকীর-প্রথব্য আচ্চাদন পূর্বক, মারাধীন-মান্থবের-আকারে মারাধীশ শ্রীভগবানের প্রপঞ্চে আগমনরূপ অবতার লীলার উপমা নাই! আবার দেই অবতার যদি, সর্বপ্রকারে আপনার সমান—একাধিক-মূর্ত্তি, এক সময়ে প্রকটন পূর্বক---লীলা-সমাধান করেন, তবে--প্রদীপ হইতে প্রজ্ঞানিত প্রদীপান্তরের স্থায়, সমান-রূপ-গুণ-সম্পন্ন ঐ সমুদয় শ্রীমৃত্তিকে---প্রকাশাবতার বলে। শ্রীনিত্যানন্দ চন্দ্র,—পূর্ণতম-ভগবান্--শ্রীগোর হরির—প্রকাশ স্বরূপ, সম্ভএব তাঁহারই স্থায় সর্ব্ব প্রকারে—অনুপ্রম অবতার।

দেখ, কেমন স্থময় সাধনে—কিরূপ মধুর আকর্ষণে আমার নিতাই চাঁদ
ছুর্গত-জীব বৃদ্দকে, প্রেমের রাজ্যে—লইতেছেন:—অবিরত কেবল নৃত্য গীত
ও মধুর-হরিনামের ধ্বনি। আর হাস্য-স্থা-মণ্ডিত-শ্রমুণে, পরম-রসময়
"গোর গোপাল" বোল। তাহাতেই যাবতীয় জগতের জীবগণ পরমানদ্দের সহিত সকল সাধনের চরম্চল—প্রেমধন—লাভ করিয়া ধ্যু
হইতেছে।

যদি কেহ বলেন—নিতাই-ভজনের-পথ-প্রদর্শক-মহাজন কোথার ? ইহার উত্তর স্বরূপেই যেন চইজনা মহামহিমানিত-পার্শদের নামোরেথ করিয়াছেন। প্রথম,—শ্রীরাম দাস। শ্রীচৈতন্ত চরিতামূতে ইহার সম্বন্ধে এইরূপ বর্ণনা দৃষ্ঠ হয়। যথাঃ—

"রামদাস অভিরাম, সথ্যপ্রেম রাশি, বোল সাঙ্গের কান্ঠ যে তুলিয়া কৈল বাঁশি" ইনি ব্রজের অভিরাম গোপাল। বত্রিস জনের-বাহিত-বৃহৎ-কান্ঠ, অব-লীলা ক্রমে বংশীর স্তান্থ ধারণ করিয়া, ইনি—ফুৎকার দারা বংশী-রূপে-পরিণত করেন, অত্ত্রব ইহার স্তান্থ মহিমাধিত মহা মহাজন কে ? খ্রীনিতাই, ইহার— সর্বান্থ ।

দিতীয় ঐাগোরী দাস পণ্ডিত। ইহার প্রেম-বশ হইয়া স্বরং গৌর নিত্যা-নন্দ স্বস্থ ঐবিগ্রহের দ্বিড-প্রেকটন করিয়া—- শ্রীপাট অন্থিকা কাল্নাগ্ন, অর্চা রাম দাদেরে পক্ত, হুন্দর-বিগ্রাহ, গোরীদাদ-ভান নাহি জানে, ভাথিল-লোক যক্ত, ইহ-রদে-উন্মত, জ্ঞানদাদ নিতাইর গুণ-গানে।

# (०) দূ बोथार। श्रीभाकात।

প্রেম আগুনি, মনহি গন-গনি, \* এদিন যামিনী জাগিরে সদন-পঞ্জরে, শ কুঞ্জে রোওই, তোহারি রস-কণ লাগিরে !

মূর্ত্তিতে অন্যাপি অধিষ্ঠিত! শ্রীচরিতামূতে ইহারও অগাধারণ মহিমা কীর্ত্তিত আছে। যথা—"গৌরীদাস পণ্ডিত---প্রেমোদণ্ড-ভক্তি,কৃষ্ণ-প্রেম দিতে নিতে ধরে যিহো শক্তি"। এই মহা-মহাজনও শ্রীনিতাই ব্যতিত জানিতেন না।

তারপর নিত্যানন্দ-রসের গ্রাহক সংখ্যা দেখাইতেছেন। বলিতেছেন—
এই যে, সাহজিক—গৌরপ্রীতি-প্রদ—নৃত্য, গান, হরিনাম ও গৌরনাম-মম্ম
নিত্যানন্দ-রস---দেখ ইহাতে নিখিল জগতের লোক—মাতোয়ারা হইরা
ছংখ শোক অভাবাদি ভূলিয়া গিয়াছে!! গীতকর্তা জ্ঞানদাস কহিতেছেন,—
অধিক কি নিতাইর গুণ গানের ফলে গুক-জ্ঞানের দাস, আমিও জ্ঞানহারা!!

(৩) প্রীক্ষের দ্তী, নিজ মন্দিরস্থা মানিনী প্রীরাধাকে কহিতেছেনঃ—রাধে! কান্ত্র মনো মধ্যে গন্ গন্ করিয়া প্রেমের-সাগুন জনিতেছে! দিবারাত্রি জাপিয়া কাটাইভেছেন!! এই ত দেখিয়া আসিলাম তোমার প্রসন্ত্রার আক্তক্রার অর্থাৎ কিঞ্জিং রস্ক্রণ। লাভের লোভে—কন্দর্শের পিঞ্জর-স্ক্রণ নিকুঞ্জে অবিরত রোদন করিতেছেন!

মানিনি! এখন আর মানের কোনও ফল নাই। তৃমি নিশ্চয় জান পদকলতক্র পাঠান্তর—\* গুণি গুণি। † কুঞ্জর:। কি ফল মানিনি ! মান-মানসি ? কাফু-জানসি তোরিরে,
তুত্ত, সে-জলধর—অঙ্গে, সোহসি, তুলহ্-দাসিনী-গোরীরে !
নওল্-কিশলর—বলয়, মলয়জ—পক্ষ, পক্ষজ-পাতরে
শয়ন ছটফটি, লুঠই ভূতলে, ভোবিফু-দহ্,-দহ-গাতরে !
\*জানি পুন পুন উপিয়া-পরিধসি, পৃজই পত্ত পাঁচ-বাণরে
রায় চম্পতি, এরস গাহক,শ দাস গোবিন্দ গানরে !

কান্ত কেবল তোমার--মার কাহারও নয়, আর অচঞ্চলা তুর্লভ-দামিনী স্থারপা তুমিও সেই শ্রাম-জল-ধরের-কোলেই শোভনীয়া, অন্তত্তে নহে। (শোভা-শন্দ্রতে শোহা। শোহসি—শোভা পাও। তুলহ--তুর্লভ)।

শ্রাম-স্করের, প্রেম-বৈকল্য--কত বলিব ? কোমল-নব-পল্লব-বলন্ন (বলন্ন-সমূহ) চলনের পঙ্ক এবং নলিনীর দল-নিচন্নের দারা স্থানির্মিত শীতল কেলী-শ্যান্ন তিনি শুইতে পারিতেছেন না!! ছট্ফট্ করিতে করিতে ভূমি-লুক্তিত হইতেছেন!! তোমার বিরহ-মন্নিতে অনবরত তাহার গাত্র দাহ হইতেছে!! (দহ—আগুন। দহ—দহিতেছে। গাত—গাত্র)।

তুমি জানিরা শুনিরা, এমন নিজায়ুগত প্রিরতমের এরপে পুনঃ পুনঃ পরীকা কর কেন? আহা! শরাঘাতে নিরূপার হইরা কলপের-প্রভূত্ত কলপের পূজা অর্থাৎ মনস্কটির চেষ্টা করিতেছেন!! এই বলিতে বলিতে গীতকর্তা রায় চম্পতির ভাবাবেশে বাহুলোপ হয়, তৎপরে স্থবিখ্যাত কবি গোবিক্লাস—বক্ষ্যমাণ ভণিতাটি লিখিয়া পরে ছক্ষ পূর্ণ করিয়াছেন।

পদকরতকর পাঠান্তর—\* জানহ পুনপন, সোপিয়া পরীথন, সোই পুজে পাঁচ বাণ। † গাহক—গায়ক।

# (8) 🔊 ताशह । शानित्र

ধনি তুছ দৃতি ! ধনি-তুয়া কান ?
ধনি ধনি সো-পীরিতি, ধনি পাঁচ-বান !
বিধি মোহে-কতই কুবুধি কিয়ে দেল,
হছ কুল-হরমশ-রব, রহিগেল !!
না কহ না কহ-ধনি ! কাম প্রথাব
গ্রছন পীরিতি—বিশ্বণ হ্থ-লাভ !

পহিলে মিলন মধু মাধন-বাণী
গগণ কো চাঁদ, হাতে দিল আনি !
দব-অবধারলু—ব্ঝলু নিদান
কপট- পীরিতি কিয়ে রহে পরিণাম ?
মনকো মনোরথ—মনে ভেল দ্র
যত্নাথ দাস কহে আরতি না পূর !

(৪) মানের আবেশে, শ্রীমতী-রাধা, স্থীকে কহিতেছেন। স্থি! তুমি খন্ত দৃষ্টী; তোমার—কাম্ও ধন্ত! তোমার কাম্র প্রেম—ততোধিক ধন্ত তোমানের কন্দর্পও ধন্ত!

হায়! বিধাতা আমার কি কুব্দিই ঘটাইয়াছিল! পিতৃকুল, খণ্ডরকুল আমার-ত্ই কুলেই কলঙ্ক ধ্বনি রহিয়া গেল!! (দ্রঘশ—দুর্যশ অর্থাৎ কলঙ্ক) যা'হক্ সথি! বারংবার বলিভেছি আর আমার নিকট কামুর কোনও প্রভাব বলিও না (পর্থাব—প্রভাব) কোথায় প্রেমে, ত্বংধ ধ্বিত হইবে, হায়! এই প্রকার প্রেমে ত্বংধ আরোও হিগুনিত হয়!

আহা ! প্রথম মিলনের সময়ে তোমার কান্তর বচন-বিন্তাস—মধু অপেক্ষাও
মিষ্ট—নংনীত হইতেও স্থকোষল ছিল ! যেন আকাশের চাঁদ আনিয়া হাতে
প্রদান করিতেন ! হায় হায় ! তাহার পরিণাম—এমন নিদারণ উপেক্ষা ! !

উপেক্ষার-কারণও ব্যাখ্যা করিয়া আমাকে ব্রাইতে হইবে না, আমি সমস্ত ব্রিয়াছি এবং কারণ অবধারণ করিয়াছি । স্থি ! কপট প্রেম কি কথনও পরিণাম পর্য্যন্ত যথাবৎ থাকে ?

আমার সকল সাধ,-মনের স্থান্থ অভ্যন্তরে চলিয়া গিরাছে। আর এমন-প্রেমের আকাজ্জিনী নহি। গীতকর্তা বছনাথ দাস তত্তোপবিষ্টা সধীর ভারা-বেশে কহিতেছেন হাম! আরতি পূর্ণ হইল না!!

# ( ৫ ) भूनः मृजौ ल्याह— (कमात ।

वितर-वाक्न, वक्न-जक्र-जल, (१४न् नन्म-क्रांत (त नोक्-नोतज-नग्नान-(मा मिथ ! व्यत्रे—नोत व्यश्नादत ! एमथि—मनग्रक-शक्र, प्रशं मम, जाम तम, घन-मात (त निक-शानि-शल्लान, मूमि (नाहन ! ध्वती श्रृ तम्म मञ्जात (त ! वहरत मन्म, व्यक्त-भीजन— मञ्जू-मनग्न-मगोत (त यक्, क्षांत्र-कान (का, क्षांत्र-शावक—श्वरम महरे भंतीत (त !

(৫) দৃতী পুনরার শ্রীম গীকে প্রবোধ-প্রাদান করিতে লাগিলেন যথা— রাধে! তোমার অবধারণ, একবারে-অকিঞ্চিৎ কর। আসিবার সময় আমি সে রসময়ের যেরপ ভীষণ-বিরহ-পীড়া দেখিরা আসিরাছি শুনিলে, তোমার সমস্ত বৃধা-সন্দেহ-বিদ্রীত হইবে।

বিরহ-ব্যাক্ল-রাজনন্দন, বকুল-তরুতলে-অবস্থিত হইয়া, বড়ই বেদলা-ভোগ করিতেছেন। তাঁহার সেই নীল-কমল নয়ন হইতে এন্ড অঞ্পান্ত হইতেছে বে, তাহার পরিমাণ-বর্ণন-অসম্ভব ! চন্দন-পদ্ধ মৃগমদ, গীলা-কমল ও কর্পূর্র অঙ্গে বিলেপন দ্রের কথা—এ সকল বিলাসোপকরণ দেখিয়াই করতলে লোচনাচ্ছাদন পূর্বক কেবল কাঁদিতেছেন!! বেশের উপকরণ সমস্ত ভূপতিত হইয়া রহিয়াছে। পদ কয়তরুর পাঠ—'ধরণী-পড়ু অসম্ভার' তাহার অর্থ—দেহ সম্ভালনে অপারগ হইয়া, ভূমি-তলে পড়িয়া রহিয়াছেন) মন্দ মন্দ প্রবাহিত-হুগম্য—শীতল—মনোহর, মলয়-পবনে, তাঁহার তাপশান্তি না হইয়া, প্রালয়ায়ির স্থার আরও গাত্র-দাহ বর্দ্ধিত হইতেছে!! (তাম রস—পদ্ম। অন সার—কর্পূর) এমন সজোরে—শরীর কাঁপিতেছে (বেপথু—কন্সন) বে, তাহাতে পরিহিত হারেব-মৃক্তা সমূহ ছিল হইয়া—পৃথী-তলে—নিপতিত হইছে!! দেখিলে বোধ হয়, যেন পবন-সঞ্চালিত-তমাল-তর্ক হইতে বিচ্যত-কৃত্মম সমূহ ভূমে পড়িতেছে। (অ্মন—প্রপ্। জাল—সমূহ) মৃঞ্বন—ত্যাগ করা)।

অধিক বেপথু, টুটিপড়ু কিভি—সস্ণ-মৃক্তার মালরে অনিল-ভরল---তমাল-তরু-যমু, মৃঞ্জ স্থমনস-জাল রে ! মান-মণি ত্যজি, স্থদতি ! চলু, ষহি---রায়-রসিক-স্জান রে স্থাদ-শ্রুতি-অতি, সরস দশুক, স্কবি ভণ-কণ্ঠ হার রে !

# ( ७ ) সিম্বড়া।

সজনি ! অমুপম-প্রেম-তরঙ্গ,
যাহা বহু ভাতি, তরুণ-তরুণী জন, নাচাওত, নৃপতি-অনঙ্গ ॥এ কান্সুকো তাপ— দাব—বিকটানল, ধনী, ধারল যব শ্রুবণে গ্রাসল গান—তিমির, মন-মাধন—গিরি, পিঘলাওত—তথ্নে

স্থি! এক্সণে—কিঞ্চিৎমাত্রও বিলম্ব সমূচিত নহে। আর তোমার শ্রাম-বিলাসের হৃদয়ে—অকিঞ্চিৎকর মানকে মণিরূপে ধারণের প্রয়োজন নাই, মানরূপ অজাগলস্তন পরিহার পূর্বক এখনি প্রসন্ন বদনে নাগর-শেখরের স্মিপে চল। (স্থাতি—স্থানা)।

গীত কর্দ্তারপ্রকৃত নাম "বায়চম্পতি" তাঁহার উপাধি ছিল "স্কবি বিদ্যা-পতি"; তিনি কহিতেছেন—রিশিক ভক্তগণের আকাজ্জিত দৌত্য চাত্রীমদ্য—শ্রুতি স্থাদ সরম-দণ্ডক ছন্দের এই গীতটি কণ্ঠহার রূপে ধারণীর (পদ কর্মতক্ততে "বিমোহে ব্যাকুল" বলিয়া এ গীতের আরম্ভ, অনাবশ্রক পাঠান্তরেরও অভাব নাই। বাহুলা বোধে উহা প্রদর্শন করা গেল না)।

(৬) আহো ! যে প্রেমের তরঙ্গে—তরণ-তরণীগণকে, অনঙ্গ-নৃপতি
নানা-রঙ্গে নৃত্য করান, জগতে— এ-তরঙ্গের, উপমা নাই ! ! প্রাণ-কাস্তেরবিকট বিরহোত্তাপরপ-দাবাগ্নি—বিনোদিনীর-কর্ণ-দ্বাবে প্রবেশ করিয়া হৃদয়স্থ
মান-রূপ অন্ধ্বারকে গ্রাস করিয়া ফেশিল ! মন রূপ মাধনের গিরি-দ্রবীভূত

মুরত-নেহ, নিঝরে দোই-লোচন,ঝরি ঝরি,সিঞ্চিত চীরে, সম্ভ্রমে বিক্ল-কমল-মুখী, অভিশয়ে, অভিসরু—কালিন্দী-

🖹 ভীরে।

আওলি—রাই, পাওল পঁছচেতন ! ধাওল তব পাঁচ-বাণ, কহে হরিবলভ, ২ল্লভ-দরশনে—পালটি আওল পুন মান !!

# (१) औक्षक काह—इहहे।

রদৰতী হোই, রগিক-জন-লালস, যদি নাহি পুরবি রামা গুণ-গণ তেজি, তুথ য়ণ সঞ্চরু, তব কৈছে গুণবতী নামা ?

করিল!! ("পিঘলাওত' ব্ৰহ্ণাষার শক্ষ। মৃত, মাধন প্রভৃতি দ্রব করিতে হইলে বলে পথ্নাও বা পিঘ্নাও। পিঘল—দ্রব করা।) হৃদয়ের স্নেহ— মৃত্তি মান চইয়া, নয়ন হইতে নির্বরের জলবং-বেগে—ঝরিতে ঝরিতে—গাত্র-বস্ত্র আর্দ্র হইয়াগেল! (মৃরত নেহ—মৃত্তিমান স্নেহ। চীর—বস্ত্র) কমল-বদনী ব্যস্ত সমস্ত হইয়া সেই আর্দ্র-বিস্তেই কালিন্টার-তীর কুজে কান্ত-সমীপে, অভিসারে চলিশেন! তাহার গমনেই—অর্থাৎ শ্রীঅঙ্গ সোগায়ের, ও দশনা মৃতের প্রভাবে—নাগরেক্রের চৈতন্ত সঞ্চার হইয়া উঠিল এবং ধাবিত হইয়া ক্রম্প আসিয়া উপনীত হইলেন।

এই গীতটির সমস্ত অংশই স্থী ভাবাবিষ্ট গীত কর্তার নিজোক্তি।

( ৭) রসিক-শিরোমণি-নাগরেক্স, রাগ-বৈদগ্ধী-ছারা, সমাগতা অভিমানিনী কাস্তা-শিরোমণির সারস্ত বিধানে প্রবৃত হইলেন। কহিতেছেনঃ----

श्रियाज्यम ! जूमि, तमवरी धवर श्रविची विनया कशर विश्वाल । जुनिक

# মানিনি! মোছে ভেজসি কথি লাগি ? একু হাদর ভুয়া, রস-সিন্ধু-নিমজমু, কত কত যাসিনী-জাগি ॥এ পছিল-মিলনে ভুয়া, সরস হাদয় ছিল,এবে ভেল অতি কঠিনাই কঠিন পয়েয়ধর—সঙ্গে কঠিন ভেল, সঙ্গ দোষ নাহি যাই! যার লাগি নয়ন, শাঙন-ঘন বরিথয়ে, নিশি দিশি অন্তরে বাধা ভা কর মনে যব, করুণা না উপজব, তব জীবনে কিয়ে সাধা?

জনের বাসনা পূর্ণ না করাই কি :"রসবতী" নামের সার্থকতা ? আর ৩৩৭গণ দারা, ত্থ্ব-সঞ্চারের পরিবর্ত্তে ছঃখ্-সঞ্চার করিলেই বৃঝি "গুণবতী" স্থ্যাতি সফল হয় ?

প্রিয়ে ! কি-নিমিত্তে আমাকে, ত্যাগ করিতে চাও ? এক-প্রাণ হইয়া কত যামিনী জাগিয়া তোমার সহিত কত দিন, রসের সাগরে সাঁতার দিশাম, ইহা কি সেই এক-প্রণতার পুরস্কার ?

প্রিয়তমে ! প্রথম-মিলনের সময়ে তো— তুমি, এমন কঠিনা ছিলে না !!
হার ! সে সময়ে তোমার স্থলয়থানি কতই রসার্চ্চ ছিল ! অধুনা বিপরীত ভাব
সংঘটনের কারণ—বোধ হয় আর কিছুই নহে—ই । কেবল কঠিন-পরোধর
যুগলের-সংসর্গ-সঞ্জাত কু-ফল ! কারণ সল-দোষ কিছুতেই যায় না !

যাহা হউক যাহার নিমিত্ত, নয়ন হইতে শ্রাবণের-বারি-ধারার স্থায় (শাঙন-ঘন—শ্রাবণের মেঘ) অশ্রেবর্ষিত হইতেছে, দিবারাত্তি,—অসম্থ-যাতনার অন্তর মুর্মানুরিত হইতেছে (বাধা-বাথা, যাতনা) তাহার অন্তরে করণার উদ্রেক না হইলে আর বুথা প্রাণ ধারণের প্রয়োজন কি ?

গদ গদ কঠে এই কথা বলিতে বলিতে স্থাম্থীর বদনে অঙ্গুলি নির্দেশ পূর্বক রসিকেন্দ্র কহিতেছেন—কিন্ত প্রাণের ভিতরে নিরস্তর এই-—মধুর-বচনামৃতের-নিধি-থানি থেলাচঞ্চল হইয়া—বিরাজিত থাকিয়া—মরিতেও দিতেছে না !! ও মৃত্ন-বচন, মধ্র-অমিয়া-নিধি, অন্তরে থেলই মোর ভণই মুরারী, প্রাণপতি-সঙ্গিনী, ইহ তমু জীবন তোর।

# (৮) ञ्हरे-श्रीतांशह।

চল চল ডিঠ ! মিঠ-রস বঞ্চ ! চাতুরী রহু তুয়া ঠামে, কৈতব বচন-রচনে, যবভূলকু, বুঝকু তুয়া,—পরিণামে । মঞ্ল-হাস, ভাষ মৃত্র বোলনি, দোলনি-নয়ন-সন্ধান,

ভত্তোপবিষ্টা সধীর ভাবাবেশে গীতকর্ত্ত। কহিতেছেন:—রাধে! এই বল্লভই, তোর তমু—ভোর প্রাণ। তুই-ই কেবল এই প্রাণ পতির উপযুক্ত সঙ্গিনী। মানের গুমানে এ কথাটি যেন ভ্লিয়া যাইস্না।

(৮) তথাপি মানের-আগুন-নিবিল না। তবে—বেগ আরও কিঞ্চিৎ হ্রাস হইল, মানিনা ( গ্রীরাধা ) কহিতেছেন—ধৃষ্ঠ । মধুর—রস-বঞ্চক । তোমার পরম-সম্বল-চাত্রী, আর ব্যয় করিয়া কাজ নাই, ধনটি-সঞ্চিত থাকুক। নিজ ধন সঙ্গে লইয়া এস্থান হইতে দয়া করিয়া প্রস্থান কর। (চিঠ—ধৃষ্ঠ। তুয়া— ভোমার। ঠামে—স্থানে)।

যথন তোমার কৈতব-বচনে—ভূলিরা ছিলাম, সে দিন আর এখন বর্ত্তমান নাই! পরিশেষে তোমাকে স্থানর রূপেই বৃঝিতে পারিয়াছি।

বৃথিয়াছি—মনোহর হাস্ত- মৃত্-মধুর-বাক্-চাতৃরী ও চঞ্চল কটাক্ষ সন্ধান ধারা, অবলাকে অমৃত-ধারার-নান করাইতে তৃমি অধিতীয়। এই সকলের বাহাাতিনয়ই—তোমার কপট-প্রেমের প্রণালী ও সার্থকতা। 1

হার হার ! আমি কি অবোধিনী ! নিপতিত বর্ষোপলাশিলা-সম্হের কান্তি দর্শনে নাণিক্য মনে করিয়া ধাবিত হইরাছিলাম ! (করকা—কাঁতি বুষ্টিশীলার কান্তি । পাতি—পংক্তি, সমূহ) কিন্তু করম্পর্শ মাত্র (পাণিকে। প্রেম-প্রণালী, তুহু ভালে জানসি যৈছন অমিয়া সিনান!
করকা-কাঁতি-পাঁতি, হাম হেরইছে, ধাওলু মাণিক-আশে
পাণি কো পরশে, ডালি পয়ে দূরে গেও, রহল লোক উপহামে
বিষ কো কটোর, থোর দধি উপর, দেওল দারুণ ধাতা!
কপটহি প্রেম, পহিলে হাম না বুঝারু! অনস্ত কহে গুণ-গাথা

# (৯) একু ক আহ। এরাগ।

রাই! কত পরিথসি আর ? যজ, দান তপ জপ, সব তুমি, মোর, তুরা আরাধন মোর—বিণিত সংসার। নোহন-মূরলী আর বয়ান-কো বোল !

পরসে) সকল আশার ছাই পড়িয়া গেল!! জল ফেলিয়া নাণিক, মিলাইয়া গেল! (ডারি এবং ডালি একই কথা ইহার অর্থ ফেলিয়া। পয়—জল) লাভের মধ্যে আমি, লোকের নিকটে উপহাসাম্পদ হইলাম!!

নিদারণ বিধাতা যে, কটোরি গরলে পূর্ণকরিয়া উপরে দধি দারা আচ্ছাদন
দিয়াছে একথা আগে, আমার মনেই উদয় হয় নাই, কাজেই ভোমার—কপট প্রেমকে অকৈতব বস্তু মনে করিয়া ভ্রমার হইয়াছিলাম!!

ভত্ত্রোপবিষ্টা-কোনও সথীর ভাবাবিষ্ট—গীতকর্ত্তা অনস্ত কহিতেছেন:— রাধে! এইরূপ বিচার-বিবর্জনের নিমিত্তই ত তোমার গুণ-গীতি গাহিশ্বঃ আমরা আপনাকে ধন্ত মনে করি।

( > ) বিদগ্ধ-রাজ, ব্ঝিলেন—ভঙ্গী-মন্থ-বচনে মানমনীর মনে সার্ভ সঞ্চারের চেষ্টা সকল হইবে না। অভএব কারণ্য উন্দীপনের চেষ্টার প্রবৃত্ত ইইলেন। কহিতেছেন:—

রাই! আর কত পরীকা করিকে? দেখ-একমাত তুমিই বে, আমার

বিনোদিনি ! হাসিয়। বোলাও,
ফুলশরে জর জর জলেরে জিয়াও;
কুটিল-কুস্তল-বেঢ়ি কুস্থমকো—জাদ।
নয়ন কটাক্ষ তোমার বড় পরমাদ;
সীথের সিন্দুর দেখি দিন মণি ঝুরে;
এত রূপ-গুণ যার সে কেন নিঠুরে!!
বিনোদিনি ! চাহ-মুথ তুলি;
(তোমার) নয়ন-নাচনে নাচে, পরাণ

পীত-পিন্ধন মোর, তুরা অভিলাবে, পরাণ-চমকে যদি ছাড়হ নিখাসে ! হিয়ার মাঝারে উঠে, রদের হিলোলি পরশিতে করিসাধ পায়ের অঙ্গুলি। যত্নাথ দাস কহে এ নহে যুক্তি, কামু কাতর বড় রাথহ পীরিতি!

আরাধনের ধন—একথা জগৎ বিদিত ! মিথ্যা কথা কথনও জগৎ-ব্যাপ্ত হয় না।
বস্তুতই—আমার যজ্ঞ, জপ, দান তপন্তা সমস্তই তুমি। আমার মোহন-মুরলীতে
রাধা ব্যতিত আর কিছু বাজে না এবং আমার বদনেও—তোমার রূপ-গুণ
নামের-সম্পর্ক-শৃত্য-বোল উচ্চারিত হয় না, এই সকল অভ্রাস্ত সাক্ষি বিদ্যমানে
আবার মানের-অগ্নি-পরীক্ষা কেন ?

প্রিয়ে! তুমি কথনও কঠিনী নয়। সর্কাবস্থায়ই তুমি বিনোদিনী।
অতএব একটি বার মুথ-তুলিয়া সেইরূপ-বিনোদ-ভঙ্গীতে, এ অনুগতের প্রতি
দৃক্পাত কর। প্রিয়তমে! তোমার নয়নের নৃত্য—আমার প্রাণের—প্রাণ
অরূপ, তাহাতেই আমার প্রাণ সচেতন থাকে ও আনন্দে নৃত্য করে, তদন্তথায়
পুত্তলিকার ন্তায় অসাড় হইয়া পড়ে!

আর ভূমিতো জান—তোমার মনোহর-হেম-কাস্তির-উদ্দীপন করে বিলয়া আমি—অভিলাসের সহিত নিরত—পীতাম্বর পরিধান করি এবং তোমাকে একটি দীর্ঘ নিঃখাস ত্যাগ করিতে দেখিলেই, আমার প্রাণ-চমকিত হয়!! হায়! এই সকল প্রহাক প্রমাণ থাকিতে ও আবার পরীক্ষা ?

বিনোদিনি । একটি বার প্রণয়-সম্ভাষণে—আমাকে সংখাধন কর। কলর্পবাণে-জর্জারিত অমুগতের-প্রাণ-রক্ষাকর। হার হায় । এই বে তোমার কৃটিলকৃত্তল-বেষ্টিত পুল্প-জাদের মাধুরী এবং সরোম-কটাক্ষ-ছটা ইহাতেই আমার কত
প্রমাদ উৎপাদন করিতেছে । ওদিকে তোমার—সীথির-সিন্দুরের কান্তি দর্শনে

#### ( > ) (क्नांत्र ।

সাহসে ভর করি, রাই-চিবুকে ধরি, নাছ—বৈঠাওল কোর
"কাছে ছঃখ দেওনি ? কিফল পাওনি ?" বোলই, নওলকিশোর।

मজनि ! (कनी-विनानिनी-त्रांशा ! गान-विश्रुक्षन—गूकछ-वनन-भंभी, त्नार्था नारहा- छ्थ-नांशा । हुन्तरन, वनन—वक्षकत्रि,रवानहे,—''विशिरन, विनीकछनांथ---

অরুণ ঝুরিয়া মরিতেছে ! আর আমার, কেবলই মনে জাগিতেছে—'যাহার এত রূপ—এত গুণ সে কখন ও নিঠুরা হইতে পারে না ! ! এই রূপ ভাবিয়া ভাবিয়া আমার—ত্বপেক্ষিত হৃদয়েও রসের-তরঙ্গ-আগিতেছে। সাধ-হইতেছে একবার তোমার একটি চরণাঙ্গুণী স্পর্শ করিয়া প্রাণ জ্ডাই। বিনোদিনি ! না হয় একটি বার আমাকে, এই সাধটি পূর্ণ করিতে অমুমতি প্রদান কর।

স্থী-ভাবাবিষ্ট গীতকর্ত্তা—শ্রীমতীকে কহিতেছে! আর, ৰামতা—যুক্তি সঙ্গত নহে। কামু বড় কাতর হইয়াছেন। এখন প্রীতি-বিধান কর।

বঙ্গবাসীর সঙ্গীতসার-সংগ্রহে এবং পদ কল্পভরুতে—"চাহ মুখ তুলি রাই" বলিয়া এগীতের আরম্ভ এবং "জ্ঞান দাস কহে" ইতি ভণিতাল্প সমাপ্ত। পাঠের পার্থক্য এত অধিক যে, ভিন্ন ভিন্ন গীত বলিলেই দক্ষত বলা হন্ন।

(১০) এত ক্ষণের পর, নাগরী-মণির—সারস্ত-মৌন-ভাব-দৃষ্টে নাগরেক্সর সাহস আসিল। প্রিরতমাকে কোলে বসাইরা চিবৃক ধরিরা কহিলেন এত হুঃথ দেও কেন ? ইহাতে—কি-ফল লাভ হয় ? সম্ধানি রাধে ! এখন কেলী-বিলাসিনী হও। তোমার বদনচক্রকে মান-রাহুর ক্বল বিমুক্ত দেখিয়া স্থ-সিদ্ধতে মুক্তি-স্থান করি। (বিধন্তদ—রাহু। নাহোঁ—

বিকসই—অবিরত, তুত্ ভমরা-মত, যাহ মধুন-রস-চাথ"
"মালতি ছোড়ি, ভ্রমরা কাহা যাওব" কহত-কলা-নিধি-কান,
কুটিল-কটাথ-লাথ-শরে জর জর—করত-অধর-মধুপান!
মনসিজ-তরজনে, কিঙ্কিণী-গরজনে, হারসঞে টুটল মান,
কহে হরি বল্লভ, পরিরস্ত্রণ-মণি, করত পরস্পার দান!

हेि जिशोज हिन्छांगर्गा गर्धा वर्गत, मःकोर्ग-मरञ्जान, नवभी ऋगना।

ন্ধান করি। স্থেসাধা—স্থের সমৃদ্র) এই বলিয়া নবকিশোর-নাগর, রসময়ীর বদনে ঘন ঘন চুম্বন করিতে লাগিলেন। তাহাতে, ধনী-মণি-বদন বাঁকাইয়া, রসভরে বলিলেন:—কাননে কত লক্ষ লক্ষ লতা, অবিরত পূষ্পিতা হইতেছে, ভূমি তো মন্ত ভ্রমরা, যাওনা মধু-রসামাদন করিয়া আইস। (বেলী—বল্লী অর্থাৎ লতা (মত—মত্ত) কলা-নিধি, উত্তর দিলেন—মালতী ত্যাগ করিয়া ভ্রমরা কোথায় যাইবে? বলিতে বলিতে ললনা-মণির লক্ষ লক্ষ কটাক্ষ-শরে জর জর হইয়া উন্মন্তের স্থায় তদীয় অধর মধু—পান করিতে লাগিলেন।

কলপের তর্জনেও কিঞ্চিণীর গর্জনে মানিনীর হৃদরের হার ও মান ছই-ই ছিল্ল হইলেন। নায়ক নায়িকা পরস্পারকে-আ।লিঙ্গনরূপ মণি-সমূহ উপঢ়ৌকন দারা, সন্ধির শিষ্টাচার সম্পাদনে প্রবৃত্ত হইলেন।

# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

\*

#### चाथ नभागी क्रगना।

# ( > ) श्रीरगीतहत्त्रश्र—धानित्र।

ভাবে ভরলতমু—অমুপম-হেমরে ! অহনিশি নিজ-রসে-ভোর নয়ন যুগল, প্রেম—রসে-তর চররে ভূজতুলি-হরি হরি বোল ।

(>) আমার নবন্ধীপ-চল্রের স্থতর্থানি স্বতঃই অনুপম-হেম-গোর।
তাহাতে আবার ভাব-ভ্যণে-ভরা। তহপরি—দিবা নিশি নিজ-রসে (ব্রজেরমধুর-রসে) বিভার থাকার.—রম-তরঙ্গে-সদা- পরিলুত। আর, নয়ন যুগল
সদাই প্রেমরসে ঢল ঢল করিতেছে।। এইরূপে, আমার গৌরছরির—
লোকাতীত রূপের সহিত, ভাবালয়ার ও রসমাধুরীর—অপ্র্ব সমাবেশে,
ভাগ্যবান্ দর্শক-মণ্ডলীর মনোনয়নে—নিরস্তর মহোৎসব-সম্পন্ন হইতেছে।

দেখ, আজ কি মোহন ভঙ্গীর সহিত ভূজ-যুগল উত্তোলন করিয়া, আমার নবীর-নবন্ধীপ-স্থাকর, স্থা-মধুর কঠে— হরিবল বলিতে বলিতে রসাবেশে নৃত্য করিতেছেন। এ নৃত্যকলা, শিক্ষালন্ধ- অফুকরণ নহে। ইহা—ভাব-তরঙ্গে স্বতঃ প্রাচ্ছ তি মৌলিক বস্তা। দেখ, দেলন দোলনাদি সমস্ত চেষ্টাই অপরূপ-ভাব-সৌন্র্য্যে-স্থমণ্ডিত।! যে কোনও অঙ্গে দৃষ্টিপাত করিয়া দেখ, সমস্ত অঙ্গোপাঙ্গই যেন, আঁথিরূপ পাথীকেও মনরূপ কুরঙ্গকে স্থের নিগড়ে বাঁথিবার,—মন্মথ-কাঁদ।

দেথ আমার গৌর-স্থলরের—প্রতি অঙ্গ আজ নীপ-কুস্থমের-স্থমাপরাভবি পুলক-মুকুলে—পূর্ণ হইয়া উঠিয়াছে ! রসভরে-ফ্লয়—গর গর করিতেছে। চলিতে চলিতে পদখলিত হইয়া ভূপতিত হইতেছেন !! আর এই সকল শীলার – মহিমার ও রূপমাধুরীর—অনির্বাচনীয় প্রভাবে, বিষয়-বিমৃত্-মানবের নাচত গোর-কিশোর', থোর পঁত্রে ! অভিনব-নবদ্বীপ-চাঁদ ('ভাব ভরে-ছেলন, ভাব-ভরে-দোলন, প্রতিঅঙ্গে মনমথ-ফাঁদ !)

বিষয়াশক্তি পর্যান্ত চলিয়া যাইতেছে ! পাষণ্ডগণের পাপমতি—পবিত্র হইতেছে জ্ঞানীগণের জ্ঞান-গর্ক,যোগীগণের যোগনিষ্ঠা, যতিগণের নির্ভেদ-ত্রস্নামুসন্ধানের চেষ্টা—চলিয়া যাইতেছে ! জগৎ,—প্রেমানন্দে নিমগ্ন হইতেছে ! ! দেখিয়া, গীতকর্ত্তা গোবিন্দ দাস—গদ গদকণ্ঠে কহিতেছেন—বলিহারি যাই !!

এখন, স্বতঃই প্রশ্ন উঠিতেছে "ভাব" কি বস্তু ? রস-শাস্ত্রে এ কথার উত্তর এইরূপ :—পরাকাঠা-প্রাপ্ত-রাগ, স্বীয় প্রভাবে আস্বাদের বিষয় হইলেই ভাব হয়।

পুন: প্রশ্ন উঠিতেছে "রাগ কাহাকে বলে ?

উত্তর। প্রণয়ের অভ্যুৎকর্ষে অভিশয় ছঃখ ও মথরপে অনুভূত হওয়ার নাম রাগ। (ঐ রাগ, ক্ষণে ক্ষণে নৃতন হইয়া প্রকটিত হইলে, এবং সদানুভূত প্রিয়ন্তনক নবীন নবীন বৈধ করাইলে, তাহাকে বলাহয়-অনুরাগ)।

তৃতীয় প্রশ্ন ভাব, কত প্রকার 🔈 🗦

উত্তর। ভাব প্রধানতঃ ছই প্রকার (১) স্থায়ী ভাব (২) সঞ্চারী বা, ব্যভিচারী ভাব।

হাস্তাদি—প্রেমের অবিক্রম ভাব এবং ক্রোধাদি বিক্রমভাব এই উভর জাতীয় ভাব সমূহকে, স্বীয় বশে রাধিয়া—যে ভাব রাজার স্তায় বিরাজ ক্লুরে, ভাহাই স্থায়ী ভাব বা কৃষ্ণ রতি।

স্থায়ী ভাব, সমূদ্র স্বরূপ এবং সঞ্চারী ভাবগুলি, উহার তরক সদৃশ। হর্ব, ওংসুক, আকার-গোপন, বিভর্ক, অস্থা, দৈস্ত, গর্ব্ব, নির্বেদ ইভাাদি ভেত্রিশ সঞ্চারী ভাব আছে।

চতুর্থ প্রশ্ন "ভাবে ভরণ তম্ম" এই শব্দের দারা কি প্রকার ভাবে—তমু-পূর্ণ বৃঝিব ?

উত্তর। সুদীপ্ত সাধিক ও হর্ষাদি ব্যক্তিচারী ভাবে।

পঞ্চম প্রশ্ন। সান্ত্রিক-ভাব কাহাকে বলে ?

উত্তর। স্বস্ত,রোমাঞ্চ,কম্প,অশ্রু, বৈবর্ণ, স্বেদ স্বরভঙ্গ ও চেষ্টা-শুক্ততা এই

জিতল-নীপফুল,—পুলক মুকুল রে ! প্রতি অঙ্গে-অঙ্গে-বিধারি, নশ-ভরে-গর গর, চলই-খলই রে ! গোবিন্দ দাস বলিহারি !

# (২) শ্রীনিত্যানন্দ চন্দ্রস্থ—শ্রীরাগ।

আবে (মোর) আবে মোর,নিতাই-চাঁদ, তাপিত-অথিল-সকল জনে মবে মবে দিল (নিতাই),প্রেমের ফাঁদ! সিঞ্চিল নিতাই, নরন-কোণে

আটটির নাম সাধিক ভাব। শ্রীমহাপ্রভুর শ্রীঅঙ্গে এই সকল ভাবের বিকাশ দর্শনের সৌভাগ্য-লাভ—যাহার হয়, তৎক্ষণাৎ তাহার সর্ধ-বন্ধনচ্চিন্ন এবং পরম পুরুষার্থ লাভ ঘটে।

ষষ্ঠ প্রশ্ন। অনুপম-হেম-তত্ম ও অভিনব-চাঁদ—বলায়, কি বুঝা গেল ? উত্তর। (১) নির্মাল-স্বর্ণের কান্তিও, যে তত্মু-কান্তির নিকটে পরাভূত তাহাই অনুপম-হেমতন্ত্ব। (পদকল তক্, শুদাম্ত সমুদ্র, প্রভৃতি গ্রন্থে এই স্থানের পাঠ "হেম তন্ম অনুপমরে)"।

(২) গৌর শুধাকর—অকলন্ধ, নিত্য-পূর্ণ, দিবা রাত্তি প্রেম-কৌমুদী বিতরণকারী। হৃদয়াভ্যস্তরের—পাণ-তমো পর্যস্ত বিদ্রক। অঙ্গ-সন্তাপের সঙ্গে—ত্তিতাপের আলাদিও অপহারক। জগতের মঙ্গল-রূপ কুমুদের বিকাশক। বিশেষতঃ যেমন প্রাক্ত চল্লের কিরণামৃত বিনা, ওযধি এবং বৃক্ষাদি বাঁচে না, তেমনি এই গৌর স্থাকরের—কুপা-কিরণামৃত বিনা, ভক্তিলতা এবং ভাব-তক্ব বাঁচে না ও বদ্ধিত হয় না স্থতারাং তিনি,—অভিনব-নৰ্দীণ চাঁদ।

মন্তব্য — এ গীতের ৪র্থ পংক্রিট, আমাদের আদর্শ হস্ত লিপি কি উপরোক্ত কোনও গ্রন্থে—নাই! উহা কোনও প্রাচীন-লিপিকারের-প্রমাদের ফল মনে হওয়ায় পংক্তিটি—গৌর পদ তর্নিণী হইতে গ্রহণ পূর্বক, বন্ধনী ভূক্ত করিয়া মূলেই সন্নিবেশিত করিলাম।

<sup>(</sup>২) ইদানীন্তন, ভক্ত—ভক্তরাজ—ভক্তবর—ভক্তশিরোমণি—প্রভৃতি

অপার-করুণা (নিতাইর) গৌড় দেশে | চুলিতে চুলিতে কতনা ভাতি নাচিয়া বুলেন,(পছ) প্রেমের আবেশে! কমল চরণে করয়েগতি

নহা-মাহাত্ম্য-ব্যঞ্জক শব্দ-শম্হের—যদৃচ্ছা ব্যবহার প্রচলিত হইয়া উঠিয়াছে, বস্ততঃ—শুদ্ধ-ভক্তি বড়ই ছল্.ভ-ধন। যে হেতুক বেদ-নিষিদ্ধ-পাপাচারীর সংখ্যাই জগতে সর্বাপেকা অধিক; বেদ-বিহিত-ধর্ম-কর্মের অমুষ্ঠাতা, অত্যর। অধচ এই অত্যন্ন-সংখ্যক কোটি কর্মনিষ্ঠ-মধ্যে—২০১টা মাত্র জ্ঞানী পাওয়া যায়। আবার কোটি-জ্ঞানীর মধ্যে ২০১ জন মাত্র মুক্ত হয়; কিন্তু কোটি মুক্তের মধ্যেও কৃষ্ণভক্ত একটি মিলেনা!

জগতের হুর্দশা দৃষ্টে শ্রীচৈতক্স-চরিতামৃতের পূজনীয় গ্রন্থকার, এইরূপ আক্ষেপ প্রকাশ করিয়া, ভক্তির লক্ষণ বর্ণনা করিয়াছেন। যথা—

অন্ত বাঞ্চা, অন্ত পূজা, ছাড়ি জ্ঞানকর্মা, এই শুমভক্তি, ইহা হৈতে প্রেম হয়, আহকুলাে সর্বেজিয়ে রফাফ্লীলনা পঞ্চরাত্রে, ভাগবতে,—এই লক্ষণ কয়। তৎসক্রে—প্রেমের সোপান-শ্রেণীরও বর্ণনা করিয়াছেন। যথা,—পূণাতীর্থ নিসেবনাদি কোনও ভাগাের ফলে কদাচিৎ কোনও জীবের শাল্প-বাক্ষে শ্রদ্ধালাে, তিনি সাধু-সঙ্গ করেন। তৎফলে যত্রাগ্রহ জলিলে—ভক্ত রুক্ত-কুপায়, ভক্তির বীজ লাভ হয়। সেই বীজ, হাদয়ে আরোপণ করিয়া—শ্রবণ কীর্ত্তনাদি—ভক্তাঙ্গ-ঘাজন করিলে—ভক্তিলতা বিবর্দ্ধিত হয়,—হাদয় নির্মাল হয়,—সংসার-বাসনা, স্বর্গ-বাসনা, মুক্তি-বাসনাদি—অনর্থ সকলের নির্ন্তি হয়। তৎপর ক্রমণ: নিষ্ঠা, ক্রচি, আশক্তি ও ভাব, জাত হওয়ার পর—মানবের ভাগাে প্রেমলাভের কথা। অর্থাৎ পর পর এতগুলি সাফ্র্লা—নির্দ্ধিয়ে লাভ হইতে পানিলে ভবে—ইক্রসের-সিতোপলার্মপ-প্রাপ্তির স্তায়—ভদ্ধভিত্তি, প্রেমরূপে পরিণতা হন। এই প্রেমই, রদময় ও রস-ক্রীড়া-রত—ভগবান্কে ধরিবার ফাঁদ। এ ফাঁদে—তিনি আপনি সাধে সাধে বদ্ধ হইতে ভাল-বাদেন।

কিন্ত সমুদ্রের জরঙ্গ, শেমন—নিরম্ভর ভটাভিলাতি। ভগবানের "মায়া-শক্তি' সেইরূপ সদা-বহিন্দুখী বশিষা, তদধীন জীবগণেরও গতি—শ্বভাবতঃ কহ(রে) গদ গদ, ভায়ার কথা পুরদ জলে (ছই) নয়ন-রাতা। আর কত-গৌর, ছন্দর-তন্ত্র পুলক-কদম্ব-কেশর-বন্তু !

সংসারের অভিমুখে। আল্ল-স্থাশক্ত আমরা, একটি সামান্ত ব্যবহার্য্য দ্রব্যের মারা ত্যাগ করিতে পারি না,—ভূক্তি মুক্তি পর্যান্ত ভূচ্ছবোধে পরিত্যাগ আমাদের পক্ষে কত অসম্ভব—কত অসাধা ব্যাপার ।

অথচ স্বরং শ্রীমহাপ্রভুর শ্রীমুথের উক্তি এই:—

"ভৃক্তি মৃক্তি আদি বাঞ্ছা মনে যদি রয়। সাধন করিলে প্রেম উৎপন্ন না হয়॥" আবার—"কৃষ্ণ যদি ছুটে ভক্তে ভৃক্তি মৃক্তি দিয়া। কভু ভক্তি না দেন রাখেন লুকাইরা॥"

রসানন্দমর ভগবান্—ভদর্পিত-প্রাণ-ভগক্তণকে লইয়া প্রেম-ক্রীড়া করিতে বড়ই ভালবাসেন সতা; তথাপি ভুক্তি মুক্তি দিয়া ছুটিতে পারিলে সাধারণ সাধককে প্রেমদান করেন না। আপনাকে বাঁধিবার দাম, সাধ করিয়া কে পরের হাতে প্রদান করে ?

এই সকল কারণে—জীব-দাধারণ চিরদিন প্রেম-সম্পদে বঞ্চিত ছিল। জীবেব এই ভীবণ চঃথ—সহিতে না পারিয়া, সর্জাবতার-শিরোমণি আমার শ্রীগৌরচক্র ও শ্রীনিত্যানন্দচক্র—যুগপৎ শ্রীনবদ্বীপধামে সমুদিত হইরা, উহা আচপ্তালে সুটাইয়া দিতেছেন!!

এ গীতিটি—করণাবতার প্রীমরিত্যানলচন্দ্রের, প্রেম-বিতরণের প্রকার বর্ণনার পরিপূর্ণ। নিতাইচাঁদ দেখিলেন,—গ্রীগৌরহরির জগন্মঙ্গল নাম-রূপ-গুণ-গীলার—মুখ্য বা গৌণ যে কোনও রূপে—সম্পৃক্ত, ভাগ্যবস্ত-জীবগণ, প্রেম-লাভে ক্রতার্থ হইতেছে বটে, কিন্তু ধন-জন-বিদ্যা-গর্বিত—হতভাগ্য মানব-গণের এবং স্ত্রী, বাষক, অন্ধ, পঙ্গু, জড়াদি—অক্ষমগণের ত্রভাগ্য,—আশাফ্রপ্রপূর হইতেছে না!

"নিত্যানন্দ পূর্ণ করে চৈতত্তার কাম" – অতএব আমার নিতাইটাদ,
"প্রেমের ফাঁদ" হাতে লইয়া সকলের ঘরে ঘরে ঘ্রিয়া—প্রেম বিশাইতেছেন।
শ্রদ্ধা,—সাধনাদি কোন মূলাই জীবের লাগিতেছে না!!

তীর্থ-পর্যাটন ও পরিভ্রমণাদি উপলক্ষে তিনি দেশে দেশে ঘ্রিয়া, সংসার-

বিৰিধ ভূষণ-ভূষিত অঙ্গে ভকত মিলি (গায়) পরম রঙ্গে। (সো)-পদ-প্রেম, মাগ(রে) কামুদাদে শুনিয়া করুণা, বাঢ়ল আশে।

সম্ভপ্ত জীবনিচয়কে প্রেমর্জ্যু-পরিসিক্ত করিতেছেন। সেচনীর সাহায্যে বৃহৎ বৃহৎ ক্ষেত্র সকল ভিজাইয়া শস্তের-বীজ-বগনোপযোগী করার ভার আমার নিতাই-দ্যাল, আপন নয়নরূপ সেচনীর সাহায্যে সর্বত্ত প্রেম-সিঞ্চন ক্ষিতি-ছেন!

সর্বাপেক্ষা, গৌড়দেশের প্রতি তাঁহার অপার করণা। এ দেশের ঘরে ঘরে প্রেমাবেশে নাচিতেছেন, আর গদগদ-কণ্ঠে "ভায়ার কথা" অর্থাৎ প্রিগোরস্কলরের গুণ, লীলা ও ভগবভার কথা কহিতে কহিতে, তাঁহার আরক্ত (রাতা) নয়ন-দয় প্রেমাক্রতে পূর্ণ হইতেছে, আর আরক্ত-গৌর-মনোহর তম্বানিতে, কদম্ব কেশরের ন্থায়—প্লকাবলী ফুটিয়া উঠিয়াছে! আবার ভাব-ভ্ষণে-বিভ্ষিত-শ্রীঅক্ষে নানাবিধ ভ্ষণ পরিধান করিয়াছেন! যেন বিবিধান্ধ-সাধন-ভক্তিকে মণি-মৃক্তা-স্বর্ণাদির অলক্ষারক্রণে ধারণ করিয়া দেখাইতেছেন, উহা সর্কাবস্থায়—সাধকের অলক্ষার শ্বরূপ।

আরও দেখ, ভক্তগণের সহিত মহারক্তে—ভায়ার-গুণ-লীলাদি গান করিতে করিতে নানাভাবে হেলিয়া ঢুলিয়া স্থ-কোমল-চরণ চালনা দারা ধরণীকে ধয়্য করিতেছেন ! লীলার প্রভাবে নর-নারীগণ—প্রেমের পাথারে মগ্ধ হই-তেছে !!

গীতকত্তা উল্লাস প্রকাশ করিতেছেন—এ সকল বিশেষ করুণা, দেখিরা শুনিয়া—জীবাধম আমারও আশা বাড়িয়াছে। তাহাতেই শ্রীনিতাইটাদের শ্রীচরণে প্রেম মাগিতেছি।

এ গীতে যে সকল অক্ষর ও শব্দ () এইরূপ বন্ধনী দারা চিচ্ছিত করা গিয়াছে, আমাদের বিখাস উহা গায়কগণের "আখর" ঐ গুলি পদকরতক্তে ও গোর-পদ-তর্মিণীতে নাই।

#### ( 🛾 ) গিষ্কুড়া।

আমার—মন-চোরের, জগ-মোহন-জীবদনের-(বর্ধনা—বদন) প্রভাক্ষ ইক্র-দীলমণি-নির্মিত-দর্পণের-কান্তি, ধিকৃত হয় !! লোচন-যুগলের প্রভা, এমনই স্নিগ্ধ, মধুর ও মনোমৃগ্ধ-কর; মনে হয় যেন মুথমণ্ডল রূপ শারদ-ভ্যাক্রকে, অমল-নবীন-প্রজেরধারা কেহু পূজা করিয়া রাধিয়াছে!!

বাঁধুলী কুলের ভায় আরক্ত—হুরঙ্গাধরে—রসময়ী বংশীটি—বিলসিত। (আহা ! বংশীর কি মহাভাগ্য ! তাহারই জন্ম ধারণ দার্থক !)।

আর ভঙ্গীম।মর-বন্ধিম-গ্রীবার ভাব-মন্থর কর্ণভূষণ-অরতংস—ক্ষেপিরি মৃহ গতিতে কি স্থানর ছলিতেছে! (অংস-স্বন্ধ)।

স্থি ! সকলেই তো ললাটে চলনের তিলক ধারণ করেন কিন্ত ক্লাহারও তিলকের এমন অপরূপ শোভা কি কখনও দেখেছ ? এই নারী-মনোহরের

<sup>(</sup>৩) রূপান্তরাগিনী—শ্রীরাধা, কোনও সথীর নিকটে, শ্রাম-স্থলরের অসমোর্দ্ধনাধুর্য্য, বর্ণন-বাপদেশে-আস্বাদন করিতেছেন যথা:—সজনি! নল-কিশোরের রূপ-মাধুরী, জামার অন্তরে—এরূপ বদ্ধ-মৃল হইরাছে, যে এখন আর কিছুই আমার ভাল লাগেনা! যদি অ-পলক-লক্ষনের দ্বারা—শত-দুগ-ভরিয়া—এই সৌলর্য্য নিরস্তর নিরীক্ষণ করা যায় ভালা হইলেও বোধহয় ইহার অবধি (ওর) পাইতে পারিবনা; কারণ প্রতিক্ষণেই ইহা, নব মৰ-মাধুরীতে নবায়মান!!

ভালে—চন্দন-চান্দ, রমণী-মোহন-ফাল, তছুপরি মুক্তার ঝারা অনস্ত কহিছে, ঘন—চান্দের উপরে যেন, সঘনে বরিষে রস-ধারা

# ( 8 ) সিন্ধুড়া।

শুন সজনি ! অপরপ বিবহ-কো নাধা।
সহ চর, শতত্—কতত্—উপচারত, পারত ন পুন সমাধা !
চন্দন, চন্দ্র, সলিল, নলিনী-দলে, বিরচল নিবিধ উপায়
সবত্ বিফল ভেল,বজর-কো—আনল,জল-লবে কৈছে নিশায় ?

তিলকটি যেন—রমণী-মোহনের ফাঁদ !! তাহাতে নম্ন দিলেই, বাধা পড়িতে হয়! আবার উঞ্চীয-বসনের-অগ্রলগ্ণ-মুক্তার-ঝারা-গুলি, তিলকের উপরে নিপতিত হইয়া শোভার উপর শোভা বাঢ়াইতেছে!

( সঙ্গিনীর ভাবাবিষ্ট-গীতকর্ত্তা অনন্ত দাস কহিতেছেন ) সে ঝারাগুলিকে দেখিলে বোধ হয় যেন (কেশ রূপ) জলধর, (তিলক রূপ) চাঁলের উপরে ঘন ঘন রসধারা বর্ষণ করিতেছে (ঘন—নেঘ। রসধারা – জলধারা)।

<sup>(</sup>৪) গো-চারণ হইতে গ্রাগমন সমরে, স্থকীয়-দর্শনোৎকণ্ঠায়-সমাগতা৷
গোপ-স্থলরীগণের মধ্যে, শ্রীরাধার অপূর্ব্ব মাধুরী দর্শনে— কলপ্-কাতর শ্রীকৃষ্ণ,
রাধা বিরহে অধীর, আকুল ও অনায়ত্ব হইরা শ্রীরাধার নিকট দৃতী প্রেরণ
পূর্ব্বক আপনি কাননে অভিসার করায়, সেই দৃতী শ্রীরাধার সমিপে সমাগত
হইয়া কহিতেছেনঃ—

সজনি ! তোমার নিমিত্ত, নাগর শিরোমণির—অভ্ত-বিরহ-বিকার উপস্থিত ! তদীয় সহচর, কতশত প্রকারে চেষ্টা করিতেছেন, কিন্তু কিছুতেই

ত্রা-গুণ-কঞ্জ-পূঞ্জ, হিরেধারল— মাধব, শিশিরকো আশে
ত্রা মুথ-দরশ—পরশ, বিনে. সোপুন, বংঢ়াওল, বিগুণ হুতাশে
সো-অবমুরছিত, তবহু কঠিন-চিত—মনমথ, হানয়ে বাণ!!
ত্রা অধরামৃত, বিকু নাহি জিয়ত, হরিবল্লভ পরমাণ।

#### (c) জীরাগ।

ভূনি ধনী-শিরোমণি, মাধব-লেহ, ভূললি তমু, মন, ধন জন গেহ! অপরূপ প্রেমকো রঙ্গে, পহিরি না পারই, অভরণ, অঙ্গে !

তাঁহার তাঁপশান্তি হইতেছে না ! চন্দনে, চন্দ্রালোকে, স্নিগ্ধ-সলিলে, কমলের দলে—কত উপচারে—কত উপায় রচনা করিয়াছিলেন, সমস্তই বিফল হইয়াছে ! জল-কণাতে কি কথনও বজাগ্রি—নির্বাপিত হয় ? জুড়াইবার অভিলাষে
মাধব—তোমার ৩৭-রূপ-পদ্মিণী-পুঞ্জ হৃদয়ে ধারণ অর্থাৎ তোমার গুণালোচনায়
মনোনিবেশ করেন, কিন্তু তোমার অঙ্গম্পর্শ বা, বদন-বিলোকন ব্যতিরিক্ত সে চেষ্টায়—আগুন আরোও ছিগুণিত করিয়া দিয়াছে !! সে-আদরের
নাগরেক্ত অধুনা অচেতন-দশাগ্রস্থ !! কিন্তু কি হু:খ ! কঠিন চিন্তু নিষ্ঠুরমন্মণ, এমন শোচনীয় দশাতে ও তাহাকে বাণ-বিদ্ধ করিতেছে !!

স্থি ! এই মহোৎকট-বিরহ জ্বরের একমাত্র সিদ্ধৌষ্ধি-তোমার অধ্রামৃত তদ্ ব্যতিত আর কিছুতেই তাঁহার জীবনের আশা নাই !

তত্ত্রোপবিষ্টা অপরা সধীর ভাবাবেশে—গীত-কর্ত্তা হরিবল্লভ ( প্রীযুক্ত বিশ্বনাথ চক্রবর্ত্তী মহাশয়) বলিতেছেনঃ—প্রমাণিক কথা ! আমি নিজেই এ কথার সাক্ষি। (বাধা—হঃথ, কঞ্জ—পদ্ম; শিশির—শৈত্য, শীতশতা)

<sup>(</sup>৫) ধনী-শিরোমণি গ্রীরাধা, প্রাণ প্রিম্নতনের এই প্রকার প্রেম-বৈকল্য শ্রবণে আপন শারীর-ধর্ম, মনোধর্ম (আহার নিদ্রা ও অভিসারের স্থান সময়া-

উথকল মন মথ-সিন্ধ-হিলোক ভরমে উবারত মরমকো বোল! রস ভরে—মন্থর, চলই না পারি— নিন্দই – বৌবন, জ্বনকো ভারি: কত শত মনোরথ, আগে আগুসার দামোদর সঙ্গে রঙ্গে করু অভিসার।

#### (७) (वटनामात्र।

কঞ্জ-চরণযুগ, যাবক রঞ্জন, ধঞ্জন-গঞ্জন-মঞ্জীর বাজে। নীল-বসন, মণি-কিক্ষিণী-রণরণি, কুঞ্জরগমন-মদন, ক্ষীণ-মাঝে!

দির বিচারাদি) গুরু-গৌরব লজ্জা, ধৈর্য্য, গৃহ-ক্বত্যাদি সমস্ত ভূলিয়া গেলেন !
অনুরাগ, উৎকণ্ঠা ও বাাকুলতা-সংমিশ্রিত অপরূপ ভাব-তরক্ষে তাইার অঙ্গ,
চঞ্চল হইয়া উঠিল ! অভরণ পরিধান-অসম্ভব হইয়া পড়িল !!

মন্মথ-সিন্ধর-তরক্ষোচ্ছাসে—মনের কথা মুথে প্রকাশ করিতে ভ্রম জীনিতে লাগিল (ভরমে—ভ্রমে। উঘারত—উদ্ঘাটন বা প্রকাশ ক) রস-ভারা-ক্রাস্থতার নিমিত্ত গমনে অপারগ হইরা পড়াতে—নিজ-বৌবনের এবং জ্বনের গুরুত্বের, নিন্দা করিতে লাগিলেন।

কিন্তু, কি প্রকারে—কিদৃশ আদরে—কিরপ রস—কৌশলে, কান্তের মৃচ্ছপিনোদন এবং বিনোদন করিবেন—ইত্যাদি নানা মনোরণ, তাঁহার আগে আগে অগ্রসর হইন্না তাহাকে লইয়া চলিল। গীত কর্ত্তা দামোদর ও সধীর ভাবাবেশে মনোরঙ্গে, সঙ্গে চলিলেন।

<sup>(</sup>৬) গীত-রচিয়িতা, কবি গোবিন্দ দাস, অভিসারিণী শ্রীরাধার সঙ্গিনীর ভাবাবেশে-তাঁহারই নিকটে—আনন্দোচ্চাসে, তদীয় অভিসারের সৌন্দর্য্য সাধুরী বর্ণন করিতেছেন যথাঃ—

<sup>&</sup>quot;রাধে! কুঞ্জর-গমন-দমণি! ক্ষীণমধ্যে! শ্রাম বিলোদিনি। তোমার

#### नाकति, शाम-वित्नातिमे तार्थ!

অঙ্গহি অঙ্গ, অনঙ্গ-তর্গিন,মদন-নোহন-মনমোহিনী ছাঁদে।ঞ। কনক-কটোর—চোর, কুচ-কোরক-জোরে, উজোরল খোডিম-দাম

ভূজ-যুগ-থির-বিজুরী-পর, মণিময়-কঙ্কণ-ঝলকিত, চমকিত কাম মধুরিম-হাস—হ্ণারস-মিরসন, দশন-ক্যোতি, জিতি—মোতিম কাঁতি।

হুভগ-কপোল, লোল-মণি-কুগুল,দণদিশ ভরল নয়ন-শর-পাঁতি,

অণ্যকার অ্তিসার সজ্জাটি যণার্থই হলন-মোহনের মনোমোহিণী ছাঁদে বিরচিত হইয়াছে !

পদ্ধ-বিনিন্দত-চরণ-যুগণ-অবজ্ঞক-রঞ্জিত; ধঞ্জন-গঞ্জন-রবে তাহাতে—মুপুর নিনাদিত হইতেছে! অনন্ধের লহরী-লীলা—অঙ্গ হইতে অঙ্গান্তরে তরঙ্গিত হইতেছে! স্বৰ্ণ-কটোরির—নেশান্দর্যাপহারী-কূচ-কূট্বাণ-যুগণে—সমুজ্জন-মুক্তাহার (মোতিমদাম) এবং স্থির সৌদামিনীর সদৃশ-শোভাময়-ভূজ্যুর্গণে মণি-নির্শ্বিত-কঙ্কণ বালসিত হইয়া, সৌন্দর্য্য-দর্পী-কন্দর্পক্তেও চমকিত করি-তেছে!

মাধুর্ঘামর-হাত্মামৃতে, স্বর্গের স্থাকে—নিরসন করিতেছে। আর মধ্র-হাত্ম-বিকশিত—ক্তুফ্চি, নির্মান-মুক্তার কান্তিকে পরাভৃত করিতেছে! কপোল-বিলোলিত—ক্ষুদ্মর-মণি-কুগুল-সঞ্চালনে ঘেন দশদিক কল্প-শ্রে ভরিরা যাইতেছে। পোতি—পংক্তি, সমুহ।)

তোষার আচ্ছাদিত কবরীর ও ললাট্ছ চূর্ণ-কুন্তলাবলীর—এবং বর্মব-ধর্বং—জ্র-যুগলের — ডক্লীমান্ত্র-সৌল্র্যা-মহিমা-দর্শনে, আল তোমাকে বেম মৃত্তিমান্—শিঙ্গার-দেবতার, অধিদেবী বলিয়া বোধ হইতেছে!! (চক্ত্র-চক্ত্র, ইত্যাদিবং প্রয়োগ)।

भाग्रे नम्रा ७ भन्कत्र <del>जक्र</del> हर्ष इत्वत अध्याः भारत भारत भारत ।

ঝাঁপল কবরী, ভালে-অলকাবলী, ভাঙ,-ধসুরা ধসু মনমথ-

দেবি.

त्गाविक गांत्र, क्षमद्वा व्यवधातन, यूत्रिक शिक्रांत-(मव-व्यथिएमवी,

#### ( **१ ) কামোদ।**

ছত্ত হত্ত নয়নে—নয়নে যব লাগল, জাগল—মনমথ-রাজ বদন ফিরাওলি, অঞ্চল ঢাকলি—রাধা, অভিভয় লাজ !

( আজু ) কাননে কাম-কলা-রস-রঙ্গ, কত কত চাটু করত, নব-নাগর, ধনী,না দেখাওত অঙ্গ,॥ গ্রন্থ।

রঙ্গ-তরঙ্গিণী-রঙ্গিণী'। অধিকস্ত করতরুতে তৎ-শেষাংশেরও, এইরূপ পাঠান্তর---"কোটা মদন মন মোহিনী ছাঁদে" আরও কুদ্র কুদ্র পাঠ-বৈষ্ম্য আছে এবং "মঞ্চরণ যুগ" ইতি পাঠে, গীতের আরম্ভ।

(৭) খ্রেমন্থী, প্রাণেখরের সন্নিধানে উপনীত হইলে—পরস্পরের নয়নে নয়নে সন্মিলন হওয়া মাত্র, কলপ্রাক্ত জাগিয়া উঠিলেন! কিন্ত স্থীগণকে দেখিয়া যেন নাগরী-মণি অতি-শাজ-ভয়ে বদন ফিরাইয়া—বসনাবৃত করিয়া রহিলেন!

সমর ব্ঝিয়া—স্থীগণ কুঞ্জের বহির্ভাগে চলিরা গেলে,কাম-কলার রদরক—
আরম্ভ হইল। অঞ্গ-উল্মোচনের নিমিত্ত—নব-নাগর নানাবিধ চাটুকারিতা,
প্রকাশ করিতে প্রবৃত্ত হইলেন, কিন্তু রসমন্ধী কিছুতেই অনাবৃত্ত-অলমাধুরীপ্রকাশ করিতেছেন না!

রসিক-মৌলী-মণি, আপন কর-পরবের সাহায্যে, অভিশাস সফলের প্রেরাস পাওয়ার, বিনোদিনী আরও দৃঢ়রূপে ব্যাঞ্চল গুজিতে এবং স্বীর অকল গহত, করে কর বারত, কঙ্কণ ঘন ঘন দান পরশত চরণ মানাওত; সহচরী—লোচন-ইঙ্গিত জান। ঘোলট খোলি, বদন-বিধু-অলকনি, কুগুল-বালকনি দেখি নিজ লোচন মন-ভূলল বল্লভ,ভৈগেল, চিত্রস-লেখি।

### (৮) শ্রীরাগ।

ধনী নাগর-কোর ! ধনী নাগর-কোর ! । ধনী রঙ্গিনী-রাই, ধনি রঙ্গিনী-রাই, বিশসই রাই । স্থাধের নাহি ওর !! । হরি বিশসই । কতরস অব গাই !

করে নাপ্রের করের-অ্ঞা-গতি—নিবারণ করিতে বাগিলেন। ভাহার ফলে—ঘন ঘন কমণের নিরুণ সমুখিত হইয়া লালসিত-নাগরেক্রের আরও উমাদনা বাড়াইতে লাগিল। পরিশেষে সহচরীর নরনেঙ্গিত পাইয়া, ভামিনীর বামতা বিদ্রণের—চরমোপায় আচরণ অর্থাৎ চন্দ্রাননীর চরণ-ধারণ করিয়া, সফল মনোরথ হইলেন। প্রিয়তসার প্রফ্লত্রে বিধানের পর ঘোলট—(বোমটা) উদ্ঘাটন করিয়া ঘোমটা ইততে বদন আগগ্ অর্থাৎ পূৎক্ করণান্তর শ্রেমটার অপূর্ব বদন-মাধুরী ও বদন-বিধুর উচ্ছিল্ত-সোন্দর্য-প্রতিবিধিত-ক্তল-ম্গলের ঝলমলি অবলোকনে বল্লভের লোচন মন — জগৎ ভূলিয়া— সেগানেই বাঁধা পড়িল। তিনি হাচিত্রিত-ছবির স্থায় অনিমিথ ও নিশ্চল হইয়া রহিলেন। বল্লভ শব্দের ম্থ্যার্থ— শ্রিক্তঃ। শ্রেমার্থ—গীতকর্ত্রা হরিবল্লভ।

<sup>(</sup>৮) জালরদ্ধে, দীলাদর্শন, ঝারিণী কোনক সথী অপরাকে কহিতেছেন দেশ, আমাদের প্রম-রঙ্গিনী-ধনী-মণি, এতক্ষণ—বুথা বামতাময়-রস-ক্লা নৈপুণ্যের-প্রদর্শন দারা কেলি-তৃষাকুল-নাগর-রাজেক্রের আগ্রহ ও অনুরাপেরঃ চর্ম পরিণতি প্রাণাক করিয়া— অধুনা দাক্ষিণ্যের অবধি—প্রদর্শন করিতেছেন,

হরিমানস সাধা, হরিমানস সাধা বিলসই, শ্রাম-পরাজিত- রাধা !! হরি স্থনরী- মুধে, হরি, স্থনরী-মুধে ভাষুন দেই-চুম্বই, নিজস্বধে! ধনী রন্ধিনী-ভোর, ধনী বন্ধিনী ভোর ভূণল গরবে কামু করি কোর!

ইতি শ্ৰীগীত চিস্তামণো পূৰ্ব্ধ বিভাগে মধ্যা বৰ্ণনে সম্পূৰ্ণ সম্ভোগ দশমী ক্ষণদা।

স্বয়ং কেণী-বিশাসের কর্ত্রী হইয়া—নাগরের কোরের উপর বিরাজিতা হইয়াছেন ! ! হায় ! এ স্মানন্দের ইয়ন্তা নাই !

দেখ দেখ আমাদের রঙ্গিনী-রাই আজ কত রুসে ডুবির:—বিহার-বৈপরিত্যে হরির সহিত—বিলাস-সংসাধন করিতেছেন! বৎকর্তৃক প্রতিপদে খ্যাদের পরাজয় ঘটে,আমাদের সেই-রাধা আজ তেমনি করিরা বিলাস কলায়—শ্যামের মনের সাধ পূর্ণ করিতেছেন, আর হরি—ভাহাতে ক্বতার্থ হুইরা স্থল্পরীর স্থবদনে চর্বিত-তাম্ব্র প্রদান করিতে করিতে কত স্থাধ চুম্বন দান-করিতেছেন!!

দেখ দেখ, মহা-লীলার উপসংহার দৃষ্ট — আরও মধুর ! রজিণী-মণি, নারিকারিত-নাগরকে বক্ষে ধারণ করিয়া—গৌরবের ভরে, বিভার হইয়া রহিরাছেন!!

পদকরতকতে "ভরি-নায়র কোর" বিশরা এ গীতের আরম্ভ। এবং নিয়লিখিত পংক্তিগুলি অধিক রহিয়াছে: "হছ-হছ-গুণ গায়; একই মৃয়লীরদ্ধে ছজনে বাজায়। কেহ—কেহ মৃহ-মৃহ-ভাষ,নাগরী-পরশে-অবশ,পীত-বাস। কেহ কাড়ি লয়—বেণু, রাস-রসে-আজি ভ্লল কাছ।" তাহাতেও গীতকর্তার নাম-মৃক্ত ভণিতা নাই! প্রকরণ-মঙ্গতি-রক্ষার্থ বাধ হয় এই অংশটুকু এ গ্রহে গৃহীত হয় নাই। পদকরতক্তে এ গীতিটি য়াসের প্রকরণে ভিরাক্র্য হইয়াছে।

## শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### चथ এकामनी कनमा। .

( ) औ(भीत हट्यमा—धानमी।

বিগল-ছেম-জিনি, তুমু অমুপমরে !
তাহে পোভে নানাফুল-দাম,
কদম্ব-কেশর জিনি, একটি পুলকরে !
তার মাঝে বিন্দু বিন্দু ঘাম !
জিনি মদ-মত্ত-ছাতি, গমন মন্থর অতি,
ভাবাবেশে চুলি চুলি যায়,
অরুণ-বসন-ছবি, জিনি প্রভাতের রবি,
গোরা-অঙ্গে লছরী থেলায় !

ঐ দেধ তাঁকার বিমল-হেম-বিনিন্দিত অরপন-তমুতে, নানা সুলে নির্দিত

<sup>(</sup>১) অর্ণের কান্তি সভাবতঃই অতি স্থলর এবং চিরকাল অবিক্লত থাকে অর্ণের সহিত সমাক উপমার বস্তু বিরল। পোড়াইরা দ্রবীভূত করিলে, মলাদি দগ্ম হইরা—স্বর্ণ আরও উজ্জল হর। এই প্রকারে, বন্ধ-দগ্ধীকৃত স্বর্ণের কিয়া লাখুনদলাত-স্বতঃ-বিশুদ্ধ—বিমল-হেমের বর্ণ হইতেও প্রীগোর-স্থলরের মর্নাভিরাম—হেমকান্তি আরোও স্থলর—আরোও সূর্ত্ত্বল এবং চিতাকর্বক। অর্ণের-গার—খুনী, মৃত্তিকাদি লাগিলে তাহার সৌক্র্যাও স্থানতা হাস বা নই হর কিন্তু হেমাল-স্থলর-গোরহরির-শ্রীজ্ঞানে, প্রেমে ভূদুর্গনাদি জ্ঞানিত—খুলা-কর্দ্ধে—আরও অধিক্তর শোভা বিক্লিত হয়। ভাই! এক্টিবার আমার নববীপ-স্থাকরের অম্পম রূপ-মাধুরী অবলোকন করিয়া নরন সকল করঃ—

চলিতে না পারে, গোরাচাঁদ গোসাঞীরে,\*
বলিতে না পারে আধ-বোল,
ভাবেতে ণ আবেশ হৈয়া,হরি হরি বোলাইয়াঞ্
আচণ্ডালে ধরি দেই কোল!
এ অ্থ-সম্পদ-কালে, গোরা না ভিকিন্স হেলে,
হেন পদে না করিমু আশ,
শীর্ষটেততা চল্লে, ঠাকুর শ্রীনিত্যানন্দ,
গুণ গায় বুন্দাবন দাস।

ভক্ত-দত্ত মালা—কি অপূর্ব্ব শোভা বিস্তার করিতেছে! এবং পুলক নামে যে একটি সান্ধিক ভাব আছে, আমার প্রভুর শ্রীঅঙ্গে উহা—কদম্ব-কেশর হইতেও স্থানর, স্থাপান্ট এবং সর্বাঙ্গ-ব্যাপী হইয়া প্রকাশ পাইতেছে। আর তাহার মধ্যে মধ্যে বর্দ্ধ-বিন্দু-সমূহ, (মুক্তার স্থায়) শোভা বিস্তার করিতেছে।

মদ-মন্ত-মাতকের স্থায় মন্থর-গমনে—ভাবাবেশে— চুলিয়া চুলিয়া চলিতে-ছেন! তাহাতে—বালাকণ-বিজয়ী— অরুণ-বসন-থানি যেন আনন্দোলাসে; নাচিয়া নাচিয়া তম্রূপ-লাবণা-সাগরে, মাধুর্য্যের-লহন্নী তুলিয়া ক্রীড়া করি-তেছে!! ভাব-ভরে চলিতে পরিতেছেন না!তথাপি আচপ্তাল পর্যান্ত যাবতীয় জীববৃদকে 'হরি বোল' বলাইতেছেন, আর ধরিয়া আলিজন দান করিতেছেন!

গীতকত্তা বৃন্দাবন দাস ঠাকুরের আক্ষেপ-দৈন্তোক্তি—হার ! প্রথে সম্পদ-লাভের এমন স্থসময় পাইয়াও, কেবল হেলা করিয়া, অসাধনে-প্রম পুরুষার্থ—দাতা, এমন দ্বার ঠাকুরকে ভজিলাম না!! ভজ্ন দুরের কথা,

পাঠান্তর—\* "চলিতে নহিক পারে, গোরা চান্দ হেলে পড়ে"। † প্রেমেতে। ‡ পতিতেরে নির্থিয়া। ইত্যাদি অশ্রুত পাঠান্তর গৌরপদ-তর্মিনীতে বর্ত্তমান।

## (২) শ্ৰীনিত্যানন্দচন্দ্ৰয়্ম—কামোদ।

প্রেমে মন্ত নিজ্যানন্দ, সহজে আনন্দ-কন্দ,

চুলিয়া চুলিয়া চলি যায়,
ভায়ার ভাবেতে মন্ত, জানেন সকল জন্ত,
হরি বলি, অবনী-লোটায়!
(নিজাইর) গোরা-প্রেমে গঢ়া—জন্মুখানি।
ভাইয়ার\* মুখ হেরি, লুলিয়া লুলিয়া পড়ে,
ধারা বহে—সিঞ্চয়ে ধরণী॥ ৪৮॥

তাঁহার একেন প্রেম-ভাণ্ডারের উন্মুক্ত দ্বার—শ্রীচরণে, আশাবদ্ধও হইলাম না !! আমার উপার কি ? সাধ্গণের মুখে শুনিরাছি—শ্রীঞ্রিফটেডক্ত-নিত্যানন্দের শুণ-পান বঞ্চিত জনের—পরমোপার। অতএব মনের সাধে শুণ গান করিতেছি।

(২) আৰু আর্ত্রক প্রভৃতি অর্থাৎ উদ্ভিদ-বিশেষের, পৃষ্টি-বর্দ্ধক অথচ আত্মাদন-বোগ্য মৃলাংশের নাম—কন্ম। শ্রীনিত্যানন্দ-চন্দ্র আনন্দ-পাদপের কন্দ-স্বরূপ। বেমন—বৃক্ষের পৃষ্টিবর্দ্ধক, তেমনি—জীবগণের জীবন-সাধক-উপাদের-পরম-রনে—পরিপূর্ব। সাধারণ কন্দ প্রায়শঃই রোগের ঔষ্ধি; আনন্দ-কৃদ্ধ নিতাই—ভ্র-কোগের সিদ্ধোষ্ধি।

আমার নিতাই-চাঁদ স্বতঃই, প্রোম-রদে নিত্য বিভার; তাহাতে আবার আত্ম তারার অর্থাৎ শ্রীগোর স্থলবের ভাবে মাতোরারা হইয়া উঠিয়া-ছেন। !

কি উপাদানে—কি কারণে—কি করিবার নিমিত,ভারা—গৌর হইয়াছেন, নিডাই-চাঁদ সকল তত্ত্বই জানেন; তাই, ভাইরার-ভাবাবেশে এমনি প্রমন্ত

পদক্ষতক ও গৌর-পদ-তরঙ্গিনীর পাঠান্তর—\* গদাধরের।

অবৈত আনন্দ-কন্দ, হেরি-নিতাইর মুখচন্দ্র,
হুঙ্কার পুলক শোভে ভায়। শ
হরিবল-বেলা করে, গউর গউর বলে,
প্রিয়-পারিবলে গুগ গায়। গ্রঃ
গোলোকের প্রেম বস্থা, অবনী করল ধন্যা,
অতৃল-অপার-রস-সিন্ধু।
মাতিল জগত ভরি, নিভই চৈতক্ত করি,
রার অনস্ক মাগে বিন্ধু।

হইরাছেন যে অল ধারণের সামর্থ্য নাই! "হরি হরি" বলিরা চলিতে চলিতে—অঙ্গ এলাইরা কেবলই অবনী-ল্টিত হইতেছেন!

ক্ষীর বা শর্করা ছারা নির্দ্মিত—পুত্তলিকার সর্বাংশই যেমন ক্ষীর বা শর্করাময়, তেমনি আমার নিতাই-চাঁদের তম্ম থানি—কেবল গৌর-প্রেমে গঢ়া! ভারার-মুথ-পানে চাহিয়া কারুণ্য রসে কেবলই লোল হইয়া পড়িতেছেন আরু নরনাশ্রতে পৃথী পরিসিঞ্চিত হইতেছে!!

এই প্রকার ভাবে-বিভাবিত-নিত্যানন্দ-চক্রের প্রীবদনধানি নিরীক্ষণ করিয়া, জীবের নিমিন্ত সন্তপ্ত-প্রাণ আনন্দকন—প্রীঅবৈতচক্রও আগন অভীন্দিত-ভন্তি-প্রচার ও অগচদারের—আশাতীত সাফল্যদৃত্তি—মহানন্দে হুঙার করিতেছেন এবং প্লকাবলীতে শোভিত হইরা উঠিয়াছেন। প্রির পার্শনগণের সহিত কথন—হরিবল—হরিবল—করিতেছেন, কথনও বা গৌর! গৌর! বলিয়া মহাপ্রকুর গুণগান করিতেছেন।

দেখ, গোলোঁকের অপার-রস-সাগরের অভূল-প্রেমবস্তা বৃন্দাবনের বেলাভূমি ভূবাইরা আজ সমস্ত অবনাকে ধস্ত করিতেছে ! সমস্ত জগৎ—-"জর নিতাই চৈতক্ত ! " বলিতে বলিতে মাতোরারা হইরা উঠিতেছে ! !

<sup>†</sup> গার। ‡ পারিবদগণ ধার। পদকরতক ও তর্ক্তিণীতে এইরূপ অসঙ্গত পাঠান্তর বর্ত্তধান।

### (७) छ्रहे— श्रीकृषः वाह।

রঙণ সন্দির-মাহ, বৈঠলি হুন্দরী, স্থী-সঞ্জে রস-পর্থাই, হুস্ইতে খুস্ই—কভ্ছ স্থি-সোভিস, দুশ্ন কিরণ অবছাই।

( खन मक्रि !) करहेर्ड ना क्र ह ना क !

टगा वत-नांतो हागाति मन-वातग-वाक्षन, क्र - शिति-मावा ॥ ध्रः ॥

मञ्च-म्थ टहति, खतम-छत्त स्मातो, वाशह वाशन ट्रा क्रिन-क्रोथ-विभिट्ग छन्न क्रत क्रत-क्रोवरन ना वाक्षहे ट्रा ।

গীতকর্তা রায় অনন্ত, সাধক-ভক্তোচিত দৈল্লোজিতে কহিতেছেনঃ— প্রভা ! এ দীন হীনকে—এই বিশ্ব-প্লাবিনী-প্রেমার একটি থিন্দু—দান কর ! এই রূপ আক্ষেপোৎকণ্ঠাময় প্রার্থনা—কুণা প্রান্তির অব্যর্থ উপায়।

(৩) নিজভবনের কোনুও সম্ক্র-মণি-মন্ধিরোপরি সথী-সংবৃতা ীরাধা উপবিষ্টা। এমন সমরে কোনও ব্যাপদেশে কিঞ্চিদ্র-বৃহিদ্দেশ, প্রেম-পিপাসিত—নাগর-শিরোগত্ব সমাগত হওয়ার পরস্পারের দর্শনে—উভরেই কলপ্-পীড়িত এবং আঁকুলিত হইয়া উঠিয়াছেন। জীক্ষণ ঘরে প্রভাগননের পর, সন্মিলনের উপার বিধানোদেশে কোনও আগ্র-দৃতীর নিকটে, আপনার অবস্থা প্রকাশ করিতেছেন, যথা—

দেখিলাম, সে স্থলরী রক্স-মন্দিরে বসিরা, স্থীগণের সহিত, র্ন-প্রথামুদ্ধপ হাস্ত পরিহাস করিতেছে। সে হাসির সহিত দশনের কান্তি অধিচ্ছুরিত (মিশ্রিত) হট্যা কত মণি মুক্তা—থসিরা পড়িতেছে!

হানরে মাদক-কথা বলিতে কজা থাকে না—তোমাকে সমস্ত বলিতেছি তন:—স্থি! দে রমণী-রাজী, আমার মন-মাতসকে স্থানীর কুচগিরি-যুগলের মধ্যস্থলে বাধিয়া রাখিয়া দিয়াছে!! সে, আমার প্রতি—এক অপূর্ব-ভঙ্গীময়-কটাক নিকেপ করিয়া, —সমন্ত্রমে বস্ত্রোত্তগন পূর্বক আপন দেহারুত করিল,— করে কর জোরি, সোরি ততু-বল্লনী, মোহেহেরি-স্থী-করু-কোর গোবিন্দ দাস ভণ, তে নন্দ নন্দন—দোলত মদন-হিলোর ?

### ( 8 ) मधी-कृष्णगादः। धानिता

নিলিশ্য-সঙ্গে, জুঙ্গ-মণি-মন্দিরে, দশদিশ হেরইভে রামা, কোজানে কিথেনে, তোহে দিঠিলাগল,মুরছি পড়ল সোই ঠামা (মাধব!) কিজুয়া নয়ন-সন্ধান!

क्ल-शिति-ताल, लाज-चन-कञ्क-एडिन यत्र भराहान ॥ ध्व ॥

সে কুটিল-কটাক্ষ-শরাঘাতে আমার শরীর একেবারে অর অর হইয়া গিরাছে, আর জীবনে স্থিরতা বন্ধন হইতেছে না অর্থাৎ কিছুতেই প্রাণ-স্থির করিতে পারিতেছি না।

আর ও দেখিলাগ—সে স্থানরী উভর হস্তাগ্র একত্রিত করত, অঙ্গ-মোড়া দিরা আমার প্রতি চাহিতে চাহিতে স্বীয় রুখীকে বক্ষেধারণ করিল, স্থি! এই সকল স্থাভিযোগ দর্শনে আমার ধৈর্য লোপ হইরা গিয়াছে।

সংখাধি গা-স্থীর ভাষাবেশে—গীতকর্ত্তা গোষিক্দ . দাস উত্তর করিতেছেন, তাহাতেই বৃঝি আজ রাজ-সভার-আনক্দ পরিহার পূর্বক নক্দ-নক্ষন—মদন তরজে দোলায়িত ?

<sup>(</sup>৪) শ্রীরাধার নিকট হইতে সমাগতা কোনও দৃতী (এই গাঁতে)
শ্রীক্ষেত্র নিকটে—রাধার অবস্থা বর্ণন করিতেছে, যথাঃ—আজ, নিজ
ভবনস্থ তৃঙ্গ-মণি-মন্দির হইতে, সে ধনী—রঙ্গিণ-স্থীগণের সহিত দশ
দিগে স্বভাবের শোভাদি—নিরীক্ষণ করিতেছিল, এই সমরে হঠাৎ তোমাকে
দেখিতে পায়। কি ক্ষণে ভোমার বদনে ভাহার দৃষ্টিপাত হইরাছিল শানি না
দর্শনের ফলে—সেথানেই সে মুর্ভিত হুইরা পড়ে!!

वितर-वियानल, ख्नाड कलावत, मचत्न नूर्घे गही-शक्षा, खूर स्थूरम्थ-मिन,—(डाट् इड़्रा बानि, धनी-वथ-विथूल-कलका मव महहती मिनि, कड बाण-बामव, द्विन द्वारे ना बान, द्वाविष्म पान छन, द्वाहाति श्रत्म-शन, नह देवट्ड तहड श्रान ?

### (৫) বরাড়ি।

८थाभरका काहिनी, खनल मुताती, रेशर्रेन, मनमिक-विनिथ, स्र-धाति । উতরোল-চিত-ধৈরষ দূরে গেল, তরল—নলিনী-দল-জল সম ভেল।

মাধব! তোমার নয়ন-সন্ধানের-অভ্ত শক্তি! উহাতে, কুল-গৌরবের সমুচ্চ-গিরি-প্রাকার ভেদ করে—লজ্জার-স্কৃত্-বর্ম চ্ছেদন করে—করিয়া, একেবারে ছদয়ের মর্মস্থানে বিদ্ধ হয়! রাই-বিনোদিনীর-ভাহাই ঘটাইয়াছ; একণে, বিরহ-বিধাগ্নিতে—বিনোদিনীর-কোমল-ভম্পানি জ্লিয়া গেল! সেভীত্র-ভাপ সহনে অসম্প্রি ইইয়া, স্কুমারী-ধনী, মৃৎ-পক্ষে-বিলুট্টিত ইইডেছে!!

ভূমি—স্থুক্ষ গণের শিলোমণি—বলিয়া বিথাত। কিন্ত আল বুঝি, নারী বংধর-বিপুল-কলঙ্কে,— সে স্থাগতি বিলুপ্ত হর !

সহচরী সকল সম্মিলিত হইয়া আখাস ঘারা—সরলা বালাকে শান্ত করার চেষ্টা করিতেছে, বটে, (আশ-আস—আখাস) কিন্তু কেহই বেদনার পরি-মাণ ব্রিতে পারিতেছে না! কত আখাস দিবে? আর এরপ ভীষণ-বেদনা কি শুধু আখাসে প্রসমিত হয়? তাঁহার, আখাসে স্থায়র হইবার অবস্থা নতে! আমি আনি কেবল তোমার অঙ্গ স্পর্শের প্রতিজ্ঞায় এখনও প্রাণ রহিরাছে, নহিলে এমন অলৌকিক, এমন ভীষণ-তম-বিকারে কেহ বাঁচে না?

<sup>(</sup>৫) প্রাণ-প্রিয়তমার প্রেম-পীড়ার কাহিনী ভনিরা, মুরারীর (কুৎসা বিনাশক ক্লঞের) হৃদর, স্থতীক্ল-কন্দর্প-বাণে বিদ্ধ হইল! (স্থ-ধারি—উত্তর

নিজ-মুথে কি কহব, অন্তর-নেহ, সহচরী কোরে সপল নিজ দেহ; কালু কে৷ পীরিতি-আরতি, জানি চললি স্থী, ধহি হরিণী-নয়ানী; পির কো মরম, পুছলি রামা, কৃছে হরি বল্লভ—হরি-গুণ গামা

(७) (मनी नता छ ।

বহজি, সংগ্র-স্মীরে—গদন মুপনিধার, স্ফুটজি, কন্ত্র-নিকরে—বিরহি-হাদর দলনার॥১॥

রূপে ধার দেওয়া; বিশিশ—ৰাণ) তাঁহার চিত্ত অস্থির এবং দৈর্যা দুর হইল। তিনি, নলিনী-দলগত-জলের ভার তরল অর্থাৎ— অনপস্থিত হইরা উঠিলেন। অন্তরের প্রেম-ভান (নেহ— স্নেহ) মুখে বলিতে না পারিয়া—সহচরীর ক্রোড়ে (দুতীর কোলে) দেহ সমর্পণ হারা ব্যক্ত করিলেন—"তোমার শরণাপক্ষ হইলাম, যে রূপে হয় রাধার সহিত মিলাইয়া দেও"

কাহর এই রূপ প্রেমার্ভির-আভিশ্বা দৃষ্টে; সথী আশ্বন্ত হটয়া মৃগ-নয়নী রাধার নিকটে প্রত্যাগমন করিলেন এবং "হরিগুণ গামা" অর্থাৎ ক্রফের প্রেম গুণের বর্ণনা করিতে লাগিলেন। (গাম—গ্রাম, সমূহ) এ গীতিটি স্থী-ভাবাবিষ্ট শীযুক্ত বিশ্বনাথ চক্রবর্তী মহাশ্রের স্বর্গিত।

(৬) পুনরায়—গ্রীরাধার নিকটে যাইয়া দৃতী বলিতেছেন:—স্থি ! কাননে, মদনোদ্দীপক মলয়-সমীয়ল, প্রবাহিত এবং বিরহীর হাদয়-বিদলক কুস্ম-সম্ভ প্রাকৃতি হওয়ায়—তোমার বনমালী (ছণীয়-হস্ত-রচিত বনমালা-ধায়ণে-সঞ্জীবিত শ্রীকৃষ্ণ) তোমার বিরহে থাকুল হইয়া—থেদান্থিত হইতেছেন।

ভাষাপথারক রিগ্ন-চক্র কিরণে তিনি দগ্ধ হইছেন। (শিশির-মর্থ — শিগ্ধ কিরণ বরে, অর্থাৎ চক্র) ও, মৃতবৎ—মৃচ্ছপিন হইভেছেন। নিরস্তর নিপ্তিত-কুল্প-শ্রে বিকল-তর হইভেছেন ও বিলাপ ক্রিভেছেন। সৃথি ! সীদ্ভি, তব বিরছে, বন-সালী ॥ ধ্রু ॥
দৃছতি, শিশির-ময়ুধে—মরণ মৃত্যু করোতি,
পৃত্তি, মৃদ্য-বিশিধে—বিলপ্তি বিকল তরোহতি ॥ ২ ॥
ধ্বনতি মধুপ-সমুহে—প্রাণ ম্পি দ্ধাতি,
মনসি বলিত বিরহে—নিশি-নিশি রুজ মুপ্যাতি ॥ ৩ ॥

ভ্রমর নিকরের গুঞ্জনে (কর্ণ-পীড়া সমুৎপন্ন হওয়ার) করে কর্ণাচ্ছাদন করিতেছেন ! তোমার সন্মিলন কাণে—যাহা যাহা প্রমানক বর্দ্ধক,— বিরহ ব্যাকুলিভাবস্থায় তৎ সমস্তই তাহার, ক্টপ্রেদ হইতেছে !!

সন্মিণনের স্থাসময়ে-নিশা যোগে ভোমাকে না পাইরা অত্যুদ্রিক্ত-বিরহ ভাবিত-হৃদরে—নিশির প্রতিক্ষণে—তাহার পীড়াধিকা জন্মিতেছে !

পরমাদরের সে রাজ-নন্দন, তোমার প্রত্যাশার আপন পরম-রমণীর বাদ ভবন পরিত্যাগ পূর্পকি—বিপিন-বিতানে বাদ করিতেছেন! আর তোমা ব্যতিরেকে অন্যরত ভূ-শ্যার বিলুটিত হইতেছেন!

মুথে অন্ত কথাটি নাই,—কেবল বারংবার ভোমার নামোচ্চারণ করিয়া বিলাপ করিতেছেন।

জয়দেব-কবি-বিরচিত প্রেম-মুগ্ধ-হরির, এই বিরহ-বিশ্বসিতের প্রবণ-গানও আস্বাদন-সঞ্জাত-পুণাের প্রভাবে (সথীর দৌত্য-দক্ষতা অন্তবানন্দে) রসোৎ-সাহ-বিভাবিত-জনগণের—মানসে শ্রীহরি সমুদিত হউন।

এইটি, গীত-গোবিদের ৫ম, সর্গের ১০ নং গান, এ গীতের—পুঞারী গোস্থামীকত টীকা এই রূপঃ—হে সধি! তব বিরহে বনমালী সীদতি॥ এছ॥ (বং-কর-করিত—বনমালাবলম্বনেনৈবন্ধীবতীতি—বনমালী শন্দোপস্থাসঃ) কদা কদা দীদতীত্যাহ—মদনং সমিহিতং কৃতা মলয়-সমীরে বহতি সতি, বিরহিণাং মর্ম্ম গীড়নার কুসুম সমূহে চ ক্ষুটতি সতি॥ ১॥

কিঞ্চ – চক্রে দহতি সন্তি—দরণ মন্ত্ করে।তি—নিস্চেটো ভবতি মুদ্ধ্রীতি যাবং। কাম বাণেচ পততি সতি অতি বিহুবলো বিলপতি, কুসুম পতনে হৃদি বিশাং কাম-বাণ-ভ্রমাদাক্রোশতীতার্থ॥ ২ ॥

বসতি বিপিন বিতানে, ত্যজতি শলিত-ধান,
লুঠডি—ধনণী-শাননে, বছ বিলপতি—ভবনাম ॥ ৪ ॥
ভনতি, কবি জানদেবে, বিরহ্-বিলসিতেন,
মনসি, রভদ-বিভবে—হরি রুদয়তু, অ্কুতেন ॥ ৫ ॥

#### (१) (कमाता

আভু, কি কহব রমণী সোহাগ! ধৈরঘ, লাজ, ধরম—ভয়, হুতল, জাগল নব-সমুরাগ!!

প্রমর-নিচরে শব্দারমানে সতি—কণৌ করাভ্যামাচ্ছাদরতি, অত্যুদ্রিক বিরছে মনসি বলিত সতি নিশারং কণে কণে রুজমধিকমাপ্রোতি, নিশারা-ছৎ-প্রাপ্তি,-কাল্ছাৎ—ছদপ্রাপ্তা—মধ্প-ধ্বনি প্রবণাৎ পীড়ামমূত্রতীত্যর্থ:॥ ৩॥

বসতীতি—ক্রচিরমণি গৃহং ত্যক্তা অরণ্য মধ্যে দ্বংপ্রাপ্ত্যাশয়া বসতীত্যর্থ:।
বিরহ-বৈক্ল্যাদেকতা স্থিত্যভাবাৎ, বিভান শক্ষোণাদানং দ্বপ্রাপ্ত্যা সূঠতি, বহু-যথাস্যাত্তথা তবনাম বিলপতি, তব নামধেরাদক্তক্ত মুথে – ন নিঃসরতীত্যর্থ ॥ ৪ ॥

কবিলয়দেবে ভণতি সভি—হরি-বিরহ বিলিশিতেন, স্কুতেন মনসি—হরি রুদয়ত্। হরি-বিরহ-বিলিসিডেন হেতুনা—যত্ৎপরং স্কুডং ডেন—গরতাং শৃষতাঞ্চ হাদি—হরিকদিতো ভবতীতার্থ:। কি দুশে মনসি ? রভসভ প্রেমোৎ সাহত বিভব যত্র ভিম্মিন, এবং প্রাণ-পরার্দ্ধ-নিম্ম্নির-চরণত্ত-নিল প্রাণনাথত বিরহ বৈকলা প্রবর্ণন মৃদ্ধি তায়াং স্বস্থাং তত্তা অপি বাকত্তভো লাভ ইতি পঞ্পদদৈ: সমাপ্তি:। ৫॥

<sup>(</sup>१) রমণীর-প্রেম, (সোহাগ) জগতে অতুলনীর বস্ত। উহা বর্ণনের ভাষা নাই! সে---সোহাগের সিংহনাদে, আজ আমাদের চারু-নিভবিনী-শ্রীরাধার ধৈর্যা, লজ্জা ও ধর্ম্ম-ভন্ন, ভব্নে শুইরা পড়িল এবং নবীন-বিক্রমে নবাল্নাগ— জাগিরা উঠিল।

চললি নিতশ্বিনী, বিদরলি তকু-মন, পশ্ব বিপশ্বনা জানে
সহচরী-বচন, শুনত নাহি, অতিশ্যে—সন্ত্রম সধু-রস-পানে;
তৈথনে, কৃত্বম—বেলী-কৃল-তেজল, কত কত-শত অলী-রাজে
অঙ্গ-হুগন্ধ-তিরাদেন অনুসরু, মদনকো বাজন বাজে।
বীল-নিচোল, হিলোলত লত্-লত্, মল্য়জ-অনিল-তর্গে,
নব-দামিনী-সম, চমকত তন্তু-ক্লচি, বল্লভ মিলনকো-রজে

#### (৮) दवटनांतात ।

निज्ञाभारकां क्षेत्र-क्रिक्टिन क्रान्ति, नांवित्य चार्यो वज्ञा नाहि दशहे निज्ञान-वन्त-हान-ज्ञान-भिज्ञात, यानि स्थाकित चार्यात (जाहे!

প্রেমোয়াদিনী-ধনী, দেহের বেশ-ভ্যাদি ও মনের বিচার-বিকরাদি—
ভূলিয়া, অমনি অভিসারিণী হইলেন ! পথ, বিপথ অর্থাৎ কোন্ পথে যাওয়া
কর্ত্তব্য, অথবা কোন্ পথে—বাধা-বিপদের আশকা— এ সকল কথা না
জানিয়াই চলিতে লাগিলেন !! রস-মধ্-পানার্থ এত ব্যস্ত বে "বেশ রচনা
করিয়া দিই"—"আময়া সঙ্গে যাই"—"কণকাল দাঁড়াও" এ সকল বা জালুবিধ বে সকল অমুরোধ স্থীয়া করিতেছেন, তৎপ্রতি কর্ণপাত মাত্র নাই!

দেখ, পুষ্প-লতিকা পরিত্যাগ করিয়া শত শত ভ্রমর-রাজ, গুঞ্জন ধ্বনি-রূপ মদনের-বাদ্য, বাদন করিতে করিতে ধনী-পদ্মিনীর অল-দৌগদ্ধের তৃষ্ণায়, তাহার অনুসরণ করিতেছে ! (বেলী---বল্লী, লতা)।

আর, মণয়-মারুতের মৃত্তরক্ষে, নীল-বসন—মন্দ মন্দ আন্দোলিত হওয়ায়, মেঘের কোলে ওড়িতের স্থায়—বল্লভের মিলন-রক্ষে—ধনী-মিলির—তন্ত্-রুচি, তাহার অভ্যন্তর হইতে চমক দিতেছে। (বল্লভশন্দ—শ্লিষ্ট। ইহার কর্থ—প্রীকৃষ্ণ এবং পদক্তি। বল্লভ)।

(৮) কোনও রস-বিদগ্ধা-সহচরী শ্রীরাধাকে কহিতেছেন: সবি ! ভোমার

আজ্ \* বনি,নৰ-রিজণী রাই! সঙ্গিনী সকল শিঙ্গারিণী সাই ৮ঞ লোল-অলক, ভিলকাবলী-রঞ্জি, সীপই কাঞ্চন-কমল-উজোর লোচন-মধুকরী, চলভহি ফিরি ফিরি শ্রুতি-কুষলয়-পরিমল

छत्त्र 🕂 ट्यांत ।

শ্রামর-চিত্ত-টোর, কুচ-কোরক, নীল-নিটোল কোরে করু বাস যাবক রঞ্জিত, চরণ-সরোরক, § যছু ঞ নিরমঞ্চন, গোবিন্দ দাস

মত ভ্বন-দোহিনীর, ভ্বণ পরিধান—ভার বংন মাত্র। তাহাতে অহুমাত্রও দৌলব্য-বৃদ্ধি হয় ন। বরং অঙ্গ-শ্রী আছোদিত হয়।

আজ তোমার নিক্রপম-কাঞ্চন-ক্রচি-ক্লেবরে, যে অলোকিক লাবণ্য বিকাশ পাইতেছে, পার্থিবকোনও উপমায় তাহার বর্ণনা হয় না !!

হাস্য-কৌমুদী — প্রোডাবি হ — তোমার নির্ম্মণ-বদন-মাধুরী অবলোকনে সৌন্দর্যাভিমানী স্লধাকর, বিধাদে মলিন হইয়া — আকাশে মুথ সুকাইয়াকানি-তেছে! (সেই নিমিত্ত দেখ এখনও চক্রোদয় হয় নাই)।

রাই! তোমার বেশ-নির্মাণ কারিণী সথীগণ তোমার সঙ্গে আছেন (শিঙ্গারিণী-বেশকারিণী। সাই—সঙ্গে।) আমি ভাহাদের সাক্ষাতে বলি-তেছি—আজই ভূমি যথার্থ নব-রঙ্গিনী সাঞ্জিয়াছ!

তোমার এই — চঞ্চল-চূর্ণকুম্বল—রঞ্জিত-তিলকাবলী ; সীম্ম্ব-সমুজ্জালিত কাঞ্চণ কমল—ইহারা শিক্ষারের সার-সম্পান।

আর তোমার কর্ণস্থ কুবলম্বের পরিমলে-বিভোরা-লোচন-মধুকরীর— এই চাঞ্চল্য-মন্ত্রী ও প্রাম-স্থলবের—চিত্ত-চোর-কুচ-কোরক-যুগলের, নীল-কঞ্ছলিকার-কোলে — নিবাস-ছঙ্গী; আর তোমার অলক্তক-রক্ত চরণ-রংক্তাং-পলের মধুর-মাধুরী, — সকল মধুরিমার সীমা!! এ সকলের বালাই লইরা আমার (গীতকর্তা গোবিন্দ কবিরাজের) মরিতে সাধ করে। পদামৃত সমুদ্র ও পদকর তর্কর পাঠাতর— \* আওত। † কিয়ে। § অরপ-চরণ-তলে ‡ জিউ।

#### (৯) বরাড়ি।

মঞ্জন-ক্ঞা-জল-কেলী-সদনে প্রবিশা, রাধে ! মাধন-স্থীপ মিছ, বিল্প-রভি-রভ্স-ছ্সিভ ব্দনে ॥ ১ ॥

নৰ-ভবদশোক-দল-শন্ন-সাবে প্রবিশ নাধে ! মাধৰ-সমীপ্রিছ,বিল্স-কুচ-ক্লস্ভনল-হারে ॥২

(৯) গ্রৎস্থক্যে—আকুলিতা শ্রীরাধা, কেলী-কুঞ্জের দার-দেশে উপস্থিত হইরা—অকীর অঙ্গ-কান্তিচ্ছটার এবং তৎ-প্রতিফলন-সমুদ্ধলিত—হার রূপুরাদি—সদাব্যবহার্য্য-ভূষণস্থ—মণিগণের প্রভার, কুঞ্জ-মধ্যে স্থানিকটে শ্রীক্লফের স্পষ্ট-দর্শনে—হঠাৎ থমকিয়া দাঁড়াইলেন। দেখিরা—পার্শন্থিতা কোন ও সধী তাহাকে কহিতেছেন, যথাঃ—

রাধে! দাঁড়াইলে কেন? সমুধস্থ মনোহর-তর-কেলী-কুলে প্রবেশ কর, এবং যদ্ধপ সমুৎপাহে আ।সিংগছ, তেমনি---রতিরসাবিষ্ট-হাস্ত-মুথে---মাধবের সমীপবর্ত্তিনী হইরা স্থথ-বিলাসে প্রবৃত্ত হও। ১।

অকারণ-বামোর বিবৃত্তিতে ফল কি ? ক্চ-কম্পানে, বংকর হার চঞ্চন হংরা, তোমার সমুদর অন্তর্তি-বাহির করিয়া ফেলিতেছে; অতএব হে ক্চ-কণস-তর্লিত-হারে-রাধে! মাধবের সমীপবর্তিনী হইরা মুশোকের-নব-পলব রচিত-এই সুকোমন সুক্র-শ্বার বিহার কর। ২।

এইটি— জ্রীগীত গোবিন্দের ২১শ, সংখ্যক গীত। পূজারি গোস্বামী রুপ্ত ইহার টীকা বধাঃ—হে রাধে ! মাধব সমীপং প্রবিশ, প্রবিশ্যত ইহ মঞ্তর-কুঞ্জ তলমেব কেলি সদনং তক্ত নিলগ। রতিরভদেন হসিতং বদনং হস্যা—হে তাদৃশি ! তব উচ্ছলিতং মনঃ অত্যস্কৃত্যা হাস্ত-মিধেণ প্রিয়-মিলনায় বহিনিগত মিতিভাবঃ ॥ ১॥

न मन्नन डेफ्ट्लिंड:--किंद्ध उद्य-डरनांगद्रश्च देनक्लामांकन्यों महत्रनः

কু সম-চরা-রাচিত্র, শুচি-বাস-গোছে প্রবিশ রাধে। সাধ্য-সমাপ মিছ,বিলস-কুত্ম-ত্রকুমার-দেছে॥০ চল-মলয়-মন-প্রম-ত্রুছি, শীভে

थितिम तारम ! माधन-गमील मिह,निलम तम-निष्ठ-मिष्ठ-

গীতে॥৪॥

কুষ্ম-ম্ক্নারি ! কুষ্ম-সমূহে-স্বচিত—এই রতি-কেলি-কুঞ্টি কেবল ভোনাদেরই বিহার-যোগ্য, অভএব এখনি প্রেম-সুক্ষ-মাধ্বের স্মীপবর্তিনী হইরা বিলাস-বাসনা পূর্বকর। ৩।

দেশ, মণরানিল-সঞ্চালনে—চারিদিকে শৈত্যও সৌগন্ধ বিকীপ হইতেছে;
অত্লনীয় সলীত-কণাৰ চী—ভোষার, স্কঠোখিত কলপ-নীতি, তৎসহ সন্মিনিত
হইলে, আন আনলের ও উদ্দীপনার অবধি থাকিবে না! অতএব হে রতি-বলিত-ললিত-গীতে! অনিলৱে মাধ্বের স্থীপে গ্রমন এবং কেলী-কলা বিস্তান্ন কর। ৪।

হিনিতং, তত্তাহ—( সর্বাত্ত পূর্ববন্ধবন্ধ যোজনা, প্রতিপদে শেষার্দ্ধং ক্রবং) কেনিসদনে কীদৃশে ?—নবভবদশোকদবৈ: পদ্ধবৈ রচিতং শশ্বন শ্রেষ্ঠং যত্ত ভিন্নি। কুচ-কলসমো: কম্পেন তর্বো হারো যতা হে তাদৃশি! কুচকদেশ-নাত্তব্যত্তা, সতো বাস্যান কুর্বিত্যর্থঃ॥ ২॥

অতাতি প্রায়বিশেষাবকণনাং—কম্পোহয়নিত্যাহ—পুনঃ কীদুশে কুম্মন্চবেন রেচিতং—ভাচেঃ শৃঙ্গার্স্য নাস-গেহং যত্ত ভল্মিন্ নিকুশ্বাভান্তরে, পুশ-গৃহ রচনা বিশেষ ইতি ন পৌনক্ষন্তাং, কুম্মেড্যোপি স্কুমারো দেহো যতা হে তার্শি শ নিক্শ-বারগত—প্রিম, স্থাং প্রতীক্ষতে, স্থং কুম্ম-স্কুমার ভয় রভোবাম্যম্কু মিতি ভাবঃ ॥ ৩॥

অপোদীপনাতিশয়েন—কেলি-সদনমেব বর্ণরতি। চলেন মলর-বনজ প্রনেন হার্রি—শীজলঞ্চ ষত্তিমন্, রভৌ বলিতং রতিযোগ্যং—ললিতং গীতং ন্তা—ত ভ্রেশি । অভেডিসিন প্রিঞ্জ তন্ত্রেভার্থ: ॥ ১॥ বিভত্ত-বস্ত্-বল্লা, নব-পল্লব-ঘনে, প্রবিশারাধে ! মাধ্ব-স্মীপ মিছ, বিল্লম-চির্মল্ল-পীন-

कपान॥ १॥

মধ্-মূদিত-মধ্প-কৃশ-কলিত রাবে, প্রবিশ রাধে। মাধব-সমীপ-মিছ, বিল্স-মদন-রদ-সরদ-ভাবে ॥७ মধ্-তরল-পিক-নিকর নিনদ-মুখবে, প্রবিশ রাধে। মাধব-সমীপ মিছ, বিল্স-দশন-ক্রচি-ক্রচির-

भिन्दि।॥ १॥

স্থি ! তুমি । শুরু-সিত্থ-ভারে চিরমন্ত্রা; বারে দাঁড়াইরা র্থা ক**টভোগ**় করিতেছ কেন ? বহুতর মবপরবে-ঘনাত্মকার এই কুঞ্জ মধ্যে—সন্থরে মাধ্বের সমীপে বাও, এবং বিলাস বিনোদনা বিভার কর। ৫।

মদন-রিসত-ছবরে—আর র্থা-ভাব-গোপনের বাধা-ভোগের কাজ দাই, মধু- মত্ত-মধুপ-কৃলের মধুর-ভারনে, সানন্দ-মনে ভোমার অধর-মধু-লোভিড মাধবের নিকটে চল এবং বিলাসের সার্ভ বিভার কর। ৬।

স্থি। ঐ শোন – কোকিল-কুলের স্থাপুর-তরল-কুরনে কুল্ল-জনন মুথরিত (নিনাদিত) হইতেছে। দাড়িথ-বীজ-সদৃশ — তেমার রাচিকর-স্কার-দশনকান্তি দর্শন করিলে, পিকনিকরের—উৎসহে ও উৎফুল্লতা, শতগুণ বর্দ্ধিত হইবে; অতএব এখনি প্রেমোল্লসিত-মান্বের স্থিপানে চল এবং বিলাস-র্গাশ্বতে, তাহাকে আনন্দ দান করিরা স্থী হও। ৭।

পুন: কীদৃশে—বিভতানাং-ছ বল্লীনাং—নবপল্ল বৈর্থনে-নিবিচে, জ্বসঞ্চ পীনঞ্জ্বনং বজা—হে তাদৃশি! (চির্মিতি বিলাস-ক্রিলা-বিশেষ্ণং) উদৃপ্রস্থান সফল কুর্বিতার্থ: ॥ ৫ ॥

পুন: কীন্দে - মধুনা মুনিতেন মধুণ-কুণেন বিহিতঃ শক্ষো যত্ত তিন্তি, মদন-রসেন—শৃক্ষার-রসেন সরসভাবঃ সারস্তং যতা—হে তাদৃণি! ইদুক্ প্রভাবারা—ন্তব, তল্লিকট প্রবেশ এবযোগ্য ইতি ভাবঃ॥ ৬॥

निहिंख, शचानिकी-स्थ-गगारक,

क्राय्वारत । मनन भाजानि, खगाँच जत्तारमय-कविन्तां जतार । ৮

### ( ३० ) नता छि ।

রাধা বদন-বিলোকন-বিকশিন্ত, বিবিধ বিকার-বিভঙ্গং জল-নিধিমিব--বিধুমণ্ডল-দর্শন-তরলিত-ভুগ-তরলং (১)

কবিতার ইউদেবের উপাসনা—কবিজনের - সোভাগ্যের পরাবধি; সেই মৌ ভাগ্য-গর্বে-বিহবল হইলা গীতকর্তা—এগীতের ভণিতার আপনাকে 'কবিরাকাধিরাজ' বলিরা বর্ধনা করিলাছেন। বলিতেছেন হে সুনারে! পদাবতীর (শ্রীরাধার) সর্কবিধ-স্থ-বর্দ্ধক— স্থী-বচনাত্মক এই গীতিটি তোমার প্রীতির নিমিত্ত কবিরাজাধিরাজ-জন্মদেব।— রচনা করিলেন তুমি প্রসন্ন হইলা সর্ক্ষ্মক্ল বিধানু কর।

(>০) স্থীর উদ্ভেজনার ও দর্শনানক্ষের-উচ্ছসিত-তর্ক্স-বেগে, বাজ্ঞা সংহাচ দ্র হইবা— বাষ্যের-বাধ,ভাসিরাগেল। রঞ্জ-মাধুরী-গানোরভা, জীরাধা মনোহর-ভূষণ-সিঞ্চন—নাগরের মনো-মোহন করিতে করিতে, কুঞ্জে প্রতিই হইবেন।

ক্ষচ্যা--ক্ষিত্র-মাণিক্য-বিশেষা ক্সা---হে ভাদৃশি ! ঈদৃগ্দশনারা-তং ক্রিয়া বিশেষ ক্ষতাকেব ৰোগ্য মিভি ভাব ॥ ৭ ॥

হে মুরারে ! জরবের কবিরাজ-রাজে তণতিসতি—ছদর্থ-স্থী-প্রার্থনিমিতি শেষঃ মজল শতানি কুজ। কথং ? বিহিত গলাবত্যা—জীরাধারাঃ হুথ সমূহ বে ন তল্মিন, নিজেইদেবোপাসনায়া বিত্যর্থঃ, নিভাল সর্বোত্তমন্থ নিজ্যা বেশেনায়ানং-বহু মন্ত মানস্য—কবিরাজ-রাজ ইতি প্রোচ্যোক্তি নিরং ৷ ৮

এইটি--শ্ৰীপীত গোবিদের ২২নং গান। ইহার--পূজারী গোখানীকৃত-

ছরিনেক রসং—চিরমভিলষিত বিলাসং সা দদর্শ, গুরু-ছর্য-বশস্থদ—বদন মনঙ্গ বিকাশং ॥ এছ ॥ ছার মমল ভর—ভার মূরসি, দধতং পরিলম্ব্য বিদূরং ফাটুডর ফেণ-কণম্ব-করম্বিত মিব—বমুনা-জল-পুরং (২)

শীরাধার বদন-স্থাকর-বিলোকন করিয়া, রস-নিধি শীরুষ্ণের কলেবরে— বিধুমণ্ডল-দর্শনে-তৃক্স-তরন্ধিত-জলনিধির স্থার—নানা প্রকার বিকার-তরক্ষ প্রকাশ হইতে লাগিল। ১।

দর্শন-হর্ষাভিশরে, রাধাগত-জীবন—চির-কেলী-পিপাগিত-হরির জীবদন থানি, অনজাবেশে—বিকশিত হইরা উঠিল। জ।

বিশাস-চাঞ্চল্যে, ধীরললিত-নাগর-বরের বক্ষের স্থানির্মাল স্থানাত্তম—
স্থান্দর-মৃষ্ঠান্তার—ক্টতর-ফোন-প্র-পচিত-বম্না-জল-প্রবাহের স্থার শোভা
বিস্তার ক্রিতে লাগিল ॥ ২ ॥

বালবোধিনী টীকা এইরূপ:—সা শ্রীরাধা, হরিং দদর্শ, কীদৃশং ? একশ্রিরা-বাহনে শ্রীরাধা-রূপে রুসে। যক্ত তং, ডক্তাঃ সর্বোত্তমন্থ নিশ্চরেন তদেকপরন্থ মিত্যর্থঃ।

নমু অস্তাঙ্গনাতী রমমাণস্ত কুতত্তৎপরহং ? চিরং পূর্ব্বোক্তং প্রকারেণা-ভিল্যিভত্তরা সহ বিলাসো বেনতং, অভএব তৎপ্রসাদাবলোকনার্ গুরু-হর্বসা-য়ত্তং বদন বস্তুতং, অত্তিএবানস্ক বিকাশো যত্তেং॥ ধ্রু॥

তদেক-নিঠন্তব্যেব দৃষ্টাভেন স্পাট্রতি—কীদৃশং ? মাধা-বদন-বিলোকনেটনৰ মস-সমুদ্রত্য-তত্য-বিকলিতা-হর্বস্তভাদরো এব উর্ন্নরো-বত্র তং ; কমিব ? জল নিধি মিব ; কীদৃশং জল-নিধিং ? বিধুমগুল দর্শনেন চঞ্চনী ক্লতাঃ তৃক্ষা ভরকা বত্র তং ; আম—শ্রীকৃষ্ণ সমুদ্রমোর্কিকারোর্শ্যোঃ সামাং ॥ ১॥

পুন: কীদৃশং ? উরসি বিদ্রং পরিবছা হারং দধানং। কীদৃশং হারং ?
নির্মান-মুক্তা প্রথিতং। কমিব ? বমুনাকাল পুর মিব। কীদৃশং ? স্ফুটতরং
কেন-কদখেন ধচিতং। অত্ত—প্রীকৃষ্ণত বমুনা-কাল-প্রেন, হারতা—কেন
সমূহেন সাম্যাং॥ ২॥

জীরাধা, আরোও দেখিলেন—খ্রাম-স্থলরের—খ্রামন, মৃত্র, ও পীতাবন্ন পরিহিত—কলেবন্ন থানি—পীত-পরাগ-প্র—রূপ গুণরিছেন-পটলে-পরিবৃত্ত (বনরিত) আলৌফিক-নীল-নলিনের ভার শোভিত হইতেছে ! (নীলকমলের ভার তাঁহাতে মদনোরাদনা বাড়াইতে লাগিল—ইহাই ভাব )॥ ৩॥

শরৎ কালীর সরোবরের নির্মণ-নীশ-জনে-প্রাকৃতিত-ক্ষানের আত্যন্তরের খেলা-চঞ্চলত-থঞ্জন-যুগলের ক্রীড়ার স্থার, গোপী-মনোহারী-হরির চঞ্চল-নেক্রান্ত-বিক্রীড়নে --রসমরী রাধার-মুখমগুল, রতি রাগে রঞ্জিত হইরঃ উঠিল। ৪।

(मधिराम-- श्रीकृष राम चनीत वंत्रमात विरम्पत-विकामार्थ--- शर्रात छोत

পুন: কীনৃশং ? আমনং মৃহনক কলেবর-মন্তনং ব্যক্তং; বথোচিতা-বর্মনিবেশ ঐতি পাদনার্থং মন্তন্তনোক্তিঃ ? তথা—প্রাপ্তং পীত-চ্কুনং বেদতং, কমিব ? নীল-নলিনমিব; কীদৃশং ?—পীত-পরাগাণাং সম্হাতিশরেন বৈটিতং মৃশং বস্ত তং। অত্ত নীল-ক্ষালেন— শীক্ষকভ, পরাগেন—পীত ব্যক্ত সাধাং, প্রাগাত্ত-মূল বর্ণনেনাস্তোপমেরং॥ ৩॥

পুন: কীদৃশং ? চঞ্চনত দৃগঞ্চনত বননেন মনোহরং ব্যানং তেন জনিতঃ ততা রতি-রাগো বেন তং, কমিব ? শরদি-তড়াগমিব, কীদৃশং ? বিকশিতং বংশনং ততোদরে জীড়াগরং ধ্রন-বুগং বজ-তং। অজ—শ্রীক্ষকত তড়াগেন, ব্যানত ক্যনেন, নরনরোঃ ধ্রন-যুগ্রেন সামাং॥ ৪॥

পুন: कीमृष्: ? वनमामव--कमगः उच धाकाणनात मिनिजाजाः स्वा

শশি-কিরণ-চছুরিতোদর-জলধর-জ্বদর, সকুত্স কেশং
ভিসিরোদিত-বিধু সপ্তল-নির্মাল, সনয়জ-ভিলক নিবেশং (৬)
বিপুল-পুলকভর-দন্তরিভং, রভি-কেলি-কলাভি রধীরং
মণিগণ-কীরণ-সমূহ-সমূজ্জ্ল-ভূষণ-ভ্ভগ-শরীরং (৭)

সমুজ্ঞল কুণ্ডল ধারণ করিয়া শোভা পাইতেছেন এবং ঈষদ্বাভ-কান্তি-ষধুয়িত, তাঁহার আনন্দ-প্রস্থল-আনন থানি--কেবলই রতি-লোভ-বিভার করি-তেছে ৪ ৫ ॥

বেবের মধ্য হইতে বিজ্ঞানিত—চক্রকিরণের শোভার স্থার—ভাঁচার
কুত্ব-স্পোভিত কেশদান,শোভা বিভার করিতেছে এবং ভাঁহার দাবণ্যবিত
গলাট-কলকে-নিবেশিত নির্মাণ-চন্দন-ভিলক, ভাষনী-নিশিতে উনীরমান পূর্বচক্র-মপ্তলের স্থার—সৌন্ধ্য-বিকাশ করিতেছে এবং শশধ্রের স্থার উদীণনা
জন্মাইতেছে॥ ৬ ॥

মণিগণের কান্তি-সম্ক্রলিত নানা-বিভূষণে-সমণন্ধত—তাঁহার ঐজস্থানি, বিপুল-পুলকাবলীতে-বোষাঞ্চিত হই রা উঠিলছে। দেখিলেই প্রতীত হয়— হাদয়োলাত-রতিকেলির নিমিত, তিনি অধীর হইখা উঠিলছেন ॥ ৭॥

সদৃশাভাং-কুণ্ডলাভ্যাং—শোভাষত তং, তথা স্মিত্তবন্দ্রিভরা,—ক্লচির: সমুদ্ধসিত্দ যোহধরপুরৰ তেন কনিত: রতি-লোভ যেন তং ॥ ৫॥

পুন: কীদৃশং ? শশি-কিরণৈব্যাপ্ত:-উদরং বছ—জনধরস্ত, তন্তের ক্ষম্মরা:
সকুস্মা: কেশা—বস্ত-ডং । অত্য—কেশানাং—বেবেন, পুলানাং—ইক্
কিরণেন সামাং । তথা তিমিরে উদিভং যদিধু-মণ্ডলং ত্বরির্থন ক্ষম-ভিলফ্
নিবেশো বস্তাভং । অত্য—লনাটম্ভ তিমিরেণ, তিল্কস্ত ইক্-মণ্ডলেন সামাং ।
ইরমণাস্কুতোপমা ॥ ৬ ॥

পুন: কীদৃশং ? বিপুলানাং পুলকানা মতিশরেন বিবনীরুতং—কচিছ্নতং কচিদ্বনতং ইতি বাবং, অতএব তদর্শনাৎ ন্ত্যুৎগত রতি কেলি-কথাভিন্নধীরং তথা মনি-গণ-কির্ণানাং সম্হেন সমুজ্জলৈ ভ্বণৈ: স্থান্তং শরীরং বল তং ॥ ৭ ॥ শ্রীজয়দেব-ভণিত, বিভব দিঞ্জীকৃত ভূমণ-ভারং প্রাণমত; হুদি-বিনিধায় হুরিং, স্কৃচিরং স্কৃতোদয় সারং (৮)

## ( >> ) धानिम-(कपात ।

পছিল সমাগম রাধা কান, ভতিরদে-নিমগন ভেল পাঁচবাণ ॥ গ্রন্থ ছন্ত্রু দরশনে, ত্ত্-কো-বিলোকনে, আনন্দ-নীর-নিঝাপইরে, আর্ডিয়ে প্রশিতে, ক্চ-কনকাচল, গিরিবর-ধর-কর-কাঁপইরে!

শ্রী দরদেব কবির বর্ণন-বৈভবে—সাইজিক চিন্তচোর-শ্রীইরির - অক্স্থাণ ও ভাব-ভ্ষণের মাধুরী—ছিগুণিত ইইরা প্রতিভাত ইইডেছে। ভক্তগণ! এই স্থাোগে সমুদিত স্কৃতি-সমূহের-সার-সম্পদ-শ্রীইরিকে—স্থ-চিরকালের নিমিন্ত ভাগরে ধারণ পূর্বক তাহাতে প্রণত হও । ৮॥

(১১) বে—পঞ্-বাণ সকল জগৎকে—রসে নিমগ্ন করে, আজ রাই কালুর প্রথম সমাগমের রসাতিশয্যে, সেই জগৎ বিজয়ী-কলপ্র, নিজেই ডুবিয়া

প্রেমিক-যুগন কেলিভরে উপবিষ্ট হইলে—প্রথমতঃ-পরস্পরের প্রেমোল্লিত-বদন-সন্দর্শনানন্দে উচ্চয়ের নয়ন আনন্দ-নীরে আছে।দিত হইল। (বিলো-ফনে—নয়নে)।

তৎপরে প্রেমার্ড-গিরিধর, বিনোদিনীর কুচকণ স্বর্ণ-ধিরি-ম্পর্শ করিলে,

ভো: সাধব! হাদি, হরিং বিনিধার স্থাচিরং বথাস্থাতথা প্রণমত। কীদৃশং ?
পূণ্য-বিশেষত ব-উদর: ফলং তক্ত সারভূতং। তথা— শ্রীক্ষরদেব-ভণিত মেব
বিভব তেন বিভণী কত: ভূষণ ভারো যত তং। বৈ: পরমলম্কত তে অলকারাঃ
ক্ষরদেবস্থোপনাদি বাগ্-বিশাসে-ম্বিভণীকতা ইতার্থ॥৮॥

(मार्च भितित्रखरा, मार्च-छ्यू भूनिक्छ, चन्नि चन्न हिना ७ हेरत भागम-खारक, चाना भारे नक्ष नक्ष, हूचरन—नम्भ ह्ना ७ हेरत ! इक्-तरम खामि—(मार्क च्यनचरे, तन्न-छत्र जिल-जेन-पार्क नय-ना भनी-मर्था, (नय) ना भनत-ए। थत, जूनन रभा विन्ममा में इ ।

ভাঁহার—কর, কম্পিত হইতে লাগিল! (অবিশ্রান্ত সপ্ত দিবারাত্রী গিরিবর গোবর্দ্ধন ধারণ করিয়া যে-কর তিলার্দ্ধ কম্পিত হয় নাই, স্পর্শ-মাত্রে সেই করের কম্পোৎপাদন, কুচ-কনকাচলের অপূর্ক্ষ মহিমা!)

তারপর ত্র্বার-রদ-লালসায়—উভরে উভয়কে, বক্ষে ধারণ করিয়া আলিঙ্কন বদ্ধ হইলেন এবং একে অপরের অঙ্গে অস হিলাইতে লাগিলেন! প্রেম-গদগদ-বচনে—মৃত্-মধুর রসালাপ চলিতে লাগিল। চুম্বনে—নরম চর চর হইয়া উঠিল! তৎপরে উভরে উভয়কে অবলম্বন পূর্বকি, রদের তরঙ্গে সম্ভরণ করিতে লাগিলেন, ত্রুনের অস্কই রদ্ধ-ভর্কিত হইয়া পড়িল।

"नननन-वहरन, नक्-नक् व्यानात्र" कि ऋगे। निस्माक् ज त्रान-जारात्र

কিঞ্চিৎ কণাভাষ আস্বাদ্য। যথাঃ—

ষর্পদ দংশল মদন-ভূজন্ত,
গরলছি ভরল অৰশ ভেল অন্ত।
ভূছ বদি প্রন্দরি! করসি উপার,
মৃগধনজন, তব জীবন পার।
পহিলহি ঝারবি দিঠে পসারি,
করে কর পঁজনে—ভার-দন্তার।
শ্রমজন, অকহি করবি-বিথার
কুচ-মৃগ-ক্লসে করবি পাণি-সার।

থর-নথ-রঞ্জনী, ত্রা নথ মানি,
বারবি নির্বিষ — উরপর হানি।
যতনে অধরে— অধর-রস দেবি;
দংশনে— অধর, অধর-বিষ লেবি।
রঞ্জনী উজাগরি, রহবি-আগোরি,
গোবিন্দ-দাস, শুণ গাওবি তোরি!!

মূল গীতের তৃতীয় ও চতুর্থ ছত্তমন্ন পদামৃত সমুদ্রে নাই। কিছু কিছু পাঠাস্তরও আছে। (ভাকে – বচনে। লহু লহু – লবু লবু।)

### ( ১২ ) कांकि।

তৃত্ তমু এক সন, নিবিত আলিঙ্গন, কাঞ্চনে রতন মিলাই,
নাগরের কোরে—বিনোদিনী রাই ॥ ধ্রু ॥
একে নব-জল ধর—কোরে বিজুনী-থির, স্থলর, বিধি-নিরমাণ,
তহি নিকটে, নীপ কদম্ব কুন্থমিত,কোকিল অমরা করু গাণ।
মলয়জ-প্রন-মিলিত যম্না-তট—বংশীবট নিরমাণ,
কহে, মহেশ বস্থ, আবেশে অবশ তৃত্, পুলকে পুরল-পাঁচবাণ।

(১২) এগীতে শ্রেমম্য-প্রেমম্যীর, বিশ্রাম-বিলাসের মধুরানক বিবর্ণিত, কোনও স্থী অপরা কে, তাছা দেখাইয়া আস্থাদন-চ্ছলে কহিতেছেন:—

দেখ ! রত্মের ও স্বর্ণের সংমিলিত-ভূষণের ভারা, আজ—নীলরত্ম নাগরের কোরে, আনাদের হেমাজিনী-স্থী-রাধা—নিবিঢ়ালিজনে এক মনঃপ্রাণ হইয়া বিরাজিত! জলধরের কোলে—ভাড়িতের অবস্থান হইলেই স্থনিশ্চিত-বর্ষণ ঘটিয়া থাকে, আজ, বিধি-নির্মিত স্থানর-ভিত্র-দামিনী রাধা, ভাম-জলধরের কোলে বিরাজিতা; তাহাতে আবার নিকটে—কুস্থনিত-নীপ-কদম্বের সৌরত, কোকিলের ও ভ্রমরের মধুরধ্বনি প্রবং মল্যানীলের শীতল প্রবাহ—সম্মিলিত যম্নাতট এবং স্থান্থিক "বংশীবট" বিদ্যান্ন আর্থাৎ উদ্দীপনা-পূর্ণ এমন রসকেলীর রদ্ধ-ভ্যাত্তে বারংবার রস-বর্ষণ না হইয়াই পারে না—অতএব নিশ্চয় জান, পুন্ঃ কোলী-স্থা-বৃত্তির বিলম্ব নাই।

এ সকল উক্তি কারিণী-সধীর ভাবাবিষ্ট—গীত কর্ত্তার নাম—মহেশ বস্থ। পদ কয়তকতে ও স্থীতিসার সংগ্রহে এ গীতিটির আকার অন্তর্মপ, যথা :—

মণরজ মিলিত, যমুনা জল শীতল, বংশীবট নিরমাণ,
নিকটিছি, নীপ—কদস্বতক কুস্থমিত, কোকিল ভ্রমর করু পান।
তার তলে তিরিভঙ্গ তরুণ-তমাল-তন্ত, বামে, রসবতী রাই,
থেকে নব জলধর—কোরে বিজুরী থির, কাঞ্চনে রতণ মিলাই।

#### ( > ) — ज़ुशानी।

আকুল-অলক-বেঢ়ল-মুথ-শোভ রাছ করল, শশী-মণ্ডল-লোভ ? উভর-কুস্থম-মালে করু রঞ্গ যহু, যমুনা মিলি---গল-তরঙ্গ, বড় অপরপ ! ছতু চেত্র, মেলি
বিপরীত স্থরত, কামিনী করু কেলী !
পিয়-মুথ, স্থ-মুথী চুথই—ওজ
টাদ অধামুথে পিবই সুরোজ ?

—ছহ তমু এক মন, নিবির আলিঙ্গন; ছহজন একই পরাণ, বসু রাগানন্দ ভণে, তুলনা না হয় মনে, রূপের নিছনি পাঁচ বাণ

(১৩) এগীতে বিশরিত বিধার বর্ণিত হইয়াছে। কপালের উপরিভাগে, যে স্কু স্কু কেশ নিপতিত থাকে, তাহার নাম অলক বা চূর্ণকুন্তল। আকুল অলক—অগম্বন্ধ-কেশ, বিনোদিনীর আকুল-অলকাবৃত্ত মুথের শোভা দেখিয়া বোধ হইতেছে যেন মুথ-রূপ-শশি-মণ্ডলের গ্রাসার্থ—অলক-রূপ-রাহু লোভিত হইয়া চেষ্টা করিতেছে।

পদামৃত সমুদ্র প্রভৃতি কোন কোনও মহাজনী পদের গ্রাহে "উতর" শক্ষের স্থলে "কুস্তল" পাঠ রহিরাছে। উতর আহিধানিক শক্ষ নহে উহা উর্বারত শক্ষের অপলংশ-দেশজ-কথা; উদ্ধৃত্ত বা অতিরিক্ত অর্থে অত্যক্ত উত্তর শক্ষের প্রয়োগ দৃষ্ট হয় মথা ঃ—( এই গ্রাহে ১৪ ক্ষণদায় ) "ভূবন ভরিয়া প্রেম উভরিল" ইত্যাদি। অত্যব কেলী বিলাসিনীর ক্স্তল-ন্ঘর্ষ-মালার অতিরিক্ত অংশ, কেশের সহিত—দোলিয়া দোলিয়া রঙ্গ করিতেছে, এই অর্থ 'উভর' পাঠ রাধিয়াও করা য়ায় অথবা গলার ফ্ল-মালা লম্বিত হইরা ভামান্সে রঙ্গ করিতেছে, এ ব্যাখাও হইতে পারে।

"বড় অপদ্ধপ দোহু চেতন মেলি" এ পয়ারটির ব্যাথা-পদামৃত সমুদ্রের টীকায় এই ক্লপ:--"ছয়-চেতন মেলি-উভয়ো শেচতন মিলনং অপূর্ব্ধ। যতঃ আনন্দ মোহ, ন যাতঃ" অর্থাৎ আফ্রিকার এ লীলা-বিলাসটি বড় অপূর্ব্ব, যে বদন সোহাগল শ্রমজল বিন্দু মদন মোতিলই পূজই ইন্দু ? কুচ-যুগ বিপরীত লম্বিত হারা কনক-কল্স-পর স্থরধুনী-ধারা! কিছিণী রবমে নিতখিনী সাজ
মদন বিজয়ে যমু, বাজন বাজ!
ভণই বিদ্যাপতি, রদবতী-নারী
কাম-কলা, জিনি—বচন-ঢামারি।

ইতি প্রীগতিচিস্তামণৌ একাদশী কণদা।

হেতুক বামা-শিরোমণির—ক্বত বিপরীত-স্থরত-বিলাসের-মূহানন্দেও নারক নারিকা কাহারও আনন্দ-মোহ জাত হয় নাই!

"চুম্বরে ওজ"—ওজ শব্দের আভিধানিক অর্থ—তেজ, বল, শোভা ইত্যাদি সতেজে বা সবলে চুম্বন অথবা শোভা বিস্তার পূর্বক চুম্বন—অর্থই, আমরা গ্রহণ করিতেছিলাম, কিন্তু উপরোক্ত টীকায় রহিয়াছে—"ওজ" অজ শব্দের অপত্রংশ!

কুচ্যুগ অবধি স্থাননী ধারা পর্যান্ত ছই ছত্তোর পাঠ পদামৃত সমুদ্রে ভিন্ন ক্লপ যথা—"কুচ যুগ উপত্ন বিলম্বিত হার, কনক কলসপর তুধক ধার"।

'নিত্রিনী সাজ' ছলেও উপরোক্ত গ্রন্থের পাঠ—"নিতম্বহি সাজ' "কাম-কলা জিনি বচন-ঢামারি' এ কথার অর্থ—কলাবতী-শিরোমণি শ্রীরাধার কামকলা—বচন-ঢামারির অত্যাত। ঢামারি শব্দের অর্থ পদামৃত সমুদ্রের টীকার ব্যাখ্যাত হয় নাই (উক্ত গ্রন্থের পাঠ "রচই ঢামারি") এটিও দেশজ শব্দ; ঢামারি শব্দ অভিধানে নাই।

বৃদ্দাবন বাসী স্থাপ তি ত্রীবৃক্ত রাধাচরণ গোস্বামী আচার্য্যপাদের ত্রীমুথে শ্রুত হওয়া গেল উল্লেখনে কৃত গীত বিশেবকে এদেশে ঢামারি বলে। তাহা হইলে বাঙ্গালীর—ধামালী ও পশ্চিমা—ঢামারি একই বস্তু এবং আলোচিত কথার সারার্থ দাঁড়াইল—রসবভীর কামকলা-বৈদগ্দীর-নিকটে—বচনের ঢামারি পরাজিত। আনন্দোচ্ছাসে উহা গাইবার উপযুক্ত ভাষা—সরস্বতীর ভাগারে নাই।।

## শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

# অথ দ্বাদশী ক্ষণদা! (১) বরাড়ি শ্রীগোরচন্দ্রত

বির**লে ব**ণিয়া একেশ্বর, অন- সব তার-শিরোমণি, ছরিনাম জপে নিরস্তর। অকিঞ্চন-জন-চিন্তামণি।

(>) হরি নাম জপ-—অর্থ, হরিনাম-মন্ত্র জপ। অর্থাৎ "হরেক্ষণ ! হরেক্ষণ ! ক্ষণ ! ক্ষণ ! হরে হরে !। হরে রাম ! হরে রাম ! রাম ! হরে হরে !॥" এই বোলটি নামের—লঘু-ঘরে উচ্চারণ। এই বোল নামকে তিন নামে পরিণত করিয়া শুধু 'হরে-ক্ষণ-রাম' জপ করা, কিম্বা অন্ত নামের সহিত মিলাইয়।—ছাটিয়া ছুটিয়া জপ করিলে হরিনাম জপ হয় না (নবমী ক্ষণদার ১নং গীতের আম্বাদনী দুষ্টবা।

ভারপর—"সব-অবভার-শিরোমণি" কথাটি বুঝিবার চেটা করা ঘাউক্।
অস্তান্ত অবভারগণ সাধারণতঃ—দেবতার ছদিন্ত-শক্ত-সংহার, ভক্তের বিশ্ন
বিদ্রণ বা ভ্-ভার হরণার্থ—আবির্ভ্ হইয়া থাকেন এবং প্রায়শঃ শারিরীক
বলে, বা অমান্থবিক-প্রভাবে অন্থরাদির বিনাশ বারা উদ্দেশ্য সাধন করেন,
কিন্তু আমার গৌর-হরির ভাব, ব্যবহার, উদ্দেশ্য,—সমন্তই প্রেমে পরিপূর্ণ।
তিনি যাবতীয় জীবগণকে কারুণা রসে—ভ্বাইয়া—প্রেমে-মাতাইয়া কার্য্য
সাধন করিতেছেন। পাপী, পাষণ্ড, ধর্মবেষী, কাহাকেও বিনাশ না করিয়া
পাপীর-পাপ, অন্থরেম্ব আন্থর-ভাব, পাবণ্ডেয়-পাবণ্ডম্ব, দ্র করিয়া ভাহাদিগকেই, ব্রহ্মাদির বাঞ্চিত—ব্রজ্মস প্রদান পূর্কক—অগৎ-পাবন করিয়া
ভূলিতেছেন।

ধর্মাম্ন্টান-বর্জ্জিত, ক্রিরামন্ত্র-বিহীন—নর-পশুগণকে—এমন কি ব্যাঘ্র কুরুরাদি—নিকৃষ্ট পশু প্রভৃতিকে পর্যান্ত—হরিনামে মাতাইরা উদ্ধার হুগদ্ধি-চন্দ্ৰ-মাখা-গায়, ধূলি বিন্তু আন নাহি ভায়! মণি-ময়—রতন—ভূষণ, স্থানে না করে পরখন। ছাড়ল লখিমী-বিলাস, কিবা লাগি তরু-তলে বাস! ছাড়ল, বনসালা বাঁশী, এবে দণ্ড ধরিয়া সন্ত্রাসী!!

করিতেছেন ! ভলন-পদ্ধতি আনন্দমন্ন ও দর্ম-জন-সাধ্য করিয়া দিয়াছেন ! ছর্মিপাক-গ্রন্থ-ছর্ভাগ্য—নামাপরাধীগণকেও বোগীন্দ্র-ছর্ল ভ-প্রেমধন সদ্য-প্রদান দারা নিস্তার করিতেছেন !! অত এব আমার গৌর-স্থাকর, অবতার নহেন—সর্বাবতারের শিরোমণি !

আর এক প্রকারে কথাটি আস্থাদন করা যাউক,—শান্তের ব্যবস্থান্থসারে দেখা যায়—যাহারা গুরুতে অপরাধী,ভগবদপরাধী, বৈষ্ণবে বা ব্রাহ্মণে অপরাধী, কমা না পাওয়া পর্যান্ত তাহাদের উদ্ধার লাভের উপায় নাই। অথচ কি হত্তে কথন্ কাগর নিকট অপরাধ জন্ম, অনেক সময়েই তাহা জানা যায় না,স্তরাং মার্জনা লাভের চেষ্টা অনেক সময়েই অসাধ্য হয়। জীবের এই অনিবার্য্য অপায় বিনাশার্থ—শ্রীগোরাঙ্গস্কর স্বয়ং—গুরু, বৈষ্ণব ও ব্রাহ্মণের সারাংসার হইয়া ও নিথিল অবতার ও ভগবৎ-প্রকাশ-সমষ্টিকে শ্রীঅঙ্গে গ্রহণ করিয়া পূর্ব্বোক্তরপ অপরাধীগণের — পূর্ব্ব জন্মার্জিত অপরাধ পর্যান্ত মার্জনা করিতেছেন! সর্ব্ববিতারী-পূর্বতম-ভগবান্ ব্যতীক, অংশ কলারছারা ইহা কথন ও সম্পাদিত হইতে পারে না, অতএব আমার গৌরচক্র "সব অবতার শিরোমণি।

এখন "অকিঞ্চন-জন-চিন্তামণি" শক্ষের রস-বিশ্লেষণ কর্ত্তরা। একটি গীতে আছে—"সবাই ছেড়েছে, নাহি যার কেহ, তুমি আছ তার, আছে তব-মেহ" যাহার কেহ নাই এবং কিছুই নাই, সকল প্রকাশেই—শ্রীভগবান তৎপ্রতি স্নেহবান্,—তাহাতে সন্দেহ নাই, কিন্তু বাহার ভল্পন-বল কি স্কৃতি-বলও কিছুই নাই, তাহাদিগকে ব্রজামুগা-রতি ও প্রেমদান অক্সএ— প্রায়ই দৃষ্ট হয় না। কেবল আমার প্রাণধন-গৌর-স্থন্দর সর্কাবস্থায় সর্ক্ষবিধ নিক্পায়ের স্কাভীষ্ট ও সর্ক্ষসম্পদ অবিচারে প্রদাতা-অশ্রত-চিন্তামণি স্বরূপ।

পার্ম্বদ গীতকর্তা রাহ্নদেব ঘোষ, এইরূপে আপন প্রভুর মহিমা বর্ণন

হাস-বিলাস, উপেথি
কান্দিয়া ফুলায় ছটি অঁথি
বিভূতি করিয়া প্রোম-ধন,
সঙ্গে লঞা সৰ অকিঞ্ন।

(क्षिम-कटन कत्रहे, िमनान ।
कट्ट वाळ, विनद्त भत्रांग ! !

করিয়া ও তাঁহার প্রেম-কারুণাময়-লীলা-বিলাস দেখাইয়া, জীব-হাদয় রসাদ্র করিতেছেন যথাঃ—হায়! আমার গোর-হরির যে প্রীঅঙ্গ থানি ব্রজবিলাসে ও প্রাথমিক-নবদীপ-লীলায়—সলা চন্দন-চর্চিত থাকিত আব্দু তাহা ধুলী ধুসরিত! ব্রজনীলায় যিনি নিরস্তর মণি-অভরণে অলঙ্কত থাকিতে ভাল বাসিতেন অধুনা তিনি স্বপ্লেও—সে-ভ্যণ স্পর্শ করিতেছেন না! ঐশ্ব্য বিলাস—পরিকর পরিজন গৃহ সম্পদ্দ—পরিত্যাগ করিয়া—আজ, রাজনন্দন তরু-তলবাসী!! তোমরা কেহ বলিতে পার আমার প্রাণের প্রাণ, এমন হাদয় বিদারক লীলায় প্রবৃত্ত কেন ?—ভ্নন-মোহন সেই বন-মালা এবং ব্রিজগন্মনাকর্ষী-প্রিরতমা বংশীকে ভ্যাগ করিয়া দণ্ড-ধারী-সন্ন্যাসী কেন ? সথাগণের এবং কাস্তাণর সহিত নিরস্তর হাস্ত-কোতৃক ও রস-বিলাস উপেক্ষা করিয়া আজ কাদিতে কাঁপিতে আঁথি ফুলাইতেছেন কেন ?

"এ সকল তাঁহার প্রেম-বিলাদের চরম-পরিণতি' ভাষ-বিদ্-ভাগ্যবান্গণের মুখে এ কথা শুনিয়া—এবং সন্ন্যাসী হইয়াও তিনি সাধারণ সন্ন্যাসীর স্থায় বিভূতি ধারণ বিনা কৃষ্ণ-প্রেমকেই বিভূতিরূপে সর্বাদ্ধে ধারণ করিতে দেখিয়াও—এমন কি পুলকাদি স্থাণীপ্ত-প্রেম-বিকারে নিরস্তর তাঁহার প্রীঅঙ্গ-মণ্ডিত রহিয়াছে এবং অকিঞ্চন-জনসকলকে লইয়া নিশিদিশি প্রেম-জলে (স্বেদ ও অঞ্চ-ধারার) স্নাত হইতেছেন—এ সকল স্কুম্পষ্ট নিদর্শন সদা-প্রত্যক্ষ করিয়াও—কঠোর-সন্ন্যাস-লীলা দর্শনে, আমার প্রাণ বিদীণ হইয়া যাইতেছে!!

পদকলভকতে এ গীতের ৩৪ এবং ১৩ হইতে ১৭ ছত্ত্ব নাই! ১৭ ছত্ত্বের স্থানে আছে "রাতি দিবদ নাহি মান"।

## (২) শ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রত্য, পাহিড়া গান্ধার।

রূপে গুণে অনুপমা, লক্ষ্মী-কোটি গনোরশা— ব্রজ্বধূ, অযুতে অযুত।

রাস-কেলীরস-রঙ্গে, বি

বিহরে যাহার দঙ্গে,

সোপঁত্ কি লাগি অবধৃত ?

(প্রাণের-ছরি, ছরি!) এ ছ:খ কহিব কার ভাগে? সকল-নাগর-গুরু, রসের-কলপ-তরু,

**८कन निভाই** किरतन देवतारण ?

(২) হার ! আমার এ হঃখ কাহাকে কহিব ? রূপে, গুণে—কিছুতেই যাহাদের উপমা নাই—যাহারা কোটিকোটি লক্ষী হইতেও মনোরমা—এইরূপ আগণিত ব্রজস্থলরীগণ মহা আগ্রহে মহারঙ্গে যাহার সহিত রাস-বিলাস-রসকেণী করিত, আমার সেই সর্ব্বসক্ষম-প্রভু, কেন ? কি ভাবে, কি অভাবে—আজ অবধুতরূপে অবনীতে অবতীর্ণ ?

হা প্রাণের হরি! বিনি নিখিল নাগর সকলের গুরু, এবং রসের করতক স্বরূপ, আমার সেই নিতাই চাঁদ—কি : ছঃখে, কি অভাবে বৈরাগ্যাবলম্বন পূর্বক কাঙ্গালের বেশে—দেশে দেশে দিরিতেছেন। আমার এ ছঃখ কাহার কাছে বলিব ?

হার ! পুরুষাবতার-সন্ধর্গদেব, যাহার অংশমাত্র। ভূ-ভারধারী-অনস্তদেব যাহার কলা। শ্রীগোলোকধামে যিনি নিত্য বিরাজিত; শিব ব্রহ্মাদিও (বিহি— বিধি অর্থাৎ ব্রহ্মা) যাহার দর্শনলাভার্থ লালায়িত; যিনি লোক-পালগণেরও অগোচর; তৎকুপা ব্যতিরেকে—আগম নিগম আলোড়ন করিয়াও যাহার তত্তনিক্রপিত হয় না; আমার সেই নিতাই চাঁদ, আজ ভ ক্রবেশে সন্ধীর্তনের মাঝে বিরাজিত!!

এ সকল লীলার একমাত্র কারণ—ভাঁহার অপার দরার্দ্রতা—জীব-ছঃখ-কাতরতা। আমার দরার সাগর প্রভু---শ্রীকৃষ্ণাগ্রজ বলরামরূপে ব্রজবিহার मक्सर्वन, (भव, शात-অংশ-কলা-অবতার, चयुक्तन (शारलाटक वितारक। শিব বিছি অগোচর. আগম নিগম পর. কেন নিভাই দল্পতিন মাঝে ? কুষ্টের অগ্রেক, নাম— মহাপ্রভু বলরাম, কলিযুগে জীনিভ্যানন্দ। कताहैन जगजन. (भीत-तरम निमर्गन, मृत तक् वनतांग मन्त !

कत्रित्व कत्रित्व, कलिपीिएं कीत्वत्र धूर्षमा मन्मर्गत विश्विष्ठ इहेन्ना, ইচ্ছাময়-ভগবান্—গৌরহরির,প্রেমে-জগত্বরার-লীলার---সর্বপ্রধান কার্য্যকারী-রূপে ( ভাঁচারই প্রকাশ-স্বরূপে ) প্রকটিত হইরা,প্রেমে ও করণার মার্দ্রীকরণ দারা জীবনিস্থার ও কলির দর্প-দলন করিতেছেন ৷ সেইজয়ই তাঁহার অবধৃত-বেশে ছারে দারে ভ্রমণ ! সন্ধীর্তন-রসের সহিত একীকরণ ছারা প্রেম-প্রচার। এবং দেই জন্মই অধম, নীচ, ভণ্ড, পাষণ্ড নির্বিষ্টেশেষে তাবৎক্লীবকে এই প্রকারে গৌররদে নিমগ্ন করিতেছেন !!

এ সকল অভাবিত লীলার বালাই नहेशा-মরিতে সাধ করে বটে, কিছ প্রাণের-প্রাণ নিত্যানন্দচন্ত্রের এ সকল হঃধলনক লীলা-দর্শনে কিছুতেই প্রাণ ন্তির রাখ যায় না।।

দৈল্প এবং উৎকণ্ঠাই ভক্তের সর্বায়। গীতকর্তা বলরামদাস, শ্রীনিডাইরের করুণার ধন্তঞ্জীবন হইয়াও উপসংহারে বলিতেছেন-হায়! নিতাইর করুণার তাবং অগং, গৌর-রসে মগ্ন হইল, কিন্তু মল ভাগ্য আমি—দূরে পড়িয়া রহি-नाम !!

শ্ৰীৰলদেবের রাস, শ্রীমন্তাগবত ১০ম ক্ষম ৬৫ অধ্যায়ে দুইবা। সে রাসস্থনী, অধুনা রামঘাট নামে প্রসিদ্ধ।

## ( ) अव्हें, -- भीकृष बाद

যহি যহি নিকসই তমু-তমু-জ্যোতি, তহি তহি বিজ্বী-চমক মতি হোতি। যহি যহি জাকণ-চরণ চলি চলই, তহি তহি থল-কমল-দল, থলই। দেধলু কো ধনী, সহচরী মেলি, হামারি জীবন-সঞ্জে করতহি থেলি, যহি যহি ভঙ্গুর-ভাঙ-বিলোল। তহি তহি উছ্লল, কালিন্দী-ক্লোল!

"সকল নাগর শুরু" শব্দের তাৎপর্য্যার্থ—প্রথম ক্ষণদা ২নং গীতের আস্বা-দনীতে দেখ।

পদকল্পতক্ষতে আমাদের ১১শ পংক্তির স্থানে ১৩শ পংক্তি এবং তৎস্থানে ১১শ পংক্তি বিহাস্ত। নির্থিক কুদ্র-পাঠ-বৈষম্য আরও আহে।

(৩) কোন ্যন্তর গুণোৎকর্ষে—অন্ত বস্তর তৎসারপ্য-প্রাপ্তিকে আভি-রূপ্য বা অভিরূপতা বলে। আলোকের নীল লোহিতাদি বর্ণে, অন্তান্ত দ্রব্যের তদ্বর্ণ ধারণ অবশ্রুই সকলে দেখিয়াছেন। বিষয়টি ঠিক্ এ জাতীয়।

প্রীপ্রীরাধাগোবিদের লোকাতীত-রূপমাধুরীতে, ঐ—শুণোৎকর্ষের, পূর্ণপরিণতি বর্ত্তনান। উজ্জ্বল-নীলমণি-গ্রন্থে বর্ণিত আছে—প্রীমুরলীতে ব্রন্থ-নাগরেক্তের—দশনের শুলোজ্জ্বল-জ্যোতি—করত্বের মধুরারক্ত-কান্তি এবং গণ্ড-দর্পণের—কুবলর-ক্চি—প্রতিভাত হইয়া,য়্গপৎ ক্ষাটক-মণি, পদ্মরাগ-মণি এবং নীলকান্ত-মণির বিভ্রম উৎপাদন করিয়া থাকে!! এ গীতে শ্রীরাধার্মপের ক্ষভিরপতার অপূর্ব্ধ-মহিমা স্থবর্ণিত। যথাঃ—

জীবিত-বল্লভের দর্শনোলাগে কালিন্দী-কুলে সমাগতা শ্রীরাধার, আভিদ্ধপামাধুরী-সন্দর্শনে—বিমুগ্ধ— বিহুল ও আত্মহারা — শ্রীকৃষ্ণ, কোনও সথীকে
কহিতেছেন—সধি! আজ যমুনারতীরে,একটি অদৃষ্ট-পূর্ব্বা-স্থন্দরী আমার নয়ন,
মন,প্রাণ—সমস্ত হরণ করিয়া লইয়াছে! বলিতে পার এ রমণীটি কে ? আহা ।
তাহার ক্ষ্ম-বসনাস্তরাল হইতে বিচ্চুরিত—অঙ্গের স্থচিস্কণ-ক্ষ্মছটো (তম্থশ্বিষ্কা) যেথানে নিপতিত হয়, সেখানেই যেন বিচ্যুৎ-ঝলসিয়া উঠে। যে স্থানে

ষহি বহি ভরল-দৃগঞ্চল পড়ই, তহি তহি নীল-উতপল-বন, ভরই। বহি বহি হেরিয়ে মধুরিম-হাস, তহি তহি-কুন, কুমুদ, পরকাশ।

গোবিন্দ দাস কছে মুগ্ধল কান ? চিন লছ রাই, চিনই নাহি জান ?

## (৪) 🗐 গান্ধান—দূতী শ্রীকৃষ্ণ প্রভ্যাহ।

আচরে, মুথ শশী, গোই, কারণ-বিন্দু, খনে— হসই, ঝার ঝার-শোচনে, রোই। উত্ত পত্ত—দীঘ—নিশষ্ট্

তাহার অরুণ-চরণ-তল স্ঞালিত হয়, তথায় বেন স্থল-ক্মণিনীর দল—স্থালিত হইয়া পড়িতে থাকে !

এই প্রকারে যুগপং—প্রকুলতার এবং বিশ্বরের—বিস্তান-বিধান করিতে করিতে—সধী-পরিবৃতা সেই ধনী—আমার প্রাণকে ল রা থেলা ভরিতে ছিল!! আরোও দেখিলাম,—ভাহার বিলোল-জ্র-ভঙ্গী (ভাঙ—জ্র) যথা খথা পতিত হইল, তথা-তথা গেন—কালিনীর শ্রাম-তরক্ষ উচ্ছলিত হইতে লাগিল! যে যে হানে, তাহার তরল-নয়ন-কটাক্ষ নিপতিত হইতেছিল, ভত্তৎ স্থান—নীলোৎপলের বনে, ভরিয়া গেল! তাহার মধুর-হাস্থছটো যে যে স্থলে লাগিল—সে সকল স্থানে যুগপং: কুল এবং কুম্দের রাশি—বিকশিত হইরা উঠিল!!

স্থি ! জামার প্রাণকে এইরূপে তৎ-স্প্র-কালিন্দীর-জলে—সম্ভরণ করা-ইরা, নীলোৎপলরূপ-কন্দর্প-শরে জাড়া দশাপন্ন করিরা—কুন্দ-কুম্দের সৌরভে ও শুভ্রতার মাতাইরা—ক্রীড়া-কারিণী, এই রমণীটি কে ?

গীতকর্ত্তা, মহাজন গোবিন্দ কবিরাজ, সম্বোধিতা-সধীর ভাবাবেশে উত্তর দিতেছেন—আহুরাগ-মুগ্ধ-কান! এবে তোমারই প্রিরতমা-মণি রাধা! অস-মোর্দ্ধ-মাধুর্য্য-চিহ্নে স্থপরিচিতা তোমার রাইকেও চিনিতে জান না?

<sup>(</sup>৪) এদিকে শ্রীরাধাও প্রেম-বৈষ্ণগ্র-দশায় উন্মাদিনী !! তাঁহার ত্ঃসহ-ব্যথার ব্যাকুলিতা কোনও অমিভার্থা-দৃতী, আসিয়া শ্রীকৃষ্ণকে কহিছেত্ব---

শুন শুন হালার—শ্রাম,
প্রেমকো—ইছ পরিণাম ?
ভাতল-তমু নহি ছোটই,
সভত মহী-ভলে লুঠই।
কাছ কো, কছু নাহি-কহই,
কো, অছ্-বেদন—সহই ?

জগভরি—কুলবতী-বাদ,
কা-দেই, কহব সম্বাদ ?
গোবিন্দ দাস-মাশ আদে
জীবই, ভুয়া-মভিলাধে।

#### ( ८ ) वत्राष्ट्रिं।

छन छन माथव ! विषयं क्रांक, धनी यपि टमथवि-नामटक विकास । নব-কিশ্লয়-দলে, স্থতলি ( ৰর ) নারী বিষম-কুস্থম-শর-সহই না পারি !

স্পর! সধী রাধার বড় ভর্কর দশা উপস্থিত! অঞ্চল—চাঁদবদন লুকাইরা ঝর ঝর অঞ্মোচন—অকারণে পাগলিনীর ক্যায় হাস্ত—তৎসহ উত্তপ্ত নিঃখাস!! চক্সবদনী-রাজ-বাশা—এইরপ উন্মাদ-দশা-গ্রস্থা!

শ্রাম-স্থলর । এ সকল তোমারই প্রেমের পরিণাম ফল । আমাদের ক্বন্ত সকল চেষ্টাই—ব্যর্থ হইরাছে। কোনও প্রতিকারেই তাপ দ্র না হওয়ার, আমাদের হিয়ারধন-কুস্থম-স্কুমারী-বিনোদিনী—অনবরত কেবল ভ্-সৃষ্টিত হইতেছে। কাহাকেও কিছু বলিতে পারিতেছে না। হার । হার । এই প্রকারে এহেন ভ্:সহ-বেদনা সহিতে পারে—জগতে এমন কে আছে ?

অন্ত কাহাকেও দিয়া যে তোমাকে সংবাদ দিবে সে উপায়ও নাই, কারণ তাঁহার কুলবভী-স্থ্যাতিতে জগৎ-ভরা। এইরূপ বিষম দশারও আমার (গোবিন্দদাসের) আখাস বাক্যে (আশ আস—আখাস) বিখাস করিয়া, কেবল তোমার অভিলাষে বাঁচিয়া আছে!! আহা! রাজ-নন্দিনী রাধার ধদেকশরণত্বের তুলনা নাই!

<sup>(</sup>८) এगीर७७ मगीत कथा চলিতেছে। कहिरलहान-माधन।

হিম-কর, চন্দন, পবন, ভেল আগি ! জীউ-ধররে, তৃরা দরশন লাগি। কছছ যতনে কহে, আথর-আধ, না জানিরে আজু কি ভেল পরমাদ ! নরোত্তম দাস-পছ-নাগর-কান ! রসিক কলাগুরু-তুহু সব জান।

#### (৬) ধানদী।

চলিলা রসিক-রাজ, ধনী ভেটিবারে, অ-থির-চরণ-যুগ-আরতি অপারে!

সঙরিতে প্রেম-অবশ ভেল অঙ্গ, অস্তরে উপলল মদন-তরঙ্গ।

বিদগ্ধ রাজ! সে ধনীকে যদি দেখিবার ইচ্ছা থাকে, তবে আর কিঞ্চিন্মাত্রপ্ত বিলম্ব করা কর্ত্তব্য নতে।

সকল প্রতিকার-চেষ্টাই—বার্থ হইরাছে। রমণী-মণি, কিশলর-দলের উপরে শুইরা আছে। কলর্পের বিষম শরাঘাত কিছুতেই, সহিতে পারিতেছে না !! জ্বালা জুড়াইবার উপাদান—চন্দন, চক্র-কিরণ এবং .সমীরণাদি শ্রাহার পক্ষ্যে অধির স্থায় দাহক হইরা উঠিয়াছে !!

কেবল তোমার দর্শনাশার এখনও প্রাণটি আছে। বাক্শক্তি—প্রার লুপ্ত! তোমার নামোচ্চারণের—নিমিত্ত-কত বদ্ধ চেষ্টার একটি অক্ষর অর্দ্ধোচ্চারণ করিরা আর কহিতে পারিতেছে না! জানিনা আল কি ভরম্বর বিপদ-উপস্থিত!

গীতকর্ত্তা নরোত্তম দাস ঠাকুর মহাশন্ধ-দৃতীর ভাবাবিষ্ট হইরা কহিছে-ছেন:-পর্ছ ! (পছ অর্থ-প্রভু, এস্থানে-স্থব হংধের কর্তা) নাগর-রাজ্ক কান ! ভূমি নিখিল-রসিকের কলাগুরু,-স্থতরাং সমস্তই জান আমার-অধিক বলা, বাছলা মাত্র।

পদামৃত সমুদ্র এবং পদকরতরুতে—৮ম পংক্তিটি এই রূপঃ—
"না জানিয়ে অবকিয়ে ভেল পরমাদ"।

<sup>(</sup>৬) স্থীর কথার, রসিক-রাজের প্রাণ, আর্কুল হইরা উঠিল,

শীতল-নিকুশ্বনে-শুভিদ্বাছে রাধে, ধনী-মুধ নির্থিতে পছ ভেল সাধে। অধর, কপোল, আধি ভূরযুগ-মাঝ। ঘন ঘন চুম্বই বিদগধ-মাজ। অচেতনী রাই স চেতন ভেল!
মদন-ছনিত-তাপ-সব দূরে গেল।
নরোত্তম দাস পত্ত আনন্দে বিভোর
হৃত্ত হৃত্ত মিলনে স্থের নাহি ওর!!

তথনই—অপার-আরতি-দশ্বাত-অভির-চরণে, ধনী-মণির নিকটে চলিলেন। প্রিরষ্ঠমার প্রোম-মরণে তাঁহার অঙ্গ অবশ এবং জ্বাস—মদন-তরজায়িত হইয়া উঠিল!

সমীপে উপনীত হইয়া দেখিলেন—স্থী-সেবিছা-য়াজনন্দিনী রাধা, শীতল-নিকৃপ্ধ বনান্তরে—অটৈতভাবস্থায় শুইয়া আছেন! দেখিয়াই—বিনোদিনীর-বদন বিলোকনের সাধ,—পত্র অন্তরে (পঁত-প্রভূ। স্থুও তৃঃথের কর্ত্তা?) জাগিয়া উঠিল। বিরহ-বিধ্রা-বিধ্র্থীর সন্তাপ-ক্লিষ্ট-মুথ-মণ্ডল-দর্শনে, বিদ্য়া শিরোমণি, পরমাদরে—অধ্রে, গণ্ডে, আঁথিতে ও জ্রমধ্য-ভাগে, খন খন চুম্বন ক্রিভে লাগিলেন।

প্রিরত্যের, অমৃত্যর-স্পর্ণে,—অধ্যামৃত সঞ্চারে ও অঙ্গপরিম্যাছাণে প্রেম্মরীর চৈত্ত্ত-সঞ্চার হইল ৷ মদনোত্তাপ দূরে প্লায়ন করিল ৷ !

গীত-কর্ত্তা ঠাকুর নরোত্তম—কহিতেছেন—এখন আমার পছঁ (ক্রঞ) আনন্দে ভোর হইরা গিরাছেন। পরস্পারের সন্মিলনানন্দে এক্সণে, ত্লানেরই স্থাধের সীমা নাই !!

পদ ক্রতক ও পদ সমুদ্র—উভর গ্রান্থই 'রসিক রাজ' স্থলে'নাগর রাজ' ৪র্থ ছত্ত্রের 'উথলল' স্থানে—'বাঢ়ল'; ৬ চ্চ ছত্ত্রের পরিবর্ত্তে—ধনীমুথ চাল হেরই পঁছ সাধে; > ল ছত্ত্রে 'তাপ' স্থলে 'তৃ:থ' এবং শেব ছত্ত্রের পরিবর্ত্তে "হত্ত্রেরে মাতল নাহি স্থা ওর" ইত্যাদি পাঠান্তর দৃষ্ট হয়। অধিকন্ত ২য় পংক্তির 'অপারে' কথার পরিবর্ত্তে পদামৃত সমুদ্রের পাঠ—"বিথারে")।

#### (१) (कमाता

দেশ স্থি! রসিক-যুগল-রস-রঙ্গ।
আন্তর বিনহি, কিয়ে ঘন দামিনী—রহত পরম্পার-সঙ্গ ?
রাধা বদন—মধ্র-মধু, মাধব মুথ-চসকে ভরি রিঝ,
বিনহি গরোবর, কমল ফুল কিয়ে, চন্দর-রসে রভ্ভিজ?
উরজ-উত্ত্রঙ্গ—কুস্তপর হরি-উর, রাজত অদভ্ত-রীত,
বিনহি ধরা, কিয়ে—কনক ধরাধর, নমিত জলদ-ভরে-ভীত ?

(৭) কেলী-বিলাসের তরঙ্গ বহিতে লাগিল। লতাবিতানের ছিত্র-খারে দর্শনকারিণী কোনও সধী, অপরাকে কহিতেছেন:—স্থি! রুসিক যুগলের রস-রঙ্গ দর্শন কর। অহো! কি অপূর্ব্য—কি অভূত—কি নরনানন্দকর সন্মিলন!! আমরা সকলেই জানি, মেঘ বিহুৎে কথনও আকাশ ছাড়িয়া অক্তত্ত অবস্থান করে না, কিন্তু আশ্চর্যা! পরম্পার-সঙ্গ-বন্ধ হইয়া মেঘদামিনী কি আজ্ব ভ্রিতে অবস্থিত হইয়াছে?

আরও এক অন্ত দৃশ্য প্রকটিত— ঐ যে মাধব-মধুকর প্রীরাধার বদন-কমলের মধুর-মধু-আপনার আনন-রূপ—পান-পাত্র প্রিরা পান করিতেছেন, ইহা দেখিয়া নিশ্চয় বোধ হইতেছে যেন—সরোবর-বিনা—কমল প্রফ্টিত হইয়াছে এবং চল্লের স্থারসে-আর্ড হইয়া, অদৃষ্ট-পূর্ব্ব-শোভা বিস্তার করিতেছে !

স্থি! বিধাতা ব্ঝি আজ যাবতীয় অভ্তের একত্র সমাবেশ করিয়াছেন ? তাহাতেই কি "কুন্তের উপরে বক্ষ বিক্তত্ত"!! দেও দেও! রাধার উন্নত-কুচ-কুন্তের উপরিভাগে কি অভ্ত-রীভিতে হরির বক্ষদেশ সংস্থিত! বোধ হই-তেছে,—একি! মহীতল স্পর্শ না করিয়াই স্থণাচলের অবস্থান? অলধ্রের ভারে ভীত ও অবন্যিত হইয়া কাঞ্চনগিরি ব্ঝি গা-লুকাইতে চাহিতেছে? স্থি! আমাদের শ্রামস্করের কুন্দ-স্কর-দশনাবলী কি মদনের শাণিত-শর? নহিলে তদ্ধারা এমন মনোহরক্ষণে বিনোদিনীর বিশ্বাধর বিদ্ধ হইতেছে কেন?

क्ष्म-त्रमन किट्य, ममन-निर्मिछ-भत ? विश्व-श्वत-श्वत-लाटभ, माफ़्मि विनिह्—शेक, माफ़िम क्व-एखमङ, वल्लछ-श्राटभ !

### ( ৮ )— কেদার :

বিগলিত চিকুর-—মিলিত, মুখ-মণ্ডল,চান্দেবেঢ়ল—ঘন-মালা ?
চঞ্চল-কুণ্ডল,—চপলে গোঙাওল\* ঘামে তিলক বহি গেলা !

হুন্দরি ! তুরা মুখ মঙ্গল-দাতা,

রতি-রণে রমণী পরাভব পাও∵া কি করব হরিহর ধাতা ॥এল।

অথবা একি—দাড়িম-বিহীন দাড়িম-বীজের পংক্তিতে—দাড়িম-ফুলকে ভেদ করিতেছে ?

গীতকর্তা বন্নভ (হরিবল্লভ) স্থীর ভাবাবেশে কহিভেছেন—হার ! হার : দুখাট চকুর সন্মুখে—তথাপি ধার্ধী ঘুচিতেছে না !!

(৮) এইবারে নাগরী-সাম্রাজ্ঞী কেলী-বিলাসের—কর্ত্রী ! দেখ—চন্দ্রাচ্ছাদনকারী মেঘমালার স্তায়—বেণী-বিমৃক্ত-কেশকলাপ, তাঁহার শ্রীবদনধানিকে
আবরণ করিয়া শোভা পাইতেছে ! চঞ্চল-কুগুল-মুগল—চপলাকে পরাভব
করিয়া বিরাজিত ! ! এদিকে—বৃষ্টি-বিল্পুর স্তায়—ঘর্ম-বিল্পু সমূহ নিঃস্ত
হইয়া ভিলকাবলীকে ভাসাইয়া দিল !

বীর-চ্ডামণি নাগরেক্স—যুদ্ধে পরাজিত হইয়া কহিতেছেন—সুলরি ! এ বুদ্ধে আমার পরাজয় আগেই বুঝিতে পারিয়াছি । যেহেতুক ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেখর জগতের মঙ্গল বিধান করেন, কিন্তু আমার সকল মঙ্গলের বিধাতা

পদকল্পতক ও পদ-সমুদ্রের পাঠাস্তর—\* শ্রবণে ছলিত ভেল। † রতি-বিপরীত সময়ে যদি রাথবি।

কিঙ্কিণী কিণিকিণি, কঙ্কণ ঝনঝন, ঘন ঘন নৃপুর বাজে। রতি বিপরীত ভেল, মদন-সমাপলঞ্জয় জয় তুল্পুভি বাজে! তিলে এক§ জঘন, সঘন রব করইতে, হোয়ল সৈনকো ভঙ্গ বিদ্যাপতি-পতি, ওরদ গাহক, যামুনে মিলল গল-তরল!!

ইতি শ্ৰীগীতচিন্তামণৌ পূৰ্ববিভাগে দাদশী কণদা।

তোমার ওই চক্রবদন!! যুদ্ধারস্তেই যথন তাহা কেশকলাপে আচ্চাদন করিয়াছ। তথনই জানি, হরি-হর-ধাতা—কেহই আমার পরাজ্যের প্রতি-বিধান করিতে পারিবে না!

এইরূপ বাছায়-রস-সদিরাস্থাদন ও করণ-কিন্ধিণী ও নূপুরের ঘন ঘন রপ-বাজনের সহিত বিপরীত-বিহার-সমরে, কেলী-কলাবতী—মদনের সমাপন অর্থাৎ বুলাবন-মদন-মাধবের অনীত-প্যাতি-ধ্বংশ করিলে, বাহিরে স্থীগণের জয় জয় ধ্বনিরূপ তৃদ্ভি বাজিতে লাগিল। এদিকে জঘনের অর্থাৎ জঘনস্থ-মেথলার মুহুর্ত্তব্যাপী ঘন ঘন ধ্বনির সহিত সমরের অবসান হইল। ভাবার্থ— সেনাপতির সক্ষেত্ত-বাদ্যের তিল-ব্যাপী ঘন ধ্বনিতেই যজ্ঞাপ সৈভাগণ যুদ্ধে ভঙ্গ দেয়, তেমনি ঐ শক্ষে—বিলাস-সাধক-অঙ্গ-সমূহ নিজ্ঞির ইইয়া রহিল।

গীতকর্তা কবি বিদ্যাপতি গৌরব করিয়া বলিতেছেন--জগতে কেবল আমার পতি (রদরাজ শ্রীক্লফ) এই--পরাবধি-প্রাপ্ত-বিলাদ-রদের একমাত্র গ্রাহক ! বমুনার নীল-দলিলোপরি গঙ্গার-তরঙ্গ-ক্রীড়ার ন্তায় এই রঙ্গময়-লীলাটি ভাঁহার প্রেম-প্রবাহিনীর স্বভাব-সিদ্ধ-শ্রোত !!

‡ নিজ মদে মদন পরাভব মানল। § আমাদের আদর্শ-হস্ত-লিপি গুলির পাঠ "তলে এক' সমীচিন বোধে পদাধৃত-সমুদ্রের পাঠ মূলে গৃহীত হইরাছে।

# জীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### श्र कर्यातमी भागाना।

### ( , ) छहहें - शिर्गातह ए छ ।

মদন-মোহন-রূপ গৌরাঙ্গ-স্থন্দর, ত্রিকচ্ছ-বসন শোভে কুটিল-কুস্তুল, লগাটে তিলক শোভে উর্দ্ধ-মনোহর। প্রক্তে নয়ন ছই--প্রম-চঞ্চল।

(১) রপের শক্তি অসীম। ভয়, বিশ্বয়, য়ণা, লজ্জা, দয়া, ভক্তি, ভালবাসা, পবিত্রজা, পদ্ধিকতা,—রপ-দর্শনের প্রভাবে সমস্তই উপলাত হইতে পারে। গবিত্র-চেতা ও ভক্তি প্রেমার্জ-ভক্ত-ব্লের দর্শনে—নিশ্চয়ই সকণের হৃদহে ন্যাধিক পরিমাণে—পবিত্র-ভাবের ছায়াপাত হয়, তবে অস্মাদৃশ হর্জাগ্য জীবের—য়য়ভ্যাস, য়ঃসংসর্গ, ইন্দ্রিয়াশক্তি প্রভৃতি নানা কারণে—উহাকে স্থায়ী হইতে দেয়না!

কিন্তু আমার গৌর-স্থলরের বিশ্ব-বিমোহন-রূপের এমনি অগৌকিক শক্তি যে, ভদ্ধারা অতি বড় পাষগুগণের হৃদয়ও চিরস্থায়ী-পবিত্রভাবে—পূর্ণ হয়! সকল ছর্বাসনা—সমস্ত কু-প্রবৃত্তি—তাবৎ কদভ্যাস—সমূলে বিনষ্ট হয়!! প্রেম-রুসে প্রাণ আর্দ্র হইরা যায়! অভিলবিত-রুসের লাল্সায়—ছদয় আকুল ও সোৎকণ্ঠ হইরা উঠে!! তাই,—সর্বাভিবন্দনীয়-নারায়ণী-নন্দন ঠাকুর বৃন্দাবন দাস, দিবানিশি গৌর-রূপামৃতে সাঁতার দিয়া পাকেন। ভং-কৃত এ গীতিটির আস্থাদনীয় ভাব এইঃ—

বিধাতার স্প্রতির মধ্যে—জরাব্যাধি-বিনির্মুক্ত-দেবদেবীগণ সর্বাপেক। স্থানর; আবার দেবগণের মধ্যে—মদন-দেব-সকলের অপেকা স্থানর। মদন দেব—বে কেহকে —গোহিত করিতে পারেন কিন্তু তাঁহার মোহ-সম্ং- গুত্র-যজ্ঞ সূত্র শোভে বেঢ়িয়া শরীরে, স্বাধরে ভাসুক, হাসে শ্রীভুক্ক ভূলিরা, স্বা-রপে মনস্ত যে হেন কলেবরে ! যাঙ বৃন্দাবন দাস সে রূপ-নিছিয়া।

পাদনে কেহই সক্ষ নহে; কিন্তু আমার গৌরস্করের জগ-মোহনিরা নররপ— এবেন মদনেরও মন-মোহন ! !

(কেহ বলিতে পারেন একথার প্রমাণ কি ? প্রমাণ এই যে—যাহার সদয় কলপের অবিশাস্থ-ক্রীড়ার-রঙ্গ-ড্নি, সে হালয়েও যদি কোনও ভাগাবেশ প্রশিচীনক্রনের-রূপ-প্রভা নিপতিত হইতে পারে—অমনি, সকল প্রভাবের সহিত কলপ-দেব সেখানে নিজিয় হইয়া যান! এ কথার উদাহরণ—ড্র্ল্ড নহে)

আমার গৌর-হরির নিরুপম-রূপ-মাধুরীর স্থায়—ভাঁহার সহজ-ভার ব্যবহার—স্বাভাবিক-বেশ- সকলই অতুগনীর। তাঁহার লগাট-নিবেশিভ ঐ উন্ধ-পুঞ্-তিলকের খোভা, পরিহিত ত্রিকছ্ছ-বসনের সৌন্ধ্য-কুটিল কেশ-রাশির শ্বমা—সমস্তই স্থ-দিবা-জী-ম'ওত-শমস্তই বর্ণনাতীত!!

ভাব-বিশেষে লোচন-যুগল কথনও ৫র ৫র কথনও অর্জ-নিমীলিভ ইইলেও—তাহাতে একটি প্রাকৃতি-গত-চাঞ্চল্য সদা জাজ্জ্বণ্যমান! শ্রী-অঙ্গ সম্প্রিত-স্ক্র্যক্ত-স্ত্রের গুচ্ছটি দেখিলেই মনে হয় দেন শ্রী মনস্ত দেব—স্ক্র্ম দেহ ধারণ পূর্ব্বক আমার প্রভুর দেহ রক্ষা করিতেছেন! আর এই যে চাক্র্ অধরে ভাত্বল চর্ব্বণ করিতে করিতে শ্রীহস্তোত্তলন পূর্ব্বক—হাসিয়া হাসিয়া কথা কহিতেছেন, এ ত্রিলোক-মোইন মাধুরী বর্ণনের—ভাষাই নাই! ইহা মাধুরীর-বাদর! আমার সর্ব্বনা সাধ হয়—এই রূপের নিছনি লইয়া মরে যাই!

পদ কল ংকতে, এ গীত নাই। গৌরপদ-তর্জিণীতে ভূল-পাঠের সহিত বর্ত্তমান আছে। ভূল-পাঠান্তর যথাঃ— ২য় ছত্ত শললাটে ভিলক শেঃভে উর্দ্ধে মনোহর" ৪থ ছত্তে "প্রাকৃত নয়ন ছই" ৭ম ছত্তের শেষার্দ্ধ "হাসে অধর-চাপিয়া" ইংয়াদি।

### (२) ऋहहे अथना, भी।

দেশরে ভাই ! প্রবল-মল্ল-রূপ ধারী,
নাম নিভাই, ভায়া বলি রোওড, লীলা—বুঝইনাপারি ॥ এল ॥
ভাবে বিঘূর্ণিত লোচন চর-চর, দিগ বিদিগ নাহি জান,
মত্ত-সিংহ যেন, গরজে ঘনে ঘন, জগ-মাহ কাছ না মান।
লীলা-রস-ময়—হস্পর বিপ্রাহ, আনস্পে নটন-বিলাস,
কলি-মদ-দলন—দোলন, গতি মহুর, কীর্ত্তন করল প্রকাশ।

আবার কথনও বা রসময়-লীণাবেশে মনোহর-বেশ ধারণ করিরা— আনন্দ-ভরজে নৃত্য করিতেছেন ! আর মধুর-অঙ্গ-দোলনি ও মোহন-মছর-গভির সহিত, কলি-মদ-মথন সন্ধীর্ত্তন-সম্পদ—জগতে প্রচার করিতেছেন !!

কথনও বা নানাবর্ণের বিচিত্র বসনাবলী কটি-ভটে অ'টিয়া—সর্কাঞ্চ চলন-চর্চিত করিয়া, অপূর্ব্ব-সাজে সাজিতেছেন! বেন ব্রঙ্গ-রাধালগণের সহিত গোচারণে যাইবেন!

গীতকর্ত্তা মহাজন জ্ঞানদাস, গীতের প্রারম্ভে বলিরাছেন—"লীলা ব্রই না পারি"। উপসংহারে বলিতেছেন—"আহা ! কলির-রাজত্বে—গ্রীনিভাই-টালের এইরপ রঙ্গ-মর-লীলা—আনিয়া সম্মিলিত করা বিধাতার বড় দয়া''!

<sup>(</sup>২) শ্রীবলদেবের ভাবাবেশে আমার নিতাই-চাঁদ আজ ব্রজ্বরেস নিম-জ্জিত ? তালাতেই কি বলরামের বাল-চরিতামূরূপ মল বেশ ধারণ করিয়া, ভাই কানাইয়ের গৌর-সয়্যাসী-রূপ—কালাল-বেশ দর্শনে—"ভাইয়া ভাইয়া" বলিয়া কাঁদিতেছেন ? আজিকার লীলাটি বুঝা বড় স্থকঠিন ! দেখ,ভাবে—নয়ন বিঘূর্ণিত এবং ঢ়য় ঢ়য় ! কোন দিগে চলিতে কোন দিগে চলিতেছেন—জ্ঞান নাই ! মত সিংছ বেমন জগতের কাহাকেও গ্রাহ্ম না করিয়া—হস্তী ব্যান্ত্রাদির প্রাণ কাঁপাইয়া ভীম-বিক্রেমে গর্জ্জন করে, খন ঘন সেইয়প ভয়য়য়-গর্জ্জন করিতেছেন!

কটিতটে বিবিধ—বরণ-পট পহিরণ, মলয়জ লেপন অঙ্গে জ্ঞান দাস কহে, বিধি আনি মিলাওল, কলিমা**হ ঐ ছ**ন রঙ্গে!

### (৩) হুহই।

কিয়ে গুরু-গরবিত, নামানে পাপ-চিত, আন-না শুনে কান বিদ্ধে ও নব-নাগর, স্বগুণে আগোর, তারে সে—পরাণ কান্দে!

মহাত্মভব-গীতকর্ত্তার বাক্যন্বয়ের নিম্বর্গি বোধ হয় এই বে—রস-বোধ-বিহীন-শুক্ষ-জ্ঞানের-দাস-সকলের পক্ষে এ সকল গীলা-ত্র্প্রোধ্য। বেমন তরক্ষের উপরে ভরঙ্গ প্রতিহত হইরা—হ্রল সম্প্রাদির সলিলে, নানা প্রকার বিচিত্র-দৃশ্য ও বিবিধ-রঙ্গভণী প্রকটিত হয়; তক্রপে—ভাবরস-তরঙ্গ ও কারণ্য-রস-তরঙ্গর ঘাত-প্রতিঘাতে আমার নিতাই-টাদের পরিদৃষ্ট-লীলা-সকল, নানা বৈচিত্রে—নিরস্তর রঙ্গমন্ন। পক্ষান্বরে—অপ্রতিহত-প্রভাব এবং চিন্তা-কর্ষক অথচ হাদন্ত্র-বিশাপক—মধুমন্ন ভাবের একত্র সংযোগ দর্শনে, ত্র্দান্ত্রগণ—বেমন অতি সহজে শাসনাধীন হয়, আর কিছুতেই তত সম্বরে ও তত সহজে আর্ত্ত হয় না, স্বতরাং ভ্বনৈক বদ্ধ শ্রীনিতাই স্থলরের—প্রেমাশ্রুতে বেমন জগতের পাপ তাপ বিধোত হইতেছে,—ভাব-বিলাস দর্শনে—বেমন জগতের জীন শোক-তাপাদি ভূলিতেছে,—নৃত্যরঙ্গাদি দর্শনে—বেমন জীবগণ স্বার্থ-কাপট্যাদি-পূর্ণ-জগতের কথা-বিশ্বত হইয়া প্রেম-রাজ্যের অপার্থিব অমুভূতিতে মাতিয়া ধস্থাভিধন্ত হইতেছে; তেমনি তাহার হুয়ারের ও গর্জনের ফলে হুদ্দান্ত-কলির—দর্প-চূর্ণ ও প্রভাব-বিমর্দ্দিত এবং পারগুগণের হুৎকম্প হইতেছে। এরূপ শুভ্যোগের সংঘটন না হইলে জানিনা জগতের ভাগ্যে কি হুর্দশাই ঘটিত। ।

(৩) পরীক্ষাছলে শ্রীরাধার কোনও প্রির-স্থী, তাঁহাকে বলেন,—
"স্থলরি ! ধরবি—বচন হাষার।
কামুকো প্রেম-রতন, পুন গোপবি, বেকত করবি কুলাচার॥

সজনি!) ও বোল বল যনি আরি,
কি যশ অপ্যশ ? না ভাওয়ে গৃহ-বাস ! হইনু কুলের অঙ্গার ॥ এ
কি হানি কিবা হৈল, কি পোনে প্রশিল, সে রস্প্রশ-মণি
আঙি, কুল, শীল, আপন—ইচ্ছায়, করিনু ভাহার নিছনি।

ধৈরণ, লাজ ক্ষাল তৃয়া সমূচিত, শুনবি শুক্জন-ভাব,
আপন-কো মান, আপনে পুন রাথনি, গৈছে ন-হোত উপহাস।
তৃরা সম-কো-পুন, আছমে ত্রিভ্বন, কুল-শীল-গুণবস্ত,
ঐছন তৃত্-কৃল, হেরইডে উজোর, ধদজন গৌরব অস্ত।
ভাব-জন্ধুর-যব, হোয়ব অস্তর, আনত দেংবি চিত্ত',
(গোবিন্দ দাস কহ, ঐচে প্রেম নহ, অনুরাপ-গতি-বিপরীত।)
ত গীতে—জীরাধা, সখীকে ঐ কথার উদ্ভর প্রদান করিতেছেন যথা:—

স্থি ! ক্লুকামুরাগের সনিধানে কি আবার গুরু-পৌরব গণনীর ? আমার পোড়া প্রাণে যে এ কথার স্থানই দিতে পারি না ! আমার প্রাণকান্তের অমূত-প্রাবী-কথা ব্যতীত অন্ত কথামাত্র আমুস্ত কানে বাণের স্থান বিদ্ধ হয়।

আহা ! আমার নিত্য-নবীন-নাগরমণি—নিথিণ গুণের নিধি ! আমার প্রাণ দিবারাত্রী কেবল তাহার নিমিত কাঁদিতেছে !! সথি ! আর আমাকে এ সকল নীতি-কথা বণিয়া বৃথা পরিশ্রম করার প্রয়োজন নাই, তাহাতে কোন ফলই হইবে না ! আমি কুল-পাংগুলা—নিক্ষা প্রাণংসা তো দ্রের কথা, এই ক্ষ্ণ-শৃত্য গুর-গৃহে অবস্থান করাই আমার পক্ষে অনন্তব হইয়া উঠিয়াছে ! আমার বে কি বিষম দশা উপস্থিত হইয়াছে, আমি নিজেই তাহা বৃষ্ধিতে পারিতেছি না !

সেই রসের-স্পর্শ-মণি বে—কি ক্ষণে আমাকে স্পর্শ করিয়াছেন জ্ঞানিনা; ভদবি আমার আত্মীয়-স্বজনের কি বংশ-মর্যাদার-অপেকা,—কুলবতীর-কর্তবা-বিচার—এমন কি আজনার্জিত স্বভাবটি পর্যান্ত—স্বেছার তাঁহার নিছনি দিয়াছি!! এ দগ্ধ-জদর লইয়া নিরস্তর-মন্তের মন্তাপক-শুরু-গৃহে—বোধহয় আমি আর থাকিতে পারিব না—শীন্তই যোগিনী কি উনাদিনী

হিয়া দগ দগি, মনের পোড়নি, কহিছু না রহিছু ঘরে এবে দে জানিজু, প্রেধের এ ফল, ভালে জ্ঞান দাস ঝুরে,

### (৪) বরাড়ি।

এ সধি ! অব সব পরীথন ভেলি, তৃহ নব-প্রোন-অমৃত-রদ-বেলী। লাগলি খ্যাম-তমালকো-অংস, ফুল ভয়ো---সব-জগ-অবতংশ !

হইব! স্থি! আমাকে এখন উপদেশ দান নিক্ষণ। হায়! প্রেমের পরিণাম-ফল যে এমন ভয়ক্তর—এ কথা আগে জানিতাম না!!

তরোপবিষ্ট:- অন্ত স্থীর ভাবাবিষ্ট গীতকর্তা জ্ঞানদাস— সাস্থনা দিতে-ছেন — স্থি। তোমার ভালর নিমিত্ত আমরা ঝুরিয়া মরিতেছি, শাস্ত হ ৩—-স্ম্মিলনের উপায় বিধানে এখনি চলিলান।

শেষ ছত্তির এরপ অর্থও হইতে পারে "আমার কপালে (ভালে) প্রেমের এমন ফল ফলিবে আগে বৃঝি নাই, এখন জানিলাম" শ্রীরাধার এই সকল আক্ষেপোক্তি শুনিয়া জ্ঞানদাস ঝুরিতে লাগিণেন। (পদকর্মভরুতে এ গীত নাই)।

<sup>(</sup>৪) পূর্ব-গীতোক্ত মর্শ্ব-ম্পর্শী উত্তর শুনিয়া, প্রশ্নকারিণী স্থী—শ্রীরাধাকে কহিতেছেন, —সথি! আমোদছলে, পরীক্ষারপে আমি উপদেশের অভিনয় করিয়াছি, ছৃঃথিত হইও না। আজ সকল পরীক্ষা শেষ হইয়া গেল, এখন স্থানিশিত ব্ঝা গেল যে—জগতে কখনও কেই যাহা দেখে নাই—শ্রেমরদে-পূর্ণ সেইরূপ নবীন লতিকারপে তুনি, নবীন-নাগর-শ্রামরূপ-হুমালের স্কর্মনে হইয়া, সকল জগতের শিরোভ্যণরপে বিকশিত (ফুল—ফুল) ইইয়াছ। তোমাদের ছ্জনের এই স্বাভাবিক সন্ধিলন কখনও ছিল হইবার নহে, কোনও মৃচ সেজস্ব চেষ্টা করিলে বরং লংগছিল হইয়া

এ দোভ মিলন—কবছ না ছোটে,
মৃঢ়কো যঙনে – বেলী বক্ন টুটে;
খন বিন্ন চাতক জল বিন্ন—মীন।
ভরি বিন্ন—তৈছন তৃছ-তন্ন-খীণ,
চান্দনি বিন্ন—চকোর নাহি পিয়ে,
তৈছন তুয়া বিনে—ভরি নাহি জিয়ে।

যহি সন্নসী, তহি—হংস কি বাস,
যহি নীন্নদ, ডহি—বিজ্নী-বিলাস।
তৈছে ঘটাওল—মাধব-নাধা,
বিদগধ বিধি—অব কো-কক সমাধা?
কহে হরি বল্লভ—কো সম্ঝাওনে,
সৌরভ-বিফু কিন্তে মুগমদ ভাওনে?

### (৫)—হুহই।

## সজনি ! এতদিনে ভাঙ্গল ধন্দ। ভুয়া অসুরাগ-তরঙ্গিণী-রঙ্গিণী, কোন করব অরু বন্ধ ?

ৰাইবে, তথাপি বন্ধন খুলিবে না! আহা! এইজুন্তই তো মেঘ-বিরহিত-চাচকের এবং জল-নিরহিত-মীনের আর ইরির-বিরহে তোমার এইরূপ কীণতা!

আবার — চকোর যেরপ চল্লের-ত্যোৎস্বামৃত ব্যতীত আর কিছুই পান করে না, হরিও সেইরপ তোমা ব্যতিরেকে বাঁচিতে পারেন না।

বেমন—বেধানে সরোবর, সেধানেই হংসের বসতি এবং কেবলমাত্র মেঘের সঙ্গেই—বিহ্যুতের বিলাস, স্থরসজ্ঞ বিধাত। আমাদের রাধা-মাধবের মিলনটিও তেমনি অচ্ছেদ্যরূপে সংঘটন করিয়া দিয়াছেন। এই সন্মিলন মনের সামরিক উত্তেজনা কিছা অচিরস্থায়ী-ইন্দ্রিয়প্রশোদনা-সন্তুত—চেষ্টারুত-ব্যাপার নহে, অভএব কে ইহাতে বাধা-প্রদান করিয়া নিরস্ত রাধিতে পারিবে?

( অপরা স্থীর ভাবাবেশে পদক্তা হরিবল্লভ কহিতেছেন, এত কথার কি
বুঝাইতেছ ? মৃগমদ কি কল্লনও—সৌরভ বিরহিত হইতে পারে ?

(৫) শ্রীশ্রীরাধা-গোবিন্দের (প্রেম-সন্মিলন-লীলা, স্থীগণের—কোটি কোটি প্রাণাপেক্ষাও প্রিয় বস্তু! তাই, রাধার-হাদয়জা হইয়াও—বন্ধ্-হৃদয়ের रेभतय-लाज-कृत-जल जान्रहे, तजाहे छक्र-शिति-तारभ, गाधन-दकली-खभातम-मागरत, लागक विशक-विद्वारम । कतः चिमात, हात गणि-अभग, नील-वमन शतः-चात्रः अ अथ-गामिनो, निलगह कामिनो ! पामिनो सकु चन-मह्म ।

স্বাভাবিক অনিষ্ঠাশকার প্রাবল্যে—কথন কথন কেহ ভাবিতেন—"স্থি-বুষভামু নন্দিনীর পিতৃ-কুল, ও খণ্ড :- কুল ছুইই -- যশে ও প্রভাবে -- চির মণ্ডিছ, এবং তিনি নিজেও ৩৫ক লনের অতিশয় মেহ পাত্রী ও অমুগতা। আবার "नब्जानीना, समर्याना, देश्या-शास्त्रीया-भानिनी-शर्णत्र—मिर्गमिन्' घाठ धन এই সকল বাধার কি জানি হনি কোনও সুনয় ক্লফ্ল-প্রেম-স্লধা-সাগরের-ভরক্তে বিন্দু মাত্রও বিল্ল উৎপাদন করে, হায় ৷ ভাহা হইলে অ:১রা একেবারে মরিয়া যাইব !!" আজ এই ননেহটি একেবারে উন্মূলিত হওযায়—আনন্দবেগ সম্বরণ করা, তাহাদের অসাধ্য হইয়া উঠিয়াছে। এই সময়ে প্রীক্লফের নিকট ছইতে সমাগ্তা কোনও ভী. অভাতেৰ ভায় আনন্দাবেশে—এমতীকে কহিতেছেন। যথা:--

मझिन। এতদিনে আমাদের মানর ধাঁধা দূর হুইল। বুঝিলাম আর, কোনও বাধাই তোমার অনুরাগ-তরঙ্গিণীকে রোধ করিয়া রাখিতে পারিবে না। वृश्विनाम---(य-अञ्चान-नित अवन-अवाह देशवा 'अ वज्जा-तान - छीत अवः তীরস্থ-তর্ন-ভাঙ্গিয়া এবং প্রক্রন রূপ সম্পুষ্ঠ উচ্চ পর্বতকে দুজ্মন করিয়া কেলি-স্থধা-রদের-সাগরে—গিয়া লাগিতেছে, বিল্লাতিক্রমী বিক্রমে--বিল্লাশকার অবসর নাই।

এখন অভিসারে চল। হার, রত্নালয়ার এবং নীলামর---পরিধান কর। দেথ ! যেমন দামিনী, জলধরের কারা আচ্চাদিত হইয়া তাহার বক্ষতলে বিরাজ করে, এবং মাঝে মাঝে জলধরকে স্বকীয় বক্ষতলে লটয়া---পূর্ণ-কান্তিতে জগং ঝল্সিত করিয়া তোলে, আজিকার আনন্দের নিশিটি—ঐ রূপ বিলাসে অভিবাহিত করিতে: হইবে।

জুয়া-পথ চাই, রাই! রাই! বলি—গদ-গদ, বিকল-পরাণ, অণ এফ, কোটি—কোটি যুগ মানত, ছরি বল্লভ পরমাণ।

### (৬) জীরাগ।

(বিনোদিনী) কনক-মৃক্র-কাঁজি, শ্রাম-বিলাদের—হন্দরতমু—সাজই কভেক ভাতি। নীল-বসন, রতন-ভূষণ—জলদে দামিনী সাজে, চাচর-কেশের- বিচিত্র-বেণী, দোলিছে হিয়ার মাঝে।

ষদ্গত-প্রাণ-হরি, তোমার প্রতীক্ষায় পূর্ব চাহিয়া রহিয়াছেন, এবং তোমার বিরহে বিকল হইয়া 'রাই রাই' করিতেছেন। প্রত্যেকটি মূহুর্ত্ত, তোমার অদর্শনে—কোটি যুগের স্থায় জাহার ছংখপ্রদ হইতেছে। পদ কর্ত্তা হিরবলভ তত্ত্বিভা অপরা স্থীর ভাবাবেশে কহিতেছেন—বহু-পরিষ্ট প্রামাণিক কথা।

(৬) প্রাচীন কালে এক্ষণকার স্থায়—ক্ষণভ কাচের দর্পণ ছিল না, নে সমন্ধর্কার মহাভাগ্যধান্-গণই কেবল মণি-নির্দ্ধিত বহু মূল্য দর্পণ ব্যবহার করিতেন, সাগারণ গোকেরা স্বর্ণ রোপ্যাদি ধাতুতে দর্পণ প্রস্তুত করিয়া, বিশেষরূপ মার্জনাদি ঘারা ভাহার মাস্থা এবং স্বচ্ছতা বিধান পূর্ব্বক ধাতুমন্ন দর্পণ-নির্দ্ধাণ করিতেন। এই গীভোক্ত "কনক-মুকুর" কথাটি—পূর্ব্বোক্ত রূপে প্রস্তুত স্বর্ণ-দর্পণের প্রতিপাদক বলিয়া বোধ হয়।

শীরাধার বর-তম্ম থানি স্বতঃই—স্বর্ণ-দর্পণের স্থায়—সমূজ্জন ও চাক্-চিক্যময়—তাহার উপরে বিনোদিনী,—আজ নানা ছাঁদে সাজিতেছেন। কোন ও স্থী অপরাকে তাহা দেখাইয়া কহিতেছেন—দেখ, কুফা-যামিনীর मनन-यूगंध-नीरथंत जिन्मूत, छाट्ट हन्मरनत (तथा, नन-कन्धत-रकारत, चल्ला, ननीन-हार्म्पत (नथा। तरात चारतरण, गमन महत, ह्रा ह्रा हिन हात्र गांस, चाथ ७ ह्रा, जेव हर्मामी, विक्रम नग्नरन हात्र।

অভিসারোপযোগী নীলমণির আভরণ ও নীল-বসন পরিরা, আমাদের ধনী-মণি আদ যেন জলদাবৃতা-দামিনী সাজিরাছেন। আর স্থণীর্থ-কুন্তলের-বিচিত্র বেণীটি পৃষ্ঠ-দেশে লম্বিত না করিয়া হিয়ার উপরে দোলাইতেছেন। নাগরের নিকটে স্বাভিষোগ প্রকাশের চুড়াস্ত-চাত্রাহিময়-- এই প্রকার উদ্দীপক-বেশ রচনা, জগতীতলে কৈবল আমাদের কলাবতী-শিরোমণি-স্থীর পক্ষেই সন্তব্য

আবোও দেখ তাহার সীপিছ-সিশ্বের স্বভাবিক-শোডাই মদন-মুগ্ধকর, তত্পরি আজ মদন-মোহনের-মনে।মুগ্ধকর একটি চলন-বিশু দিয়াছেন, আহা। কি অপুর্ব শোভা। যেন কেশ-রূপ-নবীন-জলধরের-কোলে—অর্বণের সহিত একটি নবীন চাঁদ সন্মিণিত হইয়া দেখা দিয়াছে।!

আজিকার রিত সমস্ত বেশেই—একই উদেশ্যমর-চাত্রী-কলা থাকটিত, সেই অন্তই বৃথি রসকোত্রিনী—রসাবেশে—মন্তর গমনে চুলিরা চুলিথা চলিতেছেন, এবং উত্তরীর বসন অর্জোলুক্ত করিয়া ঈদৎ হাল্ডের সহিত আমাদের প্রতি বৃদ্ধি নরনে চাহিতেছেন।

শ্রাম সোহাগিনী বেমন নীলাম্বরে অঙ্গ বুকাইরা চলিরাছেন,তেমনি বুঝি আজ্ব শ্রাম-জলধরের আলিঙ্গনের ভিতরে লুকাইবার সাধ? যেমন মহ,অত্রাগে শ্রামের বেণীটি বক্ষে ধারণ করিরাছেন, তেমনি বুঝি শ্রাম-ক্ষনাগরকে বুকে ধরিবার সাধ? সিন্দুর-মধ্যবর্তী চন্দন-বিন্দুটি যেমন নীল-কুম্বলের—শোভা-সংবর্জন করিতেছে,বুঝি তেমনি অনুরাগ-মন্তিত হইরা, শ্রাম-বক্ষের শোভা বর্জনের সাধে—ভগমণি হইরা আজ অভিসাবে চলিরাছেন।

### (१) ८वटकारशांत्र।

ধনি ধনী-রাধা, আওয়ে বনি, অজ-রমণী-গণ-মৃকৃট-মণি ॥ এ ॥ আধর-ত্রেরিণী, রসিক-ভরজিণী, রমণী মৃকুট মণি বর-ভর্মণী, ফুল-ধ্যু-ধারিণী, পীন-কুচ-ভারিণী কঁচলি-পর নীল-মণি-হাণিণী কনক-জদীপ'মণি,বরণরিজুরী-জিনি,অলপর-বাদিনী-রূপ-সোহিনী

পদ কল্পতরতে 'রাই ! কনক-মুকুর' বলিয়া এ গীতের আরম্ভ । আমাদের ওাও ছত্ত্রের স্থানে ৬।৭ ছত্ত্র । এবং পঞ্চম ছত্ত্রের এইরূপ পাঠাস্তর—যথা:— "সীথায় সিন্দুর, নয়নে কাজর, তাহে চন্দনের" ।( পরবর্ত্তী গীতগুলির সহিত সামঞ্জন্ম রক্ষার্থ এ গ্রন্থে গীতের ভণিতাটি গৃহিত হয় নাই । কারণ ভণিতা দিতে গেলে এ খানেই অভিসার সমাপ্ত হইয়া যায়। ভণিতাটি এইরূপ:— শ্রামানক ভণে, নিকুঞ্জ ভবনে, কল্পতরুর মূলে রসের আবেশে, বৈসে বিনে।দিনী, শ্রাম নাগরের কোরে।)

<sup>(</sup>৭) বয়-নিরীক্ষণপর-নাগরেক্ত, প্রাণেশ্বরীকে দ্র হইতে দর্শন করিরাই মোহিত হইয়া উঠিলেন! বলিতেছেন ২ত্ত আমার প্রিয়তমারায়া! ক্রন্মেশ্বরী আজ সমস্ত ব্রুক্তনার মুক্ট-মণি সাজিয়া (বনি) আসিদেছেন, আমার স্থরক্রায়রা-রায়া, রুসিকনাগরকে—রসে-ড্বাইবার—ভাসাইবার—বেগবঙ্গী তরক্রিণী এবং য়াবতীর বর-তরুণী-রমণীর শিরো-ভূবণ-স্বরূপা—তাহাতে বিন্দুমাত্রও সন্দেহ নাই। দেখ, ফ্ল-দহ্নরূপ-জ-ধারিণী—পীণ-পরোধর-ভারাবনমা—বিনোদিনীর—কঞ্লিকাটির উপরিভাগে কি স্কল্ব — নীণ-মণির-য়ার দোলিতেছে! স্থণীপ্র-হেম-মণি ও বিহ্যৎ-কান্তি-বিজ্য়ী-গৌরাক্রিমী, জণধর-য়াসিনী হণরায় অর্থাৎ মেঘবৎ-ড্নীল-বস্ব-মারিণী হণ্ডয়াতে (বাস — বস্তু, বাসিনী বস্ত্র-পরিহিতা) রূপের বড়ই শোভা বিক্শিত হইতেছে! ড্মক্স প্রক্রেরী অপেক্ষাও ক্ষীণ-মধ্যা-স্ক্রী—কর্ম্পির ও মণি-কিন্ধিণীর-মধ্ব-ধ্বনি-

কেশরী ডমর জিনি, অভিশয় সাঝাপিণী, রগনা-কিজিণী-মণি, সধ্র ধ্বনি,

গুরুষা নিত্তিনী, বিলোলিত বর্বেণী, উরুষুগ হ্বলনী— ছবি লাবণি।

মরাল-গমনী-ধনী, রুসভাতু-নূপতনী, গোণিন্দ দাস—পত্ মন-সোহিনী !

### (৮)—जुगलो।

পরশিতে চম কি চলরে পদ- আধ অভিনব- নাগর স্থনাগরী মেলি অনুমতি না দেই, না করে রস-বাদ রস-বৈদগণি-অবধি ভৈ গেলি

বিস্তার করিতে করিতে—আসিতেছেন। জাহা। স্থানত-উরুষ্গলের উপর পর্যান্ত বর-বেণী বিলম্বিত করিয়া, লাবণ্যের-ছবি-রূপে**নী—গুরু নিত-**ম্বিনী আমার প্রাণ-প্রতিমা-বৃষভান্ত-নন্দিনী আজ কি মনোহর-মরাল গমনে আগমন করিতেছেন।

স্থী-ভাষাবেশে তত্ত্রোপবিষ্টা গীত কর্ত্তা গোবিন্দদাস, সৌন্দর্যা-ব্যঞ্জক বিশেষণ-সমূহের উপরে আর একটি গুণ-বাচক বিশেষণ খোগ দিলেন--- শার আমার পত্তর মনো-সোহিনী ।

(৮) একণে কেলী-বিশাদ-কলার — প্রদর্শন-রসান্তাদ চলিয়াছে। কোন ও সধী তাহা অপরাকে দেথাইতেছেন—দেও দেথ কি অপূর্ব-রঙ্গ! নাগর কর্তৃক স্পৃষ্ট হওরা মাত্র রঙ্গিনী-শিরোনণি, এক বা অর্দ্ধিদ,—চমক্ষিয়া চলিতেছেন! নাগরের লালসাময়-চেষ্টাতে—অনুমতি দান অথবা বাম্য-ভঙ্গীমর বিতপ্তা, (রগ-বাদ) কিছুই করিতেছেন না!! আছ অভিনৰ-নাগর-নাগরীতে মিলিয়া রস-বৈদ্ধীর-অবধি প্রদর্শন করিতেছেন! হঠ-পরিরস্তপ-আরস্তপ---বেণি ধনী, মুধ-যোরি,---রংল,কর-ঠেণি আন কহিতে ধনী আন কহে, ডঙ্কে নর্ব কহিতে, বিহুদি মুখ বঙ্কে .

রতি-রণ-রপহি--ভঙ্গ না দেল ! না জানিয়ে কাম কেমন যণ নেল !!

### (३)—दक्षाता

( আজু) কাননে—হেরি হেরি রক্ত ধন্দে!
মনমথ-রাজ, লাজ ভর-তেজাওল, রমণী পড়লি রতি ফান্দে।
মুগল-কিশোর, ওর নাহি আরতি—চোরি-রভদ-রদ-রদেল,
দোহ-ভূজ-বেলী—মেলি, তুমু-তুমুভরি, ভূষল মদত্তরঙ্গে।

দেখ, নাগরেজ্র-মণির —বলাৎকার-আলিজনের — মজলাচসণেই ধনীমণি করে কর ঠেশিরা দিলেন ও মুথ ফিরাইরা রহিলেন !!

নাগর যতই অহুনর করিতেছেন তত্তই কেবল রলিনী—বিনোদিনী একে আর বলিতেছেন, এবং ভীতি বা ব্যথিত-ভাব প্রকাশ করিতেছেন। নিরুপায় নাগর কোনও চাতুরীমন্ত্র-বচনেরই উত্তর না পাইরা পরিশেষে সার্ল্য-মন্ত্রাক্তর-বচনে 'মর্ম' জানাইলে—হাসিরা আরোও মুথ ফিরাইরা লইতেছেন।! অভএব একথা নিশ্চর যে—রতি রণ-রঙ্গে,ভঙ্গ নাই। জানিনা, কন্দর্গ— আজ্ঞ এ কিরুপ যশ বিস্তার করিতেছে।!

(৯) এই প্রকার কেলী-কৌত্কের মধ্যে চাবি-চক্লের সন্মিলন হওয়ার
ামা শিয়োমণির আর আত্ম সম্বরণের সামর্থ রহিল না ! উভরে উভয়ের পানে
াহিয়া চাহিয়া—ধন্দ হইয়া পড়িলেন। তৎক্ষণাৎ—রমণীর-ভর-লজ্জাবনাশের একমাত্র-কর্ত্তা-কন্দর্প-রাজের আগমন হইল, ধনী-মণির লজ্জা সন্ধোচের
জিক্ষালিক-চেটা অমনি চলিয়া গেল ! তিনি স্বরতের-কালে—বাধা পড়িলেন !
রহঃ-কেলী-রসের-রকোৎসাহে একণে কিশোরী-ধনীর আর আরতির অবধি

हम्भटक, नोल-निर्मा किर्य रेश्वर ? नोल-निर्मा किर्य

কিয়ে দামিনী-খন, একহি ডকুমন—ত্র্থ-গাগরে দেই ঝম্প ? এ হ্র্থ-রাভি, মাভিরন্থ মাধব, মেধীজন-মনহি ক্লাগ লোচন-যুগল, সফল কব হোরব, হরিবল্লভ ধরু আশ!

### ( > )-विश्रामणा।

হ্যাত-স্থাপি, হুতল বর-নাগর, পাণি পরে:ধর আণি# কনক-শস্তু থৈছে, পূজকে-পূজাওল, নীল- দরোরুহ বাঁ।পি

নাই ! ভূজ-বল্লী বিস্তারঃপূর্বক-পরস্পারে প্রগাঢ়-আণিঙ্গন-বন্ধ হইয়া য়দন-তরজে ড্বিলেন ! দে শোভা দর্শনে সধীগণের ধাঁ ধাঁ লাগিতে লাগিল 'এ কি চস্পাকের বন্ধে নীল-কমলের-কোলে চম্পাক বিরাজিত ? কিম্বা জলধর দামিনীতে মিলিয়া এক-দেহ ধারণ পূর্বক – স্থাথের সাগরে সাঁভার বিতেছে ?' আহা! মাধব যদি এইরপ স্থাথে মন্ত পাকিয়া আজিকার স্থাপর রজনীটি যাপন করেন, তবেই সধীগণের পূর্ণানক হয়!!

লতাবাতায়ন-তলন্থা স্থীগণের ঐ সকল আনন্দোল্লাসময় বচন ওনিয়া (ফ্রিতে ওনিয়া) গীতকর্ত্তা সাধকের ভাবে কহিতেছেন হায়! এই স্থেধুয়-তম-লীলা দর্শনে আমার নমন যুগল কবে সফল হইবে? আর কত দিন অংশা ধরিয়া রহিব ?

<sup>(</sup>১০) এই গীতিটি রসাণস-গীণার ছবি। \* আপি—অর্পণ করিয়া। প্রি—হস্ততন, ধর্মন কোনও প্রকে, নীলপদ্ম উপরে অর্পণ দারা—স্থান্য

मिथरह ! (कभाव-८क नि-निनारम,

ণানালভী— অলী-রমি,নাহ-আগোরল,পুন-রভি-রঙ্গকো আলে। জ্র বদন মিলাজি—ধ্য়লঞ্চ, মুখ-সপ্তল—চান্দ মিলল অর বিন্দ। চকোর ভ্রমর—তুত্-তুত্-আনন্দিত, পিবি—অমিয়া, মক্রন্দ।

है कि की गीक हिन्हां गरनी भूनि बार्श करता न नी कनना।

শস্ত্র,বাণ-শিঙ্গ-মৃর্ত্তি অর্চনা করিয়া রাখিয়াছে। স্থি ! দেখ,—কেশবের কেলি-বিলাসের, প্রতি-বাবহারে—রসম্মীর রঙ্গ দেখ, — যেন অলী-কর্ত্তক রমিতা মালতী লতা স্বকীয় রমণ ভ্রমরকে, পুনরায় রতিরক্ষের অভিলামে ফাঁদের ঘাবা আগুলিয়া রহিয়াছে !! (নাহ-ফাঁদ। আগোরল জড়াইয়া ধনিল, কিম্বা আবৃত্তকরিল; মালতী শব্দের, প্রথমার্থ—জাতী-লতা, দিণীয় অর্থ—যুব্তী ) ফাঁদে জড়ানের প্রক্রিয়া—পরের প্রারে স্ব্রক্ত।

"দোছ দোহ চকোর ভ্রমর''- -নাগরের নেত্র-রূপ চকোরদ্বর নাগরী-মণির মুধরূপ-চক্তের আমিয়া পানে আনন্দিত এবং নাগরীর নেত্র-ভ্রমর্থর নাগরেক্তের মুধপুদ্যের 'মক্রন্দ' পান ক্রিয়া পুশ্কিত।

পদকল্পতক ও পদামৃত সমুদ্রের পাঠাস্তর—† আরতি রতি-রসে কোরে ঘুমাওই, পুন পুন স্থরত কি আশে। ‡ 'রহণ'—ইত্যাদি। আরোও একার্থক কুদ্র কুদ্র বৈষ্ণ্য আছে। সকল গ্রন্থেই ীতটি ভণিতা-শৃক্ত।

# শ্ৰীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

## णथ ठकुर्फनी कानना।

( > ) धाननी—शिरगीत हेट्सण ।

( (গারা ) দয়ার অবণি, গুণ নিণি, স্তরধুনী-ভীরে, নিদয়া নগরে ( (গারাঙ্গ ) বিহরয়ে নিরবধি।

( > ) সচরাচর অন্ন সাধনে—বহু ফল প্রদানকেই বলা হয়—ভগবানের 'দয়া'। সাধন হীন জনকে সাধনের ফল দান—'বড় দয়া'। আর নিরস্তর-পাপাচার-নিরত্ত-বহু-অপরাধকারীকে—ক্ষমা করিয়া-তক্রপ ফল দান 'আসাধারণ দয়া'। শ্রীভগবানের ভিন্ন ভিন্ন অবভারে—সমন্ত্রিশেবে—স্থান বিশেবে— ব্যক্তি বিশেবের প্রতি এ রূপ দয়ার উদাহরণ বিরশ নহে।

কিন্তু সকল প্রবার্থের সার—বিধি ভবাদির-নাঞ্চিত—আপন ভজিসম্পদ্ ও—প্রেম ধনের প্রদাতা—কেবল ম'ত্র একা শ্রীরাধা-রমণ! তাঁহার
করণার ব্রজের পশু পক্ষী তরুলতা পর্যান্ত—অপ্রার্গত-প্রেম-স্থধা-লাভ
করিয়াছে! তাই শ্রীরুক্ষ চক্রের করণা—আলৌকিক এবং অতুলনীর। কিন্তু
সে গুর্লভ-দয়াও, সে লীলার—ব্রজের বাহিরে কেমন করিয়া বিতরিত হর নাই,
তাই—জগন্মজলাবতার-শ্রীগৌরচক্র-রূপে—ভীবগণের নিধিল-অমঙ্গল-থণ্ডন
গুল্লভি-নাণ এবং শুভান্তভ কর্ম্মজল-কপ—অনর্থ-ধ্বংশ করিয়া—স্থান, কাল,
পাত্র, বিচার বাতিরেকে—সেই অনর্পিত-প্রেম-রসকে, ভাব-সন্মিলনে আরোণ্ড
মধুর-তর করিয়া—উন্মুধ বিমুধ সমন্ত নর নারীকে, এমন কি. পশু পক্ষী
বৃক্ষ শুন্মাদিকে পর্যান্ত—অবিশ্রান্ত বিতরণ করিতেছেন!! স্ক্ররাং শ্রীনবন্ধীপ
চক্র, শুধু "অতুলনীর দয়াল" নহে—এমন দয়াল আর প্রত্যক্ষ হওয়ার—কিছু
মাত্রও সন্থাবনা নাই। অতএব আমার গোরা—"দয়ার অবধি"।

ভূজ-যুগ ভারোপিয়া ভকতের কাছে।
চলি যাইতে, না-পারে গোরাচাঁদ, হরি হরি বলি কালে।
থেমে হল ছল, নয়ন যুগল, কভ নদী বহে ধারে,
পুলকে পুনল, গোরা কলেবর# ধরণী ধরিতে নারে!!

আবার, আদর্শ-মানবে—আদর্শ-তক্তে সঞ্চারিত "জীবনীতৃত গোবিদ্দ-পাদ-তক্তি স্থাপ্রাদি'' গুণ সমুদ্রের সহিত, আমার গৌর হবি,—( ভক্তি-রসম্মৃত দিরু গ্রন্থের দক্ষিণ বিভাগ দ্বইবা) সর্বাধীনারকতা, স্বর্ম্যাঙ্গ, সর্ব-সল্লকণ পূর্বতা, সত্য-বাক্, শরণাগত-পালকতা, ক্ষমাশীলভা, কারণা, বদালাদি—ক্ষনীয় পঞ্চাশং—সাধারণ ভগবদ্গুণ, ও সর্বজ্ঞতা, ক্ষথাথিল দিন্ধি-তাদি—জ্ঞীমহাদেবাদিতে সঞ্চারিত পঞ্চগুণ,—এবং অবিচিন্ধ্য-মহাশক্তি-সম্পন্ন হা, হতারির-গতি-দায়কতা, আনতারারকীর-বীজ-রূপতা ও আত্মারামগণের মনাকর্ষণাদি—ক্ষ্মীকাস্তাদিতে সঞ্চারিত-পঞ্চগুণ এবং কেবল পূর্বতম অগবান্-প্রকাশে বিরাজিত—অনুল্য-মধুর-প্রেম্ময়তা, সর্বজ্ঞগতের-মানসাকর্ষণাদি গুণ-চতুইর সম্বিত,—পূর্ব-পরিণতি-প্রাপ্ত-অনস্ত-গুণের—অপার সমুদ্র । স্ক্ররাং—গ্রানিধি ! ।

ভাই আমার জগন্মসল-গুণ-ধাম—গৌর হরি;—শিক্ষা, সভ্যতা, ধর্ম, কর্ম জ্ঞান ভক্তাদির প্রচারের ও বিচারের প্রধান কেন্দ্র হান—এবং যশ, গৌরব, ধন, জ্ঞানাপিতে-বিমুগ্ধ—কঠিন-চিত্ত-বন্ধ-মানব-মণ্ডলীর সংগার রঙ্গ ক্ষেত্র—
অপচ পুণ্য-সলিগা-ভাগিরপীর শীরবর্ত্তী—অভিন্ন-বৃন্দাবন শ্রীনবন্ধীপ নগরে—
বিহার করিয়া, জগহন্ধার করিতেছেন!

"অব্যর্থ-শক্তি-দম্পার-শ্রীহরি নামই, কলির জীবোদ্ধারের একমাত্র উপার'' একথা পরম সত্য বটে,—কিন্তু যে ১০টি, নামাপরাধ আছে। যথা— (১) শিব-স্থাকে শ্রীবিষ্ণু-ভগবানের গুণাবতার ভাবনা না করিয়া স্বতক্ত বৃদ্ধি করিয়া—শিবের ও বিষ্ণুর গুণ নামাদিতে ভেদজ্ঞান; (২) গুরুদেবে

मत करनवत्र — हेजि भन कत्र ०का ।

সঙ্গে পারিষদ, ফিরে নিরন্তর, হরি হরি বোল বলে, স্থার কান্ধেতে, ভূজ যুগ দিয়া, হেলিভে তুলিভে চলে।

অবজ্ঞা, (প্রকতে মহুষ্য-বৃদ্ধিই এই অবজ্ঞার প্রথম সোপান; (৩) বেদাদি-भाजनिका; (8) नारम व्यर्थनाम । क्वांभगा; (६) नारमन वत्न भाभ-ধ্বংশ করিব--মনে করিয়া পাণাচারে প্রারুতি; (৬) যজ্ঞ দানাদি অপর বে কোনও শুভাম্ছানের সহিত নামকে সমান মনে করা; (৭) শ্রনাহীন বিমুধ্-জনকে নামে।পৰেশ প্ৰদান;(৮) নাম-মাহায়েয়ে অবিখাস; (৯) সাধুজনের নিন্দা; ( যেহেতুক ইহারা নামের খ্যাতি প্রতিষ্ঠাপক) (১০) আমি বছতর নাম-কীর্ত্তক, নাম আমার জিহ্বার আয়ত্ত, আমার ফ্রায় নাম-কীর্ত্তন-পরায়ণ কে আছে ? এইরূপ ত্র্ক্জি; এগুলি সংঘটিত হইলে---কুজ্ঝটিক।চ্ছন্ন-স্থানে স্থা-কি বণের ভার—নামের-শক্তি সহ্দা প্রকটিভ হ্ন না। তরিমিত, রবি-কিরণের সহিত বায়ুর সংমিণন ঘটিলে--বেশন কুজঝটিকা কাটিয়া—সঙ্গে সংকই রৌজের ভেজ কার্য্যকারী হয়,—সেইক্লপে আমার গৌরহরি, নামের সহিত প্রেমের সংমিত্রণ পূর্বক-নামাপরাধের ভীম-বাধা বিদ্রণ করিয়া জগতে নাম দান করিতেছেন!! স্থভরাং জাবগণ যুগপৎ নাম 'ও নামের চরম-ফল-প্রেম পাইয়া ধন্ত হইতেছে। প্রেমর-সাধনরূপে, নামের--শক্তি ও ক্রিয়া প্রকাশের আর প্রয়োজন হইতেছে ना ! ! दिन्थ छाइ ! मधात व्यविध अर्थानिधि नाटमत्र मार्थक छ। इहात व्यविक আর কি হইতে পারে!!

উদেধ—আমার গোরার্টাদ,প্রেমভরে এমনি অবশ যে—ভক্তের ক্ষত্মে হস্তা-প্র করিয়াও চলিতে পারিতেছেন না ! তথাপি কাঁদিয়া কাঁদিয়া—"হর্বল" বলিতে বলিতে—নাম প্রেম বিলাইতেছেন ! নয়ন-য়গল প্রেমে ছল ছল করিতেছে । আর তাহা হইতে এক একটি নদীর স্থায় অবিশ্রাস্ত-প্রবাহে— কত অশ্রধারা বহিতেছে !! শ্রীঅঙ্গধানি প্রেম-প্রাকে পূর্ণিত ! অক্ষয়-অগাধ-অনস্ত-প্রেমের—ভাতার স্বরূপ সে দেহের ভার ধারণে, ধরণীর শক্তি হইতেছে না, পুশক-কম্পনের সহিত যেন পৃথিবীও কাঁপিতেছে !! ''স্থ্যন ভরিয়া, প্রেম উভারল'' \*, ''পতিত পাবন নাম' শুনিয়া ভরুষা, পরমানন্দের, মনেতে নালয় আন।

### (২) শ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রস্থা—শ্রীরাগ।

আরেভাই! নিভাই আমার দয়ার-অবধি! জীবেরে করুণাকরি, দেশে দেশে ফিরি ফিরি, প্রেম-ধন যাচে নিরবধি!

এদিকে—সর্বাদি পার্ধনগণ সঙ্গে রহিরাছেন এবং ভাব ব্রিয়া তাঁহারাও 'হরিবল' 'হরিবল' বলিরা উচ্চধ্বনি করিতেছেন, আমার প্রভু তাহাতে উল্লাসিত হইয়া—যেন হরিনামের স্থারসে সাভার দিতে দিতে—স্থার (প্রীনিভ্যানন্দের ?) ক্ষমে করার্পণ পূর্বক হেলিয়া ছলিয়া চলিতেছেন। গীভকর্তা পর্মানন্দ দাস (ইনি কবিকর্ণ-পূর নহে) কহিতেছেন—এইরূপে আমার প্রভু সকল ভ্বন প্রেমেভরিয়াও ভাণ্ডার প্রেম-পূর্ণ অর্থাৎ উদ্বৃত্ত রাধিয়াছেন। (উভারল অর্থ অভিরিক্ত বা উব্ত্ত) ইহা—এবং তাঁহার "পতিত্তাবন" নাম শুনিয়া অস্মানৃশ অধ্যের হৃদয়েও ভরসা হইতেছে। আর অক্তপা তর্ক মনে আসিতেছেনা।

<sup>(</sup>२) পূর্ণ-তম-ভগবান্ শ্রীগোরস্থলরের অভিন্ন-বিগ্রহ—শ্রীনিভ্যানলচন্ত্র, গৌর-ভগবানের 'ইচ্ছা' প্রকৃত্তীরূপে কলে পরিণভকারী-ক্রিরা-শক্তির, কেন্দ্র অরপ। ইচ্ছা ও ক্রিরার সন্মিলন ব্যতীত—ক্লোংপত্তি হয় না। শ্রীগৌরাস অব্দারের ভ্বন-মঙ্গল-বিগ্রহ—দর্শনে — ক্র্পনি—তৎপরিমলাখ্রাণে— অভিবলনে শ্রীপাদ-রজোভিবেকে — কৃষ্টি-স্থধা-লাভে—বচনামুত্ত-পানে—সংকী-

পাঠান্তর--- ধবিধারল, ইতি পদকলভক

অবৈতের গঙ্গে রঙ্গ, ধরণে না যায় অঙ্গ, গোরান্ধোনে গঢ়া- :
তত্মধানি,

চুলিয়া চুলিয়া চলে, ৰাজ্জুলি হরিবলে,জুনয়নে ৰহে নিতাইক#
পানি !

কপালে তিলক শোভে, কৃটিল-কৃন্তল-লোলে ণ গুঞ্জার—
আটুনি চূড়া তায়,
কেশিরী জিনিয়া কটি, কটিতটে নীল-ধটি, বাজনকুপুর রাঙ্গাপায়

র্ত্তনের মলল ধ্বনিতে ও তাহার সরণে, অর্চনে—প্রসাদ ও নির্মাল্যাদি গ্রহণে—
সহস্র সহস্র ভাগ্যবান্-জীব, সাধন-স্ক্র্লভ-প্রেম পাইয়া ক্বতার্থ হইলেও—
বহুতর স্ত্রীলোক,বালক,বৃদ্ধ এবং জড় অন্ধ অত্র—এবং নহুতর উদ্ধত-অহন্ধতপাবও ও কুসংস্কারাদ্ধ-শাস্ত্রজড়বৃদ্ধি—কলি-কল্বিত-ত্র্জাগ্য-জীব, বঞ্চিত
থাকিরা যাইতেছে—দেখিয়া, আমার করুণার্দ্র-চদর-নিতাই-চাদ তাহাদের
উদ্ধারার্থ—স্বয়ং, দেশে দেশে—ঘরে ঘরে ঘ্রিয়া ঘ্রিয়া প্রেম বিতরণ করিতেছেন! আর কথনও কোনও যুগে এমন করুণা-বিলাস দেখা বার নাই এবং
আর কথনও এমন হওরারও সন্তব নহে, অতএব আমার নিতাইচাদ—"দ্রার
অবধি"।

ত্রজনীবার যেমন শ্রীনিভাজী,—শ্রীবিশাথাদেবীর সহিত, পরিহাসতঙ্গীমর প্রেম-বাণীও রসার্জ— সকৌতৃক—নানা ব্যবহার-ঘারা, শ্রীশ্রীরাধা-মাধ্যের
আনন্দ বর্জন করেন, তেমনি আমার নিতাই-চাঁদ, শ্রীঅহৈতাচার্য্যের সহিত,
রঙ্গমন্ত্র-বাক্-ব্যবহারে—শ্রীগৌরাজ চল্লের আনন্দ বর্জন করিতেছেন! এবং তাহা
করিতে করিতে গৌরপ্রীতি-রসের আতিশব্যেশ্রীঅজ-ধারণে অসমর্থ হইনা উঠিতেছেন! আহা! আমার নিতাইর তকু ধানি কেবল গৌর-প্রেমে গঠিত।

ঐ দেখ-গৌর-প্রেমাবেশে ঢুলিয়া ঢুলিয়া চলিতেছেন আর বাছ ভুলিয়া

পদকল্লভকুর পাঠাবর--- কত। বিশাসে।

प्रवन स्माहन दिवा ! मकाहेन # त्र रणम !! त्रतारवरण-वाहे वाहे शत !

थपू भात निजानम— (क्वन चानम-कम, खन नात-वृम्नावन नाम।

"হরিবোল।" বলিতেছেন আর নয়ন দিয়া অবিশ্রাস্ত প্রেমাঞ পতিত হই-তেছে। এই রূপে আমার নিতাই-চাঁদ শ্রীগোর হরির আচরিত-রীতিতে—প্রেমের সহিত মিশাইয়া নামধন বিশাইছেন।!

আমার নিশইটাদ ব্রদ্ধ-শীলার আবেশে, 'বলরাম' ভারের ক্রিভে—
আজ গোপ-বালকের-বেশে সাজিয়াছেন ! কপালে ভিলক ; স্ভকে কৃটিলকেশ-কলাপ বিলোলিত ! গুঞ্জামালার বারা অঁটিয়া—চুড়াটি রচনা করিয়াতেন,
কেশরী-বিনিদ্দিত-কটির-তটদেশে—নীল বর্ণের হড়া বিরাভিত ! রুতুল-চরণে
নুপ্র-নিনাদিত হইতেছে !! কি আভর্ষা ! বেশটি অতি সাধারণ, কিন্তু ভাহার
সৌন্দর্য্য-মাধুরী এমনই আসাধরণ যে—ভাহাতে বাবতীয় ভ্বন বিমোহিত হইয়া
বাইতেছে !! এবং সমুদ্দ দেশের যোগ্যাযোগ্য জীব-মগুলী—উহাতে মজিয়াআরুই হইতেছে !! প্রেমার স্বভাবে বাধা ক্রত হয়, তাহা কথন ৪—
ভাজত্রত বা আচরিত উদ্দেশ্র সাধনের বাধক হয় না। প্রতরাং এর স্কল
বাল্য-চাঞ্চল্যমন-নীলা-বারা—নাম-প্রেম-প্রচারের বাধামাত্রও ঘটিতেছে না,
বরং স্ববিধা ঘটিতেছে। ভাহাতেই বুঝি—অংমার রসমন্ন প্রাভু, রসাবেশে—
আট্র অট্ট হাসিতেছেন ? গীতকর্ত্তা উল্লান্ত হইয়া কহিতেছেন—আমার প্রভু
পরমানন্দের কন্দ স্বরূপ ( অর্থাৎ আস্থান্য মূল ) তাই—আমার প্রীনিত্যানন্দের
বিহার এম-ই মধুর, এমনই জগন্মঙ্গলমন্ম !!

<sup>\*</sup> পদকরতকর পাঠ— নাতাইল। ইথা ব তীত "নরিয়াই আমার নিতাই' ইত্যাদ্য গীতটির ভণিতাও ঐ গ্রন্থে এ গীতে গৃহিত হইয়াছে। গৌরপদ ভরক্লিণীতে ৫ম, ৬৯ ছত্ত্র-ছইটিই নাই!!

### ( ७ ) श्रीकृष बाह,-- शास्तात

আধ-বদন হৈরি লোচন-আধ
দেধব কিরে অরু পুন ভেল সাধ,
দগরিহ † দিঠি-ভরি পেথলু ভেলা
মেধ-বিজুরী বৈছে উগী লুকি গেলা!
ঘাইতে পেথলু—নাগরী-নারী—
ক্দর বুঝাওলি—পালটি নেহারি,

মন্থ্য-গমনে, বুঝাওলি অনুরাগ তিল-এক দেখমু, অবন্থমনেজাগ! রূপেভূলল আখি-লগেলই গেল তবধরি জগভরি ফুল শর ‡ ভেল!

(৩) শীরাধার অত্ননীর মাধুর্য্য এবং বৃল্পাবনের-নবীন-মদন শ্রীনাগর গুরুর অপার অত্নরাগ—এ ছভরের নিভ্যবর্জন-শীলভা এবং নবনব-নিকাশ, শ্রীশ্রীরাধা-গোবিলের—প্রেমলীলার অপ্রাক্তত্ত্বর—অভ্যন্ত-নিদর্শন। আজ্ব শ্রীরাধা, গুরুজনের সঙ্গে বমুনা হইতে গৃহাগমন সময়ে—সঙ্গোচ, সাবধানতা ও চর্কার-কৃষ্ণ-দর্শন-লালসার সংমিশ্রণে, তাঁহাব শরীরে এক অভ্তত-পূর্ক-মাধুরীর বিকাশ হর। সে সব-বিক্শিত মাধুরী দর্শনে বিমোহিত শ্রীনাগরেক্ত আপন ভবনে বিসায় বলিতেছেনঃ—

রমণী-শণির বস্তাবৃত-আধ-বদনের এবং আধ-লোচনের মাধুরী হেরিয়া আরোও দশনের সাধ বাড়িয়: উঠিতে লাগিল। কিন্ত হায়! নয়ন ভরিয়া দর্শন হওয়া মাত্র—মেঘ মালাকে সমুদি \*-বিজ্বীর অদর্শনের ভায়—বিনোদিনী দেখিতে দেখিতে লুকাইয়া গেল!!(চ লয়া গেল)

কিন্তু যাইতে যাইতে আমার প্রতি সাক্ত জ্বাক দৃষ্টি গারা—রস্বালসা জ্বান্তি-বাক্ত এবং মন্থ্র-গমনের গার'— জ্বান্তরাগ প্রকাশ করিয়া গেল ! হায় ! সেই এক তিল নিরীগণের মাধুরী এখনও আমার মনে জাগিতেছে !!

সগরিহ-ভাল করিয়া। পূর্ণ দৃষ্টিতে।

উগী,—উদিত হইয়া—

८मध्य-किरइ----(मध्यांत्र निभित्तः । जङ्ग--- जारताकः ।

পাঠান্তর + দেশব আর কিরে। া স্থিরির। ‡ জগ জুল শর্মর। সকল ইড নিখিত পুথিতেই গীতটি এই রূপ জ্ঞানপূর্ণ।।

## ( 8 ) ऋरहे—ताथा-नथी, कृष्णगार ।

তুরা-অপরপ-রূপ, ছেরি দূর-সঞ্জে, লোচন, মন, তুহু ধাব, পরশকো-লাগি, আ।গি জ্বলু অন্তর, জীবন রহত কি যাব!

মাধব ! তোহে কি কহব করি ভঙ্গী ?
প্রেম-অগেয়ান-দহনে, ধনা পৈঠলি ! যকু তকু দহত পভঙ্গী।
ক্রুত সম্বাদ, কহই নাহি জানই, কাহে বিসমাশব বালা,
অকুথন ধরণী-শায়নে, কত মিটব, হৃতকু-মৃতকু-শার-জ্বালা ?

সে অমুপম-সৌলব্যজ্জী অমার নয়ন ছটিকে ভূলাইয়া সজে-লইয়া গিয়াছে এখন আমি আর কিছুই দেখিতেছি না, তদৰধি আমার চক্ষে সমস্ত জগৎ কেবল ফুল শর ময় হইয়া উঠিয়াছে !!!

(৪) এ গীতে রসরাজ-রসম্মীর-এক-প্রাণতা—পরিক্ট । পূর্ব্ব গীতোক্ত অত্প্র-দর্শনে-শ্রীরাধারও স্থান-প্রেম-যাতনা উপজাত হইরাছে! কোনও স্থী শ্রীক্তকের নিকটে সে সংবাদ কহিতেছেন যথা:— দূর হইতে তোমার অপরূপ-রূপ দর্শন করিয়া রাধার নরন ও মন ধাবিত হয় কিন্তু সাধ অপরিতৃথ থাকিয়া যাওয়াতে অধুনা তোমার অল-স্লার্থ— তাহার হৃদরে—এমনই প্রবল উদ্বেগানল অলিতেছে যে, প্রাণ গাকে কি বার সন্দেহ!!

মাধব! বাগ্ভদী-বারা এ ভীষণ অবস্থা বৃঝাইবার নহে, বিশেষতঃ তোমার স্থার প্রেমিক-শিরোমণিকে বৃঝানের চেষ্টা বাহুল্য মাত্র। পাবকার্ক্ত-পতজীর আঞ্চনে ভল্প বিসর্জ্ঞনের স্থার—সে ধনী অজ্ঞান-প্রেমের-প্রব্ণ-অনলে দগ্ধ ইইভেছে! তোমাকে সংবাদ দিরা কথঞিৎ সামন্ত্রিক-সান্থনা অফুভবের সন্তাবনাও—দে কুলবালার নাই! কাহার কাছে মর্যের কথা বলিবে? কাহকে বিধাস করিবে? কাজেই অবিরত কেবণ ভূ-সৃষ্টিত হইতেছে!! কিন্তু তাহাতে স্থলবীর দে স্থতীত্র শর্জালা, মিটিবে কেন ? যাতনা বেমন

कालिन्मो-क्ल,।कनचरका-कानन, नारम-नमन छस्न वाति, रणाविन्म नाम कह्छ भव माध्य ! रेक्ट्ड कीय्रव वस्नाती ?

### ( ৫ )— इहरे।

এ হরি ! এ হরি ! কর অবধান,
দরশন দান দিয়া রাথহ পরাণ !
খনে খনে বর-তত্ম ঝামর ভেল !
সরস-বিলাস-হাস, দ্রে গেল ! !
চরকি চরকি বহে, লোচনে লোর,
অধর-শুকাওল, না নিকসে বোল !

দূরে গেল বসন, দূরে গেল লাজ ! তোহারি সেনেহে—ভেল এতেক অকাজ। উঠই ধরণী ধরি—তেজই নিখাস, জীবন আছরে—তুয়া প্রতি আশ!!

ছিল তেমনই আছে। কোনও প্রসঙ্গে 'কালিনীরতীর' 'কদম কানন' এসকল নাম গুনিলেই তাঁহার নয়ন, অঞ্পূর্ণ হইতেছে।। পদকর্তা গোবিজ্ঞাদাদ দ্মীর ভাবাবেশে কহিতেছেন, মাধব। এখন রমণী-বরিষ্ণীর প্রাণটি কিরুপে বাঁচে তাহার উপায় বিধান কর।

(৫) নাগরের মৌনভাব দর্শনে সধী আরোও কহিতে আরম্ভ করিলেন—
"হরি! লজ্জা থৈথ্যাদির সহিত রাধার নয়ন মন হরণ করিয়া তুমি, বে হুর্বিসহ
বাতনা জন্মাইতেছ—দর্শন-দান দ্বারা সে যাতনা হরণে কি তোমার তিলার্জব্যাজ উচিত হর ? এইরূপ দিলান্ত ব্যক্ষক সংখাধন দ্বারা, পুনরায় সধী কহিতেচ্নে—'হরি! ও হরি! আমার কথা অবধান কর, এখন অগ্রমনস্কতার সময়
নয়! দর্শন দিয়া—আগে রাধার প্রাণটি রক্ষা কর (ভাগাবতী নামিকা-গণের
কথা,ভাবিবার সময়,ইহার পরে যথেষ্ট পাইতে পারিবা) হায়! বলিতে বুকফাটে
সে ধনীর বর্তমু থানি প্রতি মৃত্র্তে—অনিক হইতে অধিক তর শীর্ণ ও বিবর্ণ
হইতেছে!! সরস-হাস-হাস-রিজণী—স্থাম্পীর বণন-শশ্ধর,হাত্ত-কৌম্দী-ব্র্জিং!

### ( ७ )-- शठमङ्गती ।

ताहेत विপত्তि खिनि, विष्णध-णितामिन, পूष्ट भाषणप-छाषा, निक मिन्त एष्ठकि, हनू वत-नागत—भून भून भ्रतणहे नाणा। विष्कृतम, हतन—तिन्छ-मिन-मिन्नोत, विष्कृतम मृतमोटका त्राक्षु! विष्कृतम (वण, ष्ट्रम एक्स विश्वास्त विश्वास्त मिन्नो-क्ट्रके स्ट्राः!! मन्त्रक-भित्रिया—प्रणामिण चारमिन्, यामिनो-वर्ट-चिक भूरक्ष नामग-प्रतण—भाषण क्राक्रम, हित्रपिर्न मिन्स क्रुक्ष।

নয়ন হইতে দর্গর ধারে অশ্রুপাত হইতেছে ! মধুর-বিশ্বাধর ওকাইয়া গিয়াছে কথা বাহির হুইতেছে না ! !

স্বত্তা-শীলার বত্তা দূর হইরাছে। অঙ্গের বসন থসিয়া পড়িতেছে।! হরি। তোমার বেহের পরিণাম ফলে এই সকল অকার্যা ঘটিতেছে।

হায় হায় ! এইরাশ অনায়ত্ব-অবস্থাতেও ত্বদ্গত-প্রাণা অম্রাগিণী-রাধা ভূমিতে ভর দিরা মাঝে মাঝে উত্থানের চেষ্টা করিতেছে ! করিরা, বেই দেখিতেছে "কুজ-রুফ শৃত্ত" অমনি নিরাশার-তগু-নি:ম্বাসে স্থীগণকে আকুল করিতেছে ! এইরাপ অসহনীয় কট্টের মধ্যে—কেবল তোমার প্রত্যাশার এখনও প্রাণটি আছে, কিছু কতক্ষণ থাকিবে জানিনা !!

(৬) প্রাণেশরী রাধার এই রূপ বিশন্তির কথা গুনির। বিদক্ষ-শিরোমণি, গদ্গদ-কণ্ঠে কথা কহিতে কহিতে এবং পুনঃ পুনঃ অঙ্গুলে নাশাগ্র স্পর্শ পূর্ব্বক — রুণ। বিশ্বসংঘটনাপরাধে আপনাকে বহু অপরাধী মানিতে মানিতে তৎক্ষণাৎ মন্দির হইতে বাহির হইলেন। প্রীচরণের মণি-মুপুরে-মধ্র-ধ্বনি বিকীর্ণ করিয়া নৃত্যভক্ষীতে গমন ও মধ্র-মুরলীয় রক্ষে,—স্কমধ্র-কল-গীতি গাহার স্বতঃসিদ্ধ-আচরিত—কিন্ত ভাহাও বিশ্বত হইয়া আজ মহোৎকণ্ঠায় নিক্লো চণিণেন। বেশের প্রতিও জক্ষেপ নাই! ক্রতভা, ব্যস্তা এবং জনব-

তুক্ত মুখ ছেরট, অথির ডেল তুক্ত, পরশিকে ভূলে ভূজ কাঁণে, নরহরি হাদি-মাঝে, অপরূপ কাগল, জলধন বিধুষর ঝাঁণে।

### ( ৭ )— বিছাগড়া।

গোরণেত— ওচারু-ওবলনীক, শ্রামগুল্দর নাতরে. (যানু) জলদ উপর, ভড়িত শঞ্ক, স্বরূপ ঐচন শাহরে !

ধানতা হেকু— চূড়ার মধ্র পুচ্ছ এবং অঙ্গল-কুগুলাদি ভূষণ সমূহ, বিগলিত -হুইতে লাগিল। অজ চলনের-সৌরতে দশদিগ আমোদিত হুইয়া উঠিল। যামিনী অতীব সৌরভিত হুইয়া প্রচুর পরিমাণে (অভি পুঞ্জে) মলয়জ্ঞ-পরিমল বহন করিতে লাগিল।

তৎপর—দর্শন স্পর্শনের লালসাক্লিত-কিশোর কিশোরী—যেন কত স্থাীর্ঘ সমরের পর—আজ কুঞ্জে সম্মিলিত হইলেন! পরস্পরের বদন-বিলোকনে উত্তরেই হৈথ্য হারা হইরাপড়িলেন, পরস্পরের করস্পর্শে উভ্যেরই প্রেম-কম্প উপস্থিত হইল!

এই গীঙিট সন্ধিনীর ভাষাবিষ্ট-গীতকর্তা নরহরি (সম্ভবত: সরকার ঠাকুরের) অপরা স্থীর প্রতি উক্তি। নাগরীর আগ্রহ দৃষ্টে তিনি উপসংহারে কহিতেছেন—আহা। কি অপরূপ কেনি। কি অপূর্ব শোভা। নীলাটি দর্শনে মনেহইতেছে, যেন জনধরের উপরে শশধর ঝাঁপ দিতেছে।

(৭) আহা ! সুচারু-সুবদনী-রাধা-গৌরান্সিনী, এক্ষণে স্বীয় কান্ত স্থাম-সুন্দরকে ভূজ-বন্ধনে ধারণ করায় ত্বাধ হইতেছে যেন জলগরের

<sup>\*</sup> পদক্ষতক্রপাঠ- 'অধারস-থনি' পদসমুদ্রের পাঠ- "অধারস অবদনী

পীঠ া গন—শ্যাসরু-দেণী নির্বাধ—ঐছন ভাণরে, গ্রুড়) অজর হাঠক-পাটকণ করগহি, লিখন লিখোঁ— শাঁচবাণ রে।

কণ না থির রজ্—স্থান সঞ্চর — সাণিক-মেথলন-রাবরে,
( যকু ) স্বান-রায় দোহাই কহি কহি, জখন যশগুণঞ গানরে!
রজনী বরুণা অবসান সানই রভস নাহি অবসান রে,
রসিক অলপতি—রমণী রাধা—সিংহ ভূপতি ভাণরে!

উণরে তড়িতের সঞ্চার হইরাছে! ( সরুপ এছন আহ— স্বরূপেই ইবা বিলিয়া দিতেছে) ধনী-মণির পৃষ্ঠদেশে-বিলোলিত শ্রাম-বেণীটি দেখিয়া এম হইতেছে— উবা বেন বেণী নহে, যেন এক খানি স্বর্গীয়-স্বর্ণ ফলক ( অজর-হাটক শব্দের অর্থ—নাট জরা যেখানে, সেই স্থানের স্বর্গ—কিম্বা চিরস্থারী স্বর্ণ) করে লইরা কল্পর্গ, তাহাতে আপনার পরাজয়-পত্রিকা লিখিয়া দিতেছে। (করগাই—করে গ্রহণকরিয়া, হাটক—স্বর্ণ, পাটক—পট্টক অর্থাৎ পাটা) ক্রণ-নাত্রের নিমিন্তও বিলাসিনীর মাণিক্য মেধলার সলল-ধ্বনির বিরাম নাই! যেন পরাজিত-মদন-রাজ শরণাগত হইয়া,—"দোহাই" ঘোষণা করিতে করিতে—ভাবকের ভাষার ধনী-শিরোমণির জন্মনের গুণ গান করিতেছে!!

দেশ, রজণী বরং অবসান স্বীকার করিতেছে, অর্থাৎ প্রভাত স্মাগত প্রার, তথাপি স্থারন্ধিনীর সমুদ্ধিমান কেলি-বিলাসের অবসান নাই !!

গীতকর্ত্তা, লতা-বাতারনে গুলুগ্র-নরনা-স্থীর ভাবে, (আনন্দ-গৌরবে বলিতেছেন ব্রজপতি (কৃষ্ণ) বেষন রসিক-শেথর, আমাদের রসবভী-রাধা তেমনি রমণী-মণি!! (সিংহ ভূপতি—বোধ হয় রাজা শিব সিংহ)।

পদকলতক ও পদসমূজে পাঠান্তর—† "পাঙি" ‡ রস ¶ "ররনি অক" তদ্ভিন্ন পদকলতকতে ভূল-পাঠও বিত্তর আছে যথা—অঙ্গার হাটক, ধলন থির রহ, নমন রাম, রসিক যহুপতি ইত্যাদি।

### (৮) 🗐 রাগ

আৰু রসে বাদর নিশি—!
ভাবে নিমগণ ভেল + বৃদ্দাবন বাসী, প্রেমে † পিছল পথ, গমন ভেলবছ। মৃগমদ চন্দন—কুছুমে ভেল ‡ পছ, শ্রাম-খন বরি থরে প্রেম-শুধা § ধার, কোরে রদিনী রাধাবিজুরী সঞ্চার। দিগ বিদিগ নাহি প্রেমের পাথার, ভূবিল অনস্ত দাস না জানে সাঁতার।

(৮) অপরা-কোনও স্থী, কহিতেছেন—আজিকার নিশিতে আনন্দ-রদের বাদর হইরা গেল! বৃন্দাবনে-রাত্রি বাপন আজ পূর্ণরূপে সফল হইল। দেখ, গুধু আমরা নহে, বৃন্দাবনবাদী—গুক, ময়ুর, বানরাদি—সকলেই আজ ভাব-রদে নিমগ!

প্রেম-বর্বণের আতিশব্যে-লীলা-পথ-পিচ্ছল হইলেই নব-যুবছদ্দের লীলার বন্ধ-গতি অর্থাৎ বিপরীত গতি ঘটে, তাহাতেই আল আমাদের, এই প্রাণানন্দ-কর বিলাস-বিবর্ত্ত প্রাণ-ভরিয়া দর্শনের সাধ পূর্ণ হইল !

স্থি ! দেখ দেখ, উভরের শ্রীজন-ধৃত---কৃত্ব্য, চন্দন ও কন্তরী, প্রমন্তবেদ সংগ্লুত হইরা এক অতুলনীর স্থান-প্রাবী-পঙ্কের স্থাষ্ট হইরাছে ! বারি-বর্বণে ভূমিতলে কর্দ্দম জন্মে, আজ আমাদের খ্রাম জলধর---রিলণী রাধা-বিহ্যল্পতাকে বক্ষে ধারণ করিরা প্রেমসুধা-বর্ষণ করার---এই অপূর্ক্ষ-পদ্ধ উত্তুত ইইরাছে !!

জগতে বস্থার-স্রোত—কেবল মাত্র বিশেষ কোনও এক দিক্ হইতে আন্ত কোনও দিকে—চলিরা থাকে, কিন্ত আমাদের রাখাখ্যাদের—প্রেম-বন্ধার স্রোত প্রান্তর-পরিবাাপী (পাথার অর্থ্যান্তর) ইলার দিগ্রিদিগ নাই। বেমন নিম স্রোত তেমনি উজান প্রবাহ্যা চুক্তখনও বামা-গতি কথনও দক্ষিণ গতি!!

পদ করতকতে এ গীতিটি—'নরোত্তম দান' তণিতা বৃক্ত ও আধাদের ২য় ও তর ছত্তের স্থানে ৪র্থ ও ৫ম ছত্তবর সংস্থিত এবং নিম্নি পিতামূরণ পাঠান্তর বিশিষ্ট বর্থা— ও প্রেমে তাসল সব। † ভাবে। ‡ পরিমল। ৪ রস।

# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি

#### चाश शकामणी कराता ।

### ( ) औरगीत हस्तश्य-निर्माण मा

চম্পক, শোণ-কৃত্বম, কনকাচল, জিভল-গোর-ভকু লাবণী রে, উলত গীম, সীম নাহি অকুন্তব, জগ-মন-মোহন-ভাঙনি রে!

স্থীর ভাবাক্রান্ত পদকর্ত। অনন্ত দাস কহিতেছেন। এ সাগরে সাতার দিতে আমার আর সাধ্য নাই! স্থি—আমি ডুবিলাম।! (ভাবার্থ এই যে আমন্দে আমার ইন্দ্রিন-ক্ষতী লোপ হইল)

(১) চম্পকের ফ্ল, শোণ-কুসুম এবং অর্থমর-স্থামর-মহীধর, ইহারা,
নানাহর-গৌর-কান্তির চূড়ান্ত উপমারণে চিরদিন সমাদৃত ছিল কিন্তু প্রীগৌরস্থানর অপূর্ব লাবণ্যমর গৌরকান্তির নিকটে এই সমন্তই ধিকৃত ও অনাদৃত
হইরা গিরাছে !! স্থতরাং প্রীগৌরহরির বর্ণ-সৌল্বর্য,বর্ণনা দারা বুঝান অসম্ভব;
আর—ভাহার উরত গ্রীবার সৌল্বর্য-মর্যাদা (গীম—গ্রীবা, সমা—মর্যাদা)
বর্ণন দ্রে থাকুক সে মাধুরী অস্ভবেরও অতীত! তাঁহার ক্র যুগল, সকল
জগতের মনো-মোহন! বনের-পশু হইতে কোলের-শিশু পর্যান্ত-মাবতীরজীব সে ভূমর ভঙ্গীতে মোহিত হর!! সর্ব্য লোকাতীত-অপরপ-গৌররপের—
সৌল্বা বর্ণনের ভাগ্য জীবের নাই—কারণ ভাবা নাই, উপমা নাই!!!

এই রূপ ভাবিতে ভাবিতে অভিভূত-গীত-কর্তা, রূপ-বর্ণনের প্রয়াস, পরিত্যাগ পূর্বক, প্রভূর মহিমার মন লাগাইলেন। ওমা ! সহিমার-মহাসমূত্র বে আরোও বিমাপক !!—অনভ, স্থাধ এবং স্বসংধ্য-ভাব-তরজে সলা জন্ম শচীনন্দন, ত্রিভূবন বন্দন, কলিযুগ কাল ভূজগ ভয় थरा (त ॥ स ॥

বিপুল পুলক কূল-আকুল কলেবর, গর গর অন্তর প্রেমভরে नल् नल् रामिन गप गप छाष्टिन, कल् मन्पाकिनो नशस्त्र शास्त्र ! নিজ রুসে নাচত নয়ন চুলাওত গাওত কত কত ভকত মেলি, যোরসে ভাগি, অবশ মহীমণ্ডল গোবিন্দ দাস তহি পরশ ना एक नि ।!

তঃঙ্গিত!় কেবল-ত্র্কার-কলির-পরাক্রম পীড়িত জীবগণের গাতি-বিধান পদ্ধতির কথাটি ( পরের গীতের আখাদনী দেখ ) ভাবিয়াই গীতকর্তা অবাক वरेबा शालन !! जाँदात मतन वरेट नागिन त्करन वरे नीनांदित खन-जानहे যে, দেখিতেছি মানবীয় শক্তির অসাধ্য কার্য্য !

অতএব বিহবণ হইয়া বুঝি সে সাধও পিরত্যাগ করিলেন। করিয়া---আনন্দাবেগে গাহিতেছেন—'কলিযুগ-রূপ-কাল-ভ্রুক্সমের দর্প ও দংশন-বিষ খণ্ডনকারী ত্রিভূবন-বন্দনীয়-শ্রীশতীনন্দনের জয় হউক !!

স্থান কিল্ড জ্বাতি-রচম্বিতা—এক্ষণে ভাব-নিধির ভাব-মাধুর্য্যে ডুবিয়াছেন এবং প্রভুর-ক্রমোদিত-ভাব-তরজের সঙ্গে সঙ্গে--মন-মীনকে নাচাইতে ও চাণাইতে লাগিয়াছেন। এ গীতের ৪র্থ ছত্রটি ভাবের প্রথম-তরঙ্গ; শীরাধাভাবে এভুর--- অভিসারানন্দের অমুভূতি ও বিকার ( গর গর অন্তর ইত্যাদি ) পঞ্ম ছত্রটি বিতীয় ভর্ম-কাস্ত-সন্মিলনানলের অমুভব এবং তৎফল, লেছ লছ হাসনি ইভ্যাদি ) ৬ঠ ছত্রটি বিলাস-ম্নের বিনোদনা—তজ্জনিত চাঞ্চ্যাত্রভব এবং তৎফল ; (নৃত্য এবং নয়ন চুলাওনাদি) পার্যদ-পদকর্তা গোবিন্দ কবিরাজ, পরম আবেশে প্রভুর এই সকল ভাব-বিলাস আত্মদন করিতে করিতে মানস-নরনে জ্রীনব্বীপ-বিহারীর, নৃত্য-বিলাস ও ভক্তগণের বধুর-গীতি দর্শনে শাধক ভক্তোচিত দৈতোৎকঠা প্রকাশ করিয়া আক্ষেপ করিতেছেন---

### (२) 🗐 निज्ञानम्महस्तत्र्य-गाम्नात्र।

নিত। ই-হুন্দর, অবনী-উজোর, চরণে মৃপুর বাঝে, গোর-অঙ্গ হেরি, পুরব স্মউরি, যেন রুন্দাবন মাঝে!

হার ৷ যে অমিরা-রসে ভাসিরা আজ পৃথিবী-শুদ্ধ অবশ ৷ আমি সে রসের স্পর্শও পাইলাম না !

(২) অসাধারণ সৌন্দর্য্য, অলোকিক মহিমা, অপার করণা এবং পরাকার্চা-প্রাপ্ত-প্রেম, এই চারিটি পরমবস্তর মধ্যে যে কোনও একটার প্রভাবেই জগতে মুগান্তর ঘটিরা যার। এ চড়ষ্টরের সন্মিলনের ফলরূপ-অপূর্কামৃত রুদ্যে,— সমস্ত জগৎ উদ্ধার হইবে—পরম-পুরুষার্থ (রুক্ষপ্রেম) লাভে ধ্যা হইবে—তাহাতে আর বিশ্বর কি ? আমার প্রীগোরহরি ও শ্রীনিত্যানন্দক্রের যাবতীয় লীলা-বিলাসের উপাদান, ঐ চারিটি বস্ত; অতএব ভাহাদের শ্রীচরণাশ্ররে মহাপাপী, চির-ছ্রাচারী, পহিত, পামর—সকলেই নার্চিরা গাহিয়া—সকল সাধনের-চরমকল লাভ করিতেছে। ভক্ত-বৃন্দ। আত্মন, আমরা এ গীতের আলোচনার স্ব্যোগে—শ্রীনিতাইটাদের কিঞ্চিৎ গুণগাণ করিয়া পবিত্র হই।

দেশ—আমার নিতাই-স্নারের :রপে—যাবতীয়-ভূবন ঝলসিত। ! কান্তিতে—বাহ্-জগৎ সম্জ্রল এবং প্রভাবে—অন্তর্জ্জগতের পাপতমো বিনষ্ট ছইয়া, জগতে জৈব-ধর্মের প্রকৃত আদর্শ প্রকাশিত হইতেছে।

আমার নিত্যানল-চক্র—এজনীলার দাদা হলধর। স্থতরাং তদ্ভাবাবিট হইয়া রাতৃল-চরণে নৃপুর পরিধান করিয়াছেন, আর তাহার মধুর-ধ্বনিতে যাবতীয় নরনারী—এক অনাস্থাদিত-অপুর্কভাবে—আমোদিত এবং আক-বিত হইতেছে!

গোর-মনোহরের-শীঅক নিরীকণ করিলেই—আমার নিতাইটালের ভাই-, কানাইকে মনে পড়ে! না হবে কেন ? সেই-ভূবন-ভূলাম-মুথ, সেই—মনে: প্রাণহারী-চোথ, সেই—নর্নাকর্বী-কর্ণ, সেই—শুক্ত-চুঞ্-অুক্তর-নাসিকা নিতাইর—নিছনি লইর। সরি, ছাড়ি রুক্ষাবন, নিকুঞ্জ-ভবন, অতি-ত্রাচার-তারী ॥ গ্রু॥ বহুধা-জাহ্না, সঙ্গেতে লইরা, শীতল-চরণ-রাজে, হেলায় তারিল, এ গতি গোবিন্দ, এ তিন লোকের মাঝে

নেই — কুটিল-কেশ, সেই — বাঁকা-ভূক, — সবই তো সেই; শুধু বর্ণ-বৈপরিত্যেই কি পরিচয় লোপ হয়। তাই — শীনিতাইয়ের মনে ও নয়নে — আজ, গৌর-রূপে শ্রামরূপ-জাগিয়া উঠিয়াছে এবং পূর্ব্ব-লীলার স্মরণাবেশে (পূর্ব — পূর্ব্ব, স্মউরি — স্মরি, স্মরণ করি) আপনাকে "বৃন্ধাবনস্ত" বলিয়া ভাবিতেছেন।

শীনিতাইয়ের নিছনি যাই! দেখ—কলির প্রভাবে অভিভূত—ভূভাগ্য জীবগণের—উপায়ায়রে উদ্ধারের সন্তাবনা না দেখিয়া, ককণাসাগর—আপনার মহা-প্রিয়তম-ধাম-শ্রীবৃন্দাবন ও ( অনক্ষয়ারী স্বরূপের-প্রিয়) তৎস্থিত পরম-মনোরম-নিক্ল-ভবনাদি ছাড়িয়া, কেবল জীবের জন্ত—করণাবতার-নিতাই-রূপে-অবনীতে অবতীর্ণ হইয়াছেন ও উপরোক্ত চতুর্মিধ উপাদান-স্মান্তন অভি-তরাচারগণকে প্র্যুপ্ত উদ্ধার করিতেছেন।

শ্রীবস্থা ঠাকুরাণী ও শ্রীজাক্রা ঠাকুরাণীকে সফে লইয়া, আজ শ্রীনিতাই-চাঁদের শাতলচরণ—মর-জগতে বিরাজিত ! এ তিনের প্রত্যেকই মহাযহিমা ও অলৌকিক প্রভাবের অক্ষয় ভাঙার !— ব্রিতাপন্যতিবর প্রাণ জুড়াইবার বিদ্ধ স্থান । শক্তি-স্মন্থ্রের এমন মহা-স্ক্রোগ, জগতের ভাগ্যে আর কথনও ঘটে নাই।

(শেষোক্ত হংকশিল-বচনের ভাব ও উদ্দেশ্য এই যে—জীব! কৃতকের সাবর্ছে পড়ির। এ হ্রেগে ছাড়িও না! নিতাইর ক্তণার, নিজ পোষে বঞ্চিত হছও না!)

গীতকর্ত্ত। মহাজন গতিগোবিন্দ-শ্রীনিবাস আচার্য্য প্রভুর পুত্র; তিনি ভক্তোত্তিত দৈও প্রকাশ করিয়া সর্বদেষে কহিতেছেন- 'অতি ত্রাচার উদ্ধারের সাক্ষাৎ নিদর্শন দেখিতে চাও ? তবে আমাকেই দেখ। আমার

#### (৩) শ্রীরাধাহ- শিক্ষ্ডা।

কি পেখলু বরজ—রাজ-কুল-নন্দন, রূপে হরল পরাণ!
নিরমিয়া রস-নিধি, আমারে নাদিল বিধি,প্রতি অঙ্গেলাখ নয়ান!
একে সে চিকণ তমু, কাঞ্চন-অভরণ—কিরণহি, ভূবন-উজোন,
দরশনে, পোরে—গাগোরল লোচন, না চিনিমু কালকি গোর

স্থার অতি ছরাচার জীবাধমকে অবহেলে ঐচরণে আকর্ষণ দারাই—সে নিদর্শন পূর্ণক্লপে জগতে প্রাকৃতিত হইরাছে !

(০) কালোচিত—কুষ্ণা, বেমন স্বতঃ বিক্সিত হয়, প্রোম-কল্পতিকা প্রীরাণা—নেই প্রকার নিরস্তর নানাবিধ-ভাব-কুষ্ণামর স্বতঃ প্রেম্কুটনে নিজ্য-শোভিতাও সাম সৌরভিতা। আজ বন-বিহারী-হরির—গৃহাগমন সময়ের—ক্ষণাধুরী দর্শনে, ভাহার ছদয়ে বে সকল ভাব-কুষ্ণাম-বিক্সিত হইয়াছে—সেই সকল স্থানের—সৌরভে, উন্নাদিনী—ধনী-রাধা—আপন মন্দিরে বিসিয়া, আপনা আপনি বলিভেঙেনঃ—আল প্রজ্ঞে-কুল-চক্রমার যেরপ রূপ-মাধুরী হেরিলামা, এমন দর্শন বৃথি আর কথন ও আমার ভাগ্যে ঘটে নাই! আমার প্রোণ, সে রূপে হরিয়া নিয়াছে! আহা! এতেন রসনিধির-নির্মাতা-বিধি, পরম ধস্ত বটে, কিন্তু বড়ই হুংথের বিষয়, এই ভ্বন-ছর্লভ-মাধুরী—মনের সাধে আস্থাদন করিবার জন্তা, আমার প্রত্যেক অলে তিনি শক্ষ লক্ষটি করিয়া নয়ন দেন নাই!!

আহা ! সেই চাক্চিকাময় তন্ত্র থানিতে—কাঞ্চন ভূষণের ঔজ্জ্বন্য প্রতি
কলিত হইয়া দ্ধপের কিরণে একেবারে ভূবন ঝলসিয়। উঠিয়াছিল ! তাহাতে
এবং দর্শন-স্থাবেশ-ানি ভ-আনন্দাশুতে—আমার নয়ন আচ্ছাদিত হওয়ায়,
সে তন্ত্র-কান্তি "কাল কি গৌর" সে সময় পরিচয় করিতেই পারিলাম না !!
দেখিলাম আমার-নয়নামন্দের-নয়নাঞ্গ-ঠিক্ যেন অক্ল-নলিনীয়-দল !তেমনি

সহকে দৃগঞ্জন, অরুণ কঞ্জ দল, তাহে কত ফুল-শর দাজে।
দিঠি মোর পরশিতে, ও হাদি অলখিতে,শেল রহল হাদি মাঝে
দরদ-কপোল, লোল মণি-কৃগুল, ঝাঁপেল দিনকর-ভাদ,
ও রূপ লাবশি, দিঠি ভরি না পেথকু! ছুপিয়া-অন্ত দাদ!

#### (৪) ভাটিয়ারি।

সকর কুগুল সেলে, কনয়া-কেভকী লোলে,
কিয়া নহে—কামের করাতি!
উপরে বিজুরী ভাতি, হেম অভরণ কাঁতি,
পীত-পিশ্বন কত ভাতি॥

স্থলর তেমনি স্নিংগাজ্ঞন!! আরোও দেখিলাম সেই—মোহন নেত্রাঞ্চলে, কোটি কোটি কলর্প—শোভা পাইতেছে! বেই তংসহ আমার দৃষ্টি সন্মিলিত হইল, অমনি রসময়ের—স্থাধরে মধুর-হাসি ফুটিয়া উঠিগ! কিন্তু কি অভ্তত—সেই মধুর হাসি অলক্ষিতে শেলের স্থার সদয়ে িধিঁয়া—আমার সংজ্ঞালোপ করিতে লাগিল!! সেই অবস্থাপর হওয়ার পরে—রসময়-নাগরেক্ত-মণির, রস-মাধুর্যাময়-কপোলে—বিশোলিত-মণি-কুণ্ডল, গগু-কান্ধির-বিশ্বলাভের-প্রভাবে—দিনকরের প্রভা আচ্ছোদন (পরাভব) করিয়া আমার নম্মন, আরোও ধাঁ ধাঁ জন্মইতেছিল! হায়! হতভাগিনী আমি এই রূপে বিভ্রমাণ্য হইয়া, এমন অপরূপ-রূপ লাবণা, ভাল করিয়া—নয়ন ভরিয়া—হেরিতে পারিলাম না।

অন্তরাল হইতে এই সকল কথা শ্রবণকারিণী-দণীর ভাবে —নিকটস্থ ইইয়া পদক্রী অনত্ত দাস, আপনার সমবেদনা অর্থাৎ তুঃথ জ্ঞাপন কহিলেন।

<sup>( 8 )</sup> এই সময়ে কোনও প্রিয়-বয়স্তা আসিয়া বলিলেন-স্থি ! একা

সজনি! (কি) পেথসু বিনিং। চূড়া-মালে—

ঘুরিয়া ঘুরিয়া বুলে, মাতল অমরা, ভূলে—

পড়ে জানি নয়ন-কমলে॥ গ্রুণ।

কুন্দে-কুন্দাওল কালা, কনয়া কেয়ৢর-মালা,

শ্রুণে অলের মেরিভ পাইয়া, আনীরাজ আইল ধাইয়া,

লাথে লাথে, মদন-ধাসুকি॥

একা কি বকিতেছিস্? তাহাতে, অর্জাবিষ্ট-দশার—প্রেমমন্ত্রী কহিতেছেন—
যথা—স্থি! এতাবং কাল জানিতান বন্দর্শেট প্রহরণ—কেবল পাঁচটি মাত্র
রাণ। দ্র হইতে তদ্যা অবশা বিধিয়া নানাই তাহার বীরত্ব! কিন্তু তাহাতোনম্ন । খ্যাম স্থনাগরের কর্ণে—মকর-কুণ্ডলের সহিত নিলিয়া—বে, কনক-কেতকীর-অবতংস দোগিত হল; উহা প্রকৃত পক্ষে কিয়ার ফুল নছে—উহাও
তাহার প্রহরণ। ইলা কামের করাত!! অবলার বীর—কন্দর্শ, উহা ধারা
নৃশংশ-ঘাতকের স্থান নানীর হাদ্য দ্বিধিন্ত করিবার চেষ্টা করে!!

রপাত্রাগ দম্বণে অসমর্থা নারিকা-মণি, আরোও বলিতেছেনঃ—স্থি!
আজ আমার প্রাণ বরভের,লান্ডা-মণ্ডিত জিঅভের উপরি ভাগে ধেমালকারের
কাস্তিতে বিল্প্প্রভা প্রাত্ত্তি হইয়া, এবং ভাহাতে পরিহিত-পীত-বসনের
জ্যোতি সংমিলিও হইয়া-—ভল্ল কচির উপরে যে, কি স্থলর—কত স্থলর গৌর
প্রভামধ-শোভা বিক্সিত হইয়াছিল কি বলিব!!

আবোও এক 'আশ্চর্যা দেখিলাম—আমার নটবরশেখরের ময়ুরপিঞ্-চুড়া-স্থিত-মালার উপরে—প্রনত অমরাবলী ঘুরিয়া ঘুরিয়া ফিরিতেছে! যেন মালার ফুলে কি নয়ন কমলে বিসিবে নির্ণয় করিতে পারিতেছে না! আমার ভার হইল কি জানি আন্ত হইয়া ইহারা প্রিয়তমের নয়ন কমলে নিপ্তিত হয়!!

#### (৫) ऋषियः ति

এনা কথা শোষারে শুনাই,
(তোষার: তেম বিজ্ শাক্ল কানাই!
নিকুঞ্জ কুসুম-রম্য স্থল-স্থানি ল।
নব-কিসলন্ধ, তাহে—শিরীষের দল,
সরসিজ-শরনে, স্ব হল শ্রাম-জন্ধ।
অমুখন লেপই, মলমুজ পদ্ধ,
উপরে ক্মল-দল—প্রশিল নম।
মদন-অনল-তাপে সেহো ধুলী হয়!!

আঁথি ঠারে কচে কথা সহন নিখাস, কেবল আছরে প্রাণ ভোমা-আল আস বিলম্ব না কর ধনি! কালু দেখ সিরা ভোমারে দেখিলে কালু বদিবে উঠিয়া আর, যত সহবাসী স্বার আনন্দ। চু থানি চরণ-ধরি কান্দে রামানন্দ।

জাবার আমার কালিয়া-বঁধুর—কুন্দে কুন্দিত স্থমমূণ—জানেকিক-লাবণ্য মন্ন স্থঠাম-ভামাঙ্গে, স্থবর্ণ-কেয়্র ও স্থর্ণহার—ঝিকিমিকি করিতেছিল এবং প্রী অজের সৌরভে দিল্লগুল আমোদিত হইতেছিল, আর পরিমলে আরুষ্ট হইরা ধর্ম্বারী মদনের সেনা—লক্ষ লক্ষ-অলীরাজ ধাইরা আসিতেছিল।

(৫) "রাই কাম একই পরাণ" এ গীতিটি এই মহাজন-বাকোর নিদর্শন। প্রীক্ষের-দৃতীর-বচনে—সে পরিচয় স্ক্রন্ধর পরিবাক্ত। দৃতী আসিয়া বলিতেছেন,—রাধে! তোমাকে একটি কথা শুনাইতে আদিলাম—তোমার প্রেম-সন্মিলন ব্যতীত কৃষ্ণ (কামু) আর থাকিতে পারিতেছেন না। একেবারে আকৃল হইয়া উঠিয়াছেন।!

তোমার নিমিত্ত তিনি কুঞ্জে অভিসার করিয়াছেন। কুস্থম-রমণীর কুঞ্জের স্থাতল প্রদেশে—কোমল-নবপল্লবের উপরে শিরীব-কুস্থমান্তীর্ণ সরসিজ্জের শহ্যায়—খ্যাম-স্থাম- শুইরা আছেন, অনবরত তাহার শরীরে চন্দন-পদ্ধ-লেপন এবং উপরে—গ্রীঅঙ্গের অদ্রে (পরশিল নয় অর্থ অস্পৃষ্ট) পল্লের-দল-সকল

\* আদর্শ হস্তলিপি সকলে এইস্থানে "রহিতে নারে" শক্টি সংযোজিত। গায়কের 'আথব' জ্ঞানে, উহা মূলে দেওরা হইল না।

#### (७) কাচিৎ স্থী-দুরাদাহ। ভূপালী

শুক জল-নয়ন-বিধুপ্তদ, মন্দ।
নীল-নিচোলে ঝাঁপি মুখ-চন্দ,
কুত্-যামিনী-ঘন ভিমির-ছরস্ত
মদন-দীপ দর্শাওল পস্থ।

চললি নিভন্ধিনী \* হরি-অভিসার। গতি অভি মন্থর, আরতি বিধার, রস-ধাধসে চলু পদ ছুই চারি। লীলা-কমল ডেজলি বর নারী!

স্থকৌশলে সংস্থাপন দারা তাঁহার সন্তাপ-নিবৃত্তির চেষ্টা চলিতেছে, কিন্ত মদন-সাগুনের ভীত্রতাপে, সমস্তই ধূলিতে পরিণত হইয়া বাইতেছে !!

তাঁহার কথা কহিবার শক্তি নাই ! আঁথির ইন্সিতে কথা কহিতেছেন, খন ঘন নিখাস বহিতেছে ! এথনও কেবল তোমার প্রত্যাশার প্রাণটি আছে ! ! অভএব আর বিলম্ব সমূচিত নহে. শীঘ্র আমার সহিত আসিয়া তাহাকে দেখিয়া যাও ৷ তোমার দর্শনামূতে কায়ু অভিষিক্ত হইলে—তাহার সকল বৈকল্য দূর হয় ; আমার দৃঢ়-বিশ্বাস তোমাকে দেখিলেই িনি উঠিয়া বসিবেন ৷ বসিবার শক্তি লাভ করিবেন এবং ভদ্দলি সকল সহবাসীগণ আনন্দ লাভ করিবেন ৷ শ্রীক্রফের অবস্থা অরণে দৃতী (ভদ্ভাবাবিষ্ট গীভকর্ত্তা রামানন্দ) কহিতেছেন, রাধে ! তোমার পদধারণ করিয়া কাঁদিয়া কহিতেছি—শীঘ্র চল ।

(৬) বার্দ্তার ব্যাকুল হইয়া—বেশ-রচনা বিনাই—ক্লঞ-প্রাণা-বিনোদিনী, অভিসারে চলিলেন! কিঞ্চিদ্রস্থা কোনও স্থী, সে গ্রমন-মধুরিমা-দর্শনে বলিতেছেন—দেখ, চার্দ্ত-নিভ্নিনী গুরুজনের নয়নরপ-রাছ্র ভরে নীলাম্বরে বদন-বিধু লুকাইয়া চলিয়াছেন। রুফা যামিনীর ঘনাক্রকারে মদন-দীপ ভাহার প্র-প্রদর্শন করিতেছে!

নিতমভারে—স্থমধ্যমা-বিনোদিনীর—গতি অতি মহর, অথচ ফদরে-বিস্তারিত আরতি (বিথার)—স্থতরাং রস-বেগে তৃই চারিপদ ক্রত (ধাধ্যে – ধাইরা) চলিরাই ঐ দেখ ক্লান্ত হইরা পড়িরাছেন এবং তরিমিত্ত লীলা-কমল ভ্যাগ করিলেন!! মন্তক্ত (মৌলীকো) মালতীর মালা পরিহার করিলেন!

<sup>\*</sup> পদামৃত সমুদ্রের পাঠ—চলু গ**ল**-গামিনী।

পরিহরি মৌলী কো মালতী মাল!
গোড়লি গীমকো মণিমন্ন হার!!
নব-অফুরাগ-ভরমে ভেলি ভোর
নিক্ট পীন-পরোধন-ভোর!

বেশ শেষ রছ, নীলিম বাস ! মিললি নিকুঞে কৰে গোবিল দাস ।

#### (৭) কাগোদ— শ্রীকৃষ্ণ আহ।

ধনি-ধনি কোবিহি বৈদগধি গাধে, মদন-স্থারদে, যো নিরমাওল জ্য়া-মুথ-মগুল রাধে ! ভালে আধ ইন্দু, অমিয়া আগোরল, ভাঙ-ভিমির-ঘন-ঘোর।

গ্রীবার-মণিহার ছিড়িয়া ফেলিলেন! কিন্তু তথাপি অঙ্গভার লঘু হইরা ক্রত গমনের সামর্থ উপজাত হইল না!! তাই নবাতুরাগ-জনিত ভ্রমে ভোর হুটয়া আপনার পীন-প্রোধর-যুগলের নিন্দা করিতে লাগিয়াছেন—হায়! ইহাদিগকেই একণে আমার ক্রত গমনের বাদী বলিয়া বোধ হুইতেছে!

আজরণ বর্জন করিতে করিতে শুধুনীল পরিধের থানি বেশের অনশেষ রহিল! এবং কেবলমাত্র তাহাই লইয়া নাগরের সঙ্গে নিকুঞে মিলিত হইপেন।

(৭) "ভোমারে দেখিলে কামু উঠিবে বসিয়া" ৫নং গীতের শেষোক্ত এই, সধী-বচন সফল হইরাছে। প্রাণেশ্বরীর দর্শন-মধাভিবেকে—নাগর-শেখর বেন নব-জীবন লাভ করিরাছেন। একণে আদর ও আহ্লাদ ধরিতেছে না! কহিতেছেন—রাধে! নৈপ্ণ্য-প্রদর্শনের সাধ মিটাইয়া—কোন্ বিধি, মদন মধারসের ছারা ভোমার এই বদন খানি নির্মাণ করিয়াছেন ? তিনি ধ্যাতিধ্যা। (অথবা 'তিনি ধ্যাতিধ্যা' না বিদ্যাধ্যা ধনি-রাধে! এই রূপ সংখাধনে ও বাক্যোরস্ত হইতে পারে, 'ধনি, ধনি' শব্দ—'ধ্যা ধনি!' এবং ধ্যাতিধ্যা গৃই অর্থই হয়)।

আহা ! এই--স্বালিত লালাট-ফলক থানি যেন ললাট নতে, যেন অন্তমীর

কিরণ-বিকাশিত, আছতি-কুবলয় পর, ধাবই নয়ন-চকোর ?
নাশা শিধর—উপরে পুনঃ উদিত—শিষ্কুর-ভামু উজোর ।
আছ নিশি,বদন-কমল তেঞি বিকসিত, শ্যাম-ভ্রমরা নাহি ছোর
অয়ণ-কিরণ পুন, অধর হেরি হেরি, হার-ভরঙ্গিনী-কুলে।
কুচ-যুগ-কোক, শোক নাহি জানত, গোবিন্দ দাস কহ ফুরে।

আংক্লেশ্, অমিয়া-আঞ্জিয়া লইয়া উদিত হইয়া রহিরাছে! আরোও অমৃত এই বে, সেই অমিয়ার সহিত--সেই চাঁদের-ক্রোড়-তলে ঘনীভূত-স্থল-তিমির ক্র-ক্লণে অবস্থান করিতেছে!!

এই ঘনীভূত তিমিরে প্রতিহত-ইন্দুর-কিরণাবলী বক্রগতি প্রাপ্ত হইরা বুঝি কর্ণ-কুবলর কে বিক্সিত করিতেছে। এবং তাহা দেখিয়াই বুঝি, চঞ্চল নয়ন চকোর্ম্বর সেই দিকে ধাবিত হইয়াছে ?

আর নাশারূপ-গিরিশৃলের উর্দ্দেশে – ঐ যে সমুজ্জল সিন্দ্র-ভাত্ব সমুদিত তাহাতেই পরিষল-পূর্ণ এই বদন কমল—নিরস্তর বিক্সিত থাকে। এবং দেই জন্মইতো (আপনাকে দেখাইয়া) এই শ্রাম-ভ্রমরা এই মকরন্দ-ভাঞার-মুথ-কমলের লোভ—মুহুর্ত্তের নিমিত্তও ছাড়িতে পারে না।

আবার—তোমার আরক্ত-বিম্বাধরের অরণ-কিরণ নিরস্তর নিরীকণ করিয়া হার-রূপ নদীর ভীরস্থ—এই কুচ্যুগল রূপ চক্রবাক-মিথুন, তঃথ কাছাকে বলে ছানেনা, যে হেতুক ভাহাদের রজনী নাই স্থতরাং বিচ্ছেদও নাই।

কুঞ্জ ভবনের বহির্দেশস্থা প্রেমালাপ শ্রবণকারিণী-স্থীর ভাবাবেশে মানন্দে গদগদ কঠ ছওয়ায়—ফুৎহার করিতে করিতে গাঁডকর্জ: গোনিন্দ কবিরাজ এই গীভিটি প্রশারন করিয়াছেন। "গোনিন্দদাস কহ ফুরে" এ কথার ভাবার্থ বোদ হয় এই যে, ফুৎকার করিতে করিতে শুদ্ধাশুদ্ধ কিরূপ ভাষায় গীভটি বলিলাম ভানিনা। (ফুরে শন্দের হুই অর্থ—(১) ফুৎকার করিয়া, (২) ফু, ভিতে)।

# (৮) मधी-नौटिहताह—दकमात ।

দরশনে নয়ন—নয়ন-শরে হানল, ভূজে ভূজে বন্ধন ঝাঁপি, ভাভরণ হীন—ভিন্ন, তনু পরশিতে, বিপুল পূলক ভরে কাঁপি। দেখ স্থি! রাধা মাধ্ব রঙ্গ—

রিকি-রণ লাগি, জাগি তুত্ যামিনী,না হেরিয়ে জয়ভল ! ॥ ধ্রু ॥ ঘন ঘন চুম্বন, তুত্ ভেল আচেতন, আধর-অ্ধারসে মাজি, প্রোস-জরজে—কমু মন পুরল, ডুবল মনমথ-হাতী !

দেশ—ঘনঘন-চুম্বনের—ক্রম-নথর্কিত-আনকাবেশে এবং অধর-স্থা-রস পানে মাতিয়া—উভয়েই অচেতন ইইয়া পড়িলেন। প্রেমামূত-জলধীর তরঙ্গ বারিতে উভয়েরই—তফুও মন ভরিয়া গেল! মন্মথ-মাতঞ্চ-রূপ যোদ্-ময়ের রণ-বাহনও সে তরঙ্গে ডুবিল!

সৰি ! এক্ষণে বৃঝি সন্ধির প্রস্তাব চলিতেছে। ঐ শুন—ছজনের বদন হইতে কি প্রাণানন্দকর-গদগদ-মধুর-আধ-আধ বচনামৃত—নিঃশুন্দিত হই-তেছে। আহা ! এরপ মধুমাথা-বাণী শুনিলে মদনেরও মৃহ্ছা হয়। আমঙা কোন ছার ?

"স্থি! কিন্ধে ৰাত্মদ্ৰ স্থান্বৰ্ষণ চলিতেছে, কিছুই কি বুঝা যাইতেছে না ?" অপেকাক্কত-কিলিংদ্ৰস্থা কোনও স্থীৰ এইৰূপ প্ৰশ্নের উত্তরে, স্থী

<sup>(</sup>৮) নয়নে নয়নে দর্শন হইলে—উভয়েই কলপ্র-শরে আহত হইলেন।
ভূজে ভূজে বন্ধন করিয়া একে অন্তের অক্ষে—ঝাঁপিয়া পড়িলেন। অভয়ণশ্ব্য তয়ু-তয়ৢয়-সংস্পর্শনের-পূর্ণজ্পে—বিপুল-পূলকায়িজ হইয়া, উভয়েই
কাঁপিতে লাগিলেন। লতা-য়ন্রে রহং-কেলী-দর্শনোৎফুলা কোনও স্থী—
নিয় শ্বের অপরাকে কহিতেচেল—মথি। রাধামাধ্বের রক্ত দেখা রতিরণোৎসাহে—যামিনী লাগরণ দেখা আলা। রন্পট্তায় উভয়েই স্কৃদক;
কাহার ও জয় পরাজয় দেখিতেছি না।

वननिह शन शन-श्वाभ श्वाभ शन-मनन-मृत्रह्म वाणे, जुङ् जुङ्-गत्राग-मत्राम ভाल मृत्यूयारे त्शाविम्म नाम किर्य झानि !

#### (৯) কেদার।

চুম্বনে ল্বধ-মুখ, অলখিত-ভাষ, ধাওল চান্দ—চকোর কো পাশ। প্রির মুথ-ঝাপল-কুন্তল-ভারঢান্দ-আগোরল-ঘন-আদ্ধির !

ভাবাবিষ্ট-গীতকর্ত্ত। গোবিন্দ কবিয়াজ কহিতেছেন—পুর্ণোচ্ছণিত-প্রেমের এ ভাষা—এ অর্জ্যোচ্চায়িত গল্ গদ্-প্রেমের-মন্ত্র পাঠ—মরমে মরমে চলিতেছে এবং প্রেমিক-ধূগল মরমে মরমে বৃদ্ধিতেছেন, আমরা ইহার কি জানি ?

(১) বাহাতে "নাংসা-রনণ—নত হাম রমণী" অধুনা, বিলাস-বিনর্তের সেই—মহালীলা আরম্ভ হটরাছে। পুর্কোক্ত গীতের স্থায়, এ মহাত্ত লীলার ছবিটিও স্থীগণের মুখে অভিব্যক্ত যথাঃ—

আহা! নাগরী-বাজীর চুম্বন-লুর-ই মুথের অলক্ষিত-বাগ্-বিলাস কি প্রাণ-মনো-মদ! স্থি! দেখাদেখা কি অনুত দুষ্টা! চাঁদ, চকোরের উপরে ধাবিত হইলাজে! (এপানে চাঁদ-বিলোদিনীর বদন এবং চকোর—
বিক্লেঞ্চানন )।

ধনী-মণির - উত্তর-ঝাঁপিয়া নিপ্তিত—উল্ল-কেশ-কলাপের শোভা দেখিয়া ব্যেষ্ঠ তেন্তে—যেন ঘনীভূত-অন্ধলার চাঁদকে আগুলিয়া রহিয়াছে! স্থি। এই অলোকি কাজনী-বিলাদের কি কথনও বর্ণনা হইতে পারে?

আজ আয়াণের কলাবতী-নণি, খামের কাম ইইয়া লাজকে কজিত করিতেছে !! স্থি ! মাধ্বের সহজ প্রেম-কেণীই নিত্য নৃত্ন একথা স্ত্য, কিন্তু আজ রস্বতী সাম্রাজীর অলোক-সামাত্য রস্ক্র---সে কেলীরও উপরে কি কহো রে স্থি! রজনী কো কাজ কামছ-কামে লক্ষাওল লাজ! সহজই মাধব-নব নব প্রেম, হাতীকো দন্ত জড়াওল হেম। নিবিড়-আলিঙ্গনে-বিগলিত স্বেদ, স্থামর গৌর---রেথ রহু ভেদ!

रेंडि जी गींड िखांमानी शृंस विভाগে शक्षमणी कनाना ।

রঙ্গ-পটুতা ও পরাক্রম-প্রকাশ করিয়া —হন্তীর দত্তে সোনার কারুকার্য্যবৎ—
অপূর্ব্যবের পরাকাঠা বিভার করিভেছে !

দেখ দেখ—কেণী-বিলাসিনীর প্রবল-আলিঙ্গনে—উভয়ের তমু, এক হইয়া গিরাছে ! উভয়ের অঙ্গ-স্থেদ—গেন একই শরীর হইতে বহির্গত বলিয়া বোধ হইতেছে ! নিবিড়ালিঙ্গনে উভয়ের—প্রাদীপ্ত-খ্যান-গৌর-ফান্তির ভেদও, প্রায় বিশ্বা । অতি সামান্ত মাত্র (রেথমাত্র) ভেদ রহিয়াতে, সে কথনও দৃষ্ট হইতেছে কথনও না ! সর্ম্মণা—আমাদের রাজ-নন্দিনীর জর ! !

## ত্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### অথ মোড়শী ক্লণদা।

( > ) धानिन-शीरगीत्रहस्तछ।

ভণত-কাঞ্চন—কাঁতি-কলেবর, উন্নত-ডাগুর ভঙ্গী,
করী-বর-কর জিনি, বাজ্ব স্তবলনি, বিহি গঢ়ল বহু রঙ্গী।
গোৱা রূপ জগ সনোহারী—
আপন বৈদগদি, বিধাতা প্রকাশল, বধিতে কুলবতী নারী॥ গ্রু

গোরার রূপ-মাধুরী জগতের যাবতীয়-জীবেরই মনোহারী বটে কিন্ত কুলবর্তী নারী-বধের নিমিন্ত বিধাতা তাহাতে বিশেষ ভাবে বৈদগ্দী প্রকাশ করিয়াছে! দেখ — বিজমণির আপাদমন্তক পূর্ণ পূলকাবলী, প্রেমাশ্রপ্নত্ত-নয়ন, এবং আপন ব্রজনীলার প্রেমগুণ-চরিত ভনিয়া ভক্ত ভাবে রোদন—অথবা আপন ব্রজকিশোর স্বরূপের গুণ লীলাদি প্রবণে ভাবমন্ত্রীর ভাবে প্রেমাশ্রু বর্ষণ—দেখিয়া পশু পক্ষী পর্যান্ত প্রেমান্র্র হইয়া ক্রন্দন করিতেছে!! গ্রীত রচয়িতা অনস্ত দাস নাগরী ভাবাবেশে বলিতেছেন), কিন্ত চক্রের জ্যোৎসা ও প্রক্টিত-মলিকার্ম্ব্রোভা মধুরিমা-বিড়ম্বি—ওই যে মৃত্ব মন্দ হাসি এবং মধুর বচনের অমৃত-বৃষ্টি

<sup>(</sup>১) অগ্নি-সম্ভপ্ত-জবীভূত-কাঞ্চনের: আর—সমুজ্জল, স্থলর, চর চর অঙ্গ কান্তি—উন্নত-জ্র-যুগলের প্রাণ-হরা-ভঙ্গী—এবং গঙ্গরাক্তর শুগুরৎ— বাহুর স্থবলনী—একাধারে সন্মিলিত করিরা—যে বিধাতা প্রীগৌরচক্তের, রগ-মাধুরী নির্মাণ করিরাছেন, তিনি নিশ্চয়ই পরিদৃশুমান-জগতের স্রষ্টা নহেন, তিনি বহু রঙ্গী—বহু বিদগ্ধ—বিধাতা।

আপাদ মন্তক, পুলকে পূর্ণিত, প্রেমে ছল ছল আথি, আপন গুণ শুনি, আপহি রোওত, হেরি কান্দ য়ে পশু পাথী। চাঁদ-চন্দ্রিকা—কুমুদ-মল্লিকা—জিনিয়া মুতু মন্দ হাস, মধুর বচনে, অমিয়া সিঞ্চনে, নিছনি অনন্ত দাস।

ভধু এ হুয়ের প্রভাবেই আমি আত্মহারা ! কেবল ইহার নিছনি লইরাই আমার মরিতে ইচ্ছা করিতেছে।"

বর্ণ ও অঙ্গ প্রত্যঙ্গাদির বৈশিষ্ট অনুসারে, রূপ সম্বন্ধে ভিন্ন ভিন্ন লোকের রুচি ও মত ভিন্ন ভিন্ন। আবার স্থলরী-রমণীর রূপ,পূরুষের সাহজিক মনোহারী এবং পূরুষের স্থলর রূপ স্থভাবতঃ নারীর মন-নেত্রের আকর্ষক, কিন্তু পূরুষের রূপে—পূরুষ আত্মহারা হন্ন অথবা মানুষের রূপে—পশু পক্ষী বিমুগ্ধ হন্ন এ কথা কথনও কেহ দেখে নাই! আজ আমার গৌর-স্থাকরের রূপে ভাহাও সংঘটিত, হইতেছে অর্থাৎ যাবতীয় জীব বিমুগ্ধ!!

আরোও দেথ—প্রেম-স্থা-নিধির-শশধর—আমার গৌর-হরির, ছল ছল মন্ত্রন ও প্রেমাশ্রু দর্শনে এই যে বনের পশু পক্ষী পর্যান্ত প্রেমাশ্রু-বর্ষণ করি-তেছে;—তড়িং-প্রবাহের ভাার এইরূপে প্রেম-সঞ্চারের অপূর্ক প্রক্রিয়া, শাল্তে, বেদে লোক-প্রবাদে কি কবি-কর্মান্য—কোথাও কি কেহ দেখিয়াছ বা ভনিরাছ?

সাধারণ-বিচার রীতি অনুসারে এই কথাটি বিবেচনা করিলেও, "ব্রীগোর ভগবান্ই যে সর্বজীবের প্রাণের প্রাণ ও পরম-প্রিয়তম" এ কথা স্থানর ব্যা যায়। কারণ প্রাণের বস্তু না হইলে, তাঁহার রোদনে পশু পক্ষী পর্যান্ত ক্রন্দন করিবে কেন ?

পদকল্পতক এবং গৌরপদ তরঙ্গিণীতে এ গীতিটি "গোবিন্দ দাস" ভাশিতা-যুক্ত।

#### (२) कारमाम-श्रीनिख्यानमहस्य ।

ধ্ঞান গঞ্জন—চলন মনোরম # গতি অতি ললিত হঠান,
চলত থলত পুন—পুন উঠি গরজত, চাহনি বল্ধ নয়ান!
গোর গোর বলি, ঘন দেই করতালি, কঞ্জ-নয়নে বহে লোর,
প্রেমেতে অবশ হৈয়া, পদিতেরে নির্গিয়া, আইস আইস
বলি দেই কোর,

(২) স্বকীর স্থ্-স্বার্থাদির গন্ধ-বিরহিত—স্বকৈতব প্রেম এ জ্বগতের বল্প নহে। সে প্রেমের চেষ্টা চরিত্রাদি— যেমন অঙ্কুত, তেমনি মহাপ্রভাব-সম্পন্ন!

প্রকৃত প্রেমিকের রূপে, গুণে — বচন, ব্যবহার, গতি, ভঙ্গী প্রভৃতি সমস্ত আচরিতে — মানবের কল্বিত মন পবিত্র হয়—অভ্যাদের ও স্বভাবের যাবতীয়কু' বিধৌত হইয়া যায়, কঠিন-হৃদয় আর্দ্র হইয়া উঠে। তাই প্রেম-সম্পদের
পরম-নিধি আমার নিতাই-চাঁদের—মাধ্রীতে ও প্রেম-চরিতে—জগতে যুগাস্তর!! তাই আর কোনও অবতারে এমন অভ্তুত লীলা হয় নাই—জীবের
ভাগো উদ্ধারের এমন মহাস্থগোগ কথনও ঘটে নাই।

নিতাই-দয়ালের—চলন, ফিরণ, ভাব, ব্যবহার সমস্ত—প্রেম-সমুদ্রেরএক একটি তরঙ্গ ! সবই মধুর হইতে মধুর ! ! সমস্তই অলোকিক ও পরমাস্কৃত
প্রভাবে পরিপূর্ণ ! ! !

দেখ—প্রাণের-ভাই-গোরা-চাঁদের—অসীম-গুণ গৌরব, প্রেম-প্রচারের অপূর্ব-প্রণালী ও জগছদ্ধার-লীলা দর্শনে—আমার নিতাই-মুন্দর আজ গৌরবের ও আনন্দের-চাঞ্চল্যে চপল হইয়া—থঞ্জন-পরাভবী মনোহর-পদ-চালনে কি স্থন্দর কি স্থঠাম কি স্থললিত-গতিতে নৃত্যভঙ্গে গমন করিতেছেন ৷ উত্তরো-ভর—বর্দ্ধিত-প্রেমোন্মাদে শ্রীঅঙ্গ এলাইয়া পড়িতেছে ৷ পদ-খলিত হইয় পড়িয়া

পদকরতক ও গৌরপদ তর্ক্ষিণীতে "অঞ্জন গঞ্জন লোচন রঞ্জন" ইতি
 পাঠাস্তরে এ গীতের আরম্ভ।

হুহুকার গরজন, মালসাট পুন পুন, কত কত ভাব-বিথার। পুলকে পুরল তমু,কদম্ব কেশার যমু, ভায়ারাভাবেতে

মাতোয়ার ! !

ভাগিম নিগম পর,বেদ বিধি অগোচর তাহাকৈল পতিতেরেদান কহে আত্মারাম দাদে, না পাইলো কুণালেশে রহি গেলো— পা্যাণ সমান।

যাইতেছেন এবং আবার উঠিয়া প্রেম-গর্জন ও হুহুস্কার করিতেছেন! বৃদ্ধিম নরনে—এদিক ওদিক চাহিতেছেন, আর—প্রাণের ভাইকে নিকটে না দেখিয়া 'গৌর গৌর!' বলিয়া ডাকিভেছেন!!

প্রেমের সহিত উচ্চারিত 'গৌর' নামে—দর্শনের সমান আনন্দ উপক্রান্ত হয়। তাই বৃথি আমার নিতাই-স্থানর মধুমাথা-গৌরনাম বলিতে বলিতে আনন্দোলাসে উভয়-হন্ততল দারা তাল দিতেছেন এবং নয়ন-ক্মল হইতে অবিশ্রান্ত—প্রেমাশ্র বর্ষিত হইতেছে!!

পতিত জীবগণের প্রতি, আমার নিতাই-চাঁদের স্বতঃই অধিকতর করণা, আবার যথন মনে হইতেছে—"পতিত জীবের জন্তই আমার ভারার অবতার। প্রত্যেকটি পতিত জীব—আমার ভাইরার করণার-লয় দ্বজারপে জগতের মঙ্গল-সাধন ও ভারার মহিমা বিস্তার করিবে" তথন পতিতের প্রতি বিগুণ স্বেহকরণা উছলিয়া উঠিতেছে! এবং তাহাতেই ব্রি—যে কোনও পতিত নয়নে পতিত হইতেছে, তাহাকেই 'আইস অইস!' বলিয়া আলিঙ্গন করিতেছেন—আর স্পর্শ-মণির পরশে তাহারা সোণা হইয়া যাইতেছে। তাহাতে আমার নিতাইটাদে আনন্দোনত হইয়া প্নঃপুনঃ প্রেম-গর্জ্জন ও মালসাট হারা, নানাবিধ ভাব বিস্তার করিতেছেন! তদ্বারা কলির প্রাণ প্রকাশিত এবং পতিতের হৃদর দ্রবীভূত করিয়া—আমার নিতাই-চাঁদের প্রাথক্ত অানন্দ ধরিতেছে না!! তাঁহার হেম-তত্ব থানিতে কদয়-কেশরের স্থায়— অসংখ্য প্রকাবণী ফুটিয়া উঠিয়াছে এবং ভাইয়ার ভাবে প্রমন্ত হইয়া—

#### (৩) কৃষ্ণ-ছাহ-ধানদী।

নিরমল-বদন—কমল-বর-মাধুরী, ছেরইতে ভৈগেতু ভোর, অলথিতে রঙ্গিণী—ভাঙ-ভূজঙ্গিনী, মরমহি দংশল মোর, শুন স্কৃনি ! য্যধ্রি পেথতু রাই।

মদন-সহোদধি—নিমগন মঝুমন, আকুল, কুল নাহি পাই ॥ ধ্রু

যাহা আগম নিগমে অব্যক্ত—বেদের ও বেদ-বক্তা ব্রহ্মার অগোচর (অর্থাৎ ব্রহ্মার স্ষষ্ট প্রেম হইতে পৃথক্ বস্তু)—আপন কদয়-সম্পূটের-পরমধন—সেই প্রেম-বৈভব পতিতদিগকে দান করিতেছেন! চিরম্বণার্হ পতিতের।—জগতের অমৃণ্য ভূষণ হইয়া উঠিতেছে!

গীতকর্ত্তার দৈন্ত—হার ! হর্মতি বশতঃ এমন দয়ার ঠাকুরকে অবহেলা করার কুপার লেশও পাইলাম না ! যেমন পাষাণ ছিলাম তেমনি রহিলাম ! !

স্নানান্তে বেশ-ভূবা বিহীনাবস্থায় গৃহে-গমন-পরারণা শ্রীরাধার—স্বাভাবিক সৌন্দর্য্য-মধুরিমা দর্শনে বিশ্বিত ও বিমোহিত হরি, কোনও স্থীর নিকটে মনের-উল্লাসময়-ব্যাকুলতা প্রকাশ করিতেছেন। হথা:—স্থি! বেশ-বিস্থাস-বিরহিত নির্মাল-বদনের সেই বর-মাধুরী হেরিয়া হেরিয়া আমি যথন ভোর হইয়া গেলাম, অমনি সে রমণীর জ্র-ভূজ্সিনীটি আমার হৃদয়ের মর্ম্মন্থানে দংশন করিল!! স্থি! এইরূপ স্বাভাবিক-শোভা-মণ্ডিতা শ্রীরাধাকে হেরিয়া অবধি আমার মন—মদন-মহা-সমুদ্রে মগ্ন হইয়াছে, সে সাগ্রের পার পাই-তেছি না! কেবলই উত্রোল্র অধিকতর আকুল হইতেছি।

বিনোদিনী, বৃদ্ধি-মুখ-ভঙ্গীর সহিত হাসিরা আমার প্রতি নয়ন-কোণের 

য়ারা—দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলে (দিঠি—দৃষ্টি) বোদ হইল—বেন সে হাসি
কৌতৃক-ভাব-পূর্ণ এবং দৃষ্টি অমুরাগ-ব্যঞ্জক; স্থতরাং আমি এ উভর ভাবের
সাম্ঞ্জ করিতে পারিতেছি না। সে, অমুরাগিনী কি বিরাগিনী বৃ্ধিতেই
সংশ্বর হইতেছে।

বিজিম হাসি—বিলোকন-অঞ্চলে, মঝুপর সো দিঠি দেল কিয়ে অনুরাগিনী, কিয়ে বিরাগিনী ? বুবাইতে সংশয় ভেল ! মরম কো বেদন, মরমহি জানত, সদয় হৃদয় তহি চাই, গোবিন্দ দাস পত্ত ! নিতি নৌতৃন মনে, লাগল রসবতী রাই ?

#### ( 8 ) দृ हो প্রাহ— ধ। নিস।

এ কাছ ! এ কাছ ! তোহারি দোহাই, মুথ—মনোহর, অধর— স্থরক বড় অণক্প মাজু পেথলু রাই ! ফুটল বাঁধুলী কমলকো সঙ্গ !

স্থি! আমি দর্পদন্ত ব্যক্তির স্থায় যাতনা ভোগ করিতেছি—হৃদদ্ধে বে তঃসহ মর্মানেদনা অঞ্ভব করিতেছি, ইহা অপরে বৃথিবার নহে। অতএব এ সমরে তোমাদের সহাত্ত্তি (সদয়তা) অতি প্রার্থনীয়!

স্থী ভাবাবিষ্ট গীতকর্ত্তা গোবিন্দ কবিনাল জিলা ক্রিনাল জিলার জনমে শ্রীরাধ্যকে জিলার ক্রিনাল জিলার ক

(৪) এই সময়ে সমাগতা কোনও দৃতী একি:ফের কথা শুনিয়া কহিতেছেন "কামু! তোমার দোহাই—আমি সাজাইয়া কথা বলিতেছি না! সত্য সভাই আজ রাধার বড় অপূর্ক শোভা প্রকটিত হইয়াছিল। আমার – নয়নেও— নিরম্বর-দৃষ্ট-রাধাকে অপ্রপ্ত নৃত্ন বোধ হইয়াছিল।

ক্ষীণান্সিনী ধনীর দেহলতার উপরে পীন-প্রোধ্বের প্রকাশ দর্শনে বোধ হইতেছিল একি স্বর্গলতার উপরে স্থানক উপলাত হইল ? (ছবনী গাতা—ছর্মল-গাতা) আর মনোহর মুখ-মগুলে স্থালাধ্বের শোভা দেখিয়া মনে হইছেছিল একি কমলের অভান্তরে বাঁধুলীর ফুল ফুটীয়াছে ? দান্ত কি কৰীৰ পৃত্সি, বহু — ক্লান্তব্য সাজ্জ সদন বহু ? বীন-পৰোধর, ত্বরী গাতা মের, উপজল—কনকলতা। নরন-বৃগল — ভূক আঞার মধুমদে-মাতল-উড়ই না পার! "তনত বিদ্যামতি দৃতী কো বচনে "বিকশল অনক না হর পত্ত ধরণে"

#### ( c )—গান্ধার।

ক্ষিকহো মাধৰ। কিক্ছৰকান্তে, পেথলু কলাবতী, স্থীগণ মাঝে। আছ্ইতে আছল কাঞ্চন-পুতুলা ভ্ৰনে অমূপন ৰূপে গুণে কুশলা

বে জ্ৰ-ভূজদিনীর দংশনে তুমি জর্জারিত হইতেছ, সে ভূক্কর ভঙ্গীমা আমার কিক্সপ নাগিয়াহিল শুনিবে? আমি উহাকে কজ্জল-লেপিত-কাম-ধহুর ভার দেখিরা ভাস্তও বিস্ফাবিট হইয়াছিলাম ! বু অথবা—ভূক্কর ভঙ্গী বেন বিজ্ঞাসা করিতেছিল—মদ্দৈর ধহু কাজরে কেমনে সাজিয়াছে ?

আর—আমার চক্ষে, রাধার বরন-যুগলের মাধুরী এই রূপ প্রতীত ইইরাছিল বেন মধুমদে মন্ত চুইটি ভূক—উড়িবার নিমিন্ত চেষ্টা করিতেছে কিন্তু লারিতেছে না!! দ্তীর কথা শুনিরা, স্থী ভাবাক্রান্ত-গীতকর্তা কবি বিদ্যাপতি অপর কোনও স্থীকে কহিতেছেন দেথ—দ্তীর কথার প্রভ্র স্থানিরে অনক বিকশিত হইরা উঠিয়াছে, আর অক ধরিয়া রাখিতে পারিতেছেন না। (সপ্রদশী কণদার ৪ নংগীত দেখ)

(৫) ৩নং গীতের শেবাংশের ক্ষকেলিত অনুসারে—ছ্তী শ্রীরাধার
নিকটে গিরা উাহাকে অভিসার ক্রাইয়া আনিলেন, তাঁহাকে স্কেত-কুলে
রাখিরা শ্রীক্ষকের নিকটে আগমন পূর্বক কহিছেছেন—মাধব! কি বৃণিব?
কৃতকার্ব্যের স্থান্থের সহিত — স্থান্থানী-ধনী-ধণির-বিরহ-পীড়ার-ভীবন-রার্ত্রা
বিশ্বভিত! স্বভরাং সংবাদ মুখে সরিভেছে না! স্থীগ্রে পরিবেইতা
ক্রেক্তরাবিতার—বেরপ প্রেম-বৈক্লা দেখিরা আসিলার—কিঞ্ছিৎ ব্লিভেছি

क्ष (एक दिनिक्षेत्र क्षामन दिन्हा ! । विस्ता मिन देवह होमकि दन्हा !! বামকরে কর্পাণ্—লোগিত কেশভাই ক্ষিতি-নথ-গিণই—নয়নে ক্ষণ ধার 🗓

#### (७)-काटमान।

"'अभगत-कानरन, कून्न मांभरी, शतिमरन ভतन निगंख" मूठी दका मध्त-वहन-एथ-माक्रक, मध्करत कहन अकास,

ভন-ন্নপে, ওপে, কলা-কোশলৈ-ভ্ৰনে অত্লনীয়া, সে কাঞ্চন-পুত্ৰীয়াল সমুদ্য বিপরীত হইয়া গিয়াছে ! বিনোদিনী-মণি, দিবা ভাগের শশীরেশার ভার বিশীণা হইয়া গিয়াছে ! সধীগণের সমুদ্য প্রভিকার-নৈপ্ণ্য এবং ক্রিয়া অসাধারণ সম্বরণ গুণাদি সমন্তই অকিঞ্ছিৎকর হইয়া পুজিরাক্তি ক্রিয়াল কেশভার-বিলোলিত ! বামক্রে-ক্পোল-ব্রিয়াল

আদর্শ হস্তবিশি বিভিন্ন কর্ম করে ক্ষিত্র করে, বাংকর জন্ম প্রাণান্তসমূত্রে এইরূপ জনিক পৃথি করে, হথা শিবন্যাপতি করে ভন বর জান্ত্রি বালা নিব সিংহ ইবে প্রাণ

(৬) নাধৰ, আকুল ও অধীর হইরা প্রীরাধার নিকটে উপনীর্থ হইলে সন্মিলন-দর্শনালিতা কোনও সধী, এগীতে—আগন কদরের তাবস্তুত্ব বর্ষণ করিতেছেন বর্ষা:—সধুকর বেষন সৌগদ্ধ-মন্ত্র্ম-বিকাশের সংগ্রহ বাহুর হারা প্রাপ্ত হর, সেই প্রকার দূতীর প্রথমর-বচনদ্ধণ-মারক আল নাধ্য-মধুকরকে বেম এই সংবাদ প্রদান করিল বে "প্রথমর-কাননে নাধ্যী

#### अक्रमा मिलान्सामान

# मध्-मृतन-वर्ग-वन ।

हान हान विभिन-कृक्ष-गितिशस्त्रतं, भार्षन माध्वी-मन्न। छ । द्रम-एत्रणारे—यवह वह वातन, हक्षन-भन्नव-हारए— 'महि महि' वहन—तहन, ममूक्षार्शन—श्वन-धूनार्शन मार्ष। वह शक्षति-विन्नि निष्ठ कृति कृति, माध्वी—मधूभ-मानारे— ख्व मधूणारन—मरनात्रथ शृतन, हृतिबङ्गछ छ्रथमातो।

বিকসিত হইরাছে এবং পরিষণে দিগন্ত ভরিরা গিরাছে।' শুনিরা মধু-হুদন—(মধুস্দন শব্দের এক অর্থ রুক্ত এবং অন্ত অর্থ ভ্রমর) রস রঙ্গে ইলিভে চলিভে—কানন-কুঞ্জে—গিরিগহ্বরে—মাধ্বীর সক প্রাপ্ত হইলেন। মাধ্বী শব্দের এক অর্থ অভ্যন্ত স্বাধীন কান্তা অর্থাৎ শ্রীরাধা, অন্ত অর্থ ক্লাধ্বী কুল)।

ব্যারংবার বারণ এবং নারজ-সঞ্চাণিত লতাপ্র রূপ নস্তক চুলাইরা (ধুনাওড—কম্পিত) বেন "নহি নহি" বলিতেছে—ঠিক্ সেই রূপে আমাদের নাধবী রাধা, হল্প ও মন্তক ধারা বাষ্যের অভিনয় করিতেছেন। মধুস্বন বিত্রত। বেন—মধুকর বহু গুলন ধানি বারা অমুনর অর্থাৎ নিনতি করিয়া মাধবীকে মানাইরা মধুপান করিতেছে—তেসনি প্রেন-কাকুতি ও রুসমর-শুভি বারা রুসময়ীকৈ রুণার্দ্র করিয়া—হরিবরভের স্থানায়ী "মধুপান" অর্থাৎ লীলা বিনাস ধারা মনোরথ পূর্ণ করিলেন। হরিবরভ—শব্দের মুখ্যার্থ পীত্ত-রুচ্রিত।

বিশ্বনাথ চক্রেক্ডা। সেন্বার্থ—ব্রুভ হরি—জ্রিক্ষণ।

**र**तिगरन मार्गन ४ म्लाक-भागाः পুণ্কিত বাজ্বিহসিরছ বাণা, कार तहल युन कमन नाशाह-छाहि कनन-मुथी-गूर्वनर्गिहि।

रित रित न्यान्य (नार्क् थनो कूछ हा शि— तह है भी उ

#### ( b )--- C क क ! ज़ !

দৃঢ়পরিরন্তণ, করু কত বার বান বান কিছিণী নৃপুর স্থান বিগলিত কৃষ্ণল-টুটল হার! আনক্ষে প্রল-সহচরী-ক্রে

(१) अशीरिक शृद्धांक मधुशात्मत्र ध्वकात-मधीत मूर्व ख्वाक वर्व चारा ! वित्नाभिनीत श्नकाकिछ-वार-पृश्व (वन ठम्लक-मानात कार्य গলে লাগিয়া রহিয়াছে। খ্রীবদন্ধানি হাস্ত বিক্সিত। 🐃 📜 🤻 🚉 मूथ-कमरल-प्रकीय मूथ-कमन नागारेया बिन्नि: क्रिक व क्ष्य जिल्ह्य শোভার অবধি হইরাছে!! *শেগ । गर्म- वीसा* अन्तर्भ सुनिहाँ स्तिश परीय नय पाता थनी-महाब्र- क्लिन वट र अङ्बर्- क्लिन क्लिए**ट एक**् त्रत्रकनावजी—करत्र र्यु है । अत्यारी है कार्यक्ष अत्यार दर्शन-कनात्र विरमानना वि ক্রিভেছেন !

সকল হস্ত লিপিতেই গাঁভটি এইব্লপ অসম্পূর্ণ! এটি কি ৮নং গীটে श्रुक्तार्क माळ ? हन्न ७ दिवह वित्वज्ञात दवन छाहाहे त्वाध हत्र।

<sup>(</sup>৮) त्रनक्नात मधुत-त्याज, क्रान-डेनाननात-इसीत-छन्नत्व लेकिन रदेश উঠिन । नवीजरनत्र व्यान-मर्त्तप-क्रन रन नीना-विनारमत्र वर्गन क्रिक् क्रिक्स न्यो जनताक करिएएहम । यथा,-किइएएरे राम इजरमद नाथ विकिर्एहमा।

# জ্বল সোগত, সক্ষুর গান কেছে ছরি বল্লভ এ অথ রাতি। আন-জলে ছত্ততু করণ নিনান সমন্থ সাগরে ভ্রম মাতি।

ইতি জীগীতচিত্তামণো পূর্ব্ব বিভাগে বোড়নী ক্ষণদা।

বেশ পুন: পুন: দৃঢ়-পরিরন্তনে, বিনোদিনীর অদৃঢ়-বন্ধ-কেশ-কলাপ বিলোলিত হইরা গেল, ভার—ছিল হইল ! কিছিণী ও নৃপ্রের কর্ণ-রসারন-ঝন ঝন শব্দে স্থীগণের কর্ণ আনন্দ-রসে পূর্ণ হইতেছে। উচ্ছলিত-অল-সৌরতে লুক হইরা নধুকরণণ গান করিতেছে। আহা ! হজনের অলই প্রমন্তনে লাভ হইরা গেল !! স্থী ভাবাবিষ্ট পদক্ষী হরিবল্লভ উপসংহারে—মহানন্দি কহিতেছেন আহা ! আজিকার নিশিটি কি অথের ! যে হেতৃক উত্তেজিত নব যুব্ধনা স্থ

আমাদের একথানি আদর্শ হন্তলিণিতে এ গীতের রাগিণী লেখা নাই । ক্রীয়া হারাও কোনও লিপিকরের প্রমাদে একই গান ৭৮ ছই নহরে বিভক্ত ক্রীয়া অনুমান সুমূর্থিত হইডেছে।

# শ্রীকণদা গাঁতচিন্তামণি।

#### व्यथ मश्चनभी क्रनना ।

( > ) जीरगीतहस्य -- (मभाग।

ভাব-ভরে গর গর-চিত্ত অভি-রসে নাহি বান্ধে থেহ ক্লণে উঠে, ক্লণে বৈদে নাপার সম্বিত! সঙরি সঙরি কালে পুরব-সেনেই!

(১) ভাব-নিধি শ্রীগোর কিশোর ভাবাম্বাদন-বিকারে গর গর—কর্থনতি উঠিতেছেন—কথনও বদিতেছেন—গোরাছি নাই ! অতি-রদে অর্থাৎ প্রবিদ্ধিত মধুর-রদ ভরে ছির থাকিতে পারিতেছেন না ! (থেহ—ছৈবা) পূর্ববিতারের-স্নেহ অর্থাৎ ব্রব্ধ প্রেমের কথা শ্বরণ করিরা, (প্রেমোক্র্যানিটি ব্রিরাধার স্থায়) কাঁদিরা আকুল হইতেছেন !

আবার,রসান্তরাবেশে—মহানন্দে সন্ধীর্তনে মধ্য বিজ্ঞান বিশ্বনি নাম সার-সম্পাদ বিশ্বনি নাম সার-সম্পাদ বিশ্বনি নাম সার-সম্পাদ বিশ্বনি নাম মহানি বিশ্বনি বিশ্বনি নাম মহানি বিশ্বনি বিশ্বনি

(ভক্তগণ, আলোচনা হারা—রসানন উত্তম রূপে অন্তব ও আসার্ত্র করিবেন বলিরা ভ্রমজ্ঞ গীত কর্তা প্রশ্ন উঠাইরাছেন) হার ! কেহবলিটে বার কি অভাবে স্বয়ং গোকুল-পতি আজ সংকীর্ত্তনের মাঝে ভক্ত বেশে বিরাজিক ক্ নৃত্যাবসানে আমার গৌর-ভ্রমাকর, গদাধর পণ্ডিতের করে ধরিরা ভূৎকার

ক্রিতে ক্রিতে আপন মনের মর্ম-কথা প্রকাশ ক্রিতেছেন !

নাচে পছ গোরা-নটরাজ কিলাগি গোকুল-পতি সঙ্কীর্ত্তন-মাঝ ? প্রির-গদাধর-করে ধরি মরম কথাটি কহে—ফুকরি ফুকরি;

ডগ মগ আনন্দ, হিলোলে
লুলিয়া লুলিয়া পড়ে পণ্ডিতের কোলে †
গোরা-রদে সবরসময়
না দরবে—বলরাম—পাধাণ-ছদয় !

(প্রীমতী রাধার-বিশেষ ভাবাবতার—গদাধর গোন্সামীর সহিত 'মরম কণা' অবশ্রুই অভি গোপনীয় রস। স্করসিক-গীতকর্ত্তা আমাদিগকে সে রসে বঞ্চিত্ত রাথিয়া লোভে-লীলা-রহস্ত ভাবনার অবসর দিয়াছেন। ফুংকারের সহিত্ত এই মরমের কণাটি কি এই ? "তোমাদের দত্ত আনন্দের প্রতিদান করার ও তোমার পেম-ঋণ শোধ করার শক্তি আমার নাই !" একথা নিশ্চিতরূপে অফুত্রব অবশ্রুই আমাদের সাধ্যতিতি, ভাব-সমৃদ্র-মন্তন দ্বারা ভক্তগণ অমৃত্রব থাদন করন)।

দেখ,—সরমের কথা বলিতে বলিতে আমাদের রসের-নাটুয়া, শ্রীরাণার সহিত বিলসিত মাধবের স্থায়—কানন্দ-হিলোলে ডগ মগ হট্য়া উঠিগছেন এবং সুলিয়া লুলিয়া—গদাধর পণ্ডিতের-কোলে পতিত হইতেছেন !

গীত রচয়ি ভা-বলরাম দাদের ভক্ত-ভাবে, আক্ষেপ লৈভোক্তি—ভার"! গৌর রদে সমস্ত জীবের শুধক-ভাব দূর হইয়া—জগৎ রদে পূর্ণ হইয়া গেল কিন্তু আমার পাষাণ-হৃদয় রসপূর্ণ হইবে কি—ত্রব ও হইল্না!

কোনও কোনও অমৃত্রিত গ্রন্থে "গোকুল পতি' স্থানে "গোগোক পতি' এবং পদকল্পতফতে ১০ ছত্ত্রের পরে—৭৮ছত্ত্রের পারবর্ত্তে এইটুকু অধিক আছে—''নিজ পর কিছুই না জানে, উত্তম অধম নাহি মানে' আর 'পণ্ডিকের কোলে' স্থানে ঐ গ্রন্থে 'ভকতের কোলে' এবং গৌরপদ তর্ত্বিণীতে 'পতিতের কোলে' এই রূপ পাঠান্তরের দৃষ্ট হয়।

#### (२) श्रीताश—श्रीनिक्रानम हत्त्र्य ।

নিতাই গুণমণি আমার নিতাই গুণমণি
আনিয়া প্রেমের বল্লা ভাসাইল অবনী
প্রেমের বল্লা লইয়া নিতাই আইল
গৌড়দেশে
ডুবিল ভকত সব দীন-হীন-ভাবে,
দীন হীন পতিত পামর নাহি বাছে
বন্ধার তুর্লভ প্রেম যারে তারে যাতে।

আবান্ধ-করুণা-নিতাই, কাটিয়া মোহান\*
ঘরে ঘরে বৃলে প্রেম-অমিয়ার-বান্
লোচন বলে আমার নিতাই ঘেবা
নাহি মানে
অনল অলিয়া দি,তার মাঝ মুথ থানে।

(২) জড়-জগতে যেমন থাল প্রণালী বা সেচনাদি দ্বারা, বছ যত্ত্বে নানা চেষ্টান্ত্র মৃত্তিকার-আর্দ্র তা সাধন, দোদ বিনাশ ও উপযোগীতা বিধান করিয়া তৎপরে বীজ বপন পূর্বক বুক লতাদি উৎপাদন করিতে হয়। চিজ্জগতে তেমনি বিষয়-বিশুক্ষ—কুবাসনা-কল্পরিত—অভিমান-বন্ধুর—মানব-হৃদয়ে—য়িদ্র অবিচলিত ভজনামুষ্ঠান ও সাধু সঙ্গাদি দ্বারা অনর্থ নিবৃত্তি হয়, তবে ক্রমশঃ তাহাতে নিষ্ঠাকৃতি আশক্তি ও ভাবের উদয় এবং চিত্তুদ্ধি হইয়া কত কালে, কত আয়াসে—হয়ত বা জন্ম জন্মান্তরে—পরম-পুক্রমার্থ-প্রেম লাভ হইয়া থাকে। কিন্তু দেখ—আমার নিতাই চাঁদ কত গুণের গুণ-মণি! এই সুত্র্লভ প্রেমের—বন্তা আনিয়া তিনি জগৎ ভাসাইয়া লিতেছেন!!

আমার নিতাই-গুণ-মণি—প্রেমবন্তা লইয়া গৌড় দেশে আসিবামাত্র তাঁহার
সকলণ—দীন হীন-বচনেই ভক্তগণ প্রেমের বজার ভূবিবা গোলেন, কিন্তু পতিতপামর-চুর্গত দীনহীনগণ বঞ্চিত রহিয়া গেল ! দেখিয়া অবায়-করণাময়, নিতাইচাঁদ—ব্রহ্মার- চুর্লভ-প্রেম-ধন অবিচারিত ভাবে মাচিয়া বিতরণ করিতে প্রবৃত্ত
হইয়াছেন !! খাল কাটিয়'-বঞ্চিত-জনগণের গৃহয়প ওভাগ্য-চর্গের—ভিতরে,
প্রেম-সাগরের-বক্তা প্রবাহ লইয়া যাইতেছেন ! সে হ্র্মারসের প্রশাবে যাবতীয়
জীবের নব জাবন লাভ হইতেছে ও চিত্ত-শুদি-স্থান এবং সকল অনর্থ—সম্পর্ম
গৃক্তি—দূর হইতেছে ৷ প্রেম-পীয়্বাস্থাণে পতিত পানর দীন হীন ছুর্গত
সকলেই ধয় ১ইতেছে ৷

#### (৩)—বরাডি।

অলথিতে হাম হেরি বিহণিনী\* থোরি। ু কাহাক স্থলরী কে উহ জান ? যমু রজনী ভেল চাদ-উজোরি। কুটিল-কটাখ-ছটা পড়ি গেল মধুকর-ডম্বর, অম্বরে ভেল।

আকুল করি গেয়ো হামারি পরাণ !! লীলা-কমলে ভ্রমর কিয়ে বারি-চমকি চললি ধনী চকিত-নেহারি,

এমন দরার নিধি--গুণের নিধিও প্রমান্ত্ত-শক্তিমান্ শ্রীনিভাই চাঁদকে ষে হতভগ্য নরাধম, পূর্ণ ভগ্বানের প্রকাশ ও জীবের প্রমাশ্রয় বলিয়া মানেনা গীতকর্ত্তা ঠাকুর লোচনানন্দ বলিতেছেন—এসো, তাহার মুথের মাঝ্থানে আগুণ জালিয়া দেই। অগ্নি শুদ্ধি পবিত্রতা বিধানের এক উত্তন প্রতিকার।

পদকল্পতরুতে ৬১৬ ও ২২৩৮ নম্বরে চুইস্থানে এ গীতিটি রহিয়াছে। উভয়ত্রই ''আবান্ধ করুণা নিভাই' সলে ''আবন্ধ করুণা সিদ্ধু' অধিকন্ত্র ২২৩৮ নম্বরে ভণিতাও ভিন্নাকৃতি; যথা—''......ধেবা না ভঞ্জিল, জানিয়া শুনিয়া দেই আত্মঘাতী হইল''। গৌরপদ তর্ঙ্গিণীতে ৭ম,৮ম, পমারের পরিবর্ত্তে—পাঠান্তর "অবান্ধবে সকরণ নিতাই স্কুন্তন, ঘরে ঘরে করে প্রেমামূত বরিষণ"।

(৩) অমুরাগ-বিমুগ্ধ এক্লিঞ্চ, কোনও সখীকে কহিতেছেনঃ—আজ যমুনারতীর-পথে এক অপূর্বে রমণীকে দেখিয়াছি। গুরুজন-সঙ্গিনী সে বিনোদিনী, অলক্ষ্য দৃষ্টিতে আমার প্রতি চাহিন্না—ঈষৎ-হসিতানন হওয়ায়— জ্যোৎসা-মনা যামিনীর স্নিগ্নোজ্জল-প্রভার স্থায়, এক অপুর্ব-জ্যোতিতে— স্থানটি উদ্থাসিত হইয়া উঠিয়াছিল ৷ সারোও দেখিলাম, তাগার কুটিল-কটাক্ষের ছটা পড়িয়া আকাশ-তলটি যেন মধুকর-নিকরে আকীর্ণ হইয়া উঠিল !! স্থি ৷ এ সুক্রীট কে এবং কাহার রম্ণী, জান ? আহা ৷ সে আমার আগেটি একেবারে আকুল কার্যা গিয়াছে। ধনী-শিরোমণি, লীলা-কমল ছারা-

<sup>\*</sup> পদকলতকর পাঠান্তর -বিহুদ্লি।

তে, ভেল বেকত পরোধর শোভা কনক-কলস হেরি কাহে না লোভা ? আধ-লুকারল আধ-উদাস— কুচ-কুন্তে কহিগেও আপ কি আশ, ভণই বিদ্যাপতি—নব-অফুরাগ ! গুপত-মদন-শর কাহে না লাগ ?

( 8 )-- नाला धान है।।

এ কাছ এ কাছ ! তোহারি দোহাই
বড় অপরপ আজু পেথলু রাই !
মূথ-মনোহর অধর-স্বক্ষ
ফুটল বাজুলী, কমলকোসঙ্গ!

লোচন-যুগল ভ্ল আকার—
মধু মদে- মাতল, উড়রি নাপার,
ভাঙকি ভলীন পুছসি যতু
কাজবে সাজল মদন-ধন্ন ?

আপন বদন-পরিমল-লুক্ক-ভ্রমর-বৃন্দকে বারণ করিতে করিতে—কি বারণের ছলে—চকিতের স্থায় আমার প্রতি চাহিয়া চলিয়া যাইতে—পরোধরের অপূর্ক্র শোভা ব্যক্ত হইয়া পড়িয়াছিল, সথি! সে স্বর্ণ-কলস দেখিলে কেনা-লোভিত হয় ? ( পদকল্পতকর পাঠাস্তর—কনক কমল নাহি কাহে, মনলোভা) আমার বিশ্বাস—সেধনী এইরপ অর্দ্ধান্মুক্ত, অর্দ্ধ লুক্কান্মিত-কুচকুম্ভ-প্রদর্শন দারা আপন মনের অভিলাষ প্রকাশ করিয়া গিয়াছে!

গীতকর্ত্তা কবি—বিদ্যাপতি ঠাকুর—স্থী গণে সকল কথা শুনিয়া, রহস্ত করিতেছেন এমন নবামুরাগে—মদনের গুপ্তশার কেন লাগিবে না ?

(যাহাতে সদাফুভূত প্রিয়ন্ধনকে নৃতন করিয়া দেখায় রসশাস্ত্রে তাহাকেই অফুরাগ বলে। সহাগ্র ছত্ত্রে অভিরূপতার বর্ণনা। সহশী ক্ষণদার এনং গীতের আখাদনীতে, অভিরূপতার লক্ষণ দেখ )।

(৪) স্থী, মনে মনে বলিলেন—রাধার নব-নব-মাধুনী-বিকাশের বলিহারি! আপন-প্রাণ কান্তেরই—ধাঁধা বাধাইয়া দিয়াছে!! প্রকাশ্যে ক্রিডেছেন—কান্ত! তোমার দোহাই—পরিহাস ক্রিডেছি না। আরু স্তঃ

পীণ-পয়োধর ত্বরী-গাতা— স্থমেক উপর—কনকলতা। ভণছ বিদ্যাপতি দৃতীকো বচনে— বিকশল অনঙ্গ না হয় পছ ধরণে !

#### ( c )—বরাড়ি।

এ স্থি! বিধি কি পুরাশুব সাধা?
পুন কিয়ে নিরথব রূপ-নিধি-রাধা ?

যদি পুন না মিলন সো বর-রামা—

তব জিউ-ভার ধরব কোন কামা ?

ভূত্ ভেলিদ্থী, পাশ ভেল আশা,

জিউ নান্ধন কিয়ে করব উদাসা ?

শুনিহরিবচন, দুগী অবিলম্বে—

আপ্রলি চলি যাহা রমণী-কদম্বে।

সত্যই রাধার-রূপমাধুরীর বড় অপরূপ বিকাশ হইয়াছিল, সে অদৃষ্টপূর্ব্ব-মাধুরী হেরিয়া আমিই বিস্মিত মোহিত এবং বিভ্রাস্ত হইয়া গিয়াছিলাম !— সে মনোহর-মুঝ এবং স্থরক্ষ-অধর দেখিয়া আমার বিভ্রম জয়য়য়ছিল— যেন ক্মলের সহিত বাঁধুলীর ফল, ফুটিয়াছে ইত্যাদি (১৬শী ক্ষণদার ৪নং গীতের আখাদনী দ্রষ্টব্য)

(৫) দ্তীর বচনে-প্রাণেররীর-মাধুরী-মহিমা প্রাণে লাগিয়া, অনক বেদনার ও অনুরাণের আভিশণ্যে—রসিক-শেগর, কাতর হইয়া কহিতেছেন— লখি! বিধাতা কি আমার সাধ পূর্ণ করিবে? এই প্রকার মাধুরীতে মণ্ডিত রূপ-নিধি-রাধাকে কি আবার দেখিতে পাইব ? সে বামা-বরণীয়াকে পুনরাঃ না পাইলে প্রোণের ব্থা-ভার বহন করিয়া কিছুমাত্রও ফল নাই! কহে হরি বল্লভ ''শুন ব্রজবালা। হরি জপায়ে তুয়া গুণ-মণি-মালা! ''

#### ( ৬ )--ধান 🖺 1

কভ য়ে কলাবভী—যুবভী-স্থাতী, নিবসই গোক্লমাহ, হরি অব রহিদি রভদে পুন কাছকো—কুটিল-নয়নে নাহি
চাহ!

স্দরি! অতএ করিয়ে অনুমান— ''শুভ-খনে, স্থামি— বরত তুহু ছোরলি; নারী-বরত-নিল-

कान ॥ आ ॥

সধি! সর্ব-গুণমণ্ডিতা—মহাচত্রা—তৃমি আমার দৃতী এবং আশা আমার বন্ধন-রক্ত্র এখন বন—দে রক্ত্রতে প্রাণ-বাঁধিব কি মুক্ত করিয়া দিব ? হরির এইরূপ কাতর বচন গুনিয়া দৃতী অবিলম্বে রমণী-সমূহের মধাস্থা শ্রীরাধার নিকটে অসিলেন। আসিয়া যাহা কহিলেন—গীতকর্ত্তা হরিবল্লভ তত্তাবাবিষ্ট হইয়া উহা প্রকাশ করিতেছেন, যথা—ত্রজ-স্থলরী-শিরোমণি—রাধে! হরি আকৃল হইয়া কেবল তোমার গুণরূপ-মণি-মালা জপ করিতেছেন!

<sup>(</sup>৬) সমাগতাদ্তী আরো কহিতেছেন:—রাধে। এই গোকুলে কত কত কলাবতী—স্থলরী— যুবতী সকল রণিরাছেন। হরি সকলেরই চিত্তহব—কিন্ত তাহাদের চেষ্টা দেখিয়া তিনি শুধু হাস্ত করেন। আর তাহাদের প্রতি কলপ্রনাবেশে—ফিরিয়াও দেখেন না। কাহারও প্রতিই আর কুটিল-নয়নে চাহেম না। অভএব হে স্থলরি। যে মুহর্তে তুমি স্বামি-ব্রত-ত্যাগ করিয়া—হরিতে প্রাণ সমর্পণ করিয়াছিলে, সে বড়ই শুভকণ ছিল। আহা। জগরারীগণের-

পদকল্পতক পাঠ—হরি উপহাসি; পদসমুক্তে—হরি অব হাসি।

ভূয়া-নিজ-নাম—'রাই'ভরি কি কহব সো এক আধর—রক্ষ শুনইতে ''রাতি—রভন, রভি,রাভুল'' চমকই ভোহারি আশঙ্ক ভূয়া গুণ-গাম—নাম, ঘন গাওইণ অবেকভঞ্চ মুরলী-নিসান, সহচরী-কোরে, ভোরি ভোহে ভাকই গোবিদদাস পরমাণ।

### (৭)—সায়ুর।

নৰ-যোবনীধনী, জগজিনি লাবণি, মোহিনী-বেশ বনায়লি তাই 'মনম্প-চিত—ভীত নাহি মান্ত'' কুঞ্জরাজ পর সাজলি রাই !

আরাধনীয়-ধন সে নীল-কাস্ত—তোমার নারীত্রত গ্রহণ করিয়া প্রেমে এমনি আকুল হইয়াছেন যে, পূর্ণ-রূপে তোমার 'রাই' নামটি তাঁহার কাছে উচ্চারণ করা যায় না! নামের এক একটি অক্ষরের নিমিত্ত তিনি কাঙ্গাল হইয়া উঠিয়াছেন। (রক্ষ—দরিদ্র) রাতি, রতণ, রতি, রাতুল—ইত্যাদি কোনও কথা কেহ উচ্চারণ করিলেই তোমার 'রাই' নামের আদ্যক্ষর 'র' এই বর্ণটি শুনিবামাত্র চমকিয়া উঠেন!!

স্পাষ্টোচ্চারণে—স্ব-মুথে—তোমার নাম গুণাদি-গানের শক্তি হারাইরা মুরলীর-অব্যক্ত-কল-ধ্বনিতে উহা গাইরা-প্রাণ জুড়াইতেছেন !! (নিসান—নিঃস্বন; অবেকত—অব্যক্ত) বিভোর অবস্থায় অন্ত প্রিয়তমা কান্তার—ক্রোড়ে থাকিলেও প্রলাপের ক্রায়—তোমাকে ডাকেন!! আমি পরের মুথে গুনিরা এ সকল কথা বলিতেছি না। (দৃতীর ভাবে আবিষ্ট—গীতকর্তা গোবিন্দ ক্বিরাজ কহিতেছেন) আমি স্বয়ং এ:সকল কথার সাক্ষী। হরির এই রূপ শোচনীর দশা স্বয়ং দেখিরা আসিতেছি।

(৭) তরুণী-মণি-শ্রীরাধার স্বভাবিক-লাবণাই জগৎ-বিজয়ী; তাহাতে আজ আবার মোহিনী-বেশ রচনা করিতে লাগিলেন এবং কুঞ্জয়াজ-রুঞ

<sup>†</sup> গান ঘন গাবই। 🖫 শার কত--পদকল্পতরুর ভূল পাঠ।

#### চললি নিকৃঞ্জে কুঞ্জর-বর-গমনী---

যুবভী-যুথ-শত,—গাওত বাওত, চলত চিত্রপদ বিদগধ-রমণী ॥ এফ হেরষ্টুতে শ্যাম—স্রত-রণ-পণ্ডিক, হাসি মদন-মদে মাতলি বালা রতি-রণ-বীর ধীর-সহচরী-মেলি, বরিথয়ে নয়ন-কুস্থম-শর-মালা

বৃন্দাবনের নবীন-মনমথ বলিয়া চিত্তে বিন্দুমাত্রও ভয় না বাসিয়া—পরাক্রমী সমাটের প্রবলতর-প্রতিদ্বনীর স্থায় কুঞ্জরাজের প্রতিক্লে সাজিলেন! কিয়া শমাথ (কন্দর্প) আমাকে ভয় করে না—আল তাহাকে শিক্ষা দিব! " এই-রূপ মনে করিয়া অতুল-রতিযুদ্ধ দারা তাহাকে ভীত ও বিশ্বিত করিবার নিমিত্ত স্বীয়-বল্ল কুঞ্জরাজের সহিত যুদ্ধার্থ সজ্জিত হইলেন। গজেক্র-গমনী শত শত বিদ্ধা-যুবতী-যুথের সহিত—গানবাদ্যের তরঙ্গ তৃলিয়া বিচিত্তি গতিতে নিকুঞ্চে চলিলেন!

রণ-পণ্ডিত উপযুক্ত প্রতি যোদ্ধাকে দেখিলেই—রণ সাজে সক্ষিত—বীরের প্রাণ যেমন বীর-রসে মাতিয়া উঠে। তেমনি হ্রন্ত-রণ-পণ্ডিত-শ্রামকে দ্রে দেখিয়াই আমাদের হ্রন্ত-রণ-সজ্জিতা-বীরবালা—রণ-মদে মাতিয়া-উঠিলেন। রতি-রণ-বীর—শ্রাম-হ্রনাগর এবং রতি-রণ-ধীর (সমর্থ) হ্রনাগরীতে মিলিয়া প্রথমতঃ ময়নে নয়নে কন্দর্প-বাণ বর্ষণ আরম্ভ হইল। তংপর উত্তেজিত যোদ্ধ্র পরম্পর নিকটবর্তী হইলে—পাশ-বদ্ধন-যুদ্ধ চলিতে লাগিল। উভয়ে উভয়কে ভ্রজ-বদ্ধনে বাধিয়া আয়ত্ব করার চেষ্টায় প্রবৃত্ত হইলেন। তৎপরে—অঙ্গে অঙ্গে-মৃদ্ধ! কাহারও জয় বা ভঙ্গ নাই—তৃমূল যুদ্ধ চলিতে লাগিল!! কিছিলীর রণ-বাত্ব হইতেছে—কিন্তু সে ধ্বনি গীতকন্তা স্থী-ভাবাবিষ্ট গোবিন্দদাসের বাঞ্ছিত শেষ-লীলার তাল লয়ে এখনও বাজিতছে কি না ঠিক্ না বৃঝিয়া তিনি কহিতেছেন—কোন্ তরঙ্গে কিছিলী বাজিতেছে, এখনও আমি বৃঝিতেছি না !!

কেবল বসস্তাভিদারেই গান বাদ্যাদির সহিত বন-গমনের রীতি। বসস্তা-ভিদারের এ গীতিটি---সর্ব-কালিক-লীলা গানের ভিতরে কেন ? এ প্রশ্নটির নয়নে নয়নে বাণ, ভুজে ভুজে বন্ধন, তকুতকু পরশিতে নাহি জয় ভঙ্গ,

গোবিন্দদাস কহ, অবনাহি সমুঝিয়ে, বাজত কিঙ্কিণী কোন তরঙ্গ ?

# (৮)—সা**য**ুর।

স্থানে আলিজন করু কতছ্ল,
যকু ঘন দামিনী লাগল দ্বন্দ!
বদনে বদন ধরু — "মনম্থ-ফন্দ —
কিয়ে, একুঠামে বান্ধল যুগচন্দ ?"

মদন-মহোদধি উছল হিলোর—

যকু নিধি-যুগল করত ঝকঝোর !

শ্রমজ্ঞলে-পুরিত ত্ন্ন ভেল এক

যমু রতি মঙ্গল-জ্ব-অভিষেক !

উত্তর বোধ হয় এই যে — মানাদের প্রাণেখর-প্রাণেখরার ইচ্ছারুসারে — কাল. লীলার অধীন হটয়া লীলা সম্পাদন করিয়া থাকেন। লীলা-শক্তি সর্ব্বদাই অঘটন সংঘটনী; বুনাবনে কিছুই মসস্তব নাই!

(৮) স্থির মেঘের মধা হটতে মৃত্র্মুত্ বিতাৎ-বিকাশের সৌন্দর্য্য বড়ই চমৎকার! কিন্তু মেঘের উপরে-আরোহণ করিয়া বিত্যুতের মেঘকে আলিঙ্গন আরোও মহা-মনোহর এবং পরমান্তত-দৃশ্য! আমাদের রস্বতী-নাগরী-মণি আজ সেইরূপ অন্তত শোভা প্রান্দিন করিয়া—নানাবিধ বিনোদ-ছন্দে রসের-বৃধ্যাকে আলিঙ্গন ও আনন্দ দান করিতেছেন!!

বদনে-বদন সন্মিলনের অপূর্ব শোভা দেখিয়া বোধ হইতেছে যেন মন্মথের ফ্রাদ—আজ চই পূর্ণ-শশধরকে একত্তে বাধিয়া রাখিয়াছে!

একট চল্লের কীরণেই সমস্ত জগতের অরুকার-রাশি-বিধ্বংস ব। বিদূরিত হয়, কিন্তু কি আশ্চর্যা--আজ আমাদের স্থকেশিনী রাধার কেশরূপ তিমিরাবীল মুগপৎ তুই পূর্ণচক্রকে ঘেরিয়া বিরাজ—করিতেছে। যেন চির পরাজ্ঞের শোধ লাই তছে, আর আননদ নাচিতেছে। বেরি রহল, কচ-তিমির-বিণার—
বহু, রণ-জীতল—জর পরচার !
রাগীঅধর, উরজ- অতি-চণ্ড—
নাগধরে রদ-নথ-থণ্ডণ-দণ্ড!!

কুচপর বিদপধ-পানি বিরাজে—
কনক-কলসে যথু কিশলর সাজে!!
সব কাননভরি পরিমল তাণ
হরি বল্পত—খলী কুল গুণ গান।

ক্রোধান্ধ জনকে বেঘন রাগী বলা যার তেমনি—যে, রঞ্জিত হর তাঁহাকেও
রাগী বলে। আর, বাহার স্বভাব উগ্রা—কাহারও নিকটেই নত্র হর না তাহাকে
বেমন 'চণ্ড' বলা যার, তেমনি বাহার অঙ্গ—কঠিন; প্রকৃতি—অনবনত; সেও
চণ্ড শব্দের বাচ্য। প্রথমার্থের লক্ষীভূত—রাগী ও চণ্ড প্রণীরা যেমন প্রহারাদি
কোন দণ্ডই গ্রাহ্ম করেনা, তেমনি আজ দ্বিতীরার্থের লক্ষীভূত—আমাদের
কেলী-কলাবতীর তাম্প্র-রঞ্জিত অধর এবং উরত-শির-কঠিন-পরোধর—দশনের
(রদের) এবং নথের আবাতে ক্রক্ষেপও না করিয়া নাগরের মুথে ও বক্ষে
অনবরত আঘাত করিতেছে। আহা। আজ যেন উচ্চিত্রত মদনের-মহা-সমুজে
হেম-নীল ছুইটি মহামণি একত্রে তরক্ষে গুলিতেছে ও ঝক্মক করিতেছে।।

স্থি ! দেখ দেখ, শ্রমজল-প্লৃত-প্রণয়ী-যুগলের অঙ্গ হ্থানি ঠিক্ যেন এক হুইরা:গিরাছে। শ্রম-জলে—রতি জয়ের মঙ্গলাভিবেক হুইতেছে ! আর ধনী-মণির কুচ-কুল্তের উপরে বিদগ্ধ-নাগরের—কর-কিশলয়—যেন উৎসবের শুভ-স্বর্ণ-কলসীতে নবীন-পল্লবের স্থার শোভা বিস্তার করিতেছে।।

সমস্ত কানন ব্যাপিয়া পরিমল-ভ্রাস্ত অলিকুল গুঞ্জন ছলে রাধামাধবের গুণ গান করিতেছে দেখিয়া তাহাদের ধ্বনির সহিত শব্দ-মিশাইয়া—সখী ভাবা-বিষ্ট-গীতকর্ত্তা হরিবল্লভ, অমুচ্চস্বরে অপরা সখী সংখাধনে, এ গীতে যুগল বিলাসের গুণ গান করিয়াছেন।

#### (৯) ঐরোগ।

#### किवा (म (मार्शत तथ !

কিশোরা কিশোরী, পশরা পসারি\*, রভস-রসের কূপ। ধ্রু। বিবর কিরণে, মালন ইন্দু, কৃষ্ণ মুদিত লাজে, চান্দের ভরমে, চকোর মাতল, ইন্দাবর হাসে মাঝে! চান্দের উপরে, এক বিধুবরণ, ইন্দু উপরে শশী! চকোর—উপরে, পিয়ে সুধাকর—খঞ্জন উপরে বসিঞ

শ্রেরাধার ললাটস্থ সিন্দুর-স্থোর চাক্টিকানর-বিশির নিকটে নাগরের চন্দন-ভিলকরপ চন্দ্র নিশ্রভ (মলিন) এবং শ্রেরাধার সদ্-শ্রেকশিত প্রক্রের্ম্দিনীর স্থার স্থশোভন হাস্থ-সৌন্দর্যা প্রছের দেখিছা—নথী কলিছে-ছেন) দেখ রবির কিরণে—চান্দকে মলিন দেখিয়া বৃঝি কুমুদিনী—মুদিত হুইয়া রহিয়াছে!! (আর নাগরের অত্পাকাজ্জ-নয়ন-য়য়, শ্রেরাধার বদন—দর্শনানন্দে মত্র হুইয়া উঠিয়াছে দেখিয়া—কহিতেছেন) আর চক্র-শ্রমে চকোর মাতিয়া উঠিয়াছে দেখিয়া—উভয়ের যধ্যে স্থানে সংস্থিত ইন্দীবর (শ্রীরাধার নয়ন-যুগল) তংপ্রতি চাহিয়া হাসিতেছে!

( তারপর লীল:-তরজে শ্রীরীধার চন্দ্রানন,ক্রফ-মুখ-চন্দ্রের উপরে বিরাজিত দেখিয়া—কহিতেছেন) মরি! মরি! দেখ, এক্ষণে মধুরিমার অবধি হইরা উঠিরাছে—চাঁদের উপর চাঁদে!! আবার শীলারকে তৎব্যতিক্রম দৃষ্টে

<sup>(</sup>৯) এগীতে বিপরীত রতি-রণ-নিরত নাগর-নাগরীর যুগল-রূপের ধর্না। ঘথা, সথার উক্তিঃ—আহা । ছই জনের কি অপূর্ম ভাব-ব্যক্তকরপের বিকাশ হইয়াছে । আজ কিশোর কিশোরী—যে রূপের পসরা বিস্তার করিতেছেন, ইহা—আনন্দরসের কুপ । দেপ—কত ভাবে কঙ ভঙ্গীতে উহা হইতে রুসের উৎস উৎসারিত হইতেছে । ।

পদক্ষতকর পাঠান্তর--- কপ পসারই। † চাল পেখমু। ‡ প্রেমের আবেশে, পিয়ে রস-স্থা, থঞ্জন যুগল পশি।

ষমুনা তরক্তে অরুণ উদয়, তারার পদার তথা, অরুণ চাপিরা, তিমির রহল, কিনা অদ্ভূত কণা!! তড়িত উপরে# অনের শিশর, ঘনের জনম ভায়, কনকণ লভায়, মুকুতা ফলল, কেবা পরতিত যায়।

উৎকুল হইয়া কহিতেছেন—ওমা! দেখ দেখ কত ভাবে চাঁদের উপরে চাঁদের অবস্থান!!! অস্থা তরঙ্গে শ্রীরাধার—নয়নে দৃষ্টিপাত: হুইলে দেখিলেন, শ্রীহরির চঞ্চল-লয়ন-থঞ্জনের উপরিভাগে সংস্থিত থাকিয়া নয়ন হুটি, মেন ভারে হুইয়া তলীয় বদন-চল্রের-ম্বধা পান করিতেছে। দেখিয়া আনন্দবেগে কহিতেছেন—'চকোর চাঁদের নিম্নে অবস্থান করিয়া, উর্জমুধে স্বধা পান কারয়া থাকে' ইহাই জগতের রীতি; কিন্তু দেখ কি অভ্ত—হুইটি প্রমত্তচলোর, হুইটি প্রজনের উপরে বিসয়া, অধ্যামুধে চাঁদের ম্বধাপান করিতেছে!!

( শ্রীক্ষের চঞ্চল ললাটে রাধার সিন্দ্র-হ্ব্য মুদ্রিত হইয়া গিয়াছে দেখিয়া কৈছিতেছেন ) আরোও এক অপূর্ব্ব রঙ্গ দর্শন কর—আকাশ ছাড়িয়া আজ কালিন্দীর চঞ্চল-নীল-সলিলের তরজে অকণের উদন্ন হইয়াছে! (প্রাণেখরীর বিচ্ছন-হারের মুক্তাবলী নাগরের বঞ্চে বিকীণ দেখিয়া কহিতেছেন) অরণের সহিত কথনও তারাগণের উদন্ন সম্ভবে না কিন্তু আজ একত্রে সমত্ত অভ্তের সমাবেশ! দেখ—য়মুনার তরজে তারাগণও প্রদারিত রহিয়াছে!! (তরজাস্তবে—বিনোদিনীর সিন্দ্র-বিন্দ্র উপরে আলুলারিত ক্ষেল নিগতিত হইলে কহিতেছেন) কি অভ্ত! ঐ দেখ—ভিমির অরণ কে চাপিয়া রহিল!

(লীলাবসানে বিহ্যন্নতা-রূপিনী বিলাসিনী-সাম্রাজ্ঞী, জলধরসদৃশ নাগরকে কোলে করিয়া কেলীশ্যায় শান্তি—দেখিয়া কহিতেছেন ) আরোও এক অস্তৃত দেখ—এক্ষণে সৌদামিনীর উপরে স্থামক অবস্থিত এবং তাহাতে মেঘের উদয় হইয়া রহিয়াছে! (শ্রীরাধার হেমলতা—শ্রুথানিতে

<sup>🛊</sup> কনক্ৰতার। † ঘনের—এ হুইটিই পদক্ষতক্র ভূল পাঠান্তর।

রাধামাধবের, ভারতি এসব, কহিতে ভরদা কায়,\*
রদের পাথাবে, নাজানি সাতোরে, ডুবিল শেখর রায়।

#### ( ३० ) कारमाम ।

করতলে ক্ম ক্মে, সোম্থ মাজল অলক তিলক লিখিভার, সজল বিলোচন, ঘন ঘন হেরইতে, ভাকই গদ গদ বোল!

ষর্ম-বিন্দুর উদ্ভব দেখিয়া কহিতেছেন) আর সোনার লতার মুক্তা ফলিত হইরাছে !!

হার! রাধামাধবের এ সকল, আরতির পরিণতি কাহার কাছে কহিব!
কে ইহা বিশ্বাস করিবে? সথি! আর আমি সাঁতার জানিনা রসের প্রাস্তরে
ডুবিলাম! (এ গীতিটি সমস্তই সথীভাবাবেশে গীতকর্তা রারশেধরের উক্তি)

(১০) লীলাবসানে কিন্ধরী-পরিসেবিতা—অপগত-শ্রমা—শ্রীরাধা, দর্পণের বারা স্বকীয় বদনে, কান্ত-ক্রত-দশনাঘাত ও সর্বাঙ্গে সংস্থাগ-চিহ্নাদি দর্শনে আনন্দ-গর্বাস্থভবে—কটাক্ষ বারে ক্রম্ব-মাধুরী আস্বাদন করিতে করিতে মদভরে স্বাধীন-কান্তা হইয়া—কান্তকে কহিলেন—নির্গজ্জ-রাজ! আমাকে স্বাদিগের নিকটে লজ্জিত করিতে বুঝি বাসনা হইরাছে? তাহা হইবে না, অভিসার-সমরে আমার বেমন বেশ ছিল ঠিক্ সেই রূপ করিয়া সম্বর আমাকে সাজাইয়া দেও;—ইতি-বচনে—সকল-কলা-শুক্র-নাগর, প্রাণেশ্বরীর বেশ রচনা করিতেছেন, কোনও স্বধীর মুধে এগীতে তাহারই বর্ণনা। যথা—

দেধ—কলাগুরু-নাগর, কোমল-করতলে কুমকুম লইয়া—প্রিয়তমার বদন-মার্জ্জন করিলেন। আহা! বিন্দুরেথাদিময়-অলকাতিলক লিখিতে

রসবৈভব কহিতে শক্তি কার—ইতি পদকর্তক।

ধনি ধনী রমণী-শিরোমণি-রাই—
লোচন ওত, করত নাহি মাধব, নিশি দিশি রদ অব গাই!
লোচন-ধঞ্জন, অঞ্জনে রঞ্জই, নব-ক্বলয় শ্রুতি মূলে,
অতসী-কৃস্মগোরি, ললিত হৃদয়ে ধরি, কুপণ-হেম-সমতুলে।
যাবক-চিত্র—চরণ পর-লেথই, মদন-পরাজয় পাঁতি,
গোবিন্দ দাস—কহই ভেল কামুকো লিথইতে আরকত-ভাতি

লিখিতে ভোর হইয়া গেলেন! সজল-নয়নে ঘন ঘন বিনোদিনীর বদন বিলোকন করিতেছেন—কণ্ঠস্বর গদগদ হইয়া উঠিয়াছে!

ধন্ত আমাদের রাজনন্দিনী রাধা। মাধব বাহাকে এক মুহুর্ত্তও নয়নের অন্তর (ওত) করিতে পারেন না, দে রমণী শুধু ধন্তা নয়,—দে, রমণীগণের শিরোমণি!! চাহিয়া দেথ—কুঞ্জ-রাজ, রাধার নয়ন-থঞ্জন ছইটিকে অঞ্জনের দ্বারা রঞ্জিত করিয়া দিতেছেন এবং নবীন-নীলোৎপল দ্বারা কর্ণাবতংশ রচনা করিয়া দিতেছেন।

কুপণের নিকটে হেম-পিণ্ড বেমন প্রাণের বস্তু, অতসী-কুস্থম-গোরী প্রীরাধার তমুথানি ব্রজ-নাগরের সেইরূপ সাধের ধন; তাই নানা ছলে উহা ললিত হৃদরে ধরিয়া—কত সাধে, কত আনন্দে—উচ্ছলিত হইতেছেন! দেখ দেখ এক্ষণে—শেষ-সাধ পূর্ণ করিয়া যাবক চিত্র রচনা ছারা, রাধার রাতুল-চরণতল-রঞ্জিত করিতেছেন! দেখিয়া বোধ হইতেছে বেন মদন আপ্রাল্য পর্যাক্র পাত্রকা লিখিতেছে!!

স্থীর ভাবাবেশে গীতকর্ত্তা গোবিন্দাস কহিতেছেন:—আহা ! বাবক-চিত্র লিখিতে লিখিতে কাহুর তহুথানিও, অহুরাগে—যাবকের স্থার আরক্ত-কান্তি হইয়া উঠিল ! (আরক্ত-মারক্ত; ভাতি – কান্তি)।

ধনি ধনা-রমণী ইতি প্রে-পদকরতক্তে এ গীতের **আরম্ভ এবং ভণিভার** শেষাংশ এইরপ "ভাবে হোরণ কামকো আর কত হাত"।

## (३) थार्थना । वताछि ।

রাধারক ! নিবেদন এই জন করে—
ছত্ অভি-রসময়, সকরুণ কদয়, অবধান কর নাথ মোরে,
তে ক্বফ ! গোকুলচন্দ্র, গোপীজন-বল্লভ, তে ক্বফ-প্রেয়সীশিরোমণি i

'ছেন-পোরী, শ্যাম-গাত্ত্র' শুবণে পরশ্যাত্ত গুণ শুনি জুড়ায় পরাণি,

(১১) প্রেমনীলা-বিহারী-রসময়-রসময়ী-রাধামাধবের চরণকমল—য়িও কেশ শেবাদি দেবাধিদেব দিগেরও চরধিগমা, কিন্তু এমন স্কুর্লভ-ধনও শ্রীরাধার সথী মঞ্জরীগণের অমুগা-প্রেমদেবার প্রগাঢ়-লালসা দ্বরা মানবে লাভ করিতে পারে। শ্রদ্ধা বিশ্বাসের সহিত শ্রীশ্রীরাধাগোবিন্দের—নাম, গুণ ও লীলাদি—শ্রবণ-কীর্ত্তন ও অমুধ্যান দারা লালসার উদয় হয়। প্রকৃত লালসার প্রকৃতি, প্রায় কুধার ত্লা। 'না থাইলে' ঘেমন অক্ত কোন উপারেই কুধার নির্ত্তি হয় না, তেমনি, 'না পাইলে' কিছুতেই প্রকৃত লালসার শাস্তি হয় না। স্থলীর্ঘ-কাল-ব্যাপী যে কুধার—আহার্যা ব্যতিত—অক্ত সমস্ত স্থান্যাধক বস্তরও বান্ধিত-বাবহারের প্রতি বিত্ফা উৎপাদন করে; স্ত্রী প্রাদির সহিত সপ্রেম ব্যবহার পর্যন্ত যাহাতে বিরক্তি কর হইয়া উঠে; ঐ রূপ কুধার নাম প্রগাঢ় কুধা। ভক্তের প্রাণে যথন যুগল-সেবার লালসা ঠিক এই প্রকার প্রবল হয় তথনই ভাহাকে বলাযায় "প্রগাঢ় লালসা"। এই গীতিটি প্রগাঢ় লালসার জীবস্ত-চিত্র।

দিদ্ধদেহাভিমানে—দেবাপ্রাণা-স্থীর ভাবাবশে—যুগণ-বিলাস রসাম্বাদন করিতে করিতে—এই গীত-রচয়িতা মহাস্ভব-নরোত্তম দাস ঠাকুর মহাশয়ের, হঠাৎ বাহু স্মৃত্তি হওয়ার—সাধকোচিত-প্রগাঢ় লোল্যে অনুপ্রাণিত হইয়া তিনি সদৈক্তে শ্রীয়াধা-মাধবের ক্লপা প্রার্থনা করিতেছেন। যথাঃ— 'অধ্য তুর্গত জনে,কেবল করুণামনে,ত্রিভ্বনে এ যশ ধেয়াতি— শুনিয়া সাধ্র মুখে, শরণ লইকু হুখে, উপেধিলে মোর নাহি গতি,

का व क्रिक क्रम वार्ष ! का व्रक्ष क्रमं वार्ष ! का व्रक्ष ! का वार्ष ! वार्ष !

ভাঞ্জলি মন্তকে করি নরোত্তম ভূমে পড়ি ক**হে পছ্ পুর—**শোর সাথে।

হে রাধাক্ক ! আমার একটি নিবেদন শুন। যদিও আমি এরপ প্রার্থনা করিবার যোগ্য নহি এবং আমার প্রাণ, মন, প্রকৃতি, প্রবৃত্তি, কিছুই তত্প-বোগী নহে, তথাপি এরপ প্রার্থনা করার কারণ এই বে—প্রথমত:—তোমরা এখন অভিলসিত-লীলা-রসের পূর্ণাস্থাদে 'অতি রসময়'; এবং সফল-মনোরপ আনল-বিনোদিত-দাতার ক্রায়, করুণার্ড হৃদয়; অতএব বর্ত্তনান সময়টি।সাধন-বিহুীন-জনের নিবেদন-বিজ্ঞাপনের বড় স্থসময়। পক্ষাস্তরেও—দেখ, কেবল তোমরা হৃদ্তনেই আমার "নাথ" অর্থাৎ সর্ক্রময় কর্ত্তা ও কর্ত্ত্রী, অতএব একটি বার আমার হুংথের ও আকাজ্জার প্রতি অবধান কর। হে কৃষ্ণ! (তুমি সর্ক্রাক্রম) হে গোকুল চন্দ্র! (তুমি সর্ক্রাক্রম) হে গোকুল চন্দ্র! (তুমি সর্ক্রান্তন্তর ও তাহাদের চরণাশ্রিত জনসকলের প্রিরতম) আর হে কৃষ্ণ-কান্তা-লিরোমণি! (তুমি সর্ক্তিণে অতুলনীয়া) নামেই বলিয়া দিতেছে তোমরা হৃজনে প্রেম-কর্মণার অক্ষর-ভাণ্ডার—অগাদ সমুদ্র। তাই আমার বিশ্বাস ও ভরসা যে করুণা বিতরণে কথনও তোমরা যোগ্যাযোগ্যের বিচার করিবে না!

হে কাঞ্চন-গোরাঙ্গিণী রাধে! হে শ্রামস্থলর রুঞ্। তোমাদের এক একটি গুণের কথা শুনিতেই প্রাণ জুড়াইরা যার! আমি ছর্দ্দশার-কূপে সদা-নিমগ্ন থাকিলেও—সাধু ভক্তের মুথে শুনিয়াছি বে "অধম ছুর্গতের প্রতি ভোমাদের অবিচারিত করুণা" (কেবণ করুণা) তোমাদের এ বলে—এ

#### ( > २ ) शृतवी ।

দোহ মুখ স্থলর কি দিব উপনা ! কুবলর-চাল মিলন একু ঠামা ! শ্রামর-নাগর, নাগরী গোরী— নীলমণি কাঞ্চনে লাগল জোরি!

স্থ্যাতিতে ত্রিভূবন পূর্ণ। এই স্থান্যাদে আমি বড়ই আশাহিত হইরা তোমা-দের শরণ লইরাছি। উপোকা করিলে আমার আর কোনও উপার নাই।

তে রাধে! হে ক্ষণ! ভূয়ো ভূয়ো তোমাদের জয়—বোষণাও উচ্চারণ করিতে বড় আনন্দ বোধ হইতেছে। তোমরা জয়য়ুক্ত হইয়া নিরস্তর বিলাদ নিরত থাক—এবং মস্তকে জঞ্জলীবন্ধন পূর্ব্ধক ভূমিতে প্রণত হইয়া কর যোড়ে প্রার্থনা করিতেছি এ শরণাগত নিরাশ্রম্ম জনের প্রতি ক্যপা বিতরণ কর। দাসীর জমুদাসী করিয়। আমার "সাধ" পূর্ণ কর।

(১২) এ গ্রন্থের মহামূভব-সংগ্রহকর্ত্তা পূর্ব্বোক্ত গীতকর্ত্তার সহিত্ত সাধকভাবে আবিষ্ট হওরার পরে, পুনরায় তাঁহার দিদ্ধভাবের অত্যাবেশ জাগিয়া উঠিয়াছে—তিনি দেখিতেছেন—

প্রভাত সমাগত প্রায়, কলক-ভর-শকাক্লিত—রসমর-রসময়ী কেলী-ভরে উপবিষ্ট। ত্রুনেই বিচ্ছেদ-বজুা বাতের ভরে ও আদরে-অফুরাগে এবং অনস্ত প্রেম-পিপাসার আকুল। প্রাগাঢ় রূপে একে অপরের গলা জড়াইরা, অকে অক দিরা, বিচিত্র লীলার বিলসিত। কোনও স্থী অপরাকে কহিতে-ছেন—

আহা ! উভরের এীবদন-যুগলে আজ যে অনস্তাভূত---সৌন্দর্য্য-মাধুরী পরিব্যক্ত হইতেছে ইহার উপমা নাই ! চক্রের এবং কুবলম্বের সন্মিলন-সৌন্দর্য্য কেহ কথন ও দেখে নাই আজ তাহা আমাদের সন্মুখে সংঘটিত !

আহা ! আমাদের শ্রাম-স্থনাগর এবং গোরী স্থনাগরী আজ কাঞ্চন জড়িত নীল-মণির-মহাভ্ষণের স্থায় বিরাজ করিতেছেন !! দেখ দেখ—প্রীতি-রসার্দ্র-নিবিঢ়ালিকনে আমাদের কেলী-বিলাসিনী-রাধা, কাস্তকে জড়াইয়া রহিয়া- নিবিঢ় আলিঙ্গনে পীরিতি রসাল— কনক-লতা বৈছে—বেঢ়ল তমাল! রাই-পরোধরে প্রিয়কর সাজ— কুবলয়ে শস্তু পূজল কামরাজ ? রায় শেখর কছে—নয়ন-উল্লাস নব-ঘন থির-বিজুরী পরকাশ !!

ইতি শ্রীগীতচিম্ভামণো পূর্ব্ববিভাগে প্রগল্ভা বর্ণনে সপ্তদশী ক্ষণদা।

ছেন, বোধ হইতেছে যেন স্বর্ণাতা তমালকে বেষ্টন করিয়াছে! এখন কোন্ বজ্রবুকী এ বন্ধন বিচ্ছিন্ন করিবে ?

আবোও দেখ-নাধার পয়োধরে-প্রিয়তমের পাণি কেমন স্থলর শোভা পাইতেছে, যেন কল্প-রাজ কুবলয়ের ছারা অর্থময়-শভ্র পূজা করিয়াছেন!! হায়! হায়! কোন্ পাষাণী এ শোভা ভাঙ্গিবে? এ-পূজার-ক্ল সরাইতে কার প্রাণে সহিবে?

পদকর্ত্তা রারশেশর—সধী-ভাবাবেশে কহিতেছেন, এ বিচিত্র-বিলাস ও অবস্থান-মাধুরা দেখিয়া বড়ই ধাঁধায় পড়িয়াছি। সকলেই জানেন মেছের কাস্তি নয়ন-স্নির কর বটে কিন্তু আধির উল্লাস-জনক নহে, আর বিহাতের প্রভা চিরদিনই চঞ্চলা ও নয়্বের ধাঁধাঁ বর্দ্ধক, কিন্তু কি আশ্চর্য্য আমাদের সম্মুধে আজ নয়নোলাসক অভিনব নেঘ ও ত্রি-বিজুরী ভূতলে অভ্যুদিত!!

# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### ज्ञथ ज्ञासी नि कन्ता।

( > ) প্রীগোরচন্দ্রস্থ—দিষ্কুড়া।

গোরাঙ্গকরুণা-সিন্ধু অবতার, নিজগুণে গাঁথিয়া, নাম-চিস্তামণি, জগতেপরাওল হার ! কলি-তিমিরাকুল, অথিল লোক দেখি, বদন-চাঁদ পরকাশ, লোচন-প্রেম—হুধারস-বরিষণে, জগজন তাপ বিনাশ।

<sup>(</sup>১) গুণে, মহিমার, এবং বাঞ্ছিত-দানাদি-কার্য্য-কারিতার, ক্ষীর-সমুদ্র চিরদিন জগতে প্রধান ছিল কিন্তু আমার প্রীগোর-মহাপ্রভু, করণার সমুদ্ররপে অবতীর্ণ হওয়ায়, তাহার সমুদর অসাধারণত্ব দ্র হইয়া গিয়াছে ! ক্ষীরাজি হইতে রত্নাদি লাভ, বহু শক্তি-সম্পন্ন জনেরও ৰহ্বায়াস সাধা, কিন্তু আমার করুণা-সিন্ধ্-গোরহরি—নিজগুণ-রূপ হত্তের সহিত পরম-ধন-নাম-চিস্তামণির মালা দৃঢ় করিয়া গাঁথিয়া (হরিনাম মহামন্ত্রই নাম চিস্তামণির মালা ।) নিজেই হাররূপে জগতের-হৃদয়ে পরাইয়া দিতেছেন !! আর তোমার—ক্ষীর-সমদ্র-সমৃদ্রত শশধরের কীরণে—গৃহমধ্য বা গহ্বয়াদির অভ্যন্তর-ভাগ প্রকাশিত হয় না— আবার দে আলোক থাকে কেবল শুরু পক্ষের নিশিতে; তাহাতেও আবার সকল-নিশির সমন্ত-সময় ব্যাপিয়া থাকে না—কিন্তু দয়ানিধি গৌর-ভগবান্ যথন দেখিলেন অথিল লোক, কলিতিমিরাচ্ছয় ৷ আর থাকিতে পারিলেন না ! অমনি অপরূপ-নবীন-চক্ররপে স্বকীয় বদন-স্থাকরের উদয় হারা—রাত্রি দিবা নির্কিশেষে করুণা-কৌমুদী বিভরণ ক্রিতেছেন ও জীবের হৃদয়াভ্যন্তরস্থ পাপ তমে পর্যান্ত চিরস্থায়ী রূপে বিনষ্ট করিতেছেন !! কলি-তিমির,পলায়নের প্রথ পাইতেছেন। তাহার পর দেখ—ক্ষীর-নিধি-সমুভূত স্থধায়, শুধু দেবগণ

ভকত-কলপতর — মন্তরে অন্তর বেপিল ঠামহিঠাম, যছু পদতল, অবলম্বন-পদ্থিক, পূরল নিজ নিজ কাম; ভাব-গজেন্দ্র চঢ়াওয়ে অকিঞ্চনে, ঐছন পঁত্কো বিলাদ, সংসার—কাল—কূট-বিদে দগধল, একলি গোবিন্দ দাদ!

অমর হইরাছিলেন কিন্তু করুণাসাগর শ্রীশচীনন্দন—নর্মাশ্রু রূপে, প্রেমস্থধা নিরস্তর-বর্ষণ দ্বারা— নিথিল জগজনের সর্ব্বপ্রকার তাপ বিনষ্ট এবং জীবের নবজীবন দান করিতেছেন। i

আর ক্ষীর-নিধিজাত "কল্প হরু'' কেবল্মাত্র একটি। তাহাও লোকের কোনও কাজে লাগিভেছেনা, কেবল অমরাবতীতে রহিয়াছে কিন্তু আমার দয়াল গৌরহরি, স্বীয় ভক্ত রূপ অসংখ্য কল্পত্র, দূর দ্রান্তরে স্থানে স্থানে রোপণ করিতেছেন। (অন্তরে—ব্যবধানে। অন্তর্ক—অন্তর করিয়া, সরাইয়া) তাহাতে সংসার-পথের-পথিক জীবগণ তাহাদের পদতলে (নীচে) আশ্রম গ্রহণ করিয়া জুড়াইতেছে এবং বাঞ্ছিত ফল লাভ করিতেছে। ক্ষীর-নিধির দান একটিমাত্র ঐরাবত—এবং পাইয়াছেন কেবলমাত্র দেবরাজ। এদিকে আমার ক্পা-মহোদিনি-গৌরস্কর, অকিঞ্চন অর্থাৎ বাহার কিছুই নাই এমন নিঃগম্বল জীবকে পর্যান্ত—ভাব রূপ-গজেন্দ্রের উপরে চড়াইয়া প্রেমাননদের রাজ্যে বিচরণ করাইতেছেন। বিক্ত-মতাদি—ভক্তি-পথের কণ্টকে আর তাহাদের পদ স্পর্শন্ত করিতে পারিতেছে না।

গীতকর্ত্তা গোবিক্কবিরাজ সাধকোচিত দৈন্ত প্রকাশে কহিতেছেন, আমার প্রভ্র করণা-বিলাদ এইরূপ মহাভৃত! তথাপি হতভাগ্য আমি, পাইয়াছি গ্রল! অর্থাৎ নিজ দোষে সংসার কালকুটে দগ্ধ হইতেছি!!

পদকর তকতে "কলিতিমিরাকুল অথিণ" ইতি পদে এ গীতের আরম্ভ।

#### (२) छीनिङ्यानसम्बद्धः — छीताशः।

নিতাই, করুণাসয়—অব তার,
দেখিয়া দীনহীন, করয়ে প্রেমদান, আগম নিগসের সার।
সহজে চলচল, সজল-নিরমল—কমল, জিনিয়া আঁথি-শোভা।
বদন—মণ্ডল, কোটি-শশধর জিনিয়া জগ-মন-লোভা।

(২) প্রীগৌর-ভগবান যেমন করুণার সাগর; তৎ প্রকাশ-মৃত্তি প্রীনিত্যানদদ চন্দ্রও তেমনি করুণাময় অবতার। প্রীনিতাইয়ের "ভাইয়া" গৌরস্থনরের প্রতি দে, ভাবময় প্রীতি—তাহাও প্রত্যক্ষরণে জীবের প্রেম-ভাব সংবর্ধক, স্থতরাং শ্রীনিতাইচাঁদ সর্কাপ্রকারে কেবল করুণার মৃত্তি। দেও জগতের জীবগণকে দীনহীন অর্থাৎ ভক্তিসম্বল—প্রেমসম্পদ এবং প্রকৃত-ধর্ম্মাচার বিবর্জত দেখিয়া, বেদ-ভন্তাদির-সারধন-ব্রজভাবার্থ্য-প্রেম,িনি যাচিয়া বিতরণ করিতেছেন!

নবনীত, দধি-ছথের পরমসার-বস্ত ; কিন্ত দবি-হথের 'সর' মহানদ্বারা উহা—
নিক্ষাশিত করিতে হয়। তেমনি শ্রীভগবানের—র্মানর স্বানপটি বেদাগমের
তত্ত্বরূপ-দধি-ছথের 'সর' এবং এই স্বরূপের আন্ম্যানরপ সরের-মন্থনেই বজ্বপ্রেমরূপ নবনীত বাহির হয়। অতএব ব্রান্তগ-প্রেমই আগম নিগমের সারবস্ত
তাহাতে কোনও সন্দেহ নাই, পূণ্তম-ভগবান্— ই ব্রেক্তেনন্দন ও শ্রীশচীনন্দন
উভন্ন মৃর্ত্তিতেই সম্পূর্ণরূপে এই প্রেমের অধীন। দেখ—আমার নিতাই
চাঁদের কর্মণায় এ হেন পর্ম হুর্লভ প্রেম-ধন সমস্ত জগতের লোকে, অসাধনে
অনায়াসে প্রাপ্ত ইইতেছে। !

"ষাহা বেদাগমের সার সম্পদ; তাহার কথা সাধারণের জানা কথনও সম্ভব নহে, তবে – কলিভিমিরাকুল, বহিন্দুখ জীবগণ—কি প্রলোভনে কি আকর্ষণে—সাংসারিক স্থতঃথ—ইন্দ্রিয়-চেষ্টা ও বাসনা ব্যদনাদি ভূণিয়া নিহাইয়ের নিকট ছুটিতেছে ? এই প্রশ্নের উত্তরে কহিতেছেন—

নব-বিক্ষিত-ক্মলের স্জল-নির্মাল-চল্চল শোভায়, কে না মোহিত ও

অঙ্গ হৃচিকণ, মদন-মোহন, কণ্ঠে শোভে, মণিহার!
বচন-রচন—শ্রাণে দূরে গেল পাতকী-মন— আদ্ধিয়ার!!
নবীন-করী-কর, জিনিয়া ভূজ-বর, তাহে শোভে হেমদণ্ড!
হেরিয়া স্বলোক, পাসরে ত্রংথ শোক, থণ্ডয়ে হুদ্য পাষ্ণ্ড!!

আক্ষিত হর ? দেখ আমার নিভাই-স্থলরের ময়ন-মাধুরী সে শোভা হইতে আরও ক্ত স্থলর !

পূর্ণ-চল্লের, হান্দরোলাদী-মাধুরী হেরিয়া বাণকবৃদ্ধ কেনা মোহিত হয় ?
আমার নিতাই-চাঁদের মনোহর বদন—কোটি কোটি পূর্ণ-শশধর হইতেও
স্থানর এবং সমস্ত জগতের লোভনীয়!! আর তাঁহার প্রীঅঙ্গকান্তি এমনি
আলোকিক-চাক্চিকামর যে তাহা দেখিলে ত্রিজগৎ-মুগ্ধকানী—সৌন্দর্য্য-দেবতা
স্বয়ং মদনেরও মোহ জন্মে!! গৌন্দর্য্য-গৌরবী-মদন—তাহাতে অবগুই
ক্ষোভে ছঃথে অভিমানে ময় হন,—তথাপি নয়ন ফিরাইয়া নিতে পারেন না!
এমন রূপে মানবের নয়ন মন ভূলিবে—তাহারা লাথে আরুই হইবে
তাহাতে আর কথাকি ?

দেখ— তাহার উপরেও আবার—রূপের-প্রতিমা-নিতাই-চাঁদের কলু-কণ্ঠে মহামূল্য-মণির-হার, স্থশোভিত। সে হারের উপরে—শ্রীঅঙ্গের মধুরোজ্বল-স্লিগ্রছটা-প্রতি ফলিত হইরা—অপূর্ব-জ্যোভিতে চারিদিক্ প্রোদ্ধানিত করিয়া তুলিয়াছে! অতএব তাহা দেখিয়াই কত নরনারী—চমৎকৃত হইয়া কাছে আদিতেছে; আদিয়া, আমার নিতাইচাঁদের মধুর-বচনামৃত পানে সকলেই নবজীবন লাভ করিতেছে, পাতকীগণের পাপ-তমো ও সকল মালিস্ত দূর হইয়া যাইতেছে।

আরোও এক আশ্চর্য্য কাণ্ড দেখ—আমার নিতাই স্থাসী-মণি, নিতাই স্থানরের করী-শাবকের শুণ্ড বিনিন্দিত স্থঠাম-স্থগোল ভূজদণ্ডে একটি হেমদণ্ড-(স্থণকান্তি বা স্থণ মণ্ডিত দণ্ড) স্থশোভিত ! ! নবীন-বয়সে সন্ন্যাসাশ্রম গ্রহণেরচিক্ত এই হেম-দণ্ডটি দেখিয়াও বছ লোকের প্রাণ ছঃখে দ্রবীভূত হইরা উঠিভেছে,—লোকে আপনাদের স্থা ছংখ ভূলিগা যাইতেছে ! তাহাদের ক্রময়স্থ

নিতাইর করুণায় অবনী ভাসল, পূরল জগমন-আশ!
ও প্রেম লবলেশ—পরশ না পাইয়া কান্দয়ে হরিরাম দাস।

## ( ০ )নায়কপ্রাহ—ভূপালী

ষমুনা বাইতে পথে, রসবতী রাই, দেখিয়া বিদরে হিলা সন্থিত না পাই! কিবা খেনে আইমু সখি! কি দেখিমু তারে. সে রূপ লাবণি, বনি নম্বন উপরে। গ্রু। মেলিয়া দীঘল কেশ, ফেলিয়া নিত্তে চলে বা না চলে ধনী রস-অবলম্বে।

তহি মুথ মনো হর ঝল মল করে,
কাম-চামর করে পূর্ব-শশ ধরে ?
তথি বিরাজই শ্রম-ঘর্ম বিন্দু বিন্দু,
মুকতা-ভূষিত যতু পূণমীকো ইন্ !
ফুয়ল-নীলিম-বাদ রহে আধ-উরে—
আধ-গিরি-মাঝে যতু নবজলধরে !

পাষণ্ড-ভাব সমূহ আপনি খণ্ডিত হইয়া যাইতেছে এবং প্রীনিতাইয়ের করুণায় সকলেই প্রেমানন্দের পাথারে—স্থেথ সাঁতার দিতেছে। জীবের যাহা সকল আকাজ্ঞার সার—এইরূপে সমস্ত জগতের লোকে তাহাপাইয়া পূর্ণ-মনোর্থ হুইতেছে! জ্বগতের মধ্যে কেবল মাত্র আমি (গীতরচয়িতা হরিরাম আচার্য্য) ছুর্ভাগ্যের-গর্প্তে ও সংসারাবর্ত্তে পড়িয়া কাঁদিতেছি। হায়! এমন অবভারে প্রেমক্রুণার একটু লব-লেশও আমি পাইলাম না!!

(৩) শ্রীরাধার রূপের—নব নব-বিকাশ-দর্শন-বিমোহিত—শ্রীক্তঞ্জের বৈবশু ও অনবস্থিতভা দেখিয়া, কোনও সখী, কারণ জিজ্ঞাসা করায় কৃষ্ণ ক্ছিতেছেন। যথা:—

আৰু ষমুনায় যাইতে রসবতী-রাধাকে পণে দেখিয়াছিলাম, দেখিয়া অবধি তাহার আলিঙ্গন-লালসায় বৃক ফাটিয়া যাইতেছে। কিছুতেই শাস্তি পাইতেছি না, সখি! আৰু কি ক্ষণে বাহির হইয়াছিলাম জানি না! ভাহাকে যে কি ক্ষপ—নবীন-লাবণা মণ্ডিত দেখিয়াছি—তাহা বলিবার কথা নহে! সে রূপ-

উর-আধ-পর লোলে মুকুতার হার— । মঝু মন রহ তহি—করত নিনান, স্থানেক শিথরে যন্ত্রনদী ধার। । গোবিন্দ দাস কছে ইছ পরমাণ।

## ( ৪ ) দূতীপ্রাছ,—ধানিদ।

কাঞ্চন- গোরী—ভোরি, বৃন্দাবনে—বিহুরই# সহচরী মেলি— ভুয়াদিঠি-মিঠ—গরলে, তমুভরল—তৈখনে শ্রামরী ভেলি !

লাবণ্য আমার নয়নের উপরে লাগিয়া রহিয়াছে, জগৎময় কেবল সেই—ক্লপ-রাশি দর্শন করিতেছি !!

সে ধনী, আপনার অবেণী-সম্বন্ধ-বিস্তারিত-দীর্ঘ-কেশ-রাশি—নিতম্বে ফেলিরা রসভরে চলিতেছিল—কি দাঁডাইয়া রহিয়াছিল—তাহাই বুঝা যায় নাই। কেবল দেখিলাম তাহার ঘন-রুক্ষ—লোলিত-কেশ-কলাপের উপরে—মুখ থানি ঝল মল করিতেছে। আমার মনে হইতেছিল একি, কন্দর্পের-চামর ধারী—চক্র উদিত হইল চক্রাননীর, সে মোহন-মুখমগুলে শ্রম-জনিত-দর্ম্ম বিন্দু সমূহ দেখিয়া বোধ হইল—যেন পূর্ণচক্র, মুক্তার ভূষণ পরিয়াছে!! আরোও দেখিলাম বক্ষের অর্কভাগের উপর নীলবদন থানি যেন স্বর্ণ পর্বতে নব-মেন্বের স্থায় শোভা বিস্তার করিতেছে এবং অপরার্দ্ধে—মুক্তাহার দোলিতেছে! মনে হইল যেন স্থ্যেকর স্বর্ণ-শিথরে স্থরনদীর ধারা বিরাজিত! হায়। আমার মনটি সেধানে রহিয়া গিয়াছে ও সেই স্থরনদীর লাবণ্যামুতে অবগাহন করিতেছে!! ভানিয়া—সথীভাবাবেশে গীত-কর্ত্তা গোবিন্দাস কহিতেছেন, তোমার অবস্থা দৃষ্টেই কথা গুলির সত্যতা উপলব্ধি হইতেছে!

(৪) এই সময়ে কোনও দৃতী জীরাধার নিকট হইতে আসিয়া কহিছেন মাধব! ভূমি, সথী-রাধার একি দশা ঘটাইলে? হেম-গৌরাঙ্গিনী বৃন্দাবন

পদ সমৃত ও পদ কল্পতকর পাঠান্তর—∗ ধেলই।

মাধব! সো-অবিচল-কুল-রামা—
মরমহি গোই—রোই, দিন যামনী, গুণি গুণি গুলা গুণ গালা!
গুরুজন অবোধ, মুগধ-সতি পরিজন, অলথিত-বিরহ ণ বিয়াধি
কি করব, ধনি মণি-মন্ত্র-মহোমধি? লোচনে লাগল সমাধি!
খনে খনে অঙ্গ ভঙ্গী, তকু মোড়ই, কহত ভরম-ময়-বাণী
'শ্যামর' নামে—চমকি তকু ঝাপই, গোবিন্দ দাস কিয়েজানি!

শোভার ভোর হইরা সহচরীগণের সহিত বিচরণ করিতেছিল, এহেন সমরে তোমার দৃষ্টিরূপ মিষ্ট-বিষে তাহার ততুথানি একেবারে জর্জারিত হইরা উঠিরাচে, গোরী—শুমারি হইরা গিরাছে! আহা! সে অবিচলিত-কুলের রমণী কি করিবে? মনের কথা মরমে গোগন করিরা দিবারাত্রী কেবল ভোমার গুণ-গ্রাম গণনা করিতেছে আর কাঁদিতেছে!!

অবোধ-গুরুজনেরা এবং স্নেহান্ধ-সান-মুগ্ধ-পরিজনবর্গ এ সকল অবস্থা রোগ-জনিত কিয়া সর্পাঘাত সমুৎপন্ন-মনে করিয়া কত পঞ্চাতিধন্ত মণি মন্ত্র মংহাবিধি প্রয়োগ করিতেছে,কিন্তু তাহাতে অলক্ষিত-বিরহ-ব্যাধির কি করিবে? দেখিয়া আদিলাম—ধনী-মণির চক্ষে সমাধি লাগিয়া গিয়াছে!! ক্ষণে ক্ষণে অঙ্গ মোট্টন ও অঙ্গভঙ্গী করিতেছে! প্রলাপ (ভ্রমমন্নকণা) বলিতেছে কিন্তু ইহার মধ্যেও একটি আশ্চর্য্য ব্যাপার দেখিলাম—তোমার 'শ্রাম' নামটি কেহ তাহার কানে বলিলে কিয়া প্রসঙ্গাধিন উচ্চারণ করিলেই চমকিত হইয়া অনাবৃত-অঙ্গ আচ্ছাদন করিতেছে। দৃতী ভাবাবিষ্ট গীতকর্ত্তা কহিতে-ছেন, জানিনা এই রূপ অঙ্গাচ্ছাদন-পরতার তাৎপর্যা কি ?

<sup>া</sup> পদ সমূদ্র ও পদ কল্পতক্ষর পাঠান্তর--- বিষম।

## ( ८ ) ऋष्डे— (मनाग।

সহজে লুনিকো-পৃতলী-গোরী, জারল, বিরহ-অনল তোরি। বরণ কাঞ্চন এদশ বান, শামরী, স্মউরি-ভোহারি নাম। অধর স্থরক কার্মলী ফুল— পাণ্ডুর ভৈগেল ধুতুর তুল। ফুরল কবরী উরহি লোল, স্থানেক উপরে চামর ডোল!! শুনহ মাধ্ব কি কহোঁ তোর।
সমতি না † দিন যামিনী রোর,
গলার এ গজ-মোতিম হার—
বসন, বহিতে শুকরা ভার!!
অঙ্গুল-অঙ্গুরী—বলরাভেল!
জ্ঞান দাস! হুঃথ মদন দেল!

(৫) "গুরুজন-সঙ্গিত স্থানে কি উপায়ে যাই ?" ইত্যাদি-চিস্তাক্ল ক্ষককে নীরব দেখিয়া দৃতী আরোও বলিতেছেন—মাধব! তোমার বিরহানলে নবনীত-প্রতিমা দে গৌরীকে কিরপ দক্ষ করিতেছে আমি তাহা ব্যাইতে পারিতেছি না! 'আমি কহিলাম—এখনি, ক্ষেত্র নিকট ঘাইতেছি, দে 'গাও' কগাটি উচ্চারণ করিতে পারিল না! এমন প্রার্থনীয় বিষয়ে— সম্পতি দিবার শক্তি পর্যান্ত তাহার লোপ হইয়া গিয়াছে! দিবারাত্রী কেবল কাঁদিতেছে! তোমায় দর্শনের জন্ত লালসিতা—অপ্রাপ্তিতে উদিগ্রা—বিরহানলে জীণা—দে স্বর্ণ-প্রতিমার কানে. কোনও স্থী তোমায় নামটি গুনাইলে—এ নাম শরণ করিতে করিতে—প্রৌত্বেগে (স্মউরি—ম্বরিয়।) তাহার দশগুণ-সমৃত্রণ-স্থান্ত সদৃশ অক্ষকান্তি মলিন হইয়া—দে শ্রামলী হইয়া উঠিয়াছে! বাঁধুল-ফুলেব ন্তায় তাহার স্বল্লাকণ-সধর্ণানি, ধৃস্তর-পূত্রেব পাভুবর্ণ (সাদা) হইয়া গিয়াছে! কারী—ইলুক্ত হইয়া স্থাচল স্থ্যেক্রর উপরে চামরীর পুচ্ছের ল্লার—তাহার বংক্ষাপরি বিলোধিত হইতেছে।

পদাস্ত সমৃদ্ধ পদকলত সংক্ত প্রথম ছই ছবের পথেই—বরণ কাঞ্চন ইত্যাদি ভূইছুর এবং নিম্নলিখিত পাঠান্তর বর্তমান — শাক্ষণ অধর। বিস্তৃতি নাদেয়। কুইছে।

#### ( ७ ) कारमान ।

শুনি বর নাগর, সব শুণে আগোর, স্তক্-বিষম-শর জালা, মুপ-বিধু ঝামর, তপত-শাস ঝর—ধুগর ভেল বন-মালা।

#### অমুপম-প্রেস্কো-দামা---

গিরিধর বান্ধল, মাহে মহাবল, আনল, যাহা কুল-রামা। কোহা, পত্ পেথল, কুল্লম-ভলপ-ভল, স্কুল অভিক্ষীণ দেহা, জল ধরে বিছুরল, পড়ুধরণী-কল—যতুদামিনী-ক্রচি-রে ।।

গণদেশে যে গজ-মুক্তার এক গাছি হার রহিয়াছে ভাহার এবং পরিহিত বদনের-ভার বংনও তাহার কষ্টকর হইয়া উঠিয়াছে। আলুণে যে অঙ্গুরীর গুলি ছিল তাহা বলয়ের স্থায় ভারী এবং বৃহৎ বোধ করিতেছে: হায়় ! কেবল তোমার অদর্শনে মদন তাহাকে এই রূপ দারুণ ছঃখ দিতেছে।

<sup>(</sup>৬) ৪নং গীতে প্রীরাধার—লালসা, চিন্তা, প্রালাপ, ব্যাধি ও মোহ, এবং ৫নং গীতে উন্বেগ জাগরণ—(দিবানিশি রোদন) ক্রবতা ও মলিনাঙ্গতা এই সকল বিরহ-দশা বর্ণিত হইয়াছে। সহাত্মভূত্তি-ব্যথিতা—আকুলিতা দ্তীর মুথে, এই রূপে অর্থাৎ পৌর্কাণোর্য্য—বিপর্গিতে ভাবে—স্কৃত্যু-প্রিয়-তনার নবনা দশা পর্যান্ত —বিষম শর-ষন্ত্রনার-কথা শুনিয়া সর্বান্ত্রত—(আগোর—আনৃত, বা অগ্রগত্ত) নাগর-বরের বদন-শশর পাণ্ডুবর্ণহইয়া গেল স্কৃতপ্ত-খাস বহিতে লাগিল। নিখাস-বায়ুতে বক্ষন্ত বনমালার বর্ণ — ধুসর (ভ্রম্মের আর পাশুটে) ইয়া গেল !! অন্তপম প্রেম-রজ্ তথনই মহাবল-গিরিধারীকে—বাগিয়া, কুল রমণী-মণি—রাধার নিকটে লইয়া আসিল!! অতিক্ষণাঙ্গিনী-রাধা, কুস্থ-শ্রোগবি শুইয়া আচেন। রাধানাথ দেখিলেন—বেন জলধর-বিচ্যুতা (বিশ্বতা) সোদামিনীর একটি কান্তি-রেথা (ক্রাচ—ক্যান্ত, রেহা—রেথা, বিছ্রল—বিশ্বত) নিম্পন্ত হইয়া ধরণী-তলে পড়িয়া রহিয়াছে!! শ্লী-মুথার তৈত্ত সম্পাদনার্থ সহচরীয়া শত শন্ত প্রকারে যত্ন চেষ্টা করিতেছে কিন্তু

সহচরী কত কত, করত ষতন শত, শশীমুখা-চেতন লাগি,
যব পিয়-পরিমল, অন্তরে পৈঠল, উঠি বৈঠলি তব জাগি ।
যব ধনী ভূক ভরি, কদয়ে ধরল হরি, মুখে মুখ রহল লাগাই,
ত্রহু তকু প্রফুল্লিত, আনন্দ অতুলিত, পুন মুরছিত ভেল রাই!
বর-হকু-আনন—পরশি, শ্যাম-ঘন—মণ অধ্রায়ত বর্ষে—
কহে হরিবল্লভ, দোহুকো নয়ন জলে, পুলক-শস্ত ভেল হর্ষেঃ

ইতি এী গীত চিম্বামণৌ, অষ্টাদশী ক্ষণদা।

কিছুই ফল হইতেছে না। সণী কহিতেছেন—দেণ কি আশ্চর্যা! প্রিয়তমের অঙ্গ-পরিমল কাদরে প্রবিষ্ঠ হইবামাত্র ক্ষণ-প্রাণা-বিনোদিনী অমনি জাগিয়া উঠিয়া বাহু প্রদারণ পূর্বক ক্দয়েশরকে ক্দয়ে ধারণ করিয়া—বদনে বদন লাগাইয়া রহিয়াছেন। আনন্দে উভয়ের অঙ্গ প্রকৃত্তি হইয়া উঠিয়াছে! আহা! অহুলিত আনন্দ্রেণে ক্ষীণাঙ্গিনী-স্কুমারী—আবার মুর্চিতা হইয়া পড়িলেন!!

বিনয়-শেগর-শ্রাম-জলধর, বরাঙ্গিনীর মধুরাননে অপ্রান্ত-অধরামৃত-বর্ধণ করিতে লাগিলেন, দে অমৃতাভিষেকে—প্রেমমন্ত্রীর মৃহ্ছা অপগত হইল এবং উভয়ে পুনরাম পুলকাঞ্চিত হইয়৷ উঠিলেন। উভয়ের নয়ন হইতে আনন্দ বারি ঝরিতে লাগিল। দর্শনকারিণী স্থীর ভাবে গীতকর্তা কহিছেন—দেখ উভয়ের নয়ন জল লাভ করিয়া পুলক রূপ শ্লা-সমূহ, হর্ষিত (সতেজ) ইইয়৷ উঠিয়াছে।

# শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### অথ উনবিংশতি ক্ষণদা।

( > ) ऋरहे ; औरगीतहस्य ।

পতিত হেরিয়। কান্দে, থির নাহিক বাদ্ধে, করুণ নয়নে চায়, নিরুপম হেন যকু, উজোর-গোর তন্তু, অননী ঘন গড়ি যায়। গোরা পত্র নিছনি লইয়। মঞ্জি, ও রূপ-মাধুরী, পীরিতি চাতুরী, তিলে পাসরিতে নারি!

<sup>(</sup>১) সাধারণতঃ তিন শ্রেণী লোকের পতিত সংক্রা (১) যাহারা লোকধর্ম বা আশ্রম ধর্মামুসারে নিন্দিত ও নিষিদ্ধ কার্য্যকারী (২) যাহারা মহাপাপাচারী (৩) যাহারা অস্ক্যুল । পতিতেরা অদর্শনীয়, অস্পৃশু এবং বেদধর্মে অনধিকারী; এই শ্রেণীর দুর্ভাগ্য জীবগণ--চিরদিন নিরাশ্রম ও নিরুপায় ছিল, ধর্মাচার্য্যগণ ঘূণায় ইহাদের ছায়াও স্পর্শ করিতেন না! এই সকল গতি-হীন পতিত জীবগণের হুর্দ্দশায় ব্যথিত হইয়া যিনি ক্রন্দন করিতেছেন—ধর্য্য বন্ধন করিতে পারিতেছেন না—করুণার্দ্র-দৃষ্টি-দানের দ্বারা ইহাদিগকে পবিত্র এবং প্রেমদানের দ্বারা ভূবন-পাবন করিয়া ভূলিতেছেন। এবং ঐ ষাহার হেম সমুজ্জন-প্রদীপ্ত-গৌর দেহ খানি—প্রেমাবেশে ঘন ঘন ধরণী-লৃষ্টিত হইতেছে, প্রেম-কারুণার-নিধি—এই গৌর শ্রভুর নিছনি যাই!!

এই যে ভ্বন-ভোরা-রূপ-মাধুরী—যাহার দর্শনে দক্ষ দক্ষ লোকে শোকতাপাদি ভূলিয়া যাইতেছে! এই যে অপূর্ব্ব প্রীতি-চাতুর্য্য—অর্থাৎ শ্রীরাধার
ভাবে ক্বফ-রসাস্থাদন রূপ অন্তরঙ্গ-লীলা এবং—দান্তিক, কুতার্কিক, অপ্রপত,
বিদ্যাভিমানী প্রভৃতি জীবগণের উদ্ধারার্থ সন্ন্যাসী বেশ ধারণাদি বহিরদ

বরণ আশ্রম—কিঞ্চন অকিঞ্চন—কার কোন দোষ নাহি সানে কমলা শিব বিহি—তুর্লাভ প্রেম ধন, দান করল জগ জনে। গ্রেছন—দদয়-হৃদয়, প্রেমময়—গোর ভেল পরকাশ, প্রেম ধনে ধনী, করল অবনী। বঞ্চিত গোবিন্দ দাস।

লীলা ;—প্রেম-অমিয়ার এ সকল দানাস্থাদন-কলার মহিমা আমি এক ভিলও ভূলিয়া থাকিতে পারি না!!

অপতিত-জীব-সমাজের প্রতি তাগার করণার কথাও সর্ববণা-অন্তত এবং অভূত-পূর্ব্ধ ৷ দেথ—জন্ম, কর্ম্ম. স্কৃতি ও অধিকারের ভারম্যামুসারে জগতে ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বৈশু শুদ্র চারিটি বর্ণ এবং ব্রহ্মচর্য্য, গার্হস্ত্যু, বানপ্রস্থ ও সন্ন্যাস এই চারিটি আশ্রম এবং সক্ষমাক্ষম ভেদে—বর্ণ ও আশ্রম অনুযায়ী ভিন্ন ভিন্ন ক্লপ ধর্ম্ম-চর্য্যার ও তৎফলের বিধান—শাস্ত্র সমূহে নির্দিষ্ট আছে, তচ্চতিত অমুষ্ঠান দ্বারা, কত কালে কত আয়াসে-কত বিদ্ন বাধার ভিতর দিয়া, কত সাবধানে সাধন-পথে চলিয়া---জীবের অভীষ্ট সিদ্ধির কথা। কিন্তু আমার প্রেমাজি-চন্দ্র-গৌর হরির নিকটে কাহারও বর্ণ, আশ্রম, সামর্থ্য বা, অক্ষমতা কিছুরই বিচার নাই ! হস্তর তপশ্চর্যা করিয়া—স্বন্ধং লক্ষী যাহা পান নাই, স্তুতি প্রণতির পরাকাষ্ঠা দ্বারাও-ব্রহ্মা শিব পর্যান্ত যে ছুর্লভ ধন লাভ করিতে পারেন নাই—আমার পরম-দয়াল-গৌর হরি—দেই পরম-পুরুষার্থ-ত্রজের-নিগৃঢ়-প্রেমধন, সমস্ত অগৎবাসীকে দান করিতেছেন।। 'পের্মকরুণ"--- শ্রীকুষ্ণাবভারেও ফল, পুরস্কার বা উৎকোচরূপে বাঞ্চিত দান বাতিত-এইরপ অজ্ঞ-করুণাবিলাস দেখা যায় নাই। সদয়-জ্ঞানু-त्रीट्डान्ट्य नमूनिङ ब्हेब्रा—चकीब-माळ-मध्याना. রসময়-শ্রীগোরচন্দ্র लाक मधामानि भर्या छ न ज्यान क त्रिया कियन क क्रभावत्म अहेक्स व्यवनी सक লোককে প্রেমধনে ধনবান করিতেছেন। এছেন মহাস্থবোগেও ঘাছারা কু-বিষয় বিষ্ঠার গর্ভে পড়িয়া রহিবে নিশ্চয়ই ভাহারা চিরবঞ্চিত। হায়।

#### (২) শ্রীনিত্যানন্দ চন্দ্রস্থা—শীরাগ।

সরি যাই, এমন নিতাই কেন নাভজিমু!
হরি হরি ধিক্ আরে! কি বুদ্ধি লাগিল মোরে,
হাতে নিধি পঞা হারাইমু!
কমল জিনিয়া সাঁথি, শোভা করে মুখশশী,
সকরুণ স্বাপানে চায়।
বাল্-প্যারিয়া বলে, আইস জীব! করি কোলে,
প্রেম্ধন স্বারে বিলায়॥

আমার ভাগ্যে তাহাই ঘটিয়াছে ! এমন অবতারেও আমি (গোবিন্দ চক্রবরী) বঞ্চিত রহিলাম।

(২) ''এমন নিতাইকে কেন ভজিলাম না।" হায়। এ কথার কোনও উত্তরই নাই। অভএব আমার এখন মৃত্যুই শ্রেম্বর। হরি হরি। আমার কি বিষম হর্ক দ্বি। নিধি, হাতে পাইয়াও হেলায় হারাইলাম। ধিক্ আমাকে।! যাহার আঁথি-যুগল কমলের ক্রায় স্থিম, স্থলর, নয়নাহলাদক, উন্মাদক ও আকর্ষক—শ্রীমুথথানি শশীর ক্রায় স্থলর,—উত্তম-অধম-স্থলদ্-সথা বিদ্বেষ্টা-আভতারী যেই হউক—সর্ক-জীবের প্রতি বাহার সক্ষণ দৃষ্টি।! "জীবগণ। এসো কোলে করি" বলিয়া যিনি বাছ বিস্তার পূর্কক সর্ক্রগতে প্রেম-বিতরণ করিতেছেন—হার। এমন নিতাইকে আমি ভজিলাম না।!

যাহার কটিতে---আঁটিয়া বসন পরা, মস্তকে অতি মনোহর করিয়া চাঁচর চ্লের দ্বারা চূড়াটি বাঁধা। নর্তকের স্থার গমন। হায় ! গোপবালক-বেশধারী এমন নিতাইকে আমি ভজিলাম না !

যাহার বৃক্ বাহিয়া অবিরত প্রেমাশ্র-ধারা পড়িতেছে এবং তদ্বারা জীব-

কাছনি কটির নেশ, শোভিছে চাচর কেশ,
বান্ধে চূড়া অভি মনোহরে।
নাটুয়া ঠমকে চলে, বুক বাহি পড়ে লোরে,
ত্রিবিধ ক্ষীবের ভাগে হরে॥
হরি বল বোল বলে, ডাহিনে বামে অঙ্গ দোলে,
রাম গোরী দাসের গলা ধরি।
মুখে মাথা হাস্থ-চালা, নিভাইর প্রেফ্রাদ,\*
ভাব-সিন্ধু উচ্ল লহরী॥

গণের—আধ্যাত্মিক (শোকাদিজনিত) আদিভৌতিক (শীতগ্রীমাদিজাত) আধিনৈবিক (রোগাদিজনিত)—ত্রিবিধ ভাপ দ্র হইতেছে, হার। এমন নিতাইকে আমি ভজিলাম না।

যিনি নিজ-পার্বদ রামদাস ও গৌরীদাসের গলার ধরিয়া গৌরপ্রেমে "হরি বল হরি বল" বলিয়া—বামে ও দক্ষিণে হেলিয়া হেলিয়া পড়িতেছেন! যাহার জীবদনথানি, হাস্ত কপ স্থধাকরে সদা-মণ্ডিত (মুখখানি সদা স্থান্মত) যাহার হাঁদিতে জগৎ—ফাঁদে বাঁধা পড়ে—বে হাঁদি প্রেমের ফাঁদ-স্বরূপ, যাহার হাস্ত-চক্র দর্শন মাত্রে খাব-সিন্ধুর-লহরী উছলিয়া উঠে, হায়! আমি এমন নিতাইকে ভিজ্ঞাম না!

বে নিতাই স্থানর করণার সিদ্ধ্যরূপ—নিরস্তর-ভাব-ভরঙ্গে-সম্বর্দ্ধিত-অপারঅগাধ-কারুণ্যের পারাবার এবং নাম, প্রেম, লীলাদি—নানা রত্নের আকর।
করণামৃত বর্ষণে জগৎ-মিগ্ধকারী ও ভক্তি-বীজের অন্ধুরোংপাদক ও বর্দ্ধক
এবং ভক্ত-নদীগণের পরমাশ্রয়। আবার পতিতের একমাত্র বন্ধু,—আমি

নিতাই করণাসিন্ধু, পতিতের এক বন্ধু \*
করণায় জগত ভূবিল।

মদন, মদেতে অন্ধ— বিষয়ে রহল বন্ধা

হেন নিতাই ভজিতে না পাইল।

### ( 🌣 ) 🖹 धानिता

চূড়হি চূড়—শিখণ্ডক-মণ্ডিভঞ্চ মালতী মধুকরমাল § শৌরভে উনমত, ভ্রমরা ভ্রমরা কত, চৌদিকে করত ঝঙ্কার!

তাহাকে ভজিলাম না !! হায় হায় ! নিতাইর করণায় জগৎ ডুবিল, কিস্তু মদান্ধ আমি (গীতকর্ত্তা মদন) বিষয়-পাশে বাঁধা থাকিয়া এমন নিতাইকে ভজিতে পারিলাম না !!

(৩) প্রীক্ষের অসনোর্দ্ধ-রূপমাধুরীর, অদৃষ্ট-পূর্ব্ব-বিকাশ-দর্শনে বিমোহিতা অন্তরাগিনী প্রীরাধা স্থীকে কহিতেছেন,—স্থি! আজ একজনের বড় অপরূপ-রূপ দেখিরাছি। এমন মোহন-রূপ-মাধুরী মানুষে কথনও সম্ভবপর নহে। দেখিলাম, তাঁহার চূড়ার উপরিভাগ মরুর পুচ্ছ দারা মণ্ডিত। আর মধুস্রাবী নালতী নালার সৌরভে উন্মন্ত হইয়া কত ভ্রমর ভ্রমরী চারিদিকে ঝল্পার করি-তেছে। স্থি! কে বলে কলপের শরীর নাই? আজ কেলী-কদন্তর তলে নিশ্রুই আমি রতি-নায়ক কলপিকে নটবর-ভঙ্গতে দণ্ডাগ্রমান দেখিরাছি।

<sup>\*</sup> পদকলতকর পাঠান্তর—পতিতজনার বন্ধ। † বিশেষে রহল ধন ইত্যাদি। কোন কোন গায়কের মতে—'প্রসাদ' রহলী ধন্দ।

<sup>‡</sup> পদকল্পতকর পাঠ—ময়্র শিথওক; পদাম্ত সমুদ্রের পাঠ—শিথওি শিথওক। ঐ উভয় সম্মত পাঠ—§ মণ্ডিত মালতী মাল।

সজনি ! কোকত্ কাম অনঙ্গ ?
কেলী কদস্বতলে, সো রভি-নায়ক, পেখলু নটবর-ভঙ্গ। ধ্রু ।
কতত্ কুহ্ম-শর\* নয়ন-তৃণ্ভর, সঞ্চরভাঙ-কামানে—
নাগরী-নারী—মরমপর হানই, লথই না পারই আনে !
ক্রুভি-মূলে চঞ্চল—মণিময় কুগুল, দোলত মকর আকার
গোবিন্দ দাস, অতএ অবধারলণ মদন-মোহন অবতার।

মাদৃশ-কুলাঙ্গনার মন, কোনও মানুদের ক্লপে কথনও এমন মোহিত হইতে পারে না !

কেবল রূপে কেন—স্বভাবেও তাহাকে 'রতি-নাথ' বলিয়া বেশ বুঝা গিয়াছে। তাহার নয়ন-ভূণে যে কত কুসুন-পর পরিপুরিত—বলিতে পারি না !! জ্র-ধ্যুতে তাহা (কামান অর্থ ধন, ভ ও — দুরা) সঞ্চার করিয়া এমন অনক্ষ্য-সন্ধানে নাগরী-হৃদয়ের মর্ম্যান পিছ করে যে অপরে সাক্ষাৎ থাকি-য়াও তাহা লক্ষ্য করিতে পারে না ।

দেখিলাম—ভাহার কর্ণমূলে মণিনয়-ক্ণুল দোলিকেছে—এই পর্যান্ত বলি-লেই, সম্বোধিতা-স্থার-ভাবাবিষ্ট-গী চকর্ত্তা গোনিন্দাস কথায় বাধা দিয়া বলিয়া উঠিলেন—'আর বলিতে চইবে না, ইহাতেই অবধারণ করিয়া ফেলি-য়াছি। যাহাকে দেখিয়া ভূমি আক্ল ইইয়াছ, তিনি মদন নয়—মদনমোহনা-বতার! সে মদনমোহন-ক্লের নব নব মাধুরী, আর ভোমার নবান্ত্রাগ, এ তুইয়ের শুভ সন্মিলনের ফল—বোমার প্রেম-ভ্রান্তি!

#### (8) 🔊,

সজল-জলধন, অঙ্গ-সনোহন, ছটায় চাহিল নহে,

ঈষত হাসিয়া, মনের আকৃতি, অরুণ নয়নে কছেঃ।

কি আজু পেথলু, বিনোদ-নাগন, কেলী-কদন্থেন ভলে
রূপ নিরথিতে—আথির লাজ. ভাসিল আনন্দ-জলে।
ফুল-মালা দিয়া, কুন্তল টানিয়া, ময়ুর পুচেছন ছাঁদে—
রঙ্গিণী-লোচন—খঞ্জন বাঁধিতে, পাতিল বিষম ফাঁদে।

মকর কুগুল, অনঙ্গ দোলয়ে ? ণ "গণ্ডে-দরপণ ভাণে—
ভালে সে মদন, দেখি প্রতি বিদ্ব" গোবিন্দ দাস অনুমানে।

আমার মনে হইতেছিল—কেহ থেন ঠাহার চূড়া নির্দাণ-চ্ছলে, আকর্ষিত কেশে বকুলের মালা যোজনা ও ময়ূর পিঞ্-বিস্তাসের দারা—রসবতী-গণের নয়ন-খঞ্জন বাঁধিবার নিমিত্ত একটি বিষম-ফাঁদ পাতিয়া রাখিয়াছে।

আর চঞ্চল-মকর কুণ্ডলের দোলন দেথিয়া মনে হইয়াছিল—বেন স্বয়ং অনঙ্গ দোলিতেছে!! এই উৎপ্রেক্ষাটি গুনিয়া রঞ্জিণী-সহ্সরী (তদ্ভাবাবিষ্ট

<sup>(</sup>৪) স্থীর দিদ্ধান্ত শ্রীরাধার মনে লাগিল, শ্রামগরবিনী বলিতেছেন—
সধি! তোমার অবধারণ অব্যর্থ। রূপের ছটায়—ভাল করিয়া চাওয়া গেল না,
তাহাত্তেই আমি তাহাকে চিনিতে পারি নাই। তথাপি আমার জীবিত-নাথের
স্থায়—সঙ্গল-জলদ-কাঞ্চি,মনোহর অঙ্গ-বলনি এবং অরুপিত-নয়নের ভঙ্গী দ্বারাস্মিত-মুখে মনোভিলাব-ব্যক্ত করা আমিও লক্ষ্য করিয়াছি। আহা! আজ
কেলী-কদম্বের তলে আমার বিনোদ-নাগরকে কি অপূর্ক্ত-মাধুরী-মন্তিতই
দেখিয়াছি! সে রূপ-নিরীক্ষণ কালে অপরিচিত-পুরুষ-ভ্রম-সঞ্জাত-লজ্জা—
আমার আন-লাঞ্চতে ভাদিয়া গিয়াছিল।

সঙ্গীতসার সংগ্রহে পাঠান্তর— \* চাহে। বিক্র কুণ্ডল সঙ্গে অনুস দোলরে রঙ্গে।

### ( ८ ) ভार्षियाती।

শুনিয়া দেখিকু, দেখিয়া ভূলিকু, ভূলিয়া পীরিতি কৈকু, পীরিতি-বিচ্ছেদ, সহন না যায়, ঝুরিয়া ঝুরিয়া নৈকু!

সই ! পীরিতি দোসর ধাতা—
বিধির বিধান, সব করে তান, না শুনে ধ্রম কথা #॥ জ্ঞ ॥
স্বাই বোলে ণ পীরিতি কাহিনী, কে বলে পীরিতি ভাল,
শ্যাম নাগরের, পীরিতি-যুশিতে গ্রু পাঁজর ধাস্যা গেল!

গীতকর্ত্তা পোবিন্দ চক্রবর্ত্তী) বলিতেছেন—আমার অনুমান হয়, প্রোজ্জন গণ্ড-লাবণ্যে দর্পণ-ভ্রম হওবায়—মদন তাহাতে আপনার প্রতিবিদ্ধ দেখিতে-ছিল।

(৫) আলোচনায় —অনুরাগের-আগুণ জলিয়া উঠিল; বিচ্ছেদ-বাাকুলিতা ধনী-মণি কহিতে লাগিলেন—স্থি! প্রথমে তাহার রূপ গুণের কথা,মধুর
নাম ও মোহন-বংশী-ধ্বনি—গুনিয়া দর্শনের জন্ম উনাদিনী হইলাম। পরে
তাহাকে দেখিয়া—কুল, মান, লজ্জা, ধৈর্মা, বিচার, বিবেচনা, সমস্ত ভ্লিলাম!
ভ্লিয়া তাঁহাকে প্রাণ-সম্পণ করিলাম,—তাহার প্রেমে মজিলাম! এখন—
সেই প্রেমের ফলে নিরন্তর বিচ্ছেদে ঝুরিয়া মরিতেছি—আর সাহতে পারিভেছি না!!

স্থি! প্রেম, এক স্বতম বিণাতা। বিণাতার যে বিধানে জগৎ অনুশাসিত, প্রেম তাহার অধীন নহে, গে বিধির সকল বিধানই উপ্টাইয়া দিয়া, স্বাধীন বিধানে চলে। ধর্ম্মের আর্থাৎ জাগতিক-বিধিমত কর্ত্তবাচরণের কথা, কাণেই তোলে না! দেখ—সকলেই প্রেমের কাহিনী কহিয়া থাকে কিন্তু কেহই তো

পদকল্লতকর পাঠান্তর—\* কেবলে পীরিতি ভাল শ্রাম বন্ধু দনে পীরিতি করিয়া, পাজর ধসিয়াগেল, † কহয়ে। ‡ কাহুর শীরিতি ভাবিতে ভাবিতে ।

পীরিতি মিরিভি, তুলে তোলাইমু, পীরিতি গুরুয়াভার, পীরিতি বিয়াধি! যারে উপজয়, দে বুঝে, না বুঝে আর! কেন হেন সই! পীরিতি করিমু, দেথিয়া কদম্ব-তলে, জ্ঞান দাসে কহে—এমন পীরিতি, ছাড়িবে কাহার বোলে?

# (७) छश्हे।

রাধা—নাম, আধ শুনি চমকই, ধরই না পারই অঙ্গ, লোচন-লোর—লহনী ভরে আকুল, কোকছ প্রোম-জরঙ্গ।!

তাহাকে "ভাল" বলে না ! অথবা---পরের কথায় কাজ কি ? এই আমার ছর্দ্দশাই দেথ---ভামের ভাষ স্থনাগরের প্রেমের-ঘুশী-প্রহারেই আমার পাজর পর্যান্ত ধনিয়া যাইতেছে !!

প্রেম, আর মৃত্যু (মিরিতি—মৃতি, মরণ) এ উভয়ের মধ্যে কে গুরু, কে লঘু অর্থাৎ অধিক কষ্টপ্রদ কে ? পরীক্ষা অর্থাৎ ভৌল করিয়া আমি বুঝিয়াছি, প্রেমের ত্র্বহ-ভারই গুরুতর। যাহার দেহে প্রেমরূপ ব্যাধি উপ-জাত হইয়াছে, প্রেম-ষ্ম্মনার গুরুহ কেবল সেই জানে। অপরে উহা বুঝিবার নহে।

স্থি! শ্রাম চিক্নিয়া-বন্ধর এই লোকাতীত-লাবণ্য কদম্বতলায় দেথিয়াই আমি তাঁহার সহিত প্রেম করিলাছিলান। কিন্তু—কেন এমন অবোধিনীর কাল করিয়াছিলাম—বলিয়া এখন েবণ্ট অন্তপ্ত হইতেছি।

শেষ কথাটির সংয়ে রুফের দৃতী-ভাবাণিট গীতকর্ত্তা জ্ঞানদাস নিকটে উপস্থিত হইয়া বলিতেছেন—"এমন পীরিভি" কাহার কথায় ছাড়িবে ?

পদ কল্লতরু এবং সঙ্গীতসার সংগ্রহে, এই গীতটির ভণিতা এই রূপ-জীবনে মরণে, পীরিভি বিশ্বাধি হইল যাহার অঙ্গ, জ্ঞান দাস কহে, কাতুর
পীরিতি নিতি নৌতুন রঙ্গ।

<sup>(</sup>৬) পূর্বগীতের উপদংহারোক্ত "এমন পিরিতি" কি প্রকার,—জ্রীকৃষ্ণের,

হুন্দরি । দূর কর হাদর কো বাধা—
রাধা । মাধব—তুরা, অবধারলু—মাধব কি তুলু,রাধা ॥ ধ্রু ॥
তোহারি সম্বাদ—তথা-রদে উন্মত, হদি হদি ঘন তমু সোর,
লেখত পাতি, দেখত নাহি কাজর, গদ গদ-রোধল-বোল ।
গীম কি ভঙ্গে পন্থ দরশাওল, ছল্ড দিঠি-পক্ষ মৃদি—
গোবিন্দ দাস কহই, ধনি ! ধনিতুল্, সমুঝাহ ইক্সিত্ত-শুধি ।

দ্ভী তাহার বাণধার সহিত—ক্ষাপন আগমনের কারণ প্রকাশ করিতেছেন, যথা—রাধে ! মাণব ভোমার বিচ্ছেদে বড় কাতর। দেখিলাম—রাধা নামের অর্ধাংশ অর্থাৎ 'রা' অক্ষর কি 'ধা' অক্ষর শুনিলেই তিনি চমকিয়া উঠিতেছেন দেহ ধারণে অসমর্থ এবং নয়নাশ্র-তরঙ্গে আকুল হইতেছেন ! (লোর—অশ্রু) রাধে ! বলিব কি — সে প্রেমার্ত্তির তরঙ্গ—বাক্যে বাক্ত হয় না !! কাহার সাধ্য বলিয়া ব্থাইতে পারে ? স্থলরি ! তোমার হুদয়ের সকল হঃথ দ্র কর, (বাধা—খাথা, হঃখ ) আমি স্থির নির্দারণ করিয়াছি—মাধব তোমার এবং তুমিও মাধবের—রাধা। তোমার প্রেরিত অনঙ্গ-লেথ-দ্বারা সংবাদ স্থারস প্রোপ্ত হইয়া, মাধব আনন্দরসে উন্মন্ত হন, অঙ্গ-মোট্রন করিতে করিতে সহাস্তবদনে—প্রত্যন্তর-পাঁতি লিখিতে বদেন, কিন্তু ভাবোচ্ছাসে তাহার নয়ন আনন্দাশ্র-পূর্ণ হইয়া উঠিল—কজ্ঞলের রেখা-দেখার শক্তি লোপ হইয়া গেল, তাহাতেই আর উত্তর লেখা ঘটিল না। সে জন্ত যদি তুমি ক্ষোভিত হইয়া থাক তবে তোমার ভূল !

তাহারপর তোমার-প্রেম-সর্বস্থ-নাগর-চূড়ামণির কণ্ঠ গদগদ হইরা বাক্শজি-রোধ হইরা গিয়াছে! এই প্রকার বিষম বৈকল্যের মধ্যে মৃদ্রিজ নরনে গ্রীবাভঙ্গী দ্বারা সঙ্কেত-কুঞ্জের পথ প্রদর্শন পূর্ব্বক ডোমার কাছে অভি-সারের প্রার্থনামর ইঙ্গিত-জানাইয়াছেন। সেইরূপ ইঙ্গিতের অভিনয় করিয়া দ্তির ভাবাবিষ্ঠ গীতকর্তা গোবিন্দ কবিরাজ কহিতেছেন,—তুমি সর্ব্ব বিয়রে

#### (१) (कनाता

সাজল, মদন—কলা-রস-রঙ্গিনী, শ্রাম-মিলন-রস-দাধে,
শ্রীরুন্দাবনে—বিজয়ী বিনোদিনী, রমণী-শিরোমণি-রাধে।
কুঞ্ছিত-কেশ—বেশ, ভালে রঞ্জিত, লীলা-কমল-বয়ানী,
শ্রেষণ রসাল, কনক-নব-মঞ্জরী, মনমথ-মথন-নয়ানী।
চান্দনি চাছি—চকোর মুদিত ফিরে, স্থললিত-মুরলী-স্তান,
উনমত-কোকিল, পঞ্চম গাওত, শুনি ধনী করল পয়ান।

ধনীগণের মধ্যে ধন্যা, অতএব ইন্সিত-শুদ্ধি বৃথিয়া কর্ত্তব্যাচরণ। শুধি অর্থ শুদ্ধি অর্থাৎ শুদ্ধতা।

পদামৃত সমুদ্রের পাঠ ''হ্নধি" তাহার অর্থ 'ছে, হ্ব-ধী' অর্থাৎ বৃদ্ধিমতী।

(৭) স্থীর বাক্য রূপ বাতাসে—বাসনার সাগর, তর্পিত হইরা উঠিল।
মদন-রস-কলা-রঙ্গময়ী, আজ সাধপূর্ণ করিয়া শ্রাম-স্থলায়কের সহিত সন্মিলনস্থ আত্মাদনের বাসনায় অভিসারে সাজিয়া বৃন্ধাবনে চলিলেন (এই—সাজিয়া
অর্থ প্রস্তুত হইরা)।

দেখ রমণীশিরোমণির কুঞ্চিত কেশের কি অপূর্ব্ববেশ ! তাহাতে লগাট দেশ রঞ্জিত। লীলাকমলের দারা মনোহর বদনে ধাবিত-ভ্রমর তাড়াইতেছেন। কর্ণদ্বরে স্থাপতার নবমঞ্জরীর অবতংস স্থাশোভিত! চঞ্চল-নরন-যুগণ স্বরং মনমথেরও মহিমামর্দন করিতেছে! এদিকে চন্দ্রালোকে-আমোদিত (মুদিত) চকোরনিকর, একদিক্ হইতে অন্ত দিকে ফেরাফিরি করিতেছে। দ্রে স্থলনিত মধুর তানে মূরলী বাঞ্জিতেছে! উন্মন্ত হইয়া কোকিলক্ল পঞ্চমে গান করিতেছে।

দেখ দেখ, আমাদের বিনোদিনী, এই সকল শুনিতে শুনিতে ও লীলা-পদগতিতে স্থললিত-শোভা বিস্তার করিতে করিতে, কেমন মনোহর- হংসিনী-গমনী, চলজি-অভি-মন্থ্র, লীলা-পদ-গতি শোভা, কহে যতুনাথ সাথ ব্রুক ক্মন্দরী, খ্যাম-পিরিভি-রসে লোভা।

(৮) वांगक-मञ्जा-कार्याम।

সাক্ষল-কৃত্তম শেষ, পুনঃ দাক্সই, জারই জারল বাতি বাদিত ধপুরে, কপুর পুনঃ বাদই, ভৈগেল মদন ভঁরাতি,

আজু ধনী সাজলি বাসক-শেষ মনমথ লাখ, মনোরথে ধাবই, অঙ্গে অঙ্গে নাহি তেজ।ঞা

মন্থর গমনে চলিতেছেন। "এ সমরে মন্থর গতি কেন।" এই প্রশ্নের নিরসনার্থ স্থীভাবাবিষ্ট পদকর্তার উক্তি "খ্রাম পীরিতি-রসে লোভা" আজ আমাদের প্রেমময়ী খ্রাম-প্রেম-রসে "প্রায় নিময়" হইয়া—তাহাতেই সাঁতার দিবার জন্ম, লোভে অগাধ জলে যাইতেছেন, ব্রজ-স্থানরী-গণকে সঙ্গে লইয়া হংসিনীগণের খ্রায় তরঙ্গে তরঙ্গে দোলিয়া চলিয়াছেন। তাহাতেই মন্থর গতি।

(৮) নিকুঞ্জে উপস্থিত হইয়া, প্রেমাতিশন্য-জনিত সাধে, আহলাদে ও আদরে প্রেমমন্নী-রাজনন্দিনী, স্থসজ্জিত কুস্থমের শব্যা পুনর্কার সাজাইলেন, প্রোজ্জন প্রদীপকে আরোও প্রোজ্জনিত করিলেন, সৌগদ্ধমন্ন তাম্ব বীটিকা কর্পুর দ্বারা আরোও স্থবাসিত করিলেন! এবং এগুলি করিয়াও বেন করা হয় নাই বলিয়া মদনাবেশে ভ্রান্তি হইতে লাগিল (ভ্রাতি—ভ্রান্তি)

কোনও সধী অপরাকে এ সকল দেখাইয়া কহিতেছেন, দেখ—আমাদের
নায়িকা-শিরোমণি আজ বাসক-সজ্জা সাজিয়াছেন। তাহার স্থবিকসিত
অঙ্গমাধুরী দেখিয়া বোধ হইতেছে যেন লক্ষ লক্ষ মন্মথ মনের সাধে ধাইয়া
আসিয়া অঙ্গে অঙ্গে উদয় হইয়াছে এবং ছাড়িয়া যাইতে চাহিতেছে না।

ঘন ঘন অভরণ অঙ্গে চড়াওই , গনেগনে তেজই ভার সচকিত নয়নে, চমকি খনে উঠই, হেরই নিজ তুকু-ছার ! কাতর বচনে সম্ভাষই, "সহচরি ! কাহে বিলম্বাওত কান ?" গোবিন্দ দাস কহই, অব শুনিয়ে সঙ্কেত-মুরলী নিসান ।

# (৯)—গুজ্জরী।

ঘনঘন, নীপ-সমিপহি শুনিয়ে, দক্ষেত্ত-মূরলী-নিসান রহি রহি বাম-পায়েধির পক্ষই, তেই বুঝি মিলব কান!

(তেন্ধ—ত্যক, ত্যাগ) দেখ—সময় বৃঝিয়া বৃন্দাদেবী নানা প্রকার অভরণ আনিয়া দিয়াছেন নাগরী-মণি তাহা বারংবার অঙ্গে ধারণ করিতেছেন আবার কান্তের আগমন-বিলম্ব অসহমানা হইয়া তাহা ঘন ঘন পরিত্যাগ করিতেছেন! আর—আপনার অঙ্গছোয়া দেখিয়া 'কান্ত এলেন' মনে করিয়া ক্ষণে ক্ষণে চমকিয়া উঠিতেছেন ও কাত্র-বচনে স্থীগণকে শুধাইতেছেন 'স্পি! আদ্ধ কামু এত বিলম্ব করিতেছেন কেন ?"

শুনিয়া—সথী ভাবাবিষ্ট গীতকর্ত্তা গোবিন্দ কবিরাঞ্চ উত্তর দিতেছেন, ঐ্রে সঙ্কেত মূরলীর ধ্বনি শুনা ধাইতেছে! দেখি কিছু ব্ঝিতে পারা যায় কি না।

<sup>(</sup>৯) নায়িকা-মণি বলিতেছেন:—নীপ-মূল হইতে সঙ্কেত-মুরলীর ধ্বনি, বারংবার শুনা যাইতেছে। আবার থাকিয়া থাকিয়া আমার বাম-পয়েয়ধর ম্পানিত হইতেছে, অতএব আমার বোধ হইতেছে, কারু অবশুই আসিয়া মিলিবেন স্থি! আমার বিশাস— এই, চতুর্গীর-পাপ-চক্ত্র, কিরণের ফাঁদ পথে শাতিয়া (উদিত হইয়া) হরির ছভিসারে বিলম্ব ঘটাইতেছে। যাহা হউক আমি আর থাকিতে পারিতেছি না, কন্দর্প আমার মনের ভিতরে প্রবেশিয়া সুকারিত বাসনার উপরে আরোহণ করিয়া বিসয়াছে!

দেখ সথি! পাপ—চতুর্থীকো চান্দ!
হির অভিগার, এহি বিলম্বাওত, পাতি কিরণময় ফাঁদ!
সনহি মনোরথ, চঢ়ল মনোরথ, ধৈরম ধরণ না মাত
মণিময় হার, ভারমত্ম লাগত, অভরণ দূরকরুগাত!
ধরণী-শয়নে একু, মোহে শোয়াওত, কুল্ম-শয়নে জিউ কাঁপ
গোবিন্দদাস কহ, গহন প্রোম-গহ, দহনে দেওয়াওই বাঁপি!

# ( >॰ ) উৎকণ্ঠিতা—সঙ্গল ।

ঋতু-পত্তি-রাত্তি, উজোরল-হিমকর , মলা স্থারণ মদদ
কামু-আশ-আদে, চপল-মনোভব-মনহি বিধারল ছন্দ !

আর ধৈর্য ধরা যাইতেছে না। মণিময় হার, ভারবোধ হইতেছে ! সথি ! আমার গাত্র হইতে (গাত—গত্র) সমস্ত অভরণ দূর করিয়া ফেল। হার ! হায় ! এখন কবি কি ? কুন্থম শ্যায় আমার প্রাণ কাঁপিতেছে ! স্থি আমাকে একবার (একু) মাটিতে শোয়াও !

সংখাধিতা সধীর ভাবাবেশে গীতকর্তা-গোবিন্দ কবিরাজ ছ: প প্রকাশ করিতে-ছেন হার! দেখিতেছি ছ্রিগিম্য-প্রেম-যাতনা (গহন শব্দে—যাতনা। গহ, ছুর্ধিগম্য) স্কুমারী-স্থীকে আগুনে ঝাঁপ দেওয়াইতেছে। অথবা—গহ গ্রহ শব্দের অপভ্রংশেও হইতে পারে, তাহা হইলে "গহন প্রেম গহ"—ছুর্ব্বোধ চরিত্ত প্রেম-রূপ গ্রহ।

<sup>(</sup>১০) একণে রাজননিনী রাধা, উৎকণ্ঠিতা-নাগিকার ধাবে আকুলিতা হইয়া উঠিয়াছেন, কহিতেছেন—স্থি! একে আরু বসস্ত-রজনী, তাহাতে সমুজ্জন শশধর সমুদিত, তাহাতে শাবার মন্দ মন্দ্রানিল বহিতেছে! ইহাদের

সন্ধন ! পুন যনি সম্বাদহ কান—
কালিন্দী-কুলে, অবহি বিরহানলে, তেজব দগধ-পরাণ। ঞ।
কিশলয়-দহন—শেষ, অবদাজহ, আহুতি চন্দন-পরা—
বিজ-কুল-নাদ-মন্ত্রে, ততু জরজর, দূরে যাঙ---প্রেম-কলঙ্কা!
চিত-রতন-মঝু, কাতু-পাশ রহু— অবহু না মিলল মোর!
গোবিন্দ দাস কহই, ধনি! বিরমহ, কাতু মিলাওব তোয়।

দত্ত ধৈর্য্যধ্বংশী হঃসহ যন্ত্রনার মধ্যে চঞ্চল-মনোভব, কান্তের আগমন আশাসে (আশো আশো) আমার দিধা উৎপাদন করিতেছে (সার্ক্রকালিক লীলার, প্রেম-বিভ্রান্তিতে বৃণস্ত-রাত্রিজ্ঞান জ্ঞের,) কিম্বা উজ্জ্বল-নিশাকর, সময় সমীরণ এবং চঞ্চল-কল্প্, ইহারা সকলেই, আমার হৃদয়-পোষিত্ত—নাগরের নিশ্চিতাগমন বিশ্বাদে দিধা উৎপাদন করিতেছে।

স্থি ! বছবল ভ-কান্তের আগমন নিশ্চরই আর হইবে না ! আর যেন কেহ তাহাকে, কোনও সংবাদ দিও না । আমি এখনি যমুনারতীরে বিরহানলে, এ পোড়া প্রাণ পরিহার করিব ! এখন তোমরা কিশলরের-শ্ব্যারূপ-অগ্নিকুও প্রস্তেত্ত :কর এবং তাহাতে হোমের-হ্বিরূপে চন্দন-পদ্ধ প্রদান কর। বিজ্ঞাণের কলনাদরূপ মত্রে আমার তত্ত্ব জলিয়া পুড়িয়া প্রেমকলন্ধ দূর হউক ! ( ব্রাহ্মণেরা যেরূপ বিজ্ঞ, পক্ষীরাও তত্ত্বপ বিজ্ঞ শব্দের বাচ্য বটে )।

কিন্তু সথি! আমার চিত্ত-রত্নটি—কান্তের কাছে রহিয়াছে, সে এখনও আমার কাছে আগিরা মিলিল না। তাহৌক, সে কাম্বর কাছেই থাকুক। কান্তের উপেক্ষিত এই স্থণিত-দেহের সহিত তাঁহার সম্বন্ধ লোপ হওয়াই বাহ্ছনায়। শুনিয়া— দীতা-বিশ্বিতা-চমকিতা-স্থীর ভাবাবিষ্ঠ গীতকর্তা-কহিতেছেন, ধনি! ক্ষান্ত হ, আর বাগ্-বক্স-হারা আমাদের বুক ভাজিস না! আমি, কাম্বকে আনিয়া মিলাইয়া দিতেছি।

## ( >> )--- छश्हे।

কেলোরে মিলাঞাদিবে সে চান্দ বরান আখি-তর পিত হবে, জুড়াবে পরাণ ? উঠিরা বসিরা কত পোহাইব রাতি— না বার কঠিন প্রাণ ছার নারী জাতি,

আজু যদি না মিলব দারুণ কান— নিশ্চর জানিও সথি ! ষাইবে পরাণ। না মিলল নাগর, না পূরল আশ— এত ক্লণে না আইল—বগরাম দাগ!

পদকরতক্তে—'মধু ঋতু রাতি" ইতি :পাঠে এ গীতের আরম্ভ এবং সর্বশেষ কথা—''আপনি মিলব সোই !"

(১১) "শামি মিলাইয়়া দিব" স্থীর এই আখাদ-বাণী গুনিয়া ভয়-য়দয়া
শ্রীরাধা কহিতেছেন—হায়! আমার এমন বন্ধু কে আছে—ইত্যাদি।
উপসংহারে বলিলেন—এইতো কত আখাদ দিয়া দৃতী—(বলরাম দাস)
ভাহাকে আনিতে গিয়াছিল, কিন্ত এখনও ফিরিল না!!

পদামৃত সমুদ্রে এগীতিটি মাথুর-বিরহ-প্রাকরণে লিখিড, এবং ভাহাতে তৎ প্রকরণোচিত পরার কতকগুলি বেশীআছে। যথা—দ্বিতীয় ছত্ত্রের পরে— কাল—রাতি না পোহায় কত জাগিব বদিয়া,গুণ শুনি প্রাণ কান্দে না যায় পাতিয়া, এবং চতুর্থ ছত্ত্রের পরে—

ধন জন যৌবন সোদর বন্ধু জন, পিয়া বিমু শৃত্য ভেল এতিন ভূবন ! কেহতো না বলেরে আওব তোর পিয়া, কতনা রাখিব চিত নিবারণ দিয়া কত দূরে পিয়া মোর করে পরবাস, সম্বাদ লেই চলু বল রাম দাস। জামাদের শেষ ৪ ছত্ত্ব, পাদামৃত সমুদ্রে নাই।

### ( ১২ )—ভূপালি।

একথি ! রমণী-শিরোমণি রাই !
নিরমল-প্রেম-জলধি অবগাই !
তিল এক ধৈরব ধরহ বিচারি—
সো অব মিলব—রসিক বনমালী ।
এত কহি সহচরী চললি তুরস্ত—
বকুণতলে ; যহি সো-রতি কান্ত।

ঝামর আনন, বিরহ অমল—
চালনি বিস্থ বহু দিবদ কো চল !
কহে হরিবল্লভ অব তথ গেল
যব সধী-যামিনী পরবেশ ভেল।

(১২) সথী, প্রেমময়ীকে প্রবোধ-প্রদান করিয়া কহিতেছেন — সথি রাধে ! বেমন দৌল্বেয় মাধুর্য্য — তেমনি ধৈর্য্য সহিষ্ণুতাদি সর্বপ্রণেই ভূমি রমণীগণের শিরোমণি। অগাধ-জল-সঞ্চারি-মীন, বেমন গন্তীর ও অচঞ্চল, নির্মাল-প্রেম সমুদ্রাবগাহিনী ভূমি— সেই রূপ ধৈর্য্য-গান্তীর্য্য-বতী। দেখ, বনমালী রসিকনাগর, সংক্ষত জানাইরা তিনি আসিবেন না, ইহা ক্থনও সম্ভব নহে, অতএব সকল কথা বিচার করিয়া কিছু কাল বৈর্য্য ধারণ কর।

এইরপে প্রেনাকুলিতা-প্রিয়-স্থীকে প্রবোধ প্রদান পূর্বক, ষেধানে রতি-কান্ত হরি—রাধা প্রেমে বিভোর ও আত্মহারা হইয়া, বাঁশী বাজাইতে-ছেন, সহচরী ত্বরিত গমনে সেই বকুল তলায় চলিলেন। তথায় উপনীত হইয়া দেখিলেন দিবাভাগের—জ্যোংস্না-বিরহিত-চক্রবং—লাবণ্য-বিরহিত মাধবের মুধধানি বিরহের তীব্রতাপে মলিন (ঝামর) হই মা রহিয়াছে!! দ্ভীর-স্লিনী-ভাবাবেশে গীতকর্তা হরিবল্লভ,—বিহলল হনিকে কহিতেছেন—শনিশানাথ! ছঃধ দ্র হইয়াছে, রাধার স্থী রূপা—যামিনী স্মাগতা!" অর্থাৎ এখন সন্বিত লাভ কর এবং চান্দ ও চান্দনিতে মিলিয়া সমুজ্জল ও প্রাফুলিত হও—জানন্দ বিস্তার কর।

#### ( ३० )—(क्षात ।

উদ্বোর-শশধর— দীপক জারল, অলীকুল ঘাঘর বোল, হনইতে হরিণী নয়নে দরশাওই, ওহি ওহি পিক-বোল!

মাধব! মনমথ ফিরত অ-ছেরা,
একলি নিকুঞ্জে ধনী, ফুল শরে জরজর, পশু নেহারই তেরা!
তুত্ত অতি সন্থর, চলবি ত্রস্তর, মধু-যামিনী অতিছোটি,
ও, বর বাহির করত নিরস্তর, নিমিধ মান্যে যুগ-কোটি!

(১৩) শিকারী দিগের একটি রীতি এই রূপঃ— অরণ্যে আগুণ জালাইয়া দেয়, শিকারীর-সহচরেরা বিপরিত দিক্ হইতে চিংকার করে, তাহাতে ভীত হইরা অরণ্যের অভ্যন্তর হইতে হরিণাদি—বহির্গত হয়, তথন বৃক্ষাদির উপরে অবস্থিত সঙ্গীরা "এই! ওই যাইতেছে' ইত্যাদি কথা দারা লুকায়িত-ধন্থ্রারী-শিকারীকে সন্ধান বলিয়া দেয় এবং তদ্যুসারে সে শ্রাঘাত করে।

শ্রীরাধার—সহচরী-দৃতী, সেইরূপ উৎপ্রেক্ষার সহিত শ্রাম-স্থনাগরকে বলিতে লাগিলেন—উজ্জ্ল-শর্শধর রূপ-অগ্নি (দীপক) প্রজ্জালিত করিয়া অলিকূলের দ্বারা—ঘোররবে চীৎকার করাইয়া, আর অমূচর-পিক-নিকরের ওহি! ওহি!শব্দে স্থান নির্দেশ করিয়া—আজ অব্যর্থ আয়োজনে অ-হেরা সামূ চর-মন্মথ-ব্যাধ, হরিণাক্ষী-রাধা-হরিণীকে বধার্থ বনে ফিরিতেছে! (আহেরা যাহাকে দেখা যার না) এবং এইরূপ মহা-বিপন্না ও কল্প্র-শরে—জর্জ্জিরতা ধনী রাধা, একাকিনী কুঞ্জে অবস্থিত হইয়া কেবল তোমার পথ নিরীক্ষণ করিতেছে!

মাধব! তুমি বড় দীর্ঘ হত্তী!! (মহর) যাহা হউক আর কণার্দ্ধ মাত্তও বিলম্ব করিও না, মধুযামিনী (এখানে মধুমনী যামিনী) অতি কুলা আবার যাইতেও হবে অনেক দ্র, বিশেষতঃ প্রিয়দখী রাধা অধীরা হইরা কেবল হর বাহির করিতেছে, তাহার পক্ষে এক একটি নিমেষ, কোটী যুগের স্থার অফুরস্ত হইরা উঠিয়াছে!

আশা-পাশ গলে লেই বৈঠলি, প্রেম-কলপ-ভক্ন-মূলে কিয়ে অমিয়া—কিয়ে ধরল গরল-ফল! গোবিন্দদাস কছ ফুরে!

## ( 38 )-- (क्षांत ।

শুন শুন সহচরী-চরিত অপার— যাকর বশ—রস—কেলী-কলপতরু, সবস্থ-সাগর-সার ! গু। ফুলি রসাল, রসিক-পিক ঘৈছন, মধু-ঋতু আনি দেখায় যৈছন, যামিনী, চান্দকি চান্দনি, তপত-চকোরী-পিবায়—

স্থী ভাবাবিষ্ট—গীতক্ত্তা গোবিল ক্বিরাজ শ্রীরাধার ত্থে ফ্ৎকার ক্রিতে ক্রিতের মূলে বিনিয়াছিল, কিন্তু তাহার ভাগ্যে ফল লাভ হুইতেছে গ্রল!! (প্লাম্ভ সমুজের পাঠ "দীপ প্রারল"; তাহার অর্থ দীপপ্রজ্জানত ক্রিল।

পদকরতকৃতে—মাধব ! মনমথ ফিরত অহেরা—ইতি পদে এ গীতের আরস্ত।

(১৪) সহচরি-দৃতির-সঙ্গিনী (গীতকর্তা হরিবর চ) আনন্দে স্থী-সমাজবর্তী হইর। স্থীগণকে বলিতেছেন:—সকলে সহচরীর অপার-চরিত্র-মহিমা শ্রবণ কর, সকল-স্থ-সাগরের সার-নিধি, রস-কেলীর-করতক নাগরেন্দ্র, ক্রীড়াপুত্তলিকার স্থায় ইহার অধীন। এই দেখ—বসস্তথ্যত্ যেমন আপন প্রস্তাবের গুণে রসলুজ-কোকিলকে আদ্র মৃক্লের নিকট আনম্ন করে (ফুলিরসাল—আদ্র-মৃক্ল) এবং যামিনী যেমন স্বকীর স্বাভাবিক শক্তিতে তপ্ত-চকোরীকে চল্লের কিরণামৃত পান করার; স্ক্গ্রণে মণ্ডিতা (আগোরি

रेज्हन महहती, भवलार चारगाती, हतिभ-वतिथ-वतिथात साधव चानि, मिनात्रलि साधवी, हतिवल्ल तमगात्र ।

### ( ১৫ )—শ্রীগান্ধার।

বব হরি হেরল রাই মুথ ওর—
তৈছনে ছল ছল নয়নকো লোর !

যব পছঁ কহল লছ লছ বাত—

তবহি কয়লধনী অবনত মাথ !

যবছ ধরল পাল, অঞ্চল-বাস—
তৈপনে ভল তল তকু পরকাশ !

যব হরি পরশল কঞ্ক সঙ্গ—
তৈথনে পুলকে পুরল ত্ত অল।
পুরল মনোরথ, মদন উদ্দেশ,
কহে কবি শেখর পীরিতি বিশেষ।

মণ্ডিতা ) সহচরী সেইরূপ রুঞ্চ নিকটে গমন করিয়া স্বকীর স্বাভাবিক প্রভাবে গমনমাত্র হর্ষের-বর্ষা স্কলন করিলেন। এ জগতে কথনও বর্ষাকালে — বসস্ত ও মাধবী কুস্থনের সন্মিলন ঘটে না কিন্ত আমাদের অত্লিত-গুণ-গৌরবিনী সহচরী তাহাই ঘটাইয়াছেন। দেখ—মৃহুর্ত্তে বিরহ-গ্রীম্মের অবসান-সাধন পূর্বক হর্ষের-বর্ষা সঞ্চার এবং তন্মধ্যে মাধবকে রাখিয়া মাধবীর সহিত মিলন করাইয়াছে। (মাধব শব্দের অর্থ—বসন্ত এবং রুঞ্চ। মাধবী—মাধবী-লতার ফুল এবং অতি স্বাধীন-কাস্তা-শ্রীরাধা)

(১৫) এই গীতও পূর্ব্বোক্ত সধীর উক্তি। ব্যাখ্যা অনাবশুক। নোর— অশ; ধরল—ধরিল; অঞ্চলবাস—বস্তাঞ্চল; উদেশ—উদ্দেশ্য।

পদক্ষতক্ষতে—"রাই যবে হেরল হরি মুথ ওর" "লোচন জোর" ইত্যাদি পাঠান্তর আছে।

#### ( >७ ) दक्तात ।

রতি-রণ রদ্ধ—ভূমি, রুন্দাবন, রণ-বাজন পিকরাব, ছুল্ছ চঢ়ল, মন—মথ-মদ-কুঞ্জেনে\*, পরিমলে অলীকূল ধাব। দেখ স্থি। রাধা মাধ্ব—মেলি— দোহ কো—চপল-চরিত নাহি সম্বিয়ে, কিয়ে কলছ— কিয়ে কেলী ? ॥ গুল।

ত্ত ভূজ-পাশে, তুত্ ঘন বাদ্ধই, অধর-হংধা করু পান, তুত্ কুপুর ধ্বনি, ঘন-মণি-কিলিংণী—কল্পণ বলম নিসান! জর জর, চন্দন—কবচ, কুচ-কঞ্চ্চ, বিপুল-পুলক-ফুল বাণ, আকুল, বসন—রসন মণি-অভরণণ গোবিন্দ দাস রস গান।

ইতি শ্রীগীতচিন্তামণো পূর্ব্ব বিভাগে, একোনবিংশতি কণ্দা।

<sup>(</sup>১৬) নিদান—নি: স্বন অর্থাৎ শব্দ। থোদ্ব্রণণ যেমন কবচ (বর্ল্স) পরিধান পূর্ব্বক বৃদ্ধে প্রবৃত্ত হর তেমনি আমাদের নাগরেক্স-শেশর চন্দন-চর্চার্রপ কবচ এবং নাগরী-সামাজী কাচুলিরূপ কবচ পরিয়া কেলীযুদ্ধে প্রমন্ত হইয়াছেন, বিপুল পুলকরূপ ফুলশরে উভয়ের কবচই জর জর হইয়া উঠিয়াছে। পরিহিত বসন, ক্ষুদ্র-ঘণ্টিকা (রসন), ও মণি-নির্শিত অভরণ সমূহ আকৃল অর্থাৎ এণোমেলো হইয়া পড়িয়াছে!!

পদকল্পতকর পাঠান্তর—\* চঢ়ল মনোরথে, দোসর মনমথে; চিকুর শিখি চন্দ্রক (এই গীতে পূর্ব্বোক্তা সহচরী, সথী সমৃতকে লতা-বাতারন তলে লইরা গিলা রস-শীলা প্রদর্শন ও আখোদন করিয়াছেন)।

# ঞ্জীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### অথ বিংশতি ক্ষণদা।

# ( > ) खीरगीतहस्य-पूषि ।

নাচে গোরা, প্রেম ভোরা, কণেবলে হরি,
কণে বৃন্দানন, করয়ে স্মরণ, কণে কণে, প্রাণেশ্বরী।
যাবক-বরণ, কটির বসন, শোভাকরে গোরা-গায়—
কথন কখন, যমুনা বলিয়া, স্থ্যধূনী-ভীরে ধায়!

জলোচ্ছাদের উজান-স্রোত,—নিম্নগামী স্বাভাবিক লহরী-তরঙ্গ, এবং ঘূর্ণাবর্ত্ত ভেদে, সমুদ্রের প্রবাহ যেমন ত্রিবিধ, প্রেম-সিজু বিশ্বস্তরের প্রেম-প্রবাহও, তেমনি তিনভাবে প্রকটিত হইতেছে। ঐ দেখ—নাচিতে নাচিতে কথনও সাধারণ-ভক্ত-সাধকের স্থায় 'হরিবোল' বলিতেছেন। আবার ক্ষণেক্ষণে ব্রজ-নাগরভাবে—রুদাবন স্থরণ করিতেছেন! রুদাবনের স্থরণ মাত্রে প্রাণেশ্বরী-রাধার স্থৃতিতে, প্রাণ পরিপূর্ণ হইয়া যাইতেছে, তাহারপর প্রগাঢ় প্রেমের স্থভাবে তদ্ ভাবাস্থাদনরূপ নিজ-গোভ জাগ্রত হইয়া—শ্রীরাধার ভাবও চেষ্টা সর্ব্বোগরি প্রাধান্ত লাভ করিতেছে! তাহার নিদর্শন ঐ প্রভাক্ত দেখ—কটি-তটে পরিহিত, অলক্ষকারণ—বদন্ধানির দ্বারা সর্ব্বাঙ্গ আবরণ করিলেন, এবং ক্ষণ্ড-দর্শন-পিপাসোন্মাদিতা-শ্রীরাধার—ছল করিয়া বারম্বার ধর্মনার জলে গমনের স্থায়—ধ্যুনা জ্ঞানে, স্থরধূনীর দিকে ধাইয়া ঘাইতেছেন। স্থাবোও দেখ—স্থানের-মূন্লীর, মধুর ধ্বনি গুনিয়া শ্রীর্ষ্ভান্ত কুমারী যেমন উন্মাদিতা ও অশ্র-প্রতন্ত্রনা হন, তেমনি মৃদল-করতালের—তাথই তাথই

<sup>( &</sup>gt; ) দেথ—আমার প্রেম-সিন্ধু গৌরহরি প্রেমে বিভার হইয়া, সন্ধীর্ত্তনে নৃত্য করিতেছেন।

তাথই তাথই, মৃদস্ন বাজই, ঝনঝন করতাল, নয়ন-অস্থৃত্বে, বহে হ্য়েনদী, গলে দোলে বনমাল। আনন্দ-কন্দ গোঁরচন্দ্র অকিঞ্চনে বড়দয়া। কুষ্ণ দাস, করত আশ, ও পদ-পঙ্কজ-ছায়া।

### (२) শ्रीनिज्यानमहस्त्रः यु,---भाहिष्।!

নাচে (পহু)-নিত্যানন্দ, ভূবন-আনন্দ-(কন্দ), বুন্দাবন গুণ শুনিয়া, বাহু যুগ ভূলি, (স)ঘনে বলে হরি, চলত মোহন ভাতিয়া!

ঝন ঝন-ধ্বনি শ্রবণে, প্রেমানন্দে মন্ত হইয়া উঠিয়াছেন। নয়নাযুক্ত হইতে বেন মন্দাকিনীর ধারা বহিতেছে আর গলার বনমালা অবিরত দোলিতেছে! আমার ভ্বন-মকল-গোর হিন্নিয়েমন আনন্দের কন্দ তেমনি অকিঞ্নের প্রতি মহাদয়াবান্! ( কন্দ অর্থ উভিদের পরিপোষক আন্বাদ্য মূল। যথা আলু মূলো ইত্যাদি ) যাহার কেহ সহায় নাই এবং কিছুই সম্বল নাই কর্রণাবতার গোর স্থলন্ন এরপ জীবের এক্ষাত্র বন্ধু!

গীত রচিরতা কৃষ্ণদাসের দৈন্তোক্তি-মর ভণিতার ভাবার্থ এই বে—আমি সহার সম্বাদ্য সম্পূর্ণ নিরাশ্রয়। হে গৌর-স্থানর! তোমার পদ-পক্ষেত্র ছারা আমার এক মাত্র ভরসা। তাহারই আশা ধরিরা আছি। বঞ্চিত করিও না! (পদ্ধাক্রতক এবং গৌর পদতর্কিণীতে এ গীতিটি—"গোবিন্দ দাস" ভণিতাযুক্ত।)

<sup>(</sup>২) দেখ-ভক্তগণ, বৃন্দাবনের গুণ-শীলাদি গান করিতেছেন আর

পদ করতক ও গৌরপদ ভরঙ্গিতিত এই গীতটি লঘুত্রিপদীচ্ছনে নিধিত হুত্রাং—বন্ধনীভুক্ত পছ এবং কন্দ প্রভৃতি শব্দ নাই এবং নিম্নলিধিত পাঠাস্তর বর্ত্তমান— + বলে হরি হরি, চলন মহুর ভাতিরা।

किया (म माध्रो, यहन-हाजूती, तर् (७) शनाधत (हतिया पं माध्य, (शीती माम, मूक्म व्यीनियान, शांखक ममग्र व्यासाध

त्थारम भगभन, हत्न चाथ भन, धति(शां) भनाधतः हाछ तत्र । अन्।

ভাহা শুনিরা শুনিরা, নিধিল-ভূবনের-আনন্দ-সমষ্টি-রূপ-পাদপের—প্ষ্টি-বর্দ্ধক আখাদা মৃল—(ভূবন-আনন্দ-কন্দ) আমার প্রভূ-নিতাই-চাঁদ, আনন্দভরে নাচিতে নাচিতে চলিয়াছেন এবং স্বকীয়—ভক্ত-স্বরূপতা-প্রকটন করিয়া ভূজ মৃগল উত্তোলন পূর্ব্বক "হরি বল" বলিতে বলিতে মৃগপৎ, নামামৃত-আখাদন ও বিতরণ করিতেছেন!

আচারের সহিত প্রচার এবং আস্বাদনের সহিত বিতরণ—আমার নিতাই চাদের অপূর্ব্ধ সাক্ল্যময় অভিনব লীলা।:তাই আমার নিতাই-চাদ বাহু তুলিয়া "হরি" বলিতে বলিতে প্রেম-রঙ্গে মোহন-ভঙ্গীতে চলিতেছেন।। দেখ দেখ—আনন্দ ভরে চলিতে চলিতে, এক্ষণে শ্রীগদাধরকে দেখিয়া—তাহার বদন পানে চাহিরা রহিলেন।

এই গদাধর—'পণ্ডিভ-গোস্বামী' নয়। ইনি শ্রীনিত্যানন্দ চক্ষের প্রিয় পার্মদ—দাস-গদাধর। ইহারই প্রভাবে কাজীগণ পর্যান্ত হরি হরি বলিত। শ্রীগৌর-গণোদ্দেশ দীপিকাতে আছে—শ্রীবলদেবের প্রিয়াগ্রণী পূর্ণানন্দা পোপী ইহাতে প্রবিষ্টা। যথা—

রাধা বিভৃতি রূপা যা চন্দ্র কান্তি: প্রাস্থিতা। সাম্ম গৌরাঙ্গ নিকটে দাস বংশ গদাধর: ॥ ১৫৪ ॥ পূর্ণানন্দা ত্রজে যাসীবল দেব প্রিয়াপ্রণী। সাপি কার্য্য বশাদেব প্রাবিশত্তং গদাধর ॥ ১৫৫ ॥

এটিচতন্ত চরিতামৃতে আছে—"গদাধর দাস গোপী ভাবে পূর্ণানন্দ, যার খরে

<sup>া</sup> গদাধর মুখ হেরিরা। ‡ মাধব গোবিন্দ, শ্রীবাস মুকুন্দ, গাওত ও রক্ষ ভাবিরা। § পাতিরা প্রেমের ফাঁদ। সমস্তই পদকল্লতক ও গৌরপদ তর্দ্বিশীর পাঠান্তর।

ও চান্দ বদনে, হাসঘনে ঘনে, অরুণ লোচন-ভঙ্গিরা কুল্ল্ম-হার, হুদি-দোলত ,ত্ত্বর সহচর সঙ্গিরা; পা রাতৃল-চরণে, সঞ্জীর বাজত, রঙ্গের নাহিক ওর মনের আনন্দে, শ্রীনিবাস-সূত, এ, গতি গোবিন্দ ভোর!

দান কেণী কৈ দ নিত্যানক"। অতএব গদাধর দাসের দর্শনে বে, সময়ে সময়ে প্রীনিত্যানক চক্রের—পূর্ব্ব-লীলার নাগর-ভাব জাগিয়া উঠিত, এই পয়ারটিই তাহার যথেষ্ট প্রমাণ। তাহাতেই আজ বৃন্দাবন-গীতির মণ্ডলীতে পূর্ব্ব-প্রিয়-তমা-প্রীগদাধর দাসের দর্শনে তাহাঁর হৃদয়ে আপনার বলদেব-স্বরূপের নাগর ভাবও রাদ-রস উচ্ছলিত হইয়া উঠিয়াছে।

অন্তরঙ্গ ভক্ত গায়ক— এমাধব ঘোষ, এগোরী দাস পণ্ডিত, এমুকুন্দ দন্ত, এবং প্রীবাস পণ্ডিত প্রভ্-বরের ভাবটি ব্ঝিতে পারিয়া সময়োপযোগী রসের গীতি—গাইতে আরম্ভ করিলে—আমার নিতাই স্থানর—প্রেমে গদ্ গদ হইয়া গদাধরের হস্ত ধারণ পূর্ব্ধক গানের সঙ্গে সঙ্গে নাচিতেছেন!! নৃত্যরক্ষে অর্ধপদে চলিতেছেন! আর চাঁদ বদনে ঘন ঘন হাদিতে হাসিতে—কত ভক্তীতে অরণ লোচনে—গদাধরকে হেরিতেছেন! নৃত্যের তরক্ষে পরিসর বক্ষে পৃত্য মালা দোলিতেছে—রাতুল চরণে মুপুর নিনাদিত হইতেছে, রঙ্গের অববি নাই!!( স্থ্যর — স্থাটিত, স্থাজিত)।

এগীত রচয়িতা ঠাকুর গতিগোবিল আচার্য্য—প্রেমাবতার শ্রীল শ্রীনিবাস আচার্য্য প্রভূর পুত্র। তিনি লীলারসে ভূবিয়া ভণিতায় বলিতেছেন:—আমি বিভোর হইয়া গিয়াছি! আর আমার বর্ণনের শক্তি নাই।

ৰ হিয়াৰ উপৰ, অ্বড় বঙ্গিয়া সঙ্গিয়া। ত্ৰুপ, ক, ত, এবং গৌ. প, ত।

#### (৩) বরাড়ি— মফটতালি তালেন।

বদসি যদি কিঞ্চিদপি দস্ত রুচি কোমুদী, হরতি দর-তিমিরমতিঘোরং,

च्यु त्रत्रधत्रभी थरत,

ভব বদন চন্দ্ৰমা,

রোচয়তি লোচন-চকোরং॥ >॥
(প্রিয়ে! চারুশীলে!) মুঞ্চ, ময়ি মানমনিদানং—
সপদি মদনানল, দহতি মম মানসং,

८नि गूर्थ-कमन-मध्-भानः॥ खः॥

এইটি শ্রীগীতগোবিন্দের (১০ম দর্গ) ১৯শ, সংখ্যক গীতি। পূজারী গোস্থামী কৃত ইহার টীকা এইরূপ:—

হে প্রিয়ে চাক্নীলে ! ময়ি মানং মুঞ্চ ; কীদৃশং ? অনিদানমকারণং ; চাক্রশীলায়া অকারণ মানস্থাযুক্তথাদিতার্থঃ । যতঃ সপদি তৎক্ষণং জন্মান-সমকালমেব কামাগ্রি র্মন মানসং দহতি ; ততো মুখ-ক্মল-মধুপানং দেহি, অন্তর্দাহস্ত পানেনেব শান্তিরিতার্থ ॥ গু॥

ত্রাগমিদং দ্রেহস্ত, হে প্রিয়ে ! বং যদি কিঞ্চিদপি বদিস—তদা, দস্তক্ষিকৌমুদী মমাতি ঘোরং—ভয়জনকং তিমিরং হরতি ; তথা তব বদন-চক্সমাশ্চ
মম লোচন-চকোরং, ক্রুরদধরদীধবে—উচ্ছিলিতাধর-স্থা পানার্থং দাভিলাষং
করোতি । নয়নপ্ত চকোরত্বেন ব্দেকজীবন্ত মুক্তং ॥ ১ ॥

প্রিরে । চারুণীলে । তোমার আচরিত সমস্ত — চিরদিন চারু হা-পূর্ণ, আজ

<sup>(</sup>৩) শ্রীরাধার মান কিঞ্চিৎ প্রশমিত হইয়াছে। কিন্তু এখনও আবেগ অপগত হয় নাই, দীর্ঘ নিঃখাস বহিতেছে, অথচ কান্তের সহিত পুনর্মিলনের আকাজ্জাকুলিত চিত্তে—স্থির প্রতি বারম্বার সলজ্জ দৃষ্টিতে চাহিতেছেন, এই রূপ সমরে শ্রীকৃষ্ণ উপস্থিত হইয়া, প্রাণেখনীকে বলিতেছেন—( ধ্রব-পদ ইইতে আস্বাদন আরম্ভ )

সভ্য মেৰাসি যদি, হুদভি ! মরি কোপিনী, দেহি ধর-নয়ন-শর-ঘাতং,

चित्र जूब-वद्भनः,

क्रनग्न ज्ञान-चंधनः

ষেন বা ভবতি হুথ জাতং ॥ ৩ ॥

च्यति यम कीवनः,

ञ्मिनि यम पृथ्यः,

ত্মিদি মম ভবজলধি রত্নং,

ভবতু, ভবতীহ মরি,

সভত সমুরোধিনী,

তত্র নম হাদরমতি যত্নং ॥ ৪ ॥

স্থাতি ! প্রসন্ধবদনে ! যদি সভ্যমেব মন্নি কোপিস্তানি তদা থরা এব নরন শরাকৈঃ প্রহারং কুক ; তেন চেরভ্যাসি তদা ভূজাভাগং বন্ধনং ঘটন্ন, স্তেনাশি অসম্ভোব স্তদা রুদৈঃ দশনৈঃ খণ্ডনং জনম্ব, কিং বছনোক্তেন যেন বা স্থাজাতং, ভবতি—স্থাম্পণদ্যতে তদেব কুক ; অত গৃঢ়োহভিপ্রান্ধঃ স্বীরেহপরাধিনি দশু এবোচিতো, নোপেক্ষেতি ভাবঃ ॥ ৩॥

নমু ছবি মম কোপস্ত কঃ প্রাসক ? দণ্ডস্ত বা; বা তবপ্রিরা সৈব দণ্ডং করোছিতি চেত্তদাহ—ছমেব মম-জীবনং অসি; ছমেব মম ভ্বণমসি; ভছাতি-বেকেণাক্তনীবনাদিক মপিচেরাস্তি। তহ্যক্তাক্তনানাং কা বার্ত্তেত্যর্থ: বতো

বিপরিত করিতেছ কেন ? আমার প্রতি অকারণ মান অপনন্ধন কর। দেখ—
বদবধি তুমি বিমুখী হইরাছ তদৰধি ( সপদি ) মদনানল আমার হুদর-দাহ করি
তেছে ! ঔবধের বাফ প্রয়োগে অন্তর্জাহ প্রশমিত হর'না, অতএব এক বার
এই প্রদাহের সিদ্ধোবধি—তোমার মুখ-কম্লের মধু—পান করিতে দিরা
আমাকে বাঁচাও।

দেখ—তোষার দাঁন-মৌনতা দর্শনে আমার মন,—ভীতি-তিবিরাক্লিত ও মুম্মান !! ইহা দেখিয়াও কি তোমার দরা হইতেছেনা ? বাহা বলিতে ভোষার ইচ্ছা হয়—ছই একটি কথা বল, তাহা হইলেই ভোষার দত্ত-কান্তি (ফুচি)-ক্লগ নীল-নলিৰাভ মণি,

তবি ! তব লোচনং,

धातराजि (काकनम ज्ञानः,

কুত্ম-শর-বাণ---,

ভাবেন যদি রঞ্জাসি-

कृष मिनरमञ्जू ऋभः॥ १॥

ভব সংসার: স এব জলধিন্তত্র বং রত্নরূপা—সর্বপ্রেরসী শ্রেষ্ঠেত্যর্থ: যথা রত্না-করাৎ বিচিত্র-রত্নং লক্ষ্যা আত্মানং পূর্ণং মহুতে, তথান্মিন্ লোকে স্ত্রীরত্নং ত্বাং প্রাপ্য ক্বতার্থ>স্মীতি ভাব: অতএব ভবতীহ নিরস্তরং মধ্যসূক্লা ভবত্বিত্যর্থ— মম ক্রদর্মতিশরেন ধত্নো ধত্য তৎ ॥ ৪ ॥

শুগণ-পরীক্ষণোপকরণখেন চেন্সামন্ত্রীকরোবি, তথাপি চরিতার্থস্থামিত্যান্থ
—হে তথি ! তব লোচনং নীল-নলিনাভমপি সংপ্রতি রক্তোৎপলরূপং ধারম্বতি,
তদেতেন ঘ্যামুরঞ্জন বিদ্যান্তি ইত্যবধারিতং,এবামুরঞ্জন বিদ্যা মরি পরীক্ষ্যতাং;
পরীক্ষাপ্রকারমান্থ—ঘং যদি রুক্তং রুক্তরূপং মাং, তেন লোচনেন কুমুম-শরবাণ ভাবেন সামুরাগদৃষ্ট্যা রঞ্জয়িন, তদিদমেব তম্ম বোগ্যং ভবতি, শিক্ষিতা
বিদ্যা, প্রয়োগে নৈব জ্ঞায়তে ইত্যর্থঃ ॥ ৫ ॥

জ্যোৎপার-জামার অতি-বোর-ভর-তিমির বিদ্রিত হইবে। প্রিয়ে । তোমার বদন-চক্রমা, আমার ময়ন চকোরকে খীর অধা-কৌমুদী পানার্থ, অতি লালসিভ করিয়া তুলিতেছে, একটিবার প্রদর বদনে কথা কও।

আর, প্রেম-পরীকার্থ না হইরা — যথার্থই যদি তুমি আমার প্রতি কোপিনী ইইরা থাক, তবে আমাকে দণ্ড দাও। অপরাধ—প্রকৃত হউক বা করিত ইউক—কোধের পাত্রকে দণ্ডদান করিলে ক্রোধের শাস্তি হয়। অভএব হে স্থাননা। (স্থাতি) আমাকে স্থতীক্ষ নয়ন-বাণাঘাত কর। তাহাতে ক্রোধের শাস্তি না হইলে ভূজ-লতার ঘারা—বন্ধন কর। তাহাতেও যদি প্রসন্ধতা না জন্মে তবে—দন্তাঘাতে কত বিক্ষত কর। অথবা মর্দনাদি বে রূপ দণ্ড করিলে তোমার স্থান্দের হর তাহাই কর।

প্রাণাধিকে ! অপরা কোনও রমণীতে আমার আসজ্জির সলেহ, ক্লাচ

ফ্রত্ ক্চ ক্স্ডারেরপরি

यणि यक्षती,

রঞ্জমুতু তব হাদম-(দেশং,

রসভু রসনাপি তব--

चन-जचन-मछ्दल,

(चाध्यक्र मनाथ-निरम्भः ॥ ७ ॥

ছল-কমল-গঞ্জনং,

ग्रम कापग्र-त्रञ्जनः,

জনিত রতিরঙ্গ পরভাগণ,

ভণ সস্থণ-বাণি,

করবাণি চরণম্বাং,

मत्रमसम्मलकक-त्रोगः ॥ १ ॥

এতং শ্রবণেন কিঞ্চিং প্রসন্থাং বীক্ষ্য চা হুর্যোণাভীষ্টং প্রার্থয়তে—ততক মণিমালা কুচকুন্তমারুপরি চঞ্চলা ভবতু, তেন কিংশান্তব-ছাদয়দেশং শোভয়ত্ কাঞ্চাপি বন-জঘন-মণ্ডলে শব্দায়তাং; কীদৃশং ? শব্দং কুরুতাং—মন্মথস্রাক্ষাং ঘোষয়তু। বচনভঙ্গা প্রার্থনাবিশেষোহয়ং॥৬॥

তথাপ্যস্ত্রমাহ—হে স্লিগ্ধ-বচনে ! ভণ—আজ্ঞাপর, কিমাজ্ঞাপরানি ?
তব চরণদ্বমং সরসেন লসতালক্তেন রাগো যত্র তাদৃশং করবংণি ; যতঃ স্থলকমলগঞ্জনং—গঞ্জয়তীতি গঞ্জনং তত্তিরস্থারক মিত্যর্থং আরক্তথাং কৌমল্যাচ্চ
—ক্ষতএব মম হৃদয়রঞ্জনং, যতো জ্ঞানিতো রতিরক্ষে পরভাগঃ পরমশোভা বেন
তথা ৭ ॥

'

করিও না; আমার হৃদয়ে তুমিই প্রাণ রূপিণী; সেখানে আর কাহারও অব-হানের স্থান নাই। আমার অঙ্গেতেও তুমিই—আমার ভূষণ স্থরূপিনী—গর্কের গৌরবেরও সৌন্দর্য্য-বর্দ্ধনের নিদান; তুমিই আমার সংসার রূপ সমুদ্রের গরম-রত্ন; সাগর—সেঁচা মাণিক। তুমি যাহাতে আমার প্রতি অনুক্রণ অনুক্র গাক, আমার হৃদয়ে সত্তই সেই যত্ন।

হে ক্যান্সিণি ! তোমার ইন্দীবর-স্থানর-নীল-নয়ন, ক্রোধে রক্তপছের (কোকনদ , বর্ণ হইরাও মাধুরা-মণ্ডিত ! যেন তোমার অলৌকিক-অন্থরঞ্জিনী-বিদ্যার পরিচয় প্রদান করিতেছে ! কন্দর্প-দীপ্ত-বিলাদ-ভঙ্গীময়-দৃষ্টি দান দারা স্মর-গরল-খণ্ডনং,

মমশিরসি মণ্ডনং.

(पहि भाभाव मूनातः,

জ্বতি ময়ি, দারুণো,

गमन-कमनानन !

হরতু, ভতুপাহিত বিকারং॥ ৮॥

অত ন্তলকীকারেণৈর মম তাপোপশমন মিতি সর্ব্ধ-বিজয়ি তদ্গুণ কুর্ত্তি পরবশং সন্—প্রার্থয়তেঃ—হে প্রিয়ে! মম শিরসি পদ-পল্লব মর্পন্ন, কীদৃশং ? উদারং—বাঞ্চিত প্রদং, অতো মহং। কিমর্থং ? ক্মর—গরলং থণ্ডয়তীতং। নকেবল মিদং থণ্ডলং—ভূমণঞ্চ। কথ্যেবং প্রার্থয়সে ? ইত্যাহ—কাম-ক্লেশ এব দারুণোহনলঃ—অয়ি, ময়ি জলতি, অতন্তেনোপাহিত বিকারং হরতু, ভদ্ধারণ মাত্রেন তাপোহপ্যান্তলীতার্থঃ॥৮॥

আমার খ্রামতমুকেও মৃদ্ধিএইরূপ অন্তর্জিত কর, তবে ঐ বিদ্যার আরোও অপূর্ব্ব পারচয় প্রদর্শিত হউবে।

এই সকণ রসময়-বচনে এবং নিজ অঙ্গ-পরিমলাদির গুণে—জ্রীরাধার ক্লারে সারস্ত-সঞ্চারের লক্ষণ অমুভব করিয়া—নাগরেন্দ্র-শেথরের সাহস বৃদ্ধি ইলা। তথন অভীষ্ট-প্রার্থনাময় বচনে কহিতে লাগিলেন – প্রিয়ে! ঐ দেখ তোমার আদরের অলক্ষার গুলিও সানার স্থায় বিষাদিত হইয়া রহিরাছে! ইহাদের অপরাধ কি ? তোমার কুচ-কুস্তোপরিস্থ ঐ মণি-মালা (মণি-মপ্ররী,) বিষাদ-বিকলিত হইয়া পড়িয়া আছে, উহাকে আনন্দ চঞ্চল কর। ফুর্বিপ্রাপ্ত হইয়া ভোমার হৃদয়ের শোভা সম্বর্জন কক্ষক। ঘন-জ্বন-মগুলের (বন অর্থ ঘনীভূত, শ্লেষার্থ—মধ্যম-নৃত্যশীল) মেথলা শ্রিয়মাণ হইয়া নীরবে কাল্যাপন করিতেছে। সে মনের সাধে শব্দ (রসন) উদগীণ কর্মক (রসতু) মন্মথের নিদেশ-ঘোষণা কর্মক।

কলা-কোবিদ নাগরের কৌশল কলবতী হইল না! মানিনী নিরুত্তর। ভথন বিদগ্ধ-শিরোমণি কহিলেছেন—মধ্ব-ভাষিণি! যদি আমাকে অধিক আকাজ্ঞার অনুপ্যুক্ত মনে কর, তবে হৃষিষ্ট বচনে শুধু এইমাত্র অনুষতি ইতি চটুল-চাটু-পটু, চারু মূর বৈরিণো, রাধিকামধি বচন যাতং, জরতি পল্মাবতী—রমণ, জরদেব কবি—ভারতী, ভণিত মতি শাতং॥ ৯॥

ইত্যুক্তপ্রকার: ম্রবৈরিণো রাধিকাং লক্ষীক্বত্য বচনসমূহো জয়তি— সর্ব্বোৎকর্ষেণ বর্ত্ততে; পরমপ্রেয়সী বিষয়্বাদিতি। কীদৃশং ? চটুলং চঞ্চলং, অনেনপ্রকার মিতিয়াবং চটুল-চাটুনাপটু—মানাপনয়ন-সমর্থং চাক্ষ—অনুরাগ-শোভনং; পুন: কীদৃশং ? অতিশাতং—পরমন্থপ্রাদ মিত্যর্থ: পুন: কীদৃশং ? পদ্মাবতী শ্রীরাধিকা তৎপরতয়া তথানায়ী শ্রীক্রয়দেবপত্নী তদ্গুণবর্ণনাদিনা তন্তা রমণস্ত জয়দেব কবে ভারত্যা ভণিতং॥ ১॥

কর—স্থলকমলাধিক স্থানরারক্ত এবং আমার হাদরের রাগবর্দ্ধক —উপজাত -রতি-রদে অতুল শোভামর—তোমার এ র।তৃণ-চরণ-যুগল আমি অলক্তক-রাগে রঞ্জিত করিয়া দিই।

আর—কলর্প বিষ্-নাশক—বাঞ্চিপ্রদ (উদারং) তোমার ঐ পদ-পরব, অবঙ্কার রূপে একটিবার আমার শিরোদেশে সমর্পণ কর। নিদারুণ-মদনানল আমার দেহ দাহ করিতেছে, উহা নির্বাপিত হউক।

ভাব-চাঞ্চল্যমন্ন এই সকল প্রীতি-সম্ৎপাদক বাক্যাবলী যাহা, সকল ক্ৎসা-বিধ্বংশী ক্লফ (মুরারী) শ্রীরাধিকার প্রতি প্রয়োগ করিরাছিলেন— পদ্মাবতী-বল্লভ জন্মদেব কবির বিরচিত প্রমন্থ্যদ এই বাক্যাবলীর ভ্র ইউক।

#### ( 8 )—ধানশি।

एष्य मथि ! नागत-नाह— छकान— কুম্বল-পিঞ্চে, চরণ-নিরমঞ্জল, অবহু কি সাধ্বি মান ? मृक्षि कारना, रति-तारे পतिरति, अभनक जान ना कान! বিধগধ-রাজে, কোই পরিবাদব, তেঞি কি, তেজবি কান ? ষা কর, মুরলী-মালাপনে কত কত কুল-রমণীগণ ভোর, ভোহারি প্রেমভয়ে, বাত নাহি কহতহি ! অতএ কি মানসি ८थात १

আমি জানি.—রাধাকে ত্যাগ করিয়া হরি কথনও—সপ্লেও অন্ত রমণীকে ভাৰিতে জানে না। না ব্ৰিয়া যদি কেছ এমন বিদগ্ধ-রাজকে কোনও **অক্তান্ন প**রিবাদ দেয়, তাহাতেই কি তুই নিজ কান্তকে পরিত্যাগ করিবি ?

হার হার ! শুধু যাহার মুরলীর-ধ্বনি শুনিরাই শত শত কুল-ললনা বিভোর হয়, ভোর প্রেম-ভরে সেই ভূবন-ত্ল'ভ নায়কের মুধে কথাটি সরিডেছে না। ইহাতে বৃঝি তোর আরোও বিপরীত বৃদ্ধি উপন্ধাত হইয়াছে, তাহারও তদীয় ব্যবহারের মৃণ্য যৎসামান্ত (থোর—অল্ল) মনে করিতেছিস্ ? যাহা হউক একটি কথা, তোর মনে করিয়া রাখা উচিত—"প্রেমের প্রদাহ কেবল প্রেম-জলেই (অমুকুল স্নিগ্ধ আচরণে) শীতল হয়। — মানের বেগে—নিরপরাধ-নাথের অপমানে-কিয়া মিগ্ধ-উপচার সেবনেও প্রেম-বত্রণার নিবৃত্তি কদাচ रत ना वतः এ नक्न वाज्यभागात अदक व्यात हत्र-- वस्ता व्यादां व वारक !"

<sup>(8)</sup> ज्थां नि यानिनीत यन টेनिन ना ! पिरिन्न-निक्नाम मागरतत পক হইরা কোনও প্রথম্ব কুমী, প্রেম-ভর্মন-বচনে শ্রীরাধাকে বলিতেছেন---স্থি। নাগর-শিরোমণি-নাথের, সৌজ্যু ( স্থজান-সৌজ্যু ও অভিজ্ঞতা ) একটিবার ভাবিয়া দেখ ! আপনার কেশোপরিস্থ ময়র পুচ্ছের স্বারা-নাগর হইরা তোর চরণ-নির্মঞ্চন করিলেন !! হার হার ! এখনও কি তুই মান সাধিবি ?

প্রেম্কি দহন, প্রেম-পয়ে শীতল, আনহি হোয়ত আন চল্দন, চল্ল, চাল্দনি—ততু-তাপই—গোবিন্দদাস পর্মাণ।

#### (৫) 🗐, शास्तात ।

আদর- বাদর, কত কত বরিথি । ক বচন—ম্মিয়া-রস-ধারা, ও রস-সায়বে—ডুবি, মরত, পুন ণ পুন-ফলে পাওলু পারা। মাধ্ব। বুঝিফু-মো তোহে অবগাহি— নাগরী লাখে ভরল, তুয়া অন্তর, কো প্যবেশ্ব তাহি॥ ধ্রু॥

দেখ্—চন্দন, চন্দ্র ও জ্যোৎস্থা—সর্কপ্রকার তাপশান্তির সাধারণ উপ-করণ, কিন্তু প্রেম-যন্ত্রণাতে এ সকলে আরোও তাপ বৃদ্ধি করে।

উপস্থিতা অপরা সধীর ভাবাবেশে গাঁতকর্ত্তা গোবিন্দ কবিরাক্ত কহিতে-ছেন—যথার্থ!!

(৫) মানিনীর মনোবেগ কণঞ্চিং শাস্ত হওরায়, নাগরকে লক্ষ্য করিরা বিলিতেছেন—আদরের বাদর এবং কথার স্থারস-ধারা আর কত বর্ধণ করিবা ? এ বিদ্যার যে তোমার অধিকার অসাধারণ—তাহা আমি জানি, কিন্তু আমি, তোমার কপট-চ টু-রসের-সাগরে ডুবিয়া—মরিয়া—পুণ্যফলে পুনরায় (পুন—পুঞ্) পার প্রাপ্ত হইয়াছি ! অতএব আমার নিকটে এখন বিদ্যা প্রকাশ—বুথা।

মাধব ! সোমার জদরে অবগাহন করিয়া—আমি একথা স্থলররূপে ব্ঝিরাছি বে—তোমার জ্লয় লক্ষ লক্ষ রমণীর দারা পরিপূর্ণ ! এ জ্লয়ে আরে প্রবেশের স্থান নাই !! অতএব মন্মণের-ফার—জ্ফোশন-ব্চনাত্মক সঙ্গীত এবং মন্মধ-

শাদরে বাদর করিকত বরিথিনি। † জন্—ইতি দ্বয়, পদ-সমুদ্র ও পদ
 কয়ড়য়র পাঠায়র।

কি ফল ইঙ্গিত, নয়ন ভরঙ্গিত, লঙ্গাত সনমথ-ফাঁদে গ্রু
তুল্ নাগর-গুরু, মোহে পঢ়াওলি, কপট-প্রেমময়-বাস্ক্রে।
দূর কর লালস, রসিক শিরোমণি—ব্রজ্ঞ-রমণীগণ-দেবা !
গোবিন্দ দাস, কতন্তু গুণ গাওব, ভোহারি চরণে রন্তু দেবা §

## (७) শ্রীরাগ।

রাই ! কত পরীধিস আর ?
তুরা আরাধন মোর বিদিত সংগার,
যজ্ঞ, দান, জপ, তপ, সবভূমি মোর,
মোহন-মুরলী আর বয়ানকো বোল।
বিনোদিনী ! চাহ মুথ তুলি—
(তোমার) নয়ন নাচনে নাচে পরাণ—
পুত্নী।

পীত-পিন্ধন মোর তুরা অভিলাবে।
পরাণ চমকে যদি ছাড়হ নিখাদে,
রতন-মঞ্জীর কিবা পরাণ-পুতলী—
কত সাধে স্থা-সাচে বিধি নিরমিলি,
তাহে ভূষণ দিল রস পরসঙ্গ
দো মানে মলিন ভেল মনমথ-ভঙ্গ;

তর্গিত নয়নে সাভিশাধ-ঈক্ণণেক্ষিত প্রকাশের আর কিছু মাত্রও ফল নাই!
নাগর গুরু! কপট-প্রেমের বন্ধনে কি প্রকারে অবলা-বাঁধিতে হর এ অধ্যা
শিষ্যাকে তাহা উত্তম রূপে পড়াইয়।ছ, আর পড়াইতে হইবে না! ব্রজালনাকুলের ক্রীড়াদেব! রসিক-শিরোমণি! এখন রূপা করিয়া মনের লালসাটি
পরিহার কর। তোমার গুণ অফ্রস্ত! কত গাইব! এমন গুণ-নিধি তোমার
চরণে ধেন সেবাভিলায থাকে! শেষোক্ত কথাগুলি প্রাণেশ্বরীর স্থীভাবাবিষ্ট পদ-ক্র্তার উক্তি।

(৬) নবমী ক্ষণদার ১ নং গীতের সহিত তুলনা কর, এবং তরিমস্থ আস্বাদনী দেথ। মঞ্জীর শব্দের প্রচলিত অর্থ—নূপুর। কিন্তু এ অর্থ ধরিলে বাক্যার্থ বড়ই কন্ট-কল্লিত হয়। মঞ্জীরের একটি অপ্রচলিত আভিধানিক

<sup>া</sup> সঙ্গতি মনরথ ফাঁদে—ইতি প, ক, ড,। ১ কহ, তুহু গুণ গায়ত, হিন্তি চরণে মঝু দেবা—ইভি পদাযুত সমুদ্র।

#### ( ৭ )—বসম্ভ।

বিরচিতং চাটু-বচন-রচনং, চরণে রচিত প্রণিপাতং— সংপ্রতি মঞ্ল-বঞ্জ্ল-সীমনি—কেলি-শয়ন মতুযাতং ॥ ১ ॥ মুখে ! মধ্-মধন মতুগত মতুদর রাধিকে ॥ গ্রু ॥

অর্থ—"বন্ধন তত্ত" তাহাই গ্রহণ করিলে কিম্বা "মন্দির" শব্দ নিপিকর প্রমাদে মঞ্জীর হইরাছে মনে করিলে—বিনোদিনি! চাহ মুথ তুলি—গীডোক্ত এই কথার সহিত (তৎপরবর্তী অস্তান্ত কথার স্তার) শেষ ৪ ছত্রের এক প্রকার কষ্টকর অবয় হয়। যথা—"তোমার বদন থানি আমার প্রাণরূপ পুত্তনীর বন্ধন-তত্ত অথবা অবস্থান মন্দির; বিধাতা কত সাধে স্থধারসাচে ঢালিরা উহা নির্মাণ এবং তাহাতে রস-প্রসন্ধ রূপ ভূষণ প্রদান করিরাছে। আহা! আছ তাহা মানে মলিন!! এবং তাহাতে রস-প্রসন্ধ মাত্রও নাই!—মন্মুথ ভঙ্গ দিরাছে।

এইটি শ্রীগাত গোবিন্দের (একাদশ সর্গ) ২০ নং গীতি। ইহার পূজারী গোস্বামী ক্বত টীকা, যথা—

হে মুখে: সম্পৃতি অনুগতং মধু-মধন মনুগচ্ছ। অনুগতানুগমন-শৈধি-ল্যানুগ্ধে ইতি সম্বোধনং॥ ধ্ৰঃ॥

অমুগতি মাছ—বিরচিতা ভঙ্গা প্রতিপাদিতা চাটু বচনানাং রচনা থেন তং, চাটু-বচন-মাত্রেণ কথং জ্ঞেরামুগতি:—চরণে রচিতঃ প্রণিপাতঃ প্রণতি র্যেনতং, ত্বংসমীপ স্থিতারাং মরি কথং প্রার্থাতে ? সংপ্রতি তব প্রসাদ মানক্য মনোহর বঞ্জ কুঞ্জে সীমনি—মধ্য ভাগে বং কেলি-শরনং তত্ত গতং॥ ১॥

<sup>(</sup>৭) নাগরের—অমূনর এবং চাটু-বচন রূপ—পবনে, এ ক্ষণে মান-বেঘ অস্তরিত হইয়া—মানময়ীর, অভাব-স্থাতিত-বদন-শশধর প্রাকৃত্নিত হইয়াছে। দেখিয়া—আনন্দ-তর্মায়িত নাগরেন্ত, তত্ত্বে বঞ্ল কুঞ্জমধ্যে কেলীতলে উপবিট

খন-জ্বন, স্তন-ভার ভরে—দর-মন্থর-চরণ বিহারং
মুথরিত মণি-মঞ্জার মুপৈছি—বিধেহি মরাল-নিকারং ॥ ৩ ॥
শৃণু, রমণীয়-ভরং ভরুণীজন-মোহন—মধুরিপু-রাবং
কুন্থম-শরাসন-শাসন বন্দিনি, পিক-নিকরে, ভজ ভাবং ॥৪॥

এতরিশ্যা মৌনেন সন্মতিমূহমানা; শীঘ্রং গমন প্রকার মাহ—জবনে চ স্তনৌচ—জ্বনস্তনং, ঘনং সঙ্গতং যজ্জ্ঘন-স্তনং তম্ম ভারম্ম ভাবোহতিশয়ে। যক্তাঃ হে তাদৃশি। অভএব দর-মন্থর-চরণ বিহারং যথা স্থান্তথা তেন হংস পরিভবং কুরু। নৃপুর ধ্বনে হংস-রব পরিভাবিত্বা দিত্যর্থ॥৩॥

তত্ত্ব গণা কিং করোমি ? মধ্রিপ্-রাবং:শৃণু; কীদৃশং ? অতি রমণীরং অতএব তরুণী জনানাং—মোহজনকং; ততঃ কোকিল সমূহে কুতং ছেবং ত্যক্তা, ভাবং—প্রীতিং—কুরু। কুন্থম-শরাসন-শাসন-বন্দিনি হে যুবতাঃ "কান্তঃ সন্নাহ মস্তরেণ মধাণাদক্তো রক্ষিতা নাস্ত্যতো মানং ত্যঞ্জত", ইতি কামাজ্ঞা স্তম্মা তাবকে ॥ ৪ ॥

ছইলেন, এবং বসিয়া বসিয়া প্রিয়তমার স্থাণত-ভঙ্গীময় আগমন-শোভার, সামুরাগ-দৃষ্টির — মধুরপ্রেমালাপের ও অঙ্গ-সঙ্গ — লাভের লালসায়—কম্পিত, প্লকাঞ্চিত, আনন্দিত এবং ঘর্মাক্ত হইতে লাগিলেন। তদ্ধ্রে কোনও স্থী শ্রীরাধাকে কহিতেছেন—

কত প্রীতিপূর্ণ বচনে—কত বিনয়মুনরে—এবং পরিশেষে চরণে নিপতিত ইইয়া—তোমার মানাপনয়নকারী হরি, মনোহর-অশোক-কুঞ্জে কেলী শয়ায় বিসয়াছেন, রাধে! এখনও তোমার মুগ্ধতা ? যাও অচিরে এমন অনুগত-নায়ক—মধু-মথনের অনুসরণ কর। সলজ্জ-মুখী—রাধাকে নিরুত্তর দেখিয়া "মৌনং সম্মতি লক্ষণম্" ভাবিয়া সোৎসাহে স্থীর কথা চলিতেছে,। যথা—

খন-জ্বন ও স্তন-ভারাবনতে ! ইহাদের ভারাতিশয় প্রযুক্ত তোমার পক্ষে অবশ্যই ক্রত গমন কন্টকর, অতএব মৃত্ত-মন্থর পদচালনা-জনিত মণি-মুপুরের-মধুর-ধ্বনি বিস্তার ধারা,হংদ-ধ্বনির-পরাভব-বিধান পূর্ব্বক-মধীরে অগ্রসর হও, আনিল-তরল—কিশলয়-নিকরেণ—করেণ, লতা নিকুরস্থং
প্রেরণ মিব—কর ভোকা! করতি, গতিং প্রতি মুঞ্চ বিলম্বং ॥৫
ক্রুরিত মনল—তরঙ্গ বশাদিব, সূচিত—হরি-পরিরস্তং
পৃচ্ছ, মনোহর—হার-বিমল-জলধার মমুং কৃচ-কৃষ্তং ॥৬॥

মন্বচন মন্থমাদ মানা-মনেতনাপি লতা তং প্রেরন্থতীত্যাহ—হে করভার !
লতাসমুহোহপ্যনিলতরল-কিশলন্ধ-নিকরেণ—করেণ তব প্রেরণং করোতি;
তন্মাদ্ গতিং প্রতি বিলম্বং মুঞ্চ; অনেতনামুকুলোনাপি ভচেতো ন দ্রবতীত্যভিপ্রায়:। বস্তুতস্ত উদ্দীপন মেবৈতৎসর্বং॥ ৫॥

এবং ভাব মুদ্দীপ্য বিকারান্ দর্শয়ন্তি—যদি মন্বচন মনাত্মীয়মিতি মন্তবে, হে সথি ! তদাত্মীয় মম্ং কুচ কুন্তং পৃচ্ছ—কীদৃশং ? অনঙ্গ-তরঙ্গ বশাৎ কম্পিত মিব। পুন: কীদৃশং ? মনোহর হার এব বিমগা-জলধারা যত্র তৎ, কুচোইয়ং কলসত্বেন নিরূপিত: কম্পিত শ্চানঙ্গ তরঙ্গ বশাৎ তত্মাদ্ধারোহপি জলধারাত্বেন নিরূপিত: । অত্র উৎপ্রেক্ষতে—হচিত হরিপরিরস্ত মিবেতি । বামস্তন-কম্পনং হি নার্য্যা: প্রিয়সঙ্গমং স্চয়তীতি প্রসিদ্ধে রয়মেব জ্ঞান্ত ইত্যভিপ্রায়ঃ ॥ ৬ ॥

এবং সমীপস্থা হইয়া তরুণী-মোহন মধু-রিপুর রমণীয়-পরিহাস-বানি শ্রবণ কর।

আর—কুম্ম-ধনুর (কলপেরি) শাসন প্রচারক-কোকিল ক্লের ক্জনের প্রতি বৈর-ভাব প্রকাশের প্রয়োজন নাই। এখন তাগাদের সহিত সদ্ভাব বিধান কর। মনোবেগ প্রশাস্ত ও হৃদয় আনন্দ রসাগ্লত হউক।

দেখ— অনিল-ভরণিত লতিকাসমূহ, কিশ্লয়-রূপ-করাগ্র দারা তোমার প্রতি প্রেরণ-মুদ্রা প্রদর্শন করিতেছে; যাহাতে তরুলতা পর্যান্তের উল্লাস এবং অ:গ্রহ সে কার্য্যে কি প্রেনবতীর বিশম্ব শোভা পায় ? অতএব গমন বিশম্ব পরিহারে সম্বর হও।

স্থি! আরোও দেথ—নির্মাণ-জল-ধারার সদৃণ্ শুল্র—হারের ছারা স্থােভিত—তোমার ঐ কুচ-কুন্ত, অনজের-ভরঙ্গ-রসে ফুরিত (কম্পিত) অধি গতে মখিল স্থীভি রিদং—''ত্ব-বপুরপি রতি-রণ স্কুরং''
চণ্ডি । রণিত রদনা—বর ডিগ্ডিম মভিদর সরস মলজ্জং ॥ ৭ ॥
শ্মর-শর—হভগ নখেন—স্থী মবলম্ব্য করেণ সলীলং
চল বলয়ক্কণিতৈ রববোধ্য়, হরি মপি নিজ গতি শীলং ॥ ৮ ॥

সম্পুতি মাধবান্থসরণে কাঞ্চাদি ভ্যণমেব ডাং বাদ্যং ব্যনক্তীত্যাহ—
তবেদং বপুরপি রতিরণ-সজ্জ মিত্যখিল স্থীভিরপি জ্ঞাতং,—কথ মন্তথা
কাঞ্চাদি গ্রহণ মিতিভাবঃ। ন কেবলং মন এব বপুরপীত্যপেরর্থঃ ততাে
হে চণ্ডি! রণ-প্রবীণে! অলজ্ঞং লজ্জারহিতং সরসং সোৎসাহং রণিতা
রসনাদেব বরডিণ্ডিমো— বাদ্যভাণ্ডবিশেষাে যত্র এতচ্চ যথাস্তাত্তথাভিসরপ্রিয়াভিমুখ মনঙ্গরঙ্গং যাহি। রণ সজ্জিত স্থাবিল্যাে তরাশক্ষা মাসঞ্জয়তীত্যর্থঃ॥৭

শুত্র গমন প্রকার মাহ---হে সধি ! করেণ সধী মবলম্বা সলীলং যথা স্থান্তথা চল। কাদৃশেন ? স্থান-শর-মুভগ-নথেন সংগ্রামার্থং পঞ্চনথা এব মোহনাদিকা মন্ত্রাণি ভা'ন গুলীছা গাছে ভাগাং। গছা চ বলম-কণিতৈ হরিমাপি অব বোধর রণায় সাবধানং কুরা। কীদৃশং ? নিজপতৌ-ত্বপ্রোপ্রৌ শীলং সমাধি ইস্ত। সগীচীনো গোলাহি প্রতিভটং অব্হিতং কৃত্রৈব যুণ্যত ইত্যুৰ্থঃ ॥৮॥

হইগা হরির সহিত তোমার পরিরস্থাের আকাজ্জা স্বতঃ ত্চিত করিতেছে, তাহাকে জিজ্ঞাস। কর দেখি— ১য় কি নয় ? এমন নিজ জনের আকাজ্জার তোমার কপন্ত উপেকা করা দম্চিত নহে।

সন্মোহনাদি, পাঁচটি কন্দর্প-শরের আর—মনোহর (স্কুস) পাঁচটি নথ যুক্ত ব্র বিমোহন বাছর দ্বা, শোভন ভঙ্গীর সহিত স্থীকে **অবশ্যন করিয়া** 

# জ্ঞী জয় দেব—ভণিত মধরীকৃত হার মূলাদিত বামং হরি-বিনিহিত-মনদা মধি তিষ্ঠতু কণ্ঠ তটী মবিরামং ॥ ৯॥

### (৮) ভূপানা।

ধনী, চলি আওলি নিভৃত নিকুঞ্চে কছণ ঝনঝন, মধুকর গুঞে, কৈছে যাওব সথি ! সোপিলা পাশ ? হাম অতি মানিনী যনি হল হাস!

শ্রীজয়দেব ভণিতং হরি-বিনিহিত-মনসাং জনানাং কণ্ঠতটি মবিরামং যথা ভাতথা অধি তিঠত ; হারাদে: সন্তাবে কথমস্থা বিরামতা সিদ্ধি ? তত্তাহ—অধরী ক্বত হারো যেন তৎ ইদমেব পরম-কণ্ঠ-ভূষণ মিতার্থ:। ভূষণ বৈত্যেণ বামা-শক্তা বিচ্ছেদ: স্থাৎ তত্তাহ—দ্বী ক্বতা বামা—প্রকৃষ্টা রমণী যেন তৎ, হুজোগ মাখপহিনোতীত্যুক্তে:॥ ১॥

সমরে অগ্রসর হও এবং তোমার সঙ্গ-স্থপ-সমাধি-মগ্ন (নিম গতি শীলং) হরিকে চঞ্চল-বলয়-বাদন দারা সাবধান ও রণে আহ্বান কর। কারণ প্রতি বোদ্ধাকে অবহিত করিয়া যুদ্ধে প্রবৃত্ত হওয়াই, ধর্ম-যুদ্ধের রীতি।

প্রীলয়দেব কবিভণিত এই গীতিটি হার অপেক্ষাও মনোহর কণ্ঠ-ভূষণ ইহা দারা কণ্ঠলগ্ধ-বাম-লোচনার প্রতিও—লম্পটগনের ওদান্ত উৎপাদিত হয় অতএব ক্লফার্পিত-মনা ভক্তগণের কণ্ঠ-তটিতে এ অমূল্য হারটি নিরস্তর অধিষ্ঠিত হউক।

(৮) বিনোদিনা, নির্জ্জন-কেলী-কুঞ্চে আসিয়া উপস্থিত হইলেন, কিন্ত ল্জায় কান্তের নিকটে যাইতে পারিতেছেন না। মধুকরের গুঞ্জন ও আপনার ক্রণের ঝনৎকার শব্দের মধ্যে অহচেম্বরে স্থীকে কহিতেছেন, স্থি! ক্বছ না ক্রব বদন-প্রসাদ, প্রতিকৃশ মদন ক্ররে বনিবাদ, সো রক্তি শুবধ পরশে যদি অঙ্গ তব বিধি নাজানি ক্রবে কোন রঙ্গ কছে হরিবল্পত বনি করমান বল্পত গোট মুরতি পাঁচ-বান।

#### (৯)—बहरें।

দূর সঞ্জে নয়নে নয়নে যদি ছেরবি, নিয়ড়ে রছবি শির-নাই পরশিতে নিরসি করহি কর বারবি, যভনে রোখ নিরমাই,

বাহাকে মানের ভরে এত অপশানিত করিয়াছি, সেই প্রিয়তমের নিকটে কি করিয়া বাই ?

আবার এই প্রকার গমনের ফলে যদি "অতি মানিনী বটে।" এই রূপ শ্লেষাত্মক পরিহাস আমার সম্বন্ধে স্ষ্টি হর, তাহা হইলে যে আমি লজ্জার মরিরা যাইব। যাহা হউক প্রাণকান্তের-অন্তিকে গিরা কথন ও্বদন হাত্ত-প্রসর করিব না।

কিন্তু সথি ! দারুণ-মদন, চিরদিন আমার গুভিক্ল, সে যদি সময় পাইয়া বাদ সাধন করে তবে কি উপার হইবে ! আর—রতি-লুদ্ধ কাস্ত যদি হঠের সহিত অঙ্গম্পর্শ করিয়া ফেলেন তাহা হইলে 'বিধাতা যে কি রঙ্গ ঘটাইবে' তাহাই ভাবিয়া আকুল হইডেছি।

গীতকর্তা, হরিবল্ল ভ—সংখাধিতা স্থীর শ্বাবেশে পরিহাস করিতেছেন:— দেখ তোমার এই বল্লভ—সাকাং মৃতিমান্ সদন! অত্তব তাহার সহিত আর যেন মান করিও না!

(৯) স্থী আবো কহিতেছেন — তাহউক কিন্তু এখন মানের মান রাখিবার্ জন্ত বত্ব কর্ত্তবা। অত এব যদি নয়নে নয়নে চাহিতে ইচ্ছাহয় দুর হইতে হৈরিও, নিকটে গোলে মাণা নোয়াইয়া (নাই) রহিও। কান্ত যথন তোমার হৃদ্ধি ! অভ এ শিথাওই ভোয়—
বিনহি মান ধনে, কিয়ে বহু বল্লভ কবহু আপন বশ হয় ?
পুছইতে ''গোরি ! " চমকি মুখ মোড়বি, হসইতে যনি ভুছ্
হাস ।

করইতে মিনতি শুন নাহি শুনবি—কহবি আনহি আন ভাব!
পড়ইতে চরণে—বারি, দিঠি-পঙ্কজে, পূজবি সো মুখ-চন্দ,
গোবিন্দ দাস কহ, যাক দৈরষ রহ, ভাহে সে এত পরবন্ধ!

অঙ্গম্পর্শ করিবেন তথন—যত্ন পূর্ব্বক ক্লেত্রিম-রোষ রচনা করিয়া (নিরমাই) ভাহাকে নির্দন পূর্ব্বক (নির্দি) হস্ত দারা তাহার হাত ঠেলিয়া দিও।

স্থি! তোমার রূপ-মাধুবী যেমন অতুলনীয়, তেমনি তোমার ভাব ব্যবহার গুলিও স্বতঃই মধুর; কিন্তু মান অবলার বড় ধন, মান বাতিত বহু-বল্লভ কান্তকে কথনও বশেরাথা যায় না। অত এব আমি ভোমাকে কতকগুলি কথা শিখাইয়া দিতেছি। দেথ—"গোরি!" বলিয়া যখন প্রোম-মধুর-কণ্ঠে কান্ত জোমাকে সম্বোধন করিবেন, তথন চমকিত হইয়া মুথ ফিরাইয়া লইও। আর দেখিও রস-বিদগ্ধ-নাগরেক্রের ভ্বন-ভূলানো হাসির মধুনাদে কথনও যেন হাসিয়া কেলিওনা! নাগর নানা প্রকার মিনতি করিবেন, তাহা শুনিয়াও শুনিও না! একে আর বলিও; কিন্তু নিরুপায় হইয়া নাগর, চরণে পড়িতেছেন দেখিলে তৎক্ষণাৎ তাহার সে চেন্তা বারণ করিয়া (বারি) নয়ন পদ্ধজের হারা তাহার সেই ভাবন্য্য-মূণ্ডক্রের পূজা করিও। কিন্তা (বারি অর্থ ক্রল ধরিলে—সজল-নেত্র-প্রজ্বের হারা পূজা করিও —এরূপ বাখ্যাও ইইতে পারে)।

এই সকল কথা শুনিয়া অপরা কোনও উপস্থিতা সধীর ভারাবেশে গীত কর্দ্ধা গোবিন্দ কবিয়াল আপনা আপনি বলিতেছেন "ঘাহার ধৈর্য্য ধারণের শক্তি—সে সময় কথনই থাকিবে না, তাহাকে এসকল সঙ্গতিময় কথা (পরবদ্ধ—প্রবদ্ধ । সঙ্গতিময় বাক্য , শিখাইয়া লাভ কি ?

#### ( ১০ )—ভূপানী।

পৰিলহি রাধামাধ্ব মেলি,—
পরিচয় ছলহ, দ্বেরন্ত কেলী !
অন্ধনয় করইতে, অবনত-বয়নী—
চকিত বিলোকি, নথ লেথই ধরণী!
অঞ্চল পরশিতে, চঞ্চল- কান—
রাই করল পদ-আধ পরান।

রস-লব-লেশ দেখাওলি গোরী,
পাওল রভন পুন, লেওলি চোরী!
বিদগধ-মাধব, অমুভব জানি—
রাইকো চরণে পসারল পানি।
হাসি-দরশি—মুথ ঝাপই, গোই—
বাদরে শশী যহু বেকত না হোই।

(১০) এই রূপে, রস-তরঙ্গে ভাসিতে ভাসিতে নাগরীরাজ্ঞী, কুঞ্চে প্রবিষ্টি হইলেন। সেথানে যেরপে রস-রঙ্গ চলিল, এই গীতে—কোনও সধী. অপরাকে ভাহা দেখাইতেছেন, যথা—হার! প্রেম-চরিত কি অন্থত বস্তু! রস-ভ্যাতর রাধামাধবের কেলী-বিলাস দ্রে থাকুক—নাম্বিকা-শিরোমণির ঈর্ষা এবং নাগরের সঙ্গোচ—আজিকার প্রথম সন্মিলনে সন্তাম্বাদি পরিচয়-প্রসঙ্গকেই দেখিতেছি হল্লভ (হলহ) করিয়া তুলিয়াছে!! প্রথমেই রসিকেন্দ্র-কান্ত অনুনয় করিতেছেন, তথাপিঃধনীমণি অবনভমুখী!! তিনি চকিত-নয়নে, একবার বিলোকন করিয়াই পদ-নথের হারা ভূমি লিখিতেছেন! ধর্মাবলম্বন-শক্তি-বিরহিত-কান্ত, চঞ্চল হইয়া বয়াঞ্চল স্পর্শ করায় পশ্চাৎদিকে পদার্দ্ধ সরিয়া পড়িলেন! দেখ—তারপর ছলে রসকলার লেশ-মাত্র প্রদর্শন করায় বিদায়রাজ যেন ভস্করাপজ্ঞত-রত্ব, পুনঃ প্রাপ্ত ইয়াছেন!

দেখ দেখ—প্রাণেশ্বরীর ভাবাত্ত্ব করিতে পারিয়া প্রেম-ত্যার্ত্ত নাগরেক্স
রাইর চরণ ধারণার্থ—করপ্রসারণ করিয়াছেন এবং বিনোদিনী আপন অনাব্তবদনের মধুরহাসি অঞ্চল দ্বারা গোপন করিয়া (ঝাপইগোই) বর্ষার শশধরের
ন্তায়—অব্যক্ত-বদন-মাধুরী—বিকাশ পূর্ব্বক—শ্বকীয় করে কান্তের কর
বারণের চেষ্টা করিতেছেন—অঙ্গসংস্পর্শের প্রভাবে:অবহিথাময়ীর প্রেমপ্রকাশ হইয়া পড়িয়াছে! তাহাতে—চির-দরিত্রের, ঘটপূর্ণ শ্বর্ব লাভের স্তার
নাগরের আর আনন্দবেগ ধারণের শক্তি নাই! নবাত্ররাগে প্রভ্যাশাবে

করে কর বারিতে উপজল প্রেম দারিদ, ঘটভরি পাওল হেম!

নৰ অহুরাগ—বাঢ়ল প্রতি আশ জ্ঞানদাস করে শুরুৱা শিরাস !

#### ( >> ) कृशांनी मशासा मन्तीर्ग मरहारा।

"ভালে তুছ মাধব ! জানসি ছন্দ হাম কুলজা-মুগধিনী-মতি মন্দ" এত কৰি, বরিধরে কুটিল-কটাথ সো, নাগর মানরে নিধি-লাথ ! "হাম বলি যাঙ তুরা মুধ বহ্ন" হসি হসি চুম্বই নাহ-নিশ্ক! রোথই ধনী, পোথই রতি রঙ্গ সিরজই. মনসিজ-সমর তরঙ্গ! দৃঢ় পরি-রন্তণ, আপহি করই— তবহু কঠোর নরন-শর ভরই! "তুহু অতি চতুর, সাধসি নিজকাম" কামিনী, পিরামুখ মোছই হাম।

কেবলই বাড়াইরা তুলিতেছে। এখন কি রঙ্গ হর দেখা যাক্। সধী ভাবাবিষ্ট গীতকর্ত্ত। জানদাস কহিতেছেন—ওমা ! এখন গুরুতর পিপাসা ! !

অক্সাক্তপ্রছে ভণিতা এইরপ—ঐছন নিরুপম পহিল বিলাস, আনন্দে হেরত গোবিন্দ দাস।

(১১) "মাধব! তুৰি নানাছন্দ ও নানা ভঙ্গী বিস্তারে চিরদিন ক্ষপিন্তিত। আমি—কুলবতী,—মৃথা, অল্পতি অবলা! আমার নিকটে এত পাণ্ডিত্য প্রদর্শন কেন? বাহারা রসবিদ্যা— যাহারা তোমার চাত্রীর, মর্ম্ম বৃথে তাগাদিগের নিকট চাত্রী প্রকাশ সার্থক হয়।" এই বলিয়া বিনোদিনী কুটিল কটাক্ষ বর্ষণ করিতে লাগিলেন! নাগরের মনে হইতে লাগিল, যেন লক্ষ লক্ষ নিধি লাভ হইতেছে! তিনি, বিনোদিনীর বদনে—সত্ত্ব-নেত্রপাত পূর্বক বিমোহিত হইলা কহিলেন—"প্রিয়ভমে! 'তোমার বিশ্বম-বদন-চল্লের শোভার বালাই লইয়া মরিবার সাধ হইতেছে' বলিয়াই, প্রেমভরে হাসিতে হাসিতে প্রাণেশ্রীকে ভ্রম করিতে প্রবৃত্ত হইলেন।

" এ তুরা অধর, রমণী-শত-ঝুট---"
ফপটহি হাসি---বদন করু রুঠ--তৈথনে সো মুখ, করতহিপান
পেখন মদনরার, প্রমাণ !

উছ্লল, স্থ্রত-সমুদ্র-ঝকোর বহু ঘন-দামিনী নাচরে ছে:র i কছে হরি বল্লত এ স্থ্যাহ লোচন-মীন! করহ, অবগাহ।

ধনী-মণি, তাহাতে প্রণার-কোপ প্রকাশ করিয়া রতিরকের পরিপুষ্টি ও কলপ-যুদ্ধের-তরক কৃষ্টি করিতে লাগিলেন। (পোধই—পোবই, পুষ্টি করে) পুষ্টির ও কৃষ্টির প্রকার বলিভেছেন:—আজ আমাদের প্রেমরক-মরীর রক্ষরদের অবধি নাই! স্বেক্ষাবশে (আপহি) দৃঢ় পরিরন্তণ করিতে করিতে তীক্ষানারন-বাণে নাগরকে পূর্ণ-জর্জারিত করিয়া কহিতেছেন—"তুমি স্বকার্য্য সাধনে বড় চহুর।"

আবার প্রিরতমের মুপের বাম মুছিতে মুছিতে মধুর বচনামৃত বর্ষণ করিতেছেন :—তোমার এ অধর ছুইতে নাই! ইহা শত শত রমণীর মুপের উদ্ভিষ্ট! বলিতে বলিতে—কপটভাবের বারা হাসি গোপন ও বাহ্যিক রোব-ভাব—প্রকটনের চেষ্টা করিতেছেন! (কঠ—কষ্ট, অর্থাৎ ক্রোধ্যুক্ত) আবার তল্মুহুর্ত্তেই—প্রাণকান্তের বদন-শশধরের স্থা-রস পান করিতেছেন!

লতারক্ষে অর্পিত-নয়না-সথীভাবাবিষ্ট গীতকর্ত্ত। হরিবল্লভ, অপরা কোনপ্ত
সথী সম্বোধনে বলিতেছেন—আনল-বিহ্বল-হৃদয়া-আমরা কেছই, ইছার পরে
এই নিরস্কুশ-কেলীর যথাযথ আয়পূর্ব্বিক বর্ণনা করিতে সক্ষম হইব না, এই
অপূর্ব্ব কেলীর সাক্ষী (পরমাণ—প্রমাণ) থাকিলেন,দর্শকদের মধ্যে (পেখল—
দ্রষ্টা) একমাত্র কল্মপরাজ। তারপর আবার লীলা বলিতেছেন—দেখ দেখ,
এক্ষণে যেন স্করত-সমুদ্রে ঝড় উঠিয়াছে! (ঝকোর—দোল দেওয়া) এবং
ঝড়ের সঙ্গে সঙ্গে যেন মেঘ ও দামিনী তরঙ্গে তরঙ্গে নাচিতেছে! নয়ন-মীন!
এই স্থেবর তরঙ্গে ভূবিয়া থাকো। (এ গীতিটিতে মধ্যা-নাম্বিকার, কর্ভ্রমর
সহীর্ণ-সম্ভোগ বিবর্ণিত)।

#### ( ১২ )—जुशानो ।

আকুল-কুটিল-অলকাকুল সম্বরি— সীথি বলাই, বাদ্ধহ পুদ কবরী। তহি সম রেথহ সিন্দুর বিন্দু কুরুমে মাজি সাজহ মুথ-ইন্দু। এ হরি ! রতি-রসে অবশ রসাল— বিঘটিত-বেশ, ঘটহ পুন বার ; কাজরে উজোরহ লোচন-ভ্রমরী শ্রুতি—-অবতংসহ কিশ্লয়-চমরী।

(১২) শীলাবদানে স্বকীয় স্তন-বদনাদিতে, কাস্ত-ক্ত-নথ-দশন থণ্ডনাদি সম্ভোগ-চিহ্ন দর্পণে দর্শন করিয়া—আনন্দোয়াদিতা প্রীরাধা, আরু সম্ভোগ স্থানন্দে প্রাণ-কান্তের পূর্ণ পরিতৃপ্তি বোধে—আনন্দ গর্কের অমুভবে, এবং ভৎকাল বিকশিত শ্রীনাগরেক্রের ক্ষপ-মাধুরা আস্থাদনে—বিহ্বল চিত্ত ও স্বাধীন কাস্তা হইয়া—প্রেমভবের কাস্তকে কহিতেছেন—দেপ, নির্লজ্জ রাজ! তৃমি বৃষি আমাকে স্বী দিগের নিকটে লজ্জা দেওয়ার অভিলাধে বিভৃষ্কিত করিয়া এক্ষণে তাহাদের আগমনাপেক্ষা করিতেছ ? তাহা কথনও হইবেনা! আগে যেমন ছিল, ঠিক্ তেমন করিয়া এখনি আমার বেশ রচনা করিয়া দেও, ম্বভতৃর নাগরেক্র কি জানি ছল করিয়া বলেন, রমণীর বেশ রচনার তেমন কৌশল ও চাতৃর্ব্য কি আমি কি জানি ? এই রূপ ছলে বিলম্ব ঘটানের অবসর নিরসন করণার্থ্যবিত্তেছনঃ—আকুল কুটিল ইত্যাদি।

আকুল—অসম্বত্তি, এলোথেগো। তহি-সম-রেথহ—তাহার সহিত লেখহ সীথির সহিত দিল্ব রেথা দেও। শ্রুতি অবভংসহ কিসলয় চমরী—কোমল-পত্তাবলীর চামর অর্থাৎ গুচ্ছাগ্র দারা কর্ণকে অবভংদিত কর।

আপি—অর্পণ করিয়!। পয়োধরের উপরে আচঞ্চল-হস্ত অর্পণ দারা
নগ-পদ-ছাপি—অর্থাৎ পয়োধরে যে সকল নথের চিজ দিয়াছ উঞা ছাপাইয়া
(গোপন করিয়া) মৃগ-মদের পত্র ভঙ্গ রচনা কর; কয়্-বলয়গণ—শভ্রের
চূড়ী সমৃহ, অরথবা স্থলর বলয়াবলী। কয়ু শক্তের অর্থ শভ্রা এবং স্থলর।
বিগলিত—বাহা খুলিয়া গিয়াছে।

শীন-পরোধর, থির-কর-আপি।
মৃগ মদে রঞ্জ — নখ-পদ ছাপি,
বিগলিত কম্ব বসরগণ মোর—
সাধি পিধাওছ নৃপুর জোর,

ষেটল যাবক পদে পুন লে**ধ।** গোবিন্দ দাস দেধত প**ন্ন তে**ক,

(১) वाला।

এখনি ! এখনি ! করজবধান
কহ পুন কি করব অফুচর কান,
পহিলহি ভোছারি বচন-পরমাণ—
কিশলয়ে সাজ্ঞ মদন-শ্যান,

চক্রক-পবণ, সখন-তমু-দেশ—
অ-তীথনে—শ্রমজন সব দূরে গেল।
বিগলিত-চিকুর, যতনে পুন সম্বরি—
বকুল-মাল সঞ্জে বাঁধিসু কবরী;

সাধি পিধাওহ মূপুর জোর, সাধি—পরিস্থার করিয়া বা ঠিক্ করিয়া পরাও জোর-যুগল। সধীর ভাবাবেশে গীতকর্ত্তা গোবিন্দ কবিরাজ বলিতেছেন আমি পরতেক' অর্থাৎ প্রত্যেক কার্য্য কেমন হয় দেখিতে বিদলাম।

(১৩) দাদীর ন্থায় প্রাণেশরীর সেবা করা—নাগরের একটি সাধ।
আব্দ সেই চিরাভিল্যিত সেবার স্থাগা লাক্ত করিয়া তাঁহার প্রাণ আননদ্দ
প্লকিত হইয়া উঠিল। তিনি, প্রাণেশরীর প্রেন-গর্কিত-মধুরাননের মাধুরী
মনের সাধে আস্বাদন ও ব্যাপদেশে তদীয় প্রত্যেক অক্স--দর্শন ম্পর্শন,
আত্রাণ ও চ্ম্বন করিতে করিতে--অভিসারের সময়ে যেমন ছিল ঠিক্ সেই
প্রকার করিয়া—বেশ রচনা সমাপন করিলেন। কেবল মেধলা পরাইতে বাকি
রহিল। রসিক শেধর তথন প্রাণেশরীর মুখ পানে স্মিতমুধে চাহিয়া
কহিতেছেনঃ—

ধনী মনি । ধন্মে । তোমার প্রেম-নিদেশ পরিপাশন করিতে পারিয়া ধন্ত হইলাম । এ অফুচর আর কি করিবে, অবধান পূর্বক—আফাকর। তোমার মনের উদ্দেশ্য ব্ঝিরা, কেলার সকল নিদর্শনই বিলোপ করিয়াছি। প্রথমতঃ কিশ্বয়াবলীর ছারা পূর্ববিৎ কেনীর-ডর রচনা করিয়াছি। তংগর চন্ত্রকের অঞ্জনে রঞ্জ এ চ্ই নয়না ভাৰুলে পূর্পু শহজ-বয়না; মুগমদে শিখইতে উচ-ক্চ-জোর---কাঁপে, চপল-কর-পঞ্জ মোর

ইথে যদি রোধনি,কাঞ্চন গোৱী— গোবিন্দদান গুণ গাওৰ তোরি!

#### ( ३८ )--- बत्राफ़ि।

শরণ কমল-দলে, শেষ# বিছাওব, বৈঠব কিলোর-কিশোরী স্মের-মধুরণ মুখ---পক্তর-মনোহর, মরকত-মণি,ঞ হেম-গোরী,

(ময়্র পু:ছের) ব্যজনি ধারা মৃত্ন মৃত্ন (অভীখন—অভীক্ষা, মৃত্ন) মাকত সঞ্চালন করিয়া তোমার শ্রীঅক্ষের ঘর্মাপসারণ । বিঅংসিত-কেশ-রাশী সংগ্রে সংগত করিয়া বকুল-মালার সহিত কবরী বন্ধন করিয়াদিছাছি। নয়ন-বৃগল কজ্জল-রিজাত করিয়াছি; আরক্ত কমলের তুল্য স্থকোমল বদন পূর্ণ করিয়া ভাষুল প্রদান করিয়াছি। এখনি তামুলরাগ-বিগলিত অধরোই পূর্ববৎ—বিষ কলের শোভা বিকাশ করিবে। সমন্ত বেশটা, বেমন ছিল, ঠিক্ তেমন হইছাছে কেবল ক্চ-বৃগলের মৃগমদ-চিত্রায়ণগুলি, ন্তির করে যথাবৎ সম্পন্ন করিতে পারি নাই! কি করিব, উহাতে হন্তার্পণ করিলেই আমার কর-কম্পন উপস্থিত হয়!

এই দদয়ে সমীপাগতা কোনও কোতৃকিনী মঞ্জনীর ভাষাবেশে গীত রচিয়িতা, গোবিদ্দ কবিরাজ রাজ-নদ্দিনীকে কহিতেছেন:—হেম-গৌরাঙ্গিনি! স্থি! যদি তুমি একথার রাগকর এবং সেই রাগের ফলে, কম্পিত-হল্তের-চিত্রাক্ষণ মৃছিয়া প্নরায় সে স্থানে যথাবং পত্র ভঙ্গ রচনা করিতে নাগরকে বাধ্যকর ছবে আমি চিরদিন তোমার গুণগাণ করিব!

(১৪) দিল্প — দেহাবেশে ১২। ১৩ নং গীতোক্ত মধ্র লীলা—নিরীকণ ক্ষিতে করিতে হঠাৎ বাহু কুর্ত্তি ২ওয়ায়, এ গীত রচম্বিতা, শ্রীল নরোত্তম দাদ ঠাকুর মহাশয়, আপন ঈশ্বী ব্যভান্থ রাজ নন্দিনীর শ্রীচরণে সদৈক্তে স্বাভীষ্ট

পদ ক্লতার পাঠান্তর—∗পারাহ, † অণকা গার্ত। ‡ শ্রাম।

প্রাণেশ্বরি ! কবে মোর হবে শুভ-দিঠি—
ভাজ্ঞান লইব করে, চম্পক কুল্স-বর,শুনব বচন আন-মিঠি ! গ্রু
(কবে ) মুগমদ দিন্দুরে তিলক বনাওব, বিলেপন চন্দন-গল্পে—
গাঁ-থিয়া মালতী-কুল, মালা পহিরাওব, ভূলব§ মধুকর-রুদ্দে ?
(কবে ) ললিভা, আমারকরে, দেওব বাজন, বীজন মায়তে,

खांत्रक्य-मकल, (बंदेव कुछ कत्यवत, (इतव शतम जागत्म !

প্রার্থন! করিতেছেন। বথা:—হার! আমার এমন দিন কবে হুইবে ? বে দিন আমি প্রাণেশ্বর প্রাণেশ্বরীর বিহারের নিমিত্ত স্বহন্তে জরুণ কমলের-দল বারা শ্বাা রচন। করিব এবং আমার প্রোণের কিশোর-কিশোরী স্মিত-মধুর-বদনে মরকত মণি ও হেম মণির প্রতিমা-যুগলের স্থায় তাহাতে রুগাবেশে উপ্রেশন করিবেন!! হে প্রাণেশ্বরী! (আমার জীবনে মরণে কর্ত্রী এবং মংপ্রাণ-ক্ষের নিজ মুথে-স্বীকৃত-ঈশ্বরী) আমার-প্রতি কবে এই রূপ শুভ দৃষ্টিপাত করিবে ?
—বে দিন কান্ত-সহ-বিলসিতা ভোমার-আদেশে,চম্পকের ফুল কবে লইরা আমি ভোমাদের নিকটে দাঁড়াইব—(তদ্বারা নাগবের উন্মাদন। বৃদ্ধি করিব) তাহার ফলে অচিরেই তোমরা ফ্জনে কেণি-রসে সম্ভরণ করিবে আর আমি বথা- স্থানে দাড়াইরা তোমাদের আধ আধ মধুর-বাণী শুনিরা প্রাণ জুড়াইব!

নীনাবদানে নিমেবে অগ্রদর হইরা তোনার—শ্রমজন-বিধীত-নিন্দুরের ও মৃগমদের তিলক পুনঃ রচনা করিয়া দিব। প্রীঅক্সথানি চন্দন হারা পুনঃ চর্চিত্র ও বাসিত করিয়া দিব। বিদর্দিত পুস্প-মালা অন্তর করিয়া মালতী ক্সুমের হারা তৎক্ষণাৎ নবীন-মালা গ্রহন পূর্বাক তোমার গলে পরাইব। তোমার প্রীঅক্সের—দৌগন্ধ-সন্মিলিত দে-মালার অপূর্ব্ধ-সৌরতে মধুকর বৃন্দ ভূলিয়া রহিবে!

<sup>§</sup> পদক্রভক্র পাঠাকর-ধাওব।

নরোত্তম দাস-আশ, তৃত্-পদ-পাক্তর সেবন-মাধুরী-রসপানে এমন হইবেদিন, না হেরু কিছুই চিন্! রাধাক্তফ নাম হঙ মনে গু

ইতি জীগীত চিন্তামণোঁ পূর্ব্ব বিভাগে বিংশতি ক্ষণদা।

তারপর শ্রীমতী দলিতা স্থলরী আদিবেন এবং তোমাদের প্রাঞ্জ, শ্রম জল-সিক্ত দেখিরা আমার করে বীজনি প্রাদান করিবেন, আর আমি (হাম) তদ্বারা মন্দ মন্দ-মাক্ষত-সঞ্চালন করিব এবং সেই মধুর-বীজনে হ্রুলের তত্ত্বতে ঘর্ম-বিন্দু সমূহ অপলীত হইবে আমি তাহা দেখিরা আনন্দ ভাসিব! হে কারুণামূত-মন্ন! তোমাদের পদ-কমল-সেবনের রস-মাধুনী পান ব্যতিত আমার আর কিছুই প্রার্থনীয় নাই! আমার আশা কি পূর্ণ করিবে না! হার! আশা পূর্ণ হইবার কোনও চিহ্নই বে দেখিতেছি না! কেবল তোমাদের সর্মাতীই প্রদ-মধুর রাধাক্ষ্ম্ব নাম আমার এক্মাত্র তর্মা। (১৭ ক্ষণদার ১১ নং গীতের আ্বাদনী দেখ)

পু পদকল্পতক্র পাঠান্তর-- মুহুজন হেরব নয়নে;।

# শ্ৰীক্ষণদা গীতচিন্তামণি ।

#### অথ একবিংশতি ক্ষণদা।

# ( > )—গ্রীগোরচন্দ্রশ্র—পাহিড়া।

রস-পরিপাটী—নট,কীর্ত্তন-লম্পান,কত কত রঙ্গী-সঙ্গী সব সঙ্গে যাহার কটাক্ষে, লখিমী লাখে লাখে, বিলসই বিলোল-অপাঙ্গে! শুনি বৃন্দাবন-গুণ, রসেউন্সাদ মন, তুবান্ত্ত্লিয়া বলেহরি—ফিরে নাচে নটরায়, কতধারাবস্থধায়, তুনয়নে প্রেমের গাগরি!

<sup>(</sup>১) প্রেমেব আশ্রয় (জ্রীরাধাদি) ও বিষয় (ভগবান) উভয়ের সম্মিলন দারা না হইলে,রসলীলা প্রকৃতিত হইতে পারেনা। আমার গৌরহরি একাধারে প্রেমের আশ্রয় এবং বিষয়, স্কৃতরাং তিনি, পরিপাটি রূপে রসলীলা-প্রদর্শনের স্থাক্স-নটরাজ।

আর পূর্ণরূপে রস-ভাব আত্মাদন ও প্রদর্শনের সর্ব্বোত্তম পছা গৌরহরির বীসঙ্কীর্ত্তণ লীলা। প্রীসঙ্কীর্ত্তন-বিলাস সকল রসের সমাবেশে বেমন মধুরতর তেমনি মহা-শক্তি সম্পর। নিজের বা অপরের হৃদয়ে—মনে—দেহে, প্রেমের—ভাবের—রসের ও আনন্দের সঞ্চার করিবার সর্ব্বপ্রধান ও সাক্ষাৎ-ফল প্রাদ উপার একমাত্র প্রীর্ত্তন। তাই আমার রসিক-নট-রাজ গৌরহরি সঙ্কীর্ত্তন-লম্পট; নানা-রসরঙ্গী-সজীগণের সহিত নিরস্তর সঙ্কীর্ত্তন-বিলাসে নিরত।

দেশ—বাহার প্রত্যেক কটাক্ষের সহিত, চঞ্চ-নরনাঞ্চল,—লক্ষ লক্ষ লক্ষী (সৌক্ষর্ব্যের অধিষ্টাত্তী) বিলসিত হইতেছেন, সেই স্থানর সৌর-নটবর,

পুরুষ-প্রকৃতি-পর, মদন-মনোহর, কেবল, লাবস্থ-রদ-দীমা রদের সাগর-স্থোর, বড়ই গভার ধার,না রাধিল নাগরী-গরামা। ত্রিভ্বন-স্থার, উন্নত-কন্ধর, স্বলিত-বাহ্-বিশালে— কুরুষ—চন্দন, মুগমদ লেপন, কহে বাহা তছু পদ-তলে।

ভক্তগণের অগ্রে অর্থে স্বধ্নীর তীর-পথে গমন,করিডেছেন, আহা ! গমনেও স্কীর্জন রসের বিরাম নাই !

ভক্তগণ বৃদ্ধাবন-গুণ-গান করিতেছেন, আর তিনি—ভূজ-বুগণ উত্তোগন করিয়া—রসে উন্মত্ত হইরা, মধুর হরি ধ্বনি করিতেছেন এবং কিরিয়া ফিরিয়া নাচিতেছেন, আর নরনবর হইতে কলগীর-সলিল-ধারার ভার প্রেম-মীয় নিপ্তিত হইতেছে! দেখ, কত ধারার ধরা প্লাবিভ হইতেছে—জগতের শোকভাণ অমলন বিধোত হইতেছে!

আমার নিদিয়ানন্দ-প্রীগৌরকিশোর নারী-প্রথবের জড়ীর অভাবের অভীত! তিনি 'মদনে মোহিড' নহেন, 'মদন-মনোহর'—অবধিপ্রাপ্ত-লাবণ্য-রদের ধীর-পঞ্জীর-সমৃদ্র। তথাপি দেখ — ভাঁহার ত্রিভ্বন-স্থলর-সমৃদ্রত স্কলদেশের সৌন্দর্য্যে প্রবিত-বিসাল-বাহর স্থবমার এবং চন্দন কুম্কুম্ মৃগমদ-চর্চিত অল-সৌগজে—
নাগরীপণের, কুল, শীল, ধৈর্য্য, লজ্জা ধর্ম.—কোনও গৌরবই রাখিতেছে না!
দেখ—ভাঁহার নারী-মনোহর-ক্ষদেশে ভূল বেউনের জক্ত—ভদীর ভূল-বলী ধারা আলিজিত হইবার নিমিত্ত—এবং অমল-পরিম্ল-নিংশুলি তদীর প্রীক্ষদের স্থ-ম্পর্শ লাভের লোভে, দূর হইতে দর্শন-কারিণী নাগরীরা লজ্জা ধর্মাদি সমন্ত ভূলিরা গিরাছে!

স্থিতকর্ত্তা বাহ্মদেব বোষ কহিতেছেন, এই ভাগ্যবভীগণের ধস্ত, তাহাদের চরণতলে মন রাধিরা এ গীতিটি কহিলাম।

#### ( २ ) বরাড়ী,—শ্রীনিজ্যানন্দ চন্দ্রস্থা।

নিভাই রলিরা মোর নিভাই রলিরা পূরব বিলাসী রলী সঙ্গে সব সলিরা, কঞ্জ নরনে বছে, ছরধুনী ধারা। নাহি জানে দিবা নিশি প্রেমে-মাতোরারা.

চন্দন চরচিত অঞ্চ, উলোর। রূপ নির্থিতে ভেল জগ মন ভোর, আলাফু লখিত ভূজ -- করী বর ভঙ্গে, কণক-থচিত লভ, দলন পাবভে।

(২) আমার নিতাই চাঁদ, চিরদিন রলমর। প্রজনীলার শ্রীবলদেবরণে বেমন, ছারার বা প্রতিবিধের সহিতেও, দানা কৌতুক করিতেন এবং পশু পক্ষাদির শকান্তকরণ— বুব হইরা যুদ্ধকরণাদি নানা রজে, ভাই কানইকেও সকল স্বাগণকে লইরা নিরম্বর আনন্দ-ক্রীড়ার মর্ম থাকিতেন, তেমনি সেই সকল রজিরা—পূর্বস্দীগণের সহিত—নিতাই রূপে প্রকৃতিত ছইরাও রক্ষর লীলার ছারা, প্রেমের আনন্দ-প্রবাহে জগৎ প্রাবিত করিতেছেন।

জল হইতে কমণের জন্ম হর, কিছু আমার নিতাই টাদের নয়ন-কমল হইতে (কঞ্চ---পদ্ম) অনবচ্ছির স্থরধুনী-ধারার জ্ঞার প্রেম-নীর বহিতেছে! আর ভাই-গৌরস্ফরের অ'বচারিত করুণা-বিলাদের মহামহোৎসব-দর্শনানন্দে, এমনই মাডোরারা হইরা রহিরাছেন বে, দিন চলিয়া ঘাইতেছে রাজী আসি-তেছে সে-জ্ঞান পর্যান্ত নাই! দিব'রাজী প্রেমে-প্রমন্ত!!

কাদিরা আনন্দ, এবং জ্ঞান-হারা হইর' আত্মাদন,— শ্রীনিতাইরের রঙ্গার লীলার প্রথম শহরী। দিতীয়তরঙ্গ,— শ্রীক্ষাঙ্গে প্রেম-প্রকটনের অপূর্ব্ব-প্রক্রিয়া; দেখ— তাঁহার চন্দন-চর্চিত হেমোজ্বল কান্তি শ্রীজঙ্গানিতে প্রেম-প্রকটিত হইয়া কি অপূর্ব্ব—কি নিরুপম মাধুরীর বিকাশ হর্ট্যাছে! বালক, বৃদ্ধ, নারী, পুরুষ, এমন কি পণ্ড পক্ষ্যাদি পর্যন্ত তাবৎ স্বগৎবাসাজীব—বিভোর হইয়া দে—মাধুরী নিরীক্ষণ করিতেছে!! নিতাইটাদ পরং প্রেম-প্রমন্ত, দর্শকরণও দর্শনানন্দে বিভোর, হথাপি দর্শন-ক্ষের সমস্ত-দ্রন্তার প্রেমোদর হইতেছে!!

তৃতীয় তরক্স--- রিজয়া-শিবোম'ণর, করীওও-বিনিশিত-স্ঠাম ভূজা-দতে পাষও দলনার্থ একটি স্থব্ণ-থাচত-দও বিরাজিত ! প্রেমের-দেবতার হাতে শাসন-দও! রক্ষের চূড়ান্ত নহেকি ! ভূজদতের এই দওটি দেশিয়া রসিক্জগণ শির পর পাগড়ি বাবে নট পটিরা। দ্বার ঠাকুর নিতাই অবনী প্রকাশ। কটি আটি পরিপাটি পরে নীল ধটিরা, ভনিরা আনন্দে নাচে পরসাদ দাস,

#### (७) इत्रहे।

# রাধে! নিগদ, নিজং গদ যুলং— উদয়তি তত্ম মতু কিমিতি তাপ-কুলমতু কুত বিকট কুকুলং॥ধ্ৰু

হাসিতেছেন—আর মনে ভাবিতেছেন যিনি দয়া ব্যক্তিত দণ্ড কাহাকে বলে আনেন না, তাঁহার 'দণ্ড' গ্রহণ চমৎকার রঙ্গ বটে। জীব সাধারণের প্রত্যেকে বুঝিতেছে এ দণ্ডের দশনেই বুঝি হৃদয় হইতে পাযণ্ড-ভাবগুলি পলাইতেছে।

চতুর্থ রক্ত আমার অবধৃত চল্লের বাহ্ন-বেশ। মস্তকে নটপটিয়া পাগড়ি, এবং কটিতে আটিয়া নীল দটি পরিছিত! ব্রজ-ভাবাবেশে এইরূপ, গোণ রাথালের-বেশ পরিধান করায়—এক বড়-অপূর্ম্ব-রঙ্গ সংঘটিত হুইতেছে! কৌতৃহলক্রাস্ত বহিন্দু্থ জনসকল, অধ্তের এই অভ্তবেশে আরুষ্ট হুইয়া নিকটে আসিতেতে আর প্রেমের ফাঁদে জড়াইয়া যাইতেছে!!

মহামূত্বগণ দেখিতেছেন শীনিতাই চাঁদের সমস্ত লীলা-রঙ্গের অভ্যস্তরেই কেবল জীবের প্রতি করুলা! তাঁহার সমস্ত সাচরিত করুলার পরিপূর্ণ! তাহারা বলাবলি করিতেছেন—দরার-ঠাক্র-নিতাই অবনীতে উদয় হইয়াছেন! এইবার জার কেহই বঞ্চিত পাকিবে না, পাপী, পাষ্ড, সকলেই প্রেমলাভে ক্লত কুতার্থ ছইবে। গীত কর্ত্তা প্রসাদ দাস বলিতেছেন আহা! একথাটি শুনিরা, আমার প্রাণ জানন্দে নাচিতেছে!

এইটি গীতাবলীর ৭নং গান। শ্রীম্বলদেব বিদ্যাভূষণ ক্লত ইহার ভাষ্য এই—

बार्थ ! निषमाधात्रपः भगम्बः--वाधि निषानः भग । नम् कृरका रम भनः ?

<sup>(</sup>৩) বিবৃদ্ধান-ক্রফালেখাংক গ্রাম — জ্রীরাধার, অভিনব-ব্যাধির স্থার

পসারী শ্রীবিশস্তর,সঙ্গে লয়ে গদ্ধাধর,আচার্য্য চতুরে বিকে কিনে গোরীদাস হাসিহাসি,রাজায়নিকটেবসি,হাটেরমহিমা কিছু শুনে পাত্র রামাই লঞা, রাজ-জাজ্ঞা ফিরাইয়া, কোটাল হইলা—
হরিদাস,

कुक नाम रहेना नज़ा, दबर घारेटजनादत खाँज़ा, निश्चित्र— शब्दत औनियाम ।

গ্রাহকগণকে ডাকিরা আনিতেছেন এবং প্রদর্শন-ছলে নামের ও প্রেমের ব্যবহার-নীতি শিধাইতেছেন! এইরূপে লোকের আগ্রহ, আকাজ্জা, ইচ্ছা ও লোভ উৎপাদন-পূর্বক তাহাই মূল্যরূপে গ্রহণ করিয়া—যে যাহা যভ পরি-মাণে গ্রহণ ও ধারণ করিতে পারে তাহাকে মুক্ত-হত্তে প্রদান করিতেছেন!!

শী মাৰৈত আচাৰ্য্য—মহাস্কচতুর, তিনি কথনও বিশ্বস্তরের মহা-বিপণিরূপ ভাণ্ডার হইতে ক্রের (গ্রহণ) করিতেছেন। কথনও বা আগনি পণ্যশালা
খুলিং। বিক্রেয় (বিভরণ) করিতেছেন।

প্রেমোক্ষণ্ড-ভক্তি-বিনাসী-প্রীগোরীদাস-পশুজ- বনদেবের থেলার-সহকারী- স্থা স্থবলের স্থার (রাজ-মন্ত্রী-রূপে ?) শ্রীনিভ্যানন্দের নিকটে বসিরা হাটের মহিমা অর্থাৎ সাফল্যের সকল সংবাদ শুনিভেছেন আর আনন্দভরে হাসিতেছেন।

রামাই স্থলরানল হইয়াছেন—রাজণাত্ত; এবং হরিদাস ঠাকুর-কোটাল নিযুক্ত হইয়াছেন। ইহারা ছজনে এক সঙ্গে বাজারে ফিরিডেছেন এবং ঠাকুর হরিদাস সর্বাজ রাজ-নিদেশ ঘোষণা করিতেছেন। "এহে জীব-রুল্ল ! নাম প্রেমের পসারী—দরাল বিশ্বস্তর, জক্ম-ভাণ্ডার ও মনোহর-পসরা খুলিয়া বাজারে বসিয়াছেন এবং বিনামূল্যে পরমধন বিলাইতেছেন। যাও—বে যত লইতে পার লও, নাচিয়া গাইয়া আনল করিয়া—সকল সাধনের চরম ফল লাভ কর; চাহিতে লজা মনে করিয়া কেহ নিরস্ত গাকিও না, তাঁহার সন্থীন হইলে—না চাহিতেই তিনি পরম চল ভ ধন – দান করিবেন।" ইহাই রাজ-নিদেশের সারার্থ। यमत्रोम मारम यरम, व्यवजातकणिकारम, व्यश्विमाधारे राष्ट्रे वामि जाल राज समक्षत्र, जिक्कामा नित्रा मत्र, राष्ट्रेशक्तितत्रलभि !

বে কর্মাচারী ফটকে অর্থাৎ দেউড়ীছে প্রার্থরীর কার্যা করেন, তাহার পঁলের থাাডি—দড়্যা বা দেউড়িরা; রফদাস-দড়্যা হইরাছেন, তাহার বিচ-কণতা ও দক্ষতার ফলে, কেহই রাজাদেশ এড়াইরা, বাইতে পারিতেছে না।

পণ্ডিত শ্রীনিধাস ছিসাব রাখিতেছেন—কে কেমন পাইল ? আরো পাওয়া উচিত কিনা ? কেহ বঞ্চিত রহিল কিনা ? রহিলে কেন—কি কারণে সে বঞ্চিত হইল ? কেহ বঞ্চিত না হয় ইহাই তাঁহার লেখা পড়ার প্রধান উদ্দেশ্য।

গী চকতা বলরাম দাস কহিতেছেন—কলি-দলনাবতার আদার নিতাইটাদ এইরপ লীলারজৈ কলির করাল-কবল হইতে জীবগণের উদ্ধার সাধন করিতেছেন। যে সকল শান্ত্রদিদ্ধান্তানভিজ্ঞ জ্ঞানগর্বিতগণ বলেন—"কলিতে প্রীভগনানের অবতার নাই" তাহারা কলিকালের অবতার প্রভাক্ষ দেখুন। আমার নিতাই-গৌরাজের ভগবত্থার প্রত্যক্ষ সাক্ষী হাটেই বিদ্যানা;—দেখ নবদীপের সেই স্প্রেসিক তুর্ত মহামাতাল জগাই মাধাই—ভক্ত বেশে হাঠে সমাগত। এবং ধন-মন্ধান্ধ মহাবিলাসী ধনপ্রর পণ্ডিত অসার পার্থিব ধন: সম্পদের বারা ও মন্তর্গী অনারাসে পরিহার-পৃর্কাক ভিক্ষা-ভাগু হাতে লইরা তপন্থীর বেশে হাটে ফ্রিতেছেন। ঈশ্বর-শক্তি ব্যতীত মান্ধ্যে কথনও এই রপ্রিম-বাকণী-মন্ত্রতা ও ধন-মদান্ধতা মৃত্তে ঘুচাইরা, সকল সাধনের চরম-ফল প্রদান করিতে পারে ?

ধনঞ্জর পণ্ডিত সম্বাহন বৈক্ষব-বন্দনা প্রস্থের বর্ণনা—"বিগাসী বৈরাগী বিন্দো পণ্ডিত ধনশ্বর, সর্বাহ্ম প্রাকৃরে দিয়া ভাও হাতে লয়")। পদকরতর ও গৌরপদতরঙ্গিতে—"পছ মোর মিত্যানন্দ রায়" ইভি পাঠে এ গীতের আরম্ভ এবং শেষ চারি ছত্র নাই।

#### (०) बझां हि।

নিশ্যি নেহারসি, ফুটল কদম্ব—
করন্তলে বদন স্থন অবলম্ব ;
থলে তমু মোড়সি করিষ্ঠ ভল্—
অবিরল পুলক-মুকুলে ভল্ল আনু ছুল্ল—
এ স্থি! মোহে না করু আনু ছুল্ল—
জানলু ভেটলি—স্থামর-চলা। জ।
ভাব কি গোপসি ? গুপত নাহি রহই।
মরম কো বেদন, বদন স্ব কৃহই।

যতনে মিবারসি নম্ম কো-বোর।
গদ গদ শবদে কাইদি আধ-বোল।
আম-ছবে আদ্ম আন-ছবে পহ—
স্বন গতাগতি কর্মি একান্ত।
দ্বে রছ শুকুজন-গৌরব-লাজ—
গোবিল দাস কহে পড়ল অকাজ।

(৩) শুরু-গৃহ-স্থিতা শ্রীরাধার প্রেম-চেন্টাদি দর্শন করিয়া কোনও স্থী তাঁহাকে কহিডেছেন—স্থি! গাছে কদম-দূল ফুটিয়াছে, তুই দীর্ম-নিশাস ত্যাগ করিছে ক্ষিতে তৎপ্রতি চাহিডেছিস্কেন ? এবং কি নিমিন্তই বা বার-বার ক্রন্তলে কোপল বিক্তন্ত ক্রিতেছিস্? ও নানা ভলীতে (গোপনের চেটা করিয়া) কলে ক্ষলে আজ-মোটন করিতেছিস্? পুলক-কলিকার ডোর স্কাল পূর্ণ! ভাহাও চাকিবার নিমিন্ত যদ্ধ করিডেছিস্!

আবার নিকটে গোপনের এত চেষ্টা কেন ? খ্রাম-মু-নাগরকে দর্শন করিয়াত্ই—উদ্বেগ, লাললাও বৈরঞাদি ভাবের তরকে আকুল হইয়াছিল এবং তাহাকে কদম-তলার দেখিয়াছিল, এতো তোর তাক-চরিত্র দেখিয়াই বুঝা বাইতেহেছ !

ভাব, গুপ্ত থাকার বন্ধ নহে,—উহাকে কি করিয়া ঢাকিবি? মন্ত্রের বেদনার কথা—সুষ্ণের ভাবেই সমস্ত বনিয়া দেয়। বিশেষতঃ তুই বন্ধ করিয়া নয়নাঞ্গাত (লোক) নিবারণের চেষ্টা করিডেছিগ্—গদ-গদ-গবের আধ আধ কথা বনিডেছিগ্—ছল করিয়া আদিনায় বাহির হইতেছিগ্—আবার বান্ধ ছল করিয়া পথে বাইভেছিগ্—কিছুতেই দ্বির থাকিতে পারিতেছিগ্লা! এই সকল ব্যবহারেইতো ভোর হৃদরের অবস্থা ও ইচ্ছা স্থ্যক্ত হইয়া পড়িতেছে।

#### ( ह ) গান্ধার।

চল চল-স্কল-কলদ-তমু শোহন-যোহন অভরণ-সাজ অরুণ নয়ন-গতি, বিজুরী চমকে জিতি, দগধল কুলবড়ী-লাজ।

সজনি ! ষাইতে পেখসু কার্ন্-তব ধরি জগভরি, ভরল কৃত্ম-শর,নিয়নি হৈ বিয়ে আন ॥ গ্রু

স্থী ভাবাবিষ্ট গীতক্র্তা — গোবিন্দ কবিরাশ আরোও কহিতেছেন— ভোর লজ্জা ও গুল-গৌরব ছইই দূব হইয়াছে ! এবং উহা দেখিয়াই — আমি ব্ঝিতে পারিতেছি—অকার্য্য ঘটিয়াছে অর্থাৎ তুই বিপদে নিপতিত !

(৪) শীরাধা কহিতেছেন—স্থি! তুই ঠিক বৃষিয়াছিন্! গোণন করিয়া আর বাঁচিতেছি না। সমস্ত বলিতেছি শোন—দেখিলাম তাঁহার সম্বল-ম্বল্যরের স্থায় ঘন-লাবণ্য-মণ্ডিত চল-চল-তমু-ধানি—কের্রু, কুণ্ডল, বহা বন-মালাদি মোহন-আভরণে বিভূষিত হইয়া অপূর্ক্-শোতা বিস্তার করি-তেছে! দেখিতে দেখিতে-বিহ্যুতের স্থায় চঞ্চল ও তীত্রতাপময় তাঁহার অরণ-লোচনের গতিতে আমার—কৃলমান-রক্ষক-লজ্জাকে একেবারে দগ্ধ করিয়া ফেলিল! স্থি! এই প্রকার নয়ন-মনালহারী-রপ-মণ্ডিত কাম্বকে বাইতে-দেখিয়া অবধি, আমার বোধ হইতেছে জগৎ যেন কন্দর্প-শরে ভরিয়া গিয়াছে! আমি আর কিছুই চকে দেখিতে পাইতেছি না!

সেই বিদয়-রাজ, আমার মুখের পানে চাহিরা, হাসিতে হাসিতে অস মোটন করার—মোহনিরা বংশীটি ভাহার হাত হইতে পঢ়িরা পেল! তথন— জানিনা কি মনোবাসনায় উহা কুজাইবার ছলে দাঁড়াইরা আকুল-নয়নে মংল্রাড চাহিতে চাহিতে কিশলরের দল হাতে লইরা ভাহাতে দংশন ক্রিনেন। স্থি! ইহাতে অধ্য দংশনের স্থম্মতি স্থাভ প্রেমানলে আমি দ্যু ইইয়া যাইতেছি! এবং প্রোণ চঞ্চল হইয়া উঠিয়াছে!! भयू मूथ-मत्रिन, विद्यान छन्नू (भाष्त्रि,विश्रामिक (भाइन-यःभ-ना कानित्र (कान, मत्नात्रत्थ चाकून, किल्लान्नःमर्ग, कक्रमःभ ! चड्य: (म मयू मन, क्रमक हि चयूथन, (मामक हर्नेन-भन्नान, (गाविन्म माम-भिष्ठ्हे चार्णाचामन, चव्छ ना तिन्न कान !

# (৫) বরাড়ি।

চান্দ নেহারি, চন্দনে ভসু লেপই, তাপ সহই না পার! ধনল-নিচোল, বহুই নাহি পারই, কৈছে করব অভিসার ?

তাঁহাকে আনিরা মিলাইবার আখাস (আশোআশ)দিরা, দূতী গোবিন্দ দাস কান্তের নিকট বছকণ যাবে গিয়াছে, এখনও আসিল না ! ভাহার আখাস বোধ হর মিথ্যা হইরা গেল ! হার এখনও কাহুর সহিত মিলন হইল না !! (শোহন—শোভন; আন—অস্ত ; দরশি—দর্শন করিরা; বংশ—বাঁশী; অবহ—এখনও; মুঝু—আমার;)।

(৫) শ্রীক্ষের নিকট হইতে প্রত্যাগতা হইরা দৃতী বলিতেছেন—স্থি!
মাধব তোমার বিরহে একেবারে অনারন্ধ! তাহার অবস্থা অভিসারের
বোগ্যই নহে! তাহার স্থতা—সমরসাপেক, কিন্তু অধিকক্ষণ আমি সেধানে
থাকিলে, তুমি, থৈগ্য রাথিতে পারিবেনা জানিরা এখনি চলিয়া আসিলাম।
চল, আমরাই অগ্রে সক্ষেত্র কুঞ্জে,অভিসার করি। মাধবের অবস্থা ভরহর,বথা—
চক্র নিরীক্ষণে তাহার শরীর শীতল না হইয়া আরোও প্রত্থ হইতেছে! সে
তাপ সহিতে অনুষর্থ হইয়া অনবর্ত অকে চন্দন-পদ্ধ লেপন করিতেছেন!!
শরীর এত তুর্মল বে শুক্রা-ঘামিনীর অভিসারোপবোলী খেত-বসনের ভার
বহিতে অসুমর্থ। এ অবস্থা অপগত্ত না হইলে কি করিয়া অভিসার ক্রিবে?

অন্দরি। তোৰে নাগি সমাদলু কান—
বিরহে খীন তমু, অমুখন আকুল। অবইথে বিহি ভেল বাম। এ
যতন হি, মেন্-মন্ত্রার, আলাপেই; তিমির-গুপত-গতি-আশে
আওত জলন, তবহি উড়ি যাওত, উতপত-দীন্-নিশানে।
ভূয়া গুণ গান, নাম জপি জীবই, বহু-পুলকায়িত দেহা,
গোবিন্দ দাস কহ, ইহু অপরূপ নহু, কিয়ে না করু নবলেহা।

তোমার সমুদ্র অবস্থা ও সংবাদ তাহাকে জানাইয়াছি। বিরহ-বিশীর্ণ **(म(ह, উহা শুনিরা কেবলই তাহার আকুলতা বৃদ্ধি হইতেছে ! উহাতে আ**রোও বিধাতা বাম হইরা উঠিয়াছে। এদিকে নির্মাণ চক্রিকার জগৎ উদ্রাসিত দেখিয়া অন্ধ কারের স্বযোগে গুপ্ত-গতিতে অভিসারের অভিসন্ধিতে বিদয়রাজ, মেঘ ডাকিরা আনিবার নিমিত্ত মেঘ-মলার রাগিণী আলাপ করিতে লাগিলে-দেখিলাম তাহাতে মেঘ আইসে বটে কিন্তু তাহার অত্যুত্ত নিঃখাস-বাযুর সংস্পর্শে ভংকলাং (ভৰহি) বাষ্প হইয়া উড়িয়া যায়। আহা। কত আদরের সে বাচননান একণে বিষম-বিকার-গ্রন্থ হইরা কেবল ভোমার নাম জপ ও ওণ कीर्त्तन क्रिएडह । धवः छाराबरे छार वाहिया बाह्य। पर क्वनर वह-গীতকর্ত্তা গোবিশ কবিরাজ স্থীর ভাবাবেশে भूगकाबिक हहेरकहा ক্রিভেছেন, ভার ! নবামুরাগে কি না ঘটাইতে পারে ? রাধে ! ভোমাতে ভাছার বেরূপ প্রগাঢ় ও সদাবর্ধনশীণ নিভা-নৃতন অহুরাপ, ভাহাতে কোনও व्यवहेनहे व्यवख्य नरह। (प्रवृहेना शांत-प्रविष्ठ ना शांतिवा; निकान-বন্তু : কৈছে – কি ৰূপে ; ভোছে নাগি – ভোর নিমিত্ত ; খীন – কীণ ; অমু-यत - अब्क्न ; विहि - विवि ; चवहेरथ - এখন हेरारड ; खनडगिंड - खश-ভাবে গৰন ; উত্তপত—উত্তপ্ত ; দীৰ—দীৰ্ঘ ; নিশানে—নিঃখানে ; পেহা— (त्रष्ट व्यर्था९ (न्त्रम )।

#### (७) (क्षांत्र।

## चाकू (भथमू धनी-चिमात--

জানি বিলম্ব, তেজি পরিজনগণ আপতি করল শিরার। ক্র । মনসিজ অস্তরে, মস্তর লেখল, অপ্লনে-তিলকিত ভাল ! মুগমাল—নরম-কমল-দলে আঁকেন! শোভা কর শর্মাল।! যাবক রুসে, কুচ-কল্স রঙ্গাওল, তা কর অতুল ভাণ্ডার! কিছিণী কর্চে, হার ক্রমে ধরি, তা কর পাশ-বিধার!

কলপ্নাল নিশ্মই ইহার হাল্যে কোনও বাছ্-মন্ত বিধিয়া মোহিত ও বিত্রান্ত কলিয়া তৃলিয়াছে, তাহাতেই প্রেম পাগানিনী নয়নেরকজ্ঞক হারা গলাটে তিলক রচনা করিয়াছে! কমল-দল-মিলিত-মরনে কজ্জীর হারা অলন দিতেছে! এবং চরণে হাচক রচনা না করিয়া কান্তের অতৃক-ধনতাভাক্ষ স্বরপ স্বকীয় কুচ-কলস (কুজুমের পরিবর্তে) বাবক-রচন রঞ্জিত করিয়াছে! আবার মাধ্যকের মন বাঁধিবার প্রাণত্ত-রজ্জু-স্বরূপ কিছিণী-মালা কাইতে না পরিয়া হারের জ্ঞান কঠে ধারণ এবং পলার হার—জহনেপরিধান করিয়া সজ্জিত হইলাছে! (তা কর পাশ বিধার—ভাহাকে অর্থাৎ ক্লম্মেক বাঁধিবার বিভারিত রক্ষ্ম) এই কশে এম এবং ব্যস্তভার সমুজে তৃকিরা আবাংকক্ষ নিত্রিনী আল মহান্তক্ত অভিসাহের চলিয়াছেন।

শুনিরা সংযাধিতা-সধী কহিতেছেন,—কন্দর্প-কাহকর এখন কর্ট কিন্তা প্রকাশ করুক, পঞ্চপতির সহিত যাহার রণরঙ্গ, শশুপতির জ্র-কুটি-কম্পিড

<sup>(</sup>৬) সধীর কথা শুনিয়া রুফপ্রাণা-ধনী-মণি তথনই অভিসার সজ্জার প্রেবৃত্ত হউলেন। কোনও সধী অপরাকে তাহা দেখাইরা কহিছেছেন, বধা— আল আমাদের ধনী-মণির অপূর্ব্ব অভিসারোৎসব দর্শন কর। বিলম্ব ঘটা-ইবে বলিয়া সেখা-পরা-সধীগণকে ত্যাগ করতঃ নিজেই, আপনার অপূর্ব্ব-বেশ রচনা করিতেছেন!!

সংজ্ম-ভরম-মহোদ্ধি জুণুল, চললি নিত্ত্ত্বিনী রঙ্গে, ক্রে হ্রি বল্ভ, মদন ক্রব কিয়ে, সঙ্গুর পশুপ্তি সঙ্গে ?

# (१) ज्लानी।

প্রতে বিশিন, বিশিনতে কুঞ্চে
চলি আওলি যত্ন চালনী পুঞা;
তব ফুলল-হরি-নম্ন-চকোর—
ধাওল ধনী-মুখ চাল কি ওয়;

বা কর কিরণ উছলে দিনু রাতি বাহ। রহে চপল মদির-যুগ-মাতি; তা কর চঞ্চল পুদ্ধকো ঘাতে চপল-চকোর বিশ্বণ ভেল মাতে!

মদন তাহার কি করিবে ? (পশুপতি শব্দের প্রথমার্থ—গোপ ; এথানে শ্রীক্ষণ্ণ এবং বিতীয় অর্থ — মহাদেব ;) । কলপ-ভন্মকারী ) সঙ্গর শব্দের অর্থ-যুদ্ধ এথানে—কলপ-রণ।)

(৭) ক্রক্ষনী, কুল্লে উপনীত হইলে স্থী আরো কহিতেছেন—দেখ
পুলীভূত ঘন-জ্যোৎসা-রাশির স্থার—জ্যোৎসার সহিত মিশিরা আমাদের
কণাবতী-মণি প্রথমতঃ পুর হইতে অরণ্যে এবং একণে কানন হইতে কুল্লে
উপন্থিত হইলেন। স্থীর প্রদন্ত সংবাদ-স্থাভিষেকে-স্লীবিত-রসিকেন্দ্র-রাজ
অপ্রেই কুলে স্মাগত হইরা অপেকা করিতেছেন। নাগরের প্রেমাংফ্রআচরিত অবলোকনে স্থী কহিতেছেন দেখ —ধনী-মণির আগমন-মাত্র
নাগরের নয়ন-চকোররর তদীর বদন-স্থাকরের প্রতি ধাবিত হইরাছে!
এবং ভদর্শনে দিবারাজি-কিরণ-বিকীর্ণ-কারী এই বদন-চক্রমার মধ্যে যে
চুইটি মন্ত-ধল্লন (মদির-মুগল) নিরন্তর বিশসিত থাকে ভাহারা (প্রীরাধার
নয়ন-বর্ম) চক্রোর বুগলের উপর পুছোঘাত করিতেছে। (ভাবার্থ ছিলোদিনীও
নাগরের নয়নের উপরে নয়নাঞ্চল প্রহার করিতেছেন) কিন্তু ভ্রমার্ত্ত
চপল-চক্রোর-ঘর (নাগরের নয়ন) এ প্রেচারের বাধার বিমুধ হইবার নহে—
দেপ, উহারা উত্তেলনা পাইরা আরোঙ বিশুধ প্রমন্ত হইরা উঠিয়াছে।!

#### (৮) মায়ুর ধানিলি!

স্থান বদনে, সিন্দ্র-বিন্দ্, সাঙর-চিকুর-ভার—
যমু রবি শশি সঙ্গহি উরল, পিছে করি আদ্ধিয়ার!
রামা! অধিক চন্দ্রিমা ভেল—
কতেক যতনে কত অদভূত, বিধি নিধি ভোরে দেল। গ্রন্থল-লোচনে, বন্ধ-নেহারসি, অপ্তনে শোভা পার—
যমু ইন্দীবর, পাবনে ঠেলল, অলি-ভরে উল্টায়।

গীত রচয়িতা কৰি বিদ্যাপতি পরিহাস-স্থপদা-স্থীদের ভাবাবেশে ৰলিতে-ছেন—এ সব এই রূপই থাকে, বুণা লুকানোর চেষ্টা কেন ? স্থামার কথা

<sup>(</sup>৮) সমুল্লদিত-নাগর শিরোমণি, প্রিয়তমাকে স্থরত-স্থারসমন্ত্রী বাণীতে অভিনদন করিতেছেন—প্রিয়ে! তোমার স্থান্তর-বাদনের ঐ সীন্দ্র-বিন্দু এবং শ্রামল-কেশ-কলাপের শোভা দর্শনে মনে হইতেছে যেন স্থ্য ও চক্র আজ্ঞ অন্ধকারকে পশ্চাতে লইর্মা একত্রে সমুদিত হইয়াছে!! (বদন-মণ্ডল বা ললাট-ফলক-চক্র; সীন্দুর-বিন্দু—স্থা, এবং কেশকলাপ— অন্ধকাররূপে উৎ-প্রেক্ষিত) হে রামা! দেথ—সেই জক্তই আজিকার জ্যোৎস্থা যেরূপ উজ্জ্বল হওয়ার কথা, তদপেকা অধিক স্থানীপ্ত দৃষ্ট হইতেছে! আহা! না জানি কত যত্ন করিয়া বিধাতা ভোমাকে কত অন্ত্তনিধি প্রদান করিয়াছে! কত বলিব ? এই দেখ, তোমার চঞ্চল-নয়ন্দের বিশ্বম-দৃষ্টি—কি-অপূর্ব্ব শোভাই বিস্তার করিতেছে! আর অলন রঞ্জিত নয়ন-যুগণ—যেন পবন-বেগে পার্শে হেলিত ছইটি নীল-কমল— ভ্রমরের ভরে উল্টিয়া রহিয়াছে! আর এই যে বল্লাবৃত-উন্নত-পরোধর যুগল অল্ল অল্প দেখা যাইতেছে, এ ছটি স্থা-শৈলকে কি কখনও লুকাইয়া রাখা যাইতে পারে? এই যে তৃমি কত যত্নে কতবার বল্প (চীর) ছারা গোপনের চেষ্টা করিতেছ কিন্তু হেম-গিরি কি লুকাইতেছে?

উন্নত-উরোজ—চীরে ঝাঁপদি, থোর থোর দরশায়—
কতেক যতনে, কতেক গোপদি হেম-পিরি নালুকার।
(ভণ বিদ্যাপতি শুন্হ যুবতি,—এসব এরপ জান
রায় শিবসিংহ রূপ নারারণ, লছিমাদেবী প্রমাণ।)

#### (৯) বালা।

চিরদিনে গো-বিধি ভেল অফুক্লরে— বাছ পশারিয়া দোহে দোহা ধরুরে—
হত্ মুথ হেরইতে হত্ত নে আকুল রে! দোহ অধরামূতে দোহ মুথ ভরুরে!!

বিশাস না কর এই সকল স্থীকে জিজ্ঞাসা কর—শিবসিংহ রূপনারায়ণ লাছিমাদেবী এরা সকলেই এ কথার প্রমাণ। (পদকল্প-ভরুতে ও কাব্য-বিশারদের বিদ্যাপভিতে "হেমগিরি" হুলে "হিমে-গিরি" এবং পদাম্ত সমুদ্রে হিম-গিরি—পাঠান্তর, এবং উন্নত উরোজ হুলে উন্নজ-অন্ত্র!)

(৯) চিরদিনে—বহু-সময়াস্তে; প্রণয়ীগণের নিকটে-অদর্শনের প্রতি
মৃত্র্ত লক্ষ লক্ষ যুগের স্তায় স্থানীর্ঘ অমুভূত হয়। সো-বিধি—সেই চির-ছঃখদায়ক বিধাতা। আজ উভয়েরই সমান চেষ্টা ও সমান আগ্রহ,—অতএব াছ
গশারিয়া দোহে দোহাধকরে।

পঞ্ম ও ষষ্ঠ ছত্তের পাঠান্তর স্বস্থান্ত গ্রন্থে এইরূপ—

"দোহ তহু কাঁপই মদনক রচনে, কিঙ্কিণী রোল করত পুন সদনে।"

এই গ্রন্থের পাঠ অনুসারে ছত্রদ্বের অর্থ এইরূপ হইবে— শ্রীরাধার প্রতি মদনের আকস্মিক প্রবলাক্রমন দেখিয়া তাঁহার কটির কিন্ধিণী-গুলি যেন কিনি কিনি কিনি করিয়া রাগিয়া উঠিল। (কঠে,—রোবে, রাগ করিয়া) সপ্তম ও অইম ছত্রদ্বর অস্তান্ত গ্রন্থে নাই। ইহার ভাবার্থ—দেপ অধ্ব-পানানক্ষে হজনের বদনে নব নব স্মিত-মধুব-মন্দ-হাত উপ্রাত হইয়া, বদনেই দোহ তমু কাঁপই মদন উছল রে কিকিকিকিকিকি বলি কিঙ্কিণীক্রঠনরে জাতহিস্মিত্ত-নব বদনে মিটল রে দোহ পুলকাশলী তে লছ লছরে।

রসে মাতল ছছ বসন ধসল রে বিদ্যাপতি রসসিকু উছ্ললরে !

#### (:•) ভূপালী।

মদনমদালদে খ্রাম বিভোর, শশি-মুখী হাসি হাসি করু কোর; নয়ন ঢুকা ঢুকি লছ লছ-হাস— অঙ্গ হেকাহেকি গদগদ-ভাষ ;

মিলাইতেছে; এবং ভাহাতেই উভয়ের বরতমূতে লঘু লঘু প্লকাবলী দেখা দিয়াছে। ইত্যাদি।

অন্তান্ত গ্রন্থে শেষ ছত্রদ্বর এইরপ—বিদ্যাপতি শ্বব কি কহব আর, যৈছন প্রেম দোহু তৈছন বিথার।

(১০) এ গীতে রাধা-মাধবের বিপরীত-বিশাস-কেলি বর্ণিত। যথা,— শ্রাম-স্থানরকে মদন-মদালদে বিভার দেখিয়া, শনি-বদনী রাধা হাসিতে হাসিতে তাহাকে কোলে ধারণ করিলেন। পরস্পারের নয়ন ঢুলাঢুলীতে হুজনেরই শ্রীবদনে স্মিত মধুর হাস্য ফুটিয়া উঠিল, এবং একে অপরের অঙ্গে অজ-হেলাহেলি করিতে করিতে—রসাধিক্যে তুজনেরই বচন গদগদ হইয়া উঠিল!

এই সকল দীলা লভা-বাভায়ন-তল হউতে দেখাইয়া কোন ও সধী অপরাকে কহিতেছেন,—দেখ দেখ একণে কেলি-কলাব তী-বিনোদিনী নাথের অধর স্থানিংশেষে পান করিয়া জানহারা হইয়া পড়িয়াছেন ! এবং প্রাণকাস্তকেও সদন-মহাসাগরে ভুবাইয়া দিয়াছেন ! বোধ হইতেছে—আজ যেন চল্লের ও পদ্মের সংমিলন—(বাহা কেছ কখন দেখে নাই ভাহাই) সংঘটিত হইয়াছে !! প্রগাঢ়-আলিকনে ত্লনের অকই উত্তরোত্তর অধিক পুল্কিত ইইতেছে ! কল্প-এই

নিরসি অধর মধু পিবি অগেয়ান—
মদন-মহোদধি ডুবাওল কান!
ঘন ঘন চুম্বই নাহ-বরান—
সরসীজ চাক মিলন ভেল ভান!

নিবিঢ়-মাণিসনে প্লকিত অঙ্গ—
অপরূপ-রতি-কৈলি মনসিজ-ভঙ্গ!
দূরে গেও ময়ুর-শিখণ্ড পীত-বাস—
দোহ রূপ নিছনি গোবিন্দ দাস।

ইতি শ্রীগীতচিস্তামণো পূর্ব্ববিভাগে প্রগল্ভা বর্ণনে পঞ্চবিংশতি ক্ষণদা।

ক্রম-সম্বর্দিত অবিরাম ও অভ্ত-রতি-কেলি দর্শনে. পরাভব মানিয়া লজ্জার পলায়ন করিয়াছে ! নাগরের চূড়ার ময়ুর-পিঞ্ এবং পরিধানের পীতাম্বরও প্রাণ লইয়া সরিয়া পড়িয়াছে !! লতা-বাতায়ন হইতে লীলা-দর্শন-কারিণী স্থীর ভাবাবেশে গীতকর্ত্তা থোবিন্দ-কবিরাক্ত কহিতেছেন – আহা ! এই উন্মূক্ত-রূপ-মাধুরীর নিছনি যাই !

পদক্রতকৃতে এ গীতের প্রথম চারি ছত্তের পরেই এইরূপ পরিবর্ত্তন বথা—রসবতী নারী রসিক-বর কান, হিয়ায় হিয়ায় দোহার বয়ানে বয়ান। দোহ তমু—মাতল দোহ শর হান, বিদ্যাপতি করু সোরস গান।" আর আমাদের অক্তাক্ত পয়ারের একটিও ভাহাতে নাই!

কের-করিলেন; লছ লছ-লঘু লঘু; অগেরান – স্বজ্ঞান; কান-কার অর্থাৎ প্রীকৃষ্ণ; নাহ-নাথ; ব্যান – বদন; ভাল-শোভা; গেও – গেল।

## শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### অথ ষডবিংশতি ক্ষণদা।

(১) वताष्ट्रि। बीरगीतहस्तकः,

কেশের বেশে, জুলিল দেশে, তাহে রসময়-হাসি—
নয়ন-তরঙ্গে, ব্যাকুল করিলে, বিশেষে নদিয়াবাসী।
গোরাঙ্গ-হুন্দর, নাচে—
নিগম-নিগৃঢ়, প্রোম-ভকতি, যারে তারে পত্ যাচে। ধ্রু।

<sup>(</sup>১) স্ত্রীলোকের সৌন্দর্য-প্রশংসায়—"স্থকেশিনী" বিশেষণের বাবহার দৃষ্ট হয়,কিন্তু এই বিশেষণে কোনও পুরুষের কেশের প্রশংসা প্রায় কোথাও নাই! এনিমিত্ত "কেশের বেশে ভূলিল দেশে" এ কথাটি অতিবর্ণনা বলিয়া,যেন কাহারও মনে না হয়; বস্ততঃই উহা সম্পূর্ণ স্বাভাবিক বর্ণনা। শ্রীগৌর-স্থন্দর যে সময়েস মন্যাস গ্রহণ করেন, তখন আজন্ম-কেশ-কর্ত্তনে-সিদ্ধু-হন্ত নাপিতের কঠিন-প্রাণও সে ভূবন-মোহন-কেশে কুর লাগাইতে কাঁপিয়া উঠিয়াছিল। এমন কি—অপরিচিত্ত-নাপিতটি কাঁদিতে কাঁদিতে কেশ-মুওণে অস্বীকার করিয়া বিদিয়াছিল!! সম্বদর পাঠকমগুলি! এই একটিমাত্র ঘটনা ঘারাই আপনারা ব্রিয়া লউন, আমার গৌর-স্থন্দরের চিকুর-রাজী কিরপ নয়ন-মন-বিস্থাপক ও অতুলনীয়-স্থন্দর ছিল। তাই ভক্ত-সাধক পদকর্ত্তা কহিতেছেন—দেখ, স্থন্মের-চন্দ্রান শ্রীপৌরাঙ্গচন্দ্রের জগ-মনোহারী—চাচর চিকুর ভার, এমনি অলোক সাধারণ-স্থন্দরও নবীন ছাঁদে বাঁধা যে—মনোহর মৌক্তিক-দামে-সম্বন্ধ সে কেশ কলাপের বেশ দর্শনেই দেশগুদ্ধ লোক—আবাল-বৃদ্ধ-নারী-পূর্ষ, সকলেই মোহিত হইয়া যাইতেছে! অর্থাৎ দর্শকমাত্রেই আপন স্থাপন দেহ, গেহ,

ছল ছল করে, নয়ন-যুগল, কত নদী বছে ধারে—
পুলকে প্রিভ, গোরা কলেবর, ধরণী ধরিতে নারে —
চরণ-কমল, অভি-হ্লচঞ্চল, অথির ভাহার রীভ,
বদন-কমলে, গদ গদ-ছরে, গায় রদ-কেলী-গীত!

সংগার, স্বভাব, অধিক কি—নরনের পলক পর্যান্ত ভূলিয়া সে কন্দর্প-বেশো-জ্বল মধুর-মাধুরী আনন্দোলাদে-প্রমন্ত হুইয়া আসাদন করিতেছে। তর্মধ্য আবার নদিয়া-নিবাসীগণকে—শ্রীবদনের রসময়-হাসিতে ও দয়নের তরঙ্গে বিশেষ ভাবে ব্যাকুল করিয়া তুলিতেছে। তাহায়া নিজ নিজ ভাবে অভিভূত হুইয়া—রসের সাগরে ভুবিয়া যাইতেছেন।

এই রূপে,রূপের ফাঁদে জগৎ-বাধিরা আমার গ্রীগোরাক স্থলর,প্রেম-তরকে নাচিতে নাচিতে—যাহাকে তাহাকে বেদগুহু-প্রেমভক্তি বিতরণ করিতেছেন ! অর্থাৎ তাঁহার প্রেমাচরিত দর্শনেই দর্শক-মণ্ডলীর হৃদয়ে তড়িৎ-শক্তির স্থার ভক্তি-প্রেম-রস,সঞ্চারিত হইতেছে !! পাঠক মহাশর ! একটিবার এই জগমঙ্গল नौना-िहत्व नम्रन मान कक्रन ! रमधून-श्रामात्र निम्मा-विदातीत्र इनहन-नम्रन-যুগল হইতে প্রেমাশ্রন্থে কত নদীর ধারা বহিতেছে! প্রীত্তরধানি পুলকে কেমন ফুলিয়া উঠিয়াছে ! দেখুন—দে অঙ্গভার ধারণে অসমর্থ হটয়া পৃথিবী টল-মল করিতেছে! দেখুন, আমার গোরাটাল—স্তঞ্চল-চরণ-যুগলে কি অভত-অন্তির-গতিরীতিতে নানা-চ্ছন্দে চলিতেছেন ৷ কতবার পদখণন হইতেছে---তথাপি औठत्रन-पूर्णन नृष्ठा-त्रत्य-त्रमान ! चानम-शन्रम् चत्त्र, त्रमावरनत्र किन-রুদ-গীতি গান করিছেছেন এবং মাঝেমাঝে হাহা করিয়া হেমদণ্ডবৎ ভুজ-युगन উর্দ্ধোন্তোলন পূর্বক হরিবল! হরিবল! বলিতে বলিতে নাম-স্থারস আয়াদন ও বিতরণ করিতেছেন! পরক্ষণেই ভক্তভাব অন্তর্হিত হইতেছে এবং ব্রজের-ভাব বিশেষ প্রবল হইরা উঠিতেছে; অমনি উক্তৈঃম্বরে রাধা রাধা ডাকিতেছেন এবং (শ্রীরাধার বিশেষ-ভাবাৰভার) গদাধর বলিয়া পণ্ডিতগোম্বামীকে ধরিয়া আলিঙ্গন করিতেছেন !! ( আমাদের আদর্শ হস্ত-লিপি সকলে এ গীভিটি ভণিতা-হীন; পদকর-তরু ও গৌরপদ তরঙ্গিণীতে

হাহা করি করি, ভূজ-যুগ ভূলি—বলে হরি হরি বোল, রাধা রাধা বলি ভাকে উচ্চ করি, দেই গদাধরে কোল।

(২) বালা-হৃছই। শ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রস্য, অরুণ-বসনে, বিবিধ-ভূষণে, শিরেপাগ নট-পটিয়া— চৌলিকে হেনি, বাহু যুগ ভূলি, নাচে হরিবল বলিয়া।

ভণিতা আছে এবং প্রথম :চারি ছত্র বাদে অবশিষ্ট সংশের পাঠ সম্পূর্ণ ভিন্নরূপ যথা :---

ভাবে অরুণ, গৌরববণ—তুলনা রহিত শোভা,
চলনি মন্থর, অতি মনোহর, হেরি জগমন—লোভা।
স্বেদ কম্প ভেদ, বাণী গদ গদ, কত ভাব পরকাশে—
সে অঙ্গ ভঙ্গীম রূপ ভরঙ্গিম, তুলনা দিব সে কিলে ?—
সঙ্গে সহচর, অতি স্থ চতুর, গাওত পূরব নীলা
পরসাদ কহে, সে গুণ শুনিতে, দরবয়ে দারুশীলা॥

(২) কথনও ভক্তগণের ভর-ভঞ্জনার্থ, কথনও বা কোনও ভাগ্যবানের বাঞা পূরণাদি নানাকারণে, মাঝে মাঝে আমার গৌরাক স্থান্বের, ভগবান্ভাব বোগ্যজনের নিকটে প্রকটিত হইত বটে, কিন্তু সাধারণতঃ সর্বাদাই তিনি আপনাকে ভক্ত-ভাবের আবরণে ল্কায়িত রাখিতেন এবং তাঁহাকে অপ্রকাশ রাখার নিমিত্ত সকল-নিজ্ঞ-জনের প্রতিই তাঁহার যথাবোগ্য অম্বরোধ ও শাসন ছিল, কিন্তু আমার উদ্দাম-প্রেমময় নিতাইটাদ,—এ আদেশটি পদে পদে ভক্ত করিতেন। তাঁহার হর্দমনীয়-গৌর-প্রেমের প্রবাহ কোনও নিষেধ কোনও বাধাই মানিত না। মে হেতুক তাঁহার নিঃসন্দেহ দিরাস্ত ছিল—কলিতমো-নিমজ্জিত-তর্গত জীবগণ, গৌরগুণে না মুরিলে, গৌররলণে না মজিলে, গৌর-

## নিতাই-রঙ্গিয়া নাচে,—

শরণ-নয়নে, ও চাঁদ বদ্নে, কত না মাধুরী আছে। গ্রন্থা চলন স্থান,—মত্ত করীবর, নূপুর বৃদ্ধত করিয়া—
ভাবে অবশ, নাহি দিগ পাশ, গৌর বলি ভ্রারিয়া।

রদে না মাতিলে, তাহাদের অনর্থ ও অপরাধ বিদ্রণ ও ব্রজ-প্রেমলাভ আর কিছুতেই হইবে না। অতথব এই অতর্কিত-সত্যের বশবর্তী হইয়া, তিনি কলিভব-তারণের-সিদ্ধৌষধি—শ্রীহরিনাম,—গৌর-প্রেমের সহিত মিশাইয়া মহারঙ্গে বিভরণ ও আচারের হারা প্রচার করিতেছেন।

আমার নিতাই বলিয়ার-লোক-লোচনাকর্ষী কলেবরে সন্ন্যাসীর ভায় অরুণ-বস্ত্র এবং দর্কাঙ্গে স্ত্রীলোকের স্থায় নানা ভূষণ বিরাজিত ! মন্তকে গোপজাতির স্তার নটপটিয়া পাগ! দেখ,লোকলোচনাকর্ষণের ব্যপদেশে—বেশের ছলে এই-রূপে অচ্যতাগ্রজের ৪ শ্রীরাধার ভগি অনঙ্গমঞ্জরীর ভাবাভিব্যক্তিপূর্ব্বক, কলি-পীড়িত হুর্গত জনগণের প্রতি ক্লপাদৃষ্টি-দানের নিমিত্ত-চারিদিকে চাহিতে চাহিতে দিবাওলের অমঙ্গল বিলোপ করিয়া – ভক্তভাবে বাত তুলিয়া, হরিবল বলিতে বলিতে।নাচিয়া চলিয়াছেন ! দেব, ভাবাবেশে তাঁহার অরুণিত-নয়নে छ कॅान-वन्त्र, कर्न कर्न कठ नव नव माध्री विक्षिण इटेर्डिंड!! হায় ! এ মাধুরী বর্ণনের ভাষা নাই ! আরোও দেথ-এই লোকাতীত মাধুরীর সহিত নূপুরের ধ্বনির দারা জগতের প্রাণে প্রেমের ঝদার উৎপাদন করিতে করিতে মত্ত-করীক্রের রীতিতে তাঁছার নৃত্য-ভঙ্গীময় গমনের মাধুরী দর্শনেই লোক সকল প্রেমাকুল হইয়া যাইতেছে, তাহার উপরে আবার ভাবের অনির্বাচনীয় প্রভাব ! ঐ দেথ—ভারার প্রেমে পৌরবে ও আদরে, চ্চন্তার করিতে করিতে ও স্থধামধুমাখা গৌরনাম বলিতে বলিতে, ভাবে অবশ হইন্না পড়িয়াছেন! কোথা হইতে কোথায় বাইবেন মনেই নাই! **मिग-विमिग कान भर्यास विनुश !** 

বেশের—ক্লপের—ভাবের—প্রেম-নৃত্যের ও মধুমাথা হরিনামের এমন মহাপঞ্চামৃত-রদের-তরঙ্গে না ভাসিয়া কে থাকিতে পারে ? তাহাতেই দেথ—-ভাগ্যবান্ ভক্ত-মণ্ডলী প্রকটিত-প্রেমের আতিশ্যে ধ্র্য্য-ধারণে অপারগ ও যতেক ভকত, ধরণী লুঠত, হেরি ও চান্দ-বয়ানিয়া বাহুদেব ঘোষ, এ রসে বঞ্চিত, মাগ প্রেম-রস দানিয়া।

## (৩) বালা।

সজনি ! অপরূপ পেথলু রামা —
কনক-লতা অবলম্বনে উয়ল, হরিণী হীন-হিমধামা ?
গিরিযুগ- কনক, পরোধর উপর গীনকো গজমতি হারা
কাম, কমুভরি, কনক-শস্তু পরি—ঢারই হুরধুনী-ধারা ?

দেহ ধারণে অসমর্থ হইরা ভূমে গড়াগড়ি দিতেছেন, এবং জগৎ প্রেমরসে পূর্ণ হইরা উঠিয়াছে !!

পার্ষদ-গীতকর্তা, ত্রীল বাস্থদেব ঘোষ দৈন্যোক্তি করিয়া কহিতেছেন, কেবল আমি এ রাস বঞ্চিত। প্রেমরস-দাতা। (দানিয়া) এ কাঙ্গালকে কিঞ্চিৎ কণা-বিন্দু দিন্। (গৌরপদ তরঙ্গিলীতে ও পদ-কল্প-তরুতে "অরুণ বসনে বিদিত ভ্রনে; শিরে নটপটি পাগিয়া" ইতিপাঠে আরম্ভ এবং বস্থরামানন্দে, কান্দে নিরানন্দে নি হাই চরণ ধরিয়া—ইতি পাঠে এ গীতটি সমাপ্ত।

<sup>(</sup>৩) অত্বরাগে সদাক্ত্ত-প্রিরজনকে ও নিরম্ভর নবীন ভাবে উপলব্ধি করার। শ্রীরাধার সদাবর্ধন-শীল-ব্লপ-মাধুরী দর্শনে—অত্বরাগান্ধ শ্রীরফা তাঁহাকে অদৃত্ত-পূর্ব্ধ। অপরিচিতা রমণী জ্ঞানে প্রেমাক্ল চইরা কোনও সবীর নিক্টে সবিস্থারে কৃত্তিত্তভ্লন

সজনি! আজ এক বড়ই অপূর্ক রমণী-মূর্ত্তি দেখিরাছি। দেখিরাই বোধ হইল—একি অর্থলতা-অবলহন-পূর্কক কলক-হীন পূর্ণচক্ত সম্দিত রহিরাছে! (উরল—উদর হইল। হরিণী-হীন,—কলক-শৃন্তা/হীম ধামা—চক্ত্র। এখানে খ্রীরাধার দেহ—অর্থলতাক্তেপ ও তাঁহার জীবদন—চক্তরপে উৎপ্রেক্ষিত)।

নয়ন-নলিনীদে), অপ্তনে রঞ্জিত, ভাঙ-বিভঙ্গী-বিলাসা—
চকিজ-চকোর—জোরে, বিহি বাদ্ধল, কেবল কাজর-পাশা ?
প্রথম বয়সী ধনী, মৃনি-মন-মোহিনী, গজবর জিনি গতি মন্দা
সিন্দ্র-ভিলক ভামু, ভড়িত-সভায়মু উয়ল পুনমীকো চন্দা!
(পয়সি পয়াগে, যাগ শত জাগই, সো পাওয়ে বহুভাগি
বিদ্যাপতি কহ, গোকুল নায়ক, গোপীজন অমুরাগী।

তাঁহার পরোধর-যুগল বেন ছটি কনকের গিরি এবং তাহার উপরে প্রীবার গজনতি-হার বিলম্বিত হটয়া রহিয়াছে! আমার মনে হইল একি স্বর্গ-নির্দ্মিত শস্ত্র বাণলিঙ্গ-মৃত্তির উপরে, কল্প-শৃভায়ারা স্বরধুনীর সিলিল-ধারা ঢালিতেছে? (গীম—গ্রীবা। কম্মু—শৃভা) আর ধনী শিরোন্মণির নয়ন যুগণ ঘেন ছইটি নিলিনী।—তেমনি স্কুলর, স্লিংগ্লাজ্জল ও চিন্তা-কর্মক! তাহার উপরে আবার—মঞ্জন দ্বারা স্বরঞ্জিত এবং জন্সীমজনবিল্লিত! দেখিয়া আমার বোধ হইল যেন বিধাতা ছইটি চক্তিত-চকোরকে কেবল কজ্জলের রজ্জু দিয়া বাধিয়া রাধিয়াছে! (জোর—যুগল জোড়া) আহা! প্রথম যৌবনোচিত তারুণাম্ত-মাথা তাহার সেই স্কুমার-দেহ-সৌলর্ম্য এবং গজ্জেনবিল্লী মন্দ-মনোহর-গতি-ভঙ্গী দেখিলে—মুনিজনের মনও বিমোহিত হয়!! আর, স্কুনরীর স্কুলর ললাটোপরি বিরাজিত দিক্দুর বিন্দৃটি দেখিলে মনে হয় বেন প্রভাতের রবি সলা সমুদিত হইয়া রহিয়াছে।

স্থি! তোমাকে আগেই বলিয়াছি তাহার দেহ-লতার উপরে বদনখানি বেন চাঁদ উদর হইরা রহিয়াছে, তাহাতে সিন্দুরের বিন্দু সন্দর্শনে আমার বোধ হইল যেন একগাছি তড়িতের লভা কোনও অসাধারণ শক্তির প্রভাবে চল্র ও স্থোর একজোদর সংঘটন করিয়াছে!! আহা! বদি কেহ সর্বকামনা পুরক-তীর্থরাজ প্রেয়াগের জলে শত্ত-যজ্ঞ সমাধান করিয়াও (ভাগাইয়া) এমন রমণী-রক্স লাভ করিতে পারে তথাপি সে বছ ভাগ্যবান্! শুনিয়া, দখীর ভাবাবেশে পদ-কর্ত্তা উত্তর দিতেছেন, গোকুল-নায়ক! তুমিই যথার্থ—গোপী-

#### ( 8 )—গান্ধার I

শুন শুন মাধব ! কহলু মো তোরি—
তুরা শুণে লুবধি মুগধি ভেল সোই ।
মলিন-চিকুর তরু-চীরে—
করতলে বরুন, নয়ন ঝরু নীরে !
উরে দোলে শ্রামরু বেণী
কনক-কল্স-পর্কল্ল-সাপিনী

কোই রহে খাদ কি আশা ।
কোই নলিনী দলে করছে বাতাদা ।
কোই কহে 'আওল হরি'
চওঁকি উঠনি গুনি নাম তোহারি ।
বিস্থাপতি রস ፤ গাওরে—
বিরহিণী বিরহণ দণী সমুঝাওরে ।

অনুরাগী বটে! (এ গীতের ৭।৮ ছত্র অন্তাক্ত গ্রন্থে নাই; পদকর-তক ও পদামৃত সমুদ্রে তৃতীয় পংক্তির প্রথমার্দ্ধ এইরপ—গিরিবর গুরুষা প্রোধর পরশিত।

(৪) সধী বলিতেছেন—মাধব! বাহার রূপে তুমি আকৃল হইয়াছ, আমি সেই রাধার নিকট হইতেই আদিতেছি। তাহার দশা শোন—তোমার গুণ-ল্রা দে স্থলরী ভোমার নিমিত্ত অধিকতর প্রেমাকুলিতা! সে একেবারে মোহদশা প্রাপ্ত!! দেখিলাম, ভাহার চিকুরাবলী অমার্জ্জিত এবং মলিন! চিকুরের যত্ন তো দ্রের কথা দেহের প্রতিই তাহার দৃষ্টি নাই! তমুধানিও চিকুরের স্থার বিশীর্ণ এবং মলিন! পরিধানেও মলিন বসন (চীর); বদন করতলে বিক্তপ্ত! নয়ন হইতে অনবরত ধারা বহিতেছে!! শ্রামল্বলেশের (শ্রামক্র) বেণীটি,—স্বর্ণ-কুন্তে কাল-সাপিনীর ক্রায়্র বিশোলজের উপরে দোলিতেছে! তোমার নিকটে আদিবার সময়ে দেখিলাম—তাহার শ্রাম রুদ্ধ হইয়া যাইতেছে!! স্থীগণের কেহ শ্বামের আশায় আকৃল হইয়া রহিয়াছে। কেহ নলিনীর-দল ছারা বাতাস করিতেছে। সকলেই মহা বাাকুল!! ইভিমধ্যে কোনও স্বচতুরা সথী "হরি আদিয়াছেন!" এই স্থামন্ধী বাণী উচ্চারণ করায়—বেন কোনও অলৌকিক শক্তির প্রভাবে পদ-কল্লতকর পাঠান্তর—+ কমলিনী কোরে যেন; † কোই চতুরা ধনী হেরই নিশাদ: ‡ কবি; শ বেদন;

#### ( @ )--वाना ।

শুন শুন মাধব! পড়গ অকাল, বিরহিণী রোদতি মন্দির মাঝ! অচেতন স্থন্দরী না-মেলর দিঠি কনক-পুতলী গৈছে অবনীতে লুঠি! কো-ভানে কৈছম ভোহারি পীরিতি বাঢ়ায়া দারুণ প্রেম, বধহ যুবতী! বিদ্যাপতি কৰে গুনহ মুহারি! সুপুরুধ না ছোড়ই, রুগবতী নারী।

চমকিত হইরা উঠিয়া বসিরাছে। (কিন্তু তোমাকে না দেখিরা পরে যে কি বিপদ ঘটিরাছে জানিনা!)

(৫) এই সময়ে শ্রীরাধার নিকট হইতে অন্ত কোনও স্থী আসিরা শুক্
কঠে কহিতেছেন—মাধব! তোমার নব-নব-মাধুরীতে বড়ই অকার্যা উপছিত! তোমাকে না দেখিয়া বিরহিণী কেবলই কাঁদিয়া আকুল হইডেছে!
শুরুমন্দিরে যে একপ রোদন বিপদক্ষনক, তাহার এ জ্ঞান নাই! মন্দিরেই
অবিপ্রান্ত কাঁদিতেছে! কাঁদিতে কাঁদিতে অচৈতক্ত হইয়া পড়িতেছে!
চক্স্ নিমীলিত হইয়া যাইতেছে! সোনার পুতৃলী অবনীতে লৃষ্ঠিত হইডেছে!!
এই অবস্থার রাখিয়াই আমি চলিয়া আসিয়াছি, এখন কি সর্কনাশ ঘটতেছে
জানিনা!!

ভোষার এ কিরপ প্রেম ? নিদারণ প্রেম বাঢ়াইরা ব্বতী বধ করাই কি তোমার পুরুবত ? ক্ষোভে তৃঃধে আবেগে অভিভূতা এবং অধিক-বাগ্বিস্তাদে অসমর্থা—বক্তা-স্থীর ভাবাবেশে গীতকর্তা বিদ্যাপতি ঠাকুর উপসংহারে গদগদ কঠে কহিতেছেন, মুরারি ! (অর্থাৎ হে কুৎসা-বিনাশকারি !) রস্বতী-নারীকে এরপে পরিত্যাগ ভোষার মত অপুরুবের কর্ত্ব্য নহে ।

#### (- b )-CFM19 1

কবে সে হইবে মোর ওডদিন—\*
নয়নে নেহারিতে না বাসব ভিন !
ভন ভন এ সধি! নিবেদিছু ভোর—
নিশ্চর মিলব কিষে স্থামুখী মোর ?
স্মধুর বোল কবে ভনৰ প্রবণে ?
আধ-মুচকি হাসি হেরব নরনে ?

কুচপর কবে কর পরশিতে বাব ?
করে কর বারি ধনী মুখ পালটিব !
চরণ পরশি মুখ করব সরস—
রসাবেশে অকে ধনী করিবে আলস !
রাই-রন্ধিণী বব মিশব কোর—
সফল জীবন তব হুইবে মোর !

(৬) ৩ নং গীতোক্ত "অপরূপ-রূপে ও ভাবে" হরির অন্তর ভরিয়া রহিয়া-ছিল ! প্রথমা সধীর বাক্য-ভঙ্গীতে যখন বুঝিলেন---সে অপরূপ রম্ণী আরু কেছ নহে, আমারই প্রাণাধিকা রাধিকা,তথন তাঁহার মনে বিতর্ক উঠিতে লাগিল-"আৰু প্রিয়তমা-রাধা,—আমার প্রতি অভিলাষ-ব্যঞ্জক-হাসিতাবলৌকন কি कान अधिरवां प्रवाहित्वन मा किन ? निक्त इं कान बक्र प्रवाहित्व বামামরী আমার প্রতি বিমুখী হইরাছেন ! হার ! এখন উপার কি ?" এই-রূপ ভাবাবর্ত্তে মথ থাকার-প্রথমা-স্থীর সকল কথা অবধান-পূর্ব্বক ভূনিতে পারেন নাই ৷ দিতীয়া স্থীর ক্থা, তাহার প্রাণে বিষম বাজিল ৷ স্থুতরাং উৎকণ্ঠায় আৰুন হইয়া দীন-ভাবে বনিতেছেন।—হায়! আমার কি সে ভঙ্চ मिन इटेरव १ थ्वार्णचत्री तुथा-मक्षांछ-**छिन्न-छा**व পরিছার পূর্বক নয়নের প্রাণ-হরা-দৃষ্টিতে আমার পানে চাহিবেন? স্থি ৷ আমার নিবেদন ভন—আমি মিনতি করিয়া বলিতেছি—আমার সহিত এখন রহস্ত করিও ना-नण्डहे कि ऋथाम्यी ( बांधा ) चामात्र नहिल मिनत्मत्र बन्ध वाकिना ? হার ৷ কডকাণে ভাঁহার মধুর-বাণী শুনিরা এবং আধ আধ মুচকি হাসি দেখিয়া প্রাণ জুড়াইব ? আর আমি বখন ডাহার কুচ-যুগল স্পর্ণ করিতে উদ্যত হইব তথন তিনি স্বীয় করে স্থানার কর ধারণ করিবেন এবং তৎসক্ষে চুম্বন ভারের ব্যুপদেশে মধুর ভঙ্গীতে মুখ ফিরাইরা কুগুল-বিলোলিত গণ্ড-স্থানের লাবণ্য প্রদর্শনে আমাকে মোহিত করিবেন ?

পদ-করতকুর পাঠান্তর-আর কবে হবে মোর গুভকণ দিন ইত্যাদি।

## ( ৭ )—বরাড়ি।

মাধব মনোরথে বাচুল কাম—

দৃতী পাঠাওল শশিমুথী-ঠাম,

সো-ধনী-পাশ কহল সব বাতা—
অমুরাগিণি! অমুকূল বিধাতা!

এ সথি! স্তাম-মুনাগর রাম—

সো অব তো-বিমু ধরণী লোটাম!

পো রপ-মাধুরী সব ভেল আন—

যামিনী বিমু কি চাঁল পহিছান ?

এ ধনি ! অবংঘনি করছ বিশ্ব—
সো-জীয়ে তোগারি আশ-অবলম্থ !
এতদিনে সংশয় সব ভেল খীন—
তুত্ত ভেলি সণিক, কান্তু ভেল মীন ।
কল্পে হরিবরভ শুন স্কুমারি !
তুরা শুণে বিকাওল কুব্ধ-মুরারী।

ভারপরে আমি চরণে ধরিয়া তাহার কপট-কোণ শাস্ত ও হৃদয়-রসপূর্ণ — করিলে বর-বিনোদিনী—রসাবেশে শিথিণীঙ্গিনী হইয়া আমার অঙ্গে, অঙ্গ হেলাইয়ৢ৳ দিবেন, কিন্তু স্থি! আমি ভোমাদের রসময়ীর রহত্তময়-ভাবের মর্শোন্তেদ করিতে অসমর্থ হইয়া এখনও ল্রান্তির ঘূর্ণিপাকে ঘূরিতেছি, রঙ্গিনী রাধাকে যথন ক্রোড়ে ধারণ করিব, তথনই আমার জীবন সফল হইবে। কল্লাক্তরতে ভণিতা — ঐছন কাতর নাগর ভাষ, গুনি কণিরঞ্জন চলুধনী পাশ।

(१) মনোরণের অনুশীলনে—মাণবের বাসনা বলব তী তইয়া উঠিল।
এবং যে কোনও রূপে রাধাকে অভিসার করাইয়া আনিবার নিমিত শশি বদনীর
নিকটে দৃতীকে প্রেরণ করিলেন। ধনীর সন্নিধানে ঘাইয়া দৃতী মাধবের সকল
সংবাদ (কথাবার্তা) বলিলেন ও হাসিয়া কহিলেন—অনুরাগিণি! বিগাতা
পরমানুকুল! আম-স্থ-নাগর তোমার নিমিত্ত থাকুল হইয়া ধয়ণী-লৃটিত
হইতেছেন! তাহার দে জগরারী-মনোহর-রূপ ও অপরূপ-লাবণ্য বিরহোত্যাণে
মশিন হইয়া গিয়াছে! (স্মান—অন্তর্গ)।

যেমন রজনী বাতীরেকে চান্দকে চেনা যার না (পহিছান —পরিচর করা)
ভাষাৎ অধাকরের সৌন্ধ্য-মাধুর্ঘাদির বিকাশ কেবল যামিনীর সহিত সম্প্রিলনেই ঘটিয়া থাকে, নহিলে রশ্মিহীন! সেইরূপ তোম:বাতীত, শ্রাম-অধাকর
এমনি মণিন ও বিশীর্থ-দশাগ্রস্ত যে তাহাকে দেখিলে চেনা যার না!। আত্রব ভারে ক্রণাত্রপ্ত বিশ্ব ক্রেব্য নহে—এখনি অভিসারে চল। কারণ কেবল-

#### (৮) ধানিদ।

কুন্দ-কুস্থম ভরি কবরী-কো ভার--- ধবল বিভূষণ, অম্বর, বলরী -জ্বন্ন বিরাজিত মোতিম হার; চাनानी-त्रक्नी-উজোরণ-গৌরী---হরি-অভিসার রভস-রণে ভোরি;

ধविषय-कोत्रुषी-मिनि छन्न हनई। হেরইতে লোচন পরিজন-ভূল-রক-পুতণী কিয়ে রস-মাহ বুর ?

মাত্র তোমার গমনাশাবলম্বন-ছব্নি প্রাণ ধারণ করিতেছেন !! স্থি ! এতদিনে আমার মনের একটি সন্দেহ সমূলে উন্লূলিত হইল! বুঝিলাম আমাদের বিপক্ষাদলের বড়াই একেবারে বৃগা এবং একমাত্র তুমিই কামু-মীনের স্বিল স্বর্গুপিনী অর্থাৎ জীবনের স্ববলম্বন !

দৃতীর বচন প্রবণে গৌরবে প্রকৃলিতা হইয়া তত্তোপবিষ্টা-শ্রীরাধার-সধীর ভাবাবেশে গীতকর্ত্তা হরিবল্লভ (শ্রীল বিশ্বনাথ চক্রবর্তী মহাশয়) কথিতে-ছেন,—স্কুমারি ৷ তোর মত গুণবতী ভুবন-ছন্ন ভা বলিয়াই তো মাধব তোর গুণে এমন বিক্রীত।

(৮) স্থীর চেষ্টা ও চাতুর্য্য সফল হইল, প্রেমমন্ত্রী তথনি অভিসারে চলিলেন ৷ কোনও অমুসঙ্গিনীর মূবে তাঁহার অভিসার চিত্রটি এই গীতে ক্ৰিত হইয়াছে। ষথা,—ুদেথ আমাদের কলাবতী-মণি কুন্দ-কুস্থমের স্তবকে কররী পূর্ণ করিয়া, উহা ধবলিত করিয়াছেন। জনমে অমল-বেত-মুক্তার হার বিরা-িত ! শ্ৰীষদ্ধানি কপুরে হশোভিত ও খেত-চন্দনে-চর্চিত। অঙ্গ হইতে অলান্তর অনদ-প্রবাহে পূর্ণ (ভরপূর) হইতেছে ! আজ আমাদের গৌরী— কান্তাভিগারের-রুদানলে ভোর হইরা জ্যোৎসাময়ী রুলনীকে আরোও দেন উজ্জাণিত করিয়া তুলিয়াছেন ৷ স্থতরাং ধবল-মণিভূষণ-পরিহিতা ও ধ্বল-বদনে বলয়িতা (অঙ্গবেষ্টিতা) বিনোদিনী ধবল-কৌম্দীতে অঞ্জ মিলাইয় সহজেই অব্দ্রিতে চলিতেছেন ! তদ্দর্শনে পরিজনের নয়নে ভ্রাস্তি জ্ঞান্তি তেছে,--একি রাঙ্এর পুত্নী পারদে (রসে) ডুবিরা অবদুভা হইয়া গেল ?

চন্দন-চরচিত ক্ষচির কপুর—
অঙ্গ হি অঙ্গ অনঙ্গ ভরি পুর।
পুরতি-মনোরথ গতি অনিবার—
গুরুক্ণ-কণ্টক কি করন্ধে গার ?

মুর্ছি-শীকার পীরিতি-ময়-ভাষ॥ মিললি নিকুঞ্জে কহে গোবিল দাস!

(৯) বরাজি।

রাধা-বদন বিশোকন-বিকশিত বিবিধ-বিকার-বিভঙ্গ জলনিধি মিব, বিধু মণ্ডল-দর্শন-তরলিত-তুঙ্গ-তরঙ্গ! হরি মেকরসং-চিরমভিলষিত বিলাসং— সা দদর্শ গুরু-হর্ব-বশন্তদ—বদন মনঙ্গ বিকাশং। হার মমলতর তার মুরসি দধতং পরিলম্বা বিদূরং— স্ফু টভর-ফেণ্-কদন্ত-কর্মিত মিব যমুনা-জল-পূরং! স্থামল মুছল কলেবর-মণ্ডল মধিগত গোর-ছুকুলং। নীল-নলিন মিব-পীত-পরাগ-পটল-ভর বলমিত মুলং॥ তরল-দৃগঞ্চল-বলন মনোহর, বদন জনিত রতিরাগং— স্ফু ট-কমলোদর-খেলিত-খঞ্জন-মুগ মিব শর্মি তড়াগং! বদন-ক্মল-পরিশীলন মিলিত মিহির সম কুণ্ডল শোভং— স্মিত রুচি-রুচির সমুল্পসিতাধ্র-পল্লব কৃত-রৃতি-লোভং।

দেখ মনোরথ-পূরণের নিষিত্ত—কেমন অনিবার গতিতে চলিতেছেন, ভরুকুলরপ কণ্টকে এ অব্যাহত গতির কোনও বাধা জন্মাইতে অর্থাং কিছুই করিতে পারে না! আহা! আমাদের শ্রাম-মনোলারিণী আজ শীলাবের সচল প্রতিমাবৎ অর্থাৎ মূর্ত্তিমান বেশের স্লার শোভামরী হইরা প্রীতি-স্বধামাধা কঠে কথা কহিতে কহিতে কাজের সহিত নিকুঞ্জে মিলিতা হইতেছেন।

<sup>(</sup>৯) এই গীতের আখাদনী একাদশী কণদার ১০,নং গীতের নিমে দেখা

শশি-কিরণোচ্ছ্রিতোদর-জলধর-হৃদ্দর সক্ত্ম-কেশং—
তিমিরোদিত-বিধুমণ্ডল-নির্মাল মলয়জ-তিলক-নিবেশং।
বিপুল-পুলকভর দস্তরিতং, রতি-কেলি-কলাভিরধীরং—
মণিগণ-কিরণ-সমূহ সমূজ্জ্বল ভূষণ হৃত্তগ-শরীরং।
শ্রীজয়দেব, ভণিত বিভব, দিগুণীকৃত ভূষণ ভারং—
প্রাণমত কদি বিনিধার হরিং হুচিরং হুকুতোদর সারং।

### ( > ) ८क मौत ।

দোছে দোহা নিরথই নয়নের কোনে—

তৃত্ হিরা জর জর মনমথ বাণে !

তৃত্ তকু পুশকিত ঘন ঘন কম্পা,

তুহু ক্ত মান সাগরে দেই ঝম্প।
তুহু তুহু আরতি পীরিতি নাহি টুন্টে,—
দরশনে পরশে কতই হুথ উঠে!

#### ( >> ) कारमान।

দেখ দেখ রাধামাধ্য সঙ্গ—
ছুক্ত লোক্ত-মিলনে, আনন্দ বাঢ়ল মনে, ছুক্ত জুলিত অনঙ্গ !
ছুক্ত কর পরশিতে, সপুলক দোক্ত তমু, ছুক্ত ছুক্ত আধ্যাধ বোল

<sup>(&</sup>gt;•) এই नीटिं क्र चाचामनी मर्थमी क्रथमात्र १ नः नीटिं निटङ्ग मिर्टे ।

<sup>(</sup>১১) কেলি বিলাসের ছবি। এ গীতে বর্ণিত বিণাদ "ক্ষাবেশময়"

কিন্ধিনী মুপুর, বলয় মণিভূষণ, মঞ্জীর ধ্বনি উত্রোল !
রাই কাকু আলিঙ্গন, নীলমণি কাঞ্চন, ছেরইতে লোচন ভোর—
আবেশে অবশ হুত্—তকু ভেল আকুল, জলধরে নিজুরী উজোর
ঘন ঘন চুম্বনে, হুত্ মুখ দরশনে, মন্দ মধুর-মুহু হাস,
খ্যাম-তমাল, কনকলতা-বেচ্ল, নিছ্নি গোবিন্দ দাস।

## ( ১২ ) পঠ-মঞ্জরী।

রতি জয় মঙ্গল, ভরল সব কানন, কো কল্ আনন্দওর শ্যামর কোরে, কলাবতী বিল্মই, নব ঘনে চাঁদ উজোর!

এবং ইহার পরের গীতোক্ত লীলা-বিলাস "কৌতুক-প্রধান"। সেই জন্মই তাহাতে উভয়ের বিবিধ-বৈদ্য্মীর 'ওর' অর্থাৎ অবধি প্রদর্শিত।

(১২) এ গানে রাধামাধবের বিপরীত বিহার বর্ণিত হইরাছে। রসজ্ঞভক্তমণ্ডলী সুস্পষ্টার্থ মূলের পদগুলি বারংবার আহতি দ্বারা লীগামূভব ও
রসান্থাদন করুন। আমরা কেবল প্রথম ছত্তটির তাৎপর্য্য মাত্র পরিস্ফুট
করিতেছি। যথা—

"আজ রাধামাধবের রতি-কেলিরপ মঙ্গল-জয়োৎসবে কানন পরিপূর্ণ হইরা উঠিয়াছে! দেখ,—কুঞ্জ-কেতনের পুশ্পিতা ও নব-পল্লবিতা লতিকা-রাজির ও তরু নিচমের সহিত—সমগ্র কাননের তরুলতাগণ মন্দ-মারুত্ত-হিল্লোলে নাচিতেছে! আর সকলকেই অজত্র নিজ নিজ পরিমল উপঢ়োকন প্রদান করিতেছে!

মলয়ানীল—অনির্দান-যমুনার-নীর-কণা ও পুল্প-পরিমল অঙ্গে মাথিয়া নানারজে নানাতরঙ্গে, নাচিতেছে আর কেনী-বিলাসী-কিশোর-কিশোরীর শ্রমাপনোদন করিতে করিতে শৈত্য ও সৌগন্ধ উপহার দিতেছে এবং আনন্দোলাসে লতা পতাকে দোলাইয়া—তরণী-স্থতার চলচল তমুতে মৃত্ মৃত্-তর্ল-লহরী তুলিয়া—

বৃন্দাবনে বনি, রমণী-শিরোমণি, অমুপম অমুগত ছান্দে—
কগলনী দলে, রঙ্গে নব-মধুকর, মাতি রহল মকরন্দে ?
ত্ত মুখ হেরি তুত্ত, করু কত চুন্থন, মাতল-মনদিজ-রঙ্গে !\*
বাঢ়ল পীরিতি-দিক্ষু, তুত্ত ভেল আকুল, ভালল রংলর তরঙ্গে !
নিবিঢ় আলিঙ্গনে, তুত্ত তমু মিলনে, হেমমণি মরকত জোর
যত্ত্বাথ দালে কয়, তুত্ত রদ-স্থময়, কত কত বৈদগধি ওর !
হৈত জ্গীতচিন্তামণো পুর্ববিভাগে বড়বিংশত কণদা।

পক্ষী-মৃগাদির অঙ্গ ঠেলাইয়া—স্থীগণের অলক-নীচোলাদি সঞ্চালন ও উত্তোলন করিয়া কতই রঙ্গ করিতেছে ৷ এদিকে আকাশের স্থাকর, —দিনকর-কুমারী ষমুনার তরঙ্গের উপরে আরোহণ করিয়া বসিয়াছে এবং অসংখ্য-মূর্ত্তি ধরিয়া—কত অঙ্গভঙ্গী করিয়া তরজের সহিত নাচিতেছে !

আর—সমগ্র বন-ভূমি, চক্র-কিরণ গারে মাথিরা হাসিতেছে। মর্র মধুকর, কোকিল, শারী, শুক. চাতকাদি পক্ষীগণ, মধুর ধ্বনিতে আকাশ ও বনভূমি মুথরিত করিয়া পরমানলে ত্লনের গুণগান করিতেছে, কেচ কেহবা ন্ত্য করিতেছে।! স্থীগণের স্থানের আনন্দু ধরিতেছে না! তাহাদের নম্বন, বদন, হস্ত, পদ রসনাদি অল প্রত্যক্ষের সহিত অভরণ বসনাদিও যেন উৎসবোৎফুল ও নৃত্যময় হইয়৷ উঠিয়ছে। আহা! এই অবধি-প্রাপ্ত মহান্দের কথা স্যাক্ প্রকাশ করিবে কার সাধ্য!! ইত্যাদি!

কোনও কোনও গ্রন্থের পাঠান্তর—মালতি সরসীজ রক্ষে।

## শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

#### অথ সপ্তবিংশতি ক্ষণদা।

## ( ১ ) बीरगीतहस्त्र ; महात ।

গৌরাক ঠেকিল পাকে—
ভাবের আবেশে রাধা রাধা বলি ভাকে
স্থরধুনী হেরি গোরা যমুনা ভানে—
ফুলবন দেখি বৃন্দাবন পড়ে মনে!
ভাবের ভরমে গোরা ত্রিগুলিম রহে—
শীত বসন আর মুরলী চাহে!

প্রিয়—গদাধর করিয়া কোলে —
কোথাছিলা, কোথাছিলা গদগদ বোলে
( "ভাব বুঝি পণ্ডিত রহে বাম পাশে
না বুঝয়ে এই রঙ্গ নরহরি দাসে।" )

(১) প্রবল-প্রবাহের বেগে নদীতে বেমন বড় বড় আবর্ত্ত বা ঘূর্ণিপাক উৎপর হয়—উহাতে যাগ পতিত হয়, তাহাই বছক্ষণ পর্যস্ত কেবল ঘূরিতে থাকে, তেমনি আমার নদীয়া-বিহারী-গোরহরি আজ প্রেম-স্রোত্তিমনীর ঘূর্ণিপাকে ঘূরিতেছেন! (প্রীরাধার ভাব ও কান্তি-বিশিষ্ট হটয়া প্রীরজেন্দ্রনাক গোর হইয়াছেন সত্য বটে, তপাপি প্রেম-তরঙ্গিণীর চক্রাবর্ত্তের প্রভাবে প্রীনবন্ধীপ বিহারে অনেক সময়ে ব্রজ্ঞকিশার ভাবেও তাঁহার দীলা-বিলাদ দৃষ্ট হয়!)

আৰু স্বরধ্নীর উপবন-বিহার কালে, প্রেমের ঘূর্ণিপাকে ঠেকিরা, আমার গৌরাঙ্গ চল্লের হৃদরে-ত্রজনাগর ভাব জাগিরা উঠিরাছে। তাহাতেই বোধ হয় অগ্রে-নিক্ঞাভিসারী-কৃষ্ণাবেশে—বিরহাক্ল হইয়া 'রাধা রাধা' বলিয়া ডাকিতেছেন, স্বরধুনীকে তাহার যম্না বলিয়া ভ্রান্তি এবং ভত্তীরবর্ত্তী কৃষ্মকাননকে বৃন্ধান বলিয়া মনে হইতেছে। আর উৎকঠাকুল হইয়া ভাবিতেছেন— একবার আকর্ষণী বেম্মু-ধ্বনি করি। তাহাতেই বৃঝি—জ্বিজ্ঞ হইয়া লাভাই-লেন। কিন্তু দাঁড়াইয়াই দেখিলেন হাতে বেণুনাই।পরিধানে পীতাম্বর নাই।!! তাই ব্যন্ত হইয়া বলিতেছেন— অমার মুরলী ও পীভাম্বর কোথায় গোল!

## ( १ ) শ্রীনিভ্যানন্দচন্দ্রক, সিন্দুড়া।

নিভাই কেবল, পতিত জনের বন্ধু—
জীব-চির-পুণ্য-ফলে, বিধি আনি মিলাওল,
রঙ্ক মাঝে রতনের সিন্ধু!

দেখ—এইকথা বলিতে ৰলিতে শ্রীকাধার বিশেষ-ভাবাৰতার-ভক্তশক্তি-গদাধর পণ্ডিতকে সন্মুখে দেখিয়া মনে হইয়াছে, এই যে আমার হৃদয়-বিহারিণী-য়াধা সমাগ্রা! অমনি পণ্ডিতকে বক্ষে ধারণ্-পূর্বক গদ গদ কঠে কহিতেছেন,— হার! এতক্ষণ কোথার ছিলে?

পণ্ডিতবর অমনি শ্রীরাধারতাবাবেশে তাঁহার বামে দাঁড়াইরাছেন! রিদিক ভক্তপণ ব্রজের যুগণ-মিলন শ্রীনবদীপে দর্শন করিয়া ক্রতার্থ হইতেছেন কিন্তু সাধারণ বিজ্ঞমণ্ডলী অবতারের-বাক্ত-উদ্দেশ্ত — জীবোদার-গীলার সহিত এ রক্তের কোন ওরপ কার্য্য-কারণ-সম্বদ্ধ নির্ণয় করিতে পারিতেছেন না দেখিয়া — গীত-কর্তা ঠাকুর নরহরি তাহাদের হইয়া কহিতেছেন! এ লীলারক্ত-শ্রুকটনের্শ উদ্দেশ্ত কি বুঝিতেছি না!

(২) জন্মের ও কর্মের দোবে জীবের পাতিত্য জন্ম। ধর্ম-শান্ত্রের, ধর্মাচার্য্যগণের এমন কি দেবতাগণের পর্যাস্ত পতিতের প্রতি দ্বণা! পতিতের জীবন চিরবিড়ন্থনামর, ইহাদিগকে আপন বলিবার কেই জগতে ছিল না! কেবল আমার নিতাইচাদ পতিতের বন্ধ্রণে জগতে সমৃদিত হইরাছেন!

'রত্বের সিন্ধু' অসম্ভব করনা বটে কিন্তু দরিজের (রক্ষের )পক্ষে রত্বের সিন্ধু লাভ বেমন করনাতীত—স্বপ্নাতীত-সোভাগ্যের বিষয়, তেমনি জীবগণের চিরপুণ্য-লদ্ধ অভাবিত-সৌভাগ্যে আমার প্রেমসিন্ধ-নিতাই-স্থল্পর—মানবর্ধণ, মানব-সমাজে অবতীর্ণ হইয়াছেন! দি। নেহারিয়া যায়, তাকে পশু-গোরা রায়,

অবনী পড়াে মুরছিয়া।

নিজ সহচর মিলে, নিভাই করিয়া কোলে,

সিঞ্চে পশু চাল্দ মুখ চাঞ্চ:

নব-কঞ্জারুণ-অঁথি, প্রেমে ছল ছল দেখি,

অসেরু উপরে মন্দাকিনী ?

সেঘ-গভার-নালে, পুন ভায়্যা বলি ডাকে বং
পদ ভরে কম্পিত সেদিনী।

দেখ — আমার প্রভূ—( পছ) নিতাইচাদ সকরণ-দৃষ্টিতে দিগ সকলের অমঙ্গল বিধ্বংস-করিতে করিতে চলিয়াছেন। চতুর্দিকবর্ত্তী জীবগণের চর্দ্দ-শার ব্যাণিত হইরা, উচ্চ্ছলিত প্রেমে, গৌর! গৌর! বলিয়া ডাকিতেছেন! ডাকিতে ডাকিতে প্রেমে বাহ্ছ-রন্তিলয় ও দেহ ধারণের শক্তি অন্তর্হিত হইয়া যাইতেছে! হার হার! ঐ মৃচ্ছিত হইয়া ভূমে পড়িয়া গেলেন!!

সহচর ভক্তগণ ব্যাকৃল হইয়া আমার নিতাইকে ক্রোড়ে ধারণপুর্কক বৈবর্ণাদি দর্শনে আকুল হইয়া তাঁহার চাঁদমুখে জল সিঞ্চন করিং ছেন!

কিরংক্ষণাস্তর — গীতকর্ত্তা আহলাদে গদগদ হইয়া কহিতেছেন—আমার প্রভ্র মৃদ্ধা ক্রমশঃ অপনীত হইয়েছে! দেখ—নবীন নলিনীর দলবং অঞ্বন্দরের উত্তানভাব অপনীত হইয়া প্রেমভরে আঁথি ছল ছল করিতেছে! তংশরেই বলিতেছেন—হায় হায়! একণে স্বর্ণাচল-স্থমেকর উপরে প্রবাহিতা মন্দাকিনীর আয়, তাঁহার হেম-তমুর তপরে অজপ্র অঞ্চনধারা বহিতেছে! ভায়া-গৌর-স্থলরের গুণ-চরিতের ও ভ্বন-মঙ্গল-লীলার স্থতিতে আনন্দে ও গৌরবে উন্মন্ত হইয়া মেঘ-গন্তীরনাদে ভায়া! ভায়া! বলিয়া ডাকিতেছেন, এবং পদভরে পৃথিবী কাঁপিতেছে! কি আনন্দ! এ পদ-মর্দ্ধনে পৃথিবীর সকল অমঙ্গল—সকল ছংথ—সকল ছর্দ্ধা বিমন্দিত হইয়া যাইতেছে!!

भाक्तज्ञ भाशे खत्र -- काँ ति भए वनन (हतिया ; † छाई छाई तव करत

নিতাই করণাময়, জীবে দিল প্রেসচয় গ্রঃ
থে প্রেম বিধির অবিদিত §
নিজ গুণে প্রেম দানে— ভাসাইল ত্রিভূবনে,
বাহ্নদেব খোষ সে বঞ্চিত ॥

( গ ) ভাটিয়ারী।
আগে পাছে মোরা, যত সহচরী, যমুনা জলেরে য।ই—\*
ঘোকট বাড়াইতে রূপ, নয়নে লাগিয়া গেল—
সোসর হইয়া নাহি চাই ণ

এইরপে আমার নিতাইটাদ কলির সিংহাদন কাঁপাইয়া এবং রূপাদৃষ্টিতে জীবের জীবনে নবীন-প্রেমভাব প্রদান করিয়া ও গৌর-নামের মহামধুতে জগং মাতাইয়া কলি পীড়িত জীবর্শকৈ, দান্ত, সধ্য, বাৎদল্য, মধুরাদি সর্ব্ব-প্রকার প্রেম—যথাযোগ্য রূপে প্রদান করিতেছেন ! এ প্রেম, বিধাতার স্বষ্ট স্বকীয়-স্থ-স্বার্থ-প্রথিত জাগতিক প্রীতি নহে, উহা বিধাতার অবিদিত অনোকিক এবং অকৈতৰ পদার্থ। এ প্রেমের বিষয়—প্রেমের পর দেবতা-শ্রীরাধা ব্রজেজ্র-নন্দন।

আমার নিতাইটাদ এই প্রকারে জীবগণকে নিজ-গুণ-রক্ত ছারা নিরস্তর আকর্ষণ পূর্বক প্রেমদান করিতেছেন ও প্রেমে জগৎ ভাসাইতেছেন। পার্মদ-গীতকর্তা বাস্থদেব ঘোষ ভক্তোচিত দৈক্ত প্রকাশে কহিতেছেন হার! এমন অবতারেও আমি বঞ্চিত হইরা রহিলাম!

(৩) খ্রীরাধা কোনও স্থীকে কহিতেছেন,—স্থি! স্থাসার একি

পদকরতকর পাঠান্তর—‡ প্রেমাশ্রয়; § হেন দয়া জগতে বিদিত। পদকরতকর পাঠান্তর—\* আগে পাছে চলে মোর, কত প্রিয় সহচরী, যমুনার জলে আজু যাই; া সরম রহিল সেই ঠাই; শাজু কি পেথমু দ্ধপ ক্লম্বের তলে—

হিয়ার মাঝারে মোর, না জানি কি জানি হৈল,

নিরবধি ধিকি ধিকি জ্লো! গ্রু!

কেন বা চঞ্চল চিত্ত— নিবারিতে নারি গো!

মন মোর ধির নাহি বাদ্ধো—

তিলে তিন বার স্থি গ্রু মুরছা হইরা থাকি,

চেতন পাইলে প্রাণ কান্দো!—

হইল ? আজ বখন আমরা যাবতীয় সহচরীয় সহিত মিলিয়া যমুনার গিয়া-ছিলাম ঐ সময় ঘোমটা টানিয়া দিতে ( ঘোলট—ঘোমটা ) আমার নয়নে এক অপূর্ব্ব অভিনৰ রূপ, লাগিয়া গিয়াছে ! সঙ্কোচ ৰশতঃ স্থীগণের সমান (সোসর) হইয়া চাহিতে পারি নাই, তথাপি সে রূপে মোহিত ও অভিভূত হইয়া গিয়াছি !

সধি! আজ কদস্তলার একি অপূর্ধ-রূপ দেখিলান ? ইহা কি কোনও
মান্নবের রূপ না দেবমারা অথবা কোনও প্রকার কৃষ্ক ? উহা দেখিলা অবধি
আমার কি এক প্রকার অনির্কাচনীর উৎকট অবস্থা উপলাত হইরাছে এবং
অনবরত হুদর ধিকি ধিকি অনিতেছে—আর কিছুতেই চিন্ত-চাঞ্চলা নিবারণ
করিতে পারিতেছি না! মন কিছুতেই স্থির হইতেছে না!! মুহর্মুছ আমার
মৃদ্ধ্য হইতেছে এবং চৈতন্ত প্রাপ্ত হইলেই কেবল প্রাণ কাদিতেছে! শুর্কজনের পোচরে এই সকল ভাব প্রকাশ হইরা পড়িবে বলিয়া ধীরপদ বিক্ষেপে
চলিতেও ভর পাইতেছি!

এ আকুলতা কেবল খাদরপ দর্শনের ফল ব্যতীত আর কিছুই নহে, এ কথা বুঝিরা কৌতুকিনী-স্থীর ভাবাবেশে পদক্তা বংশীবদন বলিতেছেন---

भनक्तरुक्त भां**ठाञ्चत्र—! जिल्ल जिल्ल बाद्य वाद**त्र।

भौरत भौरत चामि, भा भानि बाढ़ाईरङ, शुक्रकरनरत वानि छत्र। वःनी वन्तन करह, शुन रंगा इन्त्रती तार्थ। भतिभारन चात— किवा हत्र।

#### (৪) বালা।

নো আসিতে হাম রমণী সমাজে—
দিঠি ভরি না হেরছু দারুণ লাজে!
শুনি চিত উনমত দেখি আঁখি ভোর,
চাল উদয়, বলী রহল চকোর!

মিশল পুরুষ-বর না পুরুল কাম! কিয়ে বিধি ডাহিন কিয়ে বিধি বাম?

তাঁহার পরশ ব্যতিরেকে এ রোগের আর আন্ত উষ্ধ নাই। কিন্তু প্রশের ফলে রোগ না বাড়িলেই রক্ষ!

(৪) আপন প্রাণকান্তের অসমোর্দ্ধ-রূপ-মাধুরী-দর্শনে—নবাসুরাগের স্থভাবে উহাকেই অদেথা-রূপ সনে করিয়া, এই যে প্রমাত্মক-চিন্তবিকার জন্মি মাছে, কুট-কোভূকের ফলে ভাহা বাড়িয়া অনর্থক অনর্থ সংঘটন অসম্ভব নহে, এইরূপ ভাবিয়া কোনও সঙ্গিনী শ্রীরাধার ধাঁ ধাঁ ঘুচাইয়া দিলে তিনি কহিতেছেন—

হায়! হায়! আমার সেই জীবিত-বলত অ সিয়ছিলেন ? আর আমি—রমণী-সমাজের মধ্যবর্তী থাকার নিদারুণ লাজার ভরে,নয়ন ভরিয়া তাঁহাকে দর্শনও করিলাম না!! কি তৃঃখ! যাহার বার্তা কি নাম শ্রবণেই চিড আনন্দোয়ত হয়, দর্শনে নয়ন ভোর হয়; দেই স্থাকরের উদয়ে আমার নয়ন-চকোর যুগল—বোক্টের কারাগারে বলী রহিয়াছিল! অহো হর্ভাগা! ভূবন-বাঞ্চিত পুরুষোভ্রমকে সমকে পাইরাও আমার কামনা পূর্ণ হইল না! বিধাতা আমার প্রতি নির্দিয় কি সদয় তাহা আমি কিছুই ব্রিডে

#### (৫) গান্ধার।

ডাহিন নয়ন, পিশুন-দিঠি# বারণ, স্থীগণ বার্ম হি আধ—
আধ-নয়ন-কোণে, দরশন হোয়ল ণ ইথে ভেল এত প্রমাদ!

শনমথ ! তোহে কি কহব অনেক—
দিঠি অপরাধে, হুদর য় পরিপীড়িসি, এ ছুয়া কোন বিশেক ? এ
পুর, বাহির পথ, কভহি গতাগভ, কো, না নেহারই কান ?
ভোহারি কুহুম-শর,কভিছ্ না সঞ্চর্ফ, হামারি হুদরে পাঁচ বাণ !

ভরে মন্মণ!! ভোমাকে অধিক আর কি বলিব—ভোর বিচারে ব্ঝি— প্রাণ-বল্লভের দর্শনও অপরাধের মধ্যে গণ্য? কিন্তু তাহা হইলেও তো, উহা—নয়নের অপরাধ! একের অপরাধে অপরের দণ্ড কেন? নরনের অপ-রাধে ছুই আমার হৃদরকে পরিণীড়ন করিতেছিস্—ইহা তোর কিন্ধুপ বিবেক!

আরোও দেখ্ — পুরে, বাহিরে পথে, সর্ব্জাই তো সর্বাদা ব্রজ-যুবরাজের গমনাগমন হয় তাহাকে কেনা দেখে? কিন্তু তোর কুন্থ-শরতো আর কাহারও প্রতি সঞ্চারিত হয় না !! তুই বৃঝি কেবল নিঃসহায় অবলার বীর ! কেবল আমার কোমল হৃদয়ই বৃঝি তোর পঞ্চবাদের প্রহার স্থান ?

<sup>(</sup>৫) স্থীর বচন-প্রবে প্রেম্মরীর হাদয়স্থ — অন্তরাগের সাগর উর্থেলিত হইরা উঠিরাছে ! তিনি কল্প-বাধার আকুল হইরা আরোও আক্ষেপ করিতে-ছেন বথা—দর্শনের বাধক ক্রুর (বিপক্ষ) দিগের হারা আমার দক্ষিণ-নয়নের দৃষ্টি বারিত ছিল। এবং নিজ্প স্থীগণ আমার বাম-নয়নকে অর্জাবরণ দিয়া চলিতেছিল, স্বতরাং কেবলমাত্র আধ-নয়নের কোণে আমি প্রাণকাস্তের সেপ্র:ণহারী রূপ দর্শন করিতে পাইরাছিলাম কিন্তু স্থি! ভাহাতেই এত প্রমাদ উপস্থিত বে—দেহ, ধৈর্যা,—প্রাণ—কিছুই ধারণ করিতে পারিতেছি না!!

পদক্ষতকর শাঠান্তর—\* গণ; † ধব হরি পেখন; ‡ পরাণ।

## (৬) এগান্ধার।

শঙ্কনি! কি কহব ভোহারি সোহাগ—
গো প্রিয়তম-তন—বয়ন-নয়ন-মন,এক ভোহারি অত্রাগ। এ।
কত কত নাগরী, সব গুণে আগোরি, করু কত নয়ন-তরঙ্গ—
সো ঘৰ আওল, কছুও না জানল, তুয়া-রগ-গমন-তরঙ্গ!
তুরা গুণ-গুনিগুনি, কুঞ্জ সদনে পুনি, জর জর বিরহ-হতাশ,
প্রোন-তরঙ্গিণী, তুহু রদ-রঙ্গিণী! অব চলু সো পিয়াপাল।

সধি! প্রেম-স্থার অনর্গল-প্রবাহ ব্যতীত তাঁহার এই মর্গ্র-প্রদাহক ভীষণ- বিরহোত্তাপ অন্ত কোন ও উপচারে উপশম হইবার নহে। রাধে! তুমি রস-ভরক্ষমী— মৃর্ত্তিমতী-প্রেম-তরঙ্গিশিক্ষপা, অতএব এখনি ভোমার সেই প্রেমার্ত্ত-প্রিয়তমের নিকটে চল।

অঙ্গ---আভরণে অবন্ধৃত নহে,না থাক্; উহা সম্পূর্ণ নিপ্রারোজন। অনিস্ধাফুন্দরীগণের পক্ষে--মণি-ভূষণাদিও আমি দৃষণ মনে করি; তদ্বারা নায়কের
প্রাণোন্মাদক স্বাভাবিক-অঙ্গ-কান্তি আচ্চাদিত হইরা পড়ে। অঙ্গ-সঙ্গার্থ-অভিব্যক্ত-ভাব-বিকারই তোমার স্থায় ভূবন-মোহিনীগণের উপধৃক্ত আভ্রণ।

<sup>(</sup>৬) এই সময়ে প্রীক্ষের প্রেরিতা কোনও দৃতী সমাগতা হইয়া, সমস্ত অবস্থাই আপন উদ্দেশ্যের অমুকৃল দৃষ্টে প্রীরাধাকে কহিভেছেন—সঞ্জনি! তোমার প্রেমের বর্ণনা হর না, তুলমাও—কিছুই নাই! আহা! সে প্রিয়তমের তমু-বদন-নরন-মন—সমস্তই তোমার অমুরাগে পরিপূর্ণ। স্থি! তোমার প্রেম গুণে এমন আরুই হইয়া রসময় আজ ক্স্পে অভিসার করিয়াছেন যে আসিবার সময়ে কত কত সর্বপ্রেণ-মণ্ডিতা নাগরীগণ নয়নের তরঙ্গ-রঙ্গে কত ভাজিলায প্রদর্শন করিয়াছে, কিন্তু ভোমার রস-রঙ্গে-গমন-পরায়ন-বিরহ-কাতর-নাগরেক্র কাহারও প্রতি ক্রক্ষেণ্ড করেন নাই! এখন শৃদ্ধ-কুষ্ণে বসিয়া ভোমার গুণাবলী গুনিতে গুনিতে তিনি প্রারার বিষম্বরহায়িতে দগ্ধ হইতেছেন।

বহু মণি-ভূষণ, জানছ দূষণ, যো রছে তকু রুচি ছায়— গো সব পরিহরি, অভিসরু রসভরি, হরিবল্লভ যুশ গায়।

## (৭) যভিঞী।

আওয়ে কৃষ্মে বনি, রাই-রমণী-মণি,—
ধনি ধনি র্থভামু-নবীন-তনি—
অরুণ বসন বনি, রদন কিরণ-মণি,অবনীউয়লয়সু থির দামিনী !

অতএব এথনি রস-ভরে অভিদারে চল,—হরি-বল্লভ আমরা তোমার যশ কীর্ত্তন করি। (শ্লেষার্থে—'হরিবল্লভ' গীতকর্ত্তার নাম।)

(৭) প্রিয়তমার বন্ধ-নিরীক্ষণ-পরায়ণ—রস-ত্ষিত-নাগরেক্স, দ্র হইতে অভিসারিণী জ্রীরাধাকে দেখিয়া, উলাসে আপনা আপনি বলিতেছেন—আজ আমার রমণি-মণি-রাই কুস্থমাভরণে সজ্জিতা। আহা ! আমার নবীনাঙ্গী-বৃষভায়ননিদানী প্রকৃতই ধন্তাতিধন্তানায়িকা ! দেখ — আরতির আভিশয়ে আজ তাহার ভ্রুণ-পরিধানের বিশম্বও সহে নাই ! জ্যোৎস্লাভিসারের উপযোগী খেত-বসন পর্যান্ত পরিধানে নাই ! অরুণ-বসন লইয়াই অভিসারিণী হইয়াছেন ! ! আহা ! স্থামুখীর মণি-কিরণের ভ্রায় সমুজ্জন দত্ত-কান্তি অরুণাম্বরে প্রতিফলিত হওয়ায় বোধ হইতেছে—যেন আজ অবনীতে স্থির দামিনীর উদয় হইয়াছে! (উয়ল—উদিত হইল) আর তাহার বদনধানি— যেন ছানিয়া অর্থাৎ ছাকিয়া কলক্ত-শৃক্ত করা চাঁদ ! এবং সেই চান্দ হইতে স্থীর সহিত মধুরালাপের ছলে যেন অমিয়-কণা সমূহ বর্ষণ করিতেছেন, এইরণে বারংবার রস-ভরক্তে কুঞ্জের প্রতি চকিত-নয়নে চাহিতে চাহিতে মৃগ-নয়নী-ধনী, আপন প্রাণ-সহচরীগণের ছারা

वमन हांग्म हिन, बहन श्रामिशीक्ति,

ছরিণীনয়নী সঙ্গে প্রাণ সহচরী গণি— ভারুণ চরণে মণি, মুপুর রণ ঝনি.

गृगधगमनीधनी (भाविक्य मात्र छति।--

#### (৮) **এ**রাগ।

বৈশ্বলি কেলি-নিকেতন মাছ—
পেথলি-ভাম-বরণ-নিজ-নাহ,
স্থানর বদনে মধুর-মৃছ-হাস—
চাক উয়ল কিয়ে সরসীজ্ব-পাশ ৪

নয়ন-যুগল ভক আনন্দ-লোর—
পীরিভি অমিয়া কিয়ে উগরে চকোর ?
পুলকে ভরল ততু হরল গেয়ান !—
অমিয়া সাগরে যতু করল সিনান !

পরিবৃতা হইয়া আসিতেছেন এবং তাহার অরুণ-চরণে কি বধুর ঝনরণ রবে মণি-নুপুর নিনাদিত হইতেছে!

সখী-ভাবান্বিত গীতকর্ত্তা গোবিন্দ কবিরাজ শেষ কথাটির টিপ্লনী করিতে-ছেন—প্রেম-বিমুগ্ধ-গমনী ধনীর আজ বিদ্বাশহার ক্রক্ষেপও নাই!!

(৮) যে 'রূপ'— ঘোক্ষট খুলিতে নয়নে লাগিয়া অমুরাগিণী রাধাকে বিপদাণ গর করিয়াছে, কেলী-কুঞ্জ গৃহে প্রবেশমাত্র তিনি সেই রূপের-প্রতিমা ভাষফলর নিজ নাথকে (নাহ—নাগ) দর্শন করিলেন। অমনি শশি-মুখীর ফ্লুলর
বদনে মৃত্-মধুর-হাস্য (জ্যোৎলার ভার) উদ্ভাসিত হইয়া উঠিল! দেখিয়া—
স্থীগণের ধাঁ ধাঁ বাঁধিয়া পেল—একি অভ্ত! পদ্মিনীর সন্নিধানে চালের
উদয় হইল নাকি ? আনক্ষমীর নয়নয়য় প্রেমাশতে পূর্ণ হইল! স্থীবৃন্দ
দেখিলেন—যেন তুইটি চকোর প্রেমাশৃত উদ্গীরণ করিতেছে!

প্রবিদ্ধিতানকের প্রভাবে ধনী-মণির সর্বাঙ্গ পুলবিত ও সহজ জ্ঞান লোপ হইয়া গেল, তাঁহার মনে হইতে লাগিল যেন স্থধার সাগরে অবগাহন করিছে- উপলল কত কত ভাব-কদৰ— সহচরী পাণি-কমল অবলয়। মছর-গমনে চললি প্রির্ফাম— গো মাধুরী কো কত অনুপাম। হেরি হেরি উছ্লল বদন ভরক

কমল-নরন ভ্বল রস-রক !

কলপ-লতা বহু পাওল রহ

হরি বর্ম প্রমাণ নিশক !

### (৯) শ্রীরাগ।

রাধা বদন নির্থি রছ কান— ভাবে ভরল অঙ্গ ধরল ধেরান ! রাই বুঝল উত্ত সরম কো বোল !— বাহু পদারি কামু করু কোর !

ছেন ! নানা ভাবের প্রাবদ্যে—আফ্রাদে অবশ হইরা তিনি সহচরীর করে ধরিরা
মন্থর গমনে প্রিরতমের সমীপে উপনীতা হইলেন। এ অম্পম গমন-মাধুরী—
দেবাস্থর, নর, কিরর কাহার ও বর্ণনের শক্তি নাই! কোনও স্থী অপরাকে
কহিতেছেন দেধ—পরস্পরের দর্শনেই উভরের তন্তমনে মদন-ভরক্ষ উছলিয়া
উঠিয়াছে! এবং কমল-নয়ন (নাগরেক্স) রস-ভরক্ষে ভ্রিয়া গিয়াছেন!
কোনও ভাগ্যে হঠাৎ করলতা লাভ হইলে, কাল্গালের তন্তমননয়ন—যেমন
আনন্দের উচ্ছাদে নাচিতে থাকে, দেধ—মাধবের ঠিক্ সেই দশা উপস্থিত!!
গীতকর্তা হরিবরভ গখোধিতা স্থীর ভাবাবেশে কহিতেছেন, ঠিক কথা!
(রহ—কাল্গাল; নিশ্ক—নিঃশ্রু)।

(৯) ভাবোন্মন্ত-নাগরেক্স বিনোদিনীর বদনের পানে অনিমিথে চাহিরা রহিলেন ! চাহিতে চাহিতে তাহার নর্মবন্ধ ভাবতরে ধ্যান-ন্তিমিত হইরা উঠিল। প্রেমমন্ত্রী, প্রাণকান্তের মনের ভাব বুঝিরা—বাহ প্রসারণপূর্ক্ষ তাহাকে বক্ষে ধারণ করিলেন এবং পুনঃ পুনঃ অধরস্থা পান করাইতে লাগিলেন। (উত —উহাতে) স্থীবৃন্দ দেখিলেন ভাহাতে নাগর-বরের চৈত্ত স্থারিত হইরা উঠিল ! তংপরে ঘন ঘন গাঢ়ানিঙ্গন ও কিছিণীর

জধর-স্থা-রস পুন পুন পিব—
স্থীগণ হেরই, তে জীবন জীব।
কিন্ধিনী ঝন ঝনি ঘন পরিরস্ত তাপ্তব করু কিন্ধে মনসিধ-দ্তু ? পূরণ মদন-মনোরথ-কেলি— নথ রদ খণ্ডন—মণ্ডন ভেলি!

ইতি এগীভচিত্তামণো পুর্মবিভাগে সপ্তবিংশতি কণ্দা।

ঝন্ ঝন্ ধ্বনি আরম্ভ হইলে—স্থীগণের বোধ হইল যেন কন্দর্প-দর্পের
মধুর নৃত্য হইতেছে ! এইরপে মদনের মনোরথ-পূর্ণ অর্থাৎ কেলি-বিলাসসমাধান হইলে—লভা-বাভারনে দত্ত-নরনা-লীলা দর্শন-কারিণী স্থীর ভাবাবিষ্ট
অভাতনামা গীতকর্তা বলিভেছেন দেখ—আমাদের নিরাভরণা কিশোরীমণির স্থকোমল কলেবরে নথ-দশনের চিহ্ন-রাজি কেমন অপূর্ক ভূষণস্বরূপ হইয়া শোভা বিস্তার করিভেছে ! !

## শ্রীক্ষণদা গীতচিন্তামণি।

काल कामी विश्मिक कानमा।

( > ) शार्मातहस्य ; कारमान ।

(भौतात्र विरुत्रहे शत्रम व्यानरम-

निर्देशनम् कति मात्र,शकार्थानितात्क, इतिइति वाल निक्रतान्त ।

<sup>( &</sup>gt; ) স্বরধুনীর পুলিনে – নিজগণ মধ্ব-তানে হরিনাম গান করিতেছেন, আর আমার গৌরাল-স্কর শীনিভ্যানন্দচন্দ্রের সহিত পরমানন্দে মণ্ডণীর মণ্ডানে বিরাজিত হইয়া সকীর্ত্তন বিহার করিতেছেন ! তাঁহার কাঁচা-কাঞ্চন-কাজি-তনুধানি—প্রেম-তর্জে ডগমগ করিতেছে ! ! গলদেশে অনুপম-স্কর-

কাঁচাকাঞ্চন মণি, গোরারূপ ভাহাজিনি, ডগমণি প্রেমভরক্তে, ও নব-কুত্ম দাম, গলে দোলে অমুপাম, হেলন নরহরি-অঙ্গে। প্রিয়তম গদাদর ধরিয়া সে বামকর,নিজগুণ গাওয়ে গোবিন্দে— ভাবে ভরল তমু, পুলক কদন্ব যমু, গরজন বৈছন সিংহে।

কুস্থনের মাণা দোলিতেছে ! গীতকর্ত্তা কহিতেছেন দেখ—প্রবর্জনান-প্রেষের-ভরে প্রভ্রে প্রীঅঙ্গ এলাইয়া পড়ায়—প্রিয়-পার্শন প্রীনরহিরি সরকার ঠাকুর হেমাঙ্গ-স্থলরকে স্বীয় অঙ্গে ধারণ করিলেন এবং প্রিয়ভম-পার্খন—গণাধর-পঞ্জিত ভাব-মঞ্জিত হইয়া প্রভ্রে বাম কর করে ধারণ করিয়া—বামে দাড়াইলেন। আর মধুকঠগোবিল ঘোষ স্থারে ভাবের অফ্রমণ ব্রজ্বস গান করিতেছেন।

আহা ! কি অপরপ-প্রেম-বিকার ! ভাবময়ের শ্রী অঙ্গধানি ভাবে পূর্ণ হটরা কেবলই ফুলিতেছে ! এবং সর্ব্ধান্তে কদম্ব-কেশরের স্তায় প্রলকাবলী বিক্ষিত ছইরা উঠিয়াছে আর উত্তেজিত-সিংহের স্তায় গভীর-নাদে ঘন ঘন প্রেম-গর্জন করিতেছেন । আবার মুহুর্ত্ত মধ্যেই—অডুত ভাবান্তর উপস্থিত ! দেখ একবার ঈষং হাস্ত প্রকাশ করিয়া একণে অরুণ-নয়নে অজ্ঞ-অশ্রমোচন করিতেছেন । হায় ! কি অভিগাবে এ আশ্রহা রোদন ! কি বলিব !

আমার প্রভ্র প্রিয়-পার্ষণ শ্রীল—বাস্থদেব ঘোষ এ গীতের রচয়িতা। তিনি গীতের ভণিভার বলিরাছেন, এ দকল লীলা - ব্রজের রস-ক্রীড়ার স্মরণ-সমৃ-ভূত। এ কথার পরে আপনি প্রশ্ন উঠে 'আজিকার লীলার কোন্ তরজ—ব্রজের কোন্ লীলার আবেশ সঞ্জাত ?' গীতকন্তা বলিভেছেন—"কি বণিব ?" এই চাতুরীমর উত্তর ঘারা তিনি নিশ্চরই রদিক ভক্তবৃদ্দকে আলোচনার স্থানিভূতে নিমক্ষনের নিমিন্ত স্থানোগ প্রদান করিয়াছেন। অভএব শ্রীগৌর-স্থাবের এই অপরূপ মধ্যাক্লীলা শ্রীকুণ্ড-লীলাদির অমুকরণ কিনা ? রাধাবিরহ হাবে দরে প্রভ্রে অজ এলাইয়া—মধুমতী-সধীর-ভাবাবতার নরহরি ঠাকু-বের অঙ্গে দেহ রক্ষা কিনা ? তারপর গদাধর পণ্ডিতকে দেখিয়া শ্রীরাধার সহিত্ব মিলনানন্দের অমুভরে উহির কর ধারণ কিনা ? গোবিন্দ ঘোষের সধুম্যান্

जेनज शिनिताकरण, चक्रणनत्तन-दकारण दिना जिल्लास ? मडित दमनवर्थना, तुम्मानन-तमनोना, किननिव वास्ररमवर्षास !

### (২) শ্রীরাগ। শ্রীনিভ্যানন্দচদ্রস্থা।

নিতাই তৈতন্ত ছটি ভাই দয়ার অবধি চারি বেদে অবেষয়ে যে প্রেম পাইতে
শিব ব্রহ্মার ছল ভ প্রেম যাচে নিরবধি হেন প্রেম ছটি ভাই যাচে অবিরতে

গীতি-রস পানে মধুপানানন্দের অফুভবে সিংহনাদ কিনা ? এবং তৎপরে প্রীরাধা-ভাবের সাবল্যে ভাব পরিবর্ত্তন ও আপনাকে রাধা জ্ঞান কিনা ? আর স্ব্য-পূজার-পুরোহিত-রূপধারী-প্রাণকান্তের স্থকৌশল-সন্মিলন-চাত্ত্বী ও আর্থাা-জটিলার সহিত তৎকালিক রঙ্গোক্তি শ্রবণাবেশে মন্দহাস্ত কিনা ? তৎপর গৃহগমনাবেশ-সঞ্জাত-বিরহ-ভাবের-সমুদ্ধে রোদন কিনা ? এ সকল প্রশ্ন উত্থাপন পূর্বক ইউগোষ্ঠা-আলোচনা কর্ত্তব্য।

- (২) আমার শ্রী শ্রীনিতাই-হৈতন্ত নাত্ষয় দয়ার অবধি। দেথ—যে প্রেম-রস—শিবপ্রকাদির ও ত্র্গ ভি, ত্ই ভাইতে মিলিয়া—সেই পরম সংর-ধন নিরস্তর জীবগণকে য়াচিয়া বিলাইতেছেন। (১৪ শী, ক্ষণদার ১ নং গীতের আস্থাদনীতে "দয়ার অবধি" শব্দের আলোচনা ত্রন্তব্য) কেই বলিতে পারেন— "রাচ্দেশের একচক্রা গ্রাম নিবাসী হাড়াই পণ্ডিতের পুত্র শ্রীনিত্যানন্দচক্র তিনি কি করিয়া নবদ্বীপ নিবাসী জগরাধনিশ্রের পুত্র শ্রীচৈতন্সচক্রের "ভাই" ইইলেন গ এ কথার উত্তর ক্রিবিধ। যথা—
- (১) শ্রীভগবান্ যেমন ত্রেতাযুগে মর্যাদা-পুরুষোত্ম-শ্রীরামচক্র রপে এবং দাপরে লীলাপুরুষোত্ম-শ্রীকৃষ্ণচক্র রূপে ও কলিতে প্রেমাবতার শ্রীচৈতক্তকর রূপে অবতীর্ণ, তেমনি তাঁহার ত্রেতাবতারের অফুরুমূর্তি-

পত্তিত তুর্গত্যত, কলি হত যারা— তুবন-মঙ্গল ভেল সন্ধীর্ত্তন-রসে,
নিতাই চৈত্ত বলি নাচে গার ভারা! রার অনস্ত কাঁলে না পাইরা শেষে।

প্রীলকণ—ছাপরে দাদ। বণাই রূপে এবং কলিতে শ্রীমিড্যানন্দ রূপে প্রকটিত।

- (২) লোক-দীশার ঐতিচন্তস্তানন্তরের অগ্রন্ধ সন্ধর্ণাবভার— স্রীমদ্বিশ্বরূপ শিশ্র,—আপনার সমস্ত শক্তি শ্রীনিত্যানন্দচন্ত্রেতে রাখিরা অপ্রকট ভ্ইরা-ছিলেন।
- (৩) শ্রীনিভাইটাদের নবদীপে আগমনের পর হৈ তন্ত-জননা শ্রীলটাদেবী ভাঁহার দর্শনমাত্র পূত্র-বাৎসল্যে দ্রবীভূত হইরা ভাঁহাকে জ্যেষ্ঠ-পূত্ররূপে গ্রহণ ও আচরণ করেন। তদ্ধ ও লীলা-মূলক এই সকল কারণে এবং প্রকৃতি, কাঙি ও আরুতির পরমাশ্র্যা সৌদাদ্শ্ররূপ তটন্থ লক্ষণে, শ্রীনিভাই- চৈ চক্ত —ত ব্রুল, রসজ, ভাবজ্ঞ, সর্ক্ষবিধ বৈক্ষবগণ কর্ত্বকই "ত্ই ভাই" বিদ্যা স্থীকৃত ও কীর্ত্তিত।

এখন "শিব ব্রশ্ধার ত্ল'ভ প্রেম" কথাটির তাৎপর্য্য পর্যালোচনা কর্ত্তবা।
ব্রশ্ধা, বাবতীর বন্ধর – বস্তব গুণের ও অভাবাদি সমন্তের স্ষ্টেকর্ত্তা; এবং শিব,
তত্তাবতের সংহরণকারী। এ ত্লনের ত্ল'ভ বলাতেই স্পষ্ট ব্ঝা বাইতেছে,
এই প্রেম এলগতের বৈকারিক-বস্তু নহে। বস্ততঃ উহা ব্রল-গোপীগণের
ভাতারের গুপু-দন — অপ্রাক্তত — অকৈতব-নিত্তা-বস্তা। গোপ-বালকগণের
সৌধ্য-সৌভাগ্য দেখিরা— অর্থাৎ স্বয়ং ভগবান্কে— ভক্ষিতন্ত্রব্যের ভাগ দিতে
দিতে ভাহাদের ভোজন লীলা দর্শনেই, জগৎস্তাটা যে ব্রশ্ধা সন্দেহের ও
বিশ্বরের সাগরে ভূবিরা গিরাছিলেন! গোপী-প্রেম বস্তুটি বে সে ব্রশ্ধার
ত্ল'ভ ভাহাতে আর সন্দেহ কি ? আর গোপীবেশ ধারণ করিরা মহাদেবের
রাস-কেনী দর্শনাধিকারের কাহিনীটির দ্বারাই—এ প্রেম বে ভাহারও তুল'দ
ভাহাও স্পষ্ট প্রতীর্মান হইরা মহিরাছে।

পরমদরাল শ্রী শীনিতাই-তৈত্ত এ হেন মহা-ছ্ল'ভ-প্রেম-ধন, নিরন্তর বাহাকে তাগাকে --বাচিরা বিভরণ করিভেছেন। বে প্রেম বেদ-চতুইরেরণ

#### (७) वाना।

গেলি কামিনী, গজন্ত গামিনী, বিহুলি পালটি নেহারি—
ঐশ্রেলালিক, কুত্ম-শায়ক—কুহকী ভেলি বরনারী।
কোরি ভুজ-যুগ, মোরি বেচ্ল, তবন্ত বরান অহল
লাম চম্পাকে, কাম পূজল, ঘৈছে শারদ-চন্দ।
উরহি অঞ্ল, ঝাঁপি চঞ্ল, আণ-প্রোণর হেরু
প্রন প্রাভবে, শারদ-ঘন যন্তু, বেকত কয়ল হুমেরু—

আন্ত্রবনীয়বন্ধ, কিছা যে প্রেমের আনোকিক-আচরিত-শ্রবণে কৌতুহলী হটরা বিদ্যাগর্জিত-জ্ঞানী মণ্ডলী সাধারণ ভাবে চারিবেদে উহার অব্যেণ করিয়া কৃথা-পরিশ্রাম্ভ হন,বেদগুল্থ সেই পরম-পুরুষার্থ-প্রেমধন—ছই ভাট নির্জিচারে জগতে বিলাইতেছেন ! দেখ, পতিত ছুর্গত—কলিছত জনেরাও আজ সে স্বুছর্লভ-প্রেমলাভে কুতার্থ হইয়া নিতাই চৈতল্পের নাম গুণ গাছিতেছে ও নাচিতেছে! এবং সেই স্থাধুর-সন্ধীর্জন-রুসে ভ্রনের মহামঙ্গল সংসাধিত হইতেছে! হায়! কেবন ভাগাহীৰ আমি (গীতকর্তা) অনস্তদাস সে রুসের একটুকু অবশেষও না

(৩) শ্রীরাধাকে দ্র চইতে দর্শন করিরা—ভ মুরাগের প্রভাবে অগিছেন—
চিত্রা কামিনী বোধে, সৌল্ব্যা-মুগ্ধ-শ্রীকৃষ্ণ কোনও স্থীকে কহিতেছেন—
স্থি ! আজ একটি গ্রেজ্ঞ-গামিনী কামিনী সহাস্ত-বদনে আমার পানে
ফিরিরা চাহিতে চাহিতে আমার নরনে ইক্সজালের ধাঁ ধাঁ লাগাইরা চলিরা
গেল ! আহা ! সে বেন ঠিক উক্সজালিক-কলপের কৃহকিনী (কৃহকী) হইরা
আমাকে দেখা দিরাছিল ! জাহাতেই—য়খন গে ভূজ-মুগ্ল একত করিরা
মোড়া দিরা, স্মনোহর-ভঙ্গীতে ভজারা বদন বেষ্টন করিল; তখন আমি
দেখিলায়—বেন কল্প চল্পকের-দালাধারা শার্দ-শশ্বের পূজা করিভেছে !

( !'পুনহি দরশনে, জীবন জুড়াওব, টুটব বিরহকো ওর চরণে যাবক, হৃদয়-পাবক, দহই সব অস মোর ! ভূপয়ে বিদ্যাপতি, শুনহ যুবতি। চিত থির নাহি হোয় দে যে রমণী, পরম-গুণমণি পুন কি মিলব মোয় ?")

## ( 8 ) কর্ণাট ।

নিন্দতি চন্দ্র মিন্দুকিরণ সমুবিন্দতি থেল মধীবং ব্যাল-নিলয় মিলনেন গরলমিব কলয়তি মলয়-সমীরং ॥ ১॥

আর যথন সে, পান-সঞ্চারিত-বক্ষ-বদন অক্সে ঝাঁপিয়া দিতে ছিল তথন আৰ্দ্ধ-পারোধর-দর্শনে আমার মনে হইল, যেন স্থামেরুর উপরিস্থ শরংকাণের মেঘ— পাবনের দ্বারা পরাভূত (ভাড়িত) হইয়া স্বর্ণাচলকে ব্যক্ত করিতেছে।

স্থি! সে স্বলনীকে কি আবার দর্শন করিয়া প্রাণ জুড়াইতে পারিব ? আমার হৃদরের এই স্থাভীর-বিরহ-বেদনা কি প্রশমিত হইবে ? বলিতে কি স্থি! তাহার চরণ যাবকের দীপ্তি,পাবকের ভার হৃদরে প্রবেশিয়া আমার স্র্রান্ত করিতেছে। বিদ্যাপতি-শ্রীকৃষ্ণ আরোও কহিতেছেন—যুবতি! (বিদ্যান্ত স্থি!) আমার মন আর কিছুতেই স্থির হইতেছে না! সে পরম-গুণবতী রমণী-মণিকে কি আমি আবার পাইব ? (বিভাপতি শক্টি শ্লিষ্ট উহার দ্বিতীয়ার্থ গীত কর্ত্তার নাম)

এইটি শ্রীণীতগোবিকের (৪র্থ সর্গন্ত) ৮নং গীত। ইহার প্রারী গোস্থামী কৃত টীকা এইরূপ—হে মাধব! সা শ্রীরাধা তব বিরহ নিমিত্তং দীনা

<sup>(</sup>৪) এই সময়ে জীরাধার কোনও দূতী সমাগতা হইয়া, মাধবের ধাঁ ধাঁ খুচাইয়া দিলেন, কহিলেন → ৫০ কামিনী আর কেহ নতে তোমারই রাধা

#### मा विवर् छव-मीना !

মাধব ! মনসিজ-বিশিধ ভরাদিব ভাষনরা ছরিলীনা ॥ ধ্রু ॥ অবিরত—নিপভিত-মদনগরাদিব ভবদবনার বিশালং অন্তদ্র মর্ম্মণি বর্মা করোভি সজল-নলিনী-দল-জালং ॥ ০॥

তৃঃধিতা, তত্ত্রোৎপ্রেক্ষতে—কামবাণস্ত ভন্নাৎ দ্বরি ধাানেন দীনেবান্তে বাণ প্রযোক্তরি-কামরূপে দ্বরি প্রসংগ্র তত্ত্বয়ং ন করিষতীত্যভিপ্রায়ঃ॥ ঞ ॥

ন কেবল মেতচন্দ্ৰনিন্দু-কিরণঞ্চ নিন্দতি; স্বভাব-শীতলো বন্ধাং দহত জনমেব হুদৈব মিতানুপশ্চাদধীরং যথাক্যাত্তথা থেদং বিন্দতি, তথা চন্দ্ৰন তরোঃ সম্পর্কেণ মলর-সমীরং গরলমিব কলগ্গতি। তত্ত্বস্থ সর্প্ত্তােজ্থিতাে বায়ুর্বিমনিততাবিষমিবােৎপ্রেক্সতে ॥ ১ ॥

ত্যাতি স্নিগ্ধা সা দং কথং নিষ্ঠুরোহসীত্যাহ—শ্বহৃদর-মর্শ্ব-শ্বানে সম্জল-নলিনী দল-ফালং পৃথুলং বর্ম-ক্বচং করোতি। অজোৎপেক্ষতে—নিরস্তরনিপতিত মদন-শরভরাত্তব রক্ষণার্থমেব। তহ্যা হৃদরে ভবাং ত্তিষ্ঠতি, হৃদরং কামো বিধ্যতি মর্শ্বস্থান রাৎ হৃদর বেধনাচ্চ ভবতোহিশি বেধঃস্থাদিতি ভবত্তক্ষণার্থং সা

তোমাকে না পাইরা প্রিয়সধী বড়ই বিষম-বিরহাকুলা হইরা উঠিরাছে! তাহার দশা শোন — "হার! আমার হুদৈব বশতঃ আজ স্থভাব-শীতল চন্দন ও চক্রকিরণও দাহক হইরা উঠিল!" বলিয়া, সে তাপাপহারক-জ্যোৎসারও চন্দনের নিন্দা করিতে করিতে অধীরা হইরা অবিরত আক্ষেপ করিতেছে! আরোও বলিভেছে—চন্দন তরু সমূহ সর্পাবাস স্থান, স্ক্তরাং তৎস্পর্শের প্রভাবেই বোধ হয় মলয়ানিলও আজ বিষবৎ হইয়া উঠিল!॥ >॥

মাধব ! আনন্দ-ক্লিনী রাধা তোমার বিরহ ছঃথে নিমগা হইয়া কন্দর্প শরের ভয়ে তোমার ভাবনাতে আরু যোগিনীর ভার ধ্যান-বিলীনা ! ॥ গ্রন

সে অবিরত নিপত্তিত-মদন-শরাখাতে আকুশ হইরা মনে করিতেছে "হার! আমার হৃদরস্থ-জীবিত-ব্রভকে এবিষম-শরাখাত হইতে কি রূপে রক্ষা করি:!" কুত্ম-বিশিথ-শরতর সমর-বিলাগ-কলা-কলনীয়ং ব্রভমিৰ ভব পরিরস্কল্পার—করোভি কুত্ম-শর্মীয়ং ॥ ৪ ॥ বহুভিচ বলিত বিলোচন-জলধর্মানন-ক্ষলমূলারং বিধুমিৰ বিকট-বিধুস্তাদ-দস্ত-দলন গলিভামূত ধারং ॥ ৫ ॥

সরম্ভ ইত্যর্থ:। (নিপত্তিত ইভি ভাবে ক্ত:) অবিরভং নিপতনং বস্তেতি বিগ্রহ: পতিত বাণাবরণাসম্ভবাৎ ॥ ৩॥

অক্তরণি সা কুস্থম-শ্যাং করোতি, কীদৃশং ? অনর-বিশাস-ক্ররা ক্ষনীরং—কাজ্কনীরং, বিরহে তদপি কাম-শর-শ্যারত। ইত্যুৎপ্রেক্তে, কাম শর-শ্যা-ব্রতমিব, নতু—এতৎজতিত্করং জীবন সন্দেহোৎপাদকং কিষিতি করোতি ? তব পরিরম্ভ স্থার। হুপ্রাণং তব পরিরম্ভণ-স্থ মি চার্থঃ ॥ ৪ ॥

ন কেবলং কুস্থম-শরনীরং করোতি, স্থাপিচ উদার্যাননক্ষলং ধার্রতি; কীদৃশং ? বলিতানি স্থাবিরতং গণিতানি নর্মরোর্জণানি ধার্রটীতি; তং ক্ষিব ? বিধুমিব । কীদৃশং বিধুং ? ক্রালস্ত রাহোদস্তস্ত চর্কণেন গণিতা স্বামৃত ধারা বস্তুতং ॥ ৫ ॥

এই বলিরা জনসিক্ত-নলিনীর-দল-রাজী ছারা বিশাল-বর্ম নির্মাণ পূর্বক আপন হৃদদ্বের মর্ম ছানে স্থাপন করিতেছে ! তোমার পরিরস্তণ-স্থার্থ ব্রতের ভার বহু বিলাস্-কলাভিল্বিত-ক্মনীর কুস্থম-শ্ব্যা রচনা করিরাছিল, কিন্তু হার ! উহুটি একণে কন্দর্প-শ্বের শ্ব্যার ভার আতহ্তজনক হুইরাছে।

বিনোদিনীর মলিন বদন হইতে অবিরত অঞ্ধারা ঝরিতেছে ! দেখিলে প্রাণ ফাটে, বেন করাল রাহর দস্ত-দলনে চক্রমা হইতে অমৃত-ধারা বিগলিত হইতেছে ! স্থীগণের অগোচরে নির্জ্জনে তোমার কলপোপন প্রতিমৃর্জি, কন্ত্রীরসের ঘারা অভিত করিয়া এবং ত হার পদত্রে—মকরও করে নবীন-মাম্র্ক্লের বাণ প্রদান পূর্বক বারংবরে প্রণাম করিতেছে ! সে চেষ্টা দেখিলেই

বিশিখতি রহসি ক্রঙ্গ সদেন ভবস্তমসম শরস্কৃতং প্রাণমতি সকর মধ্যে বিনিধার করেচ শরং নব-চৃতং ॥ ৬ ॥ প্রতিপদ মিদমণি নিগদতি ''মাধব ! তব চরণে পতিতাহং ছয়ি বিমুখে মান্ত স্থানিধিরপিতস্তুতে তকু দাহং ॥ ৭ ॥

কিঞ্চ কাম রূপেণ ঘদাবেশাং থামেবারাধরতীত্যাহ,—সা ভবন্ত মেকান্তে
—স্ব্যা: অদৃশু স্থানে, কন্ত্র্যা বিলিধতি। কীদৃশং ? কামতুল্যং, কামাংশ
সাদৃশুমাহ—মকর মধো বিনিধার করেচ নবাদ্রমুকুল-বাণং বিনিধার—
লিধিত্বা, হে নাথ। গৃহী হাদ্র মুকুল তাং কিমিতি প্রহর্মীতি প্রণমতি, ভদন্তং
কামো নান্তীতিমত্বতি ভাব: (স্ব চিত্তোমাদক্তাং)॥৬॥

সা নকেবলং প্রণমতি, "হে মাধব ! মধোঃ সপে ! তব চরণে অহং পতিতা" ইদমণি প্রতিক্রণং জরতি । কথং মচ্চরণে পত্রি ? ছরি বিমুখেসতি তৎক্ষণা-দেব ক্ষমুত্ত-নিধি শচক্রোহণি মরি তমুদাহং তমুতে ॥ ৭॥

মনে বর "হে নাণ! তুমি ব্যতিত জাবার কম্মর্গ কে? কেন জ্বকারণ আমাকে শরপ্রথার হারা এজরিত করিতেছ? মন্সভাগিনীর প্রতি এক্ষণে প্রদর্ম হও" ইহাই তাহার প্রণামের মন্ত্র। আবার প্রতি মৃহুর্ত্তেই ভোমাকে উদ্দেশ করিরা কহিতেছে—মাধব! জামি যে তোমার চরণ বই জানিনা! এ জ্বভাগিনীর, এ চরণেনিপভিতার প্রতি নিদর হইও না! হে নাথ! তুমি বিমুধ হটলে স্থানিধি-চক্তরে ত্রুকুর্তে আমার দেহ দাহন করিতে থাকে!

হায় ! সধী-প্রেষণাদি বারা তোমার প্রাপ্তি স্ক্ল ভবেধে পাগদিনী ধ্যান যোগে তোমাকে সন্মুধবর্তী জ্ঞানে, আপন হংথ নিবেদনের নিমিত্ত কৃত্ত বিশাপ করিতেছে ! সঙ্গে সঙ্গে আবার সন্মিলনানন্দে উচ্ছণিত হইয়া হাসি-ভেছে ! পরক্ষণেই ভোমার অন্তর্জান ফুরণে—আবার বিষাদে বিকল ইইতেছে ও রোদন করিভেছে ! পুনরার ভন্মত্তেই পুন: সাক্ষাৎকার ক্রুক্তি ধ্যান-লয়েন পুরংপরিকরা ভবস্তমতীব স্থরাপং বিলপতি হসতি বিধীদতি রোদিতি চঞ্চতি মুঞ্চিতাপং ॥ ৮ ॥ শীক্ষরদেবভণিত মিদমধিকং যদি মনসা নটনীয়ং হরি বিরহাকুল বল্লব-যুবতি-দখী-বচনং পঠনীয়ং ॥ ১ ॥

পুনশ্চাতি ব্যগ্রভয়া ধ্ংন-লয়েন ভবস্তং সাক্ষাদিব কৃষা বিলপতি, কথং ধ্যান-লয়েন পুর:কয়াতে সাক্ষাৎ কথং ন ক্রিয়ত ? ইভাাহ — ঢ়য়াপং দৃতীপ্রেষণাদিনাপি অপ্রাপ্যং। ছং-প্রাপ্ত্যানন্দোচ্ছলিতা হসতি, পুনরস্তর্ধানে
বিষীদতি রোদিভিচ, পুন:ফুরস্তং অমুধাবতি—পুন: য়াপ্তমিত্যালিঙ্গনাদিনা
ভাপং মুঞ্জি ॥ ৮॥

যদি মনসা নটনীগং নর্তমিতব্যং তদ। শ্রীজয়দেব ভণিত মিদং অধিকং যথা ভাত্তথা পঠনীয়ং। কুতঃ ? যতো হরি-বিরহাকুলায়াঃ শ্রীরাধায়াঃ স্থ্যা বচনং বত্রতং ॥ ম।

হইতেছে এবং অনুধাবনপূর্বক ভোমাকে আলিঙ্গন।দির ছারা তাণ বিমোচনের চেষ্টা প্রক:শ করিতেছে !!

ভক্তগণ! আপনার। যদি প্রেম-নাট্যে স্থণরকে নাচাইতে চান, ত্বে প্রীজয়দেব কবি ভণিত ক্লফ-'বরহাকুলা-গোপস্থন্দরীর স্থচ্তুরা-সণীর দৌতা-দক্ষভামন্ত্র এই বাণী-সমূহ পুনঃ পুনঃ পাঠ করুন।

### (३) ভোড়ি।

ইহ নব সঞ্ল-কুঞ্জে, কুরুবক কুস্থম-স্থম নবগুঞা। > ॥
তামভিদারয় ধীরাং, ত্রিজগদভূল গুণ-গরিম-গভীরাং ॥ ২ ॥
ভারুষস্পীকুরু ভারং, বিরচয় মদন-মহোদ্ধি পারং ॥ ৩ ॥
ভবতীং গতি মবলত্বে, যতুচিত মিহ কুরু বিগত-বিলম্বে ॥ ৪ ॥

টীকা,— শ্রীক্ষণে দুভীং প্রত্যাহ, হে দুতি । ইহ অশ্মিন্ নব-বঞ্ল-কুঞ্জে
— নবীনাশোক কুঞ্জে তাং ধীরাং — রাধাং অভিদারয়; তত্তি চবেশং কারয়িছাজানরেত্যর্থ: । কিন্তৃতে ? কুরুবক কুন্থমানাং— ঝিটিপুপানাং স্থবময়া— পরম
শোভয়া যুক্তা নব গুঞ্জা ( কুচঃ ইতি ভাষাঃ ) যত্র তিমিন্ । তাং কিন্তৃতাং ?
ত্রিজগতি অতুলানাং গুণানাং গরিমা গৌরবেন গভীরাং ছন্তবগাহাং ॥ ১—২ ॥

হে দৃতি ! গুরুভারং অলীকুরু—স্বীকুরু। ভারমঙ্গীরুত্য মদন মহোদধেঃ কাম-মহা-সাগরত্ম পারং বিরচর—কুরু। অগুপা তন্মহোদধি-নিমগ্রত্ম মম,প্রাণ হানি উবতি ইতিভাবঃ ॥ ৩॥

ভবতীং— ছাং গতিং— উপান্ধং (মহোদধি পারস্ত ইতি শেষঃ) অবলম্বে— আশ্রে। (উপাধ্যেন ১বতীং কাশ্রিকোইশিম ইত্যর্থঃ) হে বিগত-বিলাধে! (বিলম্বনক্ষেত্যুৰ্থঃ) ইহ — অম্মন্মল্মণে জনে মহচিতং হৎ কুল ॥ ৪॥

(৫) অশোককাননাভান্তরে উপবিষ্ট প্রেমোল্ডান্ত-নাগর-শিরোমণি,
প্রিয়তমার ত্রীসহ-বিরহ-বিকার প্রবণ দৃতীকে কহিছেছেন—আহা ! আমার
ছদয়াধিরাজ্ঞী-রাধার ভার— নানা গুণ গরিমায় ত্রবগাহা এমন মহাপ্রেমবতী
রমণী জগতে নাই। হার ! আমার প্রাণ-প্রিয়তমা কি ভীষণ-বিরহ-পীড়াই
সহিতেছেন। দৃতি ! তুমি এখনি তাহাকে এই নবীন বঞ্ল ( অশোক ) কুল্লে
অভিসার করাইয়া আন। তুমিতো প্রতাক্ষই দেখিতেছ— আমি মদনের মহাসমুদ্রে নিমাজিত, অত্এব শোচনীর দশাপ্র-রাধার অভিসাররূপ এই শুরু
ভারটি অক্টীকার করিয়া আল—নিজ্পার আমাব নিমিন্ত এই অকুল জ্লাধীর

ইতি গদিতা মধ্রিপুনা, ত্বরিত নগাদির সতি নিপুনা ॥ ৫॥
নহিদি দরদ-চটু রাধাং দমবোধন দ্বহর-পুরু-বাধাং ॥ ৬॥
হাদি দখি ! বদ্দি মুরারে,জ্বলাদি তদ্পি কিমকুত বিচারে ॥ ৭
ভাধুনা দুশি চ বদন্তী, শিশিরের তদমূত রুচিরিব ভাত্তি॥ ৮ ॥
হরিবল্লভ-গির মধলাং, শ্রেবদি রচর জ্মনদ্দিব-মুতুলাং ॥ ৯॥

অতি-নিপুনা ইয়ং দূতী, মধুরিপুনা ইতি গদিতাসতী ওরিত মগাং---আগতবতী, ( শ্রীরাধা সমীপেতিশেষ: ) ॥ ৫ ॥

দৃতী আগত্য যং ক্লতবন্ধী তদেবাহ—নির্জ্জনে সরস-চাটু যথা ভব্তি তথা, রাধাং অঘ-হরস্ত – ক্লক্ত পুরুবাধাং—মহাপীড়াং সমবোধয়—জ্ঞাপগ্রামাস। রসময়-প্রিয়-বাক্যেন শ্রীক্ষম্ভ কাম-পীড়াং শ্রীরাধাং জ্ঞাপিতবতীত্যর্থ:॥৬॥

হে দিশ ! মুরারে ক্ষেত্র হাদি বদান—নিরশ্বাবস্থিতিং করোদীতার্গ: হে অক্ত-বিচারে ! তদপি দগ্ধীকরোধি ? যত্মিন্ গৃহে বসতী, লোক: তদ্গৃহং ন দহতি, তবতু তদ্ বৈপরিতাং ? (স্বাস স্থান— শ্রীক্ষান্ধার দাইন
দর্শনাৎ— সক্ত-বিচারহং )।

অধুনা তঞ্সুবারে দৃশি – নগনে বদন্তীয়তী তৎ তঞ্জ দগ্ধ-জদন্ধ শিশিরর শীত্নী কুল। কিং কুর্নতী ? অমৃত্রুচিরিব---চক্রেইর শান্তী---(শান্ত্যানাদ্ধী

পার বিরচন করিয়া দাও; সধি! একণে তুমিই আমার একমাত্র গতি — একমাত্র অবলম্বন, অত্এব হে সহর-কার্য্যকুশলে! অবিলয়ে যথা বিহিত কর্ত্তব্যাচরণ হারা আমার প্রতি করণা প্রকাশ কর।

মধুরিপু-মাধবের সাফুনর বচনে, স্থানিপুণা-দুটী থাকিতে না পারিয়া তথনি সহর গমনে শ্রীরাধার সমীপে আসিয়া উশনীত হটলেন এবং তাহার নিকটে নির্জ্জনে অব-হর শ্রীক্তকের (শ্লেষার্থ—ছংথ হরের) অব অর্থাৎ মহা-প্রেম-পীড়া বর্ণন করিয়া ক্তিবেন, য্যা-স্পি। এ জগতে কেইট কথনও নিজের নাম গৃষ্ দ্ধা করেনা, কিন্তু ভোষার ব্যবহার তদ্বিপ্রিত কেন্তু মুর্বীর (কুৎসাত্তক

### (৬) বালা ধানদি।

ত্বং কুচ বল্গিত গৌক্তিক মালা--- হরি মভিসর স্থলরি ! সিত-বেশা; স্মিত সাক্রীক্বত শশি-কর-জালা । ১ ॥ বাকা-রজনী রজনি শুকুরেয়া ॥ জ

— নিজামৃত কাস্তা। তদ্তপ্ত-হৃদয়ং শিশিরয়। যদি তব ত্রিকট গমনেচছা
সাম্পুতং নবর্ত্তে তর্হি দুরতঃ দর্শনং দ্রা তং সমাধ্যসং কুর । (ইত্যক্তা।
শীক্ষপতা তৃঃধং বিজ্ঞাপ্য — অভিসারার্গ হরয়তি ) হরে বলভাং — প্রিয়াং, গিরং—
বাচং (ইহনববঞ্লেভাগদি "য়ঢ় চিতমিহকুর বিপত বিলাধে" ইত্যস্তাং )
য়ুচলাং স্থমনস্মিব — কুস্থম মিব শ্রাব্দি রচয় — কর্ণে কুর । পক্ষে হরিবল্লভ নাম
দৃতী-ভাব সম্পন্ন গীত কর্ত্যঃ।

গীতাবলীতে এই (৬ নং ) গীতটি ২৫তি, সংখ্যার বিলিথিত, এবং তল্লিমন্থ শ্রীমদ বলদেব বিদ্যাভ্যণের ভাষ্য এইরূপ—

হে সুকরি! বং দিত-বেশ:—শুক্লবস্তুরণা সতী হরি মতিসর। দিত বেশতা সংপত্রে বিশিনষ্টি—কুচয়োরুপরি বলিতা—চপলা মৌক্তিকমালা যথা: সা। স্মিতেন সাক্রীকৃতং শশিনঃ করজানং যথা সা। এবা গুরু—উংকুষ্টা রাকা রজনী র্যদন্ধনি জাতান্তি ॥ ১ ॥ জ ॥

ক্ষান্তর) হৃদয়, তোমার নিত্য-শিবাদ-ভান অথচ ভূমি তাহাই দাহ ক্রিতেছ । ইহাকি বিচার-বিহীনার আচরণ নহে ? অভএব অচিরে তাঁহার নয়ন-পথ-বর্তিনী হইয়া স্থাংশুর ভায় মাধুগ্যামৃত বর্ষণে মাধ্বকে শীতল কর।

এই গীতোক্ত গোপী-বল্লভ হরির অমল-বাক্যাবলী থেম-কল্লভকর স্থম্ত্র কুস্ম স্বরূপ, ভক্তগণ্ জীতির সহিত উহা প্রমাদরে কর্ণেধারণ করণ।

(৬) স্থা আরোও কহিতেছেন—কুনরি ! তোমার প্রোধ্রের উপুরে ক্ষর্মান্ত ক্রিন্ত, ক্ষিত হাসিতে শ্লি-কিরণ ঘনীভূত-খেত কান্তি হইয়া গিয়াছে ৷ তদ্বারা উংক্টা-পূর্ণিমা নিশি (রাকা রজনী) সমুধে পরিহিত মাহিব-দ্ধি-ক্রচি সিচরা, বপুরপিত খন চন্দ্রন নিচরা॥ ২॥ কৰ্ণ করম্বিত কৈরব হাসা— ক্লিত স্নাত্ন সঙ্গ বিশাসা

#### ( 9 )— **기름** 1 1

কসল-বয়নী কনক কাঁতি—
মুক্তা-নিকর দশন-পাতি।
নাশা, তিল-মৃত্-ক্তম তুল—
কাজরে সাজল দিঠি-তুকুল।

চললৈ হরিণী-নয়নী রাই— ত্রিভূবন জন উপসা নাই! অরুণ-ভাধরে হসন-ইন্দু— চিবুকে সধুর শামর-বিন্দু!

পরিহিতোহকের ধৃতো মাহিক-দধি-ক্রচি—স্তদ্ধি সদৃশঃ বৃদ্ধং বৃদ্ধা সা । বপু-রিতি ক্টার্থং ॥ ২ ॥

কর্ণরোঃ কর্দ্বিতো—ধৃতঃ কৈর্বরোহানো বরা সা। প্রকৃত্ব-কুমুদ্বিতং সিত শ্রোত্বেত্যর্থ:। ক্লিডঃ প্রাপ্তঃ সনাতনত হরেঃ সঙ্গেন বিলাসো বরা সা। ক্লিতো দৃষ্টঃ সনাতনত সঙ্গ—আশক্তির্যেষ্ তাদৃশা বিলাসা ৰক্ষাঃ সেতি চার্থ গক্ষে॥ ৩॥

প্রাহ্ভূতা ! অতএব এখনি শুল্রবেশে হরির নিকটে অভিসার কর। বেশ ডো স্বর্চিতই রহিরাছে—মাহিষ-দধির স্থার স্থেজ-ক্সন পরিধানেই বর্তুমান, অঙ্গ—খন-চন্দনে স্থচচ্চিত, কর্ণ—বিকসিত-কুম্দে অবতংগিত, ইহাইডো জ্যোৎস্লাভিসারিণী হইরা সনাতনের সঙ্গ-বিগাস-গাডোপযোগী উৎকৃষ্ট বেশ ! অতএব আর বৃধা বিশহ করার কিছুমাত্রও প্রয়োজন নাই।

(৭) অভরণে অঙ্গ মণ্ডিত না করিষাই প্রেমাকৃণিতা সুন্দরী অভিসারে চলিপেন! তদর্শনে কোনও অনুসঙ্গিনী কহিছেছেন—অনিন্দু-স্ন্দরীগণের

উচ কুচ-যুগ কনক-গিরি—
হিয়ার মাঝারে মাণিক ছিরি;
পাবন-ভরল-বসন মেলি—
দামিনী বেচল চান্দনি-বেলী!
বিক্রেম সারির সময় সাক্র—
রবি সিনায়ত তটিনী-মাঝ!

লোম-লভাগনী ভূজগী-ভান
নাভি বর-জুদে করু পরান ?
কেশরী-সোসরি মাঝারি জঙ্গ,
ত্রিবলী যৌগন-জল-তরঙ্গ !
মান-বিমান চার্ল-নিভম্ব,
উল্ট-কদলী উরু ভারস্ক।

অভরণের ভার বহ্ন পণ্ড-শ্রম মাত্র ! আমাদের কমল-বদনী রাধা এ কণার প্রত্যক্ষ উদাহরণ, দেখ—কমলাননীর কমনীর-বদনধানি স্বতঃই প্রক্লকমলের স্থার—কোমল— স্থানরক্ত এবং নরন-স্লিপ্ককর। শ্রী অঙ্গ-কান্তি— স্থবর্ণের স্থার স্থবর্ণ—স্থনির্মাণ ও প্রোজ্জল। দশন নিচর—ম্ক্তাবলীর স্থার শুত্র সমৃজ্জল ও লাবণা-মণ্ডিত। নাদিকাটি— তিলফুলের তুলা স্থঠান, স্মৃত্রল ও মনোহর; নরনের প্রান্তর্বর স্থতঃই বেন (দিঠি চুকুল) কজ্জলে স্থান্তিত। আহা ! এই বে স্থাভাবিক মাধুনী-ভ্ষিতা-আমাদের হরিণ নরনী দখী অভিসারে চলিরাছে, এসোক্ষর্যের—এমাধুর্য্যর—উপমা দেবী, মানবী, কির্মী, বিদ্যাধ্নীতে নাই! লক্ষ্মী পার্ক্তীতে নাই! ত্রিক্সাতে কোধান্ত বিদ্যাম্যন নাই!

দেখ—স্বদনীর অরুণাধরে—কি অপূর্ব স্বমামর হাস্ত-স্থাকর সম্পিত!
(অরুণের কোরে শশবর!) চারু-চিব্কে—মৃগমদের শ্রামল বিন্দৃটি কি মধুর
মাধুরীতে স্মণ্ডিত! পীনোল্লত কুচ যুগল—স্বর্ণ-গিরির স্তার কি স্কলর
শোভা বিকাশ করিতেছে! বক্ষ-বিশ্বিত হারের মাণিকাগুলি কি অপূর্বে
শ্রী সম্পন! আর প্রন-সঞ্চালিত অভিসারের-খেত-ব্দনেরই বা কি লোচন
বিন্মাপক-শোভা!—ঠিকু বেন জ্যোৎসার লভিকার (বেলী—বল্লী) বিহ্যুতের
বৃক্ষকে বেঢ়িরা রহিরাছে! আর কণ্ঠ-শ্বত প্রবাল-শ্রেণীর সামন্ত্রিক-শোভা
মর্থাৎ—মাণিক্য-মালার সহিত সন্মিলন মাধুরী কি অহুত? দেখ—বেন তটিনীর
স্বিল-তরক্ষে দ্বাকরসকল অব্গাহন করিতেছে! এদিকে লোম-লভাবলীকে
দেখিরা অভিস্থেই নন্ত্রনের ভ্রান্তি সমৃৎশ্র হইতেছে গে— একি স্থাতীর-নাভীহ্রদে ভূক্সিনী গমন করিতছে?

नीविद्या वाञ्चल (वलन-काल---উল্ট-ক্সল ফুটল-আধ ? कर्षित छेलदा किक्किल-नाम-রতন-মঞ্জীর করু বিবাদ গ

**চরণ-কমল-भो**ख्ल ছার. छान माग मन जुड़ा छ जा स्

## (৮) পঠ मञ्जती।

বুন্দা-বিপিনে প্রবেশলিরাই করপহি কামু ধওল ধনী কোর ठा है।

লোছ তমু উলমিত দোহু মুখ- নব-দের্গামিনী জুলাদে উজোর !

**ज्रेत-भारिनीत य ज्याल नग्नन পড़िएलाइ, जारात भागारे जाक ज्या**कत ও অন্তত লাগিতেছে। দেখ, কেশরীর সদৃশ দেহের মধ্য ভাগ অর্থাৎ কটিদেশ বেন ক্ষীণতা-সঞ্জাত-সৌন্দর্ব্যের ভাগুরে, ও ত্রিবলীগুলি বেন গৌবন-তরঙ্গিণীর **८** छ । जात (कली-कलावछी-मिनत मत्नास्त्र—निष्यश्रीन त्यन महत्नत ৰিমান ! এবং উক্তর আরম্ভ-স্থান বেন বিপর্যান্ত-কদলী-বুক্ষের কাও ! আবার नीवि-वस्तान त्रभम-त्रङ्कृत महिक द्य द्वन-काम ( द्वारीमात त्रभभः ) वैश्व রহিয়াছে ভদর্শনে ধাঁধা লিয়াতেছে যেন অদ্ব-প্রাণ্ট ত কমল, উণ্টিয়া রহিয়াছে 1

এদিকে গতি-বেগে পর্যাদক্রমে নিনাদিত--নি ভ্রিনীর কটির কিহিণী ও চরপের রত্ন-নির্মিত নুপুরের ধ্বনি শুনিয়া মনে হইতেছে—বেন তাহারা স্ব স্ব সৌ হাগ্য ও গৌরৰ প্রবর্শন পূর্বক আনন্দ-কলহ করিতেছে ! গীতকর্ত্ত। জ্ঞান সাস কহিতেছেন এ বিবাদে যাহার জয় হয় হউক, মামার মন কেবল ওই চরণ কমলের শীতল ছারাতেই জুড়ায়।

বঙ্গবাসীর সঙ্গীত সংগ্রহে ১৩। ১৪ ছত্তের পাঠা স্তর—নিভ্রম সারিম সময় দান, রবি শিলাগত ভটিনী মাঝ।

<sup>(</sup>৮) এ গীতের অবশিষ্টাংশ কোনও গ্রন্থে পাওয়া গেল না ! গাছ-গ্রহণ করিয়া, ধওল-ধরিল। উল্লিভ-উল্লিভ।

## (৯) शानिम।

হরিভূজকলিত্সধুর মুজুলাঙ্গা,তলসল মুখ-শশিবিলসদপাঙ্গা ॥১॥ রাধা ললিত বিলাসা, অধিরতি-শরন মজনি মুজু হাসাঁ॥ এ। অসক্তুদ্ধিত ঘন-পরিরম্ভা, পর-নধরাঙ্কুশ্দিত কুচ কুম্ভা॥২॥

ললিত-বিগাস্ রাধা অধিরতি-শয়নং—রতি-শয়নমধিকতা ( স্কৃত শয়নে ইত্যর্থঃ ) মৃত হাসা অজনি – জাতা॥ গ্রা

লণিত বিলাসমাহ -হরি-ভূজাভ্যাং কলিতং--গৃহীতং মধুরং মৃত্লং অঙ্গং যতাঃ। ভূজাভ্যামালিঙ্গা নাগরেক্রেন রতি-শয়নমানীভা রাধা, বাম্যমক্ত্রা — মৃত্য মনং জহাস ইত্যর্পঃ। কিন্তুতা ? ততা শীক্ষণা অমলে-মৃথ্রপে শশিনি চক্রে বিলসন্ অপাঙ্গং যতাঃ। (অত্র শশি-শন্দ-সারিধ্যাৎ অপাঙ্গত চকোর রূপরং) রতি-শর্নে শীক্ষা-হৃদ্য-স্তিত শীরাধা শীক্ষান্ত মুধং অপাঙ্গেন পুনঃ পুনঃ বিলোক্যামাস ইত্যরিঃ॥ ১॥

পুন: কিন্তু গ ? অনক্য—বারষারং উদঞ্চিত— প্রকটীকত ঘন—নিবিচ্
পরিরন্ত—আলিগনং যগা। (বারষারং শ্রীক্ষণং শ্রীরাধা গাঢ়মালিঙ্গিতবতী নিজ কদরে প্রবেশমি ইমিবেতি ভাবঃ) ধর-নথরাঙ্কুশেন ধরেণ—শাণিতেন নথরক্রপাঙ্কুশেন দিতৌ — খণ্ডিতৌ কূচ-কুন্তৌ মহাঃ। (কুচ কুন্তাভাগং বক্ষদি প্রহারমহাভূষ রোধেণৈক শ্রীকৃষ্ণেণ নথাঙ্কুশেন টো খণ্ডিতৌ ইতি উংপ্রেক্ষা)॥ ২॥

<sup>(</sup>৯) মধুর-মৃত্লাঙ্গী প্রীরাধা মনোপ্রাণহারীর (হরির) ভূজ-বেটিতা ও সঙ্গতা হইয়া, তলীয় কলফ হীল মুধ-চাক্তর মাধুরী, অপাঙ্গে পান করিতে করিতে বিলাস-চঞ্চলা হইয়া উঠিয়াছেন। তদর্শনে লতারয়ে দন্ত-নয়নাকোনও স্থী মহানন্দে কহিতেছেন—দেথ আমাদের লণিত-বিলাসিনী রাধা, আজ কেলী-তল্পভা হইয়াই মৃত-মন্দ মধুর হাস্ত রসে বিলসিতা। বাম রঙ্গিলির, এবাবহার বৈপরীতা —নিশ্চরই নীলা-বৈপরিতোর পূর্বে লক্ষণ!

শার-শর বিভিত ধৃতিমতিশজ্জা,প্রেন-স্থা জাণ্ধি কৃত সজ্জা ॥ ০ লারভগ-বলিত রদ-চহদপানা, আম-সলিলাপ্লুত বপুরপি ধানা ॥৪ কৃষ্ণ কৃষ্ণি অঞ্চতি ক্লচিনা, পরিমল মিলিত[সধ্রেত নিকরা ৫

পুন: কিছ্তা? শ্ব-শ্বেণ—কামশ্বেণ খণ্ডিতা বৃতি—ধৈষ্য—বংশক্ষ্ দ্যান্থারাকরণ (অনুদ্যম রূপঃ) মতি-জ্ঞানং (মনৈতাদৃশ প্রাগণভামন্থচিড মিত্যাদি রূপং) লক্ষা—ব্রীড়া (জাল রন্ধু দন্ত-নম্না সংখ্যা মাং দৃষ্টা পরিহসি-স্তীতি ব্রীড়া । যন্তা সা। অধীরা, অজ্ঞানা, নিল্ক্ষা চ ভূষা জ্ঞীরুষ্ণেণ সহ বিহর্জীত্যর্থ: প্রেম-স্থা-জল্থো কুণা মজ্জা—স্লানং যরা। (জ্বেন শ্রীমত্ত্রেশ নীল্মণুক্তে ওলংকর জন্ম স্থাং ভবিত্যার্ক ধ্বনিতং॥ ৩॥

সরভদেন—সকৌতৃকেন বলিত – কৃতং রদ-চছদরো: ওঠাধরয়ো পানং ব গ্যা (কৃষ্ণ ভোতি শেষ:) ওজ: ক্ষরারস্তে শ্রীকৃষ্ণাধরং পীতবতীতার্থ:। শ্রম-স্থানিক আরুতে বপুবি-শরীরে অপিধানং—নান্তি পিধানং বন্ধং যতা। ওজ: ক্ষরারস্ত সমধে প্রয়োগ-বেগাধিকাাং শ্রম জলেন আলুতা বভূব ॥ ৪॥

সম্পুরোপে বেগাধিকানের বর্ণরতি—কঙ্কণ কিছিণী ঝক্কত্যা—ঝকারেণ কচিরা মনোহরা। বা কাশ্চিং কুঞ্জ-ভবনস্তা বহিস্থিতাঃ কঙ্কণ-কিছিণী ঝক্কতিং শৃষ্তি তাসাং তরা মনোজত (প্রাগল্ভাত্যা প্রয়োগ-বেগাতিশরাসমানাদিতি-ভাবঃ) পরিমণেন উভয়োরস্থ-সংমর্জনোথ-সৌগন্ধেন করণেন মিলিতো আহুতঃ মধুবাদ-নিকরো— ভ্রমর সমূহ যরা সা। শ্রীক্ষণাক্ষ গন্ধানাং রাধাক্ত-গন্ধ

তাহার পরেই লীলানন্দের আরম্ভ হেরিয়া কহিতেছেন, দেখ—বাহা-বিশিছেছিলাম তাহাই নয়নে সমূদিত ! দেখ—লীলাসমূল সিতা-নাগরায়িত নাগরী মণি, কাস্তায়িত-প্রাণ-কাম্ভকে ঘন ঘন প্রগাঢ় আলিজন করিতেছে ! কুচ কুন্তা ঘাতে উত্তেজিত বিদ্ধ-রাজ, প্রথব-নথাঙ্কুশে কুন্ত-থওনে অতুল-দক্ষতা দেখাই তেছেন বটে কিন্তু কেনি-কুশলা রাধা ভাহাতে দমিবে কেন ? জন্মপ-শবে তাহার ধৈর্যা লক্ষা ও সহজ-জ্ঞান দূর হইয়া গিয়াছে, তাহাতেই আজ সে প্রেম-স্থা-জল্পীতে স্পর্ব নিম্ক্তিত হইয়া মনের সাধে সাভার দিতেছে ! জাহা!
—কি তারতেজে কি স্কর কৌছুকের দহিত নাগরেক্তের ওঠাবর (রদ্ভেই)

মুগমদ-রস-চর্চ্চিত্তনব-বঁলীনা কুতিধর তিসিত চিক্রাবৃত বদনা ও বল্লভারশিক কলারস দারা, সফলী কৃত নিক্ষ সধুরিম-ভারা॥৭

है जि जी गै छि छोमार्ग शुर्क विकार महोविः मि क्र क्षा ।

ষিলনাৎ বিপুলীভাবাৎ রাধারামহিমাধিকামমুভ্র উভয়োরঙ্গরিমণেন ভ্রমরাকর্ষণে কাতেপি — রাধাঙ্গপরিমণ্ড আধিকাজ্ঞানাদ্ত — রাধারা বিশে-বণং॥ ৫॥

সম্পূর্ণ ওক্ত করাৎ ক্রমাতিশরেন স্থিমি চাংগ্রভাং বর্ণরতি— মৃগ্রদ-রদেন চর্চিত (কৃষ্ণবর্ণী কৃত) নব-নশিনস্থ আকৃতি ধরৈ: চিকুরৈরাবৃতং বদনং ৰস্থা সা। বেণী-বন্ধ বিমৃক্ত স্লথ চিকুরাবৃত বদনা নিশ্চশাঙ্গী সতী — প্রীকৃষ্ণ হৃদরোপরি পতিতা তদ্বদনার্পিত বদনা সতী বিরাজতে ইন্ডার্থ ॥ ৬ ॥

বর ভশ্ত ঐক্তি বসিক কলাস্থ যা বদোঃ আনন্দ: তশ্ত সারা—সার-স্বরণা ঐক্তিকে সম্পুরোগ বৈদ্ধীং প্রকাশ্ত আনন্দ-সারং দত্তবভীতার্থ: অতএব সফলী ক্তুত নিজ মধুরিয়া মাধুর্যাস্ত ভারো বয়া সা। শ্লেবেগ বল্ভ গীতকর্ত্তু নামা।

করিতেছে ! প্রেরাগ-বেগ।ধিক্যে শরীর শ্রম-স্থিলাপ্লত এবং বসন অক্সচ্যুত ছইন্না পড়িয়াছে। কিন্তু করণ কিছিণীর মনোহর ঝল্লারে উল্লিস্তা শ্রাম-স্নোহরা ভাইরা উঠিয়াছে ! তাহার অক্স-সংমর্দন-স্প্রাত পরিম্বের সৌরতে মধুকর নিকর ঝাকে ঝাকে আসিয়া স্থিলিত ছইতেছে !

পরিশেষে লীলার উপসংহার-দৃশ্য দর্শনে বিমোহিত হইয়া কহিতেছেন—
আহা! বেণী-বন্ধ বিনিশ্নুক্ত-চাক্ষচিক্র-রাজীতে আর্ড কল্পনী-রদাল্তাননা
বিনোদ্বদনী—মৃগ-মদ-রসে চচ্চিত নব-নিগনীর ভায় শোভিতাও কেণীশ্রমে
ক্লান্তা হটয়া একণে ভিমিতা অর্থাৎ নাগরেক্ত শেধরের হৃদয়োপরি নিপভিতা!! স্থি! রসিক-বল্লভের সকল কলারসের সারভ্তা অর্থাৎ পরমানন্দ
দারিনীর অসীম-মাধুরী-ভার আর্থ সম্পূর্ণ স্কলিত হইয়াছে! (শ্লেষ র্থ—
গীতক্তাবিরত কহিতেছেন রসিকেক্লের সকল কলারসের ইত্যাবে।

# <u>बिक्न पना गैउिं छां प्राप्त</u>

#### অথ উনত্তিংশত্তৰ ক্ষণদা।

## ( > ) 🖺 रशीत ठळ छ — तांश मनन ।

চৌদিকে গোবিক্ধবনি শুনি পত্ হাসে তাণিরে-গৌরাঙ্গ নাচে সঙ্গে নিজ্যানন্দ কম্পিত অধরে গোরা গণগদ ভাবে। অবনী ভাসলপ্রেমে গায় রামানন্দ।

(১) আমার জগন্মলাবতার গৌর হরির নিয়োগনামুসারে শ্রীনীলাচলনাথের রথের চারিদিকে চৌদ্দমাদলের সন্ধীর্ত্তন ভইতেছে। সে রসানন্দের মহাতরঙ্গ লোতে আমাদের সন্ধীর্ত্তন-বিহারীকে রাস-রসাগবের অমৃত-রসে ডুবাইয়াদিল। দেখ, চতুর্দিকে মধুর তানলয় সংযুক্ত গোবিল ধ্বনি শুনিয়া আমার প্রভুর শ্রীমুখে ভূবনোন্মাদক অমধুর হাস্ত দেগদিয়াছে। অতঃপর প্রেম-কম্পিতাধরে গদগদ কঠে অমিয়-ময়-বাণীতে আপনা আপনি কথা কহিতে কহিতে একণে নাচিতে আরম্ভ করিরাছেন।

নৃত্যারন্তেই তদেদ-প্রাণ-নিত্যানল্চক্ত ( শীরাধার অমুসঙ্গিনী ললিতা স্থীর স্থায় ) তৎসঙ্গী হইরাছেন, দেখ— চজনের প্রেমে আজ অননী ভাসিতেছে। প্রভুর প্রেমাজ্র-প্রবাহ দর্শনে আকুল। ইইয়া প্রিয়পার্গদ রামানল্রায় একা একাই গান আরম্ভ করিয়াদিয়াছেন এবং প্রভুর প্রিয়-গায়ক মৃকুন্দ, মুরারী ও বাস্থদেব বোষকে ডাকিতেছেন "শীঘ এসো, তোমাদের ওণে অর্থাং তোমাদের সঙ্গীর্ত্তন-শ্রবণে ভাবাবিপ্ত ইইয়া আমার প্রাণ পুত্রল কাঁদিয়া বক্ষ ভাসাইতেছেন।" (সর্বাদাই এই ভক্তত্রেমের কীর্ত্তনে প্রভুর আনন্দ উথনিয়া উঠিত, যথা—শ্রীতৈত্তভারিতাম্ত অংদি, ১০ম পরিছেদে— "শ্রীমুকুন্দ দন্ত শাগা প্রভুর সমাধার্মী, যাহার কীর্ত্তনে নাচে চৈত্রভ গোসাঞ্জী। গোবিল মাধ্য আর বাস্থদেব ঘোষ, তিন ভাইর কীর্ত্তনে প্রভু পায়েন সন্তোষ। শ্রীমুবারী ওপ্ত শাথা গ্রেমের ভাগোর, প্রভুর হৃদয় দ্বনে শুনি দৈয়ে যার।" )

ষ্কুন্দস্রারী বাস্থ ! হের আইস বলি আর যত ভক্তবৃদ্দ আনদ্দ বিভোর ভোমা সবার শুণে কান্দে পরাণপুত্নি! বস্থু রামানন্দ ভাহে সুবধ-চকোর।

## (২) শ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রস্থ—বরাড়ি। মণ্ডলী রচিয়া সহচরে, ভার মাঝে পোরা নটবরে।

অক্তান্ত ভক্তগণ আনন্দে বিভার হইর। লীলা-রসে নিমর !! পার্ধন গীত-কর্তা রামানন্দ বস্থ কহিতেছেন—কেশণ আমি স্থাবৃদ্ধ স্থালুক চকোরের ভার আশাবিত ! ( এই দিনের লীলা সম্বন্ধে শ্রীচরিতামৃতের আদি ১০শ পরিচেছেদের মন্তব্য—"পূর্ব্ধে থৈছে রাগাদি লীলা কৈল বৃন্দাবনে, অণোকিক লীলা গৌর কৈল কণে কণে" এবং ঐ গ্রন্থে ইতঃপূর্ব্ধে মুরারী মুকুল্দ বাস্থ—একত্তে গান করার কর্ণনাও রহিয়াছে। বণা—বাস্থদেব গোপীনাথ মুরারী যাহা গার, মুকুল্দ প্রধান কৈল আর সম্পূদায়)

পদ কল্পভক্তে আমাদের তৃতীয় ছতে এগীতের আরম্ভ এবং পঞ্চম ছত্তের এই রূপ পাঠান্তর "গোবিন্দ মাধব বাস্থদেব আইস বলি"। আবার ইহার আগে ভুইটি পংক্তি অভিরিক্ত আছে যথা—ভাবে গ্রগর অফ কভ ধারা বয়, পতি-ভেরে কোণে ধরি রেঃদন কর্য়!

(২) দেও—কালিনীপুলিনেরভাবোদীপক—মুরধুনীর-ভীর-মাধুরীতে রাস-রসাবিষ্ট আমার গৌর-নটবর, সংচর বৃদকে শইয়া মণ্ডলী বন্ধন পূর্বক—
মণ্ডলীর মধ্যস্থলে গদাধর পণ্ডিতের সহিত কি কপূর্ব্ব, কি ভ্বন-মনোহর নৃত্য
রচনা করিয়াছেন! এবং ভদ্গত প্রাণ—শ্রীনিত্যানন্দচক্র কতরঙ্গে কতছন্দে
ভৎসক্ষে-সজে-নাচিয়া মৃত্য-ভরলের অজ-পূষ্ট করিভেছেন! যেন ভিন জনেই
আরু পূর্ব্ববিতারের ভাবাবেশে সকৌভুকে স্ব স্থ পূর্ব্ব-স্বভাবাম্বারী প্রেম্-

নাচে বিশ্বস্তর, সঙ্গে গদাধর, নাচে নিভ্যানক রার প্রব কৌতৃক, ভূঞে তেমেল্খ, স্থান ব্ঝিয়া পায়।

স্থাস্থাদন ও পরম্পরের স্থানন্দ্রম্পরেন উন্মাদিত। অর্থাৎ শ্রীগোরস্থার— ব্রজনাগরের ভাবে, শ্রীমন্ গদাধর গোন্ধারী—শ্রীরাধার ভাবে এবং শ্রীনিভ্যানন্দ্রস্থান শ্রীরাধার পরমর্গ্রেষ্ঠা-প্রধানা-স্থীললিভাস্থান্দরীর ভাবে রসানন্দ্রমান্দর ও প্রদান দারা আজ শ্রীনবদ্বীপের বৃন্ধাবনত স্থাক্ত করিয়া তুলিয়াছেন!!

পদকরতক ও গৌরপদ তরজিণীতে এ গীতের অবশিষ্টাংশ এইক্সণ—

ঘরে ঘরে শ্রান-স্থলর-মূরজি-পীরিতি ভক্তি দিরা।

করে সন্ধীর্তান, যাচে প্রেমধন, সব সহচর লৈয়া॥

প্রেষ নাচে প্রেক্তির ভাবে, প্রেষ ভাবে যুব্তি!

বার যেই ভাব, পাইয়া শভাব, নাচে কত শত জাতি!!

( কংছ) নয়নানন্দ, নদিয়া আনন্দ, আনন্দে ভুবন ডোরা হঃথিত জীবন, ষাধ্ব নন্দন – চর্ণে শর্ণ মেরা॥

বোধ হয় রসভাবের অসস্তির অপবা কদর্থের আশহার এই পংক্তিগুলি এ গ্রান্থ হয় বাই। এখন—নিম্নোক্তরণে এই চরণগুলির ব্যাখ্যা হইতে পারে কিনা বিচার করা কর্ত্তা। বগা—জীবগণের ঘরে ঘরে ঘরে শ্রাম-মনোহর-বিগ্রহ-শ্রীনন্দনন্দনের প্রতি প্রীতি ও ছক্তি প্রদান করিয়া, এক্ষণে সহচরগণের সহিত সন্ধীর্ত্তন-রসোংসবের অমুষ্ঠান হারা—গুআহাদনের-অমুসঙ্গে—প্রেমধন যানিয়া বিলাইতেছেন। এই শ্রীসহীর্ত্তন-বিলাস এবং ব্রন্থনীলার রাস-কেণী একই বস্তু, স্মৃতরাং আমার গৌরনিত্যানন্দের সকল সহচরগণই পুরুষ হইরা নারীর স্তার নৃত্য করিতেছেন! ও আপনাদিগকে ব্রতী বলিয়া ভাবিতেছেন! কিছা সে নৃত্য দর্শনে দূরবর্তী ক্ল-যুব গ্রীগণ পর্যান্ত পুরুষের স্তান্থ আনন্দে নাচিতেছে! অস্তান্ত শত শত জাতির দর্শকসকলের প্রাণেও তাঁহাদের নিজ নিজ হৃদয়ন্থ নিজিত ভাব ও স্থভাব জাগিয়৷ উঠিয়াছে! তাহাতেই দেশ—সকলেই আল আনন্দাবেশে নৃত্য করিতেছেন।

### (०) कारमाम।

মুধ্মগুণ জিতি শ্রদ-ফ্ধাকর, তমুরুচি তরুণ-তমাল।
চূড়া—চারুশিধ্ওক-মপ্তিত, মধুকর শেতৃল মালতী-মাল।
ধনি ধনি, বনি নব-নাগর কান—
রহই ত্রিভঙ্গ, ভূবন-মন-মোহন, মধুর-মূরলী করু গান। গুল

গীতকন্তা নরনানন্দ, এই রস-লীলার প্রধান-পরিকর-গদাধর পণ্ডিতের শিব্য ও ভাতপুত্র । গদাধরের শিতার নাম মাধবাচার্য্য, তাহাতেই তিনি ভণিতার বলিরাছেন—আন্ত নদিরার এ আনন্দে ত্রিভূগন ভোর হইরা উঠিরাছে। এই আনন্দের সর্ব্বপ্রধান সংবর্দ্ধক মাধবনন্দনের শ্রীচরণ—ছ:ধিত-জীবন আমার একমাত্র ভর্মা।

রী হাত্সগরে শ্রীক্ষণবেবণ-পরারণা কোনও মঞ্জরী, তাঁহাকে দূর হইতে দর্শন করিয়া কহিতেছেন—আহা! আজ আমাদের নব-নাগররাজ কি লগরুপ, কি ত্বন-বিস্থাপক-বেশে বিরাজিত! বদন-মণ্ডল—শারদীর-পূর্ণ-শর্শবের শোভাও প্রভাকে পরাজর করিয়া সমুত্রাসিত হইতেছে, তমুকান্তিতে—তরুণ-তমালের কোমল-পরবকে পরাভব করিতেছে! আবার এই জনির্ম্কচনীর-রূপ মাধুরীর স্থায়—আজিকার বেশের-শোভাটিও পরম চমংকার! দেখ — স্থচার-ছালে বিরচিত চূড়াটি কি স্থলর শিথিপুছে (শিধগুকে) মণ্ডিত! গলদেশের মালতীরমালা—মধুকর-মালার বেটিত হইয়া কি অছ্ত, কি মনোমোহন সৌন্দর্য বিকাশ করিতেছে!

নাগরেজ-চূড়ামণি এইরূপ ধন্তাতিধন্তবেশে স্থাজ্জিত ও মধুর মাধুরীতে মণ্ডিত হইরা ত্রিজ্বন-মোহন-ত্রিভঙ্গীতে দাঁড়াইরা—মধুর-মুরলীতে কাস্তা-কর্ষিণী কলগান করিতেছেন। তাঁহার ললাটোপরিহ চূর্ণ কুন্তল ( অলক ) নিচম্ব বেন রূসে টল্মল করিতেছে। প্রাক্রন্যনে—তিল্কাবলী (উদীর্মান শশি- টলমল- গলক, তিলক মুথ বালকই, ভাঙকি পকুয়া ধুনান— কুলবজী-বরত— বিমোচন লোচন— বিষম কুজ্ম- শর-বাণ! বান্ধুলী-বন্ধু- গণরে সধ্যাধল— সধুর সধুর ১ জ্-হাস— যদু— ভামোদে, সদন-মণ-সন্থর, ভণত্তি গোবিদ্দদাস॥

## ( ৪ ) ছুড়ি—পটভাল।

শারদ-চনদ প্রন-মনদ, বিপিনে ভরণ কুন্ত্য-গন্ধ, কুল্ল মল্লিকা যালভী যূণী মন্ত্র-মধুকর ভোরণী,

কিরণ-সম্পাতে) ঝলমল করিতেছে। এবং কম্পিত (ধুনান) জ্র-ধমুতে বিষম-কম্পরিণের স্থান্ন বিরাজিত—কুলবতীর-ত্রত-বিধ্বংশী-লোচন-কটাক্ষ, যেন চঞ্চল হইরা কুল-বালাক্লের অবেশণ করিতেছে। আবার বাজুলি কুলের সমধর্মী-বজ্বৎ তদমূরূপ স্থরজিত মধুমাধা-অধরে,নারী-মনোহর মৃছ মধুর মন্দহাস্থ বিরাজিত। (মঞ্জরী-ভাবাবিষ্ট গীতকর্তা-গোবিন্দকবিরাক্ষ আপন মনোভাবে-রসাত্মকবাণীতে উপসংহারে কহিতেছেন)—এই অধর-বাধুলীর মধুপানই—লোচনবাণ-রূপ বিষম-কন্দর্প-শরাঘাতের একমাত্র অবার্থ-ভেষজ। এ মহৌষধ এমনি অসধারণ শক্তিসম্পার যে, দেখ—ইহার অনুর-সৌগদ্ধেই মদনের (মদ) অহর্বার ফ্লীভূত হইরা বাইতেছে।

(৪) পূর্ব্বোক্তা মঞ্জরী দেখিতেছেন—শারদ-মুধাকর পূর্বাকাশে সম্দিত,
মন্দ মন্দ পবন বহিতেছে, বনভূমি কুন্তমের সোগদ্ধে ভরিয়া গিয়াছে, প্রকুল—
মলিকা, মাণতী (চামেণী) ও যুণী-কুন্তমের পরিমণে প্রমন্ত-মধুকরবৃন্দ বিভোর হইয়া উঠিয়াছে এবং এইরূপ উদ্দীপনা-পূর্ণ মনোহর রক্তনী দশনে,
স্তাম-মোহন—মদনেমাভিয়া (প্রেমোংকুল হইয়া / কুলবতীগণের চিদ্ভাপহারি বেরই রাতি প্রছন ভাতি, শ্যাস-মোহন সদলে মাতি—
মুরলী-গান পক্ষম তান কুলবতী-চিত্ত-চোরণী।
শুনত গোপী প্রেম রোপী, মনহি মনহি আপনা সোঁপি,
তাহি চলত যাহি নোলত মুনলী কল-লোলনী,
বিছুরিগেহ নিজত দেহ, এক নয়নে কাজর রেহ,
বাহে রঞ্জিত মঞ্জীর এক, এক কুগুল দোলনী।

অর্থাৎ কাস্তাকর্ষণী কলধ্বনিতে পঞ্চমতানে মুরলীবাদন করিতেছেন। আরপ্রেম-বিমোহিতা গোপ-ফুলরীগণ, সে মধুরধ্বনি প্রবণমাত্ত মনে মনে আর্মসমর্পণ করিয়া অর্থাৎ মুরলীরবে হৃত্তিত্তা হৃত্রা এই চিত্ত পূঠন-কারক—
কলধ্বনির অভিমুখে মন্ত্র-মুগার লাম ছুটিয়া আসিতেছেন। তাহাদের ভাবে
ও বেশে স্পঠ প্রতীতি হৃত্তেছে, সকলেই আপন আপন দেহ গেহাদি বিশ্বত
হ্রা (বিছুরি) গিরাছেন।

মঞ্জরী, স্বকীয় সঙ্গিনীকে কহিতেছেন,—ইহাদের দশা দেখ—কাহার প্র

এক নয়নে অঞ্জন - বংশীধননি শুনিরা আর অশুনরন রঞ্জনের বিলম্ব সহে নাই,

অমনি ছুটিয়া আসিতেছে। কেহ বলয়ের বিনিমরে বাছতে ন্প্র (মঞ্জীর)

পরিধান করিরাছে, তাহাও এক বাছতে। কাহারও বা কেবল এককর্ণে কুওল

দোলিতেছে!! এদিকে—সকলেরই নীবিষদ্ধ শিথিল হইয়া পড়িরাছে উত্তরীয়

খনিত হইতেছে, কাঁচুলী ও কিছিণী খুণিয়া বাইতেছে। (রসন - কিছিণী,

চোলী—কঞ্লিকা) স্বসম্বন্ধ বেণী বিশ্বলিত হইয়া দোলিতেছে!— তথাপি

ব্বতিগণের ভাহাতে দৃক্পাত মাত্রও নাই—কেবলই অশ্রাস্তন্ত ধাবিত্ত

হইয়া আসিতেছে!!

আবোও এক আশ্র্যা ব্যাপার দেখ--গোষ্টভূমি হইতে কানন প্রাপ্ত এতক্ষণ ইহারা নিজ নিজ সধীগণের সহিত মিলিয়া আসিতেছে, অথচ পথে কাহারও প্রতিই কাহারও লক্ষা নাই! দর্শনকারিণী-মঞ্জরীর ভাবাবেশে গীতকর্ত্তা গোবিন্দ কবিরাজ কহিতেছেন—এমনি আত্মহারা হ্ইয়া আল ব্রস্ক্রমন্ত্রীগণ গোকুলচন্তের সহিত সন্মিলিতা হইলেন। निथित इस नीविरकारक, ८२८१ थाउड यूर्विड्रम्स— थम्ड रमन, तमन-दिनो भनिड ८२१ दिनाननी, ७ड एटिन मथिनो रमनि ८क्ट काइएका भथ ना ८ इति, थेरह मिनन ८ भोकू: इस ८ भाविस्ताम भागनि।

#### (१) मझाता

বিপিনে মিলল, পোপনারী; হেরি হাসত মুরল-ধারী—
নির্ধি বয়ন পুছত বাত, মদনসিন্ধু গাহনি।
পুছত স্বকো গ্যন ক্ষেম, কহত কিয়ে করব প্রেম—
ব্রহ্মকো স্বস্থ কুশত বাত ? কাছে কৃটিল চাহনি ?

<sup>(</sup> শ্রীকৃষ্ণের মুরলীধ্বনি "ত্রিজগন্মানবাকর্বি" ইহা নিঃসন্দেহ-সিদ্ধান্ত, কিন্তু
আৰু উহা কেবলমাত্র "কুলবভীচিত চোরণী" ধ্বনিতে নিনাদিত হওয়ার
ভদ্মারা কান্তাগণ বাভিত অপরের চিতাকর্বিত হয় নাই। আর—বোগমারার
অচিন্তাপ্রভাবে শ্রীকৃষ্ণাবনের অপ্রাক্তলীলার— নকল ঋতুতেই সকল ফুল
প্রাকৃষ্টিত হইয়া থাকে, স্বতরাং এ গীতের একটি অক্ষরও অত্যুক্তি নহে)

<sup>(</sup>৫) গোপস্থলরীগণকে বিপিনে সমাগতা দেখিয়া, রসিকেক্সরাজ আনলমধুর মনোধর হাস্তছারা তাহাদের প্রেমবর্জন করিতে লাগিলেন এবং
প্রত্যেকের বদনপানে চাহিরা অপূর্ক চঙ্গীতে মদন-সিন্ধু-নিমজ্জিনী বাগ্-বিলাগ
আরম্ভ করিলেন। কহিছেছেন—স্থলরীগণ তামরা তো স্থাধে ও নির্কিষে
আসিরাছ ? (কেম—মঙ্গল) বল আমি তোমাদের কিরপে প্রীতি-বিধান
করিব ?

স্থশারীবৃণ্ণের বদনে আনশ ও গৌরব-সংশিশ্রিত-হাস্ত বিকশিত হইরা উঠিল, তদর্শনে পরিহাস বিশারদ-রণিকেক্সশেপর, ভঙ্গীমর-বচন বিভাগ

হেরত প্রছন রজনী ঘোর, ভ্যজি ভরুণী পতিকো কোর—
কাছে আওলি কানন ওর ? কছত থোর কাছিনী।
গলিত ললিত কবরী-বন্ধ, কাছে ধাওত যুবভিরুন্দ?
ফলিবে কিয়ে গড়ল দ্বন্দ ? বেঢ়ল বিশিখ-বাহিনী ?

করিতে আরম্ভ করিলেন,যথা—'স্বদনী সকল ! ভোমরা এমন অসময়ে কাননে আসিবার কারণ কি ? ব্রজপুরস্থ সমস্তের কুশল তো । কোন ও আকশ্মিক বিপদ তো ঘটে নাই ? কোনও উত্তর না দিয়া সকলেই কুটিল নম্নে চাহিতেছ কেন ? আজকার এই ভয়ন্ধরী রজনীতে—ভোমাদের স্থায় পতি সোহাগিনী জীক্ষ-তকণীগণের পতির কোড় পরিত্যাগ করিয়া বনে আগমন ও অবস্থান—বস্তুত্তই বিন্ময়াবহ ঘটনা । অভএব ইহার কারণ ও কিঞ্চিৎ (থোর) বিবরণ কহিয়া শীঘ্র আমার আশকা দূর কর । আহা । ক্রতগমনের বেগে ভোমাদের স্থলনিত কবরীবন্ধন খূলিয়া গিয়াছে ! যুবতী-ব্রক্তের এইবেগে ধাবন কংনই সামান্ত কারণে ঘটে নাই । বলি ব্রঞ্জে কি অকশ্মাৎ গৃহ-বিবাদ উপস্থিত হইন্য়াছে, কিয়া কোনও ধহুর্দারী-যোজ্ব-সৈন্তদল অভাবিতরূপে আসিয়া ব্রজ্ব করিয়াছে ? কি বিপৎপাত উপস্থিত ইইয়াছে শীঘ্র বল ?

'বংশী-গাঁতে মনহরণ ও আকর্ষণ করিয়া আনিয়া—কুটিল-কটাকে ও স্বস্থুর-হান্তামৃতে মাতাইয়া,এই ব্রিম বাগ্-বজ্ঞাঘাত কেন ?" ভাবিতে ভাবিতে প্রণয় কোপাদি নানাভাবোদয়ে বিচলিতা ব্রজন্মনীগণ, কথনও চল্লের পানে কথনও বা বনের দিকে চাহিতে লাগিলেন।

ভঙ্গীময় বচনে কান্তাগণের অন্ত্রাগ-দাগর উচ্ছদিত করাই চতুর-চুড়ামণির অভিদন্ধি, স্করাং গোপস্পরীগণের ঐরপ চাহনি উপশক্ষ করিয়া বিনি আরোও কহিতে লাগিলেন—"শরচচন্দ্রের স্থলার জ্যোৎসায় সম্জ্জল এই রজনীর মাধুরী অথবা প্রাকৃত্র কুস্থম-নিচায়ে পূর্ণ—ভাম-ভ্রমর-বিল্লিত এই কাননের শোভা সক্র্নির অদম্য-কৌতুইলে ভোমরা এমন সাহদিনী ( সাহিনী ) হইয়া আসিয়াছ কি ?

এ কথায়ও গোপীগণ কোনও উত্র প্রদান না করার বিদন্ধ-চূজ্মখনি

কিয়ে শরদ-চান্দনি-রাজি, নিকুঞ্জে ভরল কুল্ম-পাঁতি— হেরত শ্যাম জ্রমরা-ভাতি বুঝিয়ে ভায়ল সাহিনী ? এতত্ত কহত নাকহ কোই, কাহে রাথত মনহি গোই? ইহহি আন কছু না হোই গোবিন্দদাস গায়নি।

#### (७)-काटमान।

সরস বসন্ত অধাকর নিরমল, প্রিম্লে ককুল রদাল, রুমের প্যার প্রারল কলাগ্ডী, গাহক মুদ্রগোগাল।

কহিতেছেন – আমি এত কথা জিজাসা করিলাম তোমরা কেছই কোন 9 উত্তর করিতেছ না কেন ? মনের ভাব মনে লুকাইয়া (গোই—গোপন করিয়া) রাখিতেছ কেন ?

দর্শনকারিণী মঞ্জরীর-ভাবাবিষ্ট গ্রীতকর্তা গোবিন্দ কবিরাজ,রঙ্গিয়া-নাগরের মুবে—প্রথমতঃ মনোহরোজ্জলা-রজনীকে 'ঘোররূপ।' এবং স্থরম্য-কেণী-কাননকে 'ভীতিপ্রদ' বলিয়া বর্ণনা করিতে শুনিয়া এবং তংপরেই আবার 'শেরদচান্দনি-রাতি ও বিকশিত-কুন্থমে শোভার-ভাণ্ডার নিকুগ্র" বলিয়া রক্ষময়-বচনে নিজেই তৎথগুন করিতে শুবণ করিয়া এবং 'শ্রাম-ভ্রমরার কান্তি (ভাতি) দেখিতে আসিয়াছ ?' এই বাক্যের শ্লেষার্থ যে 'কৃষ্ণ ভ্রমরের অর্থাৎ তাঁহারই দর্শন' তাহাই মনে গ্রহণ করিয়া—আপনা আপনি বলিতে-ছেন – ইহার। আবার কি উত্তর দিবে ? তুমি বাহা বলিতেছ তদ্ব্যতিত আর কিছুই তে৷ হয় নাই, তরিসিত্তই তে৷ ইহাদের আগ্রমন।

(৬) শ্রীক্তথ্যের অন্তরে চারিটি উদ্দেশ্ত ছিল। (১) ব্রজম্পরীগণের ভাবের চরম-পরিণতির বিকাশ; (২) পক্ষাপক-ভেদ-বিদ্রিত করিয়া সমস্ত গোপ-যুবতিকে একী ভাবাপন্ন করণ; (৩) বোমা'—প্রিয়তমাগণ্কে দিক্ষিণা' করিয়া রুদাবনে কেলি-কলানিধি কান—
হাণ-বিলাস—গমন দিঠি মন্থন, হেরি মুরছে পাঁচবাণ!
হাসি পরশি তরুণী নব-যোবনী# পুছই মুলকি বাত!
তরুল-নয়নী হাসি-মুখ শোভই ঠেলই হাতহি হাত।

রাদ-রদান্থাদন; (৪) অমুরাগের-সমুত্ত-মন্থন দ্বারা কান্তা-ভর্ৎ সনামৃত উৎপাদন ও তদান্থাদন। তাঁহার (পূর্ব্ব গীতোক্ত) ভঙ্গীমর-বাত্যাবলী এবং আরোও তিন্দাত মাতিরং ঘোষং' প্রভৃতি—প্রার্থনাও উপেক্ষা-ভঙ্গীমর—দ্বার্থবাধক পরিহাদ, অনিষ্টাশক্ষাকৃশিত-প্রেমবতীগণের কর্ণে বজুাঘাতের ন্যার প্রতীত হট্যা—তদীয় দকল উদ্দেশ্য সাধনেরই ভিত্তি পত্তন করিয়া দিল। গোণিকা-গণ রোবে, ক্ষোভে, অভিমানে, ঈর্ষায় ও প্রণয়-পিপাদায়—অধীরা, আকুলিতা এবং একপ্রাণা হইয়া—আক্ষেপ, অমুগোগ, ভর্ৎ দনা, প্রার্থনা, কাকুতি ও হর্ণতিব্যঞ্জক ভাষায়—নানাচ্ছন্দে আপনাদের আগ্রহ, অমুভাপ ও মনোবেদনা প্রকাশ করিতে লাগিলেন। দে হুর্নিবার-ভরঙ্গে রস-রঙ্গিয়ার দমন্ত ভঙ্গীর বাঁধ ভাঙ্গিয়া দিল, আর তাঁহার আত্ম-সম্বরণের সামর্থ রহিল না। তথন সহাস্ত্র বদনে আপন বাক্যাবলীর পরিহাসাত্মকতা প্রকাশ করিয়া আদ্রের,—গৌরবের ও আগ্রহের—অবদি-প্রদর্শন-পূর্ব্বক তর্ণণিগণের প্রফুল্লভাবিধান-দারা তাহাদিগকে বিহারে প্রবৃত্ত করিলেন। এ গীতটি সেই স্থধা-মধুর বিলাদের চিত্র।

বৃদ্ধাবনের কেলি-কুঞ্জাবলীতে, সর্বাদাই বসস্ত-ঋতুর প্রাধান্তবর্তমান। তৎশোভার আনন্দোন্মাদিতা কোনও সথী কহিতেছেন—দেশ, সরস-বসস্তের উদীপনামর-মাধুরীতে কুঞ্জ-কানন ভরপুর, আকাশে স্থনির্দ্ধল স্থাকর সমুদিত, বকুলের ও রসালের (আদ্রমুক্লের) পরিমলে দিগস্থপূর্ণ। আজ অতি উপযুক্ত এবং অফুক্ল সময়ে কলাবতীগণ রদের পদরা প্রসারিত করিয়াছেন ! মনের মন্ড গ্রাহক প্রাপ্ত হইলে মণিকারের। যেনন সাগ্রহে ও সাহলাদে আপন বিপণির সম্দর্ম দ্রব্যই প্রদর্শন করে, তেমনি চিরাকাজ্ঞিত সদন্ধোপালকে প্রাহক

<sup>\*</sup> পদকলভর ও পদামৃত সমুদ্রের পাঠাতর---নব যুবরাল পরশি তরণী-মণি।

ছুত্ রসভোর, ওর নাহি পাওই, (রস) চাথই মদন দালাল—
দাস অনন্ত, কছই রস কোতুক, তরুকুল বলে ভাল ভাল!

## (१) श्रुवरी।

মধ্ব-বৃন্দা-বিপিনে মাধব, বিহুরে মাধবী সঙ্গিরা—
তুত্ গুণ তুত্, গাওয়ে সল্লিড—চল্ড নর্ত্তক-ভঙ্গিরা \*

পাইয়া আজ রস-প্রদর্শনীগণের দেহে আনন্দ ধরিতেছে না! এদিকে বৃন্দানিদিনবর্ত্তী-কেলি-সম্ৎস্ক ক-কলানিধি-কামূর প্রেমাংফ্ল রূপ ও রীতিও মধুর হইতে মধুরতর হইয়া উঠিয়াছে, তাঁহার এই প্রাণ-মন-হর হাস-বিলাস, সবিলাস-গতি, ও প্রেম-চলচল-দৃষ্টি দেখিলে—বোধ হয় মদনেরও মৃচ্ছা হয়! দেখ—হাসিতে হাসিতে যথার্থই পসারিণীর বিপণিতে উপস্থিত ক্রেভার স্থায়—নব-যৌবনা-তর্দ্দণীমণিগণের অঙ্গবিশেষ স্পর্শ করিয়া তাহার মৃল্য (মৃল্) জিজ্ঞাসা করিতেছেন! আর তরল-নয়নী-গণ হাস্ত-শোভিত-বদনে কুটল-কটাক্ষভন্দী-প্রকি প্রেকি আপনাপন হস্ত দ্বারা রসিকেন্দ্র শেখরের হাত ঠেলিয়া দিতেছেন! এবং তংকলে ভ্রমনেই রসানন্দে নিমগ্ন ও ভোর ইইয়া যাইতেছেন, কেইই অতলম্পর্ণ রস-সাগরের ওর পাইতেছেন না!

ন্ত প্রত্যা স্থীর ভাষাবেশে গীতকর্তা অনস্কলাস কহিতেছেন—দেখ, সঙ্গে সংস্থা সদন দালালও আসিয়া উপস্থিত ! সে, সমুদয় রস চাধিয়া দেখিতেছে ! এদিকে প্রনান্দোলিত তরুগণ মাধা নাজিয়া বলিতেছে, ভাল ! ভাল !! রস-কৌতুক বৃষি চরম-পরিণতি প্রাপ্ত হইতে চলিল !!

<sup>(</sup>१) একণে স্বাধীনকান্তা-শিরোদণি শ্রীরাধার ( মাধবীর ) সহিত নানা বঙ্গে স্বন-বিহার করিতে করিতে; মাধব---রাস-বিহারার্থ ব্যুনা-পুলিনে চলিয়াছেন।

প্রামৃত সমুদ্র ও পদকরতক্র পাঠ।স্তর—\* চলত নর্তন গতি ভাঁতিয়া,

ভাবণ-যুগপর, দেই পরস্পারণ নওল-কিশলয় ভোড়িয়া
লোভ্ক ভুক ছভ্ কাজে গোহই, চুম্বই মুগশলি মোড়িয়া।
ভেজি সকরন্দ—শাই বেচ্ল, মুথর-মধুকর-পাঁভিয়া,
মন্ত-কোকিল—সঙ্গল গাওভ§ নাচভ শিথি-কুল মাজিয়া।
সকল স্থীগণ, কুস্ম-বরিষণ, করভ আনন্দে ভোরিয়া—
দাস গিরিধর, কবভ্ হেরব—কাঁতি শাসর-গোরিয়ায় ॥

দেখ—নানাচ্ছদে—নানা ব্যপদেশে উভয়ে উভয়ের গুণগান করিতে করিতে
কি মধুর নৃত্য-ভঙ্গীতে চলিতেছেন এবং আরক্ত-স্থলর-স্থকোমল—নবকিশলয়—তক্ষলতা হইতে সহতে ছিল্ল করিয়া কত আদরে একে অপরের
কর্ণে পর ইতেছেন!

তৎপরের লীলারদ দর্শন করিয়া দথীভাবাবেশিত গীতকর্তা কহিতেছেন, দেখ—এক্ষণে নাগরেজের বামভূত্ব প্রিরভমার ক্ষদেশে, আর নাগরী-রাজ্ঞীর দিফিণ-বাছ কাস্তের ক্ষাপরি বিশুত্ত এবং শশধর-স্থার-বদন বাঁকাইরা উভয়েই উভয়ের গণ্ডে ও বদনে পুনংপুনং চ্ছন করিতে করিতে চলিয়াছেন! ছজনের অঙ্গই প্রেমে প্রফুর হইরা উঠিয়াছে এবং তৎপরিমলে উন্মাদিত হইরা গুঞ্জনকারী (মুধর) মধুকর-নিকর পুল্প-মকরন্দ পরিত্যাগ পূর্বক ধাইরা আসিয়া উভয়ের চতুর্দ্ধিকে বেরিয়া ঘেরিয়া ব্রিতেছে—ও দর্শনোমাদিত-কোকিলকুল মক্ষল-গান ধরিয়াছে। শিধি-কুল মত হইরা নাচিতেছে। স্থীগণ আনন্দে ভোর হইয়া উভয়ের শ্রীজনের ও গমন পথে পূল্প বর্যণ করিতেছেন।

বলিতে বলিতে গী ১কর্ত্ত। গিরিণর দাসের সাধকভাব হঠাৎ উদ্রিক্ত হইয়া পড়ায়, আক্ষেপ দৈক্তোক্তি প্রকাশ করিতেছেন—হায়! আর কতদিনে শ্রাম-

পদাম্ত সম্জ ও পদকরতকর পাঠান্তর – † কুওল গোহই; ‡ ও রস্ সারর গাহিলা; কেবল পদকরতকর পাঠান্তর—§ মুরলী তাহে বাহত।

#### (৮)—(नटनांशात।

কালিন্দী-ভীর, স্থার স্থারণ, কুন্দকুমুদ অর্থিন্দ বিকাশ—
নাচত মোর, ভোর স্ত-স্থুক্র, গারী শুক পিক পঞ্চম-ভাষ্।
নিধুণনে নাচত্র মুগধ-মুরারা—

মুগণ-গোপন্ধু অধিকলাথ সঙ্গে রঙ্গেনিহরে রুথভাতুকুমারী ॥এ

গোরীর এই মধুরকান্তি ও প্রাণারাম-লীলা দর্শন করিয়া প্রাণ জুড়াইব ? (পদকল্লকতে এই গীভটি "দাস গোবিন্দ" ভণিতাযুক্ত !)

(৮) এই গীতে কালিনী-পুলিনের মধ্ব-রাসবিহার (স্থীর মুখে)
বর্ণিত হইরাছে। যথা—দেথ, গম্নার তরঙ্গ-করে-স্নাজিত সনাহর
পুলিনে মৃত্-মন্দ-স্মীরণ বহিতেছে। কৃন্দ, কুম্দ, কমল প্রভৃতি কুস্থমাবলী—
জলে স্থলে প্রন্দুটিত হইয়া রহিয়াছে! সৌগয়ে মধুকরনিকর ভার হইয়া
ফিরিতেছে। মগ্রগণ নৃত্য করিতেছে। শারী, শুক—কোকিল পঞ্মধ্বনিতে দিগস্ত উন্মাদিত করিতেছে। জ্যোৎস্না-মণ্ডিত পুলিন ভূমির এইরপ
উদ্দীপনাপূর্ণ শোভায় ও প্রাণেশ্বরীর প্রকুল-বদনের মাধুরীতে, উচ্চলিতানন্দ
চঞ্চল ও বিমুগ্ধ হইয়া আমাদের নটরাজেক্স আজ নিধুবনে অর্থাৎ কেলী-কৌতৃকে
মনোহর-নৃত্যারন্ত করিয়াছেন। আর লক্ষাণিক গোপস্থন্দরী-মালার মধ্যমণিরূপে বিরাজিত হইয়া—আমাদের ব্রভায়-রাজনন্দিনী সহোলাদে, সে
নৃত্য-কৌশল দর্শন করিতেছেন।

দধী তৎপরে কহিতেছেন, দেথ—এক্ষণে নটবরশেথর গান ধরিয়াছেন স্পার আমাদের নটিনী-মণি বিনোদ-নৃত্যে মনোহরের মনহরণ করিতেছেন! আবার—মৃত্-মারুতের-তরক্ষে স্বর-লহনী-ছড়াইয়া—আমাদের কোকিল-ক্ষী গান ধরিতেছেন এবং নট-রাজেক্স মোহন-নৃত্য-তরক্ষে রমণী-মণির মনকে

পদামৃত সমূদ্রের ও পদক্ষতকর পাঠান্তর - \* মধুবনে নিধুবন;

নাচে রমণী—গাওত নট-শেশ্বর, গাওত নটিনী নাচে নট-রাজ শামর-গোরী,গোরীসত্তে শামর,নবজলধরেয় সুবিজুরী বিরাজ! হেরিছেরি রাস—কলারস অপরূপণ সনমথে লাগল সনমথধন্ধ! ভুললগগনে, সগণে-রজনীকর, চৌদিকে ফিরত দীপধ্রি চন্দ!! ভারাগণসত্তে, ভারাপতি হেরিয়ে,লাজেলুকাওল দিন্মণি-কাঁতি গোবিন্দদাসপত্ত জগমন-মোহন,বিহ্রিজে ভেল কলপ্যমরাতি!

নাচাইতেছেন ! আহা ! ছজনেরই নব নব-তাওব-কলা অপরূপ এবং অত্ননীয়। পুনরায় সোলাদে সধী বলিতেছেন – অধুনা মাধুরীর অবধি ! দেখ—
সত্য সতাই যেন নব-জলধরের সহিত বিছাতের থেলা ! ত্থান-অধাকরের
নর্তনের সহিত আনাদের নবগৌরী, এবং নৃ চাচঞ্চলা-গোরীর সহিত যোগ দিয়া
নটরাজ-ভামস্কর—অবিকল পরস্পরের অফুরপ নৃত্য-বৈদ্ধী বিস্তার ছারা
রমণী-মণ্ডলীকে মোহিত করিতেছেন !

ন্ত্যবঙ্গে, ঘন ঘন পরস্পারের অঙ্গম্পার্শের ফলেও যে আজ নটিনী-নটবর কেহই কলপাবেশে শিথিলাঙ্গ হইতেছেন না! ইহার কারণ এই ধে—এই উভয়ের অপরূপ রাস-রসের-কলা দর্শমে মল্লথের মনে (আহা! কি দেখিতেছি, এমন অছুলনীয়-অছুভ-বৈদ্য়ী কি জগতে সম্ভব ? ইত্যাদি ভাবিয়া) ধার্ধা লাগিয়া গিয়াছে! তাহার আপন মনই মথিত হইয়া যাইতেছে, প্রভাব প্রদর্শনের অবসর কোথায় ? দেখ, মল্লথের ভায় গগনের চক্রও সগণে অর্থাৎ নক্ষত্রবর্গের সহিত অন্তগমন ভূলিয়া গিয়াছে! দীপ্তিরপ-দীপ ধারণ করিয়া কেবলই চারিদিকে ফিরিতেছে!!

এদিকে অরুণের কিরণচ্ছটা পৃথিবীতে প্রকটিত হইবার নিমিত্ত পূর্বা-কাশের প্রান্তে উপনীত হইয়া দেখিল—মন্যগগনে নক্ষত্র-পরিমণ্ডিত, নিশানাধ

পদামৃত সমুদ্রের ও পদকরতকর পাঠাম্বর—া অপরূপ বাস-বিলাস মনোহর।

#### ( ৯ )—ছুড়ি I

ক্ঞ ভবন, সন্দ পবন, ক্তম-গন্ধ-মাধুরী—
সদন-রাজ, নব-সমাজ, জমরা-জমরী-চাতৃরী।
দেখরে সথি। শ্যামচন্দ—ইন্দ্রদনী-রাধিকা—
বিবিধ যন্ত্র, যুবভিত্রন্দ, গাওত রাগমালিকা।
ভরল ভার, গতি ছলার, নাচে নটিনী নটন-শূর—
প্রাণনাথ, ধরত হাত, রাই ভাতে অধিক প্র।

বর্ত্তমান; অধনি বেন আপন অবিম্ধ্য-সত্ত্রতার নিমিত্ত লজ্জিত হইয়া
লুক্তায়িত হইয়া গিয়াছে! গীতকর্তা গোবিন্দ কবিরান্ধ কহিতেছেন—কি
আনন্দ! লীলাশক্তির এই সকল অচিন্ত্য-প্রভাবে আমার জগ্-মন-মোহন
প্রভুর মধ্র-রাসবিহারের নিমিত্ত আজিকার রঞনী, কল্লের ভাগে (ব্রহ্মার
দিনের ভাগে) ফ্লীর্য হইয়া উঠিয়াছে!

(৯) একণে এরয়্ব তীরুল উচ্ছলিতানলে নানাপ্রকার যন্ত্র বাদন আরম্ভ করিলেন এবং তাহার তালে তালে পরস্পারের হাত ধরাধরি করিয়া আমাদের রাই-কামু নানাচ্ছলে একত্রে নৃত্য করিতেছেন। দেখিয়া কোনও সধী দে মাধুরী বর্ণন করিতেছেন, যথা—

ক্ষতন-নিচয়ে-বিকশিত কুল-মলারাদি কুমুমাবণীর সৌরভ বহন করিয়া
মল মল সমীরণ প্রবাহিত হইতেছে, দিল্লাওল কুমুম-গদ্ধের মাধুরীতে পূর্ণ! মদনরাজের নবীন-আমাত্য— ভ্রমর ভ্রমরীগণ কতরক কতচাতুরী বিস্তার করিতেছে!
সকলেই রাস-রক্ষীয়ার ও র ফ্রনীগণের উত্তেজনা ও আনন্দবর্দ্ধনে প্রবৃত্ত, রাধামাধবও গীত-নর্ত্তনের রস্তরকে মাতোয়ারা! মৃত্রাং এমন মহারকে অপর তরুণীগণ ছির থাকিতে পারিবে কেন ! দেখ—সকল যুবতীই নানাবিধ ষল্লের ঐক্যতান বাদন করিতেছেন ও মালিকারাগে মুমধুর-মন্দীত ধরিয়াছেন এবং
তর্প-তালের তর ক্রমান্দের নটিনীম্নও নটন-ম্বর, মন্মাহন-গতিভক্ষীতে

অঙ্গে অস—পরশি ভোর, কেন্ত্ রহত কান্ত্রো কোর— জানদাস, গাওত রাস, যৈছে জলদে শিজুবী জোর!

## ( > ) क्वांहै।

মতিত হল্লীশক-মগুলাং, নটয়ন্ রাধাঞ্চলকুগুলাং॥ ১॥ নিখিল-কলা-মম্পদি পরিচয়ী, প্রিয়স্থি।পশ্য নটতি মুরক্ষী॥ গ্রু

কত রক্ষণ্ডকে একসকে নৃত্য করিতেছেন! রক্ষিনী-সিক্ষিনী-রাইর করণারপ পূর্বক প্রাণকান্ত নবীনছন্দে নানা নাট্যকলা প্রদর্শন করার—প্রবিদ্ধিত-প্রেমানন্দে আমাদের রাই-বিনোদিনী পূর্ণ ইইয়া গিয়াছেন! এবং অক্ষে
অক্ষ স্পর্শ করিতে করিতে হজনেই প্রেম-রসে ভোর ইইয়া একে অপরের ক্রোড়ে হেলিয়া পড়িয়াছেন! জ্রন্তীর আবেশে গীতক্রী জ্ঞানদাস কহিতেছেন,—আহা! যেন স্ক্রন্ধণা বিজ্বী—আক্ষ অচঞ্চণা ইইয়া জ্ঞানের
সহিত কোর লাগিয়া রহিয়াছে!

বলদের বিদ্যাভ্যণের ভাষা—(গীতাবলীর ১২নং) ধধা—যুবভিনাং মণ্ডনীবন্ধেন নৃত্যং হল্লীশকং। পরিচ্যী পণ্ডিত:॥ গ্রন

<sup>(</sup> ২০ ) মণ্ডলীবদ্ধ হইরা যুবতিগণের রাসন্তোর নাম হলীশক। রসের উৎস—রাসস্থলীতে একণে হলীশক নৃত্য হইতেছে। কোনও সথী আসন সঙ্গিনীকে প্রেমসিদ্ধুর সে উদ্বেশিত-তর্মস্বাস্প দেখাইয়া কহিতেছেন—

দেখ—হল্লীশক-মণ্ডলের ভূষণ স্বর্গনী চঞ্চল-কুণ্ডলা রাধাকে নাচাইতে নাচাইতে নিথিল-কলা-সম্পাদে স্থাণ্ডিত মূর-বিজয়ী—স্মাজ কি মধুর, কি মোহনচ্ছনে নৃত্য করিতেছেন। প্রিয়দণি। মহাবীরের মধুর-নৃত্যকলা দেখিয়া নয়ন সফল কর—জীবন ধন্ত হউক।

মুক্রাদেশ বিভ রত্ন-সলগং সলয়ক্লয়ন্কর কিশলয়ং ॥ ২ ॥ গতিভঙ্গী ভিরশীকৃতশাশি, স্থানিত স্নাতন শক্ষর বিশা ॥ ২ ॥

#### ( >> ) दक्ताता

রাধা কামু নিক্স মেদির মাঝ।
চৌদিকে অজনধু সঙ্গল গাওত ভেজি কুলভয় লাজ॥ এল ॥
শারদ যামিনী, ওকুল কামিনী, কেরছ নয়নে চায়,
সদন-ভূজজন্ম, রাইরে দংশল, হেলি গড়ে শ্রাম-গায়।

সলয়ং ধ্যান্তাত্যা কর-কিশ্লয়ং—হস্তপল্লবং চলয়ন্। (ক্রো বিলাসে সংশ্রেষ সাম্যে ভৌধ্যতিকস্তাচ ত বিধঃ॥২॥

স্থ গিতৌ সনাতে শিশ্বরী বশিনৌ জিতে জ্রিয়ো যেন সং॥ ৩॥

আর, একবার রত্বলয়ের এই মৃত্যু তি আন্দোলনের মাধুরী দর্শন কর। কর-কিশয়ের তালে তালে সবিলাস-সঞ্চালনাকলা হেরিয়া প্রাণ ভূড়াও। দেশ—চরণ-সঞ্চালনের ভূবন-মোহন মাধুরী ও অপূর্দ্দ গাত্রভঙ্গী দর্শন করিয়া আকাশের শশি বিশ্বয়ে অবশ হইয়া গিয়ছে। নিশ্চণ হইয়া বেন অনিমিথে চাহিয়া রহিয়ছে। এবং জিভেক্সিয়-বর্ম্য-শয়র এবং অন্তান্ত যতীক্রগণ স্থগিত অর্থং স্থিরগতি হইয়া এই অমৃত মাধুরী আস্বাদন করিতেছেন।

<sup>(</sup>১১) মন্দ-স্থান্ধ-মাক্ত-সঞ্চলিত-পুলিনভূমে বৃন্ধাদেবীর বিরচিত-নিক্সস্থ কুস্ম-ভল্ল আমাদের রাদেখরী, রাস-বিহারীর সহিত বিশ্রাম-বিধাসে স্থা উপবিষ্ট ; কিন্তু রাস-রসাম্বাদে উত্তেজিতা নৃত্যপ্রমন্তা যুবভিগণের শ্রান্তি-বোধ নাই! তাহার৷ লজ্জাও কুলধ্য বিদর্জন দিয়া চারিদিকে ঘেরিয়া পর্মানন্দে মঙ্গল গীতি (জয়-গীতি) গান ক্রিডেছেন ৷ জাল পক্ষ বিপক্ষ ভেদ্নাই!!

কামু-ধর্মন্তরি, রাই-কোলে করি, চুম্বন-ঐসদ দরে, নাগর নাগরী, ওবসে আগোরি, রাই কামু একই পরাণ! শারী শুক পিক, মঙ্গল গাওঁত, অতি দে ফুললিত-তান! রুদ্দানন ভরি, রুদের বাদর, তুল্গী দাস রুদ্ধান।

ইতি শ্রীগীতচিন্তামণৌ পূর্ব্ব:বিভাগে একোনত্তিংশত্তম কণ্দা।

দর্শনানন্দে নিমন্তা কোনপ্ত স্থী অপরাকে দেখাইয়া কহিতেছেন—দেখ
শারদ চল্রিকার-প্রোজ্জনালোকে আমাদের কুলাঙ্গনাননি, প্রাণনাপের প্রতি
বন্ধিম-নয়নে চাহিতে চাহিতে—মদন-ভূজঙ্গমের দংশনে আকুলিতা হইয়া
নাগরের গাত্রে হেলিয়া পড়িলেন! আহা! কালীয়-দনন-কায় সর্মপ্রকার
ভূজঙ্গ-বিহ প্রতিকারেই সাক্ষাৎ ধরস্বরী, দেখ তিনি প্রিয়্রতমা-মণিকে অমনি
কোলে ধারণ করিয়া চুলন-রূপ চুল-মহৌষধি দ্বারা অবংগলে আরোগ্য করিয়া
ভূলিতেছেন। এই বে!—চাদবদনীর হেম-তয় স্পন্দিত ও ক্রিয়াবান্ ইইয়া
উঠিয়াছে!! একণে একমনোপ্রাণ হইয়া উভরে, কেলা রসে আনিঙ্গন বছ!
এবং তদ্ধনি আনন্দোলাদে শারী শুক পিকালি পক্ষা স্থললিত হানে নম্বলকয়-গীতি গাইতেছে! গীতকর্তা তুল্সী দাস কহিতেছেন—কি আনন্দ।
আজ বুন্দাবন ভবিয়া ঘেন রসের বাদর বর্গিত হইতেছে! এইবে—রস-গীতি
গাইবার নিনিত্ত আমারও রসনা নাচিয়া উঠিয়াছে! ("রসের বাদর"—
শব্দের ভাবার্থ-আলোচনা ২৬শ ক্ষণদার ১২নং গীতের আস্বাদনীতে দ্রন্থীয় শুরা
শব্দের ভাবার্থ-আলোচনা ২৬শ ক্ষণদার ১২নং গীতের আস্বাদনীতে দ্রন্থীয় শুরা
ব্যামনীত্র ভারা ক্রোৎস্লাগ্রী হাত্রী)।

# ত্রীকণদা গীতচিন্তামণি।

#### অথ তিংশন্তগ কণ্দা।

## ( ) शिक्षात हस्त्या (कर्मात्र।

জয়রে জয়রে গোরা, প্রীশচীনন্দন, মঙ্গল নটন হুঠাম কীর্ত্তন-আনন্দে শ্রীবাস রামানন্দে, মুকুন্দ বাহু গুণ গান। ( দ্রাং দ্রাং ) দ্রিমিকি দ্রিমিক দ্রিমি, মাদল বাজভ, মধুর মন্দীর রসাল।

শঙ্খ করতাল, ঘণ্টা-রব ভেল, মিলল পদতল-ভাল।

তৎপরে শ্রীনবণীপ-বিহারীর শুভ-সন্ধীর্ত্তনলীলা—মানদে দর্শন করিতেছেন, আর বলিতেছেন—দেও, আর ভক্তবর্যা শ্রীবাদ পণ্ডিত, শ্রীরামানল বম্ন, শ্রীমুকুল দত্ত, শ্রীবাম্বদেব ঘোষ প্রভৃতি পার্শন-ভক্তগণ আনন্দে কৃষ্ণগুণ গান করিতেছেন, "দ্রাং দ্রাং দ্রিমিকি দ্রিমিকি দ্রিমি" এই স্থললিত তালে মৃদন্ধ বাজিতেছে, স্বর্মাল-মন্দিরা, শহা, করতাল ও ঘণ্টার কর্ণানন্দি-ঐক্যতান-ধ্বনি চারিদিকে স্থনাদিত হইতেছে, আর আমার রদের নাটুয়া 'গোরা' মধ্যস্থলে মধ্র-নৃত্য করিয়া, প্রেম-তরক্তে জগৎ নাগাইতেছেন! কি গায়ক, কি বাদক, সকলেই দে ভরক্তে চঞ্চল হইয়া প্রভুর বদন-মাধুরী ও নৃত্য-মাধুরী হেরিতেছেন আর পর্মানন্দে নাচিতেছেন!

<sup>&#</sup>x27; (>) শ্রীসমহাপ্রভুর সঙ্গীর্তন-গীণা প্রেমস্থা-রসের অক্ষর-মহাসমুদ্র। এই পরম-সম্পদের সহিত ব্রজ্ঞাব বিতরণকারী—গৌরহরির মহিমানদ্ধে মোহিত বীতকর্ত্তা, আনন্দোচ্ছাসে কহিতেছেন—আমার শ্রীশচীনন্দন-গৌরস্ক্রের জয়! তাঁহার জগন্মসল-স্ঠাম-নৃত্য-বিলাসের জয়! তৎপ্রবর্ত্তিত শ্রীসঙ্কীর্তনা-নন্দের জয়!!

কোই দেই গোরা অঙ্গে, হুগদ্ধি চন্দন, কো-দেই মালভী মাল শীরিতি ফুলশরে, মরম ভেদল, ভাবে সহচরী ভোর। কোই ফহত গোরা, জানকী-বল্লভ, রাধার প্রিয়-পাঁচবাণ নয়নানন্দের মনে, আন নাহিক জানে, আমার গদাধরের প্রাণ

## (২) শ্রীনিত্যানন্দ চন্দ্রস্থা; মঙ্গল।

শ্রীবাদ অঙ্গনে, বিনোদ বন্ধানে নাচে নিত্যানন্দ রায় # সমুজ, দৈবত, পুরুষ-যোষিত, স্বাই দেখিতে ধায়।

নাচিতে নাচিতে ভক্তগণ—"সহচরী ভাবে" অর্থাৎ রাস-রঙ্গিনী-ব্রজান্ধনা-ভাবে ভোর হইরা কেহ সঙ্গীর্ত্তন-বিহারী-গৌরস্থারের শ্রীক্ষকে স্থান্ধিচন্দন বিলেপন করিতেছেন! কেহ বা মালতীর মালা পরাইতেছেন! ব্রজের রাস-বিলাস আল নবন্ধীপে সাক্ষাৎ সম্দিত!!

দর্শকগণের মধ্যে যাহারা—শ্রীরঘুনাথের উপাসক তাহারা আজিকার আলোকিক-দীলা ও মাধুরী দর্শনে আমার গৌরহরিকে সাক্ষাং জানকী-বল্লভ বলিয়া প্রকাশ করিতেছেন। ব্রজোপাসকেরা কহিতেছেন—ব্রন্ধের অপ্রাক্বত-কন্দর্প-শ্রীরাধাকান্ত ব্যতিত এমন অপর্যপ-রস-কেণী-প্রকটন কথন ও হইতে পারে না !! গীতকর্তা নয়নানক মিশ্র—শ্রীযুক্ত গদাধর পণ্ডিতের দ্রাতপুত্র এবং শিষ্য তিনি কহিতেছেন, বিনি বাহা বলুন—কিন্ত "গৌরহরি আমার গদাধরের প্রাণ" আমার প্রাণে ইহা ব্যতিত আর কোন কথাই জাগেনা। (\* পদকল্লভক্তে এই স্থানের পাঠ—নাচত গৌর রার)।

<sup>(</sup>২) পূর্বাণীতে শ্রীমদ্ গৌরচক্রের নৃত্য-মাধুরী বর্ণনের প্রসঙ্গে শ্রীসন্ধী-র্ত্তন-রসের মহা-মাধুর্যা---এবং এ গীতে শ্রীমন্তিয়ানন্দক্রের নৃত্যকেনী-কর্পনের

खक व मधन, भाखक मलल, नारक (शांत कतलान, मार्च जैनमक निकार नाहन, जातात जारन मारलाताता। एस-उपल किनि, नाल-उन्तिनि, भिःष्ट किनि किंगिले, हस्त-उपन कमल-नतन, मलन-रमायन रवण। गत्रक भूनभून, लक्क चनचन, मल्लरम् धित नाहरे, खक्न-रलाहरन, रक्षम-नित्रि, जनगोमछल भिक्षरे। धत्री-मछरल, रक्षम्मन नापन, कतल जनधूक-हान्त---ना क्रारन नतनाती, जूनन-प्रन-हारि, जन रहति रहति कांग्ल

ব্যাপদেশে প্রীসকীর্ত্তনের অন্তুত মহিমা বর্ণিত হইয়াছে। প্রকার সহিত্ত নিরস্তর প্রীরাসলীলার প্রবণ কীর্ত্তনে যেমন যুগপং চিত্ত-বিকার বিনাশ ও প্রেম লক্ষণা-ভক্তির উদয় হয়, আমার গৌর-স্থন্দরের প্রীসকীর্ত্তন-লীলার অস্পীলনেও তেমনি চিত্তদর্পণ স্মার্জিত এবং সঙ্গে সঙ্গেই হদয়—প্রেম-রসার্জ হইয়া থাকে। জ্বগন্মস্থাবিতার গৌরস্থানরকে নিরস্তর এই সকীর্ত্তন-রমে মাতো-য়ারণ দেখিয়া নির্মান্মজীবের বন্ধু—শীনিতাইটাদের আজ মানন্দ ধরিতেছে না! তিনি আনন্দে পরিপূর্ণ হইয়া, সকীর্ত্তন-রমের-রঙ্গভূমি প্রীবাদ পণ্ডিতের অনা-বৃত্ত-ক্ষমনে আজ বিনোদছলে নানা ভঙ্গীতে নৃত্য করিত্তেছেন! সে অপরপ নৃত্যরক্ষে স্থান বিভিত্তির আনন্দ হয়া উঠিয়াছে! দর্শনের নিমিত্ত আকাশে দেশদেবাগণ এবং অবনীতে নরনারী-নিকর মহোলাসে ধাইয়া চলিয়াছেন!

দেশ—ভক্তগণ চারিদিকে মণ্ডলীবদ্ধ হইয়া খোল করভালের সহিত দক্ষণ-গীতি গাহিতেছেন, আর মধ্যন্থলে আমার নিভাইটাদ — ভাইয়ার ভাবে মারোরা ছইয়া নাচিতেছেন! তাঁহার জিলোক-বিশ্বাপক নৃত্যভঙ্গী, হেম-স্তম্ভ সদৃশ উর্দ্ধোত্তলিত বাত্যুগণের প্রবলনি এবং টাদ-বদনের ও কমল-নম্নের মাধুরী ও মদন-মনোহর-বেশের শোভা দর্শনে—দেখ, দেব মানব কেছই আনন্দে দেহ ধারণ করিতে পারিভেছেন না! শান্তিপুর নাপ, গরকে ভাবিরভ, দেথিয়া থেমের বিকার—
ধরিয়া শীচরণ, করয়ে রোদন, পণ্ডিভ শ্রীনাস উদার।
মুক্সা-কুভ্গলা, কান্দয়ে ফুলিফুলি, ধরিয়া গদাধর-কোর
নয়নে বহু প্রেম, ঠাকুর অভিরাম, সহনে ছরিছরিশ বোল
না জানে দিবানিশি, প্রেমরসে ভাশি, সকল সহচরয়স্দে,
শক্ষরঘোষ দাস, করভ প্রতি আশান্ত নিতাইচরণারবিশেদ।

দেখ দেখ— একাণে প্রেম-মহান্ত্রির মহোলিমালা আকাশ স্পর্নী হইরা উঠিল ! সে তরক্তের বেগে নাভিতে নাভিতে আমার কব্রুচন্দ্র—মন্তর্শারণ করিয়া ঘন ঘন শক্ষ ও পুনঃ পুনঃ গর্জনদ্বারা কলিরপ্রাণ কাঁপাইয়া তুলিয়া-ছেন। আর তাঁহার অরণ-নয়নের প্রেমাঞ্জে পৃথ্নী পরিসিঞ্জিত হইতেছে ! আহা ! সতা সতাই আল অবধৃত-শশধর-নিতাই-দয়াময়ের-প্রেমে ধরণীমপ্রক ব্যাপিয়া প্রেমের মহা বাদর হইতেছে ! আর লোকের শোক, তাপ, জাণা, য়য়ণা সর্বপ্রকার মালিতা ও বৈগুণা বিলোত হইয়া ঘাইতেছে ৷ চতুর্দশ ভ্রনের স্থসম্পদ বা তঃখ বিপদের কে নও কথাই, আল কাহারও মনে নাই ! নরনারীগণ সে সকল কথা সম্পূর্ণরূপে ভূলিয়া গিয়া আমার নিতাইটাদের ভ্রনভোরা-রূপমাধুরী দশন করিতেছে আর প্রেমানন্দে কাঁদিতেছে ! আজিকার মহা-পেমবিকার ও মহোন্ত্র-মহিমা দেখিয়া জীবের ছর্দশা-বাথিত শ্রীশান্তিপ্রচল্লের আনন্দ ধরিতেছে না ৷ তিনি উল্লাদে উন্মন্ত—হইয়া অবিরত গর্জন করিতেছেন ! উদার-হদম্ব শ্রীবাস পণ্ডিত, প্রেমে ক্রক্ত ইয়া গিয়াছেন এবং নি হাইটাদের চরণে ধরিয়া কেবল কাঁদিতেছেন ! ইত্যাদি ।

( भवकञ्चलक्त्र भार्र--। ভाইषा ভाইषा ; ‡ तृन्तावन नाम (व्यम-भन्नकान )।

# ( ৩ )--ধান গ্রী।

অভিনৰ নীল-জলদ-ভমু চলচল পিঞ্-মুক্ট শিরে সাজনীরে, কাঞ্চন বদল, রভনময় অভরণ# নুপুর রুপুঝুরু বাজনীরে। জয় জয় জগজনলোচন ফাঁদে, রাধারমণ রুন্দাবনচাঁদ ॥ঞ্॥ ইন্দীবরসুগ-হভগ বিলোচন—অঞ্জল চঞ্চল কুহুম-শরে— অবিচলকুল-রমণী মনশ সানদ, জরজর অন্তর-মদনঞ্চ ভরে।

(৩) এই-জিংশস্তম কণদাটিও প্রকার বিশেষে প্রীরাসনীলার বর্ণন পূর্ণ।
মুরনীর-কলনাদে-কাস্তাকর্ষণ-নির হ-রাস-রসিকেন্দ্র-শেধরের—তংকালোচিত
অপুর্ব-রূপ-মাধুরীতে ও বেণ্ধনিতে বিমোহিতা কোনও কুফারেষিনা-মঞ্জরী
কহিতেছেন—আহা! অভিনব-মেবের স্থায় চলচল এই নয়নাভিরামঃনীল-ভমুর এবং শিরোপরি-শোভিত ওই রামধন্থ-ধিকারী নানাবর্ণোন্তাষিত-শিশ্ব-মুকুটের মাধুরী—জিজগতে কতুলনীয়! তাহার উপরে আবার কাঞ্চন-কান্তি
বসনের ও রত্বালকার-রাজির বিহাত-বিজ্বী-ছাতি সন্মিলিত হইয়া, কি অপুর্বা
মন্থনাৎসবই বিধান করিতেছে! এনিকে রাতুল-চরণ-যুগলে মনি-নির্মিত-নুগর
আপনি ক্রমুকু-রবে বাজিতেছে!! এ শোভার, এ বচনাতীত মাধুরীর বর্ণন-প্রায়াস বুধা! আমার কেবল এই কথাটি পুনংপুনঃ বলিতে সাধ হইতেছে—
অরাস বুধা! আমার কেবল এই কথাটি পুনংপুনঃ বলিতে সাধ হইতেছে—
অরাস বুধা! আমার কেবল এই কথাটি পুনংপুনঃ বলিতে সাধ হইতেছে—
অর্পাবনের-নয়ন-বিহঙ্গম বাঁধিবার কাঁদ—আমানের রাধারমণের—আমানের
ক্রনাবনচন্দ্রের জয় হউক।"

এই যে তাঁহার ইন্দীবর-স্থানর-লোচনের চঞ্চল-কটাফ, ইহা অবার্থ কদর্পবাণ । এই বিষম-কৃত্বম-শরে — জগদ্বিজয়ী-কন্দর্পেরবিক্রমাভিক্রমী— অবিচলমতি-কুলাঙ্গনাগণেরও ছাদর, মন ও বাসনা মদন-জর্জ্জরিত হয়। আর—এথে
আমাদের রমণী-মনোহারী, আজারুল্বিত-বনমালার শোভিত হইয়া অলিকুলকে
পরিমলে মাতাইয়া তুলিয়াছেন, এঁুমাধুরী-ছেরিলে বল দেখি কোন্ কামিনী

প্লামৃত সমু: দ্রর পাঠাস্বর—\* কাঞ্চন বঞ্চন ; বর ; ‡ ভাব।

विन वनगान, चाकाञू विगयिङ, शतियान चानिक्न गांजित्र विवाधित विन्त्र । विवाधित व

it.

# ं (८) कर्नाष्टे।

কিং বিতনোষি মুধান্সবিভূষণ ? কপটেনাত্ত বিঘাতং
লোচুমহং সময়তা ন গংপ্রতি শক্তা লবমণিপাতং ॥ ১॥
গোকুল-মঙ্গল-বংশী—
শব্দি রুদ্ধর্জতি বন্ধত্যে স্মর্ভূপতি-শাদ্দশংশী ॥ গ্রু॥

ফিরাইতে গারে ? গীতরচায়তা গোবিন্দ কবিরাজ পূর্ব্বোক্ত মন্ত্ররীর ভাষাবেশে আরোও কহিতেছেন, দেশ—আমাদের হৃদয়-মনের অধীখর (পঁত্) এইরপ মাধুরী-মণ্ডিত হুইয়া আজ বিঘাধরে মোহন-মুরলী গুইয়া কলগীত গাইতে-ছেন! (এই প্রাণাক্ষী-মধুরধ্বনিতে ত্রিজগতের কোনু রুমণী উন্নাদিতা না

হয় ? ) পদকরতকতে "কর কর" ইতি ধ্রুবপদে এ গীতের সারস্ত।

এইটি গীতাৰলীর ১৮ নং গীত। ইহার, শ্রীমদ্ বলদেব বিদ্যাভ্যণের ভাষা এই রূপ—অভিদিদীর্নাল্লিকা মণ্ডরন্তীংদণীমাহ—কিমিত্যাদি। অত্যাভিদারে বিঘাতং—বিলম্মং যদহং সময়স্ত লবমশি পাতং দোঢ়ুং শক্তা নভবামি॥ ১॥ নমু নাভিদারস্ত সময়োহধুনাপ্যাগত ইতি চেত্ত্রাহ—গোকুলেতি ॥ ধ্র॥

<sup>(</sup>৪) বংশী গীত প্রবণে অভিসারার্থ অধীরা:শ্রীরাধা স্বকীর বেশকারিণী স্বীকে কহিতেছেন স্বি! আনার অঙ্গ অল্কুত করার ছলে কেন এখন বৃধা বিশ্ব ঘটাইতেছ ? বেশের কোনও আবিশ্রুক নাই। অভিসারের এই শুভ

মাধন-চরণাঙ্গুঠ-নধত্যতিরয়মূদয়তি হিমধামা,
মা গুরুজনভয়মূদিার গুজ্রিয়মভবং ধ বিজুকামা ॥ ২ ॥
তং সেবিজুমিহ গশ্য দনাতন পরমারণ্যজ বেশ —
গোপনধৃভতিরিয়মূপসপতি ভাতুহুতা-তটদেশং॥ ০ ॥

সময়াতিক্রমং ব্যঙ্গরস্ত্যাহ—মাধনেতি। হিমধানা – চক্রঃ। নতু চক্রিকাগ্নাং গঙ্হস্তীং জাং গুরুবংপরিচেয়স্তীতিচেত্তত্তাহ—মাশুর্কিতি। মোলিগরঃ—ন প্রবর্ণয়, য.তা ধাণিতু কামাহমভবং॥ ২॥

তং কৃষ্ণং সেবি হুং গোণবস্ততি ভারুস্থতা-ভটদেশ মুণসর্গতি নত্তমেব, কীসৃশং ? সনা চনো—নিত্যঃ পর্নোভিস্ক্রোহ্রক্সজোবেশোযক্ত ভং, সনা ধনক্ত পর্যোধ্যে ইহ্রক্সজে, হ'শো যুক্ত তিনিতি চার্থঃ পঞ্চে ॥ ৩॥

মৃত্রের লেশনাত্র আচিয় সহিতেও আমি অসমর্থা! ঐ গুল আমার গোকুল-মলল জীবিত-বল্লের মধুর বংশী গঞ্জমে বাজিতেছে। এ ধ্বনি আমাদের বন গমনার্থ কলপ্রিরাজের শাসন-প্রনিকাহক ভেরী অরূপ। আর ওই দেখ—আমার প্রাণকান্তের চরণাস্থ্রের নথছাতি বহন করিয়া—আকাশের চাদ কত আনক্তি! দ্বি! আমি আর কিছুতেই থাকিতে পারিতেছিনা! এ সমরে গুলনের ভয় উলিরণ করা রুথ। আমি এই মৃত্তেই ধাবিত হইছেছি! চাহিয়া দেখ—নবকিশোর-নাগরের, বন-কুমুমাদিতে স্থরচিত প্রম-শ্রুমর বন-বিহারী-বেশ দশনের জন্ত নিধিল-গাপ-স্কেরীগণ ভাত্রনিক্ষী ধম্নার প্রিনে ছুটিয়াছে! হায়! আমি কি সকলের পাছে পড়িব গ

#### (৫) भागमा

কোসল শশিকর-রম্যেনান্তর নি'র্ম্মিন গীন্ত নিলাস, ভূর্ণ সমাগত, বল্লব-যৌগত নীক্ষণ কুত-পরিহাস ॥ ১ ॥ (ক্ষা ক্ষা) ভাত্ম হুড়া-ডট-নাল-মহান্ট, হুন্দর নন্দক্মার শরদলীকুত, দিবা রসাবৃত্ত, সঙ্গল-রাস-বিহার ॥ গুং ॥

্ গীতাবলীর ১৫নছরের ) এই গীতের বিদশভ্ষণ ভাষ্য এইরপ—ছে নন্দ কুমার ! বং জর জয়ে তার্বঃ । কোমলৈঃ শশিকরৈ রমো বনান্তরে নির্মিতো গীতবিসাসো যেন । তুর্ণং স্মাগতানাং ব্লব-ফোবতানাং ভাববীল্প র ক্লভঃ প্রিছাসো বেন ॥ ১॥

ভারত্তারা স্তটমেব রকো—নর্তনন্তানং তার মহান্ট হে। শরদাঙ্গীরতো ২ঙ্গভাং প্রাপিতো দিব্যেনাপ্রাক্তনাত্রাগেনার্তো মহুকো-রাধ-বিংবিং যেন ॥ প্রশা

(৫) বিনি মহা-যোগেশ্বরগণের ঈশ্ব— শাপ্তকাম—পূর্ণনিক্কল এবং
রস-স্বরূপ তাঁহার সকল বাসনার-সার—নরণীলার-সারস্পন— শ্রীরাস্ণীলার
স্থাস্থ বর্ণনা মানবীর-ভাষার কি মানবের প্রমায় পরিমিত সমরে কদাপি
সম্পন্ন হইতে পারে না, অপচ সে সানে শুকের প্রাণ সত্তই লোভিত হয়।
তাই এ মহালীলার স্মর্ণাবেশে আনন্দান্তত ইয়া প্রমাভিবন্দনীয় গীতকর্তা
শ্রীমদ্ রূপগোস্বামীপাদ, মহোলাসে শ্রীরাসবিহারীর জয়োচ্চার্থ করিছে
করিতে লীলারসে অবগাহন এবং ( এই গীতে ও প্রবর্ত্তী গীতে) সংক্ষিপ্তত্ত্তের
লীলামুতের কণিকা-পরিবেশন দ্বারা ভন্তগণকে কৃতার্থ ও জগতের কৃষ্ণা,
আকাজ্রা, উৎকণ্ঠা ও লোভোৎপাদন করিয়াছেন। ব্যা—স্থকামহনশ্রী-কিরণে-প্রোদ্যাধিত-প্রম-র্মণীয়-কুলাবনের বনাস্তরে—স্মধ্র সঙ্গীতনৃত্য-বিলাসারস্তী আমাদের নন্দনন্দনের জয় হউক।

গোপী চুম্বিত! রাগ-করম্বিত! মান-বিলোকন-লীন!
তাৰ বৰ্গোন্নত, রাধা সঙ্গত, সোহাদ-সম্পদ্ধীন! ॥ ২ ॥
তাদ্ বচনাম্বত-পান্মদান্তত! বলগ্নী কৃত পরিবার।
হার-তক্ষণীগণ মতি বিক্ষোভন! ধেলন বন্ধিত হার! ॥ ৩ ॥

হে গোপী-চুম্বিত ! হে রাগ-করম্বিত—আলাপিত রাগ ! কাস্তানাং মানক্ত গর্কাত বিলোকনেন লীন—কৃতান্তর্জান হে। গুণবর্গোরতরা—রাধরা সহ সক্ষত হে। তত্তা বা সৌহদ-সম্পত্তদধীন হে। বহা—গুণোবর্গোরতারাং রাধারাং সঙ্গতা যা সৌহদ-সম্পত্তদধীন হে॥ ২॥

ভাসাং গোপীনাং যানি বচনাম্তানি—জন্নতিতেহধিক মিত্যাদিনি ভেষাং পানেন যো মদ স্তবিষয়কেন প্রেয়ামন্ততা তেনাছত—ভাসাং সদস্থানীত ছে। বলনীক্তো — ম গুলীভাবংপ্রাপিতো নিজপরিবারং—স্বপ্রেমাপরিকরো বেন ছে। পুনরাবদ্ধ হন্নীশক নৃত্যেতার্থং। স্ব গাণ-মাধুর্য্যেন স্বর্তকণী গণানাং মতিবিকোভন্নতীতি তথা খেলনেন—নৃত্যক্রীড়ন্না বদ্গিতশ্চপলো ছারো—মনিসরো যুঁস্থা ৩॥

মহাত্মরাগে লজ্জা- ধৈর্য,—ভর, বিন্ন, দেহ, গেচ, বিন্মৃতা গোপ্যুবতীগণকে স্থানিকটে স্থাগত দেখিরা—যুগপৎ প্রার্থনা ও উপেক্ষাভ্জনীমর বাগ্বিলাসী ছে পরিহাসরস-নটেন্দ্র নন্দক্ষার! তোমার জয় হউক। হে ব্যুনাপ্লিন-রক্ত্মির মহানট! হে শারদ-যামিনী-সমূহে অপ্রাক্তত-(দিব্য)-রসমন্দ্রমঙ্গল-রাস-বিহার অঙ্গীকারকারি নন্দ-স্থলর! তুমি সর্ব্ধা জয়য়ুক্ত হও।
হে গোপীগণের চুম্বনাম্পদ! হে রাগালাপে রাগবর্জনকারি! হে বিলোকনমাজে মানিনীর মান (গর্ম) বিদ্রক! হে নিথিলগুণগামে-বরির্গী-প্রীরাধারপ্রেমাধীন-রমণ! তোমার জয় হউক।

হে বল্লবীর্ন্দের বচনামূত-( হঃধ আবেগ, জোধ ও প্রেমপূর্ণ গোলী-গীত ) পান-মদোলাসি ! হে গোপীমগুল-বেষ্টিত ! (বলন্ধিত) হে নৃত্য-মাধুরীতে ও নৃত্য রঙ্গে-তর্মণিত-বক্ষান্থ হারের-সৌ ভাগ্যে-দেবান্ধনাগণের মতি-বিক্ষোভ্যমনারি ! অধুবিগাহন নন্দিত নিজজন—সভিত যয়ুনাতীর,
অধসন্মিদ্ঘন! পুর্ণ-সনাতন! নির্মাল নীল শরীর ॥ ৪ ॥

# (७) कर्नाछ।

ক্ষুরদিন্দীবর নিন্দি কলেবর রাধা ক্চ কন্ধ্রন্তর পিঞ্চর, হুন্দর-চন্দ্রক চুড় মনোহর চন্দ্রবিশী-মানস-শুক-পঞ্জর ॥ ১॥

অসু-বিগাহনেন — জলবিহারেণ নন্দিতা নিজ্ঞ নাঃ থ্রিরগণা বেন। স্বানো-থিতৈর্বস্ত্যণভূষিতৈ তৈ নিজ্ঞানৈ মণ্ডিতং যম্নারাতীরং যেন। তে প্র্ব-স্থিদ্দন-সাক্রানন্দবিজ্ঞানস্বরূপ ! তে পূর্ণ ! তে সনাতন ! তে নির্মাণ !—মারা-সন্ধান্দ্তি ! তে নীল্পরীর—ভাম-স্করতর ! পক্ষে পূর্ণ: সনাতনো খেনেডি চার্থ: ॥ ৪ ॥

বিদ্যাভ্যণ-ভাষা (গাঁতাবলী ১৯ নং গাঁত দেখ) বণা--- অথাগভাতীর প্রিয়াভি: দার্কং বিহারসাহ---ক্রদিতি। প্রায়েন ক্টার্খং।

পিঞ্জর-পীতহে। সংগরেণ চক্রকেন যুক্তা চূড়া কেশ-পাশী বস্ত n ১ n

হে রাস-নটেক্স ! তোমার জয় হউক। জস-কেনী-য়জে নিজ জনের জানজবর্দ্ধনকারী, যম্নার ভটভূমি-মগুন হে জানজ-বন-বিগ্রহ! হে মারাজীতভামিস্কর রূপধারি ! নিরস্তর ভূমি জয়য়ুক হও ( এই সীলার বিলসিত
ধাক)।

(৬) এগীতের প্রতি-কথাই বিহার-বৈশিষ্ট উদ্দীপক। বথা— ব্রীরাধার কুচ-কুদ্দের সংস্পর্ণাধিক্য বশতঃ অপূর্ব্ব-পীত-কান্তিধারী (পিঞ্জ) হে কুরেন্দী-বর নিন্দিত প্রামতন্তু । হে মনোহর-বর্হাপীড় । হে চক্রাবলীর মনোরূপ শুক্

#### কর জর জর গুপ্পার্শল মণ্ডিক—

প্রাথন-বিশৃত্যাল গোপীসগুল বর্রিস্থাপর পগুন পণ্ডিত ॥ এছ ॥
মুগা-বনি তানন-তৃণ-বিস্ঞাগন-কর্ম-ধুরন্ধর মুরলী-কৃন্ধিত,
স্থারসিক-স্মিত-স্থাসোলাদিত, সিদ্ধাসতী-নয়নাঞ্চল-পৃন্ধিত ॥ ২
ভাস্থালোল্লদদানন্দার্য, স্থাস্থা-নদ-ক্ষতি-বিস্ফ্রদন্থর,
হর, কমলাদ্র, সনক, সনাভ্যন, ধুতি বিধ্বংসন লীলাভ্সার ॥৩

প্রণয় বিশৃত্যল: স্বেহ বিবশ: ॥ ঞ ॥

মৃগ ৰনিতানা মাননেভ্যো যাওঁণং বিস্তাহনং কর্ম, তত্ত ধুর্দ্ধরমতিসমর্থং—
মূরলী-কুজিতংযক্ত। স্থারসিকী—স্থাভাবিকী যা স্মিত-স্থমা—মন্দ-হাগাতি
শোভা তরোমাদিভানাং সিদ্ধস্তীনাং নয়নাঞ্চলৈং কটাকৈং পুজিতহে॥ ২॥
ডম্বা—বিস্তারং ॥ ৩॥

পক্ষীর পঞ্চরণ (খাঁচা) ভোমার ভ্রম জয় রবে অভ্রন পূর্ণ হউক। তে সংস্ত-গুঞ্জাবিদ-সমলত্বত শ্রামন্থলর! নৃত্য-সন্ধিণী প্রেম-বিহ্বলা-গোপ-স্ক্রমনী-গণের বর-বিশ্বাধর থগুনে স্থপণ্ডিত হে নটরাজ। অনস্কলাল তুমি এইরপ লীলার ভ্রম্বন্ত হও। স্থমধুর-বংশীগীতে মৃগ-বনিতা (হরিণী) গণের মুখ হইতে তৃণগ্রাস ভূপাতনকারী—হে দেহ-ধর্ম-বিস্মারক-মুরলী-কৃত্বন-পটু! স্বাভাবিক (স্বারদিক) স্মিত-স্বমার বিমোহিতা (মন্দ হাল্ডের মাধুরীতে) দিম্বতী-ব্রন্থবিতাগণের নয়নোংপরাচ্চিত্তর হে রসময়! অনিবার তোমার জয় হউক। নৃত্য কালে অপূর্ব্ব কলার সহিত কাস্তাগণকে চর্ব্বিত-তাম্বল দান-স্বদ্ধ্ব হে তাম্ব-রঞ্জিত-উন্নসিতানন! হে ভাম্বন্দহেম-ক্রচি-পীতবাস! প্রোণান-দী লীলা বিস্তার হারা সনক সনাতনাদি পরম সিদ্ধগণের ও শিব বন্ধাদি সিদ্ধেরগণের গ্রন্তি-বিধ্বংশক হে গোপীক্রন-বন্নত! নির্ম্বর তৃমি জ্বযুক্ত হও।

#### (१) कारमाना

কণস্ব ভরুর ডাল

कृत्य नागिशां ए जान

ফুটিয়াছে ফুল গারি সারি,

পরিমলে ভরল, সকল হৃদ্যাবন, কেলিকরে অধরা অমরী।
রাই কামু—বিল সই রঙ্গে—

কিশা রূপ লাবণিঞ

देनमश्री भनि धनि !

মণিময় অভরণ অঙ্গে ॥ প্রদা

রাইর দক্ষিণ কর

ধরি প্রিয় গিরি ধর

भधूत मधूव छिलयास,

चार्म श्राष्ट्र मशोभन

করে ফুল ৰরিষণ

(कान मथी ठामत हुलाय।

<sup>(</sup>৭) বৃশাবনের তর গুলাদি যে "অপ্রাক্ত বস্ত" এ কথার এক প্রতাক্ষ নিদর্শন এই যে ত্রজণকা গণের প্রতিরণ রঙ্গঃ লাভের লালগার এবং তাহাদের প্রীহন্তে কুল ক্যাদির—অবচয়ন-দৌ লাগালালার ইহাদের শাথাপ্রশাখানিচয় নিরস্তর নিয়াবনত! আজ মুনারতীর-কাননবর্তী কুম্মিত-কদম্বতর্কনাজীর এইরপ ভাবটি অতি নধুরতর হইয়া প্রকাশ পাইতেছে দেখিয়া কোনও স্বী কহিতেছেন—আহা! অবনী-অবনতারা হইয়া এই কুম্মিত-কদম্বতর্ক গুলি কি চমৎকার ভাব বিস্তার করিতেছে! পরিমণে বৃশাবন ভরিয়া গিয়াছে!—ল্রমর ল্রমরীগণ প্রমত হইয়া ফুলে ফুলে ক্রীড়া করিতেছে! বৃশাবনচক্র আজ বৃশাবনেশ্রীর সহিত রাগোৎসবে মাতিয়া ক্রীড়ান্থলীতে চলিয়াছেন—দেখিয়াইঃ বৃঝি ইহারা কর-পল্লবে-কুম্মাঞ্রলী ধারণ করিয়া অবনত মৃত্তকে অপেক্ষা এবং ল্রমর-গুলনের ছলে স্তোত্র পাঠ করিতেছে!

পদ কলতকও পদাস্ত সমুদ্রের পাঠান্তর—\* কিমে দোহ শাবণি;

भवारम धूमव ऋग,

**हस्य करत स्थीउन** 

मिन यह दिनोत छेलत.

बाहे कांकू कत ट्यांति,

नृতা करत किति किति

পরশে পুলক তনু ভরে।

वृत्रं मन हन्तन

कदत कति मधी भग

वितिभारा कृत शक्त तारक,

ध्यम अन निम्मू विन्मू

(भाषा करत मूथ हेन्त्र्

जगरत युतनी नाहि गास्त्र।

নেথ---আমাদের রাই কামু আজ কতরঙ্গে বিলসিত। ত্রজনের এীঅনে কি অপরপ রূপনাবণ্য বিক্ষিত। আচরিতে—কত ধন্তাতিধন্ত কেলি-বৈদগ্দী প্রক-টিভ! মণি-ভূষণ গুলিতে বরষপু কি স্থন্দর শোভাষিত!! দেখ-প্রিয়তম পিরিধর-জাপনার বাদকরে প্রিয়ত্সা রাধার দক্ষিণপাণি ধারণ করিয়া কি অপত্রপ মধুর মধুর গমনে চলিতেছেন ৷ স্থী সমূহ অত্যে ও পশ্চাতে থাকিরা উভ্রের উপরে ও গমনপথে পুপার্টি করিভেছেন-কেহবা চামর ব্যজন করিভেছেন! কণপরে কহিতেছেন--দেখ, একণে পূলা-পরাগে পুৰব্বিত চক্ৰকিবণোজ্জল-স্বস্থিম-মণি-বেদিকায় উপনীত হইরা উভয়ে উভয়ের হত্তধারণ পূর্বক ঘুরিয়া ঘুরিয়া-পরম্পরের বদনাবলোকন পূর্বক কি চ্মংকার-নৃত্যকলা বিস্তার করিতেছেন! অলোকিক-নৃত্যুরকে উভয়ের তথুই প্রেমানন্দে পুণকিত হইয়া উঠিয়াছে ৷ স্থীগণের কেহ কস্তুরী চর্চা---কেহ্বা চল্দনপদ্ধ করে ধারণ করিয়া সেবার অবসর প্রতীকা করিতেছেন, কেহ কেহ আনন্দোমত ২ইয়া মহাত্রগনী-গন্ধরাজকুত্বম বর্ষণ করিতেছেন। আর চাঁদের উপরে মুক্তাবলীর ভার হুইথানি শ্রীমুখচক্রই ঘর্ষবিস্তুতে অলক্ষত इरेबा উठिबारह। कि व्यानन ! गूतनी-मरनारुरब्र मूर्य अकरन श्रारनात्रानिनी মুরলী বাজিতেছে না, হাস-বিলাগ, রসকলা (নৃত্যান্ত্রমে চুম্নালি) এবং मधूत-वांग विवारित भाक मकरवद मरनावंश भूर्व इहेरछह !! शी उक्छ। शेक्न

**पेट्रां**म विद्याम त्रम-

কলা, মধুর ভাষ

नद्राख्य गरनात्रथ जल,

इएका विविध त्वन

কুহুমে রচিত কেশ

द्याष्ट्रित दगाइन भौगा धत्र ।

## (৮) कारमाम।

কাঞ্ন-মণিগণ ষত্ম নিরমাওল-রম্থী—মণ্ডল সাজ, মাবাহি মাঝ, মহামরক্তমণি, শামরু-নটবর রাজ।

নরোত্তন দাস কহিতেছেন ত্রনের এই বিচিত্র বেশটি—কুস্থমেস্রচিত এই বেশের শোভাটি এবং এই মোহন শীলার ছবিধানি খেন চিরদিন আমার নয়নে নাগিয়া থাকে!

(৮) এ গীতে—উপমা, উংপ্রেকা, বিশ্বয় ও অভূতালফারের ধারা বিচিত্রাস্থত-অপূর্ব-রাসন্তোর মধুরিমা বণিত হইগাছে। স্থী—ভাবাবিষ্ট মহাত্ত্তব গীতকর্তা গোবিন কবিরাজ কহিতেছেন—দেখ কাঞ্চণ-মণির প্রতিমা রূপিণী স্থান্দরী বৃদ্ধ একণে মওগী রচনা করিয়া একত্রে মহাত্ত্তা প্রবৃত্ত হইয়াছেন এবং প্রেন বিদ্রুল নটবর রাজ ভাস-স্থানর—গীলাশক্তিরপ্রভাবে গ্রমানসংখ্যক মৃত্তিতে ভাহাদের সাঝে মাঝে (এবং শ্রীরাধার সহিত মওলীর

পদকলতে ও পদামত সমুদ্রের পাঠান্তর—া কুন্তমিত ব্লাবন, কলপতক্র গ্ণ, পরাগে ভরল অলিক্ষ। রতনে এটিত হেম, মন্তির স্থার যেন, নরেতেম মনোরণ পুর।

### धनि धनि चलक्रल-ताम-विदात---

থিন-বিজুরী সঞ্জে, চঞ্চল-জলধর, রস-বরিধয়ে অনিবার ॥ এ ॥ কভ কভ চাঁদে, ভিমিরপর বিশসই, ভিমিরত্ কভ কভ চাদা ! কনক-শভায়ে—ভুমালত্ কভ কভ, হুত্ হুত্ ভুকু ভুকু বানা ।

মধ্য ভাগে ) বিরাজিত হইয়া মহা-মরকতমণির ক্লার লিগ্নোজ্জ্ল-প্রভা ও শোভা বিস্তার করিতেছেন ! আহা ! কি বিনয়া আজিকার এ অপূর্ব রাদ বিহারের প্রশংদা করিব ! 'ধত্য' শক্ষই আমাদের প্রশংদার দর্বোচ্চতা পরিক্রাপক, কিন্তু এ শোভা—এ মাধুরী—এ অপূর্ব রদানন্দ বে ধক্ত হইতেও ধক্ত ! !

তংশরে নটরাজের যুগণং প্রেম-বিহ্নবাঙ্গী প্রিয়তমাগণকে চুধন—চর্মিততাধুণ দানাদি রগচাঞ্চল্য দর্শনে নীরব থাকিতে না পারিয়া কহিতেছেন—
হির-মেঘে ঘনখন-বিজ্রীব সঞ্চার ও অন্তর্জানরূপ মনোহর রফ—সকলেই দেখিয়াছ, সাজ তাহার প্রতিক্রিয়া! স্বভাব-চঞ্চলা-সোদামিনীকে কদাপি অচঞ্চলা না
পাওয়াতে জ্লধর প্রতিক্রিয়া! স্বভাব-চঞ্চলা-সোদামিনীকে কদাপি অচঞ্চলা না
পাওয়াতে জ্লধর প্রতিদিন সে রঙ্গের প্রতিদান করিতে পারে নাই। তাহাতেই বুঝি আজ—থির-বিজ্রীর অচঞ্চল-প্রতিমা-মালাকে (বামতা-বিশৃষ্টা)
ব্রজ-বাম-লোচনা সমূহকে ) প্রক্তন্ত পাইয়া চঞ্চল-জ্লধর (প্রেম-চাঞ্চল্যে স্বধীর
স্থানস্থানর) আজ সাধমিটাইয়া অনিবার রসবর্ষণ করিতেছে ? আহা!
তাজিকার মহামহোৎসবে বেমন জ্লধরের চির্দিনের সাধ পূর্ব হইতেছে!
তেমনি সমূদ্র অসন্তব সন্তবে পরিণত হইয়াছে ! জাগতিক স্বভাব-বিক্তবতা
পর্যান্ত বিদ্বিত করিয়া প্রেমের জয়ধ্বজা উড়িতেছে! প্রই দেখ—আমাদের
নমনের নিকটে আজ কত শত শত চাঁদ (উজ্জ্লাঙ্গী গোপাঙ্গনা) তিমিরের
(নব ঘনশ্রাম স্থল্বরের) উপরে প্রং কত শত তিমির—চাঁদ সক্লের উপরে
অঙ্গ হেলাইয়া রাস-বিলাসের তরঙ্গে তরঙ্গিত!

তৎপরে নাগরের প্রত্যেক প্রকাশ-মূর্ত্তি ও রন্ধিনীগণের পরস্পরের স্কর্মে ভূজবেষ্টন দৃষ্টে কহিতেছেন—এ জগতে তমাল-তক সর্ব্যদাই লতার বেষ্টিড থাকে কথনও স্বর্ণ-লতাকে জড়াইয়া নিজসাধ পূর্ণ করিতে পারে নাই, কত কত পত্নিনী— পঞ্চ গাওত, মধুকর ধরু প্রতিভাষ, মধুকর মিলিকত, পত্নিনী গাওত, মুগধল গোবিন্দ দাস !

#### (৯) (वटनाशांत।

বাজত ডম্ফ,

त्रनांच भारभातांक.

कत्रकल कालकत्रल अक (मिला।

কিন্ত চাহিয়া দেখ আজ কত কনকণতা ও কত তমাণ পরস্পারকে তুল্যরূপে বেষ্টন করিয়া শোভা পাইতেছে! অনস্তর সঙ্গীতরীতি শল্য করিয়া কহিতেছেন—

পদিনীগণ চিরদিন মধুকরের গুল্গন-গীতি শুনিরাই জুড়াইয়া আসিতেছে, কদাপি ভ্রমর-বঁধুরাকে গান শুনাইরা রুহার্থা হইতে পারে নাই। আজ তাহাদের আনন্দ কে দেখে—আহা! কত কত পদিনীগণ আজ ,পঞ্চমে গান করিতেছে আর মধুকর-নিকর তাহাদের সহিত হার দিতেছে! আবার মধুকর-নিকরের গীতের সহিত কঠ মিলাইয়া ও পদিনীগণ—প্রেমভরে হার-লহরী ছড়াইতেছে! হায় হায়! এ মহানন্দের বর্ণন কি মানবের সাধ্য ও আমার মন—মুগ্ধ এবং ইন্দ্রিয়-ক্রতী—বিলুপ হইয়া উঠিয়াছে!

এ গীতোক্ত কত কত পদ্মিনী যে গোপমুন্দরীগণ এবং কত কচ মধুকর বে এক্তিঞ্ব বহু মূর্ত্তি একথা বলা বাহুল্য মাত্র।

ে ( ৯ ) এগীতিটি রাস-রঙ্গিনীগণের রস-চেটিতেরও প্রেম-চরিতের ছবি।
ব্যা—ডক্ষ্, রবাব, পাথোয়াজ প্রভৃতি নানাযয়ের নিনাদ এবং ঐকতান
ভরল-ক্রন্তন-ধ্বনির তালে তালে কলাবতী সকল বিচিত্র ভঙ্গীতে চরণ সঞ্চালন
করিতেছেন আর নটরাজের প্রভােক প্রকাশ-মূর্ত্তির সহিত প্রত্যেকে হাত
ধরাধরিও প্রেম-দৃষ্টি বারা রস-বিলাস করিতে করিতে—লগদ জানের সহিত

চলত চিত্ৰ গতি,

করে কর নয়নে নয়ন করুপেলি ॥

নাচত শুগান সঙ্গে বর নারী—

জলদ-পুঞ্জ-যমু,

তড়িত লতাবলী

অঙ্গ ভঙ্গ কত রঙ্গ বিধারি ॥ গ্রু ॥

নটন হিলোলে,

শোল মণি-কৃত্তল,

শুম জলে চল চল বদন-ভ্চন্দ ।

রস্ভরে খলিত,

খগত নীবি অরু কবরীকো বন্ধ । ৯

তুত্ত তুত্ সরস,

পরশ-র্ম লালগ্

রহই হল হল তমু তমু লাই ণ

বিজ্লতাবলীর বিলাসের ভাষ রঙ্গ-চাপলা প্রদর্শন করিতেছেন! আনন্দের অপার সমূদ উছলিয়া উঠিয়াছে! কত শত প্রকার সধুর-অসভঙ্গী এবং ক্ষীণ-ক্টি ও কর-চরণাদির বিনোদ-পরিচালনা—স্থান্মিত জাবিলাস, ভূজলভার ছারা মাধ্বের স্বন্ধ-বেষ্টন, বাহু চুম্বন, গণ্ডে গণ্ড সংগোজন, এবং বদনের ছারা চর্কিত-ভাসূল সংযুক্ত অধ্রামৃত গ্রহণাদি কত কত উদ্ধাম-রস-রঙ্গ-বিস্তার করিতেছেন, ইয়তা করে কাহার সাধ্য ?

নৃত্য-রক্ষে সকলেরই মণি-কুওলসমূহ জনবরত বিলোলিত হইতেছে।
বদন-চাঁদের মওলী—শ্রমজনে চল চল করিতেছে, কুচ-কঞ্কাবলী — রসভরে
ভালিত হইয়া গিয়াছে! নীবিও কবরীর বন্ধন খুলিয়া ঘাইতেছে! তৎপ্রতি
কাধারও লক্ষ্য নাই, আরোও দেথ—প্রত্যেক যুব-যুগ্গই পরস্পারের স্পর্শ-রস
লাভের লালসার অঙ্গে অঙ্গ লাগাইয়া রসানন্দে মন্ত রহিয়াছেন!

কোনও কোনও হত্তিথিত পুথির পাঠান্তর—'থসতই কিয়ে কত ক্রিকো বয়। পদ কয়তরুর পাঠান্তর—া তয় তয় আলংস রহত লুয়াই,

(भाविका मांग शङ्,

্যুর্ভি মনোধ্র গ্র

কত যুবতি মতি§ আরতি বাঢ়াই।

### (১০) গান্ধার।

রাধারুঞ্চ প্রাণ মোর যুগল কিশোর যুন্নারতীরে কেলীকদন্তের বন, জীবনে মরণে গতি আর নাহি নোর রতন বেদীর পর বসাব ছই জন

দর্শনকারিণীর ভাবাবিষ্টগীতকর্ত্তা গোবিন্দ কবিরাস কহিতেছেন—আহা!
দেখ আমার পহ (দেহ মনের অধীখর) আজ রস-কোতুকে যুবতীগণের কত
মত আনন্দ বাঢ়াইতেছেন!—স্থ-ম্পানানে আজ রজ-কন্তী রতি-প্রিয়া প্রেয়সী
গণকে কেবগই প্রমোদিতা করিতেছেন আর তাথারা রসোল্লাদে প্রমত্ত
ইয়া উচ্চ কণ্ঠের প্রেমগীতি এবং তৎসহ বন্য নৃপ্র ও কিঞ্জিন-ধ্বনি দারা
তদীয় আনন্দ বিধান করিতেছেন! এবং সকলে আনন্দের পাধারে সাতার
দিভেছেন!!

(১০) সেনাপরা-স্থীগণের অনুগত হইরা—(গুরু রূপা স্থীর অধীনে)
নিকুঞ্জ-বিলাদী-রাধামাধবের প্রেম-দেবা সম্পাদনই—রাগান্থগীর ভক্তগণের
সকল বাঞ্তিরে সার, এবং এই আকাজ্ঞাই তাঁহাদের ভীবনের এক মাত্র
অবলম্বন। সিদ্ধ-ভাবাবেশে মানদী-দেবা এবং সাধক-ভাবাবেশে ভল্লাভের
উৎকট-আকাজ্ঞামর-উৎকণ্ঠার সহিত প্রবণ কীর্ত্তনাদি ভক্তাফ সকল যথাসভ্তব
যাজন করাই শ্রীমহাপ্রভুর অনুমোদিত ভক্তি-পদ্ধতি।

ভক্তবাঞ্ছা-কল্পতক দয়ার ঠাকুর শ্রীগোর স্থলন জীবের অকণ্ট-আক্ষিক্রা পূরণে নিরস্তরই মুক্তহস্ত; কিন্তু কি তৃঃধ! কুবিষদ্ধ বিষ্ঠা গর্তের ক্রমি আসন্তা,

পদক্ষতকর পাঠান্তর—‡ মনোভব ; 🖇 রতি ।

ললিতা বিশাখা আদি সব সধীর্দে আজ্ঞার করিব সেবা চরণারবিদে খাম গোরী অংক দিব চুরা চন্দ্রেরগন্ধ চামর চূলাব কবে হেরব মুধচন্দ

মনে প্রাণে মিদাইরা—দৃঢ় বিখাদের সহিত তাঁহার শ্রীচরণে অবিচলিত-উৎ-কণ্ঠার ভাষায় মনোভিলাণপরিজ্ঞাপনেও পরবাধা । মহাপ্রভুর বর্ত্ম-পালক কুপামর-মহাজনগণ—আমাদের এই চ্রভাগ্য-চ্র্দ্দশা-দর্শনে অবিরত আদর্শ প্রদর্শন করিতেছেন, হার! তথাপি আমরা মোহের মহানিদ্রায় অভিভূত!

বাস্থ-দশার ক্তিসময়ে বিরহাকুল হইয়া স্বাভীষ্টদেবের চরণে—লালসাপ্ত উৎকর্পাময় প্রার্থনা-পরিজ্ঞাপন—মহাত্মতব মাত্রেরই মজ্জাগত-রীতি। আজ দশী ভাবাবেশে লীলামুগতির মধ্যে হঠাৎবাহাকুর্তি হওষায় এই গ্রন্থের মহামু-ভব সংগ্রহ কর্ত্তা মহোদয় তদমুদারে—প্রীশ্রীমন্মহাপ্রাভ্যর দাসামুদাস— অভি-মানে, এগীতের দারা তাঁহার প্রীচরণে—আপন অভিলাব ও আক্ষেপ প্রকাশ করিয়াছেন। গীতার্থ স্কুম্পষ্ট; তথাপি আমরা অন্তর্নিহিত ভাবের কিঞ্চিৎ রস-বিশ্লেষণার্থ চেষ্টা করিতেছি। যথা—

দেহের সৃহিত প্রাণের যে সম্বন্ধ, ব্রজ-কিশোর-শ্রীকৃষ্ণচন্ত্র এবং ব্রজ-কিশোরী-মণি-শ্রীরাধারসহিত—আমার সেই সম্বন্ধ, আর্থাৎ আমি দেহ এবং উাহারা আমার প্রাণ। তাঁহাদের বিরহে আমার বল, বৃদ্ধি, কৃতীত্ব, মহুষ্যত্ব প্রধ্, সম্পাদ, অভিমান, গৌরব, সকলই অন্তর্হিত হইরা যায়!! তাঁহাদের সম্বন্ধ বিরহিত—'আমি' প্রাণ-শ্রু-শব-দেহের ন্তায়—বীভৎস— মুণার্হ—অম্পৃত্র ও প্রকারক-দ্রবা-সমষ্টি মাত্র! অতএব দেহ যেমন সর্বপ্রয়ত্বে প্রাণের পরিত্থি ও প্রসন্নতাসাধন বারা—কৃতার্থ ও পরিপৃষ্ট হয়, হায়! শ্রীপ্রীরাধাস্তামের প্রেম সেবার কি আমার সেই রূপ স্বতঃ-দিদ্ধ-রতিমতিও অনিবার্য্য-বিক্রিয়া কথনও উৎপন্ন হইবে ?

ভাবোচ্ছাসে উচ্ছলিত গীতকর্তা এ উপমায়ও পরিতৃষ্ট না হইয়া কহিছে-ছেন—আমার বলা ঠিক্ হইল না! প্রাণের সহিত দেহের সম্বন্ধ—কেবল

অক্সান্ত গ্রন্থে আমাদের ৫—৬ পংক্তির স্থলে ৭—৮ পংক্তি এবং সর্ব্ধাশেষে ভণিতা-পদের উপরে ঐ ৫।৬ পংক্তি সন্নিকট।

মালতী ফুলের মালা গাঁথি দিব উরে\* | জ্রীক্ষণ্টেতত্ত প্রভূর দাদের অফুদাদ অধরে তুলিয়াদিব তামূল কপূরে

নরোত্তম দাস করে সেবা অভিলাষ

ইতি ত্রীগীতচিন্তামণো পূর্ববিভাগে ত্রীরাসবর্ণন তিংশত্তম কণনা।

ইহকাল মাত্র ব্যাপক, কিন্তু শ্রীশ্রীরাধাখাম আমার জীবনে নরণে অর্থাৎ কি ইহকাল কি প্রকাল সকল কালেরই অন্যগতি--এবং এক্ষাত্র অবল্যন---আমার নিত্যপরিদেবনের আনন্দ-বিগ্রহ!! উপমার দারা এই শোকাতীত সৰন্ধ-তত্ত্ব প্ৰকাশের চেষ্টা বাতৃলতা মাত্ৰ ! তথাপি--প্ৰাণের ভাষ ভালবাদাই জড়জগতে আমাদের আদেশ ও অভিল্যিত বটে। হায় । আমার কি এমন **७ इमिन इटेरव १ रामिन आमि औशाम-तृक्तावनरक निज-श्वरत्रत-शांत्र काम** করিব এবং প্রাণকে হৃদয়ে ধারণ করিয়া ও হৃদয়স্থপ্রাণের পরিভৃত্তি সাধন করিয়া জীবের যেরূপ স্থ, স্বাস্থ্য ও আনন্দলাত হয়—প্রেম-ধাম শ্রীবৃন্দাবনের যমুনোপকৃশবর্তী কেলী-কদম্বের কাননে, হ্রেম্য-রত্ন-বেদীকার উপরে আমার প্রাণেশর প্রাণেশরীকে একাদনে বদাইয়া আমি কি সেইরূপ মনোহ্রথে ললিতা বিশাধাদি স্থীগণের আজাহুসারে নিয়ন্তর ত্লনের চরণ সেবা করিব 📍 হার ! কবে আমি সেবাপ্রাণা দাসী হইমা রসমর-শীলাবিশাসী-ভামগোরীর শ্ৰীঅঙ্গ স্থাপন-চুম্বাচন্দনে চর্চিত করিব ? কবে একত্রোদিত-চল্নযুগণের স্থায় উভয়ের লীলা-প্রফুল-বদন বিলোক্ন করিতে করিতে ছজনকে একজে চামর-ব্যজন করিব ? কবে তুজনের বক্ষে স্বহস্ত-গ্রন্থিত মালতীর-মালা দোলাইয়া প্রাণ জুড়াইব ? ও স্মের-মধুরাননে তামুল-বাটি প্রদান করিয়া তদাস্বাদন রঞ্গ-দর্শনে ধক্ত হইব ? প্রভো শচীনন্দন ! ভোমার এ দাদান্দদাসের চিরা-কাজ্জিত সেবাভিলাষ আর কত দিনে পূর্ণ হইবে ?

অক্তান্ত গ্রন্থে পাঠান্তর দৃষ্ট হয় যথা--- \* কালিনীর কুলে; া গাঁথিয়া মালভীর মালা দিব দোহার গলে।

